श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

किरंतन

राग श्री मारू

पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो।
बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो।।१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो! पहले आप पारब्रह्म की पहचान करो, क्योंकि बिना पारब्रह्म की पहचान किए कौन कह सकता है कि मैं कौन हूं? ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि या जीवसृष्टि में से कौन हूं और मेरा पारब्रह्म से क्या नाता है? धनी का, महाप्रभु का या वह मेरा प्रभु है।

पीछे ढूंढ़ो घर आपनों, कौन ठौर ठेहेरानो।
जब लग घर पावत नहीं अपनों, सो भटकत फिरत भरमानो।। २ ।।

पारब्रह्म की पहचान कर लेने के बाद अपने मूल घर को खोजो कि वह कौन सा ठिकाना है जहां से मैं आया हूं? अर्थात् परमधाम से, अक्षर से या बैकुण्ठ निराकार से—कहां से आया हूं? जब तक अपने घर की सुध नहीं आ जाती तब तक संशय में भटकते ही रहोगे।

पांच तत्व मिल मोहोल रच्यो है, सो अंत्रीख क्यों अटकानो।
याके आस पास अटकाव नहीं, तुम जाग के संसे भानो।। ३ ।।

यह ब्रह्माण्ड पांच तत्व—जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश से बना है। यह अधर में कैसे खड़ा है क्योंकि इसके आस-पास टिकने का कोई सहारा नहीं है, इसलिए तुम विचार करके इस संशय को मिटाओ।

नींद उड़ाए जब चीन्होंगे आपको, तब जानोगे मोहोल यों रचानो।
तब आपै घर पाओगे अपनों, देखोगे अलख लखानो।। ४ ।।

अज्ञानता को छोड़कर जब पारब्रह्म की पहचान कर लोगे तब तुम्हें पता चलेगा कि यह ब्रह्माण्ड किस तरह से बना है और उसके बाद तुम स्वयं अपने घर को प्राप्त कर लोगे। उस पारब्रह्म को जिसे आज दिन तक किसी ने देखा नहीं है उसे तुम देख लोगे।

बोले चाले पर कोई न पेहेचाने, परखत नहीं परखानों।
महामत कहे माहें पार खोजोगे, तब जाए आप ओलखानो।। ५ ।।

आपस में केवल वार्तालाप करने से किसी को पारब्रह्म की पहचान नहीं हुई और न ही कोई उसे परख पाता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि जब उस पारब्रह्म को इस ब्रह्माण्ड से बाहर निकल कर अंतरात्मा से खोजोगे तब कहीं उस पारब्रह्म की पहचान आपको होगी।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५ ।।

Nijanand App

राग श्री मारू

बिंद में सिंध समाया रे साधो, बिंद में सिंध समाया।
त्रिगुन सरूप खोजत भए विस्मय, पर अलख न जाए लखाया।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, साधो! माया रूपी बिन्द में पारब्रह्म रूपी सागर की सत्ता समाई है। इसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देवता खोजते-खोजते हैरान हो गए, परन्तु उस पारब्रह्म को जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं पाया, उसे प्राप्त नहीं कर सके।

वेद अगम केहे उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया।
खबर न परी बिंद उपज्या कहां थे, तार्थे नाम निगम धराया।। २ ।।

वेद भी पारब्रह्म को प्राप्त नहीं कर सके और अगम कहा एवं 'नेति नेति' कहकर पीछे लौटे। उन्हें यह भी खबर नहीं हुई कि यह माया का ब्रह्माण्ड कहां से बना है, इसलिए उन्होंने अपने को निगम कह दिया, अर्थात् हम नहीं पहुंच पाए।

असत मंडल में सब कोई भूल्या, पर अखंड किने न बताया।
नींद का खेल खेलत सब नींद में, जाग के किने न देखाया।। ३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में सब कोई भूले फिरते हैं तथा उस अखण्ड बेहद भूमि की पहचान किसी ने नहीं बताई। यह संसार के जीव निराकार से पैदा हैं और निराकार के अन्दर का ही ज्ञान रखते हैं, इसलिए किसी ने भी सावचेत होकर पार की बात नहीं बताई और न उस अखण्ड स्थान को ही दिखाया।

सुपन की सृष्ट वैराट सुपन का, झूठे सांच ढंपाया।
असत आपे सो क्यों सत को पेखे, इन पर पेड़ न पाया।। ४ ।।

यह पूरी सृष्टि (चौदह लोकों का वैराट, क्षर पुरुष) सपने की है और इस झूठे संसार में सत ब्रह्मसृष्टियां भी आकर भूल गई हैं। जो संसार स्वयं ही सपना है वह सत (अखण्ड) को कैसे देख सकता है? इसलिए यहां वालों को इस ब्रह्माण्ड के मूल का पता नहीं लगा।

खोजी खोजे बाहेर भीतर, ओ अंतर बैठा आप।
सत सुपने को पारथीं पेखे, पर सुपना न देखे साख्यात।। ५ ।।

संसार के अन्दर खोज करने वालों ने पिण्ड के अन्दर तथा तन से बाहर ब्रह्माण्ड में खोजा, परन्तु पारब्रह्म तो इन दोनों (पिण्ड और ब्रह्माण्ड) से अलग परमधाम में विराजमान है तथा जिसकी जानकारी किसी को नहीं मिली, क्योंकि यह ब्रह्माण्ड असत है और ब्रह्मसृष्टि जो सत हैं, वह अपने मूल घर परमधाम में ही बैठ करके इस सपने के ब्रह्माण्ड को देख रही हैं, परन्तु सपने के जीव साक्षात् सत को नहीं देख सकते।

भरम की बाजी रची विस्तारी, भरमसों भरम भरमाना।
साध सोई तुम खोजो रे साधो, जिनका पार पयाना।। ६ ।।

यह सारा संसार भ्रम का है और भ्रम में ही भटक रहा है, इसलिए हे साधो! तुम उनको खोजो जो इस ब्रह्माण्ड के पार के रहने वाले हैं।

मृगजलसों जो त्रिखा भाजे, तो गुर बिना जीव पार पावे।
अनेक उपाय करे जो कोई, तो बिंद का बिंद में समावे।। ७ ।।

जिस प्रकार मृगजल से प्यास नहीं बुझती, उसी तरह से बिना सतगुरु के कोई सत का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। चाहे कोई कितने ही उपाय करे फिर भी वह माया का ही ज्ञान प्राप्त करेगा।

Nijanand App

देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं।
गुर प्रसादें अंतर पेख्या, सो सोभा बरनी न जाई।।८।।

यहां पिण्ड के भीतर और ब्रह्माण्ड में बाहर जो कुछ भी दिखाई पड़ता है वह सबका सब सपना है। पारब्रह्म इसके अन्दर नहीं है। सतगुरु कृपा से ही दूर परमधाम में बैठे पारब्रह्म की पहचान की। इनकी शोभा का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता।

सतगुर सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे।
प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्म सों, तब बिंद अनेक उड़ावे।।९।।

जब सच्चा सतगुरु मिलेगा तभी ब्रह्म और माया की पहचान हो सकेगी। जब पारब्रह्म की पहचान सतगुरु कराएंगे तब ऐसे अनेक ब्रह्माण्डों की चाहना खतम हो जाएगी।

महामत कहे बिंद बैठे ही उड़या, पाया सागर सुख सिंध।
अछरातीत अखण्ड घर पाया, ए निध पूरब सनमंध।।१०।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सतगुरु की कृपा से इस माया की चाहना खत्म हो गई और अब अखण्ड सुख का सागर अक्षरातीत श्री राजजी महाराज और अखण्ड घर परमधाम अपनी निसबत (मूल सम्बन्ध) होने के कारण प्राप्त कर लिया।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १५ ।।

राग केदारो

साधो भाई चीन्हो सब्द कोई चीन्हो।
ऐसो उत्तम आकार तोकों दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हों।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो भाई! पहचानो, कोई तो इन पार के शब्दों को पहचानो। तुमको ऐसा सुन्दर मनुष्य तन मिला है जिससे उस सतगुरु की पहचान करो जिसने तुमको अखण्ड परमधाम का पारब्रह्म का ज्ञान दिया है।

मानखें देह अखण्ड फल पाइए, सो क्यों पाए के वृथा गमाइए।
ए तो अधखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नींदर।।२।।

मनुष्य तन से अखण्ड पारब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है और किसी तन से नहीं, इसलिए ऐसा मनुष्य तन प्राप्त करके व्यर्थ में क्यों गंवा रहे हो? यह तो तुम्हें आधे क्षण, अर्थात् सीमित समय के लिए अवसर मिला है। इसे अन्य जीवों की तरह अज्ञानता में क्यों गंवा रहे हो?

सब्दा कहे प्रगट प्रवान, सब्दा सतगुरसों करावे पेहेचान।
सतगुर सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे।।३।।

शब्दों से (ज्ञान से) ही सतगुरु की और पारब्रह्म की पहचान होती है। सतगुरु तो हकीकत में वही है जो पारब्रह्म को दिखा दे जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं देखा। बिना उसकी पहचान किए आगे घर (परमधाम) जाना सम्भव नहीं है।

सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई।
सब स्यानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई।।४।।

सतगुरु सब धर्मग्रन्थों की वाणी से उस एक पारब्रह्म की पहचान कराते हैं, क्योंकि सब ग्रन्थों में पारब्रह्म एक ही है, ऐसा लिखा है, किन्तु अज्ञानी लोग ही उन ग्रन्थों में भिन्नता बताते हैं।

Nijanand App

देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं।
गुर प्रसादें अंतर पेख्या, सो सोभा बरनी न जाई।।८ ।।

यहां पिण्ड के भीतर और ब्रह्माण्ड में बाहर जो कुछ भी दिखाई पड़ता है वह सबका सब सपना है। पारब्रह्म इसके अन्दर नहीं है। सतगुरु कृपा से ही दूर परमधाम में बैठे पारब्रह्म की पहचान की। इनकी शोभा का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता।

सतगुर सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे।
प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्म सों, तब बिंद अनेक उड़ावे।।९ ।।

जब सच्चा सतगुरु मिलेगा तभी ब्रह्म और माया की पहचान हो सकेगी। जब पारब्रह्म की पहचान सतगुरु कराएंगे तब ऐसे अनेक ब्रह्माण्डों की चाहना खतम हो जाएगी।

महामत कहे बिंद बैठे ही उड़या, पाया सागर सुख सिंध।
अछरातीत अखण्ड घर पाया, ए निध पूरब सनमंध।।१० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सतगुरु की कृपा से इस माया की चाहना खत्म हो गई और अब अखण्ड सुख का सागर अक्षरातीत श्री राजजी महाराज और अखण्ड घर परमधाम अपनी निसबत (मूल सम्बन्ध) होने के कारण प्राप्त कर लिया।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १५ ।।

राग केदारो

साधो भाई चीन्हो सब्द कोई चीन्हो।
ऐसो उत्तम आकार तोकों दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हों।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो भाई! पहचानो, कोई तो इन पार के शब्दों को पहचानो। तुमको ऐसा सुन्दर मनुष्य तन मिला है जिससे उस सतगुरु की पहचान करो जिसने तुमको अखण्ड परमधाम का पारब्रह्म का ज्ञान दिया है।

मानखें देह अखण्ड फल पाइए, सो क्यों पाए के वृथा गमाइए।
ए तो अधखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नींदर।। २ ।।

मनुष्य तन से अखण्ड पारब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है और किसी तन से नहीं, इसलिए ऐसा मनुष्य तन प्राप्त करके व्यर्थ में क्यों गंवा रहे हो? यह तो तुम्हें आधे क्षण, अर्थात् सीमित समय के लिए अवसर मिला है। इसे अन्य जीवों की तरह अज्ञानता में क्यों गंवा रहे हो?

सब्दा कहे प्रगट प्रवान, सब्दा सतगुरसों करावे पेहेचान।
सतगुर सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे।। ३ ।।

शब्दों से (ज्ञान से) ही सतगुरु की और पारब्रह्म की पहचान होती है। सतगुरु तो हकीकत में वही है जो पारब्रह्म को दिखा दे जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं देखा। बिना उसकी पहचान किए आगे घर (परमधाम) जाना सम्भव नहीं है।

सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई।
सब स्यानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई।। ४ ।।

सतगुरु सब धर्मग्रन्थों की वाणी से उस एक पारब्रह्म की पहचान कराते हैं, क्योंकि सब ग्रन्थों में पारब्रह्म एक ही है, ऐसा लिखा है, किन्तु अज्ञानी लोग ही उन ग्रन्थों में भिन्नता बताते हैं।

Nijanand App

सास्त्रों में सबे सुध पाइए, पर सतगुर बिना क्यों लखाइए।
सब सास्त्र सब्द सीधा कहे, पर ज्यों मेर तिनके आड़े रहे।।५।।

धर्मग्रन्थों में सारी जानकारी पारब्रह्म की लिखी है पर बिना सतगुरु के उसके भेद कोई बता नहीं सकता। धर्मग्रन्थ तो स्पष्ट कहते हैं, परन्तु जैसे तिनके के आगे पहाड़ छिप जाता है, वैसे ही घुण्डियां लगी हैं, अर्थात् जैसे आंख के सामने तिनका रख लेने से हम पहाड़ नहीं देख सकते, उसी तरह से यह माया रूपी तिनका पारब्रह्म जैसे पहाड़ को छिपा देता है।

सो तिनका मिटे सतगुर के संग, तब पारब्रह्म प्रकासे अखंड।
सतगुरजी के चरन पसाए, सब्दों बड़ी मत समझाए।।६।।

सतगुरु की संगति से ही शब्दों की घुण्डियां (भेद) खुल जाती हैं तथा माया रूपी तिनका हट जाता है और पारब्रह्म और अखण्ड घर की पहचान हो जाती है। सतगुरु के चरणों की कृपा से ही शब्दों में छिपे भेदों को जाना जा सकता है।

तब खोज सब्द को लीजे तत्व, तौल देखिए बड़ी केही मत।
जासों पाइए प्रान को आधार, सो क्यों सोए गमावे रे गमार।।७।।

इसके बाद धर्मग्रन्थों के शब्दों को खोजकर सार वस्तु ग्रहण करो और फिर विचार कर देखो कि किसने कहां तक का ज्ञान दिया है। जिन शब्दों से अपने प्राणों के आधार पारब्रह्म मिलते हैं, उसे गंवार लोग व्यर्थ माया की चाहना में गंवा देते हैं।

यामें बड़ी मत को लीजे सार, सतगुर याहीं देखावें पार।
इतहीं बैकुंठ इतहीं सुन्य, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म।।८।।

इस संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान को ग्रहण करो। उस जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से सतगुरु यहीं बैठे-बैठे पार की पहचान करा देंगे। वह यहां बैठे ही बैकुण्ठ, शून्य तथा बेहद के पार पूर्ण ब्रह्म की पहचान करा देंगे।

ए बानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार।
मूढ़मती न जाने विचार, महामत कहें पुकार पुकार।।९।।

यह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी संसार में गर्जना कर रही है। खोज करने वाले इसे पाकर अपना अज्ञान मिटाते हैं। जिनकी बुद्धि ही मूढ़ है वह इसका विचार नहीं कर सकते और माया में लिपटे रहते हैं। इसलिए महामतिजी पुकार-पुकार कर सावचेत कर रहे हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २४ ।।

राग श्री गौड़ी

साधो हम देख्या बड़ा तमासा।
विश्व देख भया मैं विस्मय, देख देख आवत मोहे हासा।।१।।

हे साधो! हमने इस संसार में बड़ा विचित्र तमाशा देखा है। जिसे देखकर मुझे हैरानी भी होती है और हंसी भी आती है।

मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे।
पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे।।२।।

यहां के लोग मेरी-मेरी करते हैं और सारे ब्रह्माण्ड का बोझ सिर पर लेते हैं। एक सांस का भी भरोसा नहीं है फिर भी पारब्रह्म को याद नहीं करते।

Nijanand App

सास्त्रों में सबे सुध पाइए, पर सतगुर बिना क्यों लखाइए।
सब सास्त्र सब्द सीधा कहे, पर ज्यों मेर तिनके आड़े रहे।।५ ।।

धर्मग्रन्थों में सारी जानकारी पारब्रह्म की लिखी है पर बिना सतगुरु के उसके भेद कोई बता नहीं सकता। धर्मग्रन्थ तो स्पष्ट कहते हैं, परन्तु जैसे तिनके के आगे पहाड़ छिप जाता है, वैसे ही घुण्डियां लगी हैं, अर्थात् जैसे आंख के सामने तिनका रख लेने से हम पहाड़ नहीं देख सकते, उसी तरह से यह माया रूपी तिनका पारब्रह्म जैसे पहाड़ को छिपा देता है।

सो तिनका मिटे सतगुर के संग, तब पारब्रह्म प्रकासे अखंड।
सतगुरजी के चरन पसाए, सब्दों बड़ी मत समझाए।।६ ।।

सतगुरु की संगति से ही शब्दों की घुण्डियां (भेद) खुल जाती हैं तथा माया रूपी तिनका हट जाता है और पारब्रह्म और अखण्ड घर की पहचान हो जाती है। सतगुरु के चरणों की कृपा से ही शब्दों में छिपे भेदों को जाना जा सकता है।

तब खोज सब्द को लीजे तत्व, तौल देखिए बड़ी केही मत।
जासों पाइए प्रान को आधार, सो क्यों सोए गमावे रे गमार।।७ ।।

इसके बाद धर्मग्रन्थों के शब्दों को खोजकर सार वस्तु ग्रहण करो और फिर विचार कर देखो कि किसने कहां तक का ज्ञान दिया है। जिन शब्दों से अपने प्राणों के आधार पारब्रह्म मिलते हैं, उसे गंवार लोग व्यर्थ माया की चाहना में गंवा देते हैं।

यामें बड़ी मत को लीजे सार, सतगुर याहीं देखावें पार।
इतहीं बैकुंठ इतहीं सुन्य, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म।।८ ।।

इस संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान को ग्रहण करो। उस जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से सतगुरु यहीं बैठे-बैठे पार की पहचान करा देंगे। वह यहां बैठे ही बैकुण्ठ, शून्य तथा बेहद के पार पूर्ण ब्रह्म की पहचान करा देंगे।

ए बानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार।
मूढ़मती न जाने विचार, महामत कहें पुकार पुकार।।९ ।।

यह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी संसार में गर्जना कर रही है। खोज करने वाले इसे पाकर अपना अज्ञान मिटाते हैं। जिनकी बुद्धि ही मूढ़ है वह इसका विचार नहीं कर सकते और माया में लिपटे रहते हैं। इसलिए महामतिजी पुकार-पुकार कर सावचेत कर रहे हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २४ ।।

राग श्री गौड़ी

साधो हम देख्या बड़ा तमासा।
विश्व देख भया मैं विस्मय, देख देख आवत मोहे हासा।।१ ।।

हे साधो! हमने इस संसार में बड़ा विचित्र तमाशा देखा है। जिसे देखकर मुझे हैरानी भी होती है और हंसी भी आती है।

मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे।
पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे।।२ ।।

यहां के लोग मेरी-मेरी करते हैं और सारे ब्रह्माण्ड का बोझ सिर पर लेते हैं। एक सांस का भी भरोसा नहीं है फिर भी पारब्रह्म को याद नहीं करते।

Nijanand App

सिर ले काम करे माया को, निसंक पछाड़े आप अंग।
न करे भजन दोष देवें सांई को , कहे दया बिना न होवे साध संग।। ३ ।।

सब परिवार के पालक बनकर उनका बोझ ढोते हैं और सारा दिन अपने को उसी में थका देते हैं। उस पारब्रह्म का भजन स्मरण तो करते नहीं हैं और उल्टे परमात्मा को दोष देते हैं और कहते हैं कि उसकी कृपा के बिना सत्संग नहीं मिलता।

बांधत बंध आपको आपे, न समझे माया को मरम।
अपनों कियो न देखे अंधे, पीछे रोवें दोष दे दे करम।। ४ ।।

संसार के जीव ही अपने आप को माया के बन्धन में बांधते हैं और माया के भेद को नहीं समझते हैं। वह माया के मोह (सगे सम्बन्धी, बिरादरी) में इतने अन्धे हो जाते हैं कि उनको अपना भविष्य भी नहीं सूझता। जब समय हाथ से निकल जाता है, तब अपने कर्मों को दोष देकर रोते हैं।

समझे साध कहावें दुनी में, बाहेर देखावें आनन्द।
भीतर आग जले भरम की, कोई छूट न सके या फंद।। ५ ।।

दुनियां में साधु महात्मा को लोग ज्ञानी समझते हैं। बाहर के भेष से ऐसा लगता है कि वह आनन्द देंगे, परन्तु उनके अन्दर भी भ्रम की (माया की) आग लगी होती है। इस माया के फन्दे से कोई नहीं बचा।

परत नहीं पेहेचान पिंड की, सुध न अपनों घर।
मुखथें कहे मोहे संसे मिट्या, मैं देखे साध केते या पर।। ६ ।।

उनको न तो अपनी पहचान होती है और न अपने घर की ही पहचान होती है। मैंने कितने ही साधु ऐसे देखे जो मुख से कहते हैं कि उनके संशय मिट गए हैं और वह पारब्रह्म को जानते हैं।

साध सुने मैं देखे केते, अगम कर कर गावें।
नेहेचे जाए करें निराकार, या ठौर चित ठेहेरावें।। ७ ।।

मैंने कितने ही साधुओं को देखा और सुना है जो कहते हैं कि पारब्रह्म तक पहुंचा नहीं जा सकता। वह अगम है और अन्त में वह जाकर निराकार में ही अपना चित्त लगा लेते हैं और जीवन खो देते हैं।

जो न कछू गाम नाम न ठाम, सो सत सांई निराकार।
भरम के पिंड असत जो आपे, सो आप होत आकार।। ८ ।।

जिसका न कोई गाम (निवास) है, न ठाम (स्थान) है, न नाम है, उस निराकार को पारब्रह्म सत कहते हैं। जो स्वयं ही असत हैं, मिट जाने वाले हैं, उनको आकार कहते हैं और सत पारब्रह्म को निराकार कहते हैं।

जिन मंडल ए मांडे मंडप, थोभ न थंभ न बंध।
वाको नाहीं केहेत क्यों साधो, ए रच्यो किन कौन सनंध।। ९ ।।

जिस पारब्रह्म ने इस ब्रह्माण्ड को बनाया। इसमें न कोई खम्बा है और न कोई सहारा है। बनाने वाले पारब्रह्म को निराकार क्यों कहते हो? ऐसा निराकार कहने से ब्रह्माण्ड कैसे और किसके द्वारा बनाया गया अर्थात् निराकार, यह साकार ब्रह्माण्ड जो दिख रहा है, कैसे बनाएगा?

Nijanand App

जिन सायर खनाए पहाड़ चुनाए, रवि ससि नखत्र फिराए।
फिरत अहनिस रंग रुत फिरती, ऐसे अनेक वैराट बनाए।। १० ।।

जिस पारब्रह्म ने समुद्र खुदवाए, पहाड़ खड़े किए, सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र घुमाए, जिनके रात-दिन घूमने से ऋतु और रंग बनते हैं तथा जो ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड बनाने वाला है, निराकार कैसे हो सकता है?

जिन खिनमें तत्व पांच समारे, नास करे खिन मांहीं।
ए कहां से उपाय कहां ले समाए, ए विचारत क्यों नांहीं।। ११ ।।

जो एक पल में पांच तत्वों को बनाकर मिटा देता है, वह इन्हें कहां से बनाता है और कहां मिटाकर समा देता है? हे साधो! तुम इसका विचार क्यों नहीं करते और उसे निराकार कैसे कहते हो?

सतगुर साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम।
हद बेहद सबे समझावे, भाने मनको भरम।। १२ ।।

हे साधो! सतगुरु उसको कहना चाहिए जो पारब्रह्म की पहचान कराए। जो हद और बेहद के भेद समझावे (क्षर और अक्षर की पहचान कराए) और मन के संशय मिटाए।

महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख।
इन उलटीसे उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो न दिखने वाले पारब्रह्म को दिखा दे तथा इस माया से चित्त को पलटकर प्रेम से धनी के सम्मुख कर दे केवल उसे ही गुरु बनाना चाहिए।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || ३७ ||

राग श्री केदारो

नोट—यह प्रकरण ठट्ठानगर में चिन्तामणिजी को जगाने के लिए उतरा है। वही ज्ञान हमारे लिए भी है।

सुनो रे सतके बनजारे, एक बात कहूं समझाई।
या फंद बाजी रची माया की, तामें सब कोई रह्या उरझाई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सत के व्यापारियो! गुरुजनो! एक बात समझाकर कहता हूं, उसे सुनो। यह सारा संसार माया के फन्दे में जकड़ा हुआ है। इसमें सभी उलझे पड़े हैं।

आंटी आन के फांसी लगाई, वे भी उलटीऐं दई उलटाई।
बंध पर बंध दिए बिध बिध के, सो खोली किनहूं न जाई।। २ ।।

अपने ही हाथ से अपने ही गले में माया की उलटी फांसी लगा रखी है, अर्थात् गृहस्थ आश्रम छोड़कर आचार्य बने पर इस उलटी माया ने गुरु गद्दी के अहंकार में त्याग वृत्ति बदल दी। ऊपर से मान-सम्मान, लोकलाज-मर्यादा, धर्म-पन्थ, पैंडों के तथा जो यहां किसी से खुल नहीं सकते, ऐसे तरह-तरह के बन्धन लगा दिए, अर्थात् सबके साथ उठना, बैठना, खाना-पीना समभाव छूट गया। इस प्रकार ऐसे कठिन बन्धन स्वयं बांध लिए जिससे छूटना कठिन है।

Nijanand App

जिन सायर खनाए पहाड़ चुनाए, रवि ससि नखत्र फिराए।
फिरत अहनिस रंग रुत फिरती, ऐसे अनेक वैराट बनाए।। १० ।।

जिस पारब्रह्म ने समुद्र खुदवाए, पहाड़ खड़े किए, सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र घुमाए, जिनके रात-दिन घूमने से ऋतु और रंग बनते हैं तथा जो ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड बनाने वाला है, निराकार कैसे हो सकता है?

जिन खिनमें तत्व पांच समारे, नास करे खिन मांहीं।
ए कहां से उपाय कहां ले समाए, ए विचारत क्यों नांहीं।। ११ ।।

जो एक पल में पांच तत्वों को बनाकर मिटा देता है, वह इन्हें कहां से बनाता है और कहां मिटाकर समा देता है? हे साधो! तुम इसका विचार क्यों नहीं करते और उसे निराकार कैसे कहते हो?

सतगुर साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम।
हद बेहद सबे समझावे, भाने मनको भरम।। १२ ।।

हे साधो! सतगुरु उसको कहना चाहिए जो पारब्रह्म की पहचान कराए। जो हद और बेहद के भेद समझावे (क्षर और अक्षर की पहचान कराए) और मन के संशय मिटाए।

महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख।
इन उलटीसे उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो न दिखने वाले पारब्रह्म को दिखा दे तथा इस माया से चित्त को पलटकर प्रेम से धनी के सम्मुख कर दे केवल उसे ही गुरु बनाना चाहिए।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || ३७ ||

राग श्री केदारो

नोट—यह प्रकरण ठट्ठानगर में चिन्तामणिजी को जगाने के लिए उतरा है। वही ज्ञान हमारे लिए भी है।

सुनो रे सतके बनजारे, एक बात कहूं समझाई।
या फंद बाजी रची माया की, तामें सब कोई रह्या उरझाई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सत के व्यापारियो! गुरुजनो! एक बात समझाकर कहता हूं, उसे सुनो। यह सारा संसार माया के फन्दे में जकड़ा हुआ है। इसमें सभी उलझे पड़े हैं।

आंटी आन के फांसी लगाई, वे भी उलटीऐं दई उलटाई।
बंध पर बंध दिए बिध बिध के, सो खोली किनहूं न जाई।। २ ।।

अपने ही हाथ से अपने ही गले में माया की उलटी फांसी लगा रखी है, अर्थात् गृहस्थ आश्रम छोड़कर आचार्य बने पर इस उलटी माया ने गुरु गद्दी के अहंकार में त्याग वृत्ति बदल दी। ऊपर से मान-सम्मान, लोकलाज-मर्यादा, धर्म-पन्थ, पैंडों के तथा जो यहां किसी से खुल नहीं सकते, ऐसे तरह-तरह के बन्धन लगा दिए, अर्थात् सबके साथ उठना, बैठना, खाना-पीना समभाव छूट गया। इस प्रकार ऐसे कठिन बन्धन स्वयं बांध लिए जिससे छूटना कठिन है।

Nijanand App

चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठे को खेल झुठाई।
प्रगट नास व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई।।३।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में ऐसे ही अज्ञान का अंधेरा छाया है। यहां के परमात्मा भी झूठे हैं और उनका यह खेल भी झूठा है। व्यासजी ने स्पष्ट कहा है कि यह ब्रह्माण्ड जो बना है यह नष्ट होने वाला है और उसकी गवाही शुकदेवजी ने भी दी है।

लोक लाज मरजादा छोड़ी, तब ग्यान पदवी पाई।
एक आग ज्यों छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई।।४।।

तुम (धर्म के ठेकेदारों) ने संसार की लोक-लाज, मर्यादा को छोड़कर ज्ञानी और त्यागी बनने तथा महन्त आचार्य बनने के रूप धारण कर ज्ञानी की पदवी पाई। तुमने घर गृहस्थी की जिम्मेदारी की छोटी आग को बुझाया और उससे बड़ी आग मान एवं अहंकार, धर्म सम्भालने की, चेला मूंडने की लगा ली है।

कोट सेवक करो नाम निकालो, इष्ट चलाओ बड़ाई।
सेवा कराओ सतगुर केहेलाओ, पर अलख न देवे लखाई।।५।।

महन्त, आचार्य, गादीपति तथा जगद्‌गुरु, आदि बनकर लाखों सेवक बना लो तथा साक्षात् इष्ट बनकर अपना पंथ चलाओ। सेवकों से सेवा कराओ तथा सत का ज्ञान देने वाले सतगुरु की उपाधि भी ले लो, परन्तु उस पारब्रह्म सच्चिदानन्द की पहचान तुम्हें नहीं होगी।

अब छोड़ो रे मान गुमान ग्यान को, एही खाड़ बड़ी भाई।
एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई।।६।।

अब तुम इस झूठे ज्ञान को, मान को, अहंकार को तथा उपाधि को छोड़ दो। यह बहुत बड़ी खाई है। हे चिन्तामणि! तुमने जैसे गद्दी का मोह छोड़ा है वैसे ही अपने शिष्य में मान-मर्यादा रखने की भावना को भी त्याग दो और अन्दर-बाहर से निर्मल होकर धोखा देने वाली चतुराई को छोड़ दो।

सास्त्र पुरान भेख पंथ खोजो, इन पैंडों में पाइए नाहीं।
सतगुर न्यारा रहत सकल थें, कोई एक कुली में कांही।।७।।

शास्त्रों, पुराणों में, साधुओं के भेषों में, जुदा-जुदा धर्म के पन्थों में कितना ही खोजो, इसमें सत पारब्रह्म की पहचान देने वाला कोई नहीं मिलेगा। सत का ज्ञान देने वाला सतगुरु तो कलियुग में कहीं कोई एक मिलेगा।

सत चाहो सो सब्दा चीन्हो, सो आप न देवे देखाई।
जिन पाया तिन मांहें समाया, राखत जोर छिपाई।।८।।

यदि तुम पारब्रह्म से मिलना चाहते हो तो मेरे इन शब्दों को पहचानो। वह सतगुरु जिन्होंने पारब्रह्म को पा लिया है, तुम्हें ऐसे दिखाई नहीं देंगे। वह अपने अन्दर ही धनी को छिपाकर रखते हैं।

सुध सबे पाइए सब्दों से, जो होवे मूल सगाई।
खिन एक बिलम न कीजे तब तो, लीजे जीव जगाई।।९।।

सतगुरु की पहचान तो उनके शब्दों से ही होती है। यदि तुम्हारा उनसे मूल सम्बन्ध है तो फिर एक पल की देर किए बिना जीव को जगा लो।

Nijanand App

पर मनुआ दिए बिन हाथ न आवे, सत की बड़ी ठकुराई।
और उपाय याको कोई नाहीं, जिन देवे आप बड़ाई।। १० ।।

सत जो पारब्रह्म हैं उनकी बड़ी महानता है। उन्हें बिना समर्पण हुए प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके बिना उन्हें प्राप्त करने का कोई दूसरा उपाय नहीं है, इसलिए अपनी गादीपति, धर्माचार्य होने की भावना व पद को त्याग दो।

महामत कहें सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई।
झूठी छूटे सांची पाइए, सतगुर लीजे रिझाई।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे साथजी! तुम माया में सावधान हो जाओ। तुम्हारी निसबत होने के कारण ही धनी माया में आकर मिले हैं, अतः यदि इस झूठी दुनियां को छोड़कर अखण्ड परमधाम मिलता है तो ऐसे सतगुरु को रिझा लो।

|| प्रकरण || ५ || चौपाई || ४८ ||

राग गौड़ी

भाई रे बेहद के बनजारे, तुम देखो रे मनुए का खेल।
ए सब आग बिना दीया जले, याको रूई न बाती तेल।। १ ।।

हे भाई! तुम बेहद के ज्ञान देने वाले व्यापारी हो, इसलिए तुम इस मन के खेल को देखो। यह कुछ भी नहीं है, सपना है, यहां बिना आग के दीपक जलता है। जिसमें न रुई है, न बाती है और न तेल है, अर्थात् यहां किसी के अन्दर अखण्ड तारतम ज्ञान की जोत नहीं है। प्रेम का घी नहीं है। श्रद्धा और प्रेम लक्षणा भक्ति की बाती ही नहीं है। इस तरह से यह तन सूखे दीपक के समान है, जो काम, क्रोध, मोह, लोभ की अग्नि में जल रहा है।

चारों तरफों चौदे लोकों, बैकुंठ लग पाताल।
फूल पात फल नहीं या द्रखत को, काष्ट त्वचा मूल न डाल।। २ ।।

इस ब्रह्माण्ड में चौदह लोकों के चारों तरफ बैकुण्ठ से पाताल तक ऐसी पेड़ रूपी उलटी माया फैली है जिसमें फल, फूल, पत्ता, लकड़ी, छाल, जड़ और डाली कुछ भी नहीं है।

देत देखाई तत्व पांचों, मिल रचियो ब्रह्मांड।
जिनसे उपजे सो कछुए नाहीं, आप न पोते पिंड।। ३ ।।

यहां जो कुछ भी दिखाई पड़ता है वह पांच तत्व की मिली रचना है। यह पांचों तत्व जिससे बने हैं वह कुछ नहीं है। निराकार है अर्थात् उसका कोई स्वरूप, आकार, पिण्ड नहीं है।

नहीं पिंड पोते हाथ पांउ भी नाहीं, नाटक नाच देखावे।
मुख न जुबां कछू नहीं याको, और बानी विविध पेरे गावे।। ४ ।।

जब इसके रचने वाले का अपना ही तन नहीं है, हाथ, पांव नहीं हैं तो बिना इसके वजूद के यह सारा ब्रह्माण्ड कैसे नाच रहा है। इसका मुख नहीं है, जबान नहीं है और यह निराकार है तो यह बोलता कैसे है? यहां तरह-तरह के धर्म शास्त्र कैसे बने हैं?

Nijanand App

पर मनुआ दिए बिन हाथ न आवे, सत की बड़ी ठकुराई।
और उपाय याको कोई नाहीं, जिन देवे आप बड़ाई।। १० ।।

सत जो पारब्रह्म हैं उनकी बड़ी महानता है। उन्हें बिना समर्पण हुए प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके बिना उन्हें प्राप्त करने का कोई दूसरा उपाय नहीं है, इसलिए अपनी गादीपति, धर्माचार्य होने की भावना व पद को त्याग दो।

महामत कहें सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई।
झूठी छूटे सांची पाइए, सतगुर लीजे रिझाई।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे साथजी! तुम माया में सावधान हो जाओ। तुम्हारी निसबत होने के कारण ही धनी माया में आकर मिले हैं, अतः यदि इस झूठी दुनियां को छोड़कर अखण्ड परमधाम मिलता है तो ऐसे सतगुरु को रिझा लो।

|| प्रकरण || ५ || चौपाई || ४८ ||

राग गौड़ी

भाई रे बेहद के बनजारे, तुम देखो रे मनुए का खेल।
ए सब आग बिना दीया जले, याको रूई न बाती तेल।। १ ।।

हे भाई! तुम बेहद के ज्ञान देने वाले व्यापारी हो, इसलिए तुम इस मन के खेल को देखो। यह कुछ भी नहीं है, सपना है, यहां बिना आग के दीपक जलता है। जिसमें न रुई है, न बाती है और न तेल है, अर्थात् यहां किसी के अन्दर अखण्ड तारतम ज्ञान की जोत नहीं है। प्रेम का घी नहीं है। श्रद्धा और प्रेम लक्षणा भक्ति की बाती ही नहीं है। इस तरह से यह तन सूखे दीपक के समान है, जो काम, क्रोध, मोह, लोभ की अग्नि में जल रहा है।

चारों तरफों चौदे लोकों, बैकुंठ लग पाताल।
फूल पात फल नहीं या द्रखत को, काष्ट त्वचा मूल न डाल।। २ ।।

इस ब्रह्माण्ड में चौदह लोकों के चारों तरफ बैकुण्ठ से पाताल तक ऐसी पेड़ रूपी उलटी माया फैली है जिसमें फल, फूल, पत्ता, लकड़ी, छाल, जड़ और डाली कुछ भी नहीं है।

देत देखाई तत्व पांचों, मिल रचियो ब्रह्मांड।
जिनसे उपजे सो कछुए नाहीं, आप न पोते पिंड।। ३ ।।

यहां जो कुछ भी दिखाई पड़ता है वह पांच तत्व की मिली रचना है। यह पांचों तत्व जिससे बने हैं वह कुछ नहीं है। निराकार है अर्थात् उसका कोई स्वरूप, आकार, पिण्ड नहीं है।

नहीं पिंड पोते हाथ पांउ भी नाहीं, नाटक नाच देखावे।
मुख न जुबां कछू नहीं याको, और बानी विविध पेरे गावे।। ४ ।।

जब इसके रचने वाले का अपना ही तन नहीं है, हाथ, पांव नहीं हैं तो बिना इसके वजूद के यह सारा ब्रह्माण्ड कैसे नाच रहा है। इसका मुख नहीं है, जबान नहीं है और यह निराकार है तो यह बोलता कैसे है? यहां तरह-तरह के धर्म शास्त्र कैसे बने हैं?

Nijanand App

आतम नारायन नाचत बुध ब्रह्मा, निस दिन फिरे नारद मन।
वैराट नटवा नाचत विध विध सों, नचवत व्यास करम।। ५ ।।

इसकी आत्मा नारायण हैं और ब्रह्माजी की बुद्धि सबको नचा रही है। रात-दिन नारद रूपी मन भटक रहा है। ऊपर से व्यासजी ने कर्मकाण्ड बांध दिए हैं, जिससे इस संसार के जीव कर्मकाण्ड का नाच नाचते हैं।

ए मनुए की बाजी बाजी में मनुआ, जुदे जुदे खेल खेलावे।
बरना बरन खेलत सब ऐसे, नए नए स्वांग बनावे।। ६ ।।

यह संसार अक्षर के मन (अव्याकृत) से बना है जिसमें नारायण तरह-तरह के खेल खिला रहा है (जो सपने में अव्याकृत के मन का रूप है)। इस खेल में लोग तरह-तरह के स्वांग और भेष बनाकर जाति-पाति और पंथों में खेलते हैं।

पारब्रह्म तो पूरन एक है, ए तो अनेक परमेश्वर कहावें।
अनेक पंथ सब्द सब जुदे जुदे, और सब कोई सास्त्र बोलावे।। ७ ।।

यह संसार के जीव अपने-अपने पंथों के अलग-अलग परमेश्वर (परमात्मा) बनाकर पूज रहे हैं, जबकि सब दुनियां का पूर्ण पारब्रह्म एक ही है जिसको संसार के पंथों में (धर्मों में) जुदे-जुदे ग्रन्थ जुदी-जुदी भाषा तथा अलग-अलग वाणी में बोलते हैं।

रब्द करे औरन को निंदे, आपको आप बढ़ावे।
ग्यान कथे गुन गाए आपके, होहोकार मचावे।। ८ ।।

वह आपस में झगड़ते हैं। अपने को सयाना (ज्ञानी) कहते हैं और दूसरों की निन्दा करते हैं। अपने मुख से अपना ज्ञान कहकर शिष्यों से अपनी जय-जयकार करवाकर प्रशंसा कराते हैं।

दुबधा दिल में अवगुन ढूंढ़े, गुन चितसों न लगावें।
भटकत फिरे भरम में भूले, अंग में आग धखावें।। ९ ।।

उनके दिलों में दुविधा है। दृढ़ता नहीं है। वह दूसरों के अवगुण ढूंढते हैं। गुण नहीं देखते। इस तरह से संशय में डूबे भटकते फिरते हैं और संशय की आग में जलते हैं।

केते आप कहावें परमेश्वर, केते करत हैं पूजा।
साध सेवक होए आगे बैठे, कहें या बिन कोई नहीं दूजा।। १० ।।

इस संसार के कितने ही धर्माचार्य अपने को परमात्मा कहलवाते हैं और कितने ही उनकी पूजा करते हैं। ऐसे आचार्य के सामने उनके सेवक आगे आकर बैठते हैं और कहते हैं कि हमारे गुरु के समान कोई दूसरा नहीं है।

सास्त्र सब्द को अर्थ न सूझे, मत लिए चलत अहंकार।
आप न चीन्हें घर न सूझे, यों खेलत मांझ अंधार।। ११ ।।

ऐसे धर्म-गुरुओं को शास्त्रों के शब्दों तक की सुध नहीं होती। वह घमण्ड में डूबे अपनी ही अक्ल के अनुसार चलते हैं। वह न तो स्वयं को पहचानते हैं और न उन्हें मूल घर की ही पहचान होती है। इस तरह से अज्ञानता के अन्धकार में भटकते हैं।

Nijanand App

बाजी एक देखाऊं दूजी, जो खेलत हैं उजियारे।
भेख बनाए के नाचत सनमुख, एक ठाट लिए चारे।। १२ ।।

एक और दूसरा खेल दिखाती हूं जो धर्मों के ज्ञानी लोग जैसे चारों सनकादिक खेल रहे हैं। यह तरह-तरह के साधुओं के भेष बनाकर बड़े ठाट-बाट से चलते हैं और उनके सामने उनके सेवक नाचते-कूदते चलते हैं।

आतम विष्णु नाचत बुध सनतजी, गोकुल ग्रह्यो सिव मन।
करम सुकदेव नाचत नचवत, गावत प्रगट वचन।। १३ ।।

यहां संसार में विष्णु का जीव जगत की बुद्धि के मालिक ब्रह्मा के मानसी पुत्र सनत कुमार तथा गोकुल की लीला को अन्त:करण में धारण करने वाले शिवजी तथा इन सब के संग जगत को कर्मकाण्ड के बन्धन में बांधकर शुकदेव मुनि भी अपने नियमों में बंधे नाच रहे हैं। इस बात को शास्त्रों में स्पष्ट कहा है।

ए सब खेल करत है मनुआ, भांत भांत रिझावे।
ब्रह्मवासना कोई पारथीं पेखे, सो भी दृष्ट मुरछावे।। १४ ।।

यह सारा खेल आदि नारायण जो सुपने में अव्यक्त का रूप है, तरह-तरह से बनाकर जीव को रिझाता है। परमधाम की ब्रह्मसृष्टि बैठे-बैठे परमधाम से देख रही है। उनकी भी नजर यहां धुंधली पड़ गई।

इस मनुए को कोई न पेहेचाने, जो तुम सकल मिलो संसार।
सब कोई देखे यामें मनुआ, या मनुआ में सब विस्तार।। १५ ।।

इस अव्याकृत के मन के स्वरूप नारायण को कोई नहीं पहचान सकता। चाहे सारा संसार भी क्यों न मिल जाए। सब कोई इस संसार में इस मन (नारायण) का ही विस्तार देखते हैं, क्योंकि यह मन ही सबके अन्दर व्यापक है (नारायण सबके अन्दर है)।

बोहोत पुकार करूं किस खातिर, ए सब सुपन सरूप।
बेहद बनज का होएगा साथी, सो एक लवे होसी टूक टूक।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह सारा संसार सपने का ही रूप है। तो ज्यादा किसके लिए पुकार करूं। इस संसार में यदि कोई परमधाम की आत्मा होगी तो वह एक शब्द के सुनते ही जागृत हो जाएगी।

महामत ए सनमंधे पाइए, ऐसा अखंड सुख अपार।
गुर प्रसादें नाटक पेख्या, पाया मन मन का प्रकार।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मूल परमधाम की निसबत से ही अखण्ड सुख की प्राप्ति होती है। हमने सतगुरु की कृपा से इस नाटक को देखा। सब जगह मन का रूप देखने को मिला। मन का मन क्या है भेद पाया, अर्थात् अक्षर का मन अव्यक्त और अव्याकृत का मन नारायण का पता चला।

|| प्रकरण || ६ || चौपाई || ६५ ||

राग मारू

हो मेरी वासना, तुम चलो अगम के पार।
अगम पार अपार पार, तहां है तेरा करार।
तूं देख निज दरबार अपनों, सुरत एही संभार।। १ ।।

हे मेरी परमधाम की आत्माओ! तुम बेहद के पार परमधाम चलो। बेहद के पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत धाम ही तुम्हारा घर है जहां तुम्हें करार (शान्ति) मिलेगी। हे आत्माओ! तुम अपने मूल घर परमधाम की तरफ ध्यान करो और अपनी सुरता को वहीं लगाओ।

Nijanand App

बाजी एक देखाऊं दूजी, जो खेलत हैं उजियारे।
भेख बनाए के नाचत सनमुख, एक ठाट लिए चारे।। १२ ।।

एक और दूसरा खेल दिखाती हूं जो धर्मों के ज्ञानी लोग जैसे चारों सनकादिक खेल रहे हैं। यह तरह-तरह के साधुओं के भेष बनाकर बड़े ठाट-बाट से चलते हैं और उनके सामने उनके सेवक नाचते-कूदते चलते हैं।

आतम विष्णु नाचत बुध सनतजी, गोकुल ग्रह्यो सिव मन।
करम सुकदेव नाचत नचवत, गावत प्रगट वचन।। १३ ।।

यहां संसार में विष्णु का जीव जगत की बुद्धि के मालिक ब्रह्मा के मानसी पुत्र सनत कुमार तथा गोकुल की लीला को अन्तःकरण में धारण करने वाले शिवजी तथा इन सब के संग जगत को कर्मकाण्ड के बन्धन में बांधकर शुकदेव मुनि भी अपने नियमों में बंधे नाच रहे हैं। इस बात को शास्त्रों में स्पष्ट कहा है।

ए सब खेल करत है मनुआ, भांत भांत रिझावे।
ब्रह्मवासना कोई पारथीं पेखे, सो भी दृष्ट मुरछावे।। १४ ।।

यह सारा खेल आदि नारायण जो सुपने में अव्यक्त का रूप है, तरह-तरह से बनाकर जीव को रिझाता है। परमधाम की ब्रह्मसृष्टि बैठे-बैठे परमधाम से देख रही है। उनकी भी नजर यहां धुंधली पड़ गई।

इस मनुए को कोई न पेहेचाने, जो तुम सकल मिलो संसार।
सब कोई देखे यामें मनुआ, या मनुआ में सब विस्तार।। १५ ।।

इस अव्याकृत के मन के स्वरूप नारायण को कोई नहीं पहचान सकता। चाहे सारा संसार भी क्यों न मिल जाए। सब कोई इस संसार में इस मन (नारायण) का ही विस्तार देखते हैं, क्योंकि यह मन ही सबके अन्दर व्यापक है (नारायण सबके अन्दर है)।

बोहोत पुकार करूं किस खातिर, ए सब सुपन सरूप।
बेहद बनज का होएगा साथी, सो एक लवे होसी टूक टूक।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह सारा संसार सपने का ही रूप है। तो ज्यादा किसके लिए पुकार करूं। इस संसार में यदि कोई परमधाम की आत्मा होगी तो वह एक शब्द के सुनते ही जागृत हो जाएगी।

महामत ए सनमंधे पाइए, ऐसा अखंड सुख अपार।
गुर प्रसादें नाटक पेख्या, पाया मन मन का प्रकार।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मूल परमधाम की निसबत से ही अखण्ड सुख की प्राप्ति होती है। हमने सतगुरु की कृपा से इस नाटक को देखा। सब जगह मन का रूप देखने को मिला। मन का मन क्या है भेद पाया, अर्थात् अक्षर का मन अव्यक्त और अव्याकृत का मन नारायण का पता चला।

|| प्रकरण || ६ || चौपाई || ६५ ||

राग मारू

हो मेरी वासना, तुम चलो अगम के पार।
अगम पार अपार पार, तहां है तेरा करार।
तूं देख निज दरबार अपनों, सुरत एही संभार।। १ ।।

हे मेरी परमधाम की आत्माओ! तुम बेहद के पार परमधाम चलो। बेहद के पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत धाम ही तुम्हारा घर है जहां तुम्हें करार (शान्ति) मिलेगी। हे आत्माओ! तुम अपने मूल घर परमधाम की तरफ ध्यान करो और अपनी सुरता को वहीं लगाओ।

Nijanand App

तूं कहा देखे इन खेल में, ए तो पड़यो सब प्रतिबिंब।
प्रपंच पांचो तत्व मिल, सब खेलत सुरत के संग।। २ ।।

हे आत्माओ! तुम संसार में क्या देख रही हो? यह तो सब नकल है। सपना है। यहां पर पांच तत्व से मिल करके यह झूठा ब्रह्माण्ड खड़ा है जिसमें सब जीव खेल रहे हैं।

यामें गुनी ग्यानी मुनी महंत, अगम कर कर गावें।
सुनें सीखें पढ़ें पंडित, पार कोई न पावें।। ३ ।।

इस संसार में गुणीजन, मुनिजन, पढ़े-लिखे ज्ञानी, साधु-महात्मा, आचार्यगण यही कहते हैं कि परमात्मा अगम है। वहां जाया नहीं जा सकता। यहां के पढ़े-लिखे पण्डित लोग भी आगे नहीं जा सके।

तूं देख दरसन पंथ पैंडे, करें किव सिध साध।
चढ़ी चौदे सुन्य समावें, तहां आड़ी अगम अगाध।। ४ ।।

हे मेरी आत्मा! तुम इन पंथ पैंडों के, धर्मों के ज्ञान को देखो। यहां पर साधु और साधक किस प्रकार मनगढंत कविता करते हैं। ज्ञान के द्वारा चौदह लोकों का वर्णन करते हैं फिर उस निराकार में ही समा जाते हैं, जिसका पारावार नहीं है।

ए भरम बाजी रची रामत, बहु विधें संसार।
ए जो नैन देखे श्रवन सुने, सब मूल बिना विस्तार।। ५ ।।

इस संसार में अनेक प्रकार से ऐसे छल से खेल रचा हुआ है। यहां जो कुछ नैनों से देख रहे हैं या कानों से सुन रहे हैं, सब निराधार है, बिना मूल का है।

वैराट सब हम देखिया, वैकुंठ विष्णु सेखसांई।
सुन्यथें जैसे जल बतासा, सो सुन्य मांझ समाई।। ६ ।।

हमने चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को देखा, जिसमें बैकुण्ठ से लेकर शेषशायी नारायण तक सभी जल के बताशा (बुलबुला) के समान निराकार से बने हैं और उसी में ही समा जाते हैं।

ए तूं देख नाटक निमख को, अब करे कहा विचार।
पाउ पल में उलंघ ले, ब्रह्मांड सुन्य निराकार।। ७ ।।

हे आत्मा! यह नाटक एक पल का है। इसे देखकर क्या विचार आता है? एक पल के चौथाई भाग के समय में ही इस शून्य निराकार के मण्डल को पार कर अपने घर परमधाम चली जा।

तेरे बीच बाट घाट न तत्व कोई, तूं करे पांउं बिना पंथ।
निरंजन के परे न्यारा, तहां है हमारा कंथ।। ८ ।।

तेरे घर जाने के रास्ते में किसी तरह की बाधा नहीं आने वाली है। तुझे बिना पैर के, अर्थात् बिना कोई कर्मकाण्ड किए निराकार के पार प्रेम लक्षणा मार्ग से चलना है जहां अपने धनी विराजमान हैं।

अब पार सुख क्यों प्रकासिए, ए है अपनों विलास।
महामत मनसा मिट गई, सब सुपन केरी आस।। ९ ।।

अब अपने अखण्ड घर के सुख को कैसे कहा जाए। यह अपने आनन्द करने का ठिकाना है। श्री महामतिजी कहते हैं कि इसकी पहचान कर लेने से स्वप्न की सब चाहना ही मिट गई।

|| प्रकरण || ७ || चौपाई || ७४ ||

Nijanand App

राग विलावर

हो भाई मेरे वैष्णव कहिए वाको, निरमल जाकी आतम।
नीच करम के निकट न जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे भाई! जिसकी आत्मा (अंतःकरण) निर्मल हो, जो नीच कर्म के पास न जाता हो और जिसे पारब्रह्म की पहचान हो गई हो, उसे ही वैष्णव कहना चाहिए।

इस्क लगाए पिया सों पूरा, खेले अबला होए अहनिस।
ओ अंधे अग्यानी भरम में भूले, पर या ठौर प्रेम को रस।। २ ।।

वैष्णवों को अपने पिया से भरपूर प्यार करना चाहिए और रात-दिन अपने को पारब्रह्म की अबला (नारी) के समान समझना चाहिए। यह नकली, अन्धे, अज्ञानी वैष्णव संशय में भटकते फिरते हैं, जबकि सच्चे वैष्णव को प्रेम में मग्न रहना चाहिए।

जब आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, तब भयो आतम निवेद।
या विध लोक लखे नहीं कोई, कोई भागवंती जाने ए भेद।। ३ ।।

जब आत्मा की नजर परआतम से जुड़ जाती है तभी आत्मा का कल्याण होता है। इस बात को कोई संसारी जीव नहीं देखता। कोई सुहागिनी परमधाम की आत्मा ही इस भेद को समझ सकेगी।

जब वैष्णव अंग किए री अपरस, और कैसी अपरसाई।
परस भयो जाको परसोतम सों, सो बाहेर न देवे देखाई।। ४ ।।

जब वैष्णवों का पारब्रह्म से मिलन हो गया, तो फिर दुनियां की छुआछूत कैसी? पुरुषोत्तम का मिलन आत्मा से होता है जो बाहर से दिखाई नहीं देता, अर्थात् वह दिखावा नहीं करते।

अहनिस आवेस हुअडा अंग में, जैसे मद चढ्यो महामत।
वाकों आसा और न उपजे तृष्णा, वह एकैसों एक चित।। ५ ।।

श्री महामतीजी कहते हैं कि उसे रात-दिन पारब्रह्म के प्रेम की मस्ती चढ़ी रहती है और वह उसी एक ब्रह्म में ही चित्त लगाए रहता है। उसे संसार से कोई आशा और तृष्णा नहीं होती।

उतपंन प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन हो गयो संसार।
प्रेम बिना सुख पार को नाहीं, जो तुम अनेक करो आचार।। ६ ।।

वह पारब्रह्म के प्रेम में रंग जाता है और संसार को सपने का ही रूप समझता है। बिना पारब्रह्म के प्रेम के अखण्ड सुख की प्राप्ति नहीं होती चाहे कितने ही कर्मकाण्ड के नियमों का पालन किया जाय।

सांचा री साहेब सांचसों पाइए, सांच को सांच है प्यारा।
या वैष्णव की गत देखो रे वैष्णवो, महामत इनसे भी न्यारा।। ७ ।।

पारब्रह्म सच्चा है और सच के रास्ते से ही मिलता है, क्योंकि सच्चे पारब्रह्म को अपनी सच्ची ब्रह्मसृष्टि ही प्यारी है। श्री महामतिजी कहते हैं कि वैष्णव की ऐसी ही रहनी होनी चाहिए। पर जो परमधाम की आत्मा है वह इन सब दुनियां के कर्मकाण्ड से अलग है।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ८१ ।।

Nijanand App

राग विलावर

कहा भयो जो मुखथें कह्यो, जब लग चोट न निकसी फूट।
प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसी वाणी का क्या लाभ जो कही जाए और आत्मा को चोट न लगे। प्रेम-बाण तो ऐसे चुभते हैं जो अंग के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं (अर्थात् तन की सब चाहना मिट जाती है)।

मुख के सब्द मैं बोहोत सुने, इन भी कोई दिन किया पुकार।।
पर घायल भई सो तो कोईक कुली में, सो रहत भवसागर पार।। २ ।।

दूसरों को रास्ता बताने वाले बहुत से ज्ञानियों को मैंने सुना। इस कलियुग में बहुत दिनों तक उन्होंने तरह-तरह से पुकार की, परन्तु इससे चोट उन्हीं को लगी जो भवसागर से पार परमधाम में रहने वाली ब्रह्मसृष्टि है।

वाको आग खाग बाघ नाग न डरावें, गुन अंग इन्द्री से होत रहित।
डर सकल सांमी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत।। ३ ।।

ऐसी ब्रह्मसृष्टियों को अग्नि, गिद्ध, शेर, नाग नहीं डरा सकते, क्योंकि वह अपने गुण, अंग, इन्द्रियों के अधीन नहीं होते। वह तो अपने पिया के प्रेम में इस तरह से मग्न होते हैं कि संसार के सारे भय उनसे डरते हैं।

लगी वाली और कछू न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं।
ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं।। ४ ।।

जिस आत्मा को पारब्रह्म से लगन लग जाती है उसे फिर पिण्ड और संसार की सुध नहीं रहती। उसका तन संसार में देखने को ही दिखता है, पर वह तो अपने प्रीतम के प्रेम में डूबी रहती है।

जो कोई ऐसे मगन होए खेंले प्रेम में, तो या बिध हमको है री सेहेल।
पर पीवना प्रेम और मगन न होना, ए सुख औरों हैं मुस्किल।। ५ ।।

इस तरह से पिया के प्रेम में मगन होकर खेलना ब्रह्मसृष्टियों को बड़ा सरल है, क्योंकि वह प्रेम के पात्र हैं। प्रेम प्राप्त कर माया में लिप्त न होना दूसरों के लिए बड़ा कठिन है।

ए जिन कारन किया है कारज, सो ढूंढों सैयां जो पिया ने कही।
न तो अबहीं मगन होए खेलों प्रेम में, तब तो देखन कहन सुनन तें रही।। ६ ।।

यह खेल जिन ब्रह्मसृष्टियों के लिए बनाया है उन्हें ढूंढ़ो, ऐसा पिया ने कहा है। वरन् प्रेम में मैं मगन हो जाती तो फिर देखने, सुनने और कहने की कोई बात ही न रहती।

देखन को हम आए री दुनियां, हमहीं कारन कियो ए संच।
पार हमारे न्यारा नहीं, हम पार में बेठे देखे प्रपंच।। ७ ।।

हम इस दुनियां को देखने के लिए आए हैं और हमारे लिए ही यह दुनियां बनी है। हमसे पारब्रह्म जुदा नहीं है। हम घर में बैठे-बैठे ही इस प्रपंच (झूठ के सागर) को देख रहे हैं।

Nijanand App

जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार हमसे रहत है न्यारी।
दुःख में बैठी सुख लेवे महामति, पार के पार पिया की प्यारी।। ८ ।।

जिस माया ने चौदह लोकों को बनाया है वह हमसे दूर रहती है। श्री महामतिजी कहते हैं कि हम इस दु:ख के खेल में बैठ करके भी अपने अखण्ड घर के सुख पिया की प्यारी अंगना होने के कारण लेते हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ८९ ।।

राग श्री केदारो

सुनो भाई संतो कहूं रे महंतो, तुम अखंड मंडल जान पाया।
वैष्णव बानी पूछों गुर ग्यानी, ऐसा अंधेर धंधा क्यों ल्याया।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सन्तो! महंतो! सुनो, तुमने अखण्ड गोकुल की पहचान कैसे की? हे वैष्णवो! अपने गुरुओं और ज्ञानियों से पूछो कि वह ऐसा उल्टा रास्ता बताकर दुनियां को क्यों भरमा रहे हैं?

जिन गोकुल को तुम अखंड कहत हो, सो तुमारी दृष्टें न आया।
सुक जी के वचन में प्रगट लिख्या है, पर तुमको किने न बताया।। २ ।।

जिस गोकुल को तुम अखण्ड कहते हो, उसकी तो तुम्हें पहचान ही नहीं है। शुकदेवजी के वचनों में यह स्पष्ट लिखा है, पर तुम्हें कोई बताने वाला नहीं मिला कि वह अखण्ड गोकुल कहां है?

जाको तुम सतगुर कर सेवो, ताको इतनी पूछो खबर।
ए संसार छोड़ चलेंगे आपन, तब कहां है अपनों घर।। ३ ।।

जिसको तुम सतगुरु समझकर सेवा कर रहे हो, उनसे इतना पूछो कि जब हम इस संसार को छोड़कर चलेंगे तो मूल घर कहां है, जहां जाना होगा।

सब्द की वस्त सो तो महाप्रले लीनी, और ठौर बताओ मोही।
जाको सुध न आप और घर की, क्यों पार पावेगा सोई।। ४ ।।

यहां के शब्दों में जिसका वर्णन किया है वह तो महाप्रलय में नष्ट हो जाने वाला है। तो फिर जिसे अपनी और अपने घर की सुध नहीं है ऐसे सतगुरु के ज्ञान से कोई कैसे भवसागर से पार उतरेगा?

कोई आप बड़ाई अपने मुख थें, करो सो लाख हजार।
परमेश्वर होए के आप पुजाओ, पर पाओ नही भव पार।। ५ ।।

अपने मुख से अपनी ही बड़ाई भले करोड़ों बार करो तथा स्वयं परमेश्वर बनकर अपनी पूजा कराओ, परन्तु भवसागर से पार न जा पाओगे।

कोई सुध न पावे याकी, ऐसी माया सपरानी।
आपे प्रभु आपे सेवक, मांझे-मांझ उरझानी।। ६ ।।

यह मायाजाल यहां ऐसा फैला है कि किसी को इससे निकलने की सुध ही नहीं है। इसके अन्दर यहां के जीव ही परमात्मा हैं और जीव ही सेवक हैं। इस तरह से दोनों आपस में इस मायाजाल में उलझे पड़े हैं।

Nijanand App

जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार हमसे रहत है न्यारी।
दुःख में बैठी सुख लेवे महामति, पार के पार पिया की प्यारी।। ८ ।।

जिस माया ने चौदह लोकों को बनाया है वह हमसे दूर रहती है। श्री महामतिजी कहते हैं कि हम इस दुःख के खेल में बैठ करके भी अपने अखण्ड घर के सुख पिया की प्यारी अंगना होने के कारण लेते हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ८९ ।।

राग श्री केदारो

सुनो भाई संतो कहूं रे महंतो, तुम अखंड मंडल जान पाया।
वैष्णव बानी पूछों गुर ग्यानी, ऐसा अंधेर धंधा क्यों ल्याया।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सन्तो! महंतो! सुनो, तुमने अखण्ड गोकुल की पहचान कैसे की? हे वैष्णवो! अपने गुरुओं और ज्ञानियों से पूछो कि वह ऐसा उल्टा रास्ता बताकर दुनियां को क्यों भरमा रहे हैं?

जिन गोकुल को तुम अखंड कहत हो, सो तुमारी दृष्टें न आया।
सुक जी के वचन में प्रगट लिख्या है, पर तुमको किने न बताया।। २ ।।

जिस गोकुल को तुम अखण्ड कहते हो, उसकी तो तुम्हें पहचान ही नहीं है। शुकदेवजी के वचनों में यह स्पष्ट लिखा है, पर तुम्हें कोई बताने वाला नहीं मिला कि वह अखण्ड गोकुल कहां है?

जाको तुम सतगुर कर सेवो, ताको इतनी पूछो खबर।
ए संसार छोड़ चलेंगे आपन, तब कहां है अपनों घर।। ३ ।।

जिसको तुम सतगुरु समझकर सेवा कर रहे हो, उनसे इतना पूछो कि जब हम इस संसार को छोड़कर चलेंगे तो मूल घर कहां है, जहां जाना होगा।

सब्द की वस्त सो तो महाप्रले लीनी, और ठौर बताओ मोही।
जाको सुध न आप और घर की, क्यों पार पावेगा सोई।। ४ ।।

यहां के शब्दों में जिसका वर्णन किया है वह तो महाप्रलय में नष्ट हो जाने वाला है। तो फिर जिसे अपनी और अपने घर की सुध नहीं है ऐसे सतगुरु के ज्ञान से कोई कैसे भवसागर से पार उतरेगा?

कोई आप बड़ाई अपने मुख थें, करो सो लाख हजार।
परमेश्वर होए के आप पुजाओ, पर पाओ नही भव पार।। ५ ।।

अपने मुख से अपनी ही बड़ाई भले करोड़ों बार करो तथा स्वयं परमेश्वर बनकर अपनी पूजा कराओ, परन्तु भवसागर से पार न जा पाओगे।

कोई सुध न पावे याकी, ऐसी माया सपरानी।
आपे प्रभु आपे सेवक, मांझे-मांझ उरझानी।। ६ ।।

यह मायाजाल यहां ऐसा फैला है कि किसी को इससे निकलने की सुध ही नहीं है। इसके अन्दर यहां के जीव ही परमात्मा हैं और जीव ही सेवक हैं। इस तरह से दोनों आपस में इस मायाजाल में उलझे पड़े हैं।

Nijanand App

बाहेर भेख देख भुलाने, तुम भीतर खोज न कींनी।
भागवत वचन वल्लभी टीका, तुम याकी सुध न लींनी।।७।।

तुमने अपने गुरु के बाहरी भेष को देखा। उनके अन्दर कितना ज्ञान है इसकी खोज तुमने नहीं की। इस तरह से बड़ी भूल की। तुमने भागवत के सुबोधिनी टीका को नहीं देखा। इसलिए तुम्हें उसका ज्ञान नहीं मिला।

ए तो हाथ में वस्त कहूं दूर न देखाऊं, तुम देखो खोज विचारी।
सांच झूठ को प्रगट पारखो, कोई निकसो इन अंधारी।।८।।

हे सन्तो-महन्तो! तुम खोजो और विचार करके देखो जो सुबोधिनी टीका से स्पष्ट है। मैं दूर की बात नहीं करता। तुम इसी से सत और झूठ की पहचान कर इस माया के ब्रह्माण्ड से निकलो।

भवसागर और भागवत, याकी कुंजी एक समारी।
ए दोऊ ताले दोऊ दरवाजे, कोई खोल न सके संसारी।।९।।

भवसागर और भागवत दोनों की एक ही कुंजी है। यह दो ताले जो दो दरवाजों पर लगे हैं इनको कोई संसारी लोग नहीं खोल पाए, अर्थात् भवसागर से निकलने और भागवत के ज्ञान समझने की कुन्जी किसी के पास नहीं है।

ए संसार बड़ा है कोहेड़ा, और कोहेड़ा भागवत।
ए दोऊ एक कुंजी से खोलूं, जो कोई देखूं आगे संत।।१०।।

यह संसार और भागवत दोनों कोहेड़ा (धुंध) हैं। इन दोनों तालों को जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से किसी बुद्धिमान के सामने ही खोलूंगी।

जो कोई खप करे या निध की, सो नाखे आप निघात।
महामत कहे ताए अखंड सुख दीजे, टालिए संसारी ताप।।११।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस न्यामत की अगर कोई चाहना करे तो अपने आप की कुर्बानी दे, अर्थात् अपना अहम् (अहंकार) त्यागे तो उसे भवसागर के जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त कर अखण्ड सुख दे दूंगी।

|| प्रकरण || १० || चौपाई || १०० ||

राग श्री नट

रे हूं नाहीं रे हूं नाहीं सिध साध संत री भगत, नाहूं वैष्णव अपरस आचार।
जात कुटम कुल नीच ना ऊंच, ना हूं बरन अठार।।१।।

पारब्रह्म कहते हैं कि मैं न कोई सिद्ध हूं, न साधु हूं, न सन्त हूं, न भक्त हूं और न छुआ-छूत मानने वाले वैष्णवों में ही हूं। न मेरी कोई जाति है, न मेरा कोई परिवार है और न मेरा कोई कुल है। न मैं नीच जाति का हूं और न बड़ी जाति का हूं और न अठारह वर्णों में ही हूं।

रे हूं नाहीं व्रत दया संझा अगिन कुंड, ना हूं जीव जगन।
तंत्र न मंत्र भेख न पंथ, ना हूं तीरथ तरपन।।२।।

न मैं व्रत में, न दया में, न संध्या में, न अग्नि-कुण्ड में, हवन करने वालों में नहीं हूं—न मैं उन जीवों में हूं जो रात्रि में जागते हैं। तंत्र, मंत्र, भेष, पंथ, तीर्थ, आदि में—मैं नहीं हूं।

Nijanand App

बाहेर भेख देख भुलाने, तुम भीतर खोज न कींनी।
भागवत वचन वल्लभी टीका, तुम याकी सुध न लींनी।। ७ ।।

तुमने अपने गुरु के बाहरी भेष को देखा। उनके अन्दर कितना ज्ञान है इसकी खोज तुमने नहीं की। इस तरह से बड़ी भूल की। तुमने भागवत के सुबोधिनी टीका को नहीं देखा। इसलिए तुम्हें उसका ज्ञान नहीं मिला।

ए तो हाथ में वस्त कहूं दूर न देखाऊं, तुम देखो खोज विचारी।
सांच झूठ को प्रगट पारखो, कोई निकसो इन अंधारी।। ८ ।।

हे सन्तो-महन्तो! तुम खोजो और विचार करके देखो जो सुबोधिनी टीका से स्पष्ट है। मैं दूर की बात नहीं करता। तुम इसी से सत और झूठ की पहचान कर इस माया के ब्रह्माण्ड से निकलो।

भवसागर और भागवत, याकी कुंजी एक समारी।
ए दोऊ ताले दोऊ दरवाजे, कोई खोल न सके संसारी।। ९ ।।

भवसागर और भागवत दोनों की एक ही कुंजी है। यह दो ताले जो दो दरवाजों पर लगे हैं इनको कोई संसारी लोग नहीं खोल पाए, अर्थात् भवसागर से निकलने और भागवत के ज्ञान समझने की कुन्जी किसी के पास नहीं है।

ए संसार बड़ा है कोहेड़ा, और कोहेड़ा भागवत।
ए दोऊ एक कुंजी से खोलूं, जो कोई देखूं आगे संत।।१०।।

यह संसार और भागवत दोनों कोहेड़ा (धुंध) हैं। इन दोनों तालों को जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से किसी बुद्धिमान के सामने ही खोलूंगी।

जो कोई खप करे या निध की, सो नाखे आप निघात।
महामत कहे ताए अखंड सुख दीजे, टालिए संसारी ताप।।११।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस न्यामत की अगर कोई चाहना करे तो अपने आप की कुर्बानी दे, अर्थात् अपना अहम् (अहंकार) त्यागे तो उसे भवसागर के जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त कर अखण्ड सुख दे दूंगी।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ १०० ॥

राग श्री नट

रे हूं नाहीं रे हूं नाहीं सिध साध संत री भगत, नाहूं वैष्णव अपरस आचार।
जात कुटम कुल नीच ना ऊंच, ना हूं बरन अठार।। १ ।।

पारब्रह्म कहते हैं कि मैं न कोई सिद्ध हूं, न साधु हूं, न सन्त हूं, न भक्त हूं और न छुआ-छूत मानने वाले वैष्णवों में ही हूं। न मेरी कोई जाति है, न मेरा कोई परिवार है और न मेरा कोई कुल है। न मैं नीच जाति का हूं और न बड़ी जाति का हूं और न अठारह वर्णों में ही हूं।

रे हूं नाहीं व्रत दया संझा अगिन कुंड, ना हूं जीव जगन।
तंत्र न मंत्र भेख न पंथ, ना हूं तीरथ तरपन।। २ ।।

न मैं व्रत में, न दया में, न संध्या में, न अग्नि-कुण्ड में, हवन करने वालों में नहीं हूं—न मैं उन जीवों में हूं जो रात्रि में जागते हैं। तंत्र, मंत्र, भेष, पंथ, तीर्थ, आदि में—मैं नहीं हूं।

Nijanand App

रे हूं नाहीं करामात मत अगम निगम, धरम न करम उनमान।
सुपन सुषुप्त जाग्रत न तुरिया, तप न जप न ध्यान।। ३ ।।

मैं करामात की बुद्धि में अगम निगम की विचारधारा वाले वेद पाठियों में धर्म, कर्म, अटकल में भी नहीं हूं। मैं स्वप्न, सुषुप्ति, जागृत और तुरिया अवस्था में भी नहीं हूं। तप, जप और ध्यान करने वालों में भी मैं नहीं हूं।

रे हूं नाहीं अंग इंद्री ग्यान ब्रह्मचारी, ब्रह्मांड न लगत वचन।
रूप रंग रस धात में नाहीं, गुन पख दिवस ना रैन।। ४ ।।

मैं गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करने वालों में नहीं हूं। ब्रह्मचारियों में नहीं हूं। रूप, रंग, रस, धातु में नहीं हूं। तीन गुण, अंतःकरण (मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार), दिन और रात में नहीं हूं। ब्रह्माण्ड के दूसरे कोई शब्द मुझे नहीं लगते।

रे हूं नाहीं सब्द सोहं जो तत्व पांचमें, न खट चक्र सिर पवन।
त्रिकुटी त्रिवेनी तीनों ही काल में, न अनहद अजपा आसन।। ५ ।।

मैं सोऽहं शब्द के मानने वालों में नहीं हूं। पांच तत्वों के बने शरीर के पालने वालों में नहीं हूं। षट्चक्र शोधन करने वालों में नहीं हूं। मैं प्राणायाम में नहीं हूं। मैं त्रिकुटी (इला, पिंगला, सुषुम्ना) की त्रिवेणी में मन एकाग्र करने वालों में नहीं हूं। यहां भूत, वर्तमान और भविष्य काल में नहीं हूं। न अनहद, अजपा जाप करने वालों में हूं और न ही आसन और प्राणायाम करने वालों में हूं।

रे हूं नाहीं नवधा में मुक्त में भी नाहीं, न हूं आवा गवन।
वेद कतेब हिसाब में नाहीं, न मांहें बाहेर न सुंन।। ६ ।।

मैं नवधा भक्ति में नहीं हूं। बैकुण्ठ की चार मुक्तियों में नहीं हूं। जन्म-मरण के चक्कर में नहीं हूं। वेद और कतेबों के ज्ञान में नहीं हूं। न पिण्ड में हूं, न ब्रह्माण्ड में हूं और न निराकार में हूं।

रे हूं नाहीं न्यारा जहां हूं तहां नजीक में, न हूं उनमुनी आकार।
न हूं दृष्टें किन सुनिया री सृष्टें, न हूं निराकार।। ७ ।।

मैं अष्ट आवरण के ऊपर पांच शक्तियों में नहीं हूं जिनकी प्रधान उन्मुनी शक्ति है। इस सृष्टि में मुझे किसी ने देखा नहीं और न मेरी बाबत सुना ही। मैं निराकार में नहीं हूं।

तुम सांचे सिध साध भगवत तुमको वैष्णवो, सांच सकल संसार।
भनत महामत तुम अमर होउ याही में, मैं न कछू यामें निरधार।। ८ ।।

श्री महामतीजी कहते हैं, हे वैष्णवो! तुम अपनी सिद्धि साधना जिसे सत्य समझते हो और तुम जिस संसार को सत्य समझते हो, तुम इसी में अमर रहो। पारब्रह्म का इससे कोई सरोकार नहीं है।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। १०८ ।।

राग श्री गौड़ी

वचन विचारो रे मीठड़ी, वल्लभाचारज बानी।
अर्थ लिए बिना ए रे अंधेरी, करत सबों को फानी।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे वैष्णवो! तुम वल्लभाचार्य की मीठी वाणी पर विचार करो। इसके अर्थ न समझने के कारण ही तुम सबको नष्ट कर रहे हो। फानी (नश्वर) दुनियां में भटका रहे हो।

Nijanand App

रे हूं नाहीं करामात मत अगम निगम, धरम न करम उनमान।
सुपन सुषुप्त जाग्रत न तुरिया, तप न जप न ध्यान।। ३ ।।

मैं करामात की बुद्धि में अगम निगम की विचारधारा वाले वेद पाठियों में धर्म, कर्म, अटकल में भी नहीं हूं। मैं स्वप्न, सुषुप्ति, जागृत और तुरिया अवस्था में भी नहीं हूं। तप, जप और ध्यान करने वालों में भी मैं नहीं हूं।

रे हूं नाहीं अंग इंद्री ग्यान ब्रह्मचारी, ब्रह्मांड न लगत वचन।
रूप रंग रस धात में नाहीं, गुन पख दिवस ना रैन।। ४ ।।

मैं गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करने वालों में नहीं हूं। ब्रह्मचारियों में नहीं हूं। रूप, रंग, रस, धातु में नहीं हूं। तीन गुण, अंतःकरण (मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार), दिन और रात में नहीं हूं। ब्रह्माण्ड के दूसरे कोई शब्द मुझे नहीं लगते।

रे हूं नाहीं सब्द सोहं जो तत्व पांचमें, न खट चक्र सिर पवन।
त्रिकुटी त्रिवेनी तीनों ही काल में, न अनहद अजपा आसन।। ५ ।।

मैं सोऽहं शब्द के मानने वालों में नहीं हूं। पांच तत्वों के बने शरीर के पालने वालों में नहीं हूं। षट्चक्र शोधन करने वालों में नहीं हूं। मैं प्राणायाम में नहीं हूं। मैं त्रिकुटी (इला, पिंगला, सुषुम्ना) की त्रिवेणी में मन एकाग्र करने वालों में नहीं हूं। यहां भूत, वर्तमान और भविष्य काल में नहीं हूं। न अनहद, अजपा जाप करने वालों में हूं और न ही आसन और प्राणायाम करने वालों में हूं।

रे हूं नाहीं नवधा में मुक्त में भी नाहीं, न हूं आवा गवन।
वेद कतेब हिसाब में नाहीं, न मांहें बाहेर न सुंन।। ६ ।।

मैं नवधा भक्ति में नहीं हूं। बैकुण्ठ की चार मुक्तियों में नहीं हूं। जन्म-मरण के चक्कर में नहीं हूं। वेद और कतेबों के ज्ञान में नहीं हूं। न पिण्ड में हूं, न ब्रह्माण्ड में हूं और न निराकार में हूं।

रे हूं नाहीं न्यारा जहां हूं तहां नजीक में, न हूं उनमुनी आकार।
न हूं दृष्टें किन सुनिया री सृष्टें, न हूं निराकार।। ७ ।।

मैं अष्ट आवरण के ऊपर पांच शक्तियों में नहीं हूं जिनकी प्रधान उन्मुनी शक्ति है। इस सृष्टि में मुझे किसी ने देखा नहीं और न मेरी बाबत सुना ही। मैं निराकार में नहीं हूं।

तुम सांचे सिध साध भगवत तुमको वैष्णवो, सांच सकल संसार।
भनत महामत तुम अमर होउ याही में, मैं न कछू यामें निरधार।। ८ ।।

श्री महामतीजी कहते हैं, हे वैष्णवो! तुम अपनी सिद्धि साधना जिसे सत्य समझते हो और तुम जिस संसार को सत्य समझते हो, तुम इसी में अमर रहो। पारब्रह्म का इससे कोई सरोकार नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ १०८ ॥

राग श्री गौड़ी

वचन विचारो रे मीठड़ी, वल्लभाचारज बानी।
अर्थ लिए बिना ए रे अंधेरी, करत सबों को फानी।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे वैष्णवो! तुम वल्लभाचार्य की मीठी वाणी पर विचार करो। इसके अर्थ न समझने के कारण ही तुम सबको नष्ट कर रहे हो। फानी (नश्वर) दुनियां में भटका रहे हो।

Nijanand App

बानी गाऊं श्री वल्लभाचारज, ज्यों वैष्णव को सुख होए।
सत वचन बोहोत तो न कहूं, जानों दुख पावे दुष्ट कोए।। २ ।।

वैष्णवों को सुख देने के लिए मैं वल्लभाचार्य की वाणी का बखान करती हूं। हे वैष्णवो! तुम्हारी करनी की सच्ची बातें बहुत नहीं कहूंगी जिससे तुम्हें किसी प्रकार कष्ट हो।

ए बानी को टेढ़ा कहावो, ए कौन तुमारा धरम।
वैष्णव कहाए के उलटे चलिए, ए नहीं तिनके करम।। ३ ।।

वल्लभाचार्य की वाणी को तुम उलटी कहते हो, क्या यही तुम्हारा धर्म है? अपने आपको वैष्णव बतलाकर वाणी से उलटा चलना तुम्हें शोभा नहीं देता।

देखीते वैष्णव अति सुंदर, नीके बनावत भेख।
माला तिलक धोए धोती पेहेरे, एक दूजे के देख।। ४ ।।

हे वैष्णवो! तुम सुन्दर-सुन्दर भेष बनाकर देखने में अच्छे लगते हो। एक-दूसरे की देखादेखी माला, धोती पहनकर तिलक लगाते हो।

कौन तुम और कहां तें आए, और कहां तुमारा घर।
ए कौन भोम और कहां श्री कृष्ण जी, पाओगे कौन तर।। ५ ।।

तुम कौन हो, कहां से आए हो, तुम्हारा घर कहां है और यह भूमि कौन सी है? श्री कृष्णजी कहां पर हैं? यह सब कैसे पाओगे?

उत्तम भेख धरो वैष्णव के, और वैष्णव आप कहावो।
जो वैष्णव बस करे नव अंग, सो वैष्णव क्यों न जगावो।। ६ ।।

वैष्णवों के उत्तम भेष धारण कर तुम वैष्णव कहलवाते हो। वैष्णव तो उसको कहते हैं जो अपने नौ अंगों को वश में करे। ऐसे वैष्णव क्यों नहीं बनते हो?

तुम पांच के बांधे पांच देखत हो, पांच के चौदे भवन।
ए पांचों प्रले हो जासी, पीछे कब ढूंढ़ोगे अपना वतन।। ७ ।।

तुम पांच तत्व से बने हो। पांच तत्व को ही देखते हो। पांच तत्वों से ही यह चौदह भवन बने हैं। यह पांचों तत्व महाप्रलय में नष्ट हो जाएंगे, तो फिर अपने घर को कब ढूंढ़ोगे?

ए बानी तो अपरस करे आतम, तुम अपरस करो बाहेर अंग।
आकार अपरस किए कहा होए, इने आतम सों कैसो सनमंध।। ८ ।।

इस वाणी से तो आत्मा पवित्र होती है। तुम बाहर के अंगों को पवित्र करते हो। बाहर के अंगों की सफाई से आत्मा का क्या सम्बन्ध?

तुम झूठ को साजो समारो, जो झूठा होए जासी।
सांचे सुख देवे जो सांचा, सो कबे ओलखासी।। ९ ।।

तुम इसी झूठे तन को सजाते और संवारते रहो। यह एक दिन नष्ट हो जाएगा। सच्चा सुख देने वाले सत्य को तुम कब पहचानोगे?

Nijanand App

माांहें अंधेर और वैष्णव कहावो, ए तो बातें सब फोक।
ज्यों धूरत नाम धरावे धनवंत, पासे नहीं दमड़ी रोक।। १० ।।

तुम्हारे अन्दर अज्ञानता है और अपने आपको वैष्णव कहलवाते हो। यह बातें सब उसी तरह से झूठी हैं जिस तरह एक भिखारी का नाम धनवान होता है और उसके पास एक दमड़ी भी नहीं होती।

बिध न लहो विवाद करो, ना देखो वचन विचारी।
वल्लभ बानी समझे बिना, खोवत निध तुमारी।। ११ ।।

तुम आपस में विवाद करते हो। सार वस्तु को नहीं लेते हो। और न वल्लभाचार्य की वाणी पर विचार करते हो। उनकी वाणी को समझे बिना अपना मनुष्य तन गंवा देते हो।

अहंकारें कई जुलम करो, ना त्रास सील संतोख।
गुन अंग इंद्री के बस परे, ना देखो नजरों दोख।। १२ ।।

अहंकार में डूबकर बहुत से जुल्म करते हो। तुम्हारे अन्दर शील सन्तोष की चाहना नहीं है। तुम अपने गुण, अंग, इन्द्रियों के वश में पड़े हो और अपने दोषों को नहीं देखते हो।

धूरत करके ल्याओ धन, खरचो मुख करो उनमाद।
मेले मेलो मुख भाखो उछव, पातलिऐं डालो प्रसाद।। १३ ।।

छल और कपट से धन कमाते हो और अहंकार की मस्ती में डूबकर खर्च करते हो। बड़े-बड़े मेले भण्डारे करते हो और फिर भगवान श्री कृष्णजी के प्रसाद की पत्तलें बेचते हो।

एक सीत जूठ को ब्रह्मा जैसा, जल में मीन होए आया।
ए जूठ को महामत बानी देखावे, ग्वालों को चल्लू न कराया।। १४ ।।

ब्रह्माजी तो भगवान के प्रसाद के लिए मछली बनकर आए। प्रसाद का ऐसा महत्व तुम्हारी वाणी बताती है कि श्री कृष्णजी ने ग्वालों को यमुना तट पर कोगला (कुल्ला) नहीं करने दिया।

ओ हांसी ठठोली करे हरामी, ताए ले बैठो मंडली मुख।
ए नीच करम डबोवे नरक में, पीछे छूट पाओगे कब सुख।। १५ ।।

जो प्रसाद पर हंसी और मजाक उड़ाता है (प्रसाद अहीर का जूठा हो गया है। भगवान अहीर जाति के थे। हम नहीं खाएंगे) ऐसे हरामी वैष्णव को अपनी टोली का मुखिया बनाते हैं। ऐसे नीच कर्म नर्क में डुबाने वाले होते हैं। अखण्ड सुख के वास्ते इन कर्मों से कब छुटकारा पाओगे?

ए बानी उत्तम चढ़ावे ऊंचे, ए उलटे अधम स्वादे।
कठिन पंथ चढ़ाए नहीं ऊंचे, पीछे नीचे दौड़े नीच वादे।। १६ ।।

वल्लभाचार्य की वाणी तो जीवों को उत्तम मार्ग दिखाती है, परन्तु तुम तो उलटे इन्द्रियों के स्वाद में लगे हो। पार का पंथ टेढ़ा है जिस पर कर्मकाण्ड से चलना कठिन है। पीछे हारकर सरल मार्ग (आवागमन के चक्कर वाला) जीने का बना लेते हैं।

कुकरम करो कुटिल गत चालो, आगे पीछे चींटी हार।
वल्लभ कुंअर कितने को बरजे, कई उलटे सेवक संसार।। १७ ।।

खोटे कर्म करते हो। देखा देखी छल कपट की चाल चींटी की हार की तरह चलते हो। ऐसे उलटी चाल वाले संसार में बहुत सेवक हैं। वल्लभाचार्यजी कितनों को रोकें।

Nijanand App

दोष नहीं इन बानी केरो, ए तो दुष्ट दासी की कमाई।
अधम सिष्य गुर को बुरा कहावे, पर सोने न लगत स्याही।। १८ ।।

वल्लभाचार्य की वाणी का इसमें कोई दोष नहीं है। यह तो दुष्ट माया की कमाई का ही दोष है (जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन)। ऐसे नीच कर्म वाले शिष्य अपने गुरु को बुरा कहलाते हैं, अर्थात् गुरु की निन्दा करवाते हैं, परन्तु गुरुजन तो सोना होते हैं। उनको स्याही (दाग) नहीं लगती।

ए बानी तुम नाहीं पेहेचानी, यामें बिध बिध के प्रकास।
इन प्रकास में खेलें श्रीकृष्णजी, रमें अखंड लीला रास।। १९ ।।

तुमने वल्लभाचार्य की वाणी को पहचाना नहीं। उसमें तरह-तरह के ज्ञान भरे पड़े हैं। इस वाणी से ही श्री कृष्णजी की अखण्ड रास-लीला की पहचान होती है।

तुम पनधारी आतम निवेदी, बानी न देखो विचारी।
अजूं न मानो तो इत आओ, मैं देखाऊं लीला तुमारी।। २० ।।

तुम प्रतिज्ञा पालन करने वाले हो। मुक्ति के अभिलाषी हो, परन्तु वल्लभाचार्यजी की वाणी का विचार नहीं करते। केवल कर्मकाण्ड में फंसे हो। इसलिए अभी भी तुम्हारी समझ में न आया हो, तो मेरे पास आओ, मैं तुम्हारी हकीकत बताती हूं।

वैष्णव होए सो वचन मानसी, और जो वल्लभ बानी से टलिया।
महामत कहे सो काहे को जनम्या, गर्भ मांहें क्यों न गलिया।। २१ ।।

जो सच्चा वैष्णव होगा वही वल्लभाचार्यजी की वाणी को मानेगा। जो नहीं मानेगा श्री महामतिजी कहते हैं कि वह काहे को जन्मा है, उसे मां के गर्भ में ही गल जाना चाहिए था।

|| प्रकरण || १२ || चौपाई || १२९ ||

राग श्री

आज सांच केहेना सो तो काहू ना रुचे, तो भी कछुक प्रकासूं सत।
सत के साथी को सत के बान चूभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत।
अखंड सुख लागियो।। १ ।।

श्री महामतीजी कहते हैं कि आज सच्ची बात किसी को अच्छी नहीं लगती, फिर भी कुछ सत्य तो जाहिर करती हूं। जो सत्य का साथी होगा उसे तो यह बात अच्छी लगेंगी (चुभेंगी) और संसार के दुष्ट लोगों को दुःखी करेंगी। साथजी! तुम तो सच्ची बात पर चलकर अखण्ड सुख लेना।

वेद ने पुरान सास्त्र सब उपजे, पीछे भारथ पर्व अठार।
दाझ न मिटी तिन व्यास की, पीछे उदयो भागवत सार।। २ ।।

वेद, पुराण और शास्त्रों के बाद अठारह पर्व वाले महाभारत पुराण की रचना व्यासजी ने की, परन्तु व्यास की अग्नि शान्त नहीं हुई। तब सब के सार भागवत पुराण की रचना की।

ए सुख की सागर सत बानी प्रगटी, सो लई साधों विचार।
अधिक अमृत सुकें सींचिया, तिन देखाए दरवाजे पार।। ३ ।।

यह भागवत पुराण सुख का सागर है और सत पारब्रह्म का ज्ञान देने वाला है। यह विचार कर ज्ञानियों ने इसे ग्रहण किया। शुकदेवजी ने इसे और अमृतमयी बना दिया तथा हद के पार बेहद के दरवाजे खोल दिए।

Nijanand App

दोष नहीं इन बानी केरो, ए तो दुष्ट दासी की कमाई।
अधम सिष्य गुर को बुरा कहावे, पर सोने न लगत स्याही।। १८ ।।

वल्लभाचार्य की वाणी का इसमें कोई दोष नहीं है। यह तो दुष्ट माया की कमाई का ही दोष है (जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन)। ऐसे नीच कर्म वाले शिष्य अपने गुरु को बुरा कहलाते हैं, अर्थात् गुरु की निन्दा करवाते हैं, परन्तु गुरुजन तो सोना होते हैं। उनको स्याही (दाग) नहीं लगती।

ए बानी तुम नाहीं पेहेचानी, यामें बिध बिध के प्रकास।
इन प्रकास में खेलें श्रीकृष्णजी, रमें अखंड लीला रास।। १९ ।।

तुमने वल्लभाचार्य की वाणी को पहचाना नहीं। उसमें तरह-तरह के ज्ञान भरे पड़े हैं। इस वाणी से ही श्री कृष्णजी की अखण्ड रास-लीला की पहचान होती है।

तुम पनधारी आतम निवेदी, बानी न देखो विचारी।
अजूं न मानो तो इत आओ, मैं देखाऊं लीला तुमारी।। २० ।।

तुम प्रतिज्ञा पालन करने वाले हो। मुक्ति के अभिलाषी हो, परन्तु वल्लभाचार्यजी की वाणी का विचार नहीं करते। केवल कर्मकाण्ड में फंसे हो। इसलिए अभी भी तुम्हारी समझ में न आया हो, तो मेरे पास आओ, मैं तुम्हारी हकीकत बताती हूं।

वैष्णव होए सो वचन मानसी, और जो वल्लभ बानी से टलिया।
महामत कहे सो काहे को जनम्या, गर्भ मांहें क्यों न गलिया।। २१ ।।

जो सच्चा वैष्णव होगा वही वल्लभाचार्यजी की वाणी को मानेगा। जो नहीं मानेगा श्री महामतिजी कहते हैं कि वह काहे को जन्मा है, उसे मां के गर्भ में ही गल जाना चाहिए था।

|| प्रकरण || १२ || चौपाई || १२९ ||

राग श्री

आज सांच केहेना सो तो काहू ना रुचे, तो भी कछुक प्रकासूं सत।
सत के साथी को सत के बान चूभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत।
अखंड सुख लागियो।। १ ।।

श्री महामतीजी कहते हैं कि आज सच्ची बात किसी को अच्छी नहीं लगती, फिर भी कुछ सत्य तो जाहिर करती हूं। जो सत्य का साथी होगा उसे तो यह बात अच्छी लगेंगी (चुभेंगी) और संसार के दुष्ट लोगों को दुःखी करेंगी। साथजी! तुम तो सच्ची बात पर चलकर अखण्ड सुख लेना।

वेद ने पुरान सास्त्र सब उपजे, पीछे भारथ पर्व अठार।
दाझ न मिटी तिन व्यास की, पीछे उदयो भागवत सार।। २ ।।

वेद, पुराण और शास्त्रों के बाद अठारह पर्व वाले महाभारत पुराण की रचना व्यासजी ने की, परन्तु व्यास की अग्नि शान्त नहीं हुई। तब सब के सार भागवत पुराण की रचना की।

ए सुख की सागर सत बानी प्रगटी, सो लई साधों विचार।
अधिक अमृत सुकें सींचिया, तिन देखाए दरवाजे पार।। ३ ।।

यह भागवत पुराण सुख का सागर है और सत पारब्रह्म का ज्ञान देने वाला है। यह विचार कर ज्ञानियों ने इसे ग्रहण किया। शुकदेवजी ने इसे और अमृतमयी बना दिया तथा हद के पार बेहद के दरवाजे खोल दिए।

Nijanand App

भले या जुग में आचारज प्रगटे, जिन चरची सुक जी की बान।
धंन धंन टीका श्री वल्लभी, इन प्रेम प्रकास्यो परमान।। ४ ।।

इस युग में वल्लभाचार्य ने प्रगट होकर शुकदेवजी की वाणी की चर्चा अधिक की। उन्होंने अपने सुबोधिनी टीका में प्रेम का अच्छा वर्णन किया है।

आए मिलो रे वैष्णव पारखी, तुम देखियो विचारी सब अंग।
टीका वल्लभी बानी सुकदेव की, ताके एक अखर को न कीजे भंग।। ५ ।।

हे ज्ञान के परखने वाले वैष्णवो! मेरे पास आओ और एकाग्रचित्त होकर इसका विचार करो। शुकदेवजी की वाणी का टीका वल्लभाचार्य ने किया। उसके एक अक्षर को भी गलत न समझना।

इत वृन्दावन रासलीला रातडी अखंड, खेलें पिउ गोपी जन।
तो ऊधव संदेसे किन पर लाइया, कहो किनने किए रुदन।। ६ ।।

इसमें वृन्दावन में रास की लीला को अखण्ड बताया है। जहां हमारे धनी ने गोपियों के साथ रास खेली। तो अब विचार करो कि ऊधवजी मथुरा से कौन से श्री कृष्ण का किन गोपियों का सन्देशा लाए? वह कौन सी गोपियां थीं जो श्री कृष्ण के विरह में रोईं?

इत रात अखंड सो तो टाली न टले, भी कह्या आगे ऊग्या रे दिन।
सखियां पिउ उठे सब घर से, ए घर कौन रे उतपन।। ७ ।।

यहां रात अखण्ड है जो कभी समाप्त नहीं हो सकती। फिर आगे लिखा है कि दिन उदय हुआ तथा श्री कृष्ण और गोपियां अपने-अपने घरों में उठे। यह कौन से घर हैं और कहां से बने?

बृज अखंड ब्रह्मांड में हुआ, विचार देखो रे बुधवंत।
एक रंचक न राखी चौदे लोक की, महाप्रले कह्यो ऐसो अंत।। ८ ।।

बृज का ब्रह्माण्ड भी अखण्ड हो गया। हे बुद्धिमान महानुभावो! तुम जरा विचार करके देखो। महा-प्रलय में चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड का एक तिनका भी नहीं बचता।

बृज ने रास अखंड कहे प्रगट, सो तो नित नित नवले रंग।
एक रंचक रहे जो ब्रह्मांड की, तो टीका को होवे रे भंग।। ९ ।।

बृज और रास के ब्रह्माण्ड अखण्ड कहे हैं। जहां नित्य ही नई-नई लीलाएं होती हैं। अगर इस ब्रह्माण्ड का थोड़ा सा भी अंश यहां बाकी रह गया माना जाए तो टीका झूठा हो जाएगा।

रात दिन अखंड कहे बृज में, दिन नाही वृन्दाबन रास।
रात अखंड लीला खेलहीं, दोऊ कैसे अखंड विलास।। १० ।।

बृज की अखण्ड लीला में रात और दिन दोनों को अखण्ड कहा गया है और वृन्दावन में रास की लीला रात्रि को अखण्ड कही है। जहां दिन होने का सवाल ही नहीं पैदा होता वहां अखण्ड में रास की लीला रात में खेली जा रही है। तो दोनों ही विलास की लीला कैसे अखण्ड हैं?

बृज रास लीला दोऊ नित कही, खेलें दोऊ लीला बाल किसोर।
तो मथुरा आए कंस किनने मारया, ए कौन भई तीसरी लीला और।। ११ ।।

बृज और रास की लीला दोनों नित्य (अखण्ड) कही हैं। जहां बृज की लीला में श्री कृष्णजी के बाल स्वरूप की लीला हो रही है और रास में श्री कृष्णजी के किशोर स्वरूप की लीला हो रही है। तो अब बताओ, मथुरा में आकर कंस को मारने वाले श्री कृष्ण कौन हैं? यह तीसरी कौन-सी लीला है?

Nijanand App

कहो के भूल्या टीका करता, के भूले तुम अर्थ।
सो जुबां काटिए जो टीका को टेढ़ा कहे, तुम भूले करत अनर्थ।। १२ ।।

कहीं यह न कह देना कि वल्लभाचार्यजी टीका करते समय भूल कर गए हैं। हकीकत में तुम उनके सही अर्थ नहीं समझ पा रहे हो और भूलकर उलटे अर्थ करते हो। ऐसा करने से तो उसकी जबान ही काट देनी चाहिए जो टीका को उलटा बताए।

तुम आंकड़ी न पाई इत अखंड कह्या, तोए न खुले रे द्वार।
तुम समझे नही बानी सुकदेव की, तो हिरदे रह्यो रे अंधकार।। १३ ।।

बृज और रास के ब्रह्माण्ड जो अखण्ड कहे गए हैं, तुमने उसके भेद को नहीं जाना, इसलिए तुम्हें बेहद का ज्ञान नहीं हो सका। तुम शुकदेवजी की वाणी को भी नहीं समझ सके और संशय लिए अन्धकार में भटक रहे हो।

अर्थ टीका का जो तुम पाया होता, तो अंधेर को होत नास।
अनेक ब्रह्माण्ड जाके पलथें उपजे, ताको देखत इत उजास।। १४ ।।

तुमने यदि वल्लभाचार्य के टीका का रहस्य पाया होता तो अज्ञान हट जाता। जिस अक्षर ब्रह्म के एक पल में अनेक ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं, उसी की लीला का यह ब्रह्माण्ड भी देख रहे हो।

तुमको बल जो खुल्या होता इन बानी का, तो भटकत नहीं रे भरम।
इतथें देखो अखंड लीला प्रगट, तब समझत माया को मरम।। १५ ।।

तुमको अगर वल्लाभाचार्य की वाणी का भेद खुल गया होता तो संशय में नहीं भटकते। यहां बैठे-बैठे दोनों अखण्ड लीलाओं को देखते और तब इस माया के भेद की समझ लग जाती कि यह ब्रह्माण्ड उन दोनों से अलग है।

तुम सब मिल दौड़े अखंड सुखको, सुन प्रेम टीका के वचन।
अर्थ पाए बिना प्रेमें ले पटके, कहूं उलटाए दिए रे अगिन।। १६ ।।

वल्लभाचार्य के टीका में वर्णित प्रेम के अखण्ड सुख को लेने के लिए तुम सब दौड़े तो अवश्य, परन्तु वाणी का भेद न जानने के कारण तुमने इस प्रेम को इस माया रूपी चौदह लोकों में ही समझ लिया। इसी कारण से माया की संशय भरी अग्नि में जल रहे हो।

इन बृज रैन को ब्रह्मा बोहोत तलफया, पर पाई नहीं रे निरवान।
सो सुखें तुम कैसे पाओगे, देखो अपनी चाल के निसान।। १७ ।।

इस अखण्ड बृज की धूलि के लिए ब्रह्मा भी बहुत तड़पे, परन्तु उन्हें नहीं मिल सकी। उस अखण्ड सुख को तुम अपनी रहनी में कैसे पा सकोगे?

ए झूठा भवजल अथाह कह्या, ताको पार न पायो किन क्यांहें।
याको गौपद बच्छ गोपी कर निकसी, सो पार जाए मिलियां अखंड मांहें।। १८ ।।

इस झूठे भवसागर को अथाह कहा है। जिसका किसी को पार नहीं मिला, ऐसा गहरा और विशाल है, परन्तु बृज की गोपियों को यह गाय के बछड़े के खुर (पग) के गढ्ढे के समान लगा और यह उसे पार कर गईं और योगमाया के अखण्ड ब्रह्माण्ड में जाकर अपने धनी से मिल गईं।

Nijanand App

अब केता कहूं तुमकों जाहेर, ए अर्थ प्रगट कह्यो न जाए।
निघात डारे छोड़ लज्या अहंकार, नेहेचल सुख दीजे रे ताए।। १९ ।।

हे वैष्णवो! और इससे अधिक तुम्हें क्या स्पष्ट कहूं? इससे अधिक स्पष्ट कहना सम्भव नहीं है। जो वैष्णव अपने अहंकार और लोक-लाज को छोड़कर समर्पित हो जाए उसे यह अखण्ड सुख मिल सकता है।

ए प्रकास विचार तुम देख्या नाहीं, तुम वैभवें लगे रे विलास।
अब महामत कहे जोत उद्दोत भई, ताको इत आए देखो रे उजास।। २० ।।

तुमने इन ज्ञान के वचनों को देखा ही नहीं। तुम तो वैभव और विलास में मग्न हो गए। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब यह ज्ञान जाहिर हो गया है। उस ज्ञान के प्रकाश को हमारे पास आकर समझ लो।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। १४९ ।।

राग सोरठ

धनी न जाए किनको धूत्यो, जो कीजे अनेक धुतार।
तुम चैन ऊपर के कई करो, पर छूटे न क्यों ए विकार।। १ ।।

चाहे कितने ही ढोंग रच लो उस पारब्रह्म (धनी) को धोखा नहीं दे सकते। तुम ऊपर के कितने ही दिखावे करो, परन्तु अन्दर के संशय नहीं मिट सकते।

कोई बढ़ाओ कोई मुड़ाओ, कोई खैंच काढ़ो केस।
जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस।। २ ।।

चाहे बालों को बढ़ाओ, चाहे मुडा दो अथवा जैन मुनियों की तरह बाल खींच-खींचकर निकालो, परन्तु जब तक आत्मा को (अपनी) पहचान नहीं हो जाती, तरह-तरह के रूप धारण करने से क्या मिलेगा?

चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल।
अपरस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल।। ३ ।।

चार बार चौका लगाओ और लकड़ी को भी धोकर जलाओ। अपने अंगों की भी बाहर से सफाई करो, परन्तु इतना करने से मन निर्मल नहीं होगा।

सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊंन उत्तम कामल।
उपजो उत्तम जात में, पर जीवड़ा न छोड़े बल।। ४ ।।

सात बार स्नान करो और उत्तम ऊन के कपड़े पहनो। उत्तम जाति में जन्म लो, परन्तु जीव निर्मल नहीं होता।

सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर।
जोलों प्रेम न उपजे पिउ सों, तोलों मन न छोड़े फेर।। ५ ।।

गले में सौ माला पहनो। दस बार द्वादशी का भण्डारा कर भोजन करो। जब तक धनी से प्रेम नहीं होगा, तब तक यह मन माया को नहीं छोड़ेगा।

तान मान कई रंग करो, अलापी करो किरंतन।
आप रीझो औरों रिझाओ, पर बस न होए क्यों ए मन।। ६ ।।

चाहे ऊंचे-ऊंचे मधुर स्वरों में अलाप करके कीर्तन करो जिससे स्वयं भी आनन्दित होओ और दूसरों को भी आनन्दित करो, फिर भी मन वश में नहीं होता।

Nijanand App

अब केता कहूं तुमकों जाहेर, ए अर्थ प्रगट कह्यो न जाए।
निघात डारे छोड़ लज्या अहंकार, नेहेचल सुख दीजे रे ताए।। १९ ।।

हे वैष्णवो! और इससे अधिक तुम्हें क्या स्पष्ट कहूं? इससे अधिक स्पष्ट कहना सम्भव नहीं है। जो वैष्णव अपने अहंकार और लोक-लाज को छोड़कर समर्पित हो जाए उसे यह अखण्ड सुख मिल सकता है।

ए प्रकास विचार तुम देख्या नाहीं, तुम वैभवें लगे रे विलास।
अब महामत कहे जोत उद्दोत भई, ताको इत आए देखो रे उजास।। २० ।।

तुमने इन ज्ञान के वचनों को देखा ही नहीं। तुम तो वैभव और विलास में मग्न हो गए। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब यह ज्ञान जाहिर हो गया है। उस ज्ञान के प्रकाश को हमारे पास आकर समझ लो।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। १४९ ।।

राग सोरठ

धनी न जाए किनको धूत्यो, जो कीजे अनेक धुतार।
तुम चैन ऊपर के कई करो, पर छूटे न क्यों ए विकार।। १ ।।

चाहे कितने ही ढोंग रच लो उस पारब्रह्म (धनी) को धोखा नहीं दे सकते। तुम ऊपर के कितने ही दिखावे करो, परन्तु अन्दर के संशय नहीं मिट सकते।

कोई बढ़ाओ कोई मुड़ाओ, कोई खैंच काढ़ो केस।
जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस।। २ ।।

चाहे बालों को बढ़ाओ, चाहे मुडा दो अथवा जैन मुनियों की तरह बाल खींच-खींचकर निकालो, परन्तु जब तक आत्मा को (अपनी) पहचान नहीं हो जाती, तरह-तरह के रूप धारण करने से क्या मिलेगा?

चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल।
अपरस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल।। ३ ।।

चार बार चौका लगाओ और लकड़ी को भी धोकर जलाओ। अपने अंगों की भी बाहर से सफाई करो, परन्तु इतना करने से मन निर्मल नहीं होगा।

सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊंन उत्तम कामल।
उपजो उत्तम जात में, पर जीवड़ा न छोड़े बल।। ४ ।।

सात बार स्नान करो और उत्तम ऊन के कपड़े पहनो। उत्तम जाति में जन्म लो, परन्तु जीव निर्मल नहीं होता।

सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर।
जोलों प्रेम न उपजे पिउ सों, तोलों मन न छोड़े फेर।। ५ ।।

गले में सौ माला पहनो। दस बार द्वादशी का भण्डारा कर भोजन करो। जब तक धनी से प्रेम नहीं होगा, तब तक यह मन माया को नहीं छोड़ेगा।

तान मान कई रंग करो, अलापी करो किरंतन।
आप रीझो औरों रिझाओ, पर बस न होए क्यों ए मन।। ६ ।।

चाहे ऊंचे-ऊंचे मधुर स्वरों में अलाप करके कीर्तन करो जिससे स्वयं भी आनन्दित होओ और दूसरों को भी आनन्दित करो, फिर भी मन वश में नहीं होता।

Nijanand App

उच्छव करो अंनकूट का, विविध करो प्रसाद।
पर निकट न आवें नाथ जी, पीछे सब मिल करो स्वाद।।७ ।।

अन्नकूट के उत्सव में तरह-तरह के भोजन बनाओ, परन्तु इससे श्री कृष्णजी नहीं मिलते। पीछे तुम्हीं सब मिल करके उन भोजनों को खाते हो।

सीखो सबे संस्कृत, और पढ़ो सो वेद पुरान।
अर्थ करो द्वादस के, पर आप न होए पेहेचान।।८ ।।

सब लोग संस्कृत पढ़कर वेद पुराणों को पढ़ लो और बारह मात्राओं के अर्थ सन्धि विग्रह में (सन्धि खोलने में) बारह तरह के कर डालो, परन्तु पारब्रह्म की पहचान नहीं होती।

साधो सबे जोगारंभ, अनहद अजपा आसन।
उड़ो गड़ो चढ़ो पांच में, आखिर सुन्य न छोड़ी किन।।९ ।।

योग की सभी क्रियाओं को भले ही साध लो। आसन, प्राणायाम से अनहद और अजपा ध्वनि को भले ही सुन लो, परन्तु इसी पांच तत्व के ब्रह्माण्ड में ही भटकना पड़ेगा। शून्य निराकार को उलंघ कर कोई आगे नहीं जा सका।

आगम भाखो मन की परखो, सूझे चौदे भवन।
मृतक को जीवत करो, पर घर की न होवे गम।।१० ।।

मन को परखने वाले पारखी बनकर भविष्य की बातें बताओ, चौदह लोकों की हकीकत बताओ, मरे को जिन्दा कर दो, परन्तु घर की पहचान नहीं होगी।

सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर।।११ ।।

सतगुरु वही है जो अपनी, माया की, अपने धनी की और घर की पहचान बताए और महाप्रलय की हकीकत बताए, इसलिए ऐसे सतगुरु को पाने के लिए समय नहीं गंवाना चाहिए।

ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर।
महामत सो गुर कीजिए, जो यों बरसावे नूर।।१२ ।।

ऐसे सतगुरु की पहचान हो जाने पर अपनी निसबत और धनी की पहचान हो जाने से सुख मिलता है। इसलिए श्री महामतिजी कहते हैं कि गुरु उसी को बनाना चाहिए जो इस तरह का ज्ञान बताए।

|| प्रकरण || १४ || चौपाई || १६१ ||

राग श्री

पतित सिरोमन यों कहे।
जो मैं किए हैं बज्रलेप, मेरे साहेब सों द्वेष।।टेक।। १ ।।

पतितों में मैं शिरोमणि (मुख्य) हूं, क्योंकि मैंने अपने धनी से द्वेष बढ़ाकर बज्रलेप जैसा गुनाह किया है।

पतित मेरे आगे कौन कहावे, मैं कोई न देख्या रे पतीत।
ए सब कोई साध चलत हैं सीधे, जो देखिए अपनी रीत।।२ ।।

मुझसे अधिक पतित और कौन हो सकता है, क्योंकि मैंने अपने से पतित तो किसी को देखा ही नहीं। यह सब साधु अपने नियम और रीति के अनुसार सीधे रास्ते पर चलते हैं।

Nijanand App

उच्छव करो अंनकूट का, विविध करो प्रसाद।
पर निकट न आवें नाथ जी, पीछे सब मिल करो स्वाद।।७।।

अन्नकूट के उत्सव में तरह-तरह के भोजन बनाओ, परन्तु इससे श्री कृष्णजी नहीं मिलते। पीछे तुम्हीं सब मिल करके उन भोजनों को खाते हो।

सीखो सबे संस्कृत, और पढ़ो सो वेद पुरान।
अर्थ करो द्वादस के, पर आप न होए पेहेचान।।८।।

सब लोग संस्कृत पढ़कर वेद पुराणों को पढ़ लो और बारह मात्राओं के अर्थ सन्धि विग्रह में (सन्धि खोलने में) बारह तरह के कर डालो, परन्तु पारब्रह्म की पहचान नहीं होती।

साधो सबे जोगारंभ, अनहद अजपा आसन।
उड़ो गड़ो चढ़ो पांच में, आखिर सुन्य न छोड़ी किन।।९।।

योग की सभी क्रियाओं को भले ही साध लो। आसन, प्राणायाम से अनहद और अजपा ध्वनि को भले ही सुन लो, परन्तु इसी पांच तत्व के ब्रह्माण्ड में ही भटकना पड़ेगा। शून्य निराकार को उलंघ कर कोई आगे नहीं जा सका।

आगम भाखो मन की परखो, सूझे चौदे भवन।
मृतक को जीवत करो, पर घर की न होवे गम।।१०।।

मन को परखने वाले पारखी बनकर भविष्य की बातें बताओ, चौदह लोकों की हकीकत बताओ, मरे को जिन्दा कर दो, परन्तु घर की पहचान नहीं होगी।

सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर।।११।।

सतगुरु वही है जो अपनी, माया की, अपने धनी की और घर की पहचान बताए और महाप्रलय की हकीकत बताए, इसलिए ऐसे सतगुरु को पाने के लिए समय नहीं गंवाना चाहिए।

ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर।
महामत सो गुर कीजिए, जो यों बरसावे नूर।।१२।।

ऐसे सतगुरु की पहचान हो जाने पर अपनी निसबत और धनी की पहचान हो जाने से सुख मिलता है। इसलिए श्री महामतिजी कहते हैं कि गुरु उसी को बनाना चाहिए जो इस तरह का ज्ञान बताए।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। १६१ ।।

राग श्री

पतित सिरोमन यों कहे।
जो मैं किए हैं बज्रलेप, मेरे साहेब सों द्वेष।।टेक।। १ ।।

पतितों में मैं शिरोमणि (मुख्य) हूं, क्योंकि मैंने अपने धनी से द्वेष बढ़ाकर बज्रलेप जैसा गुनाह किया है।

पतित मेरे आगे कौन कहावे, मैं कोई न देख्या रे पतीत।
ए सब कोई साध चलत हैं सीधे, जो देखिए अपनी रीत।।२।।

मुझसे अधिक पतित और कौन हो सकता है, क्योंकि मैंने अपने से पतित तो किसी को देखा ही नहीं। यह सब साधु अपने नियम और रीति के अनुसार सीधे रास्ते पर चलते हैं।

Nijanand App

दुनियां सकल चलत है पैंडे, जो साध बड़ों ने बताया।
उलटा कोई नहीं रे यामें, पतित किने न केहेलाया।। ३ ।।

सब दुनियां वाले भी इन्हीं साधुओं के बताए रास्ते पर चलते हैं। उस रास्ते से उलटा चलकर किसी ने अपने को पतित नहीं कहलवाया।

उलटा एक चलत हों यामें, मैं छोड़ी दुनियां की राह।
तोड़ी मरजाद बिगड़या विश्व थें, मैं तो पतितन को पातसाह।। ४ ।।

दुनियां का रास्ता छोड़कर एक मैं ही उलटा चलता हूं। मैंने दुनियां की मान-मर्यादा छोड़कर संसार से झगड़ा मोल ले लिया है और इस तरह से पतितों में शिरोमणि बन गया हूं।

सूर जैसे पतित कहावे, और की सोभा आप देवे।
ओ अंधा रांक गरीब साध जो, सो क्या रे पतीती लेवे।। ५ ।।

सूरदास ने भी अपने को पतित कहा है। यह उन्होंने भूल से दूसरों की शोभा अपने ऊपर ली है। वह अन्धा गरीब साधु क्या पतीती (पतन) कर सकता है।

नामधारी पतित जो हुते, जिन जुध जगपति सों किए।
जगपति जग में बडा जोरावर, तिन मार चरन तले लिए।। ६ ।।

इस दुनियां में अपने को पतित कहलाने वाले बड़े-बड़े (नामधारी) भक्तजन हो गए हैं, जिन्होंने विष्णु भगवान से युद्ध किया। विष्णु भगवान तो बहुत बलवान हैं। उन्होंने इन भक्तजनों को मारकर अपनी शरण में ले लिया।

या जग में ए क्या रे पतीती, कोई न पोहोंच्या पार।
बोहोत दौड़े सो सुन्य तोड़ी, आड़ी पड़ी निराकार।। ७ ।।

इस संसार के बीच लोक-लाज से उलटा चलने वाले पतित कहलवाते हैं, पर मुझे कोई ऐसा पतित नहीं मिला जो शून्य से आगे बेहद में गया हो। किसी ने प्रयास किया भी तो निराकार में जाकर अटक गया।

मैं उलटाए आतम जुगतें जगाई, पार की तरफ फिराई।
सुन्य निराकार पार परआतम, मैं ता पर दृष्ट चढ़ाई।। ८ ।।

मैंने अपनी आत्मा को बड़ी युक्ति से संसार की लोक रीतियों से हटाकर पार (परमधाम) की तरफ लगाया। मैंने शून्य निराकार के पार परमधाम में बैठी परआतम से अपना सम्बन्ध जोड़ लिया।

अगम के पार जो अलख कहावे, मैं तिनसों जाए जुध लिया।
इहां लग और सब्द नहीं सीधा, सो प्रगट पकड़ के किया।। ९ ।।

अगम के पार जो अलख पारब्रह्म है उसे प्राप्त करने का युद्ध मैंने उससे किया। पूर्णब्रह्म जो किसी के शब्द में नहीं आता, उसे मैंने पकड़ लिया और उसे प्रगट कर दिया।

इन आतम को घर एही अछर है, ए तो पारब्रह्म परखाया।
ए जुध जीत्या मैं सेहेजे, सतगुर जी की दया।। १० ।।

अक्षर की पांचों वासनाओं जिनमें से नारायण महाविष्णु भी हैं इनकी आत्मा का घर अक्षर है इसकी पहचान स्वयं पारब्रह्म (श्री राजजी) ने मुझे करवाई। इसलिए सतगुरु श्री स्यामजी (राजजी) की कृपा से यह युद्ध मैंने सहजे (सरलता से) ही जीत लिया।

Nijanand App

अब अछर के पार मैं जुध बनाऊं, सकल आउध अंग साजुं।
प्रेम की सैन्या प्रगट चलाऊं, कंठ अछरातीत मिलाऊं।।११ ।।

अब मैं सब गुण, अंग इन्द्रियों को सजाकर प्रेम की सेना से अक्षर के पार अक्षरातीत धाम में विराजमान धनी से कंठ से कंठ मिलाने का युद्ध करूंगी, अर्थात् इस काम में आने वाली बाधाओं से लडूंगी।

पतित ऐसी पुकार न कीजे, पर मोको इन चोटें अगिन लगाई।
बोहोत बरस मैं राखी अंदर, अब तो ढांपी न जाई।।१२ ।।

लोकलाज से उलटे चलने वाले सूरदासजी! तुम अपने को पतित मत कहो। मुझे आपके इन शब्दों से चोट लगी है। इस बात को मैंने बहुत समय तक अन्दर छिपाकर रखा, किन्तु अब यह बात छिपाई नहीं जाती।

पार के पार पार जाए पोहोंच्या, जीवत अखंड सुख पाया।
पतितन के सिर महामत मुकुट मनि, जिन ए जुध जग में लखाया।।१३ ।।

और इसलिए निराकार के पार बेहद और बेहद के पार अक्षर तथा अक्षर के पार अक्षरातीत के धाम में पहुंचकर मैंने जीते जी अखण्ड सुख को प्राप्त किया। इसलिए श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं पतितों में सर्वश्रेष्ठ बन गई जिससे संसार से इस तरह झगड़ा करके पारब्रह्म को प्राप्त किया।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। १७४ ।।

राग श्री

दुख रे प्यारो मेरे प्रान को।
सो मैं छोड़यो क्यों कर जाए, जो मैं लियो है बुलाए।। १ ।।टेक।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि दुःख मुझे प्राण से भी अधिक प्यारा है, क्योंकि इसे मैंने मांगकर लिया है। इसलिए मैं इसे किसी तरह से भी नहीं छोडूंगी।

इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहियत है तोहे।
दुख बिना चरन कमल को, सखी कबहूं न मिलिया कोए।।२ ।।

यह वही सुन्दर समय है जब वह दुःख जो तुमने मांगा था, मिल रहा है। दुख के बिना आज दिन तक किसी को पारब्रह्म के चरण कमल नहीं मिले।

जिन सुख पिउजी न मिले, सो सुख देऊं रे जलाए।
जिन दुख मेरा पिउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए।।३ ।।

जिन सुखों से प्रीतम का मिलन नहीं होता उन सुखों को मैं अग्नि में जला दूंगी और जिस दुःख से मुझे पियाजी मिल सकते हैं उसे मैं बुला लूंगी।

दुख तो हमारो अहार है, औरन को दुख खाए।
दुख के भागे सब फिरें, कोई विरला साध निबाहे।।४ ।।

दुःख हमारा आहार है। संसार के जीवों को दुःख खाता है। दुःख से डरकर सभी लोग दूर भागते हैं। कोई विरले ही दुःख का साथ निभाते हैं।

Nijanand App

अब अछर के पार मैं जुध बनाऊं, सकल आउध अंग साजुं।
प्रेम की सैन्या प्रगट चलाऊं, कंठ अछरातीत मिलाऊं।। ११ ।।

अब मैं सब गुण, अंग इन्द्रियों को सजाकर प्रेम की सेना से अक्षर के पार अक्षरातीत धाम में विराजमान धनी से कंठ से कंठ मिलाने का युद्ध करूंगी, अर्थात् इस काम में आने वाली बाधाओं से लडूंगी।

पतित ऐसी पुकार न कीजे, पर मोको इन चोटें अगिन लगाई।
बोहोत बरस मैं राखी अंदर, अब तो ढांपी न जाई।। १२ ।।

लोकलाज से उलटे चलने वाले सूरदासजी! तुम अपने को पतित मत कहो। मुझे आपके इन शब्दों से चोट लगी है। इस बात को मैंने बहुत समय तक अन्दर छिपाकर रखा, किन्तु अब यह बात छिपाई नहीं जाती।

पार के पार पार जाए पोहोंच्या, जीवत अखंड सुख पाया।
पतितन के सिर महामत मुकुट मनि, जिन ए जुध जग में लखाया।। १३ ।।

और इसलिए निराकार के पार बेहद और बेहद के पार अक्षर तथा अक्षर के पार अक्षरातीत के धाम में पहुंचकर मैंने जीते जी अखण्ड सुख को प्राप्त किया। इसलिए श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं पतितों में सर्वश्रेष्ठ बन गई जिससे संसार से इस तरह झगड़ा करके पारब्रह्म को प्राप्त किया।

|| प्रकरण || १५ || चौपाई || १७४ ||

राग श्री

दुख रे प्यारो मेरे प्रान को।
सो मैं छोड़यो क्यों कर जाए, जो मैं लियो है बुलाए।। १ ।।टेक।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि दु:ख मुझे प्राण से भी अधिक प्यारा है, क्योंकि इसे मैंने मांगकर लिया है। इसलिए मैं इसे किसी तरह से भी नहीं छोडूंगी।

इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहियत है तोहे।
दुख बिना चरन कमल को, सखी कबहूं न मिलिया कोए।। २ ।।

यह वही सुन्दर समय है जब वह दु:ख जो तुमने मांगा था, मिल रहा है। दुख के बिना आज दिन तक किसी को पारब्रह्म के चरण कमल नहीं मिले।

जिन सुख पिउजी न मिले, सो सुख देऊं रे जलाए।
जिन दुख मेरा पिउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए।। ३ ।।

जिन सुखों से प्रीतम का मिलन नहीं होता उन सुखों को मैं अग्नि में जला दूंगी और जिस दु:ख से मुझे पियाजी मिल सकते हैं उसे मैं बुला लूंगी।

दुख तो हमारो अहार है, औरन को दुख खाए।
दुख के भागे सब फिरें, कोई विरला साथ निबाहे।। ४ ।।

दु:ख हमारा आहार है। संसार के जीवों को दु:ख खाता है। दु:ख से डरकर सभी लोग दूर भागते हैं। कोई विरले ही दु:ख का साथ निभाते हैं।

Nijanand App

दुख को निबाहू न मिले, और सुख को तो सब ब्रह्मांड।
इन झूठे दुख थें भाग के, खोवत सुख अखंड।।५।।

दुःख को निभाने वाला तो मुझे कोई नहीं मिला। सुख को तो संसार के सारे जीव चाहते हैं जो इस झूठे दुःख से भागकर अखण्ड सुख को छोड़ देते हैं।

दुख की प्यारी प्यारी पिउ की, तुम पूछो वेद पुरान।
ए दुख मोही को भला, जो देत हैं अपनी जान।।६।।

दुःख की चाहने वाली अंगना को प्रीतम भी प्यार करते हैं। ऐसा वेद पुराण में भी लिखा है। मेरे धनी मुझे अपनी अंगना समझकर दुःख दे रहे हैं, इसलिए दुःख मुझे प्यारा लगता है।

ता कारन दुख देत हैं, दुख बिना नींद न जाए।
जिन अवसर मेरा पिउ मिले, सो अवसर नींद गमाए।।७।।

दुःख के बिना माया की अज्ञानता नहीं हटती। इसलिए हमारे धनी हमें दुःख देते हैं। जब मुझे धनी से मिलने का मौका आया उसे अज्ञानता ने खो दिया।

नींद बुरी या भरम की, भरम तो भई आड़ी पाल।
वह दुख देत जलाए के, जो आड़ी भई अपने लाल।।८।।

यह संशय की नींद बहुत बुरी है, क्योंकि संशय ही आड़ी दीवार बन जाती है। वह संशय की दीवार जो मेरे और धनी के बीच आती है, उसे विरह का दुःख जलाकर राख कर देगा।

नींद निगोड़ी ना उड़ी, जो गई जीव को खाए।
रात दिन अगनी जले, तब जाए नींद उड़ाए।।९।।

यह ऐसी कमबख्त भ्रम की नींद है जो जीव को दबाकर बैठी है। रात दिन विरह की अग्नि जलने पर ही यह अज्ञानता की नींद उड़ेगी।

इन सुपने के दुख से जिन डरो, दुख बदले सत सुख।
अपने मासूक सों नेहड़ा, तोको देयगो बनाए के दुख।।१०।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इन सपने के झूठे दुःखों से मत डरो, क्योंकि इसके बदले में सच्चे सुख मिलने वाले हैं। अपने माशूक श्री राजजी महाराज से यह दुःख ही तुम्हें प्रेमपूर्वक मिलाएगा।

ता सुख को कहा कीजिए, जो देखलावे धरम राए।
मैं वह दुख मांगों पिउपें, पिउ सों पल पल रंग चढ़ाए।।११।।

इन झूठे सुखों को क्या करें जिनसे धर्मराज के पास जाना पड़े। मैं धनी से सदा दुःख ही मांगती हूं जिससे हर पल धनी की याद आए।

दुख सब सुपनों हो गयो, अखण्ड सुख भोर भयो।
महामत खेले अपने लाल सों, जो अछरातीत कह्यो।।१२।।

अब सारे सपने के दुःख मिट गये और अखण्ड सुख का सवेरा हो गया जिसमें श्री महामतिजी अपने अक्षरातीत धनी के साथ विनोद के खेल खेलती हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। १८६ ।।

Nijanand App

राग श्री

सखी री आतम रोग बुरो लग्यो, याको दारू ना मिले तबीब।
चौदे भवन में न पाइए, सो हुआ हाथ हबीब।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! प्रीतम से मिलने की तड़प का रोग बहुत बुरा लगा है। इसका न कोई वैद्य है और न कोई दवा ही चौदह लोकों में मिलती है। इसका इलाज हमारे धनी के हाथ में है।

आतम रोग कासों कहिए, जिन पीठ दई परआतम।
ए रोग क्यों ए ना मिटे, जो लों देखे ना मुख ब्रह्म।। २ ।।

आत्म रोग किसको कहते हैं? जो परआतम को पीठ देकर भूल बैठा है वही आत्म रोग है। यह तब तक नहीं मिटता जब तक पारब्रह्म के मुखारबिन्द का दर्शन नहीं हो जाता।

सो हबीब क्यों पाइए, कई कर कर थके उपाए।
सास्त्र देखे सब सब्द, तिन दुख दिया बताए।। ३ ।।

ऐसे पारब्रह्म को पाने के लिए बहुतेरे उपाय कर-कर थक गए। बहुतों ने शास्त्रों को पढ़ा। उनके शब्दों का मनन भी किया। तब उसे प्राप्त करने का उपाय दु:ख बताया।

सखी ताथें दुख प्यारो लग्यो, अंदर देखो विचार।
सो दुख कैसे छोड़िए, जासों पाइए पिउ मनुहार।। ४ ।।

हे साथजी! यदि अन्दर विचार करके देखो तो आप समझोगे कि मुझे दु:ख क्यों प्यारा लगता है। ऐसा दु:ख जिससे धनी मिलते हैं, कैसे छोड़ा जाए?

दुनी के सुख दिए मैं तिनको, जो कोई चाहे सुख।
जिनसे मेरा पिउ मिले, मैं चाहूं सोई दुख।। ५ ।।

दुनियां के सुख मैंने उन दुनियां वालों को दिए जो कोई उसे चाहते थे। (बिहारीजी महाराज गादीपति बनकर दुनियां के सुखों की ही चाहना करते थे, इसलिए कहने पर भी वह जागनी के दु:खों को नहीं उठा सके) मैं तो वही दु:ख चाहती हूं जिनसे मेरे धनी मिलते हैं।

दुख प्यारो है मुझ को, जासों होए पिउ मिलन।
कहा करूं मैं तिन सुख को, आखिर जित जलन।। ६ ।।

वह दु:ख मुझे प्यारा है जिससे मेरे धनी का मिलन होता है। उस माया के सुखों को क्या करूं जिससे अन्त में जलन होती है।

बड़ी मत के जो धनी कहे, होए गए जो आगे।
तिन भी धनी मिलन को, दुख धनी पें मांगे।। ७ ।।

जागृत बुद्धि के मालिक धनी श्री देवचन्द्रजी ने भी अपने धनी से मिलने के लिए दु:ख ही मांगा है (जागनी के लिए बार-बार कल्पे और पत्र लिखते रहे)।

जब बिछोहा धनी का, तब दुख में धनी विलास।
उन दुख के विलास में, पोहोंचाए देत धनी आस।। ८ ।।

जब हम धनी से अलग हैं तभी हमें दु:ख रूपी संसार में धनी के विलास की याद आती है और उस दु:ख के विलास में धनी से मिलने की आशा लगती है।

Nijanand App

कहा करूं तिन सुख को, जिनसे होइए निरास।
ए झूठा सुख है छल का, सो देत माया की फांस।। ९ ।।

उस झूठे सुख को क्या करें, जहां निराश होना पड़ता है। यह झूठा सुख माया का है जो माया में ही उलझा देता है।

दुख से पिउ जी मिलसी, सुखें न मिलिया कोए।
अपने धनी का मिलना, सो दुखै से होए।। १० ।।

दुःख से प्रीतम मिलते हैं। आज दिन तक दुनियां के सुखों में पारब्रह्म किसी को नहीं मिले। अपने धनी श्री राजजी महाराज से तो मिलना दुःख से ही होगा।

दुख बड़ो पदारथ, जो कोई जाने ए।
ताथें सुख को छोड़ के, दुख ले सके सो ले।। ११ ।।

दुःख को यदि कोई समझे तो यह बड़ी भारी न्यामत है। इसलिए संसार के झूठे सुखों को छोड़कर जितने ले सकते हों उतने विरह के दुःख लीजिए।

रात दिन दुख लीजिए, खाते पीते दुख।
उठते बैठते दुख चाहिए यों पिउ सों होइए सनमुख।। १२ ।।

रात-दिन विरह रूपी दुःख में तड़पें। खाते, पीते, उठते, बैठते विरह की ठण्डी सांसें चाहिएं जिससे धनी के सम्मुख जा सकेंगे।

इन दुख से कोई जिन डरो, इन दुख में पिउ को सुख।
जो चाहत हैं सुख को, आखिर तिन में दुख।। १३ ।।

इस विरह के दुःख से कोई मत डरो। इससे प्रीतम का सुख मिलेगा। जो संसार के सुखों को चाहते हैं उनको अन्त में दुःख ही मिलना है (चौरासी लाख योनियों में जन्म-मरण का)।

दुख बिना न होवे जागनी, जो करे कोट उपाए।
धनी जगाए जागहीं, ना तो दुख बिना क्यों ए न जगाए।। १४ ।।

दुःख के बिना करोड़ों उपाय करने पर भी जागनी का कार्य नहीं होता। धनी के जगाने पर ही जागनी सम्भव है, वरन् दुःख के बिना जागनी सम्भव नहीं है।

दुख खाना दुख पीवना, दुखै हमारो आहार।
दुनियां को दुख खात है, तो दुख थें भागत संसार।। १५ ।।

इसलिए हमारा खाना, पीना और सभी आहार दुःख ही है। दुनियां वालों को दुःख सताता है। इसलिए वह दुःख से दूर भागते हैं।

दुखतें विरहा उपजे, विरहे प्रेम इस्क।
इस्क प्रेम जब आइया, तब नेहेचे मिलिए हक।। १६ ।।

दुःख से विरह, विरह से प्रेम, प्रेम से इश्क पैदा होता है। प्रेम और इश्क जब दोनों मिलते हैं तो पारब्रह्म मिल जाते हैं।

Nijanand App

दुख सोभा दुख सिनगार, दुखै को सब साज।
दुख ले जाए धनी पे, इन सुख तें होत अकाज।। १७ ।।

मोमिनों की शोभा, सिनगार तथा सब साज सज्जा दुःख का ही होता है जो उन्हें अपने धनी से मिलाता है, जबकि इस संसार के झूठे सुख से काम बिगड़ता है।

तो दुख सारों ने मांगया, बड़ी मत वालों ने जाग।
दुख तें अपने पिउ का, आवत विरह वैराग।। १८ ।।

तो बड़ी मत वाले पंच वासनाओं ने भी जगकर दुःख की ही मांग की जिससे अपने धनी का विरह और वैराग्य प्राप्त हो।

दुख बस्तर दुख भूखन, दुख थें निरमल देह।
जो दुख प्यारो जीव को लगे, तो उपजे सत सनेह।। १९ ।।

जब प्रीतम के विरह का दुःख जीव को लगता है तो वस्तर भूखन भी दुःखदाई लगते हैं और देह भी निर्मल होती है, तब सच्चा प्यार हृदय में जागृत होता है।

दुख दावानल काटत, और काटत सकल विकार।
दुख काटत मूल माया को, बढ़े नहीं विस्तार।। २० ।।

विरह रूपी दुःख ही माया की आग को बुझाता है और सभी विकारों को मिटाता है। यहां तक कि वह माया की जड़ों को काट देता है जिससे कि माया की चाहना फैले नहीं।

दुख दसों द्वार भेदया, और दुख भेदयो रोम रोम।
यों नख सिख दुख प्यारो लगे, तो कहा करे छल भोम।। २१ ।।

यह विरह रूपी दुःख शरीर के दसों द्वारों से तथा रोम-रोम से, नख से शिख तक तन में समा गया है और बड़ा प्यारा लगता है, इसलिए अब यह झूठी माया कुछ नहीं कर सकती।

सुख माया को मूल है, सो चाहे बढ़यो विस्तार।
तिन साधो सुख तजिया, वास्ते अपने करतार।। २२ ।।

माया का मूल झूठा सुख है जो सदा तृष्णा के रूप में बढ़ता रहता है, इसलिए ब्रह्मसृष्टियों ने अपने धनी के वास्ते माया के झूठे सुख को त्याग दिया है।

बारीक बातें दुख की, जो कदी लगे मिठास।
तो टूट जात है ए सुख, होत माया को नास।। २३ ।।

यदि समझ में आ जाए तो दुःख की बातें बड़ी बारीक और लज्जतदार हैं। इससे माया और झूठे सुखों का नाश होता है।

ए दुख बातें सोई जानहीं, जाको आई वतन खुसबोए।
ए दुख जानें अर्स अंकूरी, माया जीव न जाने कोए।। २४ ।।

इस विरह के दुःख की लज्जत वही ब्रह्मसृष्टियां ही जानती हैं जिनको अपने वतन परमधाम की पहचान हो जाती है और जिनकी निसबत परमधाम से है। माया का कोई भी जीव इसको नहीं समझता।

Nijanand App

जो माया मोह थें उपजे, सो क्या जाने दुख के सुख।
जो माया को सुख जानहीं, ताथें हुए बेमुख।। २५ ।।

जिसकी उत्पत्ति ही निराकार से है वह इस विरह रूपी दु:ख से प्राप्त होने वाले अखण्ड सुख को क्या समझे? वह माया के झूठे सुखों को ही जानते हैं। इसलिए वह पारब्रह्म से दूर हो गए।

कुरान पुरान मैं देखिया, कही दुख की बड़ाई।
साध बड़ों बड़ाई दुख की, लड़ाए लड़ाए के गाई।। २६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने कुरान और पुराण दोनों को देखा। इनमें दुख की बहुत बड़ी महिमा कही है। बड़े-बड़े लोगों ने बड़े लाड प्यार से दु:ख की लीला को गाया है।

मोल तोल न दुख को, कोई नाहीं इन बराबर।
जिन दुखथें धनी पाइए, ताको मोल होवे क्यों कर।। २७ ।।

इस विरह रूपी दु:ख की कोई कीमत नहीं कह सकता और न इसको तोल ही सकता है, क्योंकि इसके बराबर कुछ है ही नहीं। जिस दु:ख से अपने धनी का मिलन हो उसकी कीमत यहां कैसे आंकी जा सकती है?

दुख तो मोहोंगे मोल को, मैं देख्या दिल ल्याए।
दुनियां सब भागी फिरे, कोई न सके उचाए।। २८ ।।

मैंने दिल से विचार करके देखा कि दु:ख बहुत महंगा है। यह इतना भारी है कि दुनियां वाले कोई भी इसका मोल नहीं चुका सकते हैं और न बोझ उठा सकते हैं, इसलिए इससे सब दूर भागते हैं।

मैं तो चाह्या सुख को, पर धनी की मुझ पर मेहेर।
ताथे दुख फेर फेर लिया, अब सुख लागत है जेहेर।। २९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने तो झूठे सुख की चाहना की थी, पर धनी की मुझ पर मेहेर (कृपा) थी, इसलिए उन्होंने मुझे बार-बार विरह का दु:ख दिया। अब मुझे संसार के सुख जहर के समान लगते हैं।

जो साहेब सनकूल होवहीं, तो दुख आवे तिन।
इन दुनियां में चाह कर, दुख न लिया किन।। ३० ।।

जिन पर धनी प्रसन्न होते हैं उन्हीं को ही दु:ख मिलता है। वैसे इस दुनियां में चाहने पर भी दु:ख कोई नहीं ले सका।

दुख देवे दिवानगी, स्यानप देवे उड़ाए।
ताथें दुख कोई न लेवहीं, सब सुख स्यानप चाहें।। ३१ ।।

दु:ख से दीवानगी का रस आता है और चतुराई समाप्त हो जाती है, इसलिए दु:ख कोई नहीं लेता। सभी चतुराई से सुख चाहते हैं।

चाहन वाले दुख के, दुनियां में ढूंढ़ देख।
ब्रह्मांड यार है सुख का, दुख दोस्त हुआ कोई एक।। ३२ ।।

मैंने दुनियां में ढूंढ़कर देख लिया, पर दु:ख को चाहने वाला कोई नहीं मिला। यह सारा ब्रह्माण्ड झूठे सुख को चाहने वाला है। दु:ख को चाहने वाला कोई विरला एक ही निकलता है।

Nijanand App

जाको स्वाद लग्यो कछू दुख को, सो सुख कबूं न चाहे।
वाको सो दुख फेर फेर, हिरदे चढ़ चढ़ आए।। ३३ ।।

जिसे दु:ख की लज्जत आ गई हो वह संसार के झूठे सुख कभी नहीं चाहता। उसे बार-बार हृदय में दु:ख की ही रट लगी रहती है।

महामत कहे इन दुख को, मोल न कियो जाए।
लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सर भर न आवे ताए।। ३४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसे दु:ख की कीमत निकालना सम्भव नहीं है। लाख बार भी अपना सिर अर्पण कर दें तो भी उस दु:ख की बराबरी नहीं हो सकती।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। २२० ।।

राग श्री

मैं तो बिगड़या विश्व थें बिछुरया, बाबा मेरे ढिग आओ मत कोई।
बेर बेर बरजत हों रे बाबा, न तो हम ज्यों बिगड़ेगा सोई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं तो संसार की रस्मों से ऐसा उलटा चलकर बिगड़ा कि संसार से ही बिछुड़ गया। इसलिए, हे बाबा! मैं तुम्हें बार-बार रोकता हूं कि तुम मेरे पास मत आओ। नहीं तो तुम भी मेरे जैसे हो जाओगे।

मैं लाज मत पत दई रे दुनी को, निलज होए भया न्यारा।
जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा।। २ ।।

मैंने दुनियां की लज्जा, बुद्धि, प्रतिष्ठा को छोड़ दिया है और बेशर्म होकर दुनियां से न्यारा हो गया हूं। जिनको अपने कुल की और वेद की मर्यादा पालन करना हो, वह मेरे साथ न् चले।

लोक सकल दौड़त दुनियां को, सो मैं जान के खोई।
मैं डारया घर जारया हंसते, सो लोक राखत घर रोई।। ३ ।।

संसार के सब लोग मान और धन के लिए दौड़ रहे हैं, जिसको मैंने जान बूझकर त्याग दिया है। मैंने अपनी घर गृहस्थी को हंसते हुए आग लगाकर छोड़ दिया जिसको पाने के लिए दुनियां रोती फिरती है।

देत दिखाई सो मैं चाहत नाहीं, जा रंग राची लोकाई।
मैं सब देखत हूं ए भरमना, सो इनों सत कर पाई।। ४ ।।

इस संसार में जो कुछ दिखाई पड़ता है वह मैं नहीं चाहता। इसमें संसार के लोग रचे-पचे हैं, परन्तु है यह सब झूठ, जिसे दुनियां के लोग सत समझे बैठे हैं।

मैं कहूं दुनियां भई बावरी, ओ कहे बावरा मोही।
अब एक मेरे कहे कौन पतीजे, ए बोहोत झूठे क्यों होई।। ५ ।।

मैं कहता हूं कि दुनियां पागल है और दुनियां वाले मुझे पागल कहते हैं। अब एक मेरे कहने पर कौन विश्वास करेगा। अधिक लोग झूठे हैं यह कौन मानेगा।

Nijanand App

जाको स्वाद लग्यो कछू दुख को, सो सुख कबूं न चाहे।
वाको सो दुख फेर फेर, हिरदे चढ़ चढ़ आए।। ३३ ।।

जिसे दुःख की लज्जत आ गई हो वह संसार के झूठे सुख कभी नहीं चाहता। उसे बार-बार हृदय में दुःख की ही रट लगी रहती है।

महामत कहे इन दुख को, मोल न कियो जाए।
लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सर भर न आवे ताए।। ३४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसे दुःख की कीमत निकालना सम्भव नहीं है। लाख बार भी अपना सिर अर्पण कर दें तो भी उस दुःख की बराबरी नहीं हो सकती।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। २२० ।।

राग श्री

मैं तो बिगड़्या विश्व थें बिछुरया, बाबा मेरे ढिग आओ मत कोई।
बेर बेर बरजत हों रे बाबा, न तो हम ज्यों बिगड़ेगा सोई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं तो संसार की रस्मों से ऐसा उलटा चलकर बिगड़ा कि संसार से ही बिछुड़ गया। इसलिए, हे बाबा! मैं तुम्हें बार-बार रोकता हूं कि तुम मेरे पास मत आओ। नहीं तो तुम भी मेरे जैसे हो जाओगे।

मैं लाज मत पत दई रे दुनी को, निलज होए भया न्यारा।
जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा।। २ ।।

मैंने दुनियां की लज्जा, बुद्धि, प्रतिष्ठा को छोड़ दिया है और बेशर्म होकर दुनियां से न्यारा हो गया हूं। जिनको अपने कुल की और वेद की मर्यादा पालन करना हो, वह मेरे साथ न् चले।

लोक सकल दौड़त दुनियां को, सो मैं जान के खोई।
मैं डारया घर जारया हंसते, सो लोक राखत घर रोई।। ३ ।।

संसार के सब लोग मान और धन के लिए दौड़ रहे हैं, जिसको मैंने जान बूझकर त्याग दिया है। मैंने अपनी घर गृहस्थी को हंसते हुए आग लगाकर छोड़ दिया जिसको पाने के लिए दुनियां रोती फिरती है।

देत दिखाई सो मैं चाहत नाहीं, जा रंग राची लोकाई।
मैं सब देखत हूं ए भरमना, सो इनों सत कर पाई।। ४ ।।

इस संसार में जो कुछ दिखाई पड़ता है वह मैं नहीं चाहता। इसमें संसार के लोग रचे-पचे हैं, परन्तु है यह सब झूठ, जिसे दुनियां के लोग सत समझे बैठे हैं।

मैं कहूं दुनियां भई बावरी, ओ कहे बावरा मोही।
अब एक मेरे कहे कौन पतीजे, ए बोहोत झूठे क्यों होई।। ५ ।।

मैं कहता हूं कि दुनियां पागल है और दुनियां वाले मुझे पागल कहते हैं। अब एक मेरे कहने पर कौन विश्वास करेगा। अधिक लोग झूठे हैं यह कौन मानेगा।

Nijanand App

चित में चेतन अंतरगत आपे, सकल में रह्या समाई।
अलख को घर याको कोई न लखे, जो ए बोहोत करे चतुराई।। ६ ।।

मेरे चित्त में (मेरे अन्दर) पारब्रह्म विराजमान हैं जो रोम-रोम में समाए हैं। उस अलख (अगोचर) पारब्रह्म का घर मेरा दिल है। इसको कोई नहीं देखता चाहे कितनी ही चतुराई दिखाए।

सतगुर संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई।
महामत कहे मैं या विध बिगड़्या, तुम जिन बिगड़ो भाई।। ७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने सतगुरु की संगति से ही पारब्रह्म और घर को पाया है। मैं इस तरह से दुनियां से बिगड़ा हूं। तुम मत बिगड़ना।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। २२७ ।।

राग श्री

तुम समझ के संगत कीजो रे बाबा, मुझ जैसा दिवाना न कोई।
जाही सों लोक लज्या पावे, सो तो मोहे बड़ाई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे जैसा दीवाना कोई नहीं है। तुम विचार कर संगति करना। जिससे संसार के लोगों को शर्म लगती है वैसा दीवाना बनना मुझे स्वीकार है।

मैं तो बात करूं रे दिवानी, दुनियां तो स्यानी सुजान।
स्याने दिवाने संग क्योंकर होवे, तुम मिलियो मोहे पेहेचान।। २ ।।

मैं तो बात भी दीवानी की ही करूंगी। दुनियां तो चतुर एवं ज्ञानी है। चतुर और दीवाने का मेल नहीं बैठता, इसलिए तुम समझकर मेरे पास आना।

मैं त्रिलोकी अगिन कर देखी, दुनियां को सो सुख।
दुनियां को अमृत होए लागी, मोहे लागत है विख।। ३ ।।

मैंने त्रिलोकी (चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड) को अग्नि के समान दुःखदायी समझा है, जबकि दुनियां वाले इसे सुख का घर समझते हैं। उन्हें यह दुनियां अमृत के समान और मुझे जहर के समान लगती है।

जब मैं मरम पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई।
डर के उबट चल्या उबाटे, बाट बड़ी मैं खोई।। ४ ।।

जब इस भवसागर के भेद को समझा तब मैंने इसे छोड़ा और रोकर भागा। इससे डरकर ऊबड़-खाबड़ रास्ते उलटे पांव चल पड़ा और इस तरह से मैंने दुनियां के सुखों को छोड़ दिया।

अहनिस डर आया मेरे अंग में, फिरया दिलडा भया दिवाना।
भली बुरी कहे सो मैं कछू न देखूं, भागवे को मैं स्याना।। ५ ।।

रात-दिन मेरे अंग में इस भवसागर का डर समाया रहा। मैं बावला होकर उलटा भागा। मैंने यह नहीं सोचा कि दुनियां भला कह रही है या बुरा। इसको छोड़ने में ही मैंने अपनी अक्लमंदी समझी।

Nijanand App

चित में चेतन अंतरगत आपे, सकल में रह्या समाई।
अलख को घर याको कोई न लखे, जो ए बोहोत करे चतुराई।। ६ ।।

मेरे चित्त में (मेरे अन्दर) पारब्रह्म विराजमान हैं जो रोम-रोम में समाए हैं। उस अलख (अगोचर) पारब्रह्म का घर मेरा दिल है। इसको कोई नहीं देखता चाहे कितनी ही चतुराई दिखाए।

सतगुर संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई।
महामत कहे मैं या विध बिगड़्या, तुम जिन बिगड़ो भाई।। ७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने सतगुरु की संगति से ही पारब्रह्म और घर को पाया है। मैं इस तरह से दुनियां से बिगड़ा हूं। तुम मत बिगड़ना।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। २२७ ।।

राग श्री

तुम समझ के संगत कीजो रे बाबा, मुझ जैसा दिवाना न कोई।
जाही सों लोक लज्या पावे, सो तो मोहे बड़ाई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे जैसा दीवाना कोई नहीं है। तुम विचार कर संगति करना। जिससे संसार के लोगों को शर्म लगती है वैसा दीवाना बनना मुझे स्वीकार है।

मैं तो बात करूं रे दिवानी, दुनियां तो स्यानी सुजान।
स्याने दिवाने संग क्योंकर होवे, तुम मिलियो मोहे पेहेचान।। २ ।।

मैं तो बात भी दीवानी की ही करूंगी। दुनियां तो चतुर एवं ज्ञानी है। चतुर और दीवाने का मेल नहीं बैठता, इसलिए तुम समझकर मेरे पास आना।

मैं त्रिलोकी अगिन कर देखी, दुनियां को सो सुख।
दुनियां को अमृत होए लागी, मोहे लागत है विख।। ३ ।।

मैंने त्रिलोकी (चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड) को अग्नि के समान दु:खदायी समझा है, जबकि दुनियां वाले इसे सुख का घर समझते हैं। उन्हें यह दुनियां अमृत के समान और मुझे जहर के समान लगती है।

जब मैं मरम पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई।
डर के उबट चल्या उबाटे, बाट बड़ी मैं खोई।। ४ ।।

जब इस भवसागर के भेद को समझा तब मैंने इसे छोड़ा और रोकर भागा। इससे डरकर ऊबड़-खाबड़ रास्ते उलटे पांव चल पड़ा और इस तरह से मैंने दुनियां के सुखों को छोड़ दिया।

अहनिस डर आया मेरे अंग में, फिरया दिलडा भया दिवाना।
भली बुरी कहे सो मैं कछू न देखूं, भागवे को मैं स्याना।। ५ ।।

रात-दिन मेरे अंग में इस भवसागर का डर समाया रहा। मैं बावला होकर उलटा भागा। मैंने यह नहीं सोचा कि दुनियां भला कह रही है या बुरा। इसको छोड़ने में ही मैंने अपनी अक्लमंदी समझी।

Nijanand App

मैं छोड़े कुटम सगे सब छोड़े, छोड़ी मत स्वांत सरम।
लोक वेद मरजादा छोड़ी, भाग्या छोड़ सब धरम।। ६ ।।

मैंने अपने सगे-सम्बन्धी, कुटुम्ब-परिवार, माया की बुद्धि, शान्ति और लोकलाज तथा वेद की मर्यादा और धर्म-कर्म सब छोड़ दिए।

ए सूरे पांऊं धरें क्यों पीछे, इनको तो लज्या लागे।
देवें सीस सकल सुख खोवें, पर भाइयों को छोड़ न भागे।। ७ ।।

इस संसार के मान-मर्यादा वाले लोग इस माया से कदम पीछे नहीं हटा सकते। पीछे हटने में उन्हें शर्म लगेगी। वह अपना शीश कटा सकते हैं। सब सुख छोड़ सकते हैं, परन्तु अपने भाई-बिरादरी के मोह को नहीं छोड़ सकते।

ए मिलके मरद चलें ज्यों महीपत, जांनो पड़ता अंबर पकड़सी।
मोंहे अचंभा ए डरें नहीं किनसो, पर ए खेल केते दिन रेहेसी।। ८ ।।

यह संसार के लोग बिरादरी के साथ राजा की तरह अहंकार में चलते हैं और लगता है कि मानो यह गिरते हुए आकाश को भी थाम लेंगे। श्री महामतिजी कहते हैं कि मुझे आश्चर्य होता है कि इनको किसी का डर ही नहीं, परन्तु यह उनका खेल कितने दिन तक चलेगा, इसका विचार नहीं करते।

देखत काल पछाड़त पल में, तो भी आंख न खोलें।
आप जैसा और कोई न देखें, मद छाके मुख बोलें।। ९ ।।

वह प्रतिदिन लोगों को मरता हुआ देखते हैं, फिर भी उनको होश नहीं आता। वह अपने समान किसी को समझते ही नहीं। ऐसी अहंकार की मस्ती में डूबे मनमानी बातें बोलते हैं।

इनमें से नाठया मैं निसंक कायर होए, फेर न देख्या ब्रह्मांड।
सुन्य निरंजन छोड़ मैं न्यारा, जाए पड्या पार अखंड।। १० ।।

इनके बीच में से मैं कायरों की तरह भागा और पीछे मुड़कर मैंने ब्रह्माण्ड को नहीं देखा। मैं शून्य, निरंजन को छोड़कर, बेहद के पार अखण्ड घर परमधाम में जा पहुंचा।

अब तो कछुए न देखत मद में, पर ए मद है पल मात्र।
महामत दिवाने को कह्यो न माने, सो पीछे करसी पछताप।। ११ ।।

सारे संसार के लोग झूठी माया और परिवार की झूठी मस्ती में डूबे हैं, परन्तु यह माया की मस्ती तो एक पल की है। श्री महामतिजी कहते हैं कि मुझ दीवानी का जो कहना नहीं मानेंगे वह पीछे पछताएंगे।

|| प्रकरण || १९ || चौपाई || २३८ ||

राग श्री आसावरी

साधो या जुग की ए बुध।
दुनियां मोह मद की छाकी, चली जात बेसुध।। १ ।।

हे साधो! इस जगत की ऐसी बुद्धि है कि दुनियां मोह की मस्ती में छकी हुई बेसुधी में चली जाती है।

Nijanand App

मैं छोड़े कुटम सगे सब छोड़े, छोड़ी मत स्वांत सरम।
लोक वेद मरजादा छोड़ी, भाग्या छोड़ सब धरम।। ६ ।।

मैंने अपने सगे-सम्बन्धी, कुटुम्ब-परिवार, माया की बुद्धि, शान्ति और लोकलाज तथा वेद की मर्यादा और धर्म-कर्म सब छोड़ दिए।

ए सूरे पांऊं धरें क्यों पीछे, इनको तो लज्या लागे।
देवें सीस सकल सुख खोवें, पर भाइयों को छोड़ न भागे।। ७ ।।

इस संसार के मान-मर्यादा वाले लोग इस माया से कदम पीछे नहीं हटा सकते। पीछे हटने में उन्हें शर्म लगेगी। वह अपना शीश कटा सकते हैं। सब सुख छोड़ सकते हैं, परन्तु अपने भाई-बिरादरी के मोह को नहीं छोड़ सकते।

ए मिलके मरद चलें ज्यों महीपत, जांनो पड़ता अंबर पकड़सी।
मोहे अचंभा ए डरें नहीं किनसो, पर ए खेल केते दिन रेहेसी।। ८ ।।

यह संसार के लोग बिरादरी के साथ राजा की तरह अहंकार में चलते हैं और लगता है कि मानो यह गिरते हुए आकाश को भी थाम लेंगे। श्री महामतिजी कहते हैं कि मुझे आश्चर्य होता है कि इनको किसी का डर ही नहीं, परन्तु यह उनका खेल कितने दिन तक चलेगा, इसका विचार नहीं करते।

देखत काल पछाड़त पल में, तो भी आंख न खोलें।
आप जैसा और कोई न देखें, मद छाके मुख बोलें।। ९ ।।

वह प्रतिदिन लोगों को मरता हुआ देखते हैं, फिर भी उनको होश नहीं आता। वह अपने समान किसी को समझते ही नहीं। ऐसी अहंकार की मस्ती में डूबे मनमानी बातें बोलते हैं।

इनमें से नाठया मैं निसंक कायर होए, फेर न देख्या ब्रह्मांड।
सुन्य निरंजन छोड़ मैं न्यारा, जाए पड्या पार अखंड।। १० ।।

इनके बीच में से मैं कायरों की तरह भागा और पीछे मुड़कर मैंने ब्रह्माण्ड को नहीं देखा। मैं शून्य, निरंजन को छोड़कर, बेहद के पार अखण्ड घर परमधाम में जा पहुंचा।

अब तो कछुए न देखत मद में, पर ए मद है पल मात्र।
महामत दिवाने को कह्यो न माने, सो पीछे करसी पछताप।। ११ ।।

सारे संसार के लोग झूठी माया और परिवार की झूठी मस्ती में डूबे हैं, परन्तु यह माया की मस्ती तो एक पल की है। श्री महामतिजी कहते हैं कि मुझ दीवानी का जो कहना नहीं मानेंगे वह पीछे पछताएंगे।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। २३८ ।।

राग श्री आसावरी

साधो या जुग की ए बुध।
दुनियां मोह मद की छाकी, चली जात बेसुध।। १ ।।

हे साधो! इस जगत की ऐसी बुद्धि है कि दुनियां मोह की मस्ती में छकी हुई बेसुधी में चली जाती है।

Nijanand App

दुनी दुनी पें चाहे दुनियां, तार्थे करामात ढूंढ़े।
पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिच्छा और मूंडे।। २ ।।

संसार के लोग संसार में ही संसार वालों से सुख चाहते हैं और इसलिए चमत्कार वालों को ढूंढ़ते हैं। बाद में पता चलता है कि चाहने वाले और देने वाले दोनों एक से ही हैं। पहला गुरु बनकर शिक्षा देता है और फिर गुरु चेला दोनों मिलकर दुनियां को लूटते हैं।

साधो केहेर कही करामात, ए दुनियां तित रांचे।
झूठी दृष्ट जो बांधी झूठ सों, तार्थे दिल ना लगत क्यों ए सांचे।। ३ ।।

साधो! जिस करामात को कहर बताया है, दुनियां उसी में लगी है। झूठी दुनियां की नजर झूठ से ही बंधी है, इसलिए इनका मन सच्चाई में नहीं लगता।

कौन मैं कहां को कहां थें बिछुरयो, कौन भोम ए छल।
गुर सिष्य ग्यान कथें पंथ पैंडे, पर एती न काहू अकल।। ४ ।।

इनको मालूम नहीं है कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और कहां जाना है और यह कौन-सी छल की भूमि है? यह दोनों गुरु-शिष्य गली-गली में अपना पंथ चलाते हैं, परन्तु इन्हें सत की खबर नहीं होती।

या घर में या बन में रहे, पर कहा करे बिना सतगुर।
तो लों मकसूद क्यों कर होवे, जो लों पाइए ना अखंड घर।। ५ ।।

दुनियां वाले घर में रहें या वन में रहें, बिना सतगुरु मिले अखण्ड घर की प्राप्ति नहीं होती। बिना अखण्ड घर की पहचान के उन्हें कुछ प्राप्ति नहीं होती।

सतगुर सोई जो वतन बतावे, मोह माया और आप।
पार पुरुख जो परखावे, महामत तासों कीजे मिलाप।। ६ ।।

सच्चे सतगुरु वही हैं जो अखण्ड घर की, मोह की, माया की और अपनी पहचान कराकर पारब्रह्म की पहचान कराएं। श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसे सतगुरु से ही मिलाप करना चाहिए।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ २४४ ॥

राग श्री सारंग

चल्यो जुग जाए री सुध बिना।
सुध बिना सुध बिना सुध बिना, चल्यो जुग जाए री सुध बिना।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस युग में सारा संसार बेसुधी में चला जा रहा है।

मूल प्रकृती मोह अहं थें, उपजे तीनों गुन।
सो पांचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन।। २ ।।

मूल प्रकृति, मोह तत्व और अहंकार से ब्रह्मा, विष्णु, महेश की उत्पत्ति हुई है। वह पांच तत्व के ब्रह्माण्ड में फैल गए और चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में माया का अन्धकार छा गया।

Nijanand App

दुनी दुनी पें चाहे दुनियां, ताथें करामात ढूंढ़े।
पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिच्छा और मूंडे।। २ ।।

संसार के लोग संसार में ही संसार वालों से सुख चाहते हैं और इसलिए चमत्कार वालों को ढूंढ़ते हैं। बाद में पता चलता है कि चाहने वाले और देने वाले दोनों एक से ही हैं। पहला गुरु बनकर शिक्षा देता है और फिर गुरु चेला दोनों मिलकर दुनियां को लूटते हैं।

साधो केहेर कही करामात, ए दुनियां तित रांचे।
झूठी दृष्ट जो बांधी झूठ सों, ताथें दिल ना लगत क्यों ए सांचे।। ३ ।।

साधो! जिस करामात को कहर बताया है, दुनियां उसी में लगी है। झूठी दुनियां की नजर झूठ से ही बंधी है, इसलिए इनका मन सच्चाई में नहीं लगता।

कौन मैं कहां को कहां थें बिछुरयो, कौन भोम ए छल।
गुर सिष्य ग्यान कथें पंथ पैंडे, पर एती न काहू अकल।। ४ ।।

इनको मालूम नहीं है कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और कहां जाना है और यह कौन-सी छल की भूमि है? यह दोनों गुरु-शिष्य गली-गली में अपना पंथ चलाते हैं, परन्तु इन्हें सत की खबर नहीं होती।

या घर में या बन में रहे, पर कहा करे बिना सतगुर।
तो लों मकसूद क्यों कर होवे, जो लों पाइए ना अखंड घर।। ५ ।।

दुनियां वाले घर में रहें या वन में रहें, बिना सतगुरु मिले अखण्ड घर की प्राप्ति नहीं होती। बिना अखण्ड घर की पहचान के उन्हें कुछ प्राप्ति नहीं होती।

सतगुर सोई जो वतन बतावे, मोह माया और आप।
पार पुरुख जो परखावे, महामत तासों कीजे मिलाप।। ६ ।।

सच्चे सतगुरु वही हैं जो अखण्ड घर की, मोह की, माया की और अपनी पहचान कराकर पारब्रह्म की पहचान कराएं। श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसे सतगुरु से ही मिलाप करना चाहिए।

|| प्रकरण || २० || चौपाई || २४४ ||

राग श्री सारंग

चल्यो जुग जाए री सुध बिना।
सुध बिना सुध बिना सुध बिना, चल्यो जुग जाए री सुध बिना।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस युग में सारा संसार बेसुधी में चला जा रहा है।

मूल प्रकृती मोह अहं थें, उपजे तीनों गुन।
सो पांचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन।। २ ।।

मूल प्रकृति, मोह तत्व और अहंकार से ब्रह्मा, विष्णु, महेश की उत्पत्ति हुई है। वह पांच तत्व के ब्रह्माण्ड में फैल गए और चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में माया का अन्धकार छा गया।

Nijanand App

प्रले प्रकृती जब भई, तब पांचों चौदे पतन।
मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन।। ३ ।।

जब प्रकृति का प्रलय होगा, तब पांच तत्व, चौदह लोक, मोह तत्व, अहंकार, सगुण, निर्गुण सब समाप्त हो जाएंगे।

तब जीव को घर कहां रह्यो, कहां खसम वतन।
गुर सिष्य नाम बोहोतों धरे, पर ए सुध परी न किन।। ४ ।।

फिर बताओ जीव का घर कहां होगा? अपने धनी और अपना घर कहां है? गुरु और शिष्य तो बहुत हुए हैं पर इस बात की खबर किसी को नहीं हुई।

ऊपर तले मांहें बाहेर, खोज्या कैयों जन।
नेहेचल न्यारा सबन से, ए ठौर न पाई किन।। ५ ।।

ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर बहुतों ने पारब्रह्म को खोजा, परन्तु अखण्ड घर जो सबसे अलग है, उसे किसी ने नहीं पाया।

निराकार कासों कहिए, कासों कहिए निरंजन।
क्यों व्यापक क्यों होसी फना, एता न कह्या किन।। ६ ।।

निराकार और निरंजन किसको कहते हैं? वह किस तरह सारे संसार में व्यापक है और कैसे नष्ट होगा? इतना भी किसी ने नहीं बतलाया।

क्यों सरूप है प्राकृत को, क्यों मोह क्यों सुंन।
क्यों सरूप जो काल को, ए नेहेचे करी न किन।। ७ ।।

प्रकृति का क्या स्वरूप है, मोह तत्व और शून्य कैसे बना, काल का क्या रूप है, इस बात को किसी ने दृढ़ता से नहीं बताया।

पंथ पैंडे सब चलहीं, कई दीन दरसन।
ना सुध आप ना पार की, ए सुध परी न किन।। ८ ।।

संसार में बहुत से पन्थ पैंडे चल रहे हैं। कई धर्म और दर्शन चल रहे हैं, परन्तु किसी को भी अपनी तथा पार की सुध नहीं मिली।

कौन सरूप है आतमा, परआतम कह्या क्यों भिन।
सुध ठौर ना सरूप की, ए संसे भान्यो न किन।। ९ ।।

आत्मा का क्या स्वरूप है, वह परआतम से कैसे अलग है, उनका ठिकाना क्या है? इस संशय को किसी ने नहीं मिटाया।

महामत सो गुर पाइया, जो करसी साफ सबन।
देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं न करी किन।। १० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हमें सतगुरु मिल गए हैं जो सारे संशय समाप्त करेंगे और अखण्ड सुख देंगे। ऐसा आज तक किसी गुरु ने नहीं किया।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। २५४ ।।

Nijanand App

(यह तीन प्रकरण मस्कत बंदर में उतरे हैं)

राग श्री

रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार।
मदमाती माया की छाकी, सुनत नाहीं पुकार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस दुनियां के बावले लोगो! तुम अपने अनमोल जीवन को मूर्खों की भांति गंवा रहे हो। यह बावली दुनियां माया की मस्ती में है और मेरी पुकार को नहीं सुनती।

अपनी छायासों आप बिगूती, बल खोए चली हार।
आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार।। २ ।।

यह दुनियां अपनी ही रची माया में फंसी है और अपनी शक्ति खोकर हार गई है। यह बिना अग्नि के काम क्रोध की अग्नि में जलकर खाक हो रही है।

सत सब्द को कोई न चीन्हे, सूने हिरदे नहीं संभार।
समझे साध जो आपको देखें, तामें बड़ी अंधार।। ३ ।।

यहां अखण्ड की पहचान करने वाला कोई नहीं है। उनके सूने हृदय में सत की वाणी टिकती नहीं है। इस संसार में जो अपने आपको सन्त, महात्मा, ज्ञानी धर्माचार्य कहलाते हैं उनके अन्दर भी माया का अन्धेरा है।

रे यामें केते आप कहावें स्याने, पर छूटत नहीं विकार।
स्यानप लेके कंठ बंधाए, या छल रच्यो है नार।। ४ ।।

इस संसार में पूज्य पाद कहलाने वालों से भी माया की झूठी इच्छा छूटती नहीं है। वह भी अपनी चतुराई से माया को अपने गले में लपेटे हुए हैं। इस प्रकार के छल का ब्रह्माण्ड माया ने रच रखा है।

रे मूढ़मती या फंद में उरझे, उपजत नहीं विचार।
आप न चीन्हें घर न सूझे, ना लखें रचनहार।। ५ ।।

हे मूर्खो! तुम माया के ऐसे बन्धन में फंस गए हो कि इससे निकलने का विचार ही तुम्हारे मन में नहीं आता है। तुम्हें न तो अपने आप की पहचान है और न अखण्ड घर की सुध आती है और न उस बनाने वाले की ही खबर होती है।

अपनी मत ले ले साधू बोले, सब्द भए अपार।
बोहोत सबद को अर्थ न उपजे, या बल सुपन धुतार।। ६ ।।

इस संसार में अपने ही अटकल से साधु, महात्मा, ज्ञानियों ने तरह-तरह के ग्रन्थ बनाए हैं। इस तरह से अनेक ग्रन्थों के हो जाने से हकीकत के शब्दों का अर्थ ही नहीं मिलता। इस तरह से इस छल वाली माया ने इस सपने के संसार की शक्ति का हरण कर लिया है।

यामें सतगुर मिले तो संसे भानें, पैंडा देखावे पार।
तब सकल सबद को अर्थ उपजे, सब गम पड़े संसार।। ७ ।।

इस संसार में यदि सतगुरु मिले तो संशय मिट सकते हैं। वह संशय मिटाकर पार का रास्ता बता सकते हैं। तब सब धर्म ग्रन्थों के हकीकत के शब्दों का अर्थ समझ में आ सकता है और संसार की पहचान हो सकती है।

Nijanand App

Nijanand App

राग श्री केदारो

रे मन भूल ना महामत, दुनियां देख तूं आप संभार।
ए नाहीं दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ख्याल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे मन! तू भूल मत कर। दुनियां को देखकर तुम अपने आपको सम्भालो। यह माया का रचा खेल है। इसमें दुनियां मूर्ख नहीं है।

रे मन त्रिखा न बूझे तेरी झांझुए, प्रतिबिंब पकरयो न जाए।
ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाए।। २ ।।

हे मेरे मन! तेरी मृग जल से प्यास नहीं बुझेगी। यह तो माया की छाया है जो पकड़ने से पकड़ में नहीं आती है। जिस प्रकार जल के जीव जल के बिना नहीं रह सकते वैसे ही तू कितने ही उपाय कर ले यह माया के जीव माया नहीं छोड़ेंगे।

रे मन सृष्ट सकल सुपन की, तूं करे तामें पुकार।
असत सत को ना मिले, तूं छोड़ आप विकार।। ३ ।।

हे मेरे मन! यह सारी सृष्टि सपने की है जिसमें तू पुकार रहा है। यह सपने के जीव सत को नहीं पा सकते। इसलिए तुम अपने ही विकारों को (झूठी माया को) त्याग दो।

रे मन सुपन का घर नींद में, सो रहे न नींद बिगर।
याको कोट बेर परबोधिए, तो भी गले नहीं पत्थर।। ४ ।।

हे मेरे मन! यह सपने का संसार है और सपना तो नींद में ही होता है। इस सपने के संसार के जीवों को करोड़ों बार ज्ञान सुनाओ तो भी इन काले पत्थरों को चोट लगने वाली नहीं है।

वासना होएगी बेहद की, सो क्यों छोड़े अपनी पर।
ओ सुपन में एक सब्द सुनते, उड़ जासी नींदर।। ५ ।।

इसमें जो बेहद घर की आत्मा होगी, वह अपने घर को नहीं छोड़ेगी। इस सपने के संसार में भी घर का एक शब्द सुनते ही उसकी गफलत भरी नींद टूट जाएगी।

सत सब्द को सोई चीन्हे, जो होए वासना ब्रह्म।
ए तो असत उलटिए खेल रच्यो है, देत देखाई सब भ्रम।। ६ ।।

पार के शब्दों को वह पहचान सकेंगे जो पारब्रह्म की आत्माएं होंगी। यह तो सब सत से उलटा भ्रम का नाटक दिखाई दे रहा है।

असत तिन को भरम कहिए, होत है जिनको नास।
ए तो चौदे चुटकी में चल जासी, यों कहत सुकजी व्यास।। ७ ।।

असत या भ्रम उसको कहते हैं जिसका प्रलय में नाश होता है। यह चौदह लोक चुटकी बजाते ही उड़ जाएंगे, ऐसा शुकदेवजी और व्यासजी ने कहा है।

तूं उलट याको पीठ दे, प्रेमें खेल पियासों रंग।
ओ आए मिलेंगे आपही, जासों तेरा है सनमंध।। ८ ।।

हे मेरे मन! तू अपने आपको इससे हटा ले और उसे पीठ देकर धनी के साथ खेल। तेरे धनी जिससे तेरा सम्बन्ध है, तुझे आप ही आकर मिलेंगे।

Nijanand App

तेरे संगी तोहे अबहीं मिलेंगे, तूं करे क्यों न करार।
महामत मन को दृढ़ कर, समरथ स्याम भरतार।। ९ ।।

तेरे साथी सुन्दरसाथ भी तुझे अभी मिलेंगे। तू दृढ़ता क्यों नहीं रखता? श्री महामतिजी अपने को कहते हैं कि तू अपना मन दृढ़ कर कि तेरे धनी सब प्रकार से समर्थ हैं। उनमें ही विश्वास रख।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। २७७ ।।

राग श्री गौड़ी

रस मगन भई सो क्या गावे।
बिचली बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे।। १ ।।

जो प्रीतम के रस में मगन हो जाते हैं वे दुनियां को बताते नहीं हैं। उनकी बुद्धि, मन, चित्त संसार से उचट जाते हैं और वह फिर संसार की बातें नहीं करते।

बिचले नैन श्रवन मुख रसना, बिचले गुन पख इन्द्री अंग।
बिचली भांत गई गत प्रकृत, बिचल्यो संग भई और रंग।। २ ।।

उनके नेत्र, कान, मुख, जिह्वा, गुण, अंतःकरण, इन्द्रियां तथा प्रकृति सभी दुनियां से उलटी हो जाती हैं और दूसरे ही रंग में रंग जाती हैं।

बिचली दिसा अवस्था चारों, बिचली सुध न रही सरीर।
बिचल्यो मोह अहंकार मूलथें, नैनों नींद न आवे नीर।। ३ ।।

उनकी स्वप्न, सुषुप्ति, जागृत और तुरीय—चारों अवस्थाओं की दिशा ही बदल जाती है। उन्हें अपने शरीर की भी सुध नहीं रहती। उनका मोह और अहंकार जड़ से ही नेस्तनाबूद हो जाता है। उनकी आंखों में न नींद आती है और न आंसू बहते हैं, अर्थात् एकाग्रचित्त हो जाती हैं।

बिचल गई गम वार पार की, और अंग न कछु ए सान।
पिया रस में यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गान।। ४ ।।

उसको इधर की या उस पार की सुध नहीं रहती। उसे अपने तन की भी सुध नहीं रहती है। महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से जो अपने पिया के रस में एक रूप हो जाती हैं वह इस दुनियां में क्या गाएंगी।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। २८१ ।।

राग मारू

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।
खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो! इस संसार में खोज का बड़ा महत्व है। खोजने से सतगुरु मिलते हैं और सतगुरु की कृपा से पारब्रह्म की प्राप्ति होती है।

भगत होत भगवान की, किव कर कहावें सिध साध।
गुन अंग इन्द्री के बस परे, तार्थे बांधत बंध अगाध।। २ ।।

परन्तु इस संसार में भगवान के भक्त सिद्ध साधु बनकर कविता करते हैं। वह भी अपने गुण, अंग इन्द्रियों के वश में आकर अपने को माया के बन्धनों में बांध लेते हैं।

Nijanand App

राग श्री केदारो

रे मन भूल ना महामत, दुनियां देख तूं आप संभार।
ए नाहीं दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ख्याल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे मन! तू भूल मत कर। दुनियां को देखकर तुम अपने आपको सम्भालो। यह माया का रचा खेल है। इसमें दुनियां मूर्ख नहीं है।

रे मन त्रिखा न बूझे तेरी झांझुए, प्रतिबिंब पकस्यो न जाए।
ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाए।। २ ।।

हे मेरे मन! तेरी मृग जल से प्यास नहीं बुझेगी। यह तो माया की छाया है जो पकड़ने से पकड़ में नहीं आती है। जिस प्रकार जल के जीव जल के बिना नहीं रह सकते वैसे ही तू कितने ही उपाय कर ले यह माया के जीव माया नहीं छोड़ेंगे।

रे मन सृष्ट सकल सुपन की, तूं करे तामें पुकार।
असत सत को ना मिले, तूं छोड़ आप विकार।। ३ ।।

हे मेरे मन! यह सारी सृष्टि सपने की है जिसमें तू पुकार रहा है। यह सपने के जीव सत को नहीं पा सकते। इसलिए तुम अपने ही विकारों को (झूठी माया को) त्याग दो।

रे मन सुपन का घर नींद में, सो रहे न नींद बिगर।
याको कोट बेर परबोधिए, तो भी गले नहीं पत्थर।। ४ ।।

हे मेरे मन! यह सपने का संसार है और सपना तो नींद में ही होता है। इस सपने के संसार के जीवों को करोड़ों बार ज्ञान सुनाओ तो भी इन काले पत्थरों को चोट लगने वाली नहीं है।

वासना होएगी बेहद की, सो क्यों छोड़े अपनी पर।
ओ सुपन में एक सब्द सुनते, उड़ जासी नींदर।। ५ ।।

इसमें जो बेहद घर की आत्मा होगी, वह अपने घर को नहीं छोड़ेगी। इस सपने के संसार में भी घर का एक शब्द सुनते ही उसकी गफलत भरी नींद टूट जाएगी।

सत सब्द को सोई चीन्हे, जो होए वासना ब्रह्म।
ए तो असत उलटिए खेल रच्यो है, देत देखाई सब भ्रम।। ६ ।।

पार के शब्दों को वह पहचान सकेंगे जो पारब्रह्म की आत्माएं होंगी। यह तो सब सत से उलटा भ्रम का नाटक दिखाई दे रहा है।

असत तिन को भरम कहिए, होत है जिनको नास।
ए तो चौदे चुटकी में चल जासी, यों कहत सुकजी व्यास।। ७ ।।

असत या भ्रम उसको कहते हैं जिसका प्रलय में नाश होता है। यह चौदह लोक चुटकी बजाते ही उड़ जाएंगे, ऐसा शुकदेवजी और व्यासजी ने कहा है।

तूं उलट याको पीठ दे, प्रेमें खेल पियासों रंग।
ओ आए मिलेंगे आपही, जासों तेरा है सनमंध।। ८ ।।

हे मेरे मन! तू अपने आपको इससे हटा ले और उसे पीठ देकर धनी के साथ खेल। तेरे धनी जिससे तेरा सम्बन्ध है, तुझे आप ही आकर मिलेंगे।

Nijanand App

तेरे संगी तोहे अबहीं मिलेंगे, तूं करे क्यों न करार।
महामत मन को दृढ़ कर, समरथ स्याम भरतार।। ९ ।।

तेरे साथी सुन्दरसाथ भी तुझे अभी मिलेंगे। तू दृढ़ता क्यों नहीं रखता? श्री महामतिजी अपने को कहते हैं कि तू अपना मन दृढ़ कर कि तेरे धनी सब प्रकार से समर्थ हैं। उनमें ही विश्वास रख।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। २७७ ।।

राग श्री गौड़ी

रस मगन भई सो क्या गावे।
बिचली बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे।। १ ।।

जो प्रीतम के रस में मगन हो जाते हैं वे दुनियां को बताते नहीं हैं। उनकी बुद्धि, मन, चित्त संसार से उचट जाते हैं और वह फिर संसार की बातें नहीं करते।

बिचले नैन श्रवन मुख रसना, बिचले गुन पख इन्द्री अंग।
बिचली भांत गई गत प्रकृत, बिचल्यो संग भई और रंग।। २ ।।

उनके नेत्र, कान, मुख, जिह्वा, गुण, अंतःकरण, इन्द्रियां तथा प्रकृति सभी दुनियां से उलटी हो जाती हैं और दूसरे ही रंग में रंग जाती हैं।

बिचली दिसा अवस्था चारों, बिचली सुध न रही सरीर।
बिचल्यो मोह अहंकार मूलथें, नैनों नींद न आवे नीर।। ३ ।।

उनकी स्वप्न, सुषुप्ति, जागृत और तुरीय—चारों अवस्थाओं की दिशा ही बदल जाती है। उन्हें अपने शरीर की भी सुध नहीं रहती। उनका मोह और अहंकार जड़ से ही नेस्तनाबूद हो जाता है। उनकी आंखों में न नींद आती है और न आंसू बहते हैं, अर्थात् एकाग्रचित्त हो जाती हैं।

बिचल गई गम वार पार की, और अंग न कछु ए सान।
पिया रस में यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गान।। ४ ।।

उसको इधर की या उस पार की सुध नहीं रहती। उसे अपने तन की भी सुध नहीं रहती है। महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से जो अपने पिया के रस में एक रूप हो जाती हैं वह इस दुनियां में क्या गाएंगी।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। २८१ ।।

राग मारू

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।
खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो! इस संसार में खोज का बड़ा महत्व है। खोजने से सतगुरु मिलते हैं और सतगुरु की कृपा से पारब्रह्म की प्राप्ति होती है।

भगत होत भगवान की, किव कर कहावें सिध साध।
गुन अंग इन्द्री के बस परे, तार्थे बांधत बंध अगाध।। २ ।।

परन्तु इस संसार में भगवान के भक्त सिद्ध साधु बनकर कविता करते हैं। वह भी अपने गुण, अंग इन्द्रियों के वश में आकर अपने को माया के बन्धनों में बांध लेते हैं।

Nijanand App

तेरे संगी तोहे अबहीं मिलेंगे, तूं करे क्यों न करार।
महामत मन को दृढ़ कर, समरथ स्याम भरतार।। १ ।।

तेरे साथी सुन्दरसाथ भी तुझे अभी मिलेंगे। तू दृढ़ता क्यों नहीं रखता? श्री महामतिजी अपने को कहते हैं कि तू अपना मन दृढ़ कर कि तेरे धनी सब प्रकार से समर्थ हैं। उनमें ही विश्वास रख।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ २७७ ॥

राग श्री गौड़ी

रस मगन भई सो क्या गावे।
बिचली बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे।। १ ।।

जो प्रीतम के रस में मगन हो जाते हैं वे दुनियां को बताते नहीं हैं। उनकी बुद्धि, मन, चित्त संसार से उचट जाते हैं और वह फिर संसार की बातें नहीं करते।

बिचले नैन श्रवन मुख रसना, बिचले गुन पख इन्द्री अंग।
बिचली भांत गई गत प्रकृत, बिचल्यो संग भई और रंग।। २ ।।

उनके नेत्र, कान, मुख, जिह्वा, गुण, अंतःकरण, इन्द्रियां तथा प्रकृति सभी दुनियां से उल्टी हो जाती हैं और दूसरे ही रंग में रंग जाती हैं।

बिचली दिसा अवस्था चारों, बिचली सुध न रही सरीर।
बिचल्यो मोह अहंकार मूलथें, नैनों नींद न आवे नीर।। ३ ।।

उनकी स्वप्न, सुषुप्ति, जागृत और तुरीय—चारों अवस्थाओं की दिशा ही बदल जाती है। उन्हें अपने शरीर की भी सुध नहीं रहती। उनका मोह और अहंकार जड़ से ही नेस्तनाबूद हो जाता है। उनकी आंखों में न नींद आती है और न आंसू बहते हैं, अर्थात् एकाग्रचित्त हो जाती हैं।

बिचल गई गम वार पार की, और अंग न कछु ए सान।
पिया रस में यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गान।। ४ ।।

उसको इधर की या उस पार की सुध नहीं रहती। उसे अपने तन की भी सुध नहीं रहती है। महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से जो अपने पिया के रस में एक रूप हो जाती हैं वह इस दुनियां में क्या गाएंगी।

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ २८१ ॥

राग मारू

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।
खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो! इस संसार में खोज का बड़ा महत्व है। खोजने से सतगुरु मिलते हैं और सतगुरु की कृपा से पारब्रह्म की प्राप्ति होती है।

भगत होत भगवान की, किव कर कहावें सिध साध।
गुन अंग इन्द्री के बस परे, ताथें बांधत बंध अगाध।। २ ।।

परन्तु इस संसार में भगवान के भक्त सिद्ध साधु बनकर कविता करते हैं। वह भी अपने गुण, अंग इन्द्रियों के वश में आकर अपने को माया के बन्धनों में बांध लेते हैं।

Nijanand App

तेरे संगी तोहे अबहीं मिलेंगे, तूं करे क्यों न करार।
महामत मन को दृढ़ कर, समरथ स्याम भरतार।। ९ ।।

तेरे साथी सुन्दरसाथ भी तुझे अभी मिलेंगे। तू दृढ़ता क्यों नहीं रखता? श्री महामतिजी अपने को कहते हैं कि तू अपना मन दृढ़ कर कि तेरे धनी सब प्रकार से समर्थ हैं। उनमें ही विश्वास रख।

|| प्रकरण || २४ || चौपाई || २७७ ||

राग श्री गौड़ी

रस मगन भई सो क्या गावे।
बिचली बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे।। १ ।।

जो प्रीतम के रस में मगन हो जाते हैं वे दुनियां को बताते नहीं हैं। उनकी बुद्धि, मन, चित्त संसार से उचट जाते हैं और वह फिर संसार की बातें नहीं करते।

बिचले नैन श्रवन मुख रसना, बिचले गुन पख इन्द्री अंग।
बिचली भांत गई गत प्रकृत, बिचल्यो संग भई और रंग।। २ ।।

उनके नेत्र, कान, मुख, जिह्वा, गुण, अंतःकरण, इन्द्रियां तथा प्रकृति सभी दुनियां से उल्टी हो जाती हैं और दूसरे ही रंग में रंग जाती हैं।

बिचली दिसा अवस्था चारों, बिचली सुध न रही सरीर।
बिचल्यो मोह अहंकार मूलथें, नैनों नींद न आवे नीर।। ३ ।।

उनकी स्वप्न, सुषुप्ति, जागृत और तुरीय—चारों अवस्थाओं की दिशा ही बदल जाती है। उन्हें अपने शरीर की भी सुध नहीं रहती। उनका मोह और अहंकार जड़ से ही नेस्तनाबूद हो जाता है। उनकी आंखों में न नींद आती है और न आंसू बहते हैं, अर्थात् एकाग्रचित्त हो जाती हैं।

बिचल गई गम वार पार की, और अंग न कछु ए सान।
पिया रस में यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गान।। ४ ।।

उसको इधर की या उस पार की सुध नहीं रहती। उसे अपने तन की भी सुध नहीं रहती है। महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से जो अपने पिया के रस में एक रूप हो जाती हैं वह इस दुनियां में क्या गाएंगी।

|| प्रकरण || २५ || चौपाई || २८१ ||

राग मारू

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।
खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो! इस संसार में खोज का बड़ा महत्व है। खोजने से सतगुरु मिलते हैं और सतगुरु की कृपा से पारब्रह्म की प्राप्ति होती है।

भगत होत भगवान की, किव कर कहावें सिध साध।
गुन अंग इन्द्री के बस परे, ताथें बांधत बंध अगाध।। २ ।।

परन्तु इस संसार में भगवान के भक्त सिद्ध साधु बनकर कविता करते हैं। वह भी अपने गुण, अंग इन्द्रियों के वश में आकर अपने को माया के बन्धनों में बांध लेते हैं।

Nijanand App

सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखें बिगारयो वैराग।
डिंभकाइए दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग।। ३ ।।

इस कलियुग में सतगुरु का मिलना बड़ा कठिन है, क्योंकि यहां सब साधु सतगुरु का भेष धारण कर वैरागी बने फिरते हैं। इस पाखंड ने दुनियां का नाश पीट दिया है। यह लोग बाहर से दिखने में सन्त नजर आते हैं, किन्तु उनके अन्दर माया की आग लगी होती है।

गोविन्द के गुन गाए के, तापर मांगत दान।
धिक धिक पड़ो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान।। ४ ।।

वह गोविन्द के गुणों को गाकर माया बटोरते हैं। ऐसे मनुष्यों को धिक्कार है जो भगवान को बेचते फिरते हैं।

उदर कारन बेचें हरी, मूढ़ों एही पायो रोजगार।
मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जम द्वार।। ५ ।।

यह अपने पेट के लिए भगवान को बेचते हैं। उन मूर्खों ने यही एक सस्ता रोजगार पाया है। इनको अन्त समय में यम के दूत मुख पर डंडे मार-मारकर यमराज के पास ले जाएंगे।

बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी।
सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी।। ६ ।।

सत का ज्ञान देने के लिए सतगुरु बनकर बैठते हैं, परन्तु शिष्यों से माया की आशा लगी रहती है। ऐसे गुरु अपने शिष्यों सहित नरक में जाते हैं (लोभी गुरु लालची चेला, दोनों नरक में ठेलम ठेला)।

जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्म सों पेहेचान।
महामत कहे संगत कर वाकी, कर वाही सों गोष्ट ग्यान।। ७ ।।

जो अन्दर से निर्मल हो और बाहर से दिखावा न करे, वह पारब्रह्म को पहचानता है। श्री महामतिजी कहते हैं ऐसे ही साधु की संगति करना ठीक है और उसी से ही गुझ (गुह्य) ज्ञान की गोष्ठी (चर्चा) करनी चाहिए।

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ २८८ ॥

राग श्री जेतसी

किरंतन वेदान्त के

कहो कहोजी ठौर नेहेचल, वतन कहां ब्रह्म को।।टेक।।
तुम तीन सरीर तज भए ब्रह्म, पायो है पूरन ग्यान।
जो लों संसे ना मिटे, साधो तो लों होत हैरान।। १ ।।

वेदान्तियों से श्री महामतिजी पूछते हैं कि उस पारब्रह्म सच्चिदानन्द का वतन (घर) जो अखण्ड है, कहां है, बताओ। तुम स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को छोड़कर अपने को ब्रह्म तथा पूर्ण ज्ञानी कहते हो। जब तक तुम्हारे मन के संशय नहीं मिट जाते तब तक तुम्हारा चित्त बेचैन रहता है।

वेदांती संतो महंतो, तुम पायो अनुभव सार।
निज वतन जो आपनों, तुम सोई करो निरधार।। २ ।।

हे वेदांती सन्तो, महंतो! तुमने अपने अनुभव से कुल ज्ञान का सार प्राप्त किया है। अब तुम अपने अखण्ड घर को निश्चित करके बताओ।

Nijanand App

सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखें बिगारयो वैराग।
डिंभकाइए दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग।। ३ ।।

इस कलियुग में सतगुरु का मिलना बड़ा कठिन है, क्योंकि यहां सब साधु सतगुरु का भेष धारण कर वैरागी बने फिरते हैं। इस पाखंड ने दुनियां का नाश पीट दिया है। यह लोग बाहर से दिखने में सन्त नजर आते हैं, किन्तु उनके अन्दर माया की आग लगी होती है।

गोविन्द के गुन गाए के, तापर मांगत दान।
धिक धिक पड़ो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान।। ४ ।।

वह गोविन्द के गुणों को गाकर माया बटोरते हैं। ऐसे मनुष्यों को धिक्कार है जो भगवान को बेचते फिरते हैं।

उदर कारन बेचें हरी, मूढ़ों एही पायो रोजगार।
मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जम द्वार।। ५ ।।

यह अपने पेट के लिए भगवान को बेचते हैं। उन मूर्खों ने यही एक सस्ता रोजगार पाया है। इनको अन्त समय में यम के दूत मुख पर डंडे मार-मारकर यमराज के पास ले जाएंगे।

बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी।
सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी।। ६ ।।

सत का ज्ञान देने के लिए सतगुरु बनकर बैठते हैं, परन्तु शिष्यों से माया की आशा लगी रहती है। ऐसे गुरु अपने शिष्यों सहित नरक में जाते हैं (लोभी गुरु लालची चेला, दोनों नरक में ठेलम ठेला)।

जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्म सों पेहेचान।
महामत कहे संगत कर वाकी, कर वाही सों गोष्ट ग्यान।। ७ ।।

जो अन्दर से निर्मल हो और बाहर से दिखावा न करे, वह पारब्रह्म को पहचानता है। श्री महामतिजी कहते हैं ऐसे ही साधु की संगति करना ठीक है और उसी से ही गुझ (गुह्य) ज्ञान की गोष्ठी (चर्चा) करनी चाहिए।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। २८८ ।।

राग श्री जेतसी

किरंतन वेदान्त के

कहो कहोजी ठौर नेहेचल, वतन कहां ब्रह्म को।।टेक।।
तुम तीन सरीर तज भए ब्रह्म, पायो है पूरन ग्यान।
जो लों संसे ना मिटे, साधो तो लों होत हैरान।। १ ।।

वेदान्तियों से श्री महामतिजी पूछते हैं कि उस पारब्रह्म सच्चिदानन्द का वतन (घर) जो अखण्ड है, कहां है, बताओ। तुम स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को छोड़कर अपने को ब्रह्म तथा पूर्ण ज्ञानी कहते हो। जब तक तुम्हारे मन के संशय नहीं मिट जाते तब तक तुम्हारा चित्त बेचैन रहता है।

वेदांती संतो महंतो, तुम पायो अनुभव सार।
निज वतन जो आपनों, तुम सोई करो निरधार।। २ ।।

हे वेदांती सन्तो, महंतो! तुमने अपने अनुभव से कुल ज्ञान का सार प्राप्त किया है। अब तुम अपने अखण्ड घर को निश्चित करके बताओ।

Nijanand App

पेहेले पेड़ देखो माया को, जाको न पाइए पार।
जगत जनेता जोगनी, सो कहावत बाल कुमार।। ३ ।।

पहले माया रूपी पेड़ को देखो जिसका पार यहां किसी ने नहीं पाया। जिसने सारे संसार को पैदा किया है फिर भी वह योगिनी और कुंवारी कन्या कहलाती है।

मात पिता बिन जनमी, आपे बंझा पिंड।
पुरुख अंग छूयो नहीं, और जायो सब ब्रह्मांड।। ४ ।।

यह माया बिना माता पिता के जन्मी है और स्वयं बांझ कहलाती है। इसका कोई पति नहीं है, फिर भी सारे संसार को पैदा कर दिया है।

आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख।
अंग न इन्द्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख।। ५ ।।

इसका न आदि है, न अन्त है और न रंग है, न रूप है। न इसका अंग है, न इन्द्रियां हैं, न इसके अन्दर तेज है और न ज्योति है। इस तरह यह किसी को दिखाई नहीं देती।

जल जिमी न तेज वाए, न सोहं सब्द आकास।
तब ए आद अनाद की, जब नहीं चेतन प्रकास।। ६ ।।

यह जल, जमीन, तेज, वायु और आकाश पांच तत्व भी नहीं थे। ओइम् सोऽहं, ज्योति स्वरूप भी नहीं थे। जब चेतन नहीं था और प्रकाश भी नहीं था, तब भी यह थी, अतः अनादि कहलाती है।

पढ़ पढ़ थाके पंडित, करी न निरने किन।
त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेले तीनों काल मगन।। ७ ।।

बहुत पण्डित पढ़-पढ़ कर थक गए, परन्तु किसी ने इसका निर्णय नहीं किया। यह ब्रह्मा, विष्णु, महेश होकर भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों काल में खेलती है।

विष्णु ब्रह्मा रुद्र जनमें, हुई तीनों की नार।
निरलेप काहू न लेपहीं, नारी है पर नाहीं आकार।। ८ ।।

इसने ब्रह्मा, विष्णु और शंकरजी को जन्म दिया और तीनों की ही पत्नी (सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती) भी बनी। यह सबसे अलग है और सबके अन्दर भी है, पर इसका शरीर नहीं है।

गगन पाताल मेर सिखरों, अष्टकुली बनाए।
पचास कोट जोजन जिमी, सागर सात समाए।। ९ ।।

आसमान, पाताल, पहाड़ों की चोटियां और अष्टावरण इसने बनाए हैं जिसमें पचास करोड़ योजन जमीन है और इसमें सात समुद्र समाए हैं।

तेज तिमर यामें फिरें, रवि ससि तारे ना थिर।
सेस नाग कर ब्रह्मांड, ले धस्यो वाके सिर।। १० ।।

अंधेरे और उजाले का चक्कर इसमें चलता है। सूर्य, चांद और तारे भी सब इसी में घूमते हैं और इसी ने शेषनाग के सिर पर पूरे ब्रह्माण्ड को लाद रखा है।

Nijanand App

देव दानव रिखि मुनि, ब्रह्म ग्यानी बड़ी मत।
सास्त्र बानी सबद मात्र, ए बोली सबे सरस्वत।। ११ ।।

देवता, दानव, ऋषि, मुनि, सांसारिक बड़ी मत के ब्रह्म ज्ञानी, शास्त्रों की वाणी और शब्द सबकी रचना इसी ने की है।

बरन चारों विद्या चौदे, ए पढ़ाए भली पर।
कर आवरण मोह नींद को, खेलावे नारी नर।।१२ ।।

चारों वर्णों के चौदह विद्याओं के पढ़ने वालों को इस माया ने ही पढ़ाया है। स्त्री तथा पुरुषों के ऊपर मोह का आवरण डालकर अज्ञान में भटकाती है।

लाख चौरासी जीव जंत, ए बांधे सबे निरवान।
थिर चर आद अनाद लों, ए भरी सो चारों खान।। १३ ।।

चौरासी लाख योनियों के जीव जन्तुओं को इसने काल के बन्धन में बांध रखा है। इसने स्थिर और चर जीवों को शुरू से चार किस्म की (अण्डे से, शरीर से, पसीने से और पृथ्वी से) पैदा करने के चक्कर में बांधा है।

पांच तत्व चौदे लोक, पाउ पल में उपजाए।
खेल ऐसे अनेक रचे, नार निरंजन राए।। १४ ।।

यह पांच तत्वों और चौदह लोकों को एक क्षण के चौथाई भाग में पैदा करती है। ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड पैदा करती है और निराकार की पत्नी कहलाती है।

ए काली किन पाई नहीं, सब छाया में रहे उरझाए।
उपजे मोह अहंकार थें, सो मोहै में भरमाए।। १५ ।।

यह माया काली रात की तरह है जो दिखाई नहीं देती। सारा संसार इसकी छाया में ही उलझा है। जो मोह तत्व और अहंकार से पैदा हैं वह इसी में ही भटकते फिरते हैं।

बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जेती गम वचन।
उतपन सब होसी फना, जो लों पोहोंचे मन।। १६ ।।

बुद्धि, चित्त, नजर, कान, वचन और मन की जहां तक पहुंच है, सब पैदा होकर मिट जाते हैं।

ऊपर तले माहें बाहेर, दसो दिसा सब एह।
सो सब्द काहूं न पाइए, कह्या ठौर अखण्ड घर जेह।। १७ ।।

यह ऊपर, नीचे, अन्दर और बाहर दसों दिशाओं में है, पर जो अखण्ड घर परमधाम है उसको बताने वाले शब्द कहीं नहीं मिलते।

तो कह्यो न जाए मन वचन, ना कछू पोहोंचे चित।
बुधें सुनी न निसानी श्रवनों, तो क्यों कर जाइए तित।। १८ ।।

जिसे मन से, वचन से, किसी ने न कहा हो तथा किसी का चित्त भी जहां न पहुंचा हो, बुद्धि से इसके लिए कुछ जाना न हो और न कानों से सुना ही हो, तो वहां कैसे जाया जा सकता है?

वेदांती माया को यों कहें, काल तीनों जरा भी नाहें।
चेतन व्यापी जो देखिए, सो भी उड़ावें तिन माहें।। १९ ।।

वेदान्ती माया को भूत, वर्तमान, भविष्य काल में नहीं बताते हैं। इस प्रकार चेतन तत्व जो सबमें व्यापक है उसको भी इसके साथ समाप्त कर देते हैं।

Nijanand App

ना कछु ना कछु ए कहें, ओ सत-चिद-आनंद।
असत सत को ना मिले, ए क्यों कर होए सनमंध।। २० ।।

वेदान्ती जिसे 'नेति-नेति' कहते हैं, वह पारब्रह्म तो सत्य है, चेतन है और आनन्द की लीला करता है (वह सच्चिदानन्द है)। झूठ और सत कभी नहीं मिलते तो इनका सम्बन्ध कैसे जाना जाए।

ए जो व्यापक आतमा, परआतम के संग।
क्यों ब्रह्म नेहेचल पाइए, इत बीच नार को फंद।। २१ ।।

यह जिसको आत्मा कहकर सबमें व्यापक बताते हैं उसे उसकी परआतम कहा है। अखण्ड पारब्रह्म को इस माया के जाल में कैसे पाया जाए?

निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और।
माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुर बतावें ठौर।। २२ ।।

महामतिजी कहते हैं कि ब्रह्म और माया की पहचान कराकर अखण्ड घर की पहचान सतगुरु ही करा सकते हैं।

|| प्रकरण || २७ || चौपाई || ३१० ||

राग श्री आसावरी

मैं पूछों पांड़े तुम को, तुम कहो करके विचार।
सास्त्र अर्थ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे पण्डितजी! मैं तुमसे जो पूछता हूं उसका उत्तर तुम विचार करके दो। तुम सब शास्त्रों के अर्थ को समझते हो पर किसी ने अभी तक पारब्रह्म की पहचान नहीं की।

माया मोह अहंकार थें, ए सबे उतपन।
अहंकार मोह माया उड़ी, तब कहां है ब्रह्म वतन।। २ ।।

माया, मोह, अहंकार से सारी सृष्टि की उत्पत्ति बताते हो और जब यह तीनों प्रलय में समाप्त हो जाएंगे तब पारब्रह्म का घर कहां होगा, बताइए?

कोई कहे ब्रह्म आतमा, कोई कहे पर आतम।
कोई कहे सोहं सब्द ब्रह्म, या बिध सब को अगम।। ३ ।।

आपमें से कोई कहता है कि आत्मा ब्रह्म है, कोई परआतम को ब्रह्म बताता है। कोई ओइम, सोऽहं, ज्योति स्वरूप को ब्रह्म बताता है। इस तरह से उस पारब्रह्म की पहचान किसी को नहीं हुई।

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, रहत सबन में व्याप।
कोई कहे ए सबे छाया, नांहीं यामें आप।। ४ ।।

कोई कहता है ब्रह्म सब में व्यापक है। कोई कहता है कि यह सब माया है। इसमें पारब्रह्म नहीं है।

कोई कहे ओ निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग।
कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग।। ५ ।।

कोई कहते हैं कि वह निर्गुण है और सबसे अलग रहता है। कोई कहता है कि ब्रह्म और जीव दो नहीं एक ही हैं।

Nijanand App

ना कछु ना कछु ए कहें, ओ सत-चिद-आनंद।
असत सत को ना मिले, ए क्यों कर होए सनमंध।। २० ।।

वेदान्ती जिसे 'नेति-नेति' कहते हैं, वह पारब्रह्म तो सत्य है, चेतन है और आनन्द की लीला करता है (वह सच्चिदानन्द है)। झूठ और सत कभी नहीं मिलते तो इनका सम्बन्ध कैसे जाना जाए।

ए जो व्यापक आतमा, परआतम के संग।
क्यों ब्रह्म नेहेचल पाइए, इत बीच नार को फंद।। २१ ।।

यह जिसको आत्मा कहकर सबमें व्यापक बताते हैं उसे उसकी परआतम कहा है। अखण्ड पारब्रह्म को इस माया के जाल में कैसे पाया जाए?

निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और।
माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुर बतावें ठौर।। २२ ।।

महामतिजी कहते हैं कि ब्रह्म और माया की पहचान कराकर अखण्ड घर की पहचान सतगुरु ही करा सकते हैं।

|| प्रकरण || २७ || चौपाई || ३१० ||

राग श्री आसावरी

मैं पूछों पांड़े तुम को, तुम कहो करके विचार।
सास्त्र अर्थ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे पण्डितजी! मैं तुमसे जो पूछता हूं उसका उत्तर तुम विचार करके दो। तुम सब शास्त्रों के अर्थ को समझते हो पर किसी ने अभी तक पारब्रह्म की पहचान नहीं की।

माया मोह अहंकार थें, ए सबे उतपन।
अहंकार मोह माया उड़ी, तब कहां है ब्रह्म वतन।। २ ।।

माया, मोह, अहंकार से सारी सृष्टि की उत्पत्ति बताते हो और जब यह तीनों प्रलय में समाप्त हो जाएंगे तब पारब्रह्म का घर कहां होगा, बताइए?

कोई कहे ब्रह्म आतमा, कोई कहे पर आतम।
कोई कहे सोहं सब्द ब्रह्म, या बिध सब को अगम।। ३ ।।

आपमें से कोई कहता है कि आत्मा ब्रह्म है, कोई परआतम को ब्रह्म बताता है। कोई ओइम, सोऽहं, ज्योति स्वरूप को ब्रह्म बताता है। इस तरह से उस पारब्रह्म की पहचान किसी को नहीं हुई।

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, रहत सबन में व्याप।
कोई कहे ए सबे छाया, नांहीं यामें आप।। ४ ।।

कोई कहता है ब्रह्म सब में व्यापक है। कोई कहता है कि यह सब माया है। इसमें पारब्रह्म नहीं है।

कोई कहे ओ निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग।
कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग।। ५ ।।

कोई कहते हैं कि वह निर्गुण है और सबसे अलग रहता है। कोई कहता है कि ब्रह्म और जीव दो नहीं एक ही हैं।

Nijanand App

कोई कहे ए तेज पुंज, याकी किरना सबे संसार।
कोई कहे याको अंग न इन्द्री, निरंजन निराकार।। ६ ।।

कोई उसे रोशनी का समूह (ज्योति स्वरूप) कहते हैं जिसकी किरणें सारे संसार में फैली हैं। कोई कहते हैं कि वह अंग और इन्द्रियों के बिना है, निराकार है जिसे आंख से देखा नहीं जा सकता।

कोई कहे ओ पुरुख उत्तम, और ए सबे सुपन।
कोई कहे ए अलख अलहा, कोई कहे सब सुन्न।। ७ ।।

कोई पारब्रह्म को उत्तम पुरुष बताते हैं और इस सृष्टि को सपना बताते हैं। कोई उसे 'दिखता नहीं' 'मिलता नहीं' कहते हैं और कोई उसे शून्य कहते हैं।

कोई कहे ओ सदा सिव, और न कोई देव।
कोई कहे आद नारायन, करत कमला जाकी सेव।। ८ ।।

कोई पारब्रह्म को सदा शिव के रूप में जानते हैं और कहते हैं कि और कोई देवता है नहीं। कोई उसे आदि नारायण कहते हैं जिसकी लक्ष्मी सेवा करती हैं।

कोई कहे आदे आद माता, और न कोई क्यांहें।
सिव नारायन सबे याथें, या बिन कछुए नाहें।। ९ ।।

कोई उसे आदि माता के रूप में मानते हैं और कहते हैं कि और कहीं कुछ नहीं है। इसी आदि माता से ही शंकर और नारायण की उत्पत्ति हुई है। इसके बिना कुछ नहीं है।

कोई कहे याको करम करता, सब बंधे आवें जाएं।
तीनों गुन भी करमें बांधे, सो फेर फेर फेरे खाएं।। १० ।।

कोई उस पारब्रह्म को कर्म का कर्ता बताते हैं। इस कर्म के बन्धन से जन्म-मरण मानते हैं और कहते हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी कर्म में बंधे हैं। इस तरह से सारा जगत जन्म-मरण के चक्कर में है।

कोई कहे ए सबे काल, करम सक्त उपाए।
खेलावे अपने मुख में, आखिर दोऊ को खाए।। ११ ।।

कोई पारब्रह्म को काल का रूप बताते हैं जो शक्ति और कर्म का ही रूप है। सारा ब्रह्माण्ड काल में खेलता है और काल में समाप्त हो जाता है। काल अन्त में पिंड और ब्रह्माण्ड दोनों को खा जाता है।

कोई करे काल को संजम, कोई दिन काया बचाए।
कोई राते करामतें, यों सब निगम नचाए।। १२ ।।

कोई काल से बचने का उपाय करते हैं और कुछ दिन अपने शरीर को प्राणायाम से बचा लेते हैं। कोई करामात में उलझे हैं और किसी को वेद नचा रहे हैं।

पढ़ें गुनें विकार न छूटे, आग न अंग थें जाए।
आप वतन चीन्हे बिना, तो लों जल बिन गोते खाए।। १३ ।।

वेद के पढ़े लोगों के संशय नहीं मिटते। इनको अपने अहंकार की अग्नि अन्दर से जलाती रहती है। अपने घर की पहचान न मिलने से बिना जल के भवसागर में गोते खाते रहते हैं।

ए संसे सब समझाए के, कोई अंग करे उजास।
सो गुर मेरा मै सेवों ताए, सुध चित होए दास।। १४ ।।

यदि कोई यह सब संशय मिटाकर पारब्रह्म का ज्ञान दे तो वह मेरा गुरु होगा और मैं उसकी शुद्ध चित्त से शिष्य बनकर सेवा करूंगा।

Nijanand App

मैं तो खोजों सुध पार की, कोई न देवे बताए।
मोह अहंकार के बीच में, सब इतहीं रहे उरझाए।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं तो क्षर के पार पारब्रह्म की खोज में हूं। मुझे कोई बताए। तुम सब यहां मोह और अहंकार के बीच उलझे पड़े हो।

समझे बिना सुख पार को नाहीं, जो उदम करो कई लाख।
तोलों प्रेम न उपजे पूरा, जो लों अंदर न देवे साख।। १६ ।।

तुम लाखों उपाय भले ही कर लो पर बिना इसको समझे पार का सुख नहीं मिलेगा। जब तक अन्दर से जीव गवाही नहीं देता तब तक पारब्रह्म से पूरा प्रेम नहीं हो सकता।

ए धोखे गुर सर्वग्यन भाने, जिन पाया सब विवेक।
बाहेर उजाला करके, आखिर देखावें एक।। १७ ।।

इन सब संशयों को कोई पूर्ण ज्ञानी ही जिन्हें विवेक से पहचान हो गई हो वही मिटा सकते हैं और वही सब अज्ञानता मिटाकर एक पारब्रह्म की पहचान करा सकते हैं।

महामत सो गुर कीजिए, जो बतावे मूल अंकूर।
आतम अर्थ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि गुरु उसे ही बनाना चाहिए जो निजघर की निसबत (मूल सम्बन्ध) की पहचान करा दे तथा आत्मा का भेद बताए। तभी अपने निज घर धनी के चरणों में खड़े हो जाएंगे।

|| प्रकरण || २८ || चौपाई || ३२८ ||

राग रामकली

संत जी सुनियो रे, जो कोई हंस परम।
मैं पूछत हों परआतमा, मेरा भानो एही भरम।। १ ।।

अब श्री महामतिजी संतों में परमहंसों से कहते हैं कि मैं परआतम के बारे में कुछ पूछता हूं। मेरे संशय मिटाओ।

जिन जानो विवादे पूछे, मैं जग्यासू करों खोज।
जो लों धोखा न मिटे, साधो तो लों न छूटे बोझ।। २ ।।

ऐसा न समझना कि मैं विवाद के लिए यह पूछता हूं। मुझे जानने की इच्छा है इसलिए खोज करता हूं। हे साधो! जब तक मन के यह संशय न मिटें तब तक मन का बोझ हटता नहीं।

कोई कहे ए भरम की बाजी, ज्यों खेलत कबूतर।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर।। ३ ।।

कोई कहता है कि यह खेल के कबूतर की तरह भ्रम का खेल है। जो खेल के कबूतर की तरह जीव सृष्टि हैं, वह बाजीगर की तरह पारब्रह्म को कैसे पा सकते हैं, अर्थात् जैसे खेल के कबूतर बाजीगर को नहीं जानते वैसे ही यहां के जीव पारब्रह्म को कैसे जान सकते हैं?

कोई कहे ए ब्रह्मकी आभा, आभा तो आपसी भासे।
तो ए आभा क्यों कहिए ब्रह्मकी, जो होत हैं झूठे तमासे।। ४ ।।

कोई कहते हैं कि यह संसार ब्रह्म की आभा है। तो इसे ब्रह्म की आभा के समान ही होना चाहिए। यहां तो झूठे खेल तमाशे हो रहे हैं तो इसे ब्रह्म की आभा कैसे माना जाए?

Nijanand App

मैं तो खोजों सुध पार की, कोई न देवे बताए।
मोह अहंकार के बीच में, सब इतहीं रहे उरझाए।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं तो क्षर के पार पारब्रह्म की खोज में हूं। मुझे कोई बताए। तुम सब यहां मोह और अहंकार के बीच उलझे पड़े हो।

समझे बिना सुख पार को नाहीं, जो उदम करो कई लाख।
तोलों प्रेम न उपजे पूरा, जो लों अंदर न देवे साख।। १६ ।।

तुम लाखों उपाय भले ही कर लो पर बिना इसको समझे पार का सुख नहीं मिलेगा। जब तक अन्दर से जीव गवाही नहीं देता तब तक पारब्रह्म से पूरा प्रेम नहीं हो सकता।

ए धोखे गुर सर्वग्यन भाने, जिन पाया सब विवेक।
बाहेर उजाला करके, आखिर देखावें एक।। १७ ।।

इन सब संशयों को कोई पूर्ण ज्ञानी ही जिन्हें विवेक से पहचान हो गई हो वही मिटा सकते हैं और वही सब अज्ञानता मिटाकर एक पारब्रह्म की पहचान करा सकते हैं।

महामत सो गुर कीजिए, जो बतावे मूल अंकूर।
आतम अर्थ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि गुरु उसे ही बनाना चाहिए जो निजघर की निसबत (मूल सम्बन्ध) की पहचान करा दे तथा आत्मा का भेद बताए। तभी अपने निज घर धनी के चरणों में खड़े हो जाएंगे।

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ३२८ ॥

राग रामकली

संत जी सुनियो रे, जो कोई हंस परम।
मैं पूछत हों परआतमा, मेरा भानो एही भरम।। १ ।।

अब श्री महामतिजी संतों में परमहंसों से कहते हैं कि मैं परआतम के बारे में कुछ पूछता हूं। मेरे संशय मिटाओ।

जिन जानो विवादे पूछे, मैं जग्यासू करों खोज।
जो लों धोखा न मिटे, साधो तो लों न छूटे बोझ।। २ ।।

ऐसा न समझना कि मैं विवाद के लिए यह पूछता हूं। मुझे जानने की इच्छा है इसलिए खोज करता हूं। हे साधो! जब तक मन के यह संशय न मिटें तब तक मन का बोझ हटता नहीं।

कोई कहे ए भरम की बाजी, ज्यों खेलत कबूतर।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर।। ३ ।।

कोई कहता है कि यह खेल के कबूतर की तरह भ्रम का खेल है। जो खेल के कबूतर की तरह जीव सृष्टि हैं, वह बाजीगर की तरह पारब्रह्म को कैसे पा सकते हैं, अर्थात् जैसे खेल के कबूतर बाजीगर को नहीं जानते वैसे ही यहां के जीव पारब्रह्म को कैसे जान सकते हैं?

कोई कहे ए ब्रह्मकी आभा, आभा तो आपसी भासे।
तो ए आभा क्यों कहिए ब्रह्मकी, जो होत हैं झूठे तमासे।। ४ ।।

कोई कहते हैं कि यह संसार ब्रह्म की आभा है। तो इसे ब्रह्म की आभा के समान ही होना चाहिए। यहां तो झूठे खेल तमाशे हो रहे हैं तो इसे ब्रह्म की आभा कैसे माना जाए?

Nijanand App

कोई कहे ए कछुए नाहीं, तो ए भी क्यों बनि आवे।
जो यामें ब्रह्म सत्ता न होती, तो अधखिन रहने न पावे।। ५ ।।

कोई कहता है यह कुछ भी नहीं है, तो ऐसा भी क्यों माना जाए? यदि इसमें पारब्रह्म की सत्ता न होती तो यह आधे क्षण भी नहीं टिकता।

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, तब तो अग्यान कछुए नाहीं।
तो खट सास्त्र हुए काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहीं।। ६ ।।

कोई कहते हैं कि ब्रह्म घट-घट व्यापी है, अर्थात् सभी ज्ञानी हैं। तब तो अज्ञान होना ही नहीं चाहिए। तो फिर यह षट्शास्त्र किसके लिए बने हैं, मेरे मन में ऐसा संशय आता है।

कोई कहे ए पुरुख प्रकृती, मिल रचियो खेल एह।
तो सूरज दृष्टे क्यों रहे अंधेरी, ए भी बड़ा संदेह।। ७ ।।

कोई कहता है कि पुरुष और प्रकृति दोनों ने मिलकर ब्रह्माण्ड को बनाया है। महामतिजी कहते हैं कि सूर्य के सामने अंधेरा कैसे रह सकता है? अर्थात् ब्रह्म के साथ माया कैसे रह सकती है, यही बड़ा सन्देह है।

कोई कहे ए सबे सुपना, न्यारा खावंद है और।
तो ए सुपना जब उड़ गया, तब खावंद है किस ठौर।। ८ ।।

कोई कहते हैं कि सब सपना है और इसका स्वामी पारब्रह्म इनसे अलग है। महामतिजी कहते हैं कि जब प्रलय में सपने का ब्रह्माण्ड समाप्त हो जाएगा तब पारब्रह्म का ठिकाना कौन-सा होगा?

ऊपर तले माहें बाहेर, दसों दिसा सब माया।
खट प्रमानथें ब्रह्म रहित है, सो क्यों कर दृढ़ाया।। ९ ।।

ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर दसों दिशाओं में माया का ही विस्तार है। पारब्रह्म षट् प्रमाण से अलग है, (मन, चित्त, बुद्धि, श्रवण, दृष्ट और शब्द) तो उसका निश्चय कैसे करें?

बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जो लों पोहोंचे मन।
उतपन सारी आवटे, जो कछू कहिए वचन।। १० ।।

बुद्धि, चित्त, दृष्टि, कान, मन और शब्द की जहां तक पहुंच है वह सब नाशवान हैं।

कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत खोजी पर पर।
अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर।। ११ ।।

कोई कहता है कि पारब्रह्म के लिए ही माया में खोज की। बिना माया को खोजे यदि हम पारब्रह्म (अद्वैत) का एक शब्द भी बोलेंगे तो सिर कटने वाली बात है, अर्थात् आधार ही समाप्त हो जाएगा।

कोई कहे अद्वैत के आड़े, सब द्वैतै को विस्तार।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार।। १२ ।।

कोई यह कहता है कि पारब्रह्म की आड़ में सब माया का विस्तार है और माया को छोड़कर आगे कोई निर्णय करके बोल नहीं सका।

भोमका सात कही वसिष्टें, तामें पांचमी केवल विदेही।
छठी को सब्द ना निकसे, तो सातमी दृढ़ क्यों होई।। १३ ।।

वसिष्ठजी ने सात भूमिकाएं [(१) शुभेच्छा—वैराग्य पूर्ण मोक्ष की इच्छा, (२) विचारणा—शास्त्रों का अध्ययन, मनन, सत्संग, विवेकपूर्ण वैराग्य जनित एवं अभ्यास पूर्वक सदाचार, (३) तनुमानसा—शुभेच्छा

Nijanand App

और विचारणा द्वारा अनासक्ति, (४) सत्वापत्ति—उक्त उपायों से चित्त शुद्धि एवं सत्य-स्वरूप परमात्मा में तद्रूप स्थिति। (५) असंसक्ति—बाह्य संस्कारों से एवं अन्तः समाधिस्थ होना, (६) पदार्थ-भावना—किसी पदार्थ के अन्तः बाह्य एवं स्वभाव से परे, (७) तुर्यगा—भेद रूप संसार सत्ता-स्फूर्ति का अभाव, एवं आत्मा भाव में भाविकनिष्ट) कही हैं।] इसमें पांचवीं भूमिका तक विदेही राजा जनक ही पहुंच सके। छठी भूमिका का उनके मुख से शब्द ही नहीं निकला तो सातवीं का कहना ही क्या?

पार वचन कहे कौन दूजा, सर्वग्यन को सब सूझे।
ए संसे भानो आतम के, ज्यों परआतम बूझे।। १४ ।।

सब ज्ञान का जो मालिक है उसके बिना पार का ज्ञान कोई नहीं दे सकता। वही आत्मा के संशय मिटाकर परआतम से मिला सकता है।

परमहंस बिन कौन कहे, जिन तजे हैं तीन सरीर।
कहे महामत महादिसा धनी की, कोई कर द्यो जुदे खीर नीर।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे परमहंसो! तुमने स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को त्याग कर यह दर्जा प्राप्त किया है, तो तुम्हारे बिना इसका कौन निर्णय करेगा? श्री महामतिजी कहते हैं कि माया और पारब्रह्म का अलग-अलग निर्णय करके धनी का धाम बताओ।

|| प्रकरण || २९ || चौपाई || ३४३ ||

राग श्री

चीन्हे क्यों कर ब्रह्म को, ए तो गुन ही के अंग को विकार।
बाजीगरें बाजी रची, मूल माया तें मोह अहंकार।। १ ।।

उस पारब्रह्म को भला यह संसारी जीव कैसे समझ सकते हैं, क्योंकि इनका शरीर जिन पांच तत्व और तीन गुणों से बना है उनकी उत्पत्ति मोह तत्व अहंकार से हुई है जो सबसे बड़ा विकार है जिससे पारब्रह्म की पहचान नहीं होती, क्योंकि इसके बनाने वाले बाजीगर अक्षर ब्रह्म ने इस माया के मूल को मोह और अहंकार से बनाया है।

जाको पेड़ प्रतिबिंब प्रकृती, पांच तत्व ही को आकार।
मांहें खेले निरगुन व्यापक, लिए माया मोह अहंकार।। २ ।।

जिस पेड़ की जड़ ही प्रकृति की छाया (माया) है तथा जिसका पांच तत्व का आकार है, वह माया, मोह और अहंकार के घमण्ड में ब्रह्म को निर्गुण तथा व्यापक मानते हैं। शरीर उनका भी पांच तत्व का है।

लोक चौदे दसो दिस, सब नाटक स्वांग संसार।
आवे नैन श्रवन मन वचन, ए सब माया मोह अहंकार।। ३ ।।

चौदह लोकों की दसों दिशाओं में सब माया का ढोंग ही दिखाई पड़ता है। जो कुछ नजर में आता है या कानों से सुना जाता है या मन, वचन से जिसका वर्णन होता है, वह सब माया, मोह और अहंकार का रूप है।

क्या दानव क्या देवता, क्या तिर्थंकर अवतार।
ब्रह्मा विष्णु महेस लों, सो भी पैदा माया मोह अहंकार।। ४ ।।

राक्षस, देवता, तीर्थंकर, अवतार, ब्रह्मा, विष्णु और महादेव, सभी माया, मोह और अहंकार से ही पैदा हुए हैं।

Nijanand App

और विचारणा द्वारा अनासक्ति, (४) सत्वापत्ति—उक्त उपायों से चित्त शुद्धि एवं सत्य-स्वरूप परमात्मा में तद्रूप स्थिति। (५) असंसक्ति—बाह्य संस्कारों से एवं अन्तः समाधिस्थ होना, (६) पदार्थ-भावना—किसी पदार्थ के अन्तः बाह्य एवं स्वभाव से परे, (७) तुर्यगा—भेद रूप संसार सत्ता-स्फूर्ति का अभाव, एवं आत्मा भाव में भाविकनिष्ट) कही हैं।] इसमें पांचवीं भूमिका तक विदेही राजा जनक ही पहुंच सके। छठी भूमिका का उनके मुख से शब्द ही नहीं निकला तो सातवीं का कहना ही क्या?

पार वचन कहे कौन दूजा, सर्वग्यन को सब सूझे।
ए संसे भानो आतम के, ज्यों परआतम बूझे।। १४ ।।

सब ज्ञान का जो मालिक है उसके बिना पार का ज्ञान कोई नहीं दे सकता। वही आत्मा के संशय मिटाकर परआतम से मिला सकता है।

परमहंस बिन कौन कहे, जिन तजे हैं तीन सरीर।
कहे महामत महादिसा धनी की, कोई कर द्यो जुदे खीर नीर।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे परमहंसो! तुमने स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को त्याग कर यह दर्जा प्राप्त किया है, तो तुम्हारे बिना इसका कौन निर्णय करेगा? श्री महामतिजी कहते हैं कि माया और पारब्रह्म का अलग-अलग निर्णय करके धनी का धाम बताओ।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। ३४३ ।।

राग श्री

चीन्हे क्यों कर ब्रह्म को, ए तो गुन ही के अंग को विकार।
बाजीगरें बाजी रची, मूल माया तें मोह अहंकार।। १ ।।

उस पारब्रह्म को भला यह संसारी जीव कैसे समझ सकते हैं, क्योंकि इनका शरीर जिन पांच तत्व और तीन गुणों से बना है उनकी उत्पत्ति मोह तत्व अहंकार से हुई है जो सबसे बड़ा विकार है जिससे पारब्रह्म की पहचान नहीं होती, क्योंकि इसके बनाने वाले बाजीगर अक्षर ब्रह्म ने इस माया के मूल को मोह और अहंकार से बनाया है।

जाको पेड़ प्रतिबिंब प्रकृती, पांच तत्व ही को आकार।
मांहें खेले निरगुन व्यापक, लिए माया मोह अहंकार।। २ ।।

जिस पेड़ की जड़ ही प्रकृति की छाया (माया) है तथा जिसका पांच तत्व का आकार है, वह माया, मोह और अहंकार के घमण्ड में ब्रह्म को निर्गुण तथा व्यापक मानते हैं। शरीर उनका भी पांच तत्व का है।

लोक चौदे दसो दिस, सब नाटक स्वांग संसार।
आवे नैन श्रवन मन वचन, ए सब माया मोह अहंकार।। ३ ।।

चौदह लोकों की दसों दिशाओं में सब माया का ढोंग ही दिखाई पड़ता है। जो कुछ नजर में आता है या कानों से सुना जाता है या मन, वचन से जिसका वर्णन होता है, वह सब माया, मोह और अहंकार का रूप है।

क्या दानव क्या देवता, क्या तिर्थंकर अवतार।
ब्रह्मा विष्णु महेस लों, सो भी पैदा माया मोह अहंकार।। ४ ।।

राक्षस, देवता, तीर्थंकर, अवतार, ब्रह्मा, विष्णु और महादेव, सभी माया, मोह और अहंकार से ही पैदा हुए हैं।

Nijanand App

अब औरन की मैं क्या कहूं, जो बड़कों का ए हाल।
जल जैसे तरंग तैसे, उठे माया मोह अहंकार।। ५ ।।

जब संसार के इन बड़ों का यह हाल है तो दूसरों की मैं क्या कहूं? जो जितने छोटे और बड़े हैं, जितना जिसका रूप है, उतना ही माया, मोह और अहंकार का रूप है।

जो बंध बांधे बाप ने, बेटे चले जाए तिन लार।
जीव उरझे जाली छल की, ए सब माया मोह अहंकार।। ६ ।।

इन सबके जनक (बाप) त्रिगुण ने जो नियम यहां बना दिए, उनके पुत्र संसार के सारे जीव उसी राह पर चल रहे हैं और छल रूपी माया की जाली, मोह और अहंकार में फंसे हैं।

दयोहरे मसीत अपासरे, सब लगे माहें रोजगार।
बाहेर देखावें बंदगी, माहें माया मोह अहंकार।। ७ ।।

मन्दिर, मस्जिद और जैन मन्दिर सब माया के धन्धे में लगे हैं। ऊपर से बन्दगी करते दिखाई देते हैं और अन्दर माया, मोह और अहंकार से भरे पड़े हैं।

जुदे जुदे भेख दरसनी, अनेक इष्ट आचार।
धरे नाम धनी के जुदे जुदे, पैंडे चलें माया मोह अहंकार।। ८ ।।

इस संसार में ज्ञान देने वाले तरह-तरह के भेष धारण करके अनेक इष्टों की पूजा (अर्चना) करते हैं और परमात्मा के अलग-अलग नाम रख करके अलग-अलग पंथ तथा धर्म माया, मोह और अहंकार की भावना से चलाते हैं।

खोज खोज खट सास्त्र हुए, अनेक वचन विस्तार।
करम उपासना ग्यान की, बानी थकी माहें माया मोह अहंकार।। ९ ।।

छः शास्त्र के रचने वालों ने अपनी वाणी में कर्म, उपासना और ज्ञान का बहुत विस्तार से वर्णन किया, परन्तु वह भी माया, मोह, अहंकार में लिप्त रहे और आगे वर्णन न कर सके।

सब्द सुनें एक दूजे के, फेर फेर करें विचार।
किव कर नाम धरें अपने, सब मगन माया मोह अहंकार।। १० ।।

एक दूसरे की वाणी को सुनकर विचार करते हैं और अपने नाम की स्वयं कविता बनाते हैं और इस तरह से माया, मोह और अहंकार में मग्न रहते हैं।

ए बानी कथें सब अगम, माहें गुझ सब्द हैं पार।
सो ए कैसे कर समझहीं, मोहोरे माया मोह अहंकार।। ११ ।।

यह सब पारब्रह्म को अगम बतलाते हैं। पार में बैठे पारब्रह्म की पहचान गुह्य (गुझ) है। इस संसार के ज्ञानी तथा अगुए माया, मोह, अहंकार में डूबकर पारब्रह्म को कैसे समझ सकते हैं?

यामें जीव दोए भांत के, एक खेल दूजे देखनहार।
पेहेचान न होवे काहू को, आड़ी पड़ी माया मोह अहंकार।। १२ ।।

इस संसार में दो प्रकार के जीव हैं। एक खेलने वाले तथा दूसरे देखने वाले, परन्तु माया, मोह और अहंकार के परदे में पारब्रह्म की पहचान किसी को नहीं होती।

Nijanand App

ए खेल किया जिन खातिर, सो तो कोई हैं सिरदार।
जो लों न होवें जाहेर, तो लों उड़े न माया मोह अहंकार।। १३ ।।

यह खेल जिनके वास्ते बनाया है वह सिरदार (प्रधान) ब्रह्मसृष्टि है। जब तक वह जाहिर नहीं होती तब तक माया, मोह और अहंकार का परदा नहीं हट सकता।

ऐसे खेल अनेक एक खिन में, करे अग्याएं करतार।
सो करतार ठौर क्यों पाइए, जो लों उड़े न माया मोह अहंकार।। १४ ।।

अक्षर ब्रह्म के हुकम से एक क्षण में अनेक ब्रह्माण्ड बनते हैं, इसलिए जब तक माया, मोह और अहंकार समाप्त न हो जाएं, तब तक अक्षर ब्रह्म के धाम को भी कैसे जाना जा सकता है?

महामत होसी सब जाहेर, मिले अछरातीत भरतार।
वैराट होसी नेहेचल, उड़्यो माया मोह अहंकार।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब अक्षरातीत धनी मिल गए हैं और अब ब्रह्मसृष्टि जाहिर हो जाएंगी। संसार के जीवों में से माया, मोह और अहंकार समाप्त हो जाएंगे और उनको अखण्ड कर दिया जाएगा।

|| प्रकरण || ३० || चौपाई || ३५८ ||

राग श्री सोरठ

कलि में देख्या ग्यान अचंभा।
बातन मोहोल रचें अति सुन्दर, चेजा जिमी न थंभा।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कलियुग में मैंने विचित्र (अनोखा) ही ज्ञान देखा। यहां बड़ी-बड़ी बातों के महल बने हैं जिनका कोई आधार नहीं हैं, अर्थात् न जमीन है, न खम्भे हैं न कोई बीम है।

अंग न इंद्री अंतस्करन वाचा, ब्रह्म न पोहोंचे कोए।
यों कहें साख पुरावें श्रुती, फेर कहें अनुभव होए।। २ ।।

अंग, इन्द्रिय, अन्तःकरण, वाणी में कोई भी पारब्रह्म तक नहीं पहुंचा। ऐसा कहकर वेदों की गवाही देते हैं और कहते हैं कि मुझे ब्रह्म का अनुभव हो गया है।

अहंब्रह्म अस्मी होए के बैठें, तत्वमसी और कहावें।
स्वामी सिष्य न क्रिया करनी, यों महा वाक्य दृढ़ावें।। ३ ।।

वह कहते हैं कि मैं ही ब्रह्म हूं तथा तुम भी वही हो जो मैं हूं, अर्थात् तुम भी ब्रह्म हो। तो फिर वहां गुरु कैसा? शिष्य कैसा? फिर कैसी करनी और कैसी क्रिया? इस तरह से इन महान शब्दों को अपने मिटने वाले तन पर घटा लेते हैं।

खट प्रमान से ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत हम आप।
माया ईश्वर त्रिगुन हमथें, हमहीं रहे सबमें व्याप।। ४ ।।

जो ब्रह्म छः प्रमाणों से अलग है, उस अखण्ड को अपने आप पर घटा लेते हैं और कहते हैं कि माया, ईश्वर, त्रिगुण सब हमसे हैं और हमीं सबमें व्यापक हैं।

ईश्वर फिरे न रहें त्रिगुन, त्रिगुन चलें जीव भेले।
ए कहावें ब्रह्म सब पैदास याथें, और जात हैं आप अकेले।। ५ ।।

महाप्रलय में जब नारायण, ब्रह्मा, विष्णु और महेश जीवों के साथ समाप्त हो जाते हैं तो यह जो अपने आपको ब्रह्म मानते हैं और कहते हैं कि सृष्टि हमसे बनी है, तो मरते समय इनका जीव अकेला क्यों जाता है? संसार को साथ क्यों नहीं लेकर मरते?

Nijanand App

ए खेल किया जिन खातिर, सो तो कोई हैं सिरदार।
जो लों न होवें जाहेर, तो लों उड़े न माया मोह अहंकार।। १३ ।।

यह खेल जिनके वास्ते बनाया है वह सिरदार (प्रधान) ब्रह्मसृष्टि है। जब तक वह जाहिर नहीं होती तब तक माया, मोह और अहंकार का परदा नहीं हट सकता।

ऐसे खेल अनेक एक खिन में, करे अग्याएं करतार।
सो करतार ठौर क्यों पाइए, जो लों उड़े न माया मोह अहंकार।। १४ ।।

अक्षर ब्रह्म के हुकम से एक क्षण में अनेक ब्रह्माण्ड बनते हैं, इसलिए जब तक माया, मोह और अहंकार समाप्त न हो जाएं, तब तक अक्षर ब्रह्म के धाम को भी कैसे जाना जा सकता है?

महामत होसी सब जाहेर, मिले अछरातीत भरतार।
वैराट होसी नेहेचल, उड़्यो माया मोह अहंकार।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब अक्षरातीत धनी मिल गए हैं और अब ब्रह्मसृष्टि जाहिर हो जाएंगी। संसार के जीवों में से माया, मोह और अहंकार समाप्त हो जाएंगे और उनको अखण्ड कर दिया जाएगा।

|| प्रकरण || ३० || चौपाई || ३५८ ||

राग श्री सोरठ

कलि में देख्या ग्यान अचंभा।
बातन मोहोल रचें अति सुन्दर, चेजा जिमी न थंभा।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कलियुग में मैंने विचित्र (अनोखा) ही ज्ञान देखा। यहां बड़ी-बड़ी बातों के महल बने हैं जिनका कोई आधार नहीं हैं, अर्थात् न जमीन है, न खम्भे हैं न कोई बीम है।

अंग न इंद्री अंतस्करन वाचा, ब्रह्म न पोहोंचे कोए।
यों कहें साख पुरावें श्रुती, फेर कहें अनुभव होए।। २ ।।

अंग, इन्द्रिय, अन्तःकरण, वाणी में कोई भी पारब्रह्म तक नहीं पहुंचा। ऐसा कहकर वेदों की गवाही देते हैं और कहते हैं कि मुझे ब्रह्म का अनुभव हो गया है।

अहंब्रह्म अस्मी होए के बैठें, तत्वमसी और कहावें।
स्वामी सिष्य न क्रिया करनी, यों महा वाक्य दृढ़ावें।। ३ ।।

वह कहते हैं कि मैं ही ब्रह्म हूं तथा तुम भी वही हो जो मैं हूं, अर्थात् तुम भी ब्रह्म हो। तो फिर वहां गुरु कैसा? शिष्य कैसा? फिर कैसी करनी और कैसी क्रिया? इस तरह से इन महान शब्दों को अपने मिटने वाले तन पर घटा लेते हैं।

खट प्रमान से ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत हम आप।
माया ईश्वर त्रिगुन हमथें, हमहीं रहे सबमें व्याप।। ४ ।।

जो ब्रह्म छः प्रमाणों से अलग है, उस अखण्ड को अपने आप पर घटा लेते हैं और कहते हैं कि माया, ईश्वर, त्रिगुण सब हमसे हैं और हमीं सबमें व्यापक हैं।

ईश्वर फिरे न रहें त्रिगुन, त्रिगुन चलें जीव भेले।
ए कहावें ब्रह्म सब पैदास याथें, और जात हैं आप अकेले।। ५ ।।

महाप्रलय में जब नारायण, ब्रह्मा, विष्णु और महेश जीवों के साथ समाप्त हो जाते हैं तो यह जो अपने आपको ब्रह्म मानते हैं और कहते हैं कि सृष्टि हमसे बनी है, तो मरते समय इनका जीव अकेला क्यों जाता है? संसार को साथ क्यों नहीं लेकर मरते?

Nijanand App

कूवत कछुए न पाइए माहें, खेलें मोह में परे परवस मन।
भोमका एक न चढ़ सकें, कहावें ईस्वर को महाकारन।। ६ ।।

इनमें कुछ भी शक्ति नहीं होती। यह मन के अहंकार में आकर इसमें खेलते हैं। एक भोमिका तो चढ़ नहीं सकते और अपने को ईश्वर का महाकारण (पारब्रह्म) मानते हैं।

तीन सरीर उड़ावें मुख थें, आप होत हैं ब्रह्म।
पूछे तें कहें हम भोगवे, प्रालब्ध जो करम।। ७ ।।

यहां के ज्ञानी अपने मुख से कहते हैं कि हम स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को छोड़कर ब्रह्म बन गए हैं और पूछने पर कहते हैं कि हम तो पूर्व जन्म के कर्मों का फल भोग रहे हैं (कर्मों के अधीन हैं)।

माया ईस्वर तें होत हैं न्यारे, न्यारे होत तीन देह।
अद्वैत को प्रालब्ध लगावें, देख्या ग्यान बड़ा ब्रह्म एह।। ८ ।।

यह ज्ञानी अपने को माया, ईश्वर और तीनों शरीर से अलग होकर पारब्रह्म को भी कर्म बन्धन में लाते हैं। इसलिए महामतिजी कहते हैं कि इनका ब्रह्म और ज्ञान दोनों धन्य हैं जो कर्म से ब्रह्म बंध सकता है और मिल सकता है।

ऐसे कोट ब्रह्मांड होवें पल में, अद्वैत के हुकम।
ए कहावें ब्रह्म सुध नहीं ब्रह्म घर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम।। ९ ।।

अक्षर ब्रह्म जो अखण्ड है उनके हुकम से एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते हैं। यहां के जो ज्ञानी हैं वह अपने को ब्रह्म तो कहते हैं, परन्तु उनको तो अखण्ड घर की सुध ही नहीं है तथा माया और ब्रह्म की पहचान नहीं है।

सुकमुनी बानी बोल्या वेदांत, सो इनों क्यों समझी जाए।
होसी प्रगट प्रकास निज बुध का, सो महामत देसी बताए।। १० ।।

शुकदेव मुनिजी ने वेदान्त का बखान किया है। वह यहां के ज्ञानियों की समझ में आता नहीं है। जब जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी जाहिर होगी, तब महामतिजी इनको अखण्ड घर का ठिकाना बताएंगी।

|| प्रकरण || ३१ || चौपाई || ३६८ ||

राग श्री गौड़ी

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म देखलाओ, तुम सकल में सांई देख्या।
ए संसार सकल है सुपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या।। १ ।।

हे ब्रह्मज्ञानियो! तुम ब्रह्म की पहचान कराओ। तुम कहते हो कि ब्रह्म घट-घटव्यापी है। यह संसार तो सपने का है। तो सपने में तुमने सच्चिदानन्द पारब्रह्म को कैसे पहचान लिया?

सत सुपने में क्योंकर आवे, सत सांई है न्यारा।
तुम पारब्रह्म सों परच्या नाहीं, तो क्यों उतरोगे पारा।। २ ।।

पारब्रह्म जो सत है, वह सपने में नहीं आ सकता। वह इस सपने से अलग है। तुम्हें पारब्रह्म की पहचान नहीं हुई है तो फिर भवसागर को कैसे पार करोगे?

Nijanand App

कूवत कछुए न पाइए माहें, खेलें मोह में परे परवस मन।
भोमका एक न चढ़ सकें, कहावें ईस्वर को महाकारन।।६ ।।

इनमें कुछ भी शक्ति नहीं होती। यह मन के अहंकार में आकर इसमें खेलते हैं। एक भोमिका तो चढ़ नहीं सकते और अपने को ईश्वर का महाकारण (पारब्रह्म) मानते हैं।

तीन सरीर उड़ावें मुख थें, आप होत हैं ब्रह्म।
पूछे तें कहें हम भोगवे, प्रालब्ध जो करम।।७ ।।

यहां के ज्ञानी अपने मुख से कहते हैं कि हम स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को छोड़कर ब्रह्म बन गए हैं और पूछने पर कहते हैं कि हम तो पूर्व जन्म के कर्मों का फल भोग रहे हैं (कर्मों के अधीन हैं)।

माया ईस्वर तें होत हैं न्यारे, न्यारे होत तीन देह।
अद्वैत को प्रालब्ध लगावें, देख्या ग्यान बड़ा ब्रह्म एह।।८ ।।

यह ज्ञानी अपने को माया, ईश्वर और तीनों शरीर से अलग होकर पारब्रह्म को भी कर्म बन्धन में लाते हैं। इसलिए महामतिजी कहते हैं कि इनका ब्रह्म और ज्ञान दोनों धन्य हैं जो कर्म से ब्रह्म बंध सकता है और मिल सकता है।

ऐसे कोट ब्रह्मांड होवें पल में, अद्वैत के हुकम।
ए कहावें ब्रह्म सुध नहीं ब्रह्म घर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम।।९ ।।

अक्षर ब्रह्म जो अखण्ड है उनके हुकम से एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते हैं। यहां के जो ज्ञानी हैं वह अपने को ब्रह्म तो कहते हैं, परन्तु उनको तो अखण्ड घर की सुध ही नहीं है तथा माया और ब्रह्म की पहचान नहीं है।

सुकमुनी बानी बोल्या वेदांत, सो इनों क्यों समझी जाए।
होसी प्रगट प्रकास निज बुध का, सो महामत देसी बताए।।१० ।।

शुकदेव मुनिजी ने वेदान्त का बखान किया है। वह यहां के ज्ञानियों की समझ में आता नहीं है। जब जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी जाहिर होगी, तब महामतिजी इनको अखण्ड घर का ठिकाना बताएंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ ३६८ ॥

राग श्री गौड़ी

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म देखलाओ, तुम सकल में सांई देख्या।
ए संसार सकल है सुपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या।।१ ।।

हे ब्रह्मज्ञानियो! तुम ब्रह्म की पहचान कराओ। तुम कहते हो कि ब्रह्म घट-घटव्यापी है। यह संसार तो सपने का है। तो सपने में तुमने सच्चिदानन्द पारब्रह्म को कैसे पहचान लिया?

सत सुपने में क्योंकर आवे, सत सांई है न्यारा।
तुम पारब्रह्म सों परच्या नाहीं, तो क्यों उतरोगे पारा।।२ ।।

पारब्रह्म जो सत है, वह सपने में नहीं आ सकता। वह इस सपने से अलग है। तुम्हें पारब्रह्म की पहचान नहीं हुई है तो फिर भवसागर को कैसे पार करोगे?

Nijanand App

तुम बैकुण्ठ जमपुरी एक कर देखी, तब तो सास्त्र पुरान सब भान्या।
सुकदेव व्यास के वचन बिना, कौन कहे मैं जान्या।। ३ ।।

तुम्हारे ज्ञान से तो बैकुण्ठ और यमपुरी एक हैं। तो सारे ग्रन्थ ही झूठे हो गए। शुकदेव और व्यास की वाणी को जाने बिना कौन कह सकता है कि मैंने पारब्रह्म को जान लिया है।

यामें बड़भागी भए वल्लभाचारज, जाको सुकदेव का गुन भाया।
उत्तम टीका कीन्ही दसम की, तो इन ए फल पाया।। ४ ।।

इस संसार में वल्लभाचार्य ही एक ऐसे हुए हैं जिन्होंने शुकदेव की वाणी को समझा। उन्होंने भागवत के दसवें स्कन्ध का श्रेष्ठ सुबोधिनी टीका किया। तभी वह क्षर के पार अखण्ड बृज और रास का ज्ञान पा सके।

बिना पुरान प्रकास न होई, सास्त्र बिना कौन माने।
एक अखर को अर्थ न आवे, तो ब्रह्म भरम में आने।। ५ ।।

बिना भागवत पुराण के बेहद का ज्ञान मिलता नहीं है और बिना शास्त्र की साक्षी के कौन मानेगा। संसार के ज्ञानियों को इस भागवत पुराण के एक अक्षर का अर्थ समझ में नहीं आता, इसलिए पारब्रह्म को माया में घटा देते हैं।

काल आवत कबूं ब्रह्म भवन में, तुम क्यों न विचारो सोई।
अखंड सांई जो यामें होता, तो भंग ब्रह्मांड को न होई।। ६ ।।

जिस शरीर में ब्रह्म का वास हो, क्या वहां काल (मौत) आएगा? इसका तुम विचार क्यों नहीं करते? यदि अखण्ड पारब्रह्म इस संसार में होते तो फिर इस संसार का प्रलय न होता।

तुम केवल काल तत्व ग्यानी, ब्रह्म ग्यानी भए।
सब दरवाजे खोजे साधो, पर सुन्य छोड़ कोई ना गए।। ७ ।।

तुम केवल काल तत्व को जानने वाले ब्रह्म ज्ञानी हो। हमने सब जगह खोजा और देखा कि निराकार के पार की बात किसी ने नहीं की।

इन सुपने में सब कोई भूल्या, किनहूं न देख्या पार।
बिध बिध सों भवसागर थाह्या, सुकदेव व्यास पुकार।। ८ ।।

इस सपने के संसार में सब कोई भूले हुए हैं। किसी ने बेहद (योगमाया) के ब्रह्माण्ड को भी नहीं देखा। शुकदेव और व्यास मुनिजी ने भी हर तरह से भवसागर को ही खोजा है।

यामें प्रेम लछन एक पारब्रह्म सों, एक गोपियों ए रस पाया।
तब भवसागर भया गौपद बछ, विहंगम पैंडा बताया।। ९ ।।

इस संसार में पारब्रह्म से प्रेम करने वाला रस केवल गोपियों ने ही पाया। इन्होंने इस भवसागर को गाय के बछड़े के खुर के गढ्ढे के समान छोटा समझकर सरलता से पार कर लिया और पक्षी की तरह उड़कर पारब्रह्म से मिलीं।

कई दरवाजे खोजे कबीरें, बैकुंठ सुन्य सब देख्या।
आखिर जाए के प्रेम पुकारया, तब जाए पाया अलेखा।। १० ।।

कबीर ने भी सभी जगह खोजा। बैकुण्ठ और शून्य सभी को देखा। अन्त में जाकर प्रेम 'है' बताया, अर्थात् प्रेम से ही परमात्मा की प्राप्ति होगी तब कहीं जाकर उस अलख की पहचान हुई।

Nijanand App

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म सुपने में, महामत कहे यों पाइए।
पार निकस के पूरन होइए, तब फेर सब दृष्टें देखाइए।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस सपने के ब्रह्माण्ड में ब्रह्म को प्राप्त करने का यह प्रेम लक्षणा भक्ति का ही एक मार्ग है। इस ब्रह्माण्ड से पार निकलकर जब पूर्ण हो जाओगे तब सब कुछ दिखाई देने लगेगा।

॥ प्रकरण ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ ३७९ ॥

राग श्री गौड़ी

रे जीव जी जिन करो यासों नेहड़ा।
जाको सनमुख नाहीं सरम, तासों नाहीं मिलवे को धरम।
ए तो भुलवनी कोई भरम, कोहेड़ा सों लाग्यो करम।। १ ।।

श्री महामतिजी जीव को कहते हैं, हे जीव! तू इस तन से नेह मत लगा। यह शरीर बड़ा बेशर्म है। इससे मित्रता करना धर्म नहीं है। यह तो भूल भुलैया का घर है। इसमें धुन्ध ही धुन्ध है।

नामै जाको प्रपंच, तिन सबको मूल सरीर।
या बन थें बाग विस्तरयो, जानो भरिया मृगजल नीर।। २ ।।

जिसको झूठ कहते हैं वही शरीर है। इसी झूठे शरीर से ही बाल बच्चों का बगीचा सजा है। यह मृगजल के समान लगता है। जैसे चमकती रेती में पानी का सागर नजर आता है, वैसे ही यह बच्चे 'सहारा' नजर आते हैं।

रे जीव सरीर मंदिर सोहामनों, चौदे खूने रे अवास।
इनके भरोसे जे रहे, ते निकस चले निरास।। ३ ।।

हे जीव! यह तुम्हारा घर (शरीर) बड़ा सुहावना है। इसमें दस इन्द्रियां, चार अन्तस्करण तथा चौदह कोनों से शीतल वायु आती है। इन्हीं के भरोसे जो रहते हैं उन्हें अन्त समय में निराशा ही हाथ लगती है।

खास छज्जे गोख जालियां, यामें केती मिलाई धात।
संधो संध समारिया, मिने हिकमत कई हिकात।। ४ ।।

यह शरीर खास छज्जे, झरोखा (आंखें) और जाली, पांच तत्व, तीन गुण मिलाकर बना है और इसके एक-एक अंग को बड़ी कारीगरी के साथ जोड़ा गया है।

मेहेनत करी केती या पर, बिध बिध बांधे बंध।
जानिए सदा नेहेचल, ए रच्यो ऐसी सनंध।। ५ ।।

कारीगर ने इस शरीर को बनाने में बड़ी मेहनत की है। तरह-तरह से अंगों को जोड़ा है और ऐसा लगता है कि यह सदा मेरा रहेगा।

गुन पख अंग इंद्रियां, सबके जुदे जुदे स्वाद।
तरफ अपनी खैंचहीं, खेलत मिने विवाद।। ६ ।।

इसके अन्दर गुण, अंत:करण, इन्द्रियों की अलग-अलग चाहना है। यह आपस में झगड़कर जीव को अपनी तरफ खींचते हैं।

Nijanand App

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म सुपने में, महामत कहे यों पाइए।
पार निकस के पूरन होइए, तब फेर सब दृष्टें देखाइए।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस सपने के ब्रह्माण्ड में ब्रह्म को प्राप्त करने का यह प्रेम लक्षणा भक्ति का ही एक मार्ग है। इस ब्रह्माण्ड से पार निकलकर जब पूर्ण हो जाओगे तब सब कुछ दिखाई देने लगेगा।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ३७९ ।।

राग श्री गौड़ी

रे जीव जी जिन करो यासों नेहड़ा।
जाको सनमुख नाहीं सरम, तासों नाहीं मिलवे को धरम।
ए तो भुलवनी कोई भरम, कोहेड़ा सों लाग्यो करम।। १ ।।

श्री महामतिजी जीव को कहते हैं, हे जीव! तू इस तन से नेह मत लगा। यह शरीर बड़ा बेशर्म है। इससे मित्रता करना धर्म नहीं है। यह तो भूल भुलैया का घर है। इसमें धुन्ध ही धुन्ध है।

नामै जाको प्रपंच, तिन सबको मूल सरीर।
या बन थें बाग विस्तरयो, जानो भरिया मृगजल नीर।। २ ।।

जिसको झूठ कहते हैं वही शरीर है। इसी झूठे शरीर से ही बाल बच्चों का बगीचा सजा है। यह मृगजल के समान लगता है। जैसे चमकती रेती में पानी का सागर नजर आता है, वैसे ही यह बच्चे 'सहारा' नजर आते हैं।

रे जीव सरीर मंदिर सोहामनों, चौदे खूने रे अवास।
इनके भरोसे जे रहे, ते निकस चले निरास।। ३ ।।

हे जीव! यह तुम्हारा घर (शरीर) बड़ा सुहावना है। इसमें दस इन्द्रियां, चार अन्तस्करण तथा चौदह कोनों से शीतल वायु आती है। इन्हीं के भरोसे जो रहते हैं उन्हें अन्त समय में निराशा ही हाथ लगती है।

खास छज्जे गोख जालियां, यामें केती मिलाई धात।
संधो संध समारिया, मिने हिकमत कई हिकात।। ४ ।।

यह शरीर खास छज्जे, झरोखा (आंखें) और जाली, पांच तत्व, तीन गुण मिलाकर बना है और इसके एक-एक अंग को बड़ी कारीगरी के साथ जोड़ा गया है।

मेहेनत करी केती या पर, बिध बिध बांधे बंध।
जानिए सदा नेहेचल, ए रच्यो ऐसी सनंध।। ५ ।।

कारीगर ने इस शरीर को बनाने में बड़ी मेहनत की है। तरह-तरह से अंगों को जोड़ा है और ऐसा लगता है कि यह सदा मेरा रहेगा।

गुन पख अंग इंद्रियां, सबके जुदे जुदे स्वाद।
तरफ अपनी खैंचहीं, खेलत मिने विवाद।। ६ ।।

इसके अन्दर गुण, अंतःकरण, इन्द्रियों की अलग-अलग चाहना है। यह आपस में झगड़कर जीव को अपनी तरफ खींचते हैं।

Nijanand App

या बन थें बाग रंग फूलिया, जानें लेसी सुख अपार।
अधबीच उछेदिया, सो करता गया पुकार।।७।।

इस शरीर रूपी वन से बाल बच्चों रूपी फूल फूले हैं। इनसे लगता है हमें अधिक सुख मिलेगा, किन्तु अधबीच में ही जब यह उजड़ गया, अर्थात् मर गया तो इसमें रहने वाला जीव रोता, चिल्लाता ही रह गया।

मोहे बाग रंग मंदिरों, सेजड़िएँ सोए करार।
सो काढ़े कंठ पकड़ के, गए कल कलते नर नार।।८।।

हे जीव! तुम इस घर-परिवार रूपी बगीचे और महल में मोहित हो गए और आराम से शरीर रूपी सेज पर सोते रहे। अन्त समय में जब यमराज के दूतों ने इसका गला दबाकर निकाला तो सभी नर नारी के जीव रोते बिलखते ही जाते हैं।

ए अनमिलती सों न मिलिए, जाको सांचो नाहीं संग।
नाहीं भरोसो खिन को, ज्यों रैनी को पतंग।।९।।

हे जीव! यह शरीर दोस्ती करने लायक नहीं है। इसकी दोस्ती सच्ची नहीं है। इसका एक क्षण का भरोसा करना भी उसी तरह मूर्खता है जिस तरह से एक बरसाती पतंगे (कीड़े) की आयु रातभर की होती है।

क्यों रे नेहड़ा यासों कीजिए, जो मिलके करे भंग।
एक रस होइए क्यों तिनसे, नेहेचल नहीं जाको रंग।।१०।।

ऐसे शरीर से, जो मिलकर छोड़ जाता है नेह नहीं लगाना चाहिए। जो शरीर अखण्ड नहीं है उससे एक रस नहीं होना चाहिए।

ऐसे कई उजाड़े मन्दिर, ए सब को देवे छेह।
मिलापै में रंग बदले, अधबीच तोड़े नेह।।११।।

इस शरीर ने कई जीवों को उजाड़ा है। यह सबको धोखा देता है। यह मिलते ही अपनी चाल बदल लेता है। कभी भी बीच में छोड़ देता है।

रे जीव सरीर रची सेजड़ी, इत आवे नींद अपार।
ए सूतेही पटकावहीं, पुकार न पीछे बहार।।१२।।

हे जीव! यह शरीर एक ऐसी नशीली सेज (शैया) है जहां नींद अधिक आती है और नशे में सोते-सोते ही यह शरीर छोड़ देता है। फिर कोई सुनने वाला नहीं होता।

यासों तो मनड़ो माने नहीं, जो छोड़े ए अंत्रीयाल।
उरझाए आप न्यारी रहे, जीव को बांध देवे मुख काल।।१३।।

यह शरीर जो अधबीच में छोड़कर चला जाता है फिर भी मन इसमें लगा रहता है। जीव को उलझाकर काल के मुख में देकर यह शरीर अलग हो जाता है।

रे जीव नीके जानिए ए भुलवनी, इत भूले सब कोए।
या रंग रसें जे भूलहीं, तिन करड़ी कसौटी होए।।१४।।

हे जीव! यह शरीर निश्चित ही धोखेबाज है। इससे सभी कोई धोखा खा जाते हैं। इसके मजे में जो फंस जाते हैं, उन्हें कठोर दु:ख देखने पड़ते हैं।

Nijanand App

कांटे चुभे दुख पाइए, सेहे न सके लगार।
पर होत है मोहे अचंभा, ए क्यों सेहेसी जम मार॥ १५ ॥

इस शरीर में कांटा चुभने का दु:ख सहन नहीं होता। महामतिजी कहते हैं कि मैं हैरान हूं कि जीव यम की मार को कैसे सहन करेगा?

इन गफलत के घर में, पड़ेगी बड़ी अगिन।
पीछे लाख चौरासी देह में, जलसी रात और दिन॥ १६ ॥

इस धोखेबाज शरीर के घर में बड़ी भयंकर आग लगेगी। उसके बाद चौरासी लाख योनियों में जन्म मरण के चक्कर में दिन-रात जलना होगा।

ए देखी अजाड़ी आंखां खोल के, याकी तो उलटी सनंध।
ए मोहड़ा लगावे मीठड़ा, पीछे पड़िए बड़े फंद॥ १७ ॥

मैंने इस वीरान बस्ती जैसे शरीर को विचारकर देखा तो इसकी तो चाल उलटी पायी। यह पहले तो बड़ा मीठा मोह लगाती है और बाद में जंजाल में फंसा देती है।

ए अंधेरी है विकट, जाहेर रची जम जाल।
ए पेहेले देखावे सुख सीतल, पीछे जाले अगिन की झाल॥ १८ ॥

यह शरीर अन्धेरी गुफा है। यमराज द्वारा जाल रचा जाता है। पहले तो यह शीतलता और सुख देती है, परन्तु बाद में अग्नि की ज्वाला में जलना पड़ता है।

ए धुतारी को न धीरिए, जो पलटे रंग परवान।
ए विश्व बधे वैराट को, सो भी निगलसी निरवान॥ १९ ॥

इस कपटी शरीर पर कभी विश्वास मत करना। यह क्षण-क्षण में दोस्ती तोड़ता है। सारा विश्व जिस वैराट पुरुष नारायण की वन्दना करता है उसे भी एक दिन खा जाता है।

ए सब मोहे इन मोहनी रे, पर इन बांध्यो न कासों मन।
जीव को यातें बिछड़ते, बड़ी लागी दाझ अगिन॥ २० ॥

हे जीव! सब लोग शरीर रूपी इस मोहिनी से मोहित होकर अपना समझते हैं, पर यह शरीर किसी को अपना नहीं समझता। इसलिए जीव को इस शरीर से अलग होते समय बहुत कष्ट होता है।

॥ प्रकरण ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ ३९९ ॥

अब देह की तरफ का जवाब

रे जीव जी तुमें लागी दाझ मुझ बिछड़ते, पर मैं खाक हुई तुम बिन।
तुम मोही सों न्यारे भए, मोहे राखी नहीं किन खिन॥ १ ॥

अब देह जीव को जवाब देती है।

हे जीवजी! तुम्हें मेरे से अलग होते समय बहुत कष्ट हुआ, परन्तु मैं तो तुम्हारे बिना खाक (मिट्टी हो गई)। तुम जैसे ही मेरे से अलग हुए मुझे किसी ने एक क्षण भी नहीं रखा।

मेरी सेवा जो करते साथीड़े, फूलड़े बिछावते सेज।
सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज॥ २ ॥

मेरे साथी (बाल-बच्चे परिवार वाले) जो मेरी सेवा करते थे, फूलों की सेज बिछाते थे, पंखा लेकर शीतल हवा करते थे, उन्होंने मेरे कण-कण को जला दिया।

Nijanand App

कांटे चुभे दुख पाइए, सेहे न सके लगार।
पर होत है मोहे अचंभा, ए क्यों सेहेसी जम मार।। १५ ।।

इस शरीर में कांटा चुभने का दुःख सहन नहीं होता। महामतिजी कहते हैं कि मैं हैरान हूं कि जीव यम की मार को कैसे सहन करेगा?

इन गफलत के घर में, पड़ेगी बड़ी अगिन।
पीछे लाख चौरासी देह में, जलसी रात और दिन।। १६ ।।

इस धोखेबाज शरीर के घर में बड़ी भयंकर आग लगेगी। उसके बाद चौरासी लाख योनियों में जन्म मरण के चक्कर में दिन-रात जलना होगा।

ए देखी अजाड़ी आंखां खोल के, याकी तो उलटी सनंध।
ए मोहड़ा लगावे मीठड़ा, पीछे पड़िए बड़े फंद।। १७ ।।

मैंने इस वीरान बस्ती जैसे शरीर को विचारकर देखा तो इसकी तो चाल उलटी पायी। यह पहले तो बड़ा मीठा मोह लगाती है और बाद में जंजाल में फंसा देती है।

ए अंधेरी है विकट, जाहेर रची जम जाल।
ए पेहेले देखावे सुख सीतल, पीछे जाले अगिन की झाल।। १८ ।।

यह शरीर अन्धेरी गुफा है। यमराज द्वारा जाल रचा जाता है। पहले तो यह शीतलता और सुख देती है, परन्तु बाद में अग्नि की ज्वाला में जलना पड़ता है।

ए धुतारी को न धीरिए, जो पलटे रंग परवान।
ए विश्व बधे वैराट को, सो भी निगलसी निरवान।। १९ ।।

इस कपटी शरीर पर कभी विश्वास मत करना। यह क्षण-क्षण में दोस्ती तोड़ता है। सारा विश्व जिस वैराट पुरुष नारायण की वन्दना करता है उसे भी एक दिन खा जाता है।

ए सब मोहे इन मोहनी रे, पर इन बांध्यो न कासों मन।
जीव को यातें बिछड़ते, बड़ी लागी दाझ अगिन।। २० ।।

हे जीव! सब लोग शरीर रूपी इस मोहिनी से मोहित होकर अपना समझते हैं, पर यह शरीर किसी को अपना नहीं समझता। इसलिए जीव को इस शरीर से अलग होते समय बहुत कष्ट होता है।

|| प्रकरण || ३३ || चौपाई || ३९९ ||

अब देह की तरफ का जवाब

रे जीव जी तुमें लागी दाझ मुझ बिछड़ते, पर मैं खाक हुई तुम बिन।
तुम मोही सों न्यारे भए, मोहे राखी नहीं किन खिन।। १ ।।

अब देह जीव को जवाब देती है।

हे जीवजी! तुम्हें मेरे से अलग होते समय बहुत कष्ट हुआ, परन्तु मैं तो तुम्हारे बिना खाक (मिट्टी हो गई)। तुम जैसे ही मेरे से अलग हुए मुझे किसी ने एक क्षण भी नहीं रखा।

मेरी सेवा जो करते साथीड़े, फूलड़े बिछावते सेज।
सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज।। २ ।।

मेरे साथी (बाल-बच्चे परिवार वाले) जो मेरी सेवा करते थे, फूलों की सेज बिछाते थे, पंखा लेकर शीतल हवा करते थे, उन्होंने मेरे कण-कण को जला दिया।

Nijanand App

एक बाल टूटे दुख पावते, तिन जारी ले खोरने हाथ।
मनुऐं उतारे या बिध, मेरे सोई संगी साथ।। ३ ।।

मेरे अंग का एक बाल टूटने पर जो कभी दुःखी होते थे, उन्होंने ही अपने हाथ से खोरना (बांस) लेकर मुझे जलाकर मेरी खोपड़ी भी फोड़ दी। मेरे संगी साथियों ने इस बुरी तरह से मुझे मन से उतार दिया।

मैं पाले प्यार करके, सो वैरीड़े भए तिन ताल।
मोसों तो राख्यो ए सनमंध, तुमें डारे ले जम जाल।। ४ ।।

जिनको मैंने बड़े प्यार से पाला था वह उसी समय मेरे दुश्मन हो गये। ऐसी रिश्तेदारी उन्होंने मेरे से निभायी। हे जीवजी! तुम्हें यमराज के दूतों के हवाले कर दिया।

तुम बंध पड़े जिन कारने, किया आप सों ज्यों।
मुझ जैसे होए मोहे छेतरी, तुमको दई अगिन त्यों।। ५ ।।

हे जीवजी! तुमने जिनके वास्ते अपने आपको यमराज के बन्धनों में डाला, उन्होंने मुझे अपना बनाकर ठगा और तुम्हें नरक की अग्नि में भेज दिया।

मैं तो आई तुम खातिर, तुम जानी नहीं सुपन।
मैं तो सुपना हो गई, अब दुखड़े देखो चेतन।। ६ ।।

हे जीवजी! मैं तो तुम्हारे वास्ते ही आई थी। तुमने मेरे सपने के मिटने वाले इस शरीर को पहचाना नहीं। मैं तो अब सपना हो गई। हे चेतन! अब तुम कर्मों के हिसाब से दुःखों को भोगो।

पेहेले क्यों न संभारिए, काहे को पड़िए जम फांस।
लाख चौरासी अगनी, तित जलिए न कीजे बास।। ७ ।।

पहले यदि तुम संभल जाते तो यम की फांसी नहीं लगती। अब चौरासी लाख योनियों में रहकर भुगतिये।

मोसों पेहेचान ना कर सके, मेरा मेला तो अधखिन होए।
मेरी तो पेहेचान जाहेर, मुझे जाती देखे सब कोए।। ८ ।।

मेरा साथ तो आधे क्षण का ही होता है जिसे तुम पहचान नहीं सके। मेरी पहचान तो सभी को है क्योंकि सभी मेरी अर्थी जाते देखते हैं।

तुम जान बूझ मोहे मोहीसों, छोड़ के नेहेचल सुख।
मैं तो आई भले अवसर, पर भूले सो पावे दुख।। ९ ।।

तुमने अखण्ड सुख को छोड़कर, जानबूझ कर मुझसे मोह लगाया। मैं तो तुम्हारे भले के लिए आई थी, पर जो इस बात को भूलता है, वही दुःखी होता है।

ए अवसर क्यों भूलिए, जित पाइए सुख अखंड।
या घर बिना सो ना मिले, जो ढूंढ़ फिरो ब्रह्मांड।। १० ।।

ऐसा सुन्दर अवसर, मनुष्य तन को पाकर जिससे अखण्ड सुख मिलता हो, उसे भूलना नहीं चाहिए। इस मनुष्य तन के बिना किसी को भी अखण्ड सुख की प्राप्ति नहीं हुई। चाहे पूरा ब्रह्माण्ड देख लो।

इन पिंड में ब्रह्म दृढ़ किया, नेहेचल सुख परवान।
अब खिन में घर देखिए, ऐसा समे न दीजे जान।। ११ ।।

हे जीव! तुमने इस शरीर में ही परमात्मा है, समझ लिया था और अखण्ड सुख की चाहना की थी। पर वह तो तुम्हारी भूल थी। अब शरीर के होते-होते एक क्षण का जो अवसर मिला है उसे बरबाद मत करो, अर्थात् मेरे रहते-रहते उस पारब्रह्म के अखण्ड सुख की प्राप्ति कर लो।

Nijanand App

और उपाय कई करो, पर पाइए न या घर बिन।
अंदर जागके चेतिए, ए अवसर अधखिन।। १२ ।।

हे जीवजी! और कितने ही उपाय कर लो, पर मनुष्य तन के बिना पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती। अब अपने अन्दर विचार करके देखो तो मेरा मिलना आधे क्षण का है।

कैसे कर याको खोजिए, ए तो कोहेड़ा आकार।
ए ढूंढ़या बोहोतों कई बिध, पर किनहूं न पाया पार।। १३ ।।

इस तन से किस तरह से पारब्रह्म को खोजा जाए, क्योंकि यह तो धुन्ध की तरह भुलाने वाला है। इसमें बहुतों ने कई तरह से खोज की, पर किसी ने भी पार का ज्ञान नहीं पाया।

बाहेर निकसो तो आप नहीं, और माहें तो नरक के कुंड।
ब्रह्म तो यामें न पाइए, ए क्यों कहिए ब्रह्म घर पिंड।। १४ ।।

हे जीवजी! जब इससे आप निकल जाते हैं तो आपका अपनापन खत्म हो जाता है और जब तन में रहते हो तो तन में नरक के कुण्ड भरे पड़े हैं। पारब्रह्म इस तन के अन्दर नहीं मिलते तो इस पिण्ड को पारब्रह्म का घर कैसे कहा जाए?

पवन जोत सब्दा उठे, नाड़ी चक्र कमल।
इत कैयों कई बिध खोजिया, यामें ब्रह्म नहीं नेहेचल।। १५ ।।

प्राणायाम, नाड़ियों और चक्रों के शोधन से ज्योति और पांच शब्द (निरंजन ओइम्, सोऽहं, शक्ति और रंग) उठते हैं यहां इस तरह कईयों ने कई तरह से खोजा, परन्तु तन के अन्दर अखण्ड पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई।

पारब्रह्म क्यों पाइए, ततखिन कीजे उपाए।
कई ढूंढे मांहें बाहेर, बिना सतगुर न लखाए।। १६ ।।

मनुष्य तन जो एक क्षण के लिए है, इसके बिना पारब्रह्म नहीं मिल सकते, इसलिए तुरन्त ही उपाय करो। बहुतों ने पिण्ड के अन्दर और बाहर खोजा, पर उन्होंने भी पाया नहीं। बिना सतगुरु के पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

अब संग कीजे तिन गुर की, खोज के पुरुख पूरन।
सेवा कीजे सब अंगसों, मन कर करम वचन।। १७ ।।

अब पूर्ण ज्ञान देने वाले सतगुरु की खोज कर उनका संग करो और मन, कर्म, वचन और सब अंगों से उनकी सेवा करो।

सो संग कैसे छोड़िए, जो सांचे हैं सतगुर।
उड़ाए सबे अंतर, बताए दियो निज घर।। १८ ।।

जब सच्चे सतगुरु मिल जाएं तो उनको कभी नहीं छोड़ना चाहिए। वह सब संशय मिटाकर अखण्ड घर की पहचान करा देंगे।

पाइए सुध पूरन से, पैंडा बतावें पार।
सब्द जो सारे सूझहीं, सब गम पड़े संसार।। १९ ।।

पूर्ण सतगुरु से पार का रास्ता मिलता है और पारब्रह्म की पहचान होती है। उनसे ही सभी ग्रन्थों की समझ आती है तथा संसार की भी पहचान होती है।

Nijanand App

पांच तत्व पिंड में हुए, सोई तत्व पांच बाहेर।
पांचो आए प्रले मिने, सब हो गयो निराकार।। २० ।।

पांच तत्वों से पिण्ड बना है और उन्हीं पांच तत्वों से ब्रह्माण्ड बना है। यही पांच तत्व ही प्रलय में नष्ट होकर निराकार हो जाते हैं।

ए पांचो देखे विध विध, ए तो नहीं थिर ठाम।
यामें सो कैसे रहे, नेहेचल जाको नाम।। २१ ।।

इन पांचों तत्वों को मैंने तरह-तरह से देखा तो इसमें अखण्ड ठिकाना कहीं नहीं पाया। वह अखण्ड पारब्रह्म मिटने वाले पांच तत्वों में कैसे रह सकता है?

पारब्रह्म जित रेहेत हैं, तित आवे नाहीं काल।
उतपन सब होसी फना, ए तो पांचों ही पंपाल।। २२ ।।

पारब्रह्म जहां रहते हैं, वहां मौत नहीं आती। पांच तत्वों से जो पैदा होते हैं, वह नष्ट हो जाते हैं क्योंकि यह पांचों ही झूठे हैं।

यामें अंतर वासा ब्रह्म का, सो सतगुर दिया बताए।
बिन समझे या ब्रह्म को, और न कोई उपाए।। २३ ।।

इस तन से पारब्रह्म का जो अन्तर है वह कैसे दूर होकर पारब्रह्म को प्राप्त किया जा सकता है, वह सतगुरु ने बताया। बिना इस भेद को समझे पारब्रह्म की प्राप्ति का कोई उपाय नहीं है।

आंकड़ी अंतरजामी की, कबहूं न खोली किन।
आद करके अब लों, खोज थके सब जन।। २४ ।।

उस पारब्रह्म के रहस्य को (राज़ को) आज दिन तक किसी ने नहीं बताया। शुरू से आज तक सब खोज-खोजकर थक गए।

ए पूरन के प्रकास थें, खुल गया अंतर सब।
सो क्यों रेहेवे ढांपिया, प्रगट होसी अब।। २५ ।।

अब सतगुरु के ज्ञान से उस पारब्रह्म के सारे रहस्य खुल गए। जिससे अब वह पारब्रह्म किसी भी तरह छिपे नहीं रहेंगे और जाहिर हो जाएंगे।

जिनको सब कोई खोजहीं, ए खोली आंकड़ी तिन।
तो इत हुई जाहेर, जो कारज है कारन।। २६ ।।

जिस पारब्रह्म को सब कोई खोजता है उसने ही कारज कारण से यहां आकर इस रहस्य को जाहिर किया।

घर ही में न्यारे रहिए, कीजे अंतरमें बास।
तब गुन बस आपे होवहीं, गयो तिमर सब नास।। २७ ।।

हे जीवजी! इस तन में रहते हुए चित्त को पारब्रह्म में लगाए रखो। तब सभी गुण, अंग, इन्द्रियां वश में हो जाएंगी और अन्धकार मिट जाएगा।

या बिध मेला पिउ का, पीछे न्यारे नहीं रैन दिन।
जल में न्हाइए कोरे रहिए, जागिए माहें सुपन।। २८ ।।

इस तरह से पिया का मिलना सरल और सुगम है। फिर कभी भी (रात हो या दिन) न्यारे (अलग) नहीं होंगे। जिस तरह से कमल जल में होता है पर जल उसके पत्ते पर नहीं ठहरता, उसी तरह तुम इस माया के संसार में रहकर माया से अलग हो जाओगे।

Nijanand App

या सुपन तें सुख उपज्यो, जो जाग के कीजे विचार।
आतम भेली परआतमा, सुपन भेलो संसार।। २९ ।।

यदि हम सावचेत (सावधान) होकर विचार करें तो इस सपने के तन से ही अखण्ड सुख मिलता है। तब आत्मा परआतम से मिल जाती है और सपने का शरीर सपने में समा जाता है।

इन बिध लाहा लीजिए, अनमिलती का रे यों।
सुखड़ा दिया धुतारिए, याको बुरी कहिए क्यों।। ३० ।।

हे जीवजी! इस तरह से इस क्षण भंगुर तन का लाभ ले लो। इस झूठे तन से जब अखण्ड सुख मिलता है, तो इस तन को बुरा नहीं कहना चाहिए।

जो सुख याथें उपज्यो, सो कह्यो न किनहूं जाए।
पात्र होए पूरा प्रेम का, तिन का रस ताही में समाए।। ३१ ।।

इस तन से जो अखण्ड सुख मिलता है उसका वर्णन कोई नहीं कर सकता। जो प्रेम के पात्र (ब्रह्मसृष्टियां) होंगी वही इस रस को ग्रहण कर सकेंगी।

ए वतनी सों गुझ कीजिए, जो खैंचे तरफ वतन।
प्रेमै में भीगे रहिए, पिउ सों आनंद घन।। ३२ ।।

अपने घर की बातें ब्रह्मसृष्टियों से ही करें। वह हमें परमधाम की तरफ खीचेंगी। सदा उसके प्रेम में मग्न होकर धनी से अखण्ड सुख प्राप्त करें।

महामत पिया संग विलसहीं, सुख अखंड इन पर।
धंन धंन प्रपंच ए हुआ, धंन धंन सो या मन्दिर।। ३३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं इसी तरह से संसार में रहकर प्रीतम के अखण्ड विलास का सुख लेती हूं और इस संसार के तन को धन्य-धन्य कहती हूं, क्योंकि इस तन से प्रीतम मिले।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। ४३२ ।।

राग सिंधुड़ा

नोट—यह छः प्रकरण मन्दसौर में उदयपुर के सुन्दरसाथ की दुःखी हालत सुनकर उतरे हैं।

वालो विरह रस भीनों रंग विरहमां रमाड़तो, वासना रुदन करे जल धार।
आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जे कोई हुती तामसियों सिरदार।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! हम विरह के रस में डूबे हुए हैं और तुम हमें विरह का खेल दिखला रहे हो। इसमें हम आपकी आत्माएं आसूं बहा-बहाकर रो रही हैं। अपनी पहचान कराकर हम तामसी सखियों से आप अलग हो गए।

कलकली कामनी वदन विलखाविया, विश्वमां वरतियो हा हा कार।
उदमाद अटपटा अंग थी टालीने, माननी सहुए मनावियो हार।। २ ।।

हम आपकी अंगनाओं के बिलख-बिलखकर रोने की आवाज से संसार में हाहाकार मचा हुआ है। आपने हमारे अंग से प्रेम का अटपटा पागलपन हटाकर हार मनवा ली है।

पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कांई जारवंतियो विना जार।
पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावन हार।। ३ ।।

संसार में पतिव्रता स्त्री अपने पति से एक पल के लिए भी अलग नहीं होती और यार वाली स्त्री अपने यार से अलग नहीं होती है, परन्तु हम ही ऐसी अभागिनी हैं कि हम पतिव्रता होने पर भी यहां अपने धनी से जुदा (अलग) हैं और अपने ऊपर कलंक लगवा रही हैं।

Nijanand App

या सुपन तें सुख उपज्यो, जो जाग के कीजे विचार।
आतम भेली परआतमा, सुपन भेलो संसार।। २९ ।।

यदि हम सावचेत (सावधान) होकर विचार करें तो इस सपने के तन से ही अखण्ड सुख मिलता है। तब आत्मा परआतम से मिल जाती है और सपने का शरीर सपने में समा जाता है।

इन विध लाहा लीजिए, अनमिलती का रे यों।
सुखड़ा दिया धुतारिए, याको बुरी कहिए क्यों।। ३० ।।

हे जीवजी! इस तरह से इस क्षण भंगुर तन का लाभ ले लो। इस झूठे तन से जब अखण्ड सुख मिलता है, तो इस तन को बुरा नहीं कहना चाहिए।

जो सुख याथें उपज्यो, सो कह्यो न किनहूं जाए।
पात्र होए पूरा प्रेम का, तिन का रस ताही में समाए।। ३१ ।।

इस तन से जो अखण्ड सुख मिलता है उसका वर्णन कोई नहीं कर सकता। जो प्रेम के पात्र (ब्रह्मसृष्टियां) होंगी वही इस रस को ग्रहण कर सकेंगी।

ए वतनी सों गुझ कीजिए, जो खैंचे तरफ वतन।
प्रेमै में भीगे रहिए, पिउ सों आनंद घन।। ३२ ।।

अपने घर की बातें ब्रह्मसृष्टियों से ही करें। वह हमें परमधाम की तरफ खीचेंगी। सदा उसके प्रेम में मग्न होकर धनी से अखण्ड सुख प्राप्त करें।

महामत पिया संग विलसहीं, सुख अखंड इन पर।
धंन धंन प्रपंच ए हुआ, धंन धंन सो या मन्दिर।। ३३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं इसी तरह से संसार में रहकर प्रीतम के अखण्ड विलास का सुख लेती हूं और इस संसार के तन को धन्य-धन्य कहती हूं, क्योंकि इस तन से प्रीतम मिले।

|| प्रकरण || ३४ || चौपाई || ४३२ ||

राग सिंधुड़ा

नोट—यह छः प्रकरण मन्दसौर में उदयपुर के सुन्दरसाथ की दुःखी हालत सुनकर उतरे हैं।

वालो विरह रस भीनों रंग विरहमां रमाड़तो, वासना रुदन करे जल धार।
आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जे कोई हुती तामसियों सिरदार।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! हम विरह के रस में डूबे हुए हैं और तुम हमें विरह का खेल दिखला रहे हो। इसमें हम आपकी आत्माएं आसूं बहा-बहाकर रो रही हैं। अपनी पहचान कराकर हम तामसी सखियों से आप अलग हो गए।

कलकली कामनी वदन विलखाविया, विश्वमां वरतियो हा हा कार।
उदमाद अटपटा अंग थी टालीने, माननी सहुए मनावियो हार।। २ ।।

हम आपकी अंगनाओं के बिलख-बिलखकर रोने की आवाज से संसार में हाहाकार मचा हुआ है। आपने हमारे अंग से प्रेम का अटपटा पागलपन हटाकर हार मनवा ली है।

पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कांई जारवंतियो विना जार।
पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावन हार।। ३ ।।

संसार में पतिव्रता स्त्री अपने पति से एक पल के लिए भी अलग नहीं होती और यार वाली स्त्री अपने यार से अलग नहीं होती है, परन्तु हम ही ऐसी अभागिनी हैं कि हम पतिव्रता होने पर भी यहां अपने धनी से जुदा (अलग) हैं और अपने ऊपर कलंक लगवा रही हैं।

Nijanand App

स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम मांहें धणी आगल आधार।
हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार।। ४ ।।

हे धनी! परमधाम में आपके सामने हमने ऐसा कौन सा खोटा काम किया था? महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! अब इस भवसागर में डूबती हुई ब्रह्मसृष्टियों को हाथ पकड़कर निकालो।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। ४३६ ।।

हांरे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जुजवे पर्वतों पाड़्या रे पुकार।
रणवगडा मांहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने हमको इस खेल में ऐसा झटका दिया और रुलाया कि हम पर्वतों में भटकते हुए चिल्ला रहे हैं। इस वीरान जंगल में हम अंगनाएं रो-रोकर कहती हैं कि धनी! आपके बिना इस शरीर को धिक्कार है।

वेदना विखम रस लीधां अमें विरहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार।
सुपनमां दुख सह्या घणां रासमां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार।। २ ।।

हम आपके वियोग में विरह का कठिन रस ले रही हैं और अब (अहंकार छोड़कर) दीन होकर बार-बार विनती करती हैं कि रास में तो स्वप्न में हमने आपके विरह के दुःख को सहन किया, परन्तु अब पहचान हो जाने पर विरह का दुःख सहन नहीं होता।

दंत तरणां लई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार।
खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार।। ३ ।।

हम आपकी किशोर अंगनाएं दांतों में तिनका दबाकर चिल्ला रही हैं, हे हमारे दीन दातार! हमारी विरह की अग्नि को बुझाओ। अब हमसे यह विरह का कठोर दुःख सहन नहीं होता। हमें आप अपने चरणों में स्थान दो।

हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली, राखो रोतियो करो निरमल नार।
कहे महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अर्ज रखे हांसीमां उतार।। ४ ।।

अब मैं कितनी बार कहूं कि मैं हार गई-हार गई। अब हमारा रोना बन्द करके अपने प्यार से निर्मल करो। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! मेरी इस विनती को हंसी में ना टाल देना।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। ४४० ।।

हांरे वाला बंध पड़्या बल हरया तारे फंदड़े, बंध विना जाए बांधियो हार।
हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार।। १ ।।

हे वालाजी! आपके खेल दिखाने की इच्छा से हम माया के बन्धन में पड़ गए और अपने इश्क की शक्ति को खो बैठे। देखा जाये तो जाहेरी बन्धन कुछ नहीं, परन्तु देखा देखी चींटी हार की तरह माया में लिपटे चले जा रहे हैं। यहां से निकलने के लिए भले हम रोएं, हंसें और पश्चाताप भी करें, तो भी चींटी हार की तरह यह कबीले या बन्धन छूटते नहीं हैं।

जेहेर चढ़्यो हाथ पांउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार।
समरथ सुखथाय साथने ततखिण, गुणवंता गारुडी जेहेर तेहेने तेणी विधें झार।। २ ।।

माया का ऐसा जहर चढ़ गया है कि हम इसमें हाथ पांव झटकते हैं और इस जहर से सब अंगों में दुःख होता है। इस जहर को कोई उतार नहीं सकता। हे समर्थ! गुणवान ओझा की भांति हमारे माया के जहर को झाड़ फूंककर निकाल दें जिससे सुन्दरसाथ सुखी हो जाए।

Nijanand App

स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम मांहें धणी आगल आधार।
हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार।। ४ ।।

हे धनी! परमधाम में आपके सामने हमने ऐसा कौन सा खोटा काम किया था? महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! अब इस भवसागर में डूबती हुई ब्रह्मसृष्टियों को हाथ पकड़कर निकालो।

|| प्रकरण || ३५ || चौपाई || ४३६ ||

हांरे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जुजवे पर्वतों पाड़या रे पुकार।
रणवगडा मांहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने हमको इस खेल में ऐसा झटका दिया और रुलाया कि हम पर्वतों में भटकते हुए चिल्ला रहे हैं। इस वीरान जंगल में हम अंगनाएं रो-रोकर कहती हैं कि धनी! आपके बिना इस शरीर को धिक्कार है।

वेदना विखम रस लीधां अमें विरहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार।
सुपनमां दुख सह्या घणां रासमां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार।। २ ।।

हम आपके वियोग में विरह का कठिन रस ले रही हैं और अब (अहंकार छोड़कर) दीन होकर बार-बार विनती करती हैं कि रास में तो स्वप्न में हमने आपके विरह के दुःख को सहन किया, परन्तु अब पहचान हो जाने पर विरह का दुःख सहन नहीं होता।

दंत तरणां लई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार।
खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार।। ३ ।।

हम आपकी किशोर अंगनाएं दांतों में तिनका दबाकर चिल्ला रही हैं, हे हमारे दीन दातार! हमारी विरह की अग्नि को बुझाओ। अब हमसे यह विरह का कठोर दुःख सहन नहीं होता। हमें आप अपने चरणों में स्थान दो।

हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली, राखो रोतियो करो निरमल नार।
कहे महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अर्ज रखे हांसीमां उतार।। ४ ।।

अब मैं कितनी बार कहूं कि मैं हार गई-हार गई। अब हमारा रोना बन्द करके अपने प्यार से निर्मल करो। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! मेरी इस विनती को हंसी में ना टाल देना।

|| प्रकरण || ३६ || चौपाई || ४४० ||

हरि वाला बंध पड्या बल हरया तारे फंदड़े, बंध विना जाए बांधियो हार।
हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार।। १ ।।

हे वालाजी! आपके खेल दिखाने की इच्छा से हम माया के बन्धन में पड़ गए और अपने इश्क की शक्ति को खो बैठे। देखा जाये तो जाहेरी बन्धन कुछ नहीं, परन्तु देखा देखी चींटी हार की तरह माया में लिपटे चले जा रहे हैं। यहां से निकलने के लिए भले हम रोएं, हंसें और पश्चाताप भी करें, तो भी चींटी हार की तरह यह कबीले या बन्धन छूटते नहीं हैं।

जेहेर चढ्यो हाथ पांउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार।
समरथ सुखथाय साथने ततखिण, गुणवंता गारुडी जेहेर तेहेने तेणी विधें झार।। २ ।।

माया का ऐसा जहर चढ़ गया है कि हम इसमें हाथ पांव झटकते हैं और इस जहर से सब अंगों में दुःख होता है। इस जहर को कोई उतार नहीं सकता। हे समर्थ! गुणवान ओझा की भांति हमारे माया के जहर को झाड़ फूंककर निकाल दें जिससे सुन्दरसाथ सुखी हो जाए।

Nijanand App

स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम मांहें धणी आगल आधार।
हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार।। ४ ।।

हे धनी! परमधाम में आपके सामने हमने ऐसा कौन सा खोटा काम किया था? महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! अब इस भवसागर में डूबती हुई ब्रह्मसृष्टियों को हाथ पकड़कर निकालो।

|| प्रकरण || ३५ || चौपाई || ४३६ ||

हरि वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जुजवे पर्वतों पाड़्या रे पुकार।
रणवगडा मांहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने हमको इस खेल में ऐसा झटका दिया और रुलाया कि हम पर्वतों में भटकते हुए चिल्ला रहे हैं। इस वीरान जंगल में हम अंगनाएं रो-रोकर कहती हैं कि धनी! आपके बिना इस शरीर को धिक्कार है।

वेदना विखम रस लीधां अमें विरहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार।
सुपनमां दुख सह्या घणां रासमां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार।। २ ।।

हम आपके वियोग में विरह का कठिन रस ले रही हैं और अब (अहंकार छोड़कर) दीन होकर बार-बार विनती करती हैं कि रास में तो स्वप्न में हमने आपके विरह के दुःख को सहन किया, परन्तु अब पहचान हो जाने पर विरह का दुःख सहन नहीं होता।

दंत तरणां लई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार।
खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार।। ३ ।।

हम आपकी किशोर अंगनाएं दांतों में तिनका दबाकर चिल्ला रही हैं, हे हमारे दीन दातार! हमारी विरह की अग्नि को बुझाओ। अब हमसे यह विरह का कठोर दुःख सहन नहीं होता। हमें आप अपने चरणों में स्थान दो।

हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली, राखो रोतियो करो निरमल नार।
कहे महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अर्ज रखे हांसीमां उतार।। ४ ।।

अब मैं कितनी बार कहूं कि मैं हार गई-हार गई। अब हमारा रोना बन्द करके अपने प्यार से निर्मल करो। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! मेरी इस विनती को हंसी में ना टाल देना।

|| प्रकरण || ३६ || चौपाई || ४४० ||

हरि वाला बंध पड़्या बल हरया तारे फंदड़े, बंध विना जाए बांधियो हार।
हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार।। १ ।।

हे वालाजी! आपके खेल दिखाने की इच्छा से हम माया के बन्धन में पड़ गए और अपने इश्क की शक्ति को खो बैठे। देखा जाये तो जाहेरी बन्धन कुछ नहीं, परन्तु देखा देखी चींटी हार की तरह माया में लिपटे चले जा रहे हैं। यहां से निकलने के लिए भले हम रोएं, हंसें और पश्चाताप भी करें, तो भी चींटी हार की तरह यह कबीले या बन्धन छूटते नहीं हैं।

जेहेर चढ़्यो हाथ पांउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार।
समरथ सुखथाय साथने ततखिण, गुणवंता गारुडी जेहेर तेहेने तेणी विधें झार।। २ ।।

माया का ऐसा जहर चढ़ गया है कि हम इसमें हाथ पांव झटकते हैं और इस जहर से सब अंगों में दुःख होता है। इस जहर को कोई उतार नहीं सकता। हे समर्थ! गुणवान ओझा की भांति हमारे माया के जहर को झाड़ फूंककर निकाल दें जिससे सुन्दरसाथ सुखी हो जाए।

Nijanand App

मांहें धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण वासनाओं थी निवार।
हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार।। ३ ।।

यहां दसों दिशाओं में माया की अग्नि जल रही है जिसमें तुम्हारी आत्माएं झुलस रही हैं। अब इन वासनाओं को माया की जलन से छुड़ाओ और हुकम को हुकम देकर आत्माओं को मोह से मुक्त करो। अपने सुन्दर स्वरूप का दर्शन देकर विरह को समाप्त कर दो।

छल मोटे अमने अति छेतरया, थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार।
कहे महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देयो ने करार।। ४ ।।

इस भारी माया ने हमें बुरी तरह से ठगा है। इसकी मार से हृदय छलनी हो गया है। अब मार नहीं सही जाती। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धाम के धनी! अब माया का रोना छुड़ाकर अखण्ड घर का सुख और करार दो।

।। प्रकरण ।। ३७ ।। चौपाई ।। ४४४ ।।

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार।
जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी, हठियो हरामी अंग इन्द्री विकार।। १ ।।

हे धनी! अंग में लगी आग की लपटों को कैसे बुझाएं? बार-बार यहां माया का विष बढ़ रहा है। इन हठी हरामी इन्द्रियों की इच्छा ने जीव के ऊपर बार-बार जुल्म किया है।

झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगना ने ठार।
बाल्या वली वली ए मन ए कबुधें, कमसील काम कां कराव्या करतार।। २ ।।

अब आप अपनी अंगनाओं के शरीर से उठती हुई विरह की आग की लपटों को बुझा दो। शीतल सुख देकर अंगनाओं को तृप्त करो। इस मूर्ख मन ने हम रूहों को बार-बार माया में फंसाया। हे धनी! ऐसे बेशर्मी वाले काम हम से क्यों कराये?

गुण पख इन्द्री वस करी अबलीस ने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार।
अर्थ उपले एम केहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार।। ३ ।।

हमारे गुण, अंग, इन्द्रियों को अबलीस (शैतान) के हवाले कर दिया और हमारे अन्दर बिठा दिया। फिर भी दोषी हम ही बने। ऊपरी भाव से हमें पारब्रह्म की अंगना कहलवाकर इन वचनों से और अधिक लज्जित कर रहे हो।

मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारुणी तन तछकार।
कलकली महामती कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार।। ४ ।।

अन्दर के भाव से जब देखें तो जाहिर है कि आपने हमें सजा दी है। महामतिजी कलप-कलपकर कहते हैं कि हे मेरे धनी! आखिर हम अंगनाओं की गलती क्या है?

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। ४४८ ।।

हरि वाला कारे आप्या दुख अमने अनघटतां, व्राधलगाडी विध विध ना विकार।
विमुख कीधां रस दई विरह अवला, साथ सनमुख माहें थया रे धिकार।। १ ।।

हे वालाजी! आपने हमें अशोभनीय दुःख क्यों दिया? माया के तरह-तरह के व्याधि (रोग) क्यों लगाए? आपने अपने से अलग कर उलटा विरह रस का दुःख दिया जिनसे सुन्दरसाथ के सामने मुझे शर्मिन्दा होना पड़ रहा है।

Nijanand App

मांहें धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण वासनाओं थी निवार।
हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार।। ३ ।।

यहां दसों दिशाओं में माया की अग्नि जल रही है जिसमें तुम्हारी आत्माएं झुलस रही हैं। अब इन वासनाओं को माया की जलन से छुड़ाओ और हुकम को हुकम देकर आत्माओं को मोह से मुक्त करो। अपने सुन्दर स्वरूप का दर्शन देकर विरह को समाप्त कर दो।

छल मोटे अमने अति छेतरया, थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार।
कहे महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देयो ने करार।। ४ ।।

इस भारी माया ने हमें बुरी तरह से ठगा है। इसकी मार से हृदय छलनी हो गया है। अब मार नहीं सही जाती। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धाम के धनी! अब माया का रोना छुड़ाकर अखण्ड घर का सुख और करार दो।

|| प्रकरण || ३७ || चौपाई || ४४४ ||

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार।
जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी, हठियो हरामी अंग इन्द्री विकार।। १ ।।

हे धनी! अंग में लगी आग की लपटों को कैसे बुझाएं? बार-बार यहां माया का विष बढ़ रहा है। इन हठी हरामी इन्द्रियों की इच्छा ने जीव के ऊपर बार-बार जुल्म किया है।

झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगना ने ठार।
बाल्या वली वली ए मन ए कबुधें, कमसील काम कां कराव्या करतार।। २ ।।

अब आप अपनी अंगनाओं के शरीर से उठती हुई विरह की आग की लपटों को बुझा दो। शीतल सुख देकर अंगनाओं को तृप्त करो। इस मूर्ख मन ने हम रूहों को बार-बार माया में फंसाया। हे धनी! ऐसे बेशर्मी वाले काम हम से क्यों कराये?

गुण पख इन्द्री वस करी अबलीस ने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार।
अर्थ उपले एम केहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार।। ३ ।।

हमारे गुण, अंग, इन्द्रियों को अबलीस (शैतान) के हवाले कर दिया और हमारे अन्दर बिठा दिया। फिर भी दोषी हम ही बने। ऊपरी भाव से हमें पारब्रह्म की अंगना कहलवाकर इन वचनों से और अधिक लज्जित कर रहे हो।

मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारुणी तन तछकार।
कलकली महामती कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार।। ४ ।।

अन्दर के भाव से जब देखें तो जाहिर है कि आपने हमें सजा दी है। महामतिजी कलप-कलपकर कहते हैं कि हे मेरे धनी! आखिर हम अंगनाओं की गलती क्या है?

|| प्रकरण || ३८ || चौपाई || ४४८ ||

हरि वाला करि आप्या दुख अमने अनघटतां, ब्राधलगाडी विध विध ना विकार।
विमुख कीधां रस दई विरह अवला, साथ सनमुख माहें थया रे धिकार।। १ ।।

हे वालाजी! आपने हमें अशोभनीय दुःख क्यों दिया? माया के तरह-तरह के व्याधि (रोग) क्यों लगाए? आपने अपने से अलग कर उलटा विरह रस का दुःख दिया जिनसे सुन्दरसाथ के सामने मुझे शर्मिन्दा होना पड़ रहा है।

Nijanand App

मांहें धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण वासनाओं थी निवार।
हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार।। ३ ।।

यहां दसों दिशाओं में माया की अग्नि जल रही है जिसमें तुम्हारी आत्माएं झुलस रही हैं। अब इन वासनाओं को माया की जलन से छुड़ाओ और हुकम को हुकम देकर आत्माओं को मोह से मुक्त करो। अपने सुन्दर स्वरूप का दर्शन देकर विरह को समाप्त कर दो।

छल मोटे अमने अति छेतरया, थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार।
कहे महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देयो ने करार।। ४ ।।

इस भारी माया ने हमें बुरी तरह से ठगा है। इसकी मार से हृदय छलनी हो गया है। अब मार नहीं सही जाती। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धाम के धनी! अब माया का रोना छुड़ाकर अखण्ड घर का सुख और करार दो।

।। प्रकरण ।। ३७ ।। चौपाई ।। ४४४ ।।

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार।
जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी, हठियो हरामी अंग इन्द्री विकार।। १ ।।

हे धनी! अंग में लगी आग की लपटों को कैसे बुझाएं? बार-बार यहां माया का विष बढ़ रहा है। इन हठी हरामी इन्द्रियों की इच्छा ने जीव के ऊपर बार-बार जुल्म किया है।

झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगना ने ठार।
बाल्या वली वली ए मन ए कबुधें, कमसील काम कां कराव्या करतार।। २ ।।

अब आप अपनी अंगनाओं के शरीर से उठती हुई विरह की आग की लपटों को बुझा दो। शीतल सुख देकर अंगनाओं को तृप्त करो। इस मूर्ख मन ने हम रूहों को बार-बार माया में फंसाया। हे धनी! ऐसे बेशर्मी वाले काम हम से क्यों कराये?

गुण पख इन्द्री वस करी अबलीस ने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार।
अर्थ उपले एम केहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार।। ३ ।।

हमारे गुण, अंग, इन्द्रियों को अबलीस (शैतान) के हवाले कर दिया और हमारे अन्दर बिठा दिया। फिर भी दोषी हम ही बने। ऊपरी भाव से हमें पारब्रह्म की अंगना कहलवाकर इन वचनों से और अधिक लज्जित कर रहे हो।

मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारुणी तन तछकार।
कलकली महामती कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार।। ४ ।।

अन्दर के भाव से जब देखें तो जाहिर है कि आपने हमें सजा दी है। महामतिजी कलप-कलपकर कहते हैं कि हे मेरे धनी! आखिर हम अंगनाओं की गलती क्या है?

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। ४४८ ।।

हरि वाला करि आप्या दुख अमने अनघटतां, व्राधलगाडी विध विध ना विकार।
विमुख कीधां रस दई विरह अवला, साथ सनमुख माहें थया रे धिकार।। १ ।।

हे वालाजी! आपने हमें अशोभनीय दुःख क्यों दिया? माया के तरह-तरह के व्याधि (रोग) क्यों लगाए? आपने अपने से अलग कर उलटा विरह रस का दुःख दिया जिनसे सुन्दरसाथ के सामने मुझे शर्मिन्दा होना पड़ रहा है।

Nijanand App

अनेक रामत बीजी हती अति घणी, सुपने अग्राह ठेले संसार।
उघड़ी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रुडा खोया आवार।। २ ।।

परमधाम में तो बहुत से खेल थे। न ग्रहण करने योग्य संसार में आपने हमें धक्का दे दिया। आपकी पहचान से होश में आने पर पता लगा कि इस माया ने हमारे सदा के जागृत सुखों को हमसे छुड़ा दिया है।

सनमुख तमसूं विरह रस तम तणो, कां न कीधां जाली बाली अंगार।
त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां, सेहेसूं केम दाग जे लाग्या आकार।। ३ ।।

हम आपके सामने परमधाम में बैठे हैं, फिर भी आपके वियोग में यहां संसार में रो रहे हैं। हे धनी! वहां पर ही क्यों नहीं हमको अग्नि में जलाकर अंगार कर दिया। हे धनी! अब हमें बचाओ-बचाओ की पुकार करती हूं। नहीं तो जो दाग हमारे गुनाहों का लगा है उसे सुन्दरसाथ के बीच घर में कैसे सहन करूंगी।

विरह थी विछोडी दुख दीधां विसमां, अहनिस निस्वासा अंग उठे कटकार।
दुख भंजन सहु विध पिउ जी समरथ, कहे महामती सुख देंण सिणगार।। ४ ।।

हे धनी! आपने हमको अपने से अलग कर विरह का कठोर दुःख दिया। जिससे हमारे अंग में रात दिन हाय-हाय की ठण्डी सांसें निकलती हैं और अंग के टुकड़े-टुकड़े करती हैं। महामतिजी कहते हैं कि हे मेरे धनी! आप दुःख मिटाने में सब तरह से समर्थ हैं। इसलिए अब मेरे दुःख मिटाकर अंगना को स्वीकार कर लो जिससे मैं सिनगार कर आपका सुख ले सकूं।

।। प्रकरण ।। ३९ ।। चौपाई ।। ४५२ ।।

हांरे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारड़े, विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार।
स्वाद चढ्या स्वाम द्रोही संग्रामें, विकट बंका कीधा अमें आसाधार।। १ ।।

हे मेरे धनी! इन विचारों से हमारे अंग-अंग में आग जल रही है कि मैं अपने धनी से विमुख क्यों हो गई? आपके विरुद्ध लड़ने के लिए कमर क्यों कस ली? अपने धनी से युद्ध और विद्रोह करने की चाहना क्यों आ गई? निश्चित ही हमने आपके साथ भयंकर युद्ध किया है, हमने कोई बहुत उल्टा काम किया है।

कुकरम कसाब जुध कई कराविया, पलीत अबलीस अम मांहें बेसार।
जागतां दिन कई देखतां अमने छेतरया, खरा ने खराब ए खलक खुआर।। २ ।।

हे धनी! आपने हमारे अन्दर नीच अबलीस (शैतान) को बिठाकर कसाइयों जैसे खोटे कर्म माया में करवाए हैं। आपकी पहचान हो जाने पर भी इसने हमें कई बार ठगा। यह अबलीस (शैतान) ऐसा है कि भले आदमी को भी दुनियां में जलील करता है।

ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार।
ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जहां बारे हजार।। ३ ।।

हे धनी! मैंने आपकी पहचान कर लेने के बाद भी मन, चित्त, बुद्धि, मोह और अहंकार में लिप्त होने से आप से युद्ध किया। इन उलटी बातों की चर्चा परमधाम के बारह हजार सुन्दरसाथ के मेले में होगी।

कहे महामती हूं गांऊं मोहोरे थई, पण विमुख विधो वीती सहु माहें नर नार।
धाम माहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं, पोहोंचसे पवाड़ा परआतम मोंझार।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसी उलटी चाल सभी ब्रह्मसृष्टियों ने चली है। मैं उनकी मुखिया बनकर कह रही हूं कि परमधाम में, हे धनी! हम आपके सामने आंख मिलाकर कैसे देखेंगे? क्योंकि तब हमारी यहां की करनी की हकीकत परमधाम में जाहेर हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। ४० ।। चौपाई ।। ४५६ ।।

Nijanand App

अनेक रामत बीजी हती अति घणी, सुपने अग्राह ठेले संसार।
उघड़ी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रूडा खोया आवार।। २ ।।

परमधाम में तो बहुत से खेल थे। न ग्रहण करने योग्य संसार में आपने हमें धक्का दे दिया। आपकी पहचान से होश में आने पर पता लगा कि इस माया ने हमारे सदा के जागृत सुखों को हमसे छुड़ा दिया है।

सनमुख तमसूं विरह रस तम तणो, कां न कीधां जाली बाली अंगार।
त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां, सेहेसूं केम दाग जे लाग्या आकार।। ३ ।।

हम आपके सामने परमधाम में बैठे हैं, फिर भी आपके वियोग में यहां संसार में रो रहे हैं। हे धनी! वहां पर ही क्यों नहीं हमको अग्नि में जलाकर अंगार कर दिया। हे धनी! अब हमें बचाओ-बचाओ की पुकार करती हूं। नहीं तो जो दाग हमारे गुनाहों का लगा है उसे सुन्दरसाथ के बीच घर में कैसे सहन करूंगी।

विरह थी विछोडी दुख दीधां विसमां, अहनिस निस्वासा अंग उठे कटकार।
दुख भंजन सहु विध पिउ जी समरथ, कहे महामती सुख देंण सिणगार।। ४ ।।

हे धनी! आपने हमको अपने से अलग कर विरह का कठोर दुःख दिया। जिससे हमारे अंग में रात दिन हाय-हाय की ठण्डी सांसें निकलती हैं और अंग के टुकड़े-टुकड़े करती हैं। महामतिजी कहते हैं कि हे मेरे धनी! आप दुःख मिटाने में सब तरह से समर्थ हैं। इसलिए अब मेरे दुःख मिटाकर अंगना को स्वीकार कर लो जिससे मैं सिनगार कर आपका सुख ले सकूं।

|| प्रकरण || ३९ || चौपाई || ४५२ ||

हांरे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारड़े, विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार।
स्वाद चढ्या स्वाम द्रोही संग्रामें, विकट बंका कीधा अमें आसाधार।। १ ।।

हे मेरे धनी! इन विचारों से हमारे अंग-अंग में आग जल रही है कि मैं अपने धनी से विमुख क्यों हो गई? आपके विरुद्ध लड़ने के लिए कमर क्यों कस ली? अपने धनी से युद्ध और विद्रोह करने की चाहना क्यों आ गई? निश्चित ही हमने आपके साथ भयंकर युद्ध किया है, हमने कोई बहुत उल्टा काम किया है।

कुकरम कसाब जुध कई कराविया, पलीत अबलीस अम मांहें बेसार।
जागतां दिन कई देखतां अमने छेतरया, खरा ने खराब ए खलक खुआर।। २ ।।

हे धनी! आपने हमारे अन्दर नीच अबलीस (शैतान) को बिठाकर कसाइयों जैसे खोटे कर्म माया में करवाए हैं। आपकी पहचान हो जाने पर भी इसने हमें कई बार ठगा। यह अबलीस (शैतान) ऐसा है कि भले आदमी को भी दुनियां में जलील करता है।

ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार।
ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जहां बारे हजार।। ३ ।।

हे धनी! मैंने आपकी पहचान कर लेने के बाद भी मन, चित्त, बुद्धि, मोह और अहंकार में लिप्त होने से आप से युद्ध किया। इन उलटी बातों की चर्चा परमधाम के बारह हजार सुन्दरसाथ के मेले में होगी।

कहे महामती हूं गांऊं मोहोरे थई, पण विमुख विधो वीती सहु माहें नर नार।
धाम माहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं, पोहोंचसे पवाड़ा परआतम मोंझार।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसी उलटी चाल सभी ब्रह्मसृष्टियों ने चली है। मैं उनकी मुखिया बनकर कह रही हूं कि परमधाम में, हे धनी! हम आपके सामने आंख मिलाकर कैसे देखेंगे? क्योंकि तब हमारी यहां की करनी की हकीकत परमधाम में जाहेर हो जाएगी।

|| प्रकरण || ४० || चौपाई || ४५६ ||

Nijanand App

राग श्री

करनी तुमारी मेरी मैं तौली, जैसे सत असत।
हो धनी मेरे, एती है तफावत।। १ ।।

हे धनी! मैंने आपकी मेहर और अपनी करनी पर विचार किया तो इतना फर्क मिला जैसे सत और झूठ का, अर्थात् आपकी मेहर सच्ची है और मेरी करनी झूठी है।

पिया ऐसी निपट मैं क्यों भई, कठिन कठोर अति ढीठ।
श्री धाम धनी पेहेचान के, फेर फेर देत मैं पीठ।। २ ।।

हे धनी! मैं ऐसी कठिन और कठोर, ढीठ अर्थात् पत्थर दिल क्यों हो गई कि धाम के धनी को पहचान करने पर मैंने उनका कहना नहीं माना।

अंदर परदा उड़ाइया, तो भी न बदल्या हाल।
नकस न मिट्यो मोह मूल को, ताथें नजरों न नूरजमाल।। ३ ।।

धनी! आपकी मेहर से सारे संशय भी मिट गए तो भी मेरी हालत नहीं बदली। शरीर से मोह और अहंकार निकला नहीं और इसलिए धाम धनी नजर नहीं आए। [मेरे अवगुणों के (संशय) मिट जाने पर धाम धनी की पहचानकर अरब गया। वापसी पर प्रणाम स्वीकार न होने से मोह और अहंकार जाग्रत हो गया जिस कारण धाम धनी नजर न आए और मैं रूठ कर घर चला गया।]

इन इन्द्रियन की मैं क्या कहूं, ए तो अवगुन हीं की काया।
इन से देखूं क्यों साहेब, एही भई आड़ी माया।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपनी इन इन्द्रियों की क्या हकीकत कहूं? यह मेरे शरीर में अवगुण से भरी पड़ी हैं, इसलिए माया आड़े आ गई है और धनी का दर्शन नहीं कर सकी।

निरमल नजरों न आवहीं, ले बैठी संग चंडाल।
उपजत ऐसी अंगथें, उतारूं उलटी खाल।। ५ ।।

मेरे अन्दर चाण्डाल (अहंकार) आ जाने से मैं धनी की पहचान न कर सकी। अब ऐसा दिल में आता है कि अपने शरीर की उल्टी खाल उतारूं।

सब अंग काट चीरा करूं, माहें भरों मिरच और लून।
कई कोट बेर ऐसी करूं, तो भी न छूटे ए खून।। ६ ।।

अपने सब अंगों को काटकर उसके अन्दर नमक और मिर्च करोड़ों बार भरूं तो भी इस दोष से मुक्ति नहीं मिल सकती।

हैड़े में ऐसी उठत, सब अंग करूं टूक टूक।
हड्डियां सब जुदी करूं, भान करूं भूक भूक।। ७ ।।

मेरे हृदय में ऐसी भावना आती है कि मैं अपने तन के टुकड़े-टुकड़े कर दूं तथा हड्डियों को अलग करके कूट-कूट कर चूरा कर दूं।

मैं होत सरमिंदी साथ में, ए क्यों ए न जावे दुख।
जब जाग बैठूं आगे धनी, तब क्यों देखूं सनमुख।। ८ ।।

मैं सुन्दरसाथ में शर्मिन्दा हूं, क्योंकि यह दोष मिटता नहीं है। जब धनी के सामने होश में आकर बैठूंगी तो सामने नजर मिलाकर कैसे देखूंगी?

Nijanand App

आंखां क्यों उठाऊंगी, मुझे मारेगी बड़ी सरम।
ऐसी कबूं किन न करी, सो मैं किए चंडाल करम।। ९ ।।

मैं शर्म के मारे मुंह ऊंचा नहीं उठा सकूंगी, क्योंकि जैसा गुनाह मुझसे हो गया, वैसा आज दिन तक किसी ने नहीं किया।

रोम रोम कई कोट अवगुन, ऐसी मैं गुन्हेगार।
ए तो कही मैं गिनती, पर गुन्हे को नाहीं सुमार।। १० ।।

मैं ऐसी गुनहगार हूं कि मेरे रोम-रोम में करोड़ों अवगुण भरे हुए हैं। यह तो मैंने करोड़ों की गिनती की है पर गुनाह तो अनगिनत हैं।

जेते कहे मैं अवगुन, तेते हर रोम दाग।
सो हर दम आतम को लगे, तब मैं बैठूं जाग।। ११ ।।

जितने मैंने अवगुण किए हैं उतनी ही बार मैं अपने रोम-रोम को गर्म सलाखों से दागूं ताकि हर पल आत्मा को उसका दु:ख सताए और मैं जग जाऊं।

जाको गिनती मैं अपने, सोई देखे दुस्मन।
देखे देखाए तो भी ना छूटे, कोई ऐसी अग्यां बल कुंन।। १२ ।।

जिन गुन इन्द्रियों को मैं अपना समझती थी वही मेरे दुश्मन हो गए। यह संसार जो धनी के हुकम से बना इसकी इतनी ताकत है कि पहचान होने पर देखते हुए भी गुण, अंग, इन्द्रियों के अवगुण नहीं छूटते।

रोम रोम सूली चढ़ूं, सब अंग निकसे फूट।
ऐसी करूं जो आप से, तो भी अवगुन एक ना छूट।। १३ ।।

यदि मैं रोम-रोम को सूली पर चढ़ा दूं और शूल मेरे अंग से आर-पार हो जाएं, इतना शरीर को कष्ट देने पर भी एक भी अवगुण नहीं छूटता।

ए नाहीं अवगुन और ज्यों, मेरे तो लेप बजर।
ए बिध सोई जानहीं, जिनकी अंतर खुली नजर।। १४ ।।

यह दूसरों की तरह साधारण अवगुण नहीं हैं। मेरे अवगुण तो बज्रलेप के समान हैं जो छूटते ही नहीं। इस हकीकत को वही समझेगा जिसकी रूह की नजर खुल गई हो।

ए लेप बज्र की मैं क्या कहूं, ए अवगुन सब्दातीत।
धनी आप दे करी आपसी, एही पिया की रीत।। १५ ।।

यह बज्रलेप के समान अवगुणों का वर्णन शब्दों से नहीं हो सकता। इतने पर धनी इतने मेहरबान हैं कि उन्होंने मुझे अपनी अंगना स्वीकार कर अपने जैसा बना लिया। मेरे धनी की मेहर का यही तरीका है।

धनी जी के गुन मैं क्या कहूं, इन अवगुन पर एते गुन।
महामत कहे इन दुलहे पर, मैं वारी वारी दुलहिन।। १६ ।।

मेरे इतने अवगुणों पर धनी ने इतनी बड़ी मेहर की। इसका मैं कैसे बखान करूं? श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपने इस दूल्हा पर वारी-वारी जाऊं।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। ४७२ ।।

Nijanand App

यह चार प्रकरण हवसा में श्री इन्द्रावतीजी के हैं।

राग श्री काफी

मीठडा मीठा रे, मूने वचनिएं का वाहो।
मीठा ते मुखना लऊं मीठडा, कां प्रीतडी करीने परा थाओ।। १ ।।

हे मेरे मीठे वालाजी! मुझे मीठे वचनों से क्यों बहलाते हो? आपके सुन्दर मुखारबिन्द के मीठे शब्दों पर मैं बलिहारी जाती हूं। आप ऐसे प्रेम करके अलग क्यों होते हो?

सनेह सनमंधडो समझावी ने, अंतराय आडी टाली।
हवे अधखिण विरह सही न सकूं, मारे न आवे अवसरियो वाली।। २ ।।

आपने अपनी निसबत (मूल सम्बन्ध) का प्रेम समझाकर माया का परदा हटा दिया। अब आपके आधे क्षण का विरह भी मैं सहन नहीं कर सकती। मुझे यह समय फिर से नहीं मिलना है।

हवे विलखूं छूं वाला विना, हूं तो प्रेम नी बांधी पिड़ाऊं।
कां अलगा आप ग्रहीने ऊभा, हूं निस दिवस फड़कला खाऊं।। ३ ।।

हे मेरे धनी! मैं आपके प्रेम में बंधी हूं और आपके बिना बिलखकर दु:ख पाती हूं। मेरी बांह पकड़ने के बाद अब आप दूर क्यों खड़े हो गए हो? मैं रात-दिन वियोग में तड़पती हूं।

हवे कहोने वालाजी केम करूं, केणी पेरे रेहेवाय।
एम करता इन्द्रावती ने मन्दिर पधारया, मारे आनंद अंग न माय।। ४ ।।

हे वालाजी! अब आप ही बताओ कि मैं क्या करूं? मैं आपके बिना कैसे रहूं? ऐसी विनती करने पर वालाजी श्री इन्द्रावतीजी के हृदय में विराजमान हो गए। अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब आनन्द मेरे अंग में समाता नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४२ ।। चौपाई ।। ४७६ ।।

विनता विनवे रे, पिउ जी रसिया तमें केहेवाओ।
तो एकलड़ा अमने मूकी, अलगा केम करी थाओ।। १ ।।

हे मेरे धनी! आप रसिया कहलाते हैं। मैं आपकी अंगना विनती करती हूं कि मुझे अकेला छोड़कर आप अलग कैसे हो सकते हैं?

जो अलवेला एवा तमें, तो मंदिरिऐं न आवो केम म्हारे।
हूं माननी मान मूकी केम कहूं, पण बोलड़े बंधाणी छूं तारे।। २ ।।

हे मेरे छैल-छबीले वालाजी! आप मेरे हृदय रूपी मन्दिर में क्यों नहीं आते? मैं आपकी मानवती अंगना हूं। मैं अपने मान को छोड़कर कैसे कहूं? मैं तो आपके वचनों में बंधी हूं।

तूं तो मूने जाणे छे जोपे, में तो घणी खीदड़ी खुदावी।
अनेक विनवणी कीधी तें, तो हूं तारे वस आवी।। ३ ।।

हे धनी! आप तो मुझे अच्छी तरह से जानते हैं। मैंने आपको खूब नचाया है। आपने जब मेरी बार-बार खुशामद की तब मैं आपके वश में आई।

Nijanand App

यह चार प्रकरण हवसा में श्री इन्द्रावतीजी के हैं।

राग श्री काफी

मीठडा मीठा रे, मूने वचनिएं का वाहो।
मीठा ते मुखना लऊं मीठडा, कां प्रीतडी करीने परा थाओ।। १ ।।

हे मेरे मीठे वालाजी! मुझे मीठे वचनों से क्यों बहलाते हो? आपके सुन्दर मुखारबिन्द के मीठे शब्दों पर मैं बलिहारी जाती हूं। आप ऐसे प्रेम करके अलग क्यों होते हो?

सनेह सनमंधडो समझावी ने, अंतराय आडी टाली।
हवे अधखिण विरह सही न सकूं, मारे न आवे अवसरियो वाली।। २ ।।

आपने अपनी निसबत (मूल सम्बन्ध) का प्रेम समझाकर माया का परदा हटा दिया। अब आपके आधे क्षण का विरह भी मैं सहन नहीं कर सकती। मुझे यह समय फिर से नहीं मिलना है।

हवे विलखूं छूं वाला विना, हूं तो प्रेम नी बांधी पिड़ाऊं।
कां अलगा आप ग्रहीने ऊभा, हूं निस दिवस फड़कला खांऊं।। ३ ।।

हे मेरे धनी! मैं आपके प्रेम में बंधी हूं और आपके बिना बिलखकर दु:ख पाती हूं। मेरी बांह पकड़ने के बाद अब आप दूर क्यों खड़े हो गए हो? मैं रात-दिन वियोग में तड़पती हूं।

हवे कहोने वालाजी केम करूं, केणी पेरे रेहेवाय।
एम करता इन्द्रावती ने मन्दिर पधारया, मारे आनंद अंग न माय।। ४ ।।

हे वालाजी! अब आप ही बताओ कि मैं क्या करूं? मैं आपके बिना कैसे रहूं? ऐसी विनती करने पर वालाजी श्री इन्द्रावतीजी के हृदय में विराजमान हो गए। अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब आनन्द मेरे अंग में समाता नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४२ ।। चौपाई ।। ४७६ ।।

विनता विनवे रे, पिउ जी रसिया तमें केहेवाओ।
तो एकलड़ा अमने मूकी, अलगा केम करी थाओ।। १ ।।

हे मेरे धनी! आप रसिया कहलाते हैं। मैं आपकी अंगना विनती करती हूं कि मुझे अकेला छोड़कर आप अलग कैसे हो सकते हैं?

जो अलवेला एवा तमें, तो मंदिरिऐं न आवो केम म्हारे।
हूं माननी मान मूकी केम कहूं, पण बोलड़े बंधाणी छूं तारे।। २ ।।

हे मेरे छैल-छबीले वालाजी! आप मेरे हृदय रूपी मन्दिर में क्यों नहीं आते? मैं आपकी मानवती अंगना हूं। मैं अपने मान को छोड़कर कैसे कहूं? मैं तो आपके वचनों में बंधी हूं।

तूं तो मूने जाणे छे जोपे, में तो घणी खीदड़ी खुदावी।
अनेक विनवणी कीधी तें, तो हूं तारे वस आवी।। ३ ।।

हे धनी! आप तो मुझे अच्छी तरह से जानते हैं। मैंने आपको खूब नचाया है। आपने जब मेरी बार-बार खुशामद की तब मैं आपके वश में आई।

Nijanand App

हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई।
कहे इन्द्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई।। ४ ।।

और जब मैंने मूल परमधाम की निसबत जानकर अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे वालाजी! मेरे बिना दूसरा कोई भी आपको इस तरह से वश में नहीं कर सकता।

|| प्रकरण || ४३ || चौपाई || ४८० ||

म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो।
हूं तो एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिऐं वहासो।। १ ।।

हे मेरे वश में आए हुए वालाजी! आप मेरे से अलग कैसे होंगे? मैं इतनी भोली नहीं हूं कि आप मुझे अपने वचनों से बहका दोगे।

ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, जे ततखिण रंग पलटाओ।
सनमंधीनों रंग नेहेचल साचो, जिहां हूं तिहां तमें आवो।। २ ।।

यह अटकल की पहचान नहीं है कि जो आप तुरन्त भूल जाओ। मेरी आपकी अखण्ड निसबत का प्रेम है, इसलिए जहां मैं हूं वहां आप आओ।

हवे अधखिण एक न मूकूं अलगा, प्रीत पेहेलानी ओलखाणी।
साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी।। ३ ।।

अब मैं आपको आधे क्षण के लिए भी नहीं छोडूंगी, क्योंकि मुझे मूल घर के प्रेम की पहचान हो गई है। हमारे बीच धनी धन्यानी (स्वामिनी) का नाता है। यह यहां चर-अचर सभी ने जान लिया है।

प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे।
अखण्ड आनंद सदा इंद्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे।। ४ ।।

अब माया में आकर प्रेम से विनोद और विलास करो ताकि यहां आना सफल हो जाए और पूर्ण सुख का लाभ मिल जाए। वैसे घर (परमधाम) में तो सदा ही अखण्ड आनन्द है।

|| प्रकरण || ४४ || चौपाई || ४८४ ||

राग श्री काफी

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवो जी वाला।
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! मेरे घर (हृदय में) आइए। परदेश (विदेश) में मुझे अकेली छोड़कर आप कहां चले गए?

मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते।
जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते।। २ ।।

मुझे इस माया के संसार में अज्ञानता की नींद थी। आप मुझ सोती को छोड़कर कहां चले गए? होश में आकर देखा तो धनी पास में नहीं दिखाई पड़े। रात बीतने पर तो सवेरा हो जाएगा, अर्थात् जीवन रूपी रात बीतने पर परमधाम में जग जाएंगे।

Nijanand App

हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई।
कहे इन्द्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई।। ४ ।।

और जब मैंने मूल परमधाम की निसबत जानकर अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे वालाजी! मेरे बिना दूसरा कोई भी आपको इस तरह से वश में नहीं कर सकता।

।। प्रकरण ।। ४३ ।। चौपाई ।। ४८० ।।

म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो।
हूं तो एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिऐं वहासो।। १ ।।

हे मेरे वश में आए हुए वालाजी! आप मेरे से अलग कैसे होंगे? मैं इतनी भोली नहीं हूं कि आप मुझे अपने वचनों से बहका दोगे।

ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, जे ततखिण रंग पलटाओ।
सनमंधीनों रंग नेहेचल साचो, जिहां हूं तिहां तमें आवो।। २ ।।

यह अटकल की पहचान नहीं है कि जो आप तुरन्त भूल जाओ। मेरी आपकी अखण्ड निसबत का प्रेम है, इसलिए जहां मैं हूं वहां आप आओ।

हवे अधखिण एक न मूकूं अलगा, प्रीत पेहेलानी ओलखाणी।
साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी।। ३ ।।

अब मैं आपको आधे क्षण के लिए भी नहीं छोडूंगी, क्योंकि मुझे मूल घर के प्रेम की पहचान हो गई है। हमारे बीच धनी धन्यानी (स्वामिनी) का नाता है। यह यहां चर-अचर सभी ने जान लिया है।

प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे।
अखण्ड आनंद सदा इंद्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे।। ४ ।।

अब माया में आकर प्रेम से विनोद और विलास करो ताकि यहां आना सफल हो जाए और पूर्ण सुख का लाभ मिल जाए। वैसे घर (परमधाम) में तो सदा ही अखण्ड आनन्द है।

।। प्रकरण ।। ४४ ।। चौपाई ।। ४८४ ।।

राग श्री काफी

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवो जी वाला।
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! मेरे घर (हृदय में) आइए। परदेश (विदेश) में मुझे अकेली छोड़कर आप कहां चले गए?

मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते।
जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते।। २ ।।

मुझे इस माया के संसार में अज्ञानता की नींद थी। आप मुझ सोती को छोड़कर कहां चले गए? होश में आकर देखा तो धनी पास में नहीं दिखाई पड़े। रात बीतने पर तो सवेरा हो जाएगा, अर्थात् जीवन रूपी रात बीतने पर परमधाम में जग जाएंगे।

Nijanand App

हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई।
कहे इन्द्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई।। ४ ।।

और जब मैंने मूल परमधाम की निसबत जानकर अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे वालाजी! मेरे बिना दूसरा कोई भी आपको इस तरह से वश में नहीं कर सकता।

|| प्रकरण || ४३ || चौपाई || ४८० ||

म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो।
हूं तो एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिऐं वहासो।। १ ।।

हे मेरे वश में आए हुए वालाजी! आप मेरे से अलग कैसे होंगे? मैं इतनी भोली नहीं हूं कि आप मुझे अपने वचनों से बहका दोगे।

ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, जे ततखिण रंग पलटाओ।
सनमंधीनों रंग नेहेचल साचो, जिहां हूं तिहां तमें आवो।। २ ।।

यह अटकल की पहचान नहीं है कि जो आप तुरन्त भूल जाओ। मेरी आपकी अखण्ड निसबत का प्रेम है, इसलिए जहां मैं हूं वहां आप आओ।

हवे अधखिण एक न मूकूं अलगा, प्रीत पेहेलानी ओलखाणी।
साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी।। ३ ।।

अब मैं आपको आधे क्षण के लिए भी नहीं छोडूंगी, क्योंकि मुझे मूल घर के प्रेम की पहचान हो गई है। हमारे बीच धनी धन्यानी (स्वामिनी) का नाता है। यह यहां चर-अचर सभी ने जान लिया है।

प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे।
अखण्ड आनंद सदा इंद्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे।। ४ ।।

अब माया में आकर प्रेम से विनोद और विलास करो ताकि यहां आना सफल हो जाए और पूर्ण सुख का लाभ मिल जाए। वैसे घर (परमधाम) में तो सदा ही अखण्ड आनन्द है।

|| प्रकरण || ४४ || चौपाई || ४८४ ||

राग श्री काफी

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवो जी वाला।
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! मेरे घर (हृदय में) आइए। परदेश (विदेश) में मुझे अकेली छोड़कर आप कहां चले गए?

मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते।
जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते।। २ ।।

मुझे इस माया के संसार में अज्ञानता की नींद थी। आप मुझ सोती को छोड़कर कहां चले गए? होश में आकर देखा तो धनी पास में नहीं दिखाई पड़े। रात बीतने पर तो सवेरा हो जाएगा, अर्थात् जीवन रूपी रात बीतने पर परमधाम में जग जाएंगे।

Nijanand App

कलकली ने कहूं छूं तमनें, आवजो आणे खिणे।
म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इंद्रावती लागे चरणों।। ३ ।।

हे वालाजी! मैं बिलख-बिलखकर कहती हूं कि इस समय में आप आ ही जाओ। इन्द्रावती आपके चरणों में विनती करती है कि आकर मेरी चाहना पूरी कर दो।

।। प्रकरण ।। ४५ ।। चौपाई ।। ४८७ ।।

प्रीत प्रगट केम कीजिए, कीजिए तो छानी छिपाए, मेरे पिउ जी।
तूं तो निलज नंदनो कुमार, मेरे पिउ जी।। १ ।।

महामतिजी कहते हैं, हे प्रीतम! प्रेम जाहिर नहीं किया जाता। उसका आनन्द तो छिपकर ही लिया जाता है। हे नन्द कुमार। मेरे पिया! तुम बेशर्म हो।

तूं देख भयो मोहे बावरो, मैं कुलवधुआ नार।
तूं रोक रह्यो मोहे राह में, घड़ी भई दोए चार।। २ ।।

तुम मुझे देखते ही बावरे हो जाते हो। मैं एक कुलीन (कुलवन्ती) नारी हूं। तुम मुझे कितनी देर तक रास्ते में रोककर खड़े हो जाते हो।

गलियन में दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार।
तूं कामी कछू ना देखही, पर सासुड़ी दे मोहे गार।। ३ ।।

मार्ग में बैठे सांसारिक लोग देख रहे हैं उनकी मुझे कोई परवाह नहीं, तुम प्यार में पागल होकर मुझे मेरा सम्बन्ध याद दिलाना चाहते हो। मुझे अपने सास ससुर का ख्याल आता है।

कर जोरे कुच मरोरे, अंगिया नखन विडार।
अधुर न छोड़े दंत सों, करेगो कहा अब रार।। ४ ।।

तुमने मेरी अंगिया रूपी आत्मा को हाथों और मुख से स्पर्श करते हुए मेरे चारों अन्तस्करण रूपी दो हाथ और दो स्तनों को झकझोर दिया और मुझे तुम्हारी अंगना होने का एहसास होने लगा।

तूं बालक नेह न बूझहीं, मैं बरज्यो केतीक वार।
मैं मेरो कियो पाइयो, अब कासों करों पुकार।। ५ ।।

मेरे अन्तस्करण कहने लगे तुम तो एक बालक हो और सांसारिक स्नेह-प्यार नहीं जानते, इसलिए मैं तुम्हें बार-बार रोक रही हूं, परन्तु आत्मा का पूर्व सम्बन्ध याद आया और प्रेम की दुहाई देनें की आवश्यकता नहीं समझी।

सारी फारी कंठसर टोरी, टोरयो नवसर हार।
अब घर कैसे जाइए, उलटाए दियो सिनगार।। ६ ।।

आपने मेरे साड़ी रूपी शरीर को नया रूप दे दिया। सतलोक बैकुण्ठ के सम्बन्ध को तोड़ा और नवधा भक्ति रूपी हार को तोड़ कर प्रेम लक्षणा का मार्ग दिया। अब संसार रूपी घर में वापस कैसे जाएं आपने तो मेरी वेश भूषा ही बदल दी है।

अब मिल रही महामती, पिउ सों अंगों अंग।
अछरातीत घर अपने, ले चले हैं संग।। ७ ।।

अब महामतिजी कहती हैं कि इस तरह से मैं अपने धनी से एकाकार हो गई। धनी अपने साथ लेकर मूल घर (अक्षरातीत धाम) चलते हैं।

।। प्रकरण ।। ४६ ।। चौपाई ।। ४९४ ।।

Nijanand App

कलकली ने कहूं छूं तमनें, आवजो आणे खिणे।
म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इंद्रावती लागे चरणें।। ३ ।।

हे वालाजी! मैं बिलख-बिलखकर कहती हूं कि इस समय में आप आ ही जाओ। इन्द्रावती आपके चरणों में विनती करती है कि आकर मेरी चाहना पूरी कर दो।

।। प्रकरण ।। ४५ ।। चौपाई ।। ४८७ ।।

प्रीत प्रगट केम कीजिए, कीजिए तो छानी छिपाए, मेरे पिउ जी।
तूं तो निलज नंदनो कुमार, मेरे पिउ जी।। १ ।।

महामतिजी कहते हैं, हे प्रीतम! प्रेम जाहिर नहीं किया जाता। उसका आनन्द तो छिपकर ही लिया जाता है। हे नन्द कुमार। मेरे पिया! तुम बेशर्म हो।

तूं देख भयो मोहे बावरो, मैं कुलवधुआ नार।
तूं रोक रह्यो मोहे राह में, घड़ी भई दोए चार।। २ ।।

तुम मुझे देखते ही बावरे हो जाते हो। मैं एक कुलीन (कुलवन्ती) नारी हूं। तुम मुझे कितनी देर तक रास्ते में रोककर खड़े हो जाते हो।

गलियन में दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार।
तूं कामी कछू ना देखही, पर सासुड़ी दे मोहे गार।। ३ ।।

मार्ग में बैठे सांसारिक लोग देख रहे हैं उनकी मुझे कोई परवाह नहीं, तुम प्यार में पागल होकर मुझे मेरा सम्बन्ध याद दिलाना चाहते हो। मुझे अपने सास ससुर का ख्याल आता है।

कर जोरे कुच मरोरे, अंगिया नखन विडार।
अधुर न छोड़े दंत सों, करेगो कहा अब रार।। ४ ।।

तुमने मेरी अंगिया रूपी आत्मा को हाथों और मुख से स्पर्श करते हुए मेरे चारों अन्तस्करण रूपी दो हाथ और दो स्तनों को झकझोर दिया और मुझे तुम्हारी अंगना होने का एहसास होने लगा।

तूं बालक नेह न बूझहीं, मैं बरज्यो केतीक वार।
मैं मेरो कियो पाइयो, अब कासों करों पुकार।। ५ ।।

मेरे अन्तस्करण कहने लगे तुम तो एक बालक हो और सांसारिक स्नेह-प्यार नहीं जानते, इसलिए मैं तुम्हें बार-बार रोक रही हूं, परन्तु आत्मा का पूर्व सम्बन्ध याद आया और प्रेम की दुहाई देने की आवश्यकता नहीं समझी।

सारी फारी कंठसर टोरी, टोरयो नवसर हार।
अब घर कैसे जाइए, उलटाए दियो सिनगार।। ६ ।।

आपने मेरे साड़ी रूपी शरीर को नया रूप दे दिया। सतलोक बैकुण्ठ के सम्बन्ध को तोड़ा और नवधा भक्ति रूपी हार को तोड़ कर प्रेम लक्षणा का मार्ग दिया। अब संसार रूपी घर में वापस कैसे जाएं आपने तो मेरी वेश भूषा ही बदल दी है।

अब मिल रही महामती, पिउ सों अंगों अंग।
अछरातीत घर अपने, ले चले हैं संग।। ७ ।।

अब महामतिजी कहती हैं कि इस तरह से मैं अपने धनी से एकाकार हो गई। धनी अपने साथ लेकर मूल घर (अक्षरातीत धाम) चलते हैं।

।। प्रकरण ।। ४६ ।। चौपाई ।। ४९४ ।।

Nijanand App

इन प्रकरणों का भावार्थ क्रमशः इस प्रकार से है :

१. हे मेरे अखण्ड परमधाम के धनी! प्रेम जाहिर करने की वस्तु नहीं है। इसका आनन्द तो अखण्ड परमधाम में अपने घर में जहां कोई देख नहीं सकता, जहां एकदिली है वहीं लिया जा सकता है। हे नन्द के कुमार! मेरे प्रीतम! यहां माया में आपको निर्लज्ज (बेशर्म) कहा जाएगा।

२. आप अपनी अंगना को देखते ही बावरे हो जाते हो, क्योंकि आपका स्वरूप तो सदा अखण्ड प्रेम से भरा है। यहां संसार में मेरा और पति भी है जिससे मैं कुलवन्ती (कुलीन) नारी कहलाती हूं। आप मुझे रास्ते में कितनी-कितनी देर रोककर खड़े रहते हो।

३. माया को हटाकर मेरे सामने आते हो फिर भी मैं पहचान नहीं पाती। इस संसार में इस सम्बन्ध को कोई जानता ही नहीं। बुरे लोगों की दृष्टि में विचार रहता है। वह इसको कैसे समझेंगे? आप अखण्ड प्रेम में मग्न रहकर संसार को क्या समझें? परन्तु यहां की लोक-लाज तो मुझे सताती है।

४. आपने तो अंगना जानकर जबरदस्ती मेरी लोक लाज को उतार दिया और अपनी प्रेम भरी अखण्ड वाणी के रस से मेरी जहर भरी अज्ञानता को चूस कर मेरे अन्दर प्रेम का रस भर दिया। अज्ञानता के हटने पर अब लड़ाई काहे की रही? आपका प्रेम से भरा स्वरूप तो सौदाई (आशिक) जैसा लगता है। मैं अपने को ज्ञान से भरपूर बुद्धिमान समझती थी। आपके प्रेम को न पहचान कर बावरा बच्चा समझकर मना करती थी। आपने मेहर कर सब अज्ञानता हटाकर मूल निसबत की पहचान करा दी। यह मैं किसको कहूं? कौन समझेगा? यहां आपने मेरी लोक-लाज को फाड़कर हटा दिया। नवधा की भक्ति रूपी नवसर हार को तोड़ दिया और कुलवंती (कुलीन) नारी के गले की माला तोड़कर अखण्ड घर और पति की पहचान करा दी। इससे मेरी माया वाली भूल से हुई हालत को हटाकर परमधाम की निसबत (सम्बन्ध) को जागृत कर दिया। तो अब इस माया रूपी संसार में कौन जाएगा? आपने मेरी गुण अंग इन्द्रियों को ही बदल डाला है।

श्री महामतिजी कहते हैं कि माया में होने पर भी धनी से मैं एकाकार होकर अंगों-अंग मिलकर एक रूप हो गई। इसलिए अब मुझे धनी अपने संग ही घर लेकर चलेंगे।

राग श्री गौरी

खोज थके सब खेल खसमरी।
मन ही में मन उरझाना, होत न काहू गमरी।। १ ।।टेक।।

श्रीमहामतिजी कहते हैं, इस संसार में सब पारब्रह्म को खोज-खोजकर थक गए, पर अक्षर ब्रह्म के मन (अव्याकृत) और उसके मन नारायण की सृष्टि में ही उलझे रहे। किसी को पारब्रह्म की पहचान नहीं हुई।

मन ही बांधे मन ही खोले, मन तम मन उजास।
ए खेल सकल है मन का, मन नेहेचल मन ही को नास।। २ ।।

इस संसार में मन से ही बंधते हैं और मन से छूटते हैं। मन में ही अज्ञानता का अन्धकार आता है और मन में ही ज्ञान का उजाला होता है। यह सारा संसार आदि नारायण की चाहना से बना है। नारायण जब तक है तब तक संसार जो नारायण के मन का रूप है, खड़ा है। महाप्रलय में संसार मिटते ही नारायण समाप्त हो जाते हैं।

Nijanand App

मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार।। ३ ।।

मन (आदि नारायण) से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश बने हैं। यह सृष्टि के पैदा करने का, पालने का और नाश करने का काम करते हैं। इस संसार के पांचों तत्व, दसों इन्द्रियां तथा तीनों गुण मन के ही रूप हैं। यह अन्त में निराकार में मिल जाते हैं।

मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन।
छोटा बड़ा मन भारी हलका, मन ही जड़ मन ही चेतन।। ४ ।।

नीला (आकाश), पीला (पृथ्वी), श्याम (अज्ञानता), श्वेत (ज्ञान) मन के ही रूप हैं। संसार में कोई छोटा हो या बड़ा, भारी हो या हल्का, जड़ हो या चेतन, सब मन के ही रूप हैं।

मन ही मैला मन ही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा।
एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा।। ५ ।।

कपट और निर्मलता मन के ही रूप हैं। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और प्रेम मन के ही रूप हैं। महामतिजी कहते हैं कि सबके अन्दर व्याप्त होकर नारायण सबको देख रहा है, परन्तु नारायण को किसी ने नहीं देखा।

सब मन में ना कछू मन में, खाली मन मनही में ब्रह्म।
महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम।। ६ ।।

सारा संसार आदि-नारायण के मन में है। यह सपने का है। वह कुछ नहीं है। अव्याकृत जो अक्षरब्रह्म के मन का स्वरूप है उसमें संसार का कुछ नहीं है। अक्षर ब्रह्म के मन में केवल पारब्रह्म की पहचान है। श्री महामतिजी कहते हैं कि इस अक्षर ब्रह्म के मन के स्वरूप को वही जान सकती है जिन ब्रह्मसृष्टियों को पारब्रह्म की पहचान हो गई है।

|| प्रकरण || ४७ || चौपाई || ५०० ||

राग केदारो

खिन एक लेहु लटक भंजाए।
जनमतही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए।। १ ।।

हे जीव! तुझे एक क्षण का समय मिला है। इसमें तू अपना उद्धार कर ले। जन्म से ही तेरा अंग झूठा है। पता नहीं कब मिट जाए।

हे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों बिलमाए।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए।। २ ।।

हे जीव! तू इस क्षण भर के नाटक में क्यों मस्त हो रहा है? देखते ही देखते कितने मर गए। तू अपने मालिक को पाकर भी क्यों भूल रहा है?

आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए।
अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए।। ३ ।।

इस संसार में जो चक्रवर्ती राजा कहलाए वह भी राजपाट की ठाठ भोगकर चले गए। बैकुण्ठ के मालिक भगवान विष्णु को भी मौत नहीं छोड़ती।

Nijanand App

मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार।। ३ ।।

मन (आदि नारायण) से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश बने हैं। यह सृष्टि के पैदा करने का, पालने का और नाश करने का काम करते हैं। इस संसार के पांचों तत्व, दसों इन्द्रियां तथा तीनों गुण मन के ही रूप हैं। यह अन्त में निराकार में मिल जाते हैं।

मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन।
छोटा बड़ा मन भारी हलका, मन ही जड़ मन ही चेतन।। ४ ।।

नीला (आकाश), पीला (पृथ्वी), श्याम (अज्ञानता), श्वेत (ज्ञान) मन के ही रूप हैं। संसार में कोई छोटा हो या बड़ा, भारी हो या हल्का, जड़ हो या चेतन, सब मन के ही रूप हैं।

मन ही मैला मन ही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा।
एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा।। ५ ।।

कपट और निर्मलता मन के ही रूप हैं। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और प्रेम मन के ही रूप हैं। महामतिजी कहते हैं कि सबके अन्दर व्याप्त होकर नारायण सबको देख रहा है, परन्तु नारायण को किसी ने नहीं देखा।

सब मन में ना कछू मन में, खाली मन मनही में ब्रह्म।
महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम।। ६ ।।

सारा संसार आदि-नारायण के मन में है। यह सपने का है। वह कुछ नहीं है। अव्याकृत जो अक्षरब्रह्म के मन का स्वरूप है उसमें संसार का कुछ नहीं है। अक्षर ब्रह्म के मन में केवल पारब्रह्म की पहचान है। श्री महामतिजी कहते हैं कि इस अक्षर ब्रह्म के मन के स्वरूप को वही जान सकती है जिन ब्रह्मसृष्टियों को पारब्रह्म की पहचान हो गई है।

|| प्रकरण || ४७ || चौपाई || ५०० ||

राग केदारो

खिन एक लेहु लटक भंजाए।
जनमतही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए।। १ ।।

हे जीव! तुझे एक क्षण का समय मिला है। इसमें तू अपना उद्धार कर ले। जन्म से ही तेरा अंग झूठा है। पता नहीं कब मिट जाए।

हे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों बिलमाए।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए।। २ ।।

हे जीव! तू इस क्षण भर के नाटक में क्यों मस्त हो रहा है? देखते ही देखते कितने मर गए। तू अपने मालिक को पाकर भी क्यों भूल रहा है?

आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए।
अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए।। ३ ।।

इस संसार में जो चक्रवर्ती राजा कहलाए वह भी राजपाट की ठाठ भोगकर चले गए। बैकुण्ठ के मालिक भगवान विष्णु को भी मौत नहीं छोड़ती।

Nijanand App

जीव रे चतुरमुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंच्यो आए।। ४ ।।

सृष्टि को बनाने वाले चतुर्मुखी ब्रह्मा को भी काल नहीं छोड़ता। यहां चारों तरफ चौदह लोकों में काल का ही पसारा है जो किसी को छोड़ता नहीं।

पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए।
अवसर ऐसो जान के, तूं प्राणपति लौ लाए।। ५ ।।

हवा, पानी, आकाश, पृथ्वी तथा अग्नि पांचों तत्व समाप्त हो जाते हैं, इसलिए तेरे हाथ अवसर आया है, उसे पहचान कर अपने प्राणपति प्राणनाथ से चित्तवृत्ति लगा ले।

देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए।
महामत रुदे रमे तासों, उपजत जाकी इछाए।। ६ ।।

कहने को तो यह संसार एक क्षण का है, परन्तु सब इसी में लिपटे चले जा रहे हैं। महामतिजी कहते हैं, हे मेरे जीव! जिस पारब्रह्म की प्रेरणा से यह खेल बना है तू उसको अपने हृदय में बसा ले।

|| प्रकरण || ४८ || चौपाई || ५०६ ||

राग देसाख

बाई रे वात अमारी हवे कोण सुणें, अमें गेहेलाने मलया।
एहनो नेहडो सुणीने हूं तो घणुऐं नाठी, पणसूं कीजे जे पांणें पड्या।। १ ।।

हे बहन! यहां अब हमारी बात को कौन सुनेगा? मुझे दीवाने प्रीतम मिले हैं। यह नेह लगाने में बड़े चतुर हैं। ऐसा सुनकर मैं पीछा छुड़ाने के लिए भागी, पर क्या करूं? यह तो मेरे पीछे ही पड़ गए हैं।

हूं मां हुती चतुराई त्यारे पांचमां पुछाती, ते चितडा अमारा चलया।
मान मोहोत लज्या गई रे लोपाई, अमें माणस माहें थी टलया।। २ ।।

यदि मेरे अन्दर भी इनकी तरह चतुराई होती तो मैं लोगों से इसकी जानकारी लेती। इन्होंने तो मेरे चित्त को हरण करके मेरी मान-मर्यादा और लोक-लाज को ही हटा दिया है। इससे मैं मानव संसार से ही अलग हो गई हूं।

माणस होए ते तो अमने मां मलजो, जो तमे गेहेलाइए हलया।
ओल्या वार से वढसे खीजसे तमने, तोहे आवसो ते आंहीं पलया।। ३ ।।

जो अपने आपको सांसारिक मानव समझते हों वह मुझे मत मिलें। मेरे धनी का दीवानापन जिसको भाए, वह मेरे साथ आ जाए। तुम्हारे ऐसे करने के लिए सांसारिक लोग तुम्हें मना करेंगे, लड़ेंगे, झगड़ेंगे, फिर भी तुम हमारे ही पास आओगे।

गेहेले वालें अमने कीधां गेहेलडा, मलीने गेहेलाइए छलया।
जात कुटमथी जूआ थया, हद छोडी वेहदमां भलया।। ४ ।।

दीवाने प्रीतम ने मुझे भी दीवाना बना दिया है। इस तरह से दीवाने प्रीतम ने मुझे अपने वश में कर लिया है। अब मैं जाति, कुटुम्ब और परिवार वालों से अलग हो गई हूं तथा संसार को छोड़कर बेहद के पार प्रीतम से मिल गई हूं।

Nijanand App

जीव रे चतुरमुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंच्यो आए।। ४ ।।

सृष्टि को बनाने वाले चतुर्मुखी ब्रह्मा को भी काल नहीं छोड़ता। यहां चारों तरफ चौदह लोकों में काल का ही पसारा है जो किसी को छोड़ता नहीं।

पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए।
अवसर ऐसो जान के, तूं प्राणपति लौ लाए।। ५ ।।

हवा, पानी, आकाश, पृथ्वी तथा अग्नि पांचों तत्व समाप्त हो जाते हैं, इसलिए तेरे हाथ अवसर आया है, उसे पहचान कर अपने प्राणपति प्राणनाथ से चित्तवृत्ति लगा ले।

देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए।
महामत रुदे रमे तासों, उपजत जाकी इछाए।। ६ ।।

कहने को तो यह संसार एक क्षण का है, परन्तु सब इसी में लिपटे चले जा रहे हैं। महामतिजी कहते हैं, हे मेरे जीव! जिस पारब्रह्म की प्रेरणा से यह खेल बना है तू उसको अपने हृदय में बसा ले।

|| प्रकरण || ४८ || चौपाई || ५०६ ||

राग देसाख

बाई रे वात अमारी हवे कोण सुणें, अमें गेहेलाने मलया।
एहनो नेहडो सुणीने हूं तो घणुऐं नाठी, पणसूं कीजे जे पांणें पड्या।। १ ।।

हे बहन! यहां अब हमारी बात को कौन सुनेगा? मुझे दीवाने प्रीतम मिले हैं। यह नेह लगाने में बड़े चतुर हैं। ऐसा सुनकर मैं पीछा छुड़ाने के लिए भागी, पर क्या करूं? यह तो मेरे पीछे ही पड़ गए हैं।

हूं मां हुती चतुराई त्यारे पांचमां पुछाती, ते चितडा अमारा चलया।
मान मोहोत लज्या गई रे लोपाई, अमें माणस माहें थी टलया।। २ ।।

यदि मेरे अन्दर भी इनकी तरह चतुराई होती तो मैं लोगों से इसकी जानकारी लेती। इन्होंने तो मेरे चित्त को हरण करके मेरी मान-मर्यादा और लोक-लाज को ही हटा दिया है। इससे मैं मानव संसार से ही अलग हो गई हूं।

माणस होए ते तो अमने मां मलजो, जो तमे गेहेलाइए हलया।
ओल्या वार से वढसे खीजसे तमने, तोहे आवसो ते आंहीं पलया।। ३ ।।

जो अपने आपको सांसारिक मानव समझते हों वह मुझे मत मिलें। मेरे धनी का दीवानापन जिसको भाए, वह मेरे साथ आ जाए। तुम्हारे ऐसे करने के लिए सांसारिक लोग तुम्हें मना करेंगे, लड़ेंगे, झगड़ेंगे, फिर भी तुम हमारे ही पास आओगे।

गेहेले वालें अमने कीधां गेहेलडा, मलीने गेहेलाइए छलया।
जात कुटमथी जूआ थया, हद छोडी वेहदमां भलया।। ४ ।।

दीवाने प्रीतम ने मुझे भी दीवाना बना दिया है। इस तरह से दीवाने प्रीतम ने मुझे अपने वश में कर लिया है। अब मैं जाति, कुटुम्ब और परिवार वालों से अलग हो गई हूं तथा संसार को छोड़कर बेहद के पार प्रीतम से मिल गई हूं।

Nijanand App

देखीतां सुखड़ा में तो नाख्या उडाडी, दुस्तर दुखें न बलया।
एहेनी गेहेलाइए अमने एवा कीधां, जईने अछरातीतमां गलया।।५ ।।

संसार के सुखों को देखते ही मैंने छोड़ दिया। कठिन दुःखों से घबराई नहीं। इनके दीवानेपन ने मुझे ऐसा बना दिया कि मैं अक्षरातीत में मग्न हो गई।

बाई रे गिनान सब्द गम नहीं नवधाने, वेद पुराणें नव कलया।
ए वात गेहेलड़ी करे रे महामती, मारे अखंड सुख फूले फलया।। ६ ।।

हे सखी! उस अक्षरातीत को पाने के लिए संसार के ज्ञान के शब्द नहीं पहुंचते। नवधा भक्ति नहीं पहुंचती। वेद-पुराण भी कुछ नहीं कह सके। महामतिजी कहते हैं कि इस दीवानेपन से मुझे अखण्ड सुखों का आनन्द मिलने लगा।

|| प्रकरण || ४९ || चौपाई || ५१२ ||

बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे रे, एहने कोई तमें वारो।
दुरजन देखतां अमने बोलावे, निलज ने धुतारो।। १ ।।

हे सखी! मेरे दीवाने प्रीतम दीवानगी की ही बातें करते हैं। इन्हें कोई समझाओ। घर, कुटुम्ब, परिवार वाले तथा बुरी दृष्टि वालों के सामने ही यह निर्लज्ज छलिया मुझे बुलाते हैं।

नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज करे अमारी।
लोक माहें अमें लज्या पामूं, हूं कुलवधुआ नारी।। २ ।।

यह नित्य प्रातः उठते ही मेरे आंगन में आकर खड़े हो जाते हैं और मुझसे छेड़छाड़ करते हैं। संसार के बीच में कुलवन्ती (कुलीन) नारी होने के कारण मुझे शर्म लगती है।

नासंती क्यांहें न छूटूं ए थी, आड़ज बांधे आवी।
हूं जांणूं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी।। ३ ।।

इनसे छूटकर कहीं मैं जा नहीं सकती। यह मेरा रास्ता रोककर खड़े हो जाते हैं? मेरी सासजी कहीं सुन न लें, ऐसा कह-कहकर और कहलवाकर मैं थक गई।

वारतां वलगतां वाले, जोरे सांईड़ा लीधां।
कहे महामती सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडा कीधां।। ४ ।।

मेरे रोकने पर भी वालाजी आकर लिपट गए और जबरदस्ती मुझे लिपटा लिया अर्थात् अपना बना लिया। महामतिजी कहते हैं सखियो! सुनो, वालाजी ने इस तरह से मुझे भी दीवाना बना दिया है।

|| प्रकरण || ५० || चौपाई || ५१६ ||

राग धनाश्री

आज वधाई वृज घर घर, प्रगटया श्री नंदकुमार।
दूध दधी ऊमर धोए, तोरण बांधे वृजनार।। १ ।।

नन्दजी के घर नन्दकुमार के प्रगट होने से बृज में घर-घर बधाई बज रही हैं। बृज की नारियां दूध और दही से घर के दरवाजे और चौखट को धोकर तोरण (वन्दनवार) बांधती हैं।

Nijanand App

देखीतां सुखड़ा में तो नाख्या उडाडी, दुस्तर दुखें न बलया।
एहेनी गेहेलाइए अमने एवा कीधां, जईने अछरातीतमां गलया।। ५ ।।

संसार के सुखों को देखते ही मैंने छोड़ दिया। कठिन दुःखों से घबराई नहीं। इनके दीवानेपन ने मुझे ऐसा बना दिया कि मैं अक्षरातीत में मग्न हो गई।

बाई रे गिनान सब्द गम नहीं नवधाने, वेद पुराणें नव कलया।
ए वात गेहेलड़ी करे रे महामती, मारे अखंड सुख फूले फलया।। ६ ।।

हे सखी! उस अक्षरातीत को पाने के लिए संसार के ज्ञान के शब्द नहीं पहुंचते। नवधा भक्ति नहीं पहुंचती। वेद-पुराण भी कुछ नहीं कह सके। महामतिजी कहते हैं कि इस दीवानेपन से मुझे अखण्ड सुखों का आनन्द मिलने लगा।

।। प्रकरण ।। ४९ ।। चौपाई ।। ५१२ ।।

बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे रे, एहने कोई तमें वारो।
दुरजन देखतां अमने बोलावे, निलज ने धुतारो।। १ ।।

हे सखी! मेरे दीवाने प्रीतम दीवानगी की ही बातें करते हैं। इन्हें कोई समझाओ। घर, कुटुम्ब, परिवार वाले तथा बुरी दृष्टि वालों के सामने ही यह निर्लज्ज छलिया मुझे बुलाते हैं।

नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज करे अमारी।
लोक माहें अमें लज्या पामूं, हूं कुलवधुआ नारी।। २ ।।

यह नित्य प्रातः उठते ही मेरे आंगन में आकर खड़े हो जाते हैं और मुझसे छेड़छाड़ करते हैं। संसार के बीच में कुलवन्ती (कुलीन) नारी होने के कारण मुझे शर्म लगती है।

नासंती क्यांहें न छूटूं ए थी, आड़ज बांधे आवी।
हूं जांणूं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी।। ३ ।।

इनसे छूटकर कहीं मैं जा नहीं सकती। यह मेरा रास्ता रोककर खड़े हो जाते हैं? मेरी सासजी कहीं सुन न लें, ऐसा कह-कहकर और कहलवाकर मैं थक गई।

वारतां वलगतां वाले, जोरे सांईड़ा लीधां।
कहे महामती सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडा कीधां।। ४ ।।

मेरे रोकने पर भी वालाजी आकर लिपट गए और जबरदस्ती मुझे लिपटा लिया अर्थात् अपना बना लिया। महामतिजी कहते हैं सखियो! सुनो, वालाजी ने इस तरह से मुझे भी दीवाना बना दिया है।

।। प्रकरण ।। ५० ।। चौपाई ।। ५१६ ।।

राग धनाश्री

आज वधाई वृज घर घर, प्रगटया श्री नंदकुमार।
दूध दधी ऊमर धोए, तोरण बांधे वृजनार।। १ ।।

नन्दजी के घर नन्दकुमार के प्रगट होने से बृज में घर-घर बधाई बज रही हैं। बृज की नारियां दूध और दही से घर के दरवाजे और चौखट को धोकर तोरण (वन्दनवार) बांधती हैं।

Nijanand App

देखीतां सुखड़ा में तो नाख्या उडाडी, दुस्तर दुखें न बलया।
एहेनी गेहेलाइए अमने एवा कीधां, जईने अछरातीतमां गलया।। ५ ।।

संसार के सुखों को देखते ही मैंने छोड़ दिया। कठिन दुःखों से घबराई नहीं। इनके दीवानेपन ने मुझे ऐसा बना दिया कि मैं अक्षरातीत में मग्न हो गई।

बाई रे गिनान सब्द गम नहीं नवधाने, वेद पुराणें नव कलया।
ए वात गेहेलड़ी करे रे महामती, मारे अखंड सुख फूले फलया।। ६ ।।

हे सखी! उस अक्षरातीत को पाने के लिए संसार के ज्ञान के शब्द नहीं पहुंचते। नवधा भक्ति नहीं पहुंचती। वेद-पुराण भी कुछ नहीं कह सके। महामतिजी कहते हैं कि इस दीवानेपन से मुझे अखण्ड सुखों का आनन्द मिलने लगा।

|| प्रकरण || ४९ || चौपाई || ५१२ ||

बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे रे, एहने कोई तमें वारो।
दुरजन देखतां अमने बोलावे, निलज ने धुतारो।। १ ।।

हे सखी! मेरे दीवाने प्रीतम दीवानगी की ही बातें करते हैं। इन्हें कोई समझाओ। घर, कुटुम्ब, परिवार वाले तथा बुरी दृष्टि वालों के सामने ही यह निर्लज्ज छलिया मुझे बुलाते हैं।

नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज करे अमारी।
लोक माहें अमें लज्या पामूं, हूं कुलवधुआ नारी।। २ ।।

यह नित्य प्रातः उठते ही मेरे आंगन में आकर खड़े हो जाते हैं और मुझसे छेड़छाड़ करते हैं। संसार के बीच में कुलवन्ती (कुलीन) नारी होने के कारण मुझे शर्म लगती है।

नासंती क्यांहें न छूटूं ए थी, आड़ज बांधे आवी।
हूं जांणूं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी।। ३ ।।

इनसे छूटकर कहीं मैं जा नहीं सकती। यह मेरा रास्ता रोककर खड़े हो जाते हैं? मेरी सासजी कहीं सुन न लें, ऐसा कह-कहकर और कहलवाकर मैं थक गई।

वारतां वलगतां वाले, जोरे सांईड़ा लीधां।
कहे महामती सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडा कीधां।। ४ ।।

मेरे रोकने पर भी वालाजी आकर लिपट गए और जबरदस्ती मुझे लिपटा लिया अर्थात् अपना बना लिया। महामतिजी कहते हैं सखियो! सुनो, वालाजी ने इस तरह से मुझे भी दीवाना बना दिया है।

|| प्रकरण || ५० || चौपाई || ५१६ ||

राग धनाश्री

आज वधाई वृज घर घर, प्रगटया श्री नंदकुमार।
दूध दधी ऊमर धोए, तोरण बांधे वृजनार।। १ ।।

नन्दजी के घर नन्दकुमार के प्रगट होने से बृज में घर-घर बधाई बज रही हैं। बृज की नारियां दूध और दही से घर के दरवाजे और चौखट को धोकर तोरण (वन्दनवार) बांधती हैं।

Nijanand App

एक बीजीने छांटे नांचे, उमंग अंग न माय।
अनेक विधना बाजा रस बाजे, गृह गृह उछव थाय।। २ ।।

बृज की गोपियों के अंग में खुशी समाती नहीं है। वह एक दूसरे पर रंग और दूध-दही छिड़ककर नाचती हैं। तरह-तरह के बाजे बज रहे हैं और घर-घर आनन्द हो रहा है।

लईने वधावा सांचरी, भवन भवन थी नार।
गाए ते गीत सोहामणां, साजे छे सकल सिणगार।। ३ ।।

घर-घर से गोपियां सुन्दर सिनगार सजाकर बधाई के गीत गाते हुए बधावा लेकर चल पड़ी हैं।

अबीर गुलाल उछालती आवे, छाया ना सूझे सूर।
चाल चरण छवे नहीं भोमें, जाणे उमडयो सागर पूर।। ४ ।।

वह इस तरह अबीर और गुलाल उड़ा रही हैं कि सूर्य की रोशनी भी ढकी जा रही है। उनकी चाल सागर में पूर (प्रवाह) की जैसी लगती है और ऐसा लग रहा है कि खुशी के मारे उनके चरण धरती पर नहीं लग रहे हैं।

जुथ जुजवे जुवंतियों, उछरंगतियो अपार।
उछव करती आवियो, बाबा नंदतणें दरबार।। ५ ।।

गोपियों की अलग-अलग टोलियां अपार आनन्द में भरी हुई नन्द बाबाजी के घर उत्सव मनाती आ रही हैं।

धसमसियो मंदिरमां पेसे, माननी सर्वे धाए।
नंद ने वधावो दई वल्या, मांडवे मंगल गाए।। ६ ।।

सब गोपियां दौड़-दौड़कर भीड़भाड़ में नन्द बाबाजी के घर में घुसती हैं। नन्द बाबाजी को बधाई देकर लौटीं और आंगन में आकर मंगल गीत गाने लगीं।

ब्राह्मण भाट गुणीजन चारण, मलया ते मांगण हार।
निरत नटवा गंधर्व, राग सांगीत थेई थेई कार।। ७ ।।

ब्राह्मण, भाट, गुणी, ज्ञानी लोग, गाने वाले और मांगने वाले सब आ गए। गंधर्व गीत गाकर नाचते हैं। बृज में 'तत्ता-थेई' की आवाज गूंज रही है।

नाद दुन्द पडछंदा पर्वतें, वरत्यो जय जय कार।
नंद गोप सहु गेहेला हरखे, खोलावे भंडार।। ८ ।।

बाजों की, पैर की पड़तालों की तथा जय-जयकार की आवाज पहाड़ों तक फैल गई। नन्दजी तथा सब ग्वाले खुशी से दीवाने हो गए हैं और दान करने के लिए भण्डार खोल दिए हैं।

गाए गोधा अंन वस्तर पेहेराव्या, गोप सकल दातार।
केहेने धन केहेने भूखन, नवनिध दे दे कार।। ९ ।।

गाय और बैलों को अन्न खिलाया और कपड़े पहनाए। इस प्रकार से बृजवासी दाता बने हैं। वह किसी को धन, किसी को आभूषण तथा हर एक को मनवांछित सामान दे रहे हैं।

Nijanand App

ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार।
ए प्रगटया पूरण पार ब्रह्म, महामती तणों आधार।। १० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह हमारे पूर्ण पारब्रह्म प्रगट हुए हैं जिनकी लीला अखण्ड हो गई है। इस लीला के रहस्य का विस्तार आगे होगा।

।। प्रकरण ।। ५१ ।। चौपाई ।। ५२६ ।।

राग श्री

सतगुर मेरा स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं।
सनमंध मेरा याही सों, मैं ताथें सदा सुख लहूं।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अखण्ड परमधाम और धनी की पहचान का ज्ञान देने वाले मेरे सतगुरु श्री राजजी महाराज स्वयं हैं जिनके चरणों से मुझे सदा अखण्ड सुख प्राप्त होता है, क्योंकि मेरा इनसे आत्मा का अखण्ड नाता है।

ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुन को विस्तार।
ए मोह अहंतें उपजें, ताथें छूटत नहीं विकार।। २ ।।

यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड ब्रह्मा, विष्णु, महेश का ही विस्तार है जिनकी उत्पत्ति मोह-तत्व, अहंकार से हुई है, इसलिए किसी से भी माया का विकार छूटता नहीं है।

इत सास्त्र सब्द कई पसरे, ताको खोज करे संसार।
वाचा निवृत्ति मोह में, आड़ी भई निराकार।। ३ ।।

इस संसार में धर्म-ग्रन्थ बहुत हैं जिनसे दुनियां वाले खोज करते हैं। इन ग्रन्थों की वाणी से मोह तत्व से छुटकारा नहीं मिल सकता क्योंकि यह निराकार से आगे जाते ही नहीं हैं।

सुन्य निराकार पार को, खोज खोज रहे कई हार।
बोहोतों बहुबिध ढूंढ्या, पर किया न किने निरधार।। ४ ।।

शून्य, निराकार के पार बेहद को खोज-खोजकर कई लोग हार गए। उन्होंने कई प्रकार से ढूंढा, पर वह मिला किसी को नहीं।

सो बुधजीऐं सास्त्र ले, सबहीं को काढ्यो सार।
जो कोई सब्द संसार में, ताको भलो कियो निरवार।। ५ ।।

जागृत बुद्धि (तारतम ज्ञान) ने सब शास्त्रों का सार निकाला और संसार के उद्धार के लिए अखण्ड रास्ते का सब निर्णय कर दिया।

जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन।
खेल भी एही देखहीं, और अर्थ भी लिए इन।। ६ ।।

जिन ब्रह्म सृष्टियों के वास्ते माया का संसार बना है, शास्त्रों का ज्ञान भी उन्हीं के वास्ते आया है। माया का खेल भी देखने वाले यही हैं और शास्त्रों के अर्थ का ज्ञान भी इन्हीं को है।

ए माया जाकी सोई जाने, क्यों कर समझे और।
बुध जी के रोसन थें, प्रकास होसी सब ठौर।। ७ ।।

इस माया को जिसने बनाया है वही इसके भेद जानता है। दूसरा क्या समझेगा? अब जागृत बुद्धि (तारतम) की वाणी से सब संसार को पता चल जाएगा।

Nijanand App

ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार।
ए प्रगटया पूरण पार ब्रह्म, महामती तणों आधार।। १० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह हमारे पूर्ण पारब्रह्म प्रगट हुए हैं जिनकी लीला अखण्ड हो गई है। इस लीला के रहस्य का विस्तार आगे होगा।

।। प्रकरण ।। ५१ ।। चौपाई ।। ५२६ ।।

राग श्री

सतगुर मेरा स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं।
सनमंध मेरा याही सों, मैं तार्थे सदा सुख लहूं।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अखण्ड परमधाम और धनी की पहचान का ज्ञान देने वाले मेरे सतगुरु श्री राजजी महाराज स्वयं हैं जिनके चरणों से मुझे सदा अखण्ड सुख प्राप्त होता है, क्योंकि मेरा इनसे आत्मा का अखण्ड नाता है।

ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुन को विस्तार।
ए मोह अहंतें उपजें, तार्थे छूटत नहीं विकार।। २ ।।

यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड ब्रह्मा, विष्णु, महेश का ही विस्तार है जिनकी उत्पत्ति मोह-तत्व, अहंकार से हुई है, इसलिए किसी से भी माया का विकार छूटता नहीं है।

इत सास्त्र सब्द कई पसरे, ताको खोज करे संसार।
वाचा निवृत्ति मोह में, आड़ी भई निराकार।। ३ ।।

इस संसार में धर्म-ग्रन्थ बहुत हैं जिनसे दुनियां वाले खोज करते हैं। इन ग्रन्थों की वाणी से मोह तत्व से छुटकारा नहीं मिल सकता क्योंकि यह निराकार से आगे जाते ही नहीं हैं।

सुन्य निराकार पार को, खोज खोज रहे कई हार।
बोहोतों बहुबिध ढूंढ्या, पर किया न किने निरधार।। ४ ।।

शून्य, निराकार के पार बेहद को खोज-खोजकर कई लोग हार गए। उन्होंने कई प्रकार से ढूंढा, पर वह मिला किसी को नहीं।

सो बुधजीऐं सास्त्र ले, सबहीं को काढ़्यो सार।
जो कोई सब्द संसार में, ताको भलो कियो निरवार।। ५ ।।

जागृत बुद्धि (तारतम ज्ञान) ने सब शास्त्रों का सार निकाला और संसार के उद्धार के लिए अखण्ड रास्ते का सब निर्णय कर दिया।

जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन।
खेल भी एही देखहीं, और अर्थ भी लिए इन।। ६ ।।

जिन ब्रह्म सृष्टियों के वास्ते माया का संसार बना है, शास्त्रों का ज्ञान भी उन्हीं के वास्ते आया है। माया का खेल भी देखने वाले यही हैं और शास्त्रों के अर्थ का ज्ञान भी इन्हीं को है।

ए माया जाकी सोई जाने, क्यों कर समझे और।
बुध जी के रोसन थें, प्रकास होसी सब ठौर।। ७ ।।

इस माया को जिसने बनाया है वही इसके भेद जानता है। दूसरा क्या समझेगा? अब जागृत बुद्धि (तारतम) की वाणी से सब संसार को पता चल जाएगा।

Nijanand App

किल्ली ल्याए वतन थें, सब खोल दिए दरबार।
माया से न्यारा घर नेहेचल, देखाया मोहजल पार।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम से तारतम ज्ञान की कुन्जी लाकर हद, बेहद, अक्षर और अक्षरातीत तक के दरवाजे खोल दिए हैं। हमारा अखण्ड घर (परमधाम) माया से अलग निराकार के पार है, उसे बता दिया।

ब्रह्मसृष्ट जाहेर करी, बुधजीएं इत आए।
अछरातीत को आनन्द, सत सुख दियो बताए।। ९ ।।

बुधजी ने आकर ब्रह्मसृष्टियों की पहचान कराई और अक्षरातीत (धनी) के सच्चे (अखण्ड) सुख (आनन्द) को बताया।

सब्द सुनाए सुक व्यास के, मोहे खिन में कियो उजास।
उपनिषद अर्थ वेद के, ए गुझ कियो प्रकास।। १० ।।

शुकदेवजी और व्यासजी के वचनों के भेद एक क्षण में खोल दिए। वेदों और उपनिषदों के छिपे रहस्यों को भी जाहिर कर दिया।

इनसें सुध मोहे सब भई, संसे रह्यो न कोए।
बुधजी बिना इन मोह में, प्रकास जो कैसे होए।। ११ ।।

इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मेरे सारे संशय मिट गए और पूरी पहचान हो गई। जागृत बुद्धि के बिना इस संसार सागर में अखण्ड ज्ञान कैसे मिल सकता था?

संगी जो अपने सनमंधी, सो भी गए मांहें भूल।
तो क्यों समझें जीव मोह के, जाको निद्रा मूल।। १२ ।।

जो परमधाम की अपनी सम्बन्धी ब्रह्मसृष्टि है वह भी इस खेल में आकर भूल गई, तो जीवसृष्टि जिनकी उत्पत्ति निराकार और मोह तत्व से है वह कैसे अखण्ड वाणी को समझ सकते हैं?

पिया मोहे अपनी जान के, अन्तर दई समझाए।
ना तो आद के संसे अब लों, सो क्योंकर मेटयो जाए।। १३ ।।

धनी ने मुझे अपनी अंगना जानकर सारे भेदों को समझा दिया, वरना जब से ब्रह्माण्ड बना है आज तक कोई किसी के संशय नहीं मिटा सका।

ए बीतक कहूं सैयन को, जाहेर देऊं बताए।
मोहे जगाई पिया ने, मैं देऊं सबे जगाए।। १४ ।।

इसकी हकीकत मैं अपने सुन्दरसाथ को स्पष्ट बता देती हूं। धनी ने मुझ अकेली को जागृत किया। मैं सब सुन्दरसाथ को जगा देती हूं।

ए खेल हुआ सैयों खातिर, और खातिर अछर।
सबके मनोरथ पूरने, देखाए तीनों अवसर।। १५ ।।

यह माया का खेल ब्रह्मसृष्टि और अक्षरब्रह्म के वास्ते बना है। सबकी मनोकामना पूर्ण करने के लिए बृज, रास और जागनी की तीनों लीलाएं तीन बार में दिखाईं।

Nijanand App

जब माया मोह न अहंकार, ना विस्तरे त्रिगुन।
ए दिल दे के समझियो, कहूंगी मूल वचन।।१६।।

जब माया, मोह तत्व, अहंकार और त्रिगुण कुछ भी नहीं था, उस समय के मूल वचनों को याद दिलाती हूं। इसे सुन्दरसाथजी ध्यान से समझना।

तब खेल हम मांगया, सो देखाया दो बेर।
तामें बृज में खेले पिया संग, बीच मोह के अंधेर।।१७।।

हमने जो उस समय धनी से खेल मांगा था उसे उन्होंने दो बार में दिखाया। एक में बृज की लीला अज्ञानता के अंधेरे में हमने धनी के साथ खेली।

काल माया देखी नींद में, आधी नींद माया जोग।
ताथें देखाई जगाए के, इत लेसी सबको भोग।।१८।।

उस बृज को हमने काल माया के ब्रह्माण्ड में देखा। उसके बाद योगमाया के ब्रह्माण्ड में जहां धनी की सुध तो थी पर घर की सुध नहीं थी, इसलिए उस योगमाया को आधी नींद का ब्रह्माण्ड कहा है। यहां तीसरे ब्रह्माण्ड में अब सबको तारतम वाणी के ज्ञान से जगा देती हूं। सब साथ को बृज, रास, नीतनपुरी तथा परमधाम (अखण्ड घर) का आनन्द यहीं जागनी के ब्रह्माण्ड में मिलेगा।

इन लीला की जो आतमा, सो करसी सबे पेहेचान।
आवत दौड़े अंकूरी, ए ताए मिलसी निसान।।१९।।

इन लीलाओं की जो आत्माएं (ब्रह्मसृष्टियां) हैं, उन सबको यह पहचान हो जाएगी। उन्हें ही इन सारे रहस्यों के भेद खुलेंगे और वह परमधाम के निसबती दौड़ते चले आएंगे।

अखंड सुख जाहेर कियो, मूल बुध प्रकासी।
देत देखाई जैसे दुनियां, पर अछरातीत के वासी।।२०।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से परमधाम के अखण्ड सुख जाहिर कर दिए हैं। संसार में यह ब्रह्मसृष्टियां दुनियां के तनों में दुनियां जैसी ही दिखाई देती हैं। पर यह हकीकत में अक्षरातीत धाम की रहने वाली हैं।

खेल किया पेहेले बृज में, खेल दूजा वृन्दाबन।
उमेद रही तो भी नेक सी, ताथें एह उतपन।।२१।।

पहला खेल बृज में खेला और दूसरा रास का खेल अखण्ड वृन्दावन में। फिर भी थोड़ी-सी चाहना बाकी रहने के कारण यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड हुआ।

बृज रास ए सोई लीला, सोई पिया सोई दिन।
सोई घड़ी ने सोई पल, वैराट होसी धंन धंन।।२२।।

परमधाम की उसी साइत में (उसी घड़ी में) हमारे पिया ने बृज दिखाया, रास की लीला दिखाई और उसी साइत और उसी पल में इन चौदह लोकों को देखने के बाद अखण्ड कर देंगे।

सखी एक दूजी को ढूंढहीं, आई जुदी जुदी इन बेर।
प्रेम प्यासी पिया की, लई जो विरहा घेर।।२३।।

इस खेल में सखियां अलग-अलग ठिकाने में आई हैं और वह एक दूसरे को ढूंढ रही हैं। वह पिया के प्रेम की प्यासी हैं और धनी से बिछुड़ने के विरह में डूबी हैं।

Nijanand App

अब ए लीला क्यों छानी रहे, सखियां मिली सब टोले।
पल पल प्रकास पसरे, आगम ही आगम बोले।। २४ ।।

अब इस जागनी की लीला में सखियां सभी टोले-टोले (समूह) मिल रही हैं, इसलिए यह लीला छिपी नहीं रहेगी। इस तरह से इस लीला का ज्ञान पल-पल में फैलेगा, ऐसी भविष्यवाणी वेद और शास्त्रों ने की है।

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।। २५ ।।

चौबीस अवतारों के बीच अक्षरातीत की लीला किसी ने जाहिर नहीं की। श्री कृष्ण के तीन अवतारों के भेद में परमधाम की पहचान और ब्रह्मलीला छिपी हुई थी। अब अपने समय पर जागृत बुद्धि के जाहिर होने से सब रहस्य जाहिर हो गए।

सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट।
लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।। २६ ।।

अब ब्रह्मलीला की और मेरे अखण्ड स्वरूप की पहचान सबको देकर वैराट को अखण्ड सुख देंगे। श्री राजजी महाराज के इस संसार में आने पर दो संसारी नाम हुए। पहले तन का नाम श्री कृष्ण और दूसरे तन का श्री देवचन्द्रजी। इन दोनों के नामों को मिटाकर नया शोभायुक्त प्राणनाथजी के नाम से जाहिर होंगे (मैं प्राणनाथ हूं)।

ए नित लीला बुध जी, करसी बड़ो विलास।
दया भई दुनियां पर, होसी सबे अविनास।। २७ ।।

बुध (जागृत बुद्धि) के स्वरूप (श्री प्राणनाथजी) की अखण्ड लीला का बड़ा आनन्द होगा। यह दुनियां पर मेहर करके सबको अखण्ड करेंगे।

सुर असुर ब्रह्मांड में, मिलकर गावसी ए सुख।
इन लीला को जो आनन्द, वरन्यो न जाए या मुख।। २८ ।।

हिन्दू-मुसलमान इस ब्रह्माण्ड में मिलकर इस अखण्ड सुख का आनन्द लेंगे। इस आनन्द के सुख का वर्णन इस मुख से नहीं होता।

सब पर हुआ कलस, प्रेम आनन्द भरपूर।
महामत मोह अहं उड़यो, ऊग्यो अखंड वतनी सूर।। २९ ।।

यह विजयाभिनन्दन बुधजी श्री प्राणनाथजी सबके ऊपर कलश के समान शोभित होंगे। अपार प्रेम और आनन्द देंगे। श्री महामतिजी कहते हैं कि अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है और मोह तत्व और अहंकार की अज्ञानता उड़ गई है।

|| प्रकरण || ५२ || चौपाई || ५५५ ||

राग श्री

धनी जी ध्यान तुमारे रे।
धनी मेरे ध्यान तुमारे, बैठे बुधजी बरस सहस्त्र चार।
छे सै साठ बीता समे, दुनियां को भयो आचार।। १ ।।

हे धनी जी! आपके आगमन के इन्तजार में रास की समाप्ति के बाद से हरिद्वार में सम्वत् १७३५ तक चार हजार छः सौ साठ वर्ष बीत गए। वही अक्षरब्रह्म मेड़ते में श्री प्राणनाथजी के तन में बैठकर अब हरिद्वार में दुनियां के आचार्य विजयाभिनन्द बुध के रूप में जाहिर हुए।

Nijanand App

अब ए लीला क्यों छानी रहे, सखियां मिली सब टोले।
पल पल प्रकास पसरे, आगम ही आगम बोले।। २४ ।।

अब इस जागनी की लीला में सखियां सभी टोले-टोले (समूह) मिल रही हैं, इसलिए यह लीला छिपी नहीं रहेगी। इस तरह से इस लीला का ज्ञान पल-पल में फैलेगा, ऐसी भविष्यवाणी वेद और शास्त्रों ने की है।

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।। २५ ।।

चौबीस अवतारों के बीच अक्षरातीत की लीला किसी ने जाहिर नहीं की। श्री कृष्ण के तीन अवतारों के भेद में परमधाम की पहचान और ब्रह्मलीला छिपी हुई थी। अब अपने समय पर जागृत बुद्धि के जाहिर होने से सब रहस्य जाहिर हो गए।

सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट।
लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।। २६ ।।

अब ब्रह्मलीला की और मेरे अखण्ड स्वरूप की पहचान सबको देकर वैराट को अखण्ड सुख देंगे। श्री राजजी महाराज के इस संसार में आने पर दो संसारी नाम हुए। पहले तन का नाम श्री कृष्ण और दूसरे तन का श्री देवचन्द्रजी। इन दोनों के नामों को मिटाकर नया शोभायुक्त प्राणनाथजी के नाम से जाहिर होंगे (मैं प्राणनाथ हूं)।

ए नित लीला बुध जी, करसी बड़ो विलास।
दया भई दुनियां पर, होसी सबे अविनास।। २७ ।।

बुध (जागृत बुद्धि) के स्वरूप (श्री प्राणनाथजी) की अखण्ड लीला का बड़ा आनन्द होगा। यह दुनियां पर मेहर करके सबको अखण्ड करेंगे।

सुर असुर ब्रह्मांड में, मिलकर गावसी ए सुख।
इन लीला को जो आनन्द, वरन्यो न जाए या मुख।। २८ ।।

हिन्दू-मुसलमान इस ब्रह्माण्ड में मिलकर इस अखण्ड सुख का आनन्द लेंगे। इस आनन्द के सुख का वर्णन इस मुख से नहीं होता।

सब पर हुआ कलस, प्रेम आनन्द भरपूर।
महामत मोह अहं उड़्यो, ऊग्यो अखंड वतनी सूर।। २९ ।।

यह विजयाभिनन्दन बुधजी श्री प्राणनाथजी सबके ऊपर कलश के समान शोभित होंगे। अपार प्रेम और आनन्द देंगे। श्री महामतिजी कहते हैं कि अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है और मोह तत्व और अहंकार की अज्ञानता उड़ गई है।

॥ प्रकरण ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ ५५५ ॥

राग श्री

धनी जी ध्यान तुमारे रे।
धनी मेरे ध्यान तुमारे, बैठे बुधजी बरस सहस्र चार।
छे सै साठ बीता समे, दुनियां को भयो आचार।। १ ।।

हे धनी जी! आपके आगमन के इन्तजार में रास की समाप्ति के बाद से हरिद्वार में सम्वत् १७३५ तक चार हजार छः सौ साठ वर्ष बीत गए। वही अक्षरब्रह्म मेड़ते में श्री प्राणनाथजी के तन में बैठकर अब हरिद्वार में दुनियां के आचार्य विजयाभिनन्द बुध के रूप में जाहिर हुए।

Nijanand App

नोट—इस सिलसिले में प्रकरण ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ ३ ॥ को ध्यान से देखें।

हिन्दू मुसलमान रे फिरंगी कई जातें, होदी बोदी जैन अपार।
वादे सो क्रोध बधारिया, करी अगनी उदेकार।। २ ॥

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, बोधी, जैन तथा और कई लोग आपस में विवाद से झगड़ा फैलाते थे और आपस में क्रोध की अग्नि भड़काते थे।

कहावें धरम पंथ रे लड़ें मांहें वैरें, अंग असुराई को अधिकार।
पसु पंखी साधु न छूटे काहूं, पुकार न काहूं बहार।। ३ ॥

इन धर्म-पंथों में आपस में बहुत वैर था और इनके मानने वालों के अंग में राक्षसीवृत्ति छाई थी। इससे पशु, पक्षी, साधु कोई नहीं बच सका, क्योंकि किसी की पुकार को कोई सुनने वाला नहीं था।

भाजे भजन रे बाजे उछव अटके, ढाहे मंदिर हरिद्वार।
सत छोड़ सूरों नीचा देखिया, कमर बांधी रही तरवार।। ४ ॥

हरिद्वार के मन्दिरों को तोड़ा गया तथा भजन, बन्दगी, उत्सव सब रुक गए। शूरवीरों ने सत की राह को छोड़कर अपना मुंह नीचा कर लिया। उनकी तलवार कमर में ही बंधी रह गई।

कसे साधू रे काहू भजन ना रह्या, कुली बरस्या जलते अंगार।
धखयो दावानल दसो दिसा, ऐसा भवड़ा हुआ भयंकर।। ५ ॥

जब साधु लोग ही लड़ने-मरने को तैयार हो गए तो भजन करना कहां रहा? कलियुग ने चारों तरफ ऐसी आग लगा दी कि पूरा भवसागर अर्थात् सारा संसार जलने लगा और भयानक तूफान उठ खड़ा हुआ।

मांस आहारी रे ना दया डरे किनसे, ऐसा हुआ हाहाकार।
बुध जी बिना वैराट में, ऐसो बरत्यो वेहेवार।। ६ ॥

मांसाहारी लोग जिनके दिल में दया नहीं होती और जो किसी से नहीं डरते हैं, इन्होंने संसार में ऐसा हाहाकार मचा दिया है। बुधजी के आने से पहले संसार की ऐसी हालत थी।

आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार।
सो सत बानी सबों की करी, अब आए करो दीदार।। ७ ॥

सभी धर्मग्रन्थ बुधजी के आने की भविष्यवाणी करते थे। बुधजी ने आकर सब ग्रन्थों को सत (सच) कर दिया। अब सभी आकर उनके दर्शन करो।

कुरान पुरान रे वेद कतेबों, किए अर्थ सबे निरधार।
टाली उरझन लोक चौदे की, मूल काढ्यो मोह अहंकार।। ८ ॥

बुधजी ने आकर कुरान, पुराण, वेद, कतेब के छिपे सब रहस्य खोल दिए और चौदह लोकों में फैले संशय को मिटा दिया। मोह तत्व और अहंकार के अज्ञान को जड़ से ही साफ कर दिया।

सुन्य निरगुन निरंजन, देखे वैकुंठ निराकार।
अछर पार अछरातीत, प्रेम प्रकास्यो पार के पार।। ९ ॥

बुधजी ने शून्य, निर्गुण, निरंजन तथा बैकुण्ठ का वर्णन करके अक्षर के पार अक्षरातीत धाम की पहचान कराई।

Nijanand App

पेहेरयो बागो रे बांधी कमर, अस्व उजले भए अस्वार।
होसी बड़ा मेला बरस एके, साथ होत सबे तैयार।। १० ।।

बुधजी जागृत बुद्धि का निष्कलंक बागा पहनकर जाति-पाति के भेद को छोड़कर ज्ञान के संशय रहित तन रूपी घोड़े पर सवार हुए। आखिरत में सुन्दरसाथ का बड़ा मेला होगा। इस मेले की तैयारी सुन्दरसाथ ने एक वर्ष से (मेड़ते से) शुरू कर दी है।

।। प्रकरण ।। ५३ ।। चौपाई ।। ५६५ ।।

राग श्री

हो साथ जी वेगे ने वेगे, वेगे ने मिलो रे सैयों समें रास को।। टेक ।।
कारज कारन की बात अति बड़ी, याको क्यों कहिए अवतार।
रे साथ जी हुई अखंड निध पांचों भेली, कियो सो बड़ो विस्तार।। १ ।।

हे साथजी! जल्दी-जल्दी आकर मिलें। जागनी रास का समय आ गया है। यह तो कार्य-कारण की बात है। पारब्रह्म आए हैं। अब इनको अवतार कैसे कहा जाए, क्योंकि इनके अन्दर पांचों अखण्ड न्यामतें इकट्ठी हुई हैं जिनकी लीला का बड़ा विस्तार है।

धनी मैं अरधांग अछर मुझ माहीं, बुध जी बोले सो कई प्रकार।
हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेहेदी सिर मुद्दार।। २ ।।

हे धनी! मैं आपकी अंगना हूं। अक्षर ब्रह्म भी मेड़ता से मेरे अन्दर बैठ गए हैं। इस तरह से उनकी जागृत बुद्धि हर प्रकार के भेद खोल रही है। श्री राजजी की पांच शक्तियां-हुकम, जोश, अक्षर, रूह-अल्लाह और जागृत बुद्धि सभी इन इमाम मेंहदी के अन्दर विराजमान हैं। इनके हाथ से कजा होगी।

अंग समागम धनी के, हिरदे लियो सो सब विचार।
साके सोले तोड़ी गुझ रहे, या दिन से कियो सो प्रगट पसार।। ३ ।।

इन पांचों शक्ति का मिलाप इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के अन्दर हो गया है। इसको अब तक विचार कर हृदय में बिठा लेना जो शालिवाहन के सोलह सौ शाका (१७३५) तक छिपे रहे। अब सम्वत् १७३५ से जाहिर हो गए।

आई नूरबुध वैराट माहीं, विस्व करी सो निरविकार।
छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगें गाऐं सो मंगल चार।। ४ ।।

अब अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि (परा शक्ति) संसार में आई जिसने संसार के सब धर्मों के झगड़े मिटा दिए। अब सब नर-नारी एक साथ मिलकर आनन्द में मंगल गीत गाएंगे।

काटे सो आउध असुरों के, पाड़ी पापीड़ा के सिर पर प्रहार।
इने दुख दिए साध संत को, तो सेहेता है सिर पर मार।। ५ ।।

मुसलमानों की शरीयत रूपी हथियारों को नष्ट किया और पापी कलियुग के सिर पर जागृत बुद्धि ने चोट मारी। जिस कलियुग ने साधु-सन्तों को दुःखी कर रखा था, उस कलियुग को अब सिर पर मार सहन करनी पड़ रही है।

Nijanand App

पेहेरयो बागो रे बांधी कमर, अस्व उजले भए अस्वार।
होसी बड़ा मेला बरस एके, साथ होत सबे तैयार।। १० ।।

बुधजी जागृत बुद्धि का निष्कलंक बागा पहनकर जाति-पाति के भेद को छोड़कर ज्ञान के संशय रहित तन रूपी घोड़े पर सवार हुए। आखिरत में सुन्दरसाथ का बड़ा मेला होगा। इस मेले की तैयारी सुन्दरसाथ ने एक वर्ष से (मेड़ते से) शुरू कर दी है।

|| प्रकरण || ५३ || चौपाई || ५६५ ||

राग श्री

हो साथ जी वेगे ने वेगे, वेगे ने मिलो रे सैयों समें रास को।। टेक ।।
कारज कारन की बात अति बड़ी, याको क्यों कहिए अवतार।
रे साथ जी हुई अखंड निध पांचों भेली, कियो सो बड़ो विस्तार।। १ ।।

हे साथजी! जल्दी-जल्दी आकर मिलें। जागनी रास का समय आ गया है। यह तो कार्य-कारण की बात है। पारब्रह्म आए हैं। अब इनको अवतार कैसे कहा जाए, क्योंकि इनके अन्दर पांचों अखण्ड न्यामतें इकट्ठी हुई हैं जिनकी लीला का बड़ा विस्तार है।

धनी मैं अरधांग अछर मुझ माहीं, बुध जी बोले सो कई प्रकार।
हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेंहेदी सिर मुद्दार।। २ ।।

हे धनी! मैं आपकी अंगना हूं। अक्षर ब्रह्म भी मेड़ता से मेरे अन्दर बैठ गए हैं। इस तरह से उनकी जागृत बुद्धि हर प्रकार के भेद खोल रही है। श्री राजजी की पांच शक्तियां-हुकम, जोश, अक्षर, रूह-अल्लाह और जागृत बुद्धि सभी इन इमाम मेंहदी के अन्दर विराजमान हैं। इनके हाथ से कजा होगी।

अंग समागम धनी के, हिरदे लियो सो सब विचार।
साके सोले तोड़ी गुझ रहे, या दिन से कियो सो प्रगट पसार।। ३ ।।

इन पांचों शक्ति का मिलाप इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के अन्दर हो गया है। इसको अब तक विचार कर हृदय में बिठा लेना जो शालिवाहन के सोलह सौ शाका (१७३५) तक छिपे रहे। अब सम्वत् १७३५ से जाहिर हो गए।

आई नूरबुध वैराट माहीं, विश्व करी सो निरविकार।
छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगें गाऐं सो मंगल चार।। ४ ।।

अब अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि (परा शक्ति) संसार में आई जिसने संसार के सब धर्मों के झगड़े मिटा दिए। अब सब नर-नारी एक साथ मिलकर आनन्द में मंगल गीत गाएंगे।

काटे सो आउध असुरों के, पाड़ी पापीड़ा के सिर पर प्रहार।
इने दुख दिए साध संत को, तो सेहेता है सिर पर मार।। ५ ।।

मुसलमानों की शरीयत रूपी हथियारों को नष्ट किया और पापी कलियुग के सिर पर जागृत बुद्धि ने चोट मारी। जिस कलियुग ने साधु-सन्तों को दुःखी कर रखा था, उस कलियुग को अब सिर पर मार सहन करनी पड़ रही है।

Nijanand App

रुंधी रुदे त्रिगुन त्रैलोकी, बैठा था करके अंधार।
अब प्रगटी जोत तलेलागी आकासों, उड़ाए दियो जो थो धुसार।। ६ ।।

इस कलियुग ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश जो तीन लोक के मालिक हैं, के हृदय में बैठकर उन्हें अन्धा बना रखा था, अब जागृत बुद्धि का प्रकाश पाताल से बैकुण्ठ तक फैल गया और सबकी अज्ञानता रूपी धुन्ध को समाप्त कर दिया।

जुद्ध दारुण अति जोर हुआ, तिमर घोर झुंझार।
प्रकासवान खांडा धार बुधें, निरमल कियो संसार।। ७ ।।

बुधजी से कलियुग की अज्ञानता में डूबे धर्माचार्यों ने बड़ी जोरदार लड़ाई की। बुधजी ने जागृत बुद्धि की तीखी तारतम रूपी ज्ञान की तलवार से सारे संसार की अज्ञानता को हटाकर निर्मल कर दिया।

पड़या पड़छंदा पाताल आकासें, धरती धम धमकार।
खल भल हुआ लोक चौदे, करत कालिंगा को संघार।। ८ ।।

बुधजी के एक पैर की ठोकर से पाताल से आकाश तक की धरती हिल गई, अर्थात् सभी के अहंकार टूट गए। चौदह लोकों के संसार में कलियुग को मार देने से खलबली मच गई।

घर घर उछव बाजे रस बाजे, चोहोटे चौवटे थेई थेईकार।
पसु पंखी साधू कोई न दुखी, सुखे खेलें चरें चुगें करार।। ९ ।।

अब धर्मों के झगड़े समाप्त होने से घर-घर में उत्सव और आनन्द मनाए जा रहे हैं और धर्म स्थानों पर सभी आनन्द से नाच रहे हैं। अब कोई महात्मा, पशु या पक्षी दुःखी नहीं हैं। सब आपस में मिलकर भोजन करते हैं और आराम से रहते हैं।

सत बरत्यो त्रिगुन त्रैलोकी, असत न रही लगार।
काटी करम फांसी दुनियां की, पीछे निरमल किए सिरदार।। १० ।।

इस सत का फैलाव ब्रह्मा, विष्णु और महादेव तथा त्रिलोक तक हो गया है और अब अज्ञानता का नामोनिशान नहीं रहा। बुधजी ने सभी को आवागमन की कर्म की फांसी से छुड़ा दिया और इसके बाद त्रिदेव को भी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से निर्मल करके अखण्ड कर दिया।

राई गौरी सावित्री जो कोई सती, सब धवल गावें नर नार।
पुरुख दूजा कोई काहू न कहावे, सबों भजिया कर भरतार।। ११ ।।

अब लक्ष्मी, पार्वती, सावित्री और जो कोई सती स्त्रियां हैं, स्वतन्त्रता से मंगल गीत गा रही हैं। अब सब पारब्रह्म को ही अपना स्वामी मानकर भजने लगे और अब इनके बगैर और कोई पुरुष कहलाने की पात्रता नहीं रखता, क्योंकि सारे जगत का मालिक एक ही पुरुष है।

एक सृष्ट धनी भजन एकै, एक गान एक आहार।
छोड़ के वैर मिले सब प्यार सों, भया सकल में जय जयकार।। १२ ।।

अब सारी सृष्टि का धनी एक प्राणनाथ और उसी एक की ही भक्ति होने लगी। सबका खान, पान और गान एक हो गया। आपस का वैर छोड़ कर सब प्राणनाथजी की जय-जयकार करने लगे।

मिलके साथ आवे दौड़ता, मिने सकुंडल सकुमार।
निजधाम सें आई सखियां, जुथ चालीस सहस्त्र बार।। १३ ।।

अब परमधाम से आई चालीस जुत्थ की बारह हजार सखियां शाकुण्डल और शाकुमार के साथ मिलकर दौड़ती हुई आएंगी।

Nijanand App

खेलें मिल के रास जागनी, भेलें इहां से चौबीस हजार।
करसी लीला बरस दस तोड़ी, हांस विलास आनन्द अपार।। १४ ।।

इन बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों के साथ चौबीस हजार ईश्वरीसृष्टि भी मिलकर जागनी रास खेलेंगी। यह हांस, विलास और बेशुमार आनन्द की लीला दस वर्ष तक होगी जिससे मोमिनों को बेशुमार आनन्द मिलेगा)।

बृजलीला लीला रास मांहें, हम खेले जान के जार।
जागनी लीला जाग पेहेचान, पिउ सों जान विलसे करतार।। १५ ।।

बृज और रास में हमने अपने श्री प्राणनाथजी को यार समझकर लीला की थी। इस जागनी के ब्रह्माण्ड में हमने तारतम वाणी से श्री प्राणनाथजी की पहचान करके अपने धनी से विलास का आनन्द लिया।

सब्दातीत निध ल्याए सब्द में, मेट्यो सबन को अंधकार।
तीसें सृष्ट विष्णु सौ बरसें, प्रेमें पीवेगा सब्दों का सार।। १६ ।।

सारे संसार के अज्ञानता के अन्धकार को मिटाने के लिए शब्दों से परे परमधाम की न्यामत को शब्दों में वर्णन किया जिससे अगले तीस वर्ष अर्थात् सम्वत् १७७५ तक ईश्वरीसृष्टि को ज्ञान मिलेगा। जीवसृष्टि जो भगवान विष्णु की है, उसको भी सम्वत् १७४५ से १८४५ तक वाणी और परमधाम की प्रेममयी लीला का सुख होगा।

विष्णु को पोहोंचाए ठौर अछर हिरदे, बुध जी देएंगे खोल के द्वार।
अखंड ब्रह्मांड बरस पचास पीछे, रहेसी हिरदे में खुमार।। १७ ।।

जीवसृष्टि की जागनी के बाद बुधजी भगवान विष्णु को अक्षर के हृदय में अखण्ड कर देंगे और आठ बहिश्तों के दरवाजे खोल देंगे। इसके पचास वर्ष बाद अर्थात् सम्वत् १८९५ तक अक्षर के हृदय में खुमारी रहेगी।

किया जमा सब सब्दों का, धोए हाथ और हथियार।
होसी नेहेचल सुख चौदे लोकों, हम देखे खेल कारन इन बार।। १८ ।।

बुधजी ने सारे धर्मग्रन्थों के सार को बता दिया और सब रहस्य खोल दिए (यही हाथ और हथियार धोना है)। सभी काम पूरा कर दिया। अब उसके बाद चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे, क्योंकि इस बार हमने इस खेल को देखा है।

महामत जागसी साथ जी भेले, जहां बैठे मिने दरबार।
हम उठ के आनन्द करसी झीलना, हंस हंस करसी सिनगार।। १९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सब सुन्दरसाथ निज दरबार (मूल मिलावा परमधाम) में बैठे हैं और एक साथ जगेंगे। जगने के बाद हम सब परमधाम में झीलना और सिनगार की लीला करेंगे।

तीन ब्रह्मांड लीला तीन अवस्था, खिन में देखे खेले संग आधार।
धनी मैं अरधांग साथ अंग मेरा, इन घर सदा हम नित विहार।। २० ।।

इस तरह से हमने तीन ब्रह्माण्डों में (बाल, किशोर और बुढ़ापे की) धनी के साथ एक क्षण में लीला खेली और देखी। अब समझ में आया कि मैं धनी की अंगना हूं और सुन्दरसाथ मेरे अंग हैं। हम सदा ही अपने घर में अखण्ड और आनन्द की लीला करते हैं।

|| प्रकरण || ५४ || चौपाई || ५८५ ||

Nijanand App

राग श्री धवल

आए आगम बानी इत मिली, विस्व मुख करत बखान।
कौल सबन के पूरन भए, आए सो पोहोंचे निसान।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सारे संसार के ग्रन्थ जिसके आने की भविष्यवाणी करते थे, उन सबकी वाणी यहां आकर सत (सच) हो गई तथा सबके बताए हुए निशान भी जाहिर हो गए।

चेतो सबे सत वादियो, सुनियो सो सतगुर मुख बान।
धनी मेरा प्रभु विस्व का, प्रगटिया परवान।।२।।

हे सब धर्मों के ज्ञानियो! सत (पारब्रह्म) का ज्ञान देने वाले सतगुरु आ गए हैं। उनकी वाणी को सुनो। वह मेरे तो धनी हैं। संसार के प्रभु हैं। वह प्रगट हो गए हैं।

आगमी सब खड़े हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप।
आए धनी मेले मिने, प्रगटी है सत जोत।।३।।

भविष्यवाणी कहने वाले सामने आकर खड़े हो गए और कह रहे हैं कि वह पारब्रह्म जो अब तक छिपे थे, अर्थात् जिन्हें कोई जानता नहीं था, वह अब हरिद्वार के मेले में आकर जाहिर हो गए और परमधाम का अखण्ड ज्ञान दे रहे हैं।

पेहेले मंडल में मांगी मुझे, सो आए ब्याही इत।
कौल किया लिख्या सास्त्रों में, सो आए पोहोंची सरत।।४।।

इस जागनी के ब्रह्माण्ड में धनी देवचन्द्रजी के तन में लीला करते हुए पहले ही मुझसे जागनी का काम कराने के लिए श्री देवचन्द्रजी (श्यामाजी) ने मांग लिया था कि जागनी का काम इन्द्रावती के तन से होना है, इसलिए महामति जी कहते हैं कि पहली बार बृज में श्यामाजी (राधिकाजी) से मंगनी हुई थी, शादी नहीं हुई, क्योंकि उनको जागनी की शोभा नहीं मिलनी थी। इसका मुद्दा (श्रेय) दूसरे तन श्री इन्द्रावतीजी को मिलना था, इसलिए ठीक समय पर राजजी महाराज ने पूर्ण स्वरूप में आकर श्री इन्द्रावतीजी से शादी कर ली और शास्त्रों की भविष्यवाणी को सत कर दिया।

मैं जो आई ब्याहन दुलहे को, दुलहा आए मुझ कारन।
बांधे पालवसों पालव, पाट बैठे दुलहा दुलहिन।।५।।

मैं अपने प्रीतम को खोजने आई थी और हमारे धनी परमधाम से हमें लेने के लिए आए। इस ब्रह्माण्ड में मेरे हृदय रूपी पाटला (तख्त) पर विराजमान हुए और परमधाम की निसबत से मेरी आत्मा की श्री राजजी से मूल सम्बन्ध की गांठ बंध गई।

सत पर सत दोऊ पर्वत, तोरन बांधे हैं बंध।
बिन थलिऐ विवाह हुआ, हाथों हाथ जोड़े मूल सनमंध।।६।।

अक्षरधाम और अक्षरातीत धाम दोनों के बीच में तोरण बंध बांधा गया अर्थात् इन दोनों धामों की सुध तारतम वाणी ने दी। दुल्हा दुल्हन का मूल सम्बन्ध होने से बिना जाहेरी जमीन के मेरे हृदय में हस्त मिलाकर शादी हुई।

मंडल अखंड में मांडवो, चौरी थंभ रोपे हैं चार।
सो थंभ थापे थिर कर, कहूं सो तिन को प्रकार।।७।।

बेहद भूमिका में शादी का मण्डप चार स्तम्भों (खम्भों) पर बांधा गया। यह चार थंभ अखण्ड हैं। इनकी हकीकत बताती हूं।

Nijanand App

एक बृज दूजो रास को, दूजे दोए इन वैराट।
चारों थंभों चौरी रची, रच्यो सो नेहेचल ठाट।। ८ ।।

एक स्तम्भ बृज का, दूसरा रास का है। यह अखण्ड में हैं। तीसरा स्तम्भ श्री देवचन्द्रजी की लीला का और चौथा स्तम्भ श्री प्राणनाथजी की लीला का है। इन चारों स्तम्भों के बीच बेदी बनी है। यह चारों लीलाएं अखण्ड हैं।

एक बेर एक मांडवे, मौर बांधियो सीस।
ब्याही बारे हजार को, और हजार चौबीस।। ९ ।।

इस मण्डप के अन्दर धाम दूल्हा ने बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों को और चौबीस हजार ईश्वरीसृष्टियों को संसार से निकालकर अपने घर ले जाने के वास्ते सिर पर दूल्हे के रूप का मुकुट बांधा।

तीन फेरे दुलहे पीछे फिरी, चौथे फेरे आगल भई।
अब ए लीला सब गावसी, सब मिल करि है सही।। १० ।।

ब्रज, रास और नौतनपुरी में मैं धनी के पीछे रही। अब चौथी बार धनी स्वयं मेरे अन्दर आकर विराजमान हो गए और मैं प्राणनाथ बनकर आगे हो गई। अब इस लीला का सारे जगत को ज्ञान हो जाएगा और सब मेरे धनी की महिमा को गाएंगे।

और कागद सब उड़ गए, उड़यो सबों को अग्यान।
पसरयो प्रकास जो पिउ को, ब्रह्म सृष्ट प्रगट भई पेहेचान।। ११ ।।

संसार के सभी धर्म ग्रन्थों के अटकल का ज्ञान समाप्त हो गया। बड़े-बड़े धर्माचार्यों के संशय मिट गए। श्री प्राणनाथजी की और ब्रह्मसृष्टि की पहचान सबको हो गई।

ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देस।
छत्रपति नमे नेहसों, राए राने पृथी के नरेस।। १२ ।।

जगह-जगह पर ज्ञान देने के लिए प्राणनाथजी के नाम के मन्दिरों की स्थापना हुई। छत्तीस हजार के मेले का स्थान पद्मावतीपुरी 'धाम' बनाया। यहां पर पृथ्वी के राजा और राणा, अर्थात् त्रिदेव और देवी-देवता आकर प्रेम से नमन करेंगे।

बैठे सिंघासन सिर छत्र, वैराट बरती है आन।
मुकट मनी ढोलें चंवर, नवखंड घुरे हैं निसान।। १३ ।।

पद्मावतीपुरी धाम में श्री प्राणनाथजी महाराज सिंहासन पर विराजमान हुए। उनके सिर पर छत्र शोभायमान है। चौदह लोकों के वैराट में इनका हुकम चलेगा। राजा-महाराजा इनको चंवर ढुलाते हैं और नौ खण्डों में जाहिर होने की नौबत (नगाड़ा) बज रही है।

जोत जाग्रत बुध जोर हुई, सत बानी कियो है विस्तार।
कालिंगा कुली मारिया, सत सुख बरत्यो संसार।। १४ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी के अखण्ड ज्ञान का विस्तार होने लगा। कलियुग के झूठे ज्ञान को समाप्त कर संसार को अखण्ड घर की पहचान कराई।

प्रहलाद युधिष्ठिर वसुदेव, बलि रुकमांगद हरिचंद।
सगाल दधीच मोरध्वज, कसनी कर छूटे या फंद।। १५ ।।

प्रहलाद, युधिष्ठिर, वसुदेव, राजा बलि, रुक्मागंद, हरिश्चन्द्र, सगाल, दधीचि और मोरध्वज, आदि सभी कठोर कसनी कर बैकुण्ठ में बैठे राह देख रहे थे। वह भी अब आवागमन के चक्कर से छूटकर अखण्ड हो गए।

Nijanand App

सतवादी नाम केते लेऊं, कई हुए तरन तारन।
सत न छोड़्या कई दुख सहे, सो या दिन के कारन।। १६ ।।

सत की राह पर चलने वालों के कितने नाम गिनाएं। बहुतेरों ने इस संसार से निकलने के प्रयत्न किए हैं। इन्होंने इस दिन के लिए बेहद दुःख सहन किए और सत की राह को नहीं छोड़ा।

जोगारंभ कर देह रखी, नवनाथ जाए बसे बन।
सिध चौरासी और कई जोगी, सो भी कारन या दिन।। १७ ।।

कईयों ने योग साधना कर शारीरिक कष्ट उठाए। नवनाथ वन में जाकर बसे। चौरासी सिद्धों और कई योगियों ने, इसी दिन के लिए कि पारब्रह्म आएंगे, कष्ट उठाए।

असुर केते कहूं पीर कई, केते कहूं पैगंमर।
आए मिले इत सब कोई, जेता कोई भेख धर।। १८ ।।

मुसलमानों में कई पीर-पैगम्बर हुए और कई भेष वाले यहां आकर मिले।

बरना बरन वादे लड़ते, क्रोध न छोड़ता कोए।
चाल असत की चलते, हिंदू मुसलमान दोए।। १९ ।।

चारों वर्णों में आपस में वाद-विवाद से लड़ाई होती थी और कोई भी अपना विरोध नहीं छोड़ता था। हिन्दू या मुसलमान दोनों झूठे रास्ते पर चलते रहे।

बाघ बकरी एक संग चरें, कोई न करे किसी सों वैर।
पसु पंखी सुखे चरें चुगें, छूट गयो सब को जेहेर।। २० ।।

अब प्राणनाथजी के आने से हिन्दू और मुसलमान बाघ, बकरी, पशु-पक्षी आपस का वैर भूलकर एक साथ मिलकर खाने-पीने लगे।

सनमुख सब एक रस भए, भाग्यो सो विश्व को क्रोध।
घर घर आनन्द उछव, कुली पोहोरो काढ़्यो सबको क्रोध।। २१ ।।

अब सारे विश्व का विरोध समाप्त हो गया। सब एक रस होकर आए। सामने मिलने लगे। कलियुग के प्रभाव का सबका क्रोध शान्त हो गया। घर-घर में आनन्द और उत्सव मनाए जाने लगे।

धनी आए मेरे लाड़ पालने, वतन पार के पार।
कारज कारन महाकारन से, न्यारी हों इन पिउकी नार।। २२ ।।

मेरे धनी परमधाम से मेरी चाहना पूरी करने आए हैं। मैं अपने धनी (प्राणनाथ) की अंगना बनकर महाकारण (परमधाम) से ब्रह्मसृष्टि और अक्षर के खेल को देखने की चाहना को पूर्ण करने के लिए आई हूं।

ए बात पोहोंची जाए वैकुंठ, बुधजीऐं उड़ायो उनमान।
सुक सिव सन ब्रह्मा नमे, नमे विष्णु लखमी नारायन।। २३ ।।

श्री प्राणनाथजी के प्रगट होने की बात बैकुण्ठनाथ भगवान विष्णु को मिली। जागृत बुद्धि ने सभी के अटकल वाले ज्ञान को समाप्त कर दिया। अब शुकदेवजी, शिवजी, सनकादिक, ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी और नारायण सभी आकर प्राणनाथजी को प्रणाम करते हैं।

मुक्त दई सब जीवों को, पावें पसु पंखी नर नार।
होसी वैराट ए धंन धंन, सुख आनंद अखंड अपार।। २४ ।।

पशु-पक्षी, नर-नारी सम्पूर्ण वैराट के जीवों को मुक्ति दी। सब वैराट अखण्ड सुख को प्राप्त करेगा, इसलिए धन्य-धन्य होगा।

Nijanand App

ए नेक करी मैं इसारत, याको आगे होसी बड़ो विस्तार।
थोड़े से दिन में देखोगे, वरतसी जय जयकार।। २५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने इस बात का थोड़ा इशारा किया है। आगे चलकर इसका बहुत बड़ा विस्तार होगा। अब थोड़े ही दिन में श्री प्राणनाथजी के नाम की जय-जयकार होगी।

साथ सुनो एक वचन, आवे बाई सकुंडल सकुमार।
रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार।। २६ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! मेरी एक बात सुनो। शाकुण्डल और शाकुमार बाई जब आएंगी तो जागनी रास का खेल खेलकर श्री प्राणनाथजी के साथ घर (परमधाम) चलेंगे।

कहे महामत ए सो खेल, जो तुम मांग्या था चित दे।
देख खेल हंस चलसी, घर बातां करसी ए।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! यह वही खेल है जिसे देखने की चाहना तुमने परमधाम में की थी। अब इस खेल को देखकर हंसते हुए घर चलेंगे और बातें करेंगे।

।। प्रकरण ।। ५५ ।। चौपाई ।। ६१२ ।।

राग श्री बसंत

आरती

भई नई रे नवों खंडों आरती, श्री विजिया अभिनंद की आरती।
प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती।। १ ।।

सारे संसार को विजय कर (जीतकर) आनन्द देने वाले श्री प्राणनाथजी प्रगट हो गए हैं और सब सखियां प्रेम में मग्न होकर धनी के चरणों में समर्पित होकर आरती करती हैं। इस नई आरती की आवाज नौ खण्डों में गूंज रही है।

दुष्टाई सबों की संघारती, सुख अखंड आनन्द विस्तारती।
जन सचराचर तारती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। २ ।।

धर्मों के अगुवे त्रिदेव, देवी-देवता, आदि जो संसार को भटका रहे थे, उनकी दुष्टता मिटाकर अखण्ड सुख का आनन्द, चर और अचर सभी को दे रहे हैं और इस तरह से नई आरती की नौ खण्डों में ध्वनि गूंज रही है।

सैयां सब सिनगार साजती, मिने सूरत पिया की विराजती।
ए सोभा इतहीं छाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ३ ।।

सब सखियां पारलौकिक गुणों का सिनगार सजाती हैं। अपने हृदय में पिया के स्वरूप को बिठाती हैं और सुन्दर शोभा होती है। इस तरह से नौ खण्डों में इस नई आरती की गूंज हो रही है।

झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्मांड में नौबत गाजती।
कलिजुग सैन्या सुन भाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ४ ।।

अनगिनत झालर (घण्टे) तथा बाजे बज रहे हैं। पूरे ब्रह्माण्ड में नौबत की ध्वनि गरज रही है। जिसकी आवाज से कलियुग की सेना काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार सब भागते हैं। इस तरह की नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

Nijanand App

ए नेक करी मैं इसारत, याको आगे होसी बड़ो विस्तार।
थोड़े से दिन में देखोगे, वरतसी जय जयकार।। २५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने इस बात का थोड़ा इशारा किया है। आगे चलकर इसका बहुत बड़ा विस्तार होगा। अब थोड़े ही दिन में श्री प्राणनाथजी के नाम की जय-जयकार होगी।

साथ सुनो एक वचन, आवे बाई सकुंडल सकुमार।
रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार।। २६ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! मेरी एक बात सुनो। शाकुण्डल और शाकुमार बाई जब आएंगी तो जागनी रास का खेल खेलकर श्री प्राणनाथजी के साथ घर (परमधाम) चलेंगे।

कहे महामत ए सो खेल, जो तुम मांग्या था चित दे।
देख खेल हंस चलसी, घर बातां करसी ए।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! यह वही खेल है जिसे देखने की चाहना तुमने परमधाम में की थी। अब इस खेल को देखकर हंसते हुए घर चलेंगे और बातें करेंगे।

।। प्रकरण ।। ५५ ।। चौपाई ।। ६१२ ।।

राग श्री बसंत

आरती

भई नई रे नवों खंडों आरती, श्री विजिया अभिनंद की आरती।
प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती।। १ ।।

सारे संसार को विजय कर (जीतकर) आनन्द देने वाले श्री प्राणनाथजी प्रगट हो गए हैं और सब सखियां प्रेम में मग्न होकर धनी के चरणों में समर्पित होकर आरती करती हैं। इस नई आरती की आवाज नौ खण्डों में गूंज रही है।

दुष्टाई सबों की संघारती, सुख अखंड आनन्द विस्तारती।
जन सचराचर तारती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। २ ।।

धर्मों के अगुवे त्रिदेव, देवी-देवता, आदि जो संसार को भटका रहे थे, उनकी दुष्टता मिटाकर अखण्ड सुख का आनन्द, चर और अचर सभी को दे रहे हैं और इस तरह से नई आरती की नौ खण्डों में ध्वनि गूंज रही है।

सैयां सब सिनगार साजती, मिने सूरत पिया की विराजती।
ए सोभा इतहीं छाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ३ ।।

सब सखियां पारलौकिक गुणों का सिनगार सजाती हैं। अपने हृदय में पिया के स्वरूप को बिठाती हैं और सुन्दर शोभा होती है। इस तरह से नौ खण्डों में इस नई आरती की गूंज हो रही है।

झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्मांड में नौबत गाजती।
कलिजुग सैन्या सुन भाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ४ ।।

अनगिनत झालर (घण्टे) तथा बाजे बज रहे हैं। पूरे ब्रह्माण्ड में नौबत की ध्वनि गरज रही है। जिसकी आवाज से कलियुग की सेना काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार सब भागते हैं। इस तरह की नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

Nijanand App

सप्तधात सुन्य मण्डल थाल, निरंजन जोत भई उजाल।
झलहलिया इत नूरजमाल, भई नई रे नवों खंडों आरती।।५ ।।

जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश, मन और बुद्धि की सात धातुओं से बना यह शून्य मण्डल रूपी थाल है जिसमें आदि नारायण की ज्योति जल रही है। ऐसे इन्द्रावती के तन में अक्षरातीत (नूर जमाल) शोभायमान हैं। जिनकी नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनी के करम जाल।
चेतन व्यापी भए निहाल, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ६ ।।

पारब्रह्म प्रगट हुए हैं और उनकी मेहर (कृपा) का विस्तार फैल रहा है। इससे दुनियां के कर्मकाण्डों का जाल समाप्त हो गया है। संसार के जीव जिनके अन्दर आदि नारायण व्यापक हैं वह भी खुश हो गए हैं। ऐसी नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैल रही है।

सैन्या सहित आए त्रिपुरार, आए ब्रह्मा पढ़त मुख वेद चार।
विष्णु बोलत बानी जय जय कार, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ७ ।।

श्री प्राणनाथजी के सामने देवी-देवताओं की मण्डली सहित ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आए। ब्रह्माजी अपने चार मुखों से चार वेदों का उच्चारण कर रहे हैं तथा भगवान विष्णु सबके अन्दर बैठकर जय-जयकार बोल रहे हैं। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैल रही है।

आए धरमराए और इंद्र वरुन, नारद मुन गंधर्व चौदे भवन।
सुर असुरों सबों लई सरन, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ८ ।।

धर्मराज, इन्द्र, वरुण, नारदमुनि, गंधर्व, आदि चौदह भवन में गीत गाने वाले, हिन्दू और मुसलमान, सुर और असुर सभी ने श्री प्राणनाथजी की शरण ली है। इस तरह से एक नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैल रही है।

आए सनकादिक चारों थंभ, लिए खड़े संग विष्णु ब्रह्मांड।
जो ब्रह्म अनभवी भए अखंड, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ९ ।।

ज्ञान के चारों स्तम्भ सनकादिक ऋषि आए हैं। शेषशायी नारायण जिन्होंने ब्रह्माण्ड को सिर पर धारण कर रखा है और जिनको पारब्रह्म की पहचान हो गई है, वह भी शरण में आए। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैली।

जिन हद कर दई नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत।
यों आए सुक व्यास बड़ी मत, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १० ।।

जिन्होंने नवधा भक्ति को हटाकर प्रेम लक्षणा भक्ति का ज्ञान दिया, ऐसी बड़ी मत वाले शुकदेव और व्यासजी भी शरण में आए। इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैली।

आए नवनाथ चौरासी सिध, बरस्या नूर सकल या बिध।
इत आए बुधजी ऐसी किध, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ११ ।।

नौ नाथ और चौरासी सिद्ध आए। चारों तरफ जागृत बुद्धि के ज्ञान की वर्षा हो रही है। बुधजी (श्री प्राणनाथजी) ने आकर ऐसी कृपा की, जिनकी इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

Nijanand App

आए चारों संप्रदा के साधूजन, चार आश्रम और चार वरन।
चारों खूटों के आए गावते गुन, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १२ ।।

चारों सम्प्रदाय (रामानुज, नीमानुज, विष्णु श्याम और माधवाचार्य) के साधुजन आए। चारों आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) के तथा चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य) के लोग चारों खूटों से बुधजी श्री प्राणनाथजी के गुण गाते हुए आए और इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हुई।

आए गछ चौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती।
आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १३ ।।

जैन मुनि, चौरासी सिद्ध (अर्हन्त) दत्तात्रेय तथा दशनामी, तीर्थ, आश्रम, वन, पर्वत, सागर, पुरी, भारती और सरस्वती के संन्यासी एवं महन्त आए। कर्म और उपासना करने वाले तथा वेदान्ती भी आए। इस तरह से यह नई आरती नौ खण्डों में गूंज रही है।

आए खट दरसन खट सास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथर वेदी।
आए सकल कैदी और बे कैदी, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १४ ।।

षट दर्शन (न्यायिक, योगशास्त्र, सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त) के छः आचार्य (गौतम, पातंजलि, कपिल, कणाद, जैनमुनि और व्यास) आए। अथर्ववेद के मानने वाले आए और मुसलमानों के बहत्तर फिरके आए। रीति-रिवाज मानने वाले और न मानने वाले सभी आए। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैली।

बुध जी की जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकी को तिमर कियो नास।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १५ ।।

श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि के ज्ञान का प्रकाश फैला, जिससे चौदह लोकों का अन्धकार मिटा। अब सब अखण्ड लीला (जागनी रास लीला) का आनन्द ले रहे हैं। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत।
सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १६ ।।

श्री प्राणनाथजी के हुकम से ही महामतिजी ने असत (अज्ञान) को उड़ाकर सत (ज्ञान) की स्थापना की। यह दुनियां के सभी ज्ञान के ऊपर कलश के समान हो गया। इस तरह से नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हुई।

|| प्रकरण || ५६ || चौपाई || ६२८ ||

भोग-राग श्री काफी

कृपा निध सुन्दरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम।। १ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) के धनी श्री राजजी महाराज कृपा के सागर, धाम के धनी संसार में आए, इससे अपार सुख हुआ।

Nijanand App

आए चारों संप्रदा के साधूजन, चार आश्रम और चार वरन।
चारों खूटों के आए गावते गुन, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १२ ।।

चारों सम्प्रदाय (रामानुज, नीमानुज, विष्णु श्याम और माधवाचार्य) के साधुजन आए। चारों आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) के तथा चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य) के लोग चारों खूटों से बुधजी श्री प्राणनाथजी के गुण गाते हुए आए और इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हुई।

आए गछ चौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती।
आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १३ ।।

जैन मुनि, चौरासी सिद्ध (अर्हन्त) दत्तात्रेय तथा दशनामी, तीर्थ, आश्रम, वन, पर्वत, सागर, पुरी, भारती और सरस्वती के संन्यासी एवं महन्त आए। कर्म और उपासना करने वाले तथा वेदान्ती भी आए। इस तरह से यह नई आरती नौ खण्डों में गूंज रही है।

आए खट दरसन खट सास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथर वेदी।
आए सकल कैदी और बे कैदी, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १४ ।।

षट दर्शन (न्यायिक, योगशास्त्र, सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त) के छः आचार्य (गौतम, पातंजलि, कपिल, कणाद, जैनमुनि और व्यास) आए। अथर्ववेद के मानने वाले आए और मुसलमानों के बहत्तर फिरके आए। रीति-रिवाज मानने वाले और न मानने वाले सभी आए। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैली।

बुध जी की जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकी को तिमर कियो नास।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १५ ।।

श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि के ज्ञान का प्रकाश फैला, जिससे चौदह लोकों का अन्धकार मिटा। अब सब अखण्ड लीला (जागनी रास लीला) का आनन्द ले रहे हैं। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत।
सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १६ ।।

श्री प्राणनाथजी के हुकम से ही महामतिजी ने असत (अज्ञान) को उड़ाकर सत (ज्ञान) की स्थापना की। यह दुनियां के सभी ज्ञान के ऊपर कलश के समान हो गया। इस तरह से नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हुई।

।। प्रकरण ।। ५६ ।। चौपाई ।। ६२८ ।।

भोग-राग श्री काफी

कृपा निध सुन्दरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम।। १ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) के धनी श्री राजजी महाराज कृपा के सागर, धाम के धनी संसार में आए, इससे अपार सुख हुआ।

Nijanand App

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार।
ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार।। २ ।।

सबके बीच पूर्ण ब्रह्म प्रगट हो गए हैं। ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि, और जीवसृष्टि! सब आकर मालिक श्री प्राणनाथजी के दर्शन करो।

नित नए उछव आनंद, होत किरंतन सार।
वैष्णव जो कोई खट दरसन, आए इष्ट आचार।। ३ ।।

यहां नित्य नए आनन्द, उत्सव, भजन, कीर्तन हो रहे हैं, इसलिए वैष्णव तथा षट दर्शन वालो! आओ, सबके इष्ट पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी आए हैं।

भोजन सर्वे भोग लगावत, पांच सात अंन पाक।
मेवा मिठाई अनेक अथाने, बिध बिध के बहु साक।। ४ ।।

यहां सब मिलकर कई प्रकार के पकवान, मेवा, मिठाई, तरह-तरह के अचार और शाक का भोग लगाकर भोजन करते हैं।

अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार।
प्रेम मगन होए गावें पिया जी के, धवल मंगल चार।। ५ ।।

अठारह वर्णों के नर-नारी सिनगार साजकर आए हैं। पियाजी के प्रेम में मगन होकर मंगल गीत गाते हैं।

कई गंधर्व गुन गावें बजावें, कई नट नाचन हार।
कई रिखि मुनी वेद पढ़त हैं, बरतत जय जयकार।। ६ ।।

कई गंधर्व (गाने वाले) गाते बजाते हैं। नट लोग नाच रहे हैं। ऋषि मुनि वेद पाठ करते हैं और चारों तरफ श्री प्राणनाथजी का जय-जयकार हो रहा है।

जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब।
बृज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब।। ७ ।।

जबसे यह माया का संसार बना है। यह लीला कभी नहीं हुई। बृज, रास और जागनी की लीला जो अब हुई है, वह पहले कभी नहीं हुई।

चारों तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार।
बाजे दुन्दुभि भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बे सुमार।। ८ ।।

चौदह लोकों में चारों तरफ पार की जानकारी सबको हो गई। सब धर्माचार्यों के झूठे अभिमान तोड़ करके सत की जीत के नगाड़े बज रहे हैं और बेशुमार अखण्ड सुख मिल रहा है।

जोत उद्योत कियो त्रिलाकी, उड़यो मोह तत्व अंधेर।
बरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो उलटो फेर।। ९ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान त्रिलोकी (तीनों लोकों) में फैला। मोहतत्व और अज्ञान के अंधेरे का परदा उड़ गया। अखण्ड घर परमधाम के ज्ञान की वर्षा हुई जिससे संसार की झूठों को पूजने की चाल बदल गई।

प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टी, और ब्रह्म वतन।
महामत इन प्रकास थें, अखंड किए सब जन।। १० ।।

पारब्रह्म, ब्रह्मसृष्टि और अखण्ड परमधाम जाहिर हो गए। श्री महामतिजी कहते हैं कि इन श्री प्राणनाथजी की कृपा से सब संसार के जीवों को अखण्ड मुक्ति मिली।

।। प्रकरण ।। ५७ ।। चौपाई ।। ६३८ ।।

Nijanand App

राग श्री कटको

राजाने मलोरे राणें राए तणों, धरम जाता रे कोई दौड़ो।
जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो।। १ ।।

हे भारतवर्ष के राजा राणाओ! इकट्ठे हो जाओ। तुम्हारा धर्म जा रहा है। कोई तो खड़े हो जाओ। हे योद्धाओ! तुम होश में आओ और आलस्य छोड़ो।

छूटत है रे खरग छत्रियों से, धरम जात हिंदुआन।
सत न छोड़ो रे सत वादियो, जोर बढ्यो तुरकान।। २ ।।

क्षत्रियों के हाथ से तलवार अर्थात् लड़ने की भावना गिर रही है और हिन्दुओं का धर्म समाप्त हो रहा है। सत के रास्ते पर चलने वाले हे हिन्दुओ! अपने धर्म को नहीं छोड़ना। मुसलमानों की शक्ति बहुत बढ़ गई है।

कुलिए छकाए रे दिलड़े जुदे किए, मोह अहं के मद माते।
असुर माते रे असुराई करें, तो भी न मिले रे धरम जाते।। ३ ।।

कलियुग ने तुम्हें मद और अहंकार के नशे में चूर-चूर कर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं। उधर मुसलमान लोग मस्ती में जुल्म कर रहे हैं। फिर भी तुम धर्म की खातिर इकट्ठे भी नहीं हो रहे हो।

त्रैलोकी में रे उत्तम खंड भरथ को, तामें उत्तम हिंदू धरम।
ताकी छत्रपतियों के सिर, आए रही इत सरम।। ४ ।।

त्रिलोकी में भरतखण्ड उत्तम है और भरतखण्ड में हिन्दू धर्म उत्तम है। अब इस हिन्दू धर्म की रक्षा करने का भार तुम राजाओं के ऊपर है।

पन ने धारी रे पन इत ले चढ़या, कोई उपज्यो असुर घर अंस।
जुध ने करनें उठया धरमसों, सब देखें खड़े राज बंस।। ५ ।।

मुसलमानों में कोई ऐसी महान आत्मा प्रगट हो गई है जिसको कुरान से यह पहचान हो गई है कि इमाम मेंहदी हिन्दुओं में प्रगट होने वाले हैं। उन्हें पाने के लिए ही प्रतिज्ञा कर वह हिन्दुओं पर जुल्म ढा रहा है। वह धर्म युद्ध करने के लिए तैयार खड़ा है और तुम सब हिन्दू राजा खड़े तमाशा देख रहे हो।

भरथ खण्ड रे हिंदू धरम जान के, मांगे विष्णु संग्राम अरथ।
फिरत आप रे ढिंढोरा पुकारता, है कोई देव रे समरथ।। ६ ।।

भरतखण्ड हिन्दुओं की भूमि है, इसलिए औरंगजेब इमाम मेंहदी की तलाश के लिए धर्म-युद्ध के लिए चारों तरफ ढिंढोरा पीटता है कि कोई हिन्दुओं में समर्थ देवता हो तो आगे आ जाए।

असुर सत रे धरम जुध मांगहीं, सुर केहेलाए जो न दीजे।
पूछो ने पंडितो रे जुध दिए बिना, धरम राज कैसे कहीजे।। ७ ।।

मुसलमान औरंगजेब हिन्दुओं से धर्म-युद्ध की मांग कर रहा है। हिन्दू कहलाकर भी सामने न आए तो अपने को धर्म रक्षक राजा कैसे कहलाओगे? जरा अपने राज गुरुओं से पूछो।

राज कुली रे रखन रजवट, जो न आया इन अवसर।
धरम जाते जो न दौड़िया, ताए सुर कहिए क्यों कर।। ८ ।।

राज कुल की रक्षा के लिए जो राजा इस अवसर पर नहीं आएगा और डूबते धर्म को नहीं बचाएगा, वह बहादुर कैसे कहलाएगा?

Nijanand App

वेद ने व्याकरणी रे पंडित पढ़वैयो, गछ दीन इष्ट आचार।
पीछे रे बल कब करोगे, होत है एकाकार।। ९ ।।

वेद तथा व्याकरण के पढ़ने वाले पंड़ितो तथा आचार, विचार, दीन (धर्म) के पालने वालो! कब अपनी ताकत दिखलाओगे? मुसलमान हिन्दुओं को मुसलमान बनाते जाते हैं।

सिध ने साधो रे संतो महंतो, वैष्णव भेख दरसन।
धरम उछेदे रे असुरें सबन के, पीछे परचा देओगे किस दिन।। १० ।।

सिद्ध, साधु, सन्त, महन्त, वैष्णव, दर्शन शास्त्र के ज्ञाता सभी का धर्म मुसलमान नष्ट कर रहे हैं। अपनी शक्ति किस दिन दिखलाओगे?

सुनियो पुकार रे स्यांने संत जनो, जो न दौड़या जाते सत।
गए ने अवसर पीछे कहा करोगे, कहां गई करामत।। ११ ।।

हे बड़े ज्ञानी सन्तो! मेरी आवाज को सुनो। धर्म नष्ट होते समय जो नहीं आया, तो पीछे उसकी करामात (शक्ति) किस काम आएगी?

लसकर असुरों का चहुं दिस फैलया, बाढ़यो अति विस्तार।
बन ने जंगल रे हिन्दू रहे पर्वतों, और कर लिए सब धुन्धुकार।। १२ ।।

मुसलमानों की सेना चारों तरफ फैल गई है। हिन्दू लोग जंगल और पहाड़ों में डर कर छिप गए हैं। चारों तरफ अन्धकार छा गया है।

हरिद्वार ढहाए रे उठाए तपसी तीर्थ, गौवध कैयों विघन।
ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर, पर कमर न बांधी रे किन।। १३ ।।

हरिद्वार में मन्दिर तोड़े जा रहे हैं। तपस्वियों के तीर्थ नष्ट हो रहे हैं। गौओं का वध किया जा रहा है। ऐसा बड़ा जुल्म जाहिर होने पर भी किसी ने भी लड़ने को कमर नहीं कसी।

सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुर की, जो दारुवाए उड़ावे दयोहर।
हिंदू नाम रे सैन्या तिनकी होए खड़ी, ऐसा कुलिएं किया रे केहेर।। १४ ।।

हिन्दू कहलाकर भी मुसलमानों की सेवा करते हैं। मन्दिरों को गोला बारूद से तुड़वाया जा रहा है। हिन्दुओं के बड़े-बड़े नामधारी योद्धा मुसलमानों की सेना में खड़े हैं। ऐसा इस कलियुग ने जुल्म ढाया है।

प्रभु प्रतिमां रे गज पांउ बांध के, घसीट के खंडित कराए।
फरस बंदी ताकी करके, तापर खलक चलाए।। १५ ।।

देवताओं की मूर्तियों को हाथी के पैर में बांध कर घसीटते हैं और तोड़कर सड़क पर नीचे डालते हैं। जनता के पैरों से रुंदवाते हैं।

असुरें लगाया रे हिंदुओं पर जजिया, वाको मिले नहीं खान पान।
जो गरीब न दे सके जजिया, ताए मार करे मुसलमान।। १६ ।।

औरंगजेब ने हिन्दुओं के नाम पर जजिया कर (हिन्दू होने का टैक्स) हिन्दुओं पर लगाया। जिनके पास खाने-पीने का भी साधन नहीं है और जो गरीब जजिया कर नहीं दे पाते, उसे मारते हैं और मुसलमान बना देते हैं।

Nijanand App

सास्त्रें आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार।
काटे दिन पापें लिख्या मांहें सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार।। १७ ।।

शास्त्रों में कलियुग की आयु चार लाख बत्तीस हजार वर्ष बताई गयी है जो पाप के कारण घट गई है। इसका शास्त्र विचारने से पता लगता है।

सोले सै लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैंतीस।
बैठाने साका विजिया अभिनन्दका, यों कहे सास्त्र और जोतीस।। १८ ।।

शाका शालिवाहन का सोलह सौ और विक्रम सम्वत् सत्रह सौ पैंतीस लग गया है। अब ज्योतिष और शास्त्रों के हिसाब से विजियाभिनन्द बुधजी का शाका शुरू हो गया है।

कलिजुगें चेहेन रे अंत के सब किए, लोक बतावें अजूं दूर अंत।
अर्थ अंदर का कोई न पावे, बारे अर्थ बाहेर के ले डूबत।। १९ ।।

कलियुग के समाप्त होने के सभी निशान प्रकट हो गए हैं। संसार के लोग कहते हैं कि अभी कलियुग का अन्त दूर है। यह बाहरी अर्थ लेकर डूब रहे हैं। अन्दर का अर्थ यह नहीं लेते।

बातने सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तरवार।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार।। २० ।।

इस बात को बुंदेला छत्रसाल ने सुना और धर्म-युद्ध के लिए तलवार लेकर आगे आए। सारी सेवा औरंगजेब से लड़ने की अपने सिर ले ली। श्री प्राणनाथजी ने राजतिलक करके उसे सेना का राजा बना दिया।

प्रगटे निसान रे धूमरकेतु खय मास, पर सुध न करे अजूं कोई इत।
बेगेने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे महामत।। २१ ।।

विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार के प्रगट होने का निशान धूमकेतु तारा जाहिर हो गया है। एक मास का क्षय भी हुआ है, परन्तु फिर भी कोई विचार नहीं कर रहा है। महामति जी पुकार कर कहते हैं, हे बुधजी! आप शीघ्र ही प्रगट होइए।

।। प्रकरण ।। ५८ ।। चौपाई ।। ६५९ ।।

राग श्री

ऐसा समे जान आए बुध जी, कर कोट सूर समसेर।
सुनते सोर सब्द बानन को, होए गए सब जेर।। १ ।।

भारतवर्ष में हिन्दू धर्म की ऐसी विकट परिस्थिति में पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी करोड़ों सूर्य से भी अधिक तेज वाली जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) की तलवार लेकर आए। जिनकी सत वाणी के शब्दों के शोर से सब धर्माचार्य परास्त हो गए।

काटे विकार सब असुरों के, उड़ायो हिरदे को अंधेर।
काढ़यो अहंकार मूल मोह मन को, भान्यो सो उलटो फेर।। २ ।।

मुसलमानों के दिलों के भी अज्ञानता रूपी अन्धेरे को मिटाकर उनके अहंकार रूपी विकारों को जड़ से समाप्त कर दिया और उनकी उलटी चाल (तलवार के डर से मुसलमान बनाना) को सीधा कर दिया।

Nijanand App

सास्त्रें आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार।
काटे दिन पापें लिख्या माहें सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार।। १७ ।।

शास्त्रों में कलियुग की आयु चार लाख बत्तीस हजार वर्ष बताई गयी है जो पाप के कारण घट गई है। इसका शास्त्र विचारने से पता लगता है।

सोले सै लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैंतीस।
बैठाने साका विजिया अभिनन्दका, यों कहे सास्त्र और जोतीस।। १८ ।।

शाका शालिवाहन का सोलह सौ और विक्रम सम्वत् सत्रह सौ पैंतीस लग गया है। अब ज्योतिष और शास्त्रों के हिसाब से विजियाभिनन्द बुधजी का शाका शुरू हो गया है।

कलिजुगें चेहेन रे अंत के सब किए, लोक बतावें अजूं दूर अंत।
अर्थ अंदर का कोई न पावे, बारे अर्थ बाहेर के ले डूबत।। १९ ।।

कलियुग के समाप्त होने के सभी निशान प्रकट हो गए हैं। संसार के लोग कहते हैं कि अभी कलियुग का अन्त दूर है। यह बाहरी अर्थ लेकर डूब रहे हैं। अन्दर का अर्थ यह नहीं लेते।

बातने सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तरवार।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार।। २० ।।

इस बात को बुंदेला छत्रसाल ने सुना और धर्म-युद्ध के लिए तलवार लेकर आगे आए। सारी सेवा औरंगजेब से लड़ने की अपने सिर ले ली। श्री प्राणनाथजी ने राजतिलक करके उसे सेना का राजा बना दिया।

प्रगटे निसान रे धूमरकेतु खय मास, पर सुध न करे अजूं कोई इत।
बेगेने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे महामत।। २१ ।।

विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार के प्रगट हांने का निशान धूमकेतु तारा जाहिर हो गया है। एक मास का क्षय भी हुआ है, परन्तु फिर भी कोई विचार नहीं कर रहा है। महामति जी पुकार कर कहते हैं, हे बुधजी! आप शीघ्र ही प्रगट होइए।

।। प्रकरण ।। ५८ ।। चौपाई ।। ६५९ ।।

राग श्री

ऐसा समे जान आए बुध जी, कर कोट सूर समसेर।
सुनते सोर सब्द बानन को, होए गए सब जेर।। १ ।।

भारतवर्ष में हिन्दू धर्म की ऐसी विकट परिस्थिति में पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी करोड़ों सूर्य से भी अधिक तेज वाली जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) की तलवार लेकर आए। जिनकी सत वाणी के शब्दों के शोर से सब धर्माचार्य परास्त हो गए।

काटे विकार सब असुरों के, उड़ायो हिरदे को अंधेर।
काढ़यो अहंकार मूल मोह मन को, भान्यो सो उलटो फेर।। २ ।।

मुसलमानों के दिलों के भी अज्ञानता रूपी अन्धेरे को मिटाकर उनके अहंकार रूपी विकारों को जड़ से समाप्त कर दिया और उनकी उलटी चाल (तलवार के डर से मुसलमान बनाना) को सीधा कर दिया।

Nijanand App

वेद कतेब के जो अर्थ, ढांपे हुते सबों पास।
विष्णु संग्राम मांगे जो असुर, ताको कियो कोट प्रकास।। ३ ।।

वेदों और कतेबों (चारों वेद, शास्त्र तथा अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान) के रहस्य जो किसी को मालूम नहीं थे तथा जिनके लिए औरंगजेब धर्म-युद्ध की मांग कर रहा था, इन सबके भेदों को इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने तारतम वाणी के ज्ञान से जाहिर किया।

तब पेहेचान भई सकल, हुए सब सर्वग्यन।
नेहेचल सूर ऊग्यो निज वतनी, हुओ मन को भायो सबन।। ४ ।।

अब सभी को छिपे रहस्यों की पहचान हो गई और सब ज्ञानी हो गए। परमधाम के ज्ञान का अखण्ड सूर्य जाहिर हो गया और इस ज्ञान से सबकी इच्छा पूरी हो गई।

बाल लीला भई बृज में, लीला किसोर वृन्दावन।
जगंनाथ बुध जी जागनी, भई भोर लीला बुढ़ापन।। ५ ।।

बृज में बाल लीला हुई। वृन्दावन में किशोर लीला हुई। जागृत ज्ञान के स्वरूप जगत के मालिक श्री प्राणनाथजी की जागनी की लीला बुढ़ापे की है जिससे ज्ञान का सवेरा हो गया।

राजा प्रजा बाला बूढ़ा, नर नारी ए सुमरन।
गाए सुने ताए होवहीं, लीला तीनों का दरसन।। ६ ।।

अब राजा-प्रजा, बालक-बूढ़ा, स्त्री-पुरुष जो भी इस तारतम वाणी को समझकर रहनी में आएगा, उसे तीनों लीलाओं का सुख प्राप्त होगा।

सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया।
देत दीदार सबन को सांईं, जिनहूं जैसा चाह्या।। ७ ।।

हिन्दू और मुसलमान सबों के श्री प्राणनाथजी धनी हैं। वह सब पर एक ही नजरे करम करते हैं। जिसने उनको जिस तरह से पहचाना उसको श्री प्राणनाथजी उसी रूप से मिलते हैं।

साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत।
निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत।। ८ ।।

श्री प्राणनाथजी के हुकम से श्री महामतिजी इस वाणी को जाहिर कर रही हैं। अब जागृत बुद्धि के तेज और जोश का ज्ञान सबमें फैल रहा है।

।। प्रकरण ।। ५९ ।। चौपाई ।। ६६७ ।।

राग श्री गौड़ी

कुली बल देखो रे, ए जो देखन आइयां तुम।
खेल किया तुमारी खातिर, सुनियो हो सृष्ट ब्रह्म।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस कलियुग की शक्ति को देखो। जिसे देखने के लिए तुम आए हो। हे ब्रह्मसृष्टियो! सुनो, यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है।

अथाह थाह नहीं ऊंचा नीचा, गेहेरा गिरदवाए मोह जल।
लोक चौदे खेलें जीव याके, याकी सूझे न याकी कल।। २ ।।

इस भवसागर की थाह नहीं मिलती। यह बहुत ऊंचा-नीचा है और चारों तरफ से गहरा है। चौदह लोकों के जीव इसमें खेलते हैं। इसकी हकीकत का पता नहीं है।

Nijanand App

वेद कतेब के जो अर्थ, ढांपे हुते सबों पास।
विष्णु संग्राम मांगे जो असुर, ताको कियो कोट प्रकास॥ ३ ॥

वेदों और कतेबों (चारों वेद, शास्त्र तथा अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान) के रहस्य जो किसी को मालूम नहीं थे तथा जिनके लिए औरंगजेब धर्म-युद्ध की मांग कर रहा था, इन सबके भेदों को इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने तारतम वाणी के ज्ञान से जाहिर किया।

तब पेहेचान भई सकल, हुए सब सर्वग्यन।
नेहेचल सूर ऊग्यो निज वतनी, हुओ मन को भायो सबन॥ ४ ॥

अब सभी को छिपे रहस्यों की पहचान हो गई और सब ज्ञानी हो गए। परमधाम के ज्ञान का अखण्ड सूर्य जाहिर हो गया और इस ज्ञान से सबकी इच्छा पूरी हो गई।

बाल लीला भई बृज में, लीला किसोर वृन्दावन।
जगंनाथ बुध जी जागनी, भई भोर लीला बुढ़ापन॥ ५ ॥

बृज में बाल लीला हुई। वृन्दावन में किशोर लीला हुई। जागृत ज्ञान के स्वरूप जगत के मालिक श्री प्राणनाथजी की जागनी की लीला बुढ़ापे की है जिससे ज्ञान का सवेरा हो गया।

राजा प्रजा बाला बूढ़ा, नर नारी ए सुमरन।
गाए सुने ताए होवहीं, लीला तीनों का दरसन॥ ६ ॥

अब राजा-प्रजा, बालक-बूढ़ा, स्त्री-पुरुष जो भी इस तारतम वाणी को समझकर रहनी में आएगा, उसे तीनों लीलाओं का सुख प्राप्त होगा।

सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया।
देत दीदार सबन को सांईं, जिनहूं जैसा चाह्या॥ ७ ॥

हिन्दू और मुसलमान सबों के श्री प्राणनाथजी धनी हैं। वह सब पर एक ही नजरे करम करते हैं। जिसने उनको जिस तरह से पहचाना उसको श्री प्राणनाथजी उसी रूप से मिलते हैं।

साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत।
निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत॥ ८ ॥

श्री प्राणनाथजी के हुकम से श्री महामतिजी इस वाणी को जाहिर कर रही हैं। अब जागृत बुद्धि के तेज और जोश का ज्ञान सबमें फैल रहा है।

॥ प्रकरण ॥ ५९ ॥ चौपाई ॥ ६६७ ॥

राग श्री गौड़ी

कुली बल देखो रे, ए जो देखन आइयां तुम।
खेल किया तुमारी खातिर, सुनियो हो सृष्ट ब्रह्म॥ १ ॥

हे सुन्दरसाथजी! इस कलियुग की शक्ति को देखो। जिसे देखने के लिए तुम आए हो। हे ब्रह्मसृष्टियो! सुनो, यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है।

अथाह थाह नहीं ऊंचा नीचा, गेहेरा गिरदवाए मोह जल।
लोक चौदे खेलें जीव याके, याकी सूझे न याकी कल॥ २ ॥

इस भवसागर की थाह नहीं मिलती। यह बहुत ऊंचा-नीचा है और चारों तरफ से गहरा है। चौदह लोकों के जीव इसमें खेलते हैं। इसकी हकीकत का पता नहीं है।

Nijanand App

सत ढांप्या पीठ देवाई पिया को, झूठ ल्याया नजर।
नेहेचल राज सोहाग धनी को, सो भुलाए दियो घर।। ३ ।।

इस भवसागर ने सत को छिपाकर धनी से विमुख करके झूठ सामने कर दिया है। हमारे धनी के अखण्ड राज्य (परमधाम) को और हमारे सुहाग धनी को इस कलियुग ने भुला दिया है।

नेहेचल घर थें आइयां खेल देखने, सत सरूप परवान।
सो अकूंरी भूले क्यों यामें, जाए दई पिउ पेहेचान।। ४ ।।

हम अखण्ड घर परमधाम से खेल देखने आए। ब्रह्मसृष्टि जो ब्रह्म के समान है और परमधाम के निसबती है तथा जिनको अपनी धनी की पहचान हो गई है, वह इस संसार में कैसे भूल सकते हैं?

बिन वाए चढ़या बगरूला, सबको देखे बिन आंखें।
खिन में फिरवले सब लोकों, पांऊं बिना बिन पांखें।। ५ ।।

यह बिना वायु के बगरूला (बवण्डर, पवन की भंवरी) खड़ा होता है और बिना आंखों के सबको देखता है। एक क्षण में बिना पैर और पंख के उड़कर चौदह लोकों में घूमकर आ जाता है। ऐसे इस कलियुग के मन का रूप है।

कुली दज्जाल अंधेर सरूपे, त्रिगुन को पाड़े त्रास।
सूर सिरोमन साध संग्रामें, पीछे पटक किए निरास।। ६ ।।

यह शैतान कलियुग अज्ञान का ऐसा रूप है जिसने त्रिगुण को भी हैरान कर रखा है। श्रेष्ठ साधु, महात्मा जो इस युग में बहादुर कहलाते हैं, को इस दज्जाल ने पीछे पटक कर निराश कर दिया है।

मोह फांस बंध दिए दुनी को, सब अंगों बस आने।
राज करे सिर सबन के, चलावत ज्यों जित जाने।। ७ ।।

इस कलियुग ने सारी दुनियां को मोह के बन्धन में बांधकर अपने अधीन कर रखा है। सबके अन्दर बैठकर जैसा चाहता है, उसे वैसा नाच नचाता है।

प्रथम मूल से बुध फिराई, अहंमेव दियो अंधेर।
या बिध इंड रच्यो त्रैलोकी, मूल तें दियो मन फेर।। ८ ।।

इसने मूल से ही मोह और अहंकार से बुद्धि को घुमाकर अज्ञानता के अन्धकार में डाल दिया है और इस तरह से आदि नारायण से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश के तथा सारे संसार के मन को उल्टा घुमा दिया है।

उदयो लोभ विखे रस विखया, सैन्या पति सैतान।
दसो दिस आग लगाई दुनियां, सुध बुध खोई सान।। ९ ।।

इस तरह से इस मन रूपी कलियुग ने सारी गुण, अंग, इन्द्रियों का सेनापति बनकर मोह, लोभ, विषय रस के जहर में सबको डुबा रखा है। सारी दुनियां को दसों दिशाओं से काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार की आग लगा दी है। इसमें दुनियां अपनी सच्ची हकीकत को भूल बैठी है।

बाढ़ी व्याध स्वाद गुन इंद्री, मद चढ़यो मोह अंध।
माता बेहेन पुत्री गोरांनी, कासों नहीं सनमंध।। १० ।।

गुण, अंग, इन्द्रियों को माया रूपी व्याधि (रोग) का रस अच्छा लग रहा है जिससे अज्ञानता और मोह की मस्ती चढ़ गई है। फलस्वरूप माता, बहन, पुत्री, गुरु, पत्नी सभी की मर्यादा का पालन भूल बैठा है।

Nijanand App

खिन सज्जन खिन दुस्मन, दिवाना दाना प्रवीन।
बिध बिध के बंध फंद डार के, सब सूर किए आधीन।। ११ ।।

यह एक पल में मित्र, एक पल में दुश्मन, क्षण में दीवाना, क्षण में चतुर और स्याना (जानकार) बन बैठता है। इस तरह से इस कलियुग ने तरह-तरह के बन्ध, फन्द डालकर सबको अधीन कर रखा है।

ना कछू चोर न कोई साधू, कई डिंभके धरे ध्यान।
तान मान सब विद्या व्याकरण, बहुरंगी बहु ग्यान।। १२ ।।

न चोर का, न साधु का रूप है। कलियुग के प्रभाव से सबने छल-कपट के रूप बना रखे हैं। यहां का संगीत, व्याकरण, आदि के ज्ञान कलियुग के पाखण्ड के ही रूप हैं।

वेद कतेब सास्त्र सबे मुख, जुगें लिए सब जीत।
मंत्र धात करामात माहीं, पाक उत्तम पलीत।। १३ ।।

वेद, कतेब, शास्त्र तथा संसार के सभी ज्ञान को इसने जीत लिया है। तन्त्र, मन्त्र, धातुएं, करामात, पवित्र तथा नीच सबमें कलियुग ही समाया है।

जिन अंगों मिलिए पिउसों, सो ए दिए उलटाए।
फेरी दुहाई वैराट चौखूंटों, कोई सिर न सके उठाए।। १४ ।।

जिन गुण, अंग, इन्द्रियों से धनी से मिलना सम्भव है, उन्हें कलियुग ने उलट कर अपना बना लिया है। सारे वैराट में चारों खूंटों में इसका ही बोलबाला है। इसके सामने कोई सिर नहीं उठा सकता।

चौदे लोक अग्याकारी, सिर सबन के हुकम।
या छल ने ऐसे उरझाए, आप भूली सुध घर खसम।। १५ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड इसकी आज्ञा से चलता है और यही सबके ऊपर हुकूमत करता है। इसने ब्रह्मसृष्टियों को भी उलझन में फंसा रखा है जो अपने धनी और घर को भुला बैठी हैं।

केती बिध कहूं कलजुग की, अलेखे अप्रमान।
बरना बरन कर मिने व्याप्या, काहूं न किसी की पेहेचान।। १६ ।।

इस कलियुग का वर्णन कहां तक करूं? इसका विस्तार बहुत बड़ा है। सब वर्णों में यह अन्दर बैठकर फैला है। इस कारण किसी को किसी की पहचान नहीं हो पाती।

छूटी छोले लेहेरें पड़ियां बाहेर, छूट गई मरजाद।
भाने भेख पंथ पैंडे दरसन, ढाहे तीरथ प्रासाद।। १७ ।।

कलियुग रूपी सागर के उछाल की लहरों से लोक-लाज, मर्यादाओं की सीमा टूट गई और धर्म-पंथ, पैंडे, दर्शन और तीर्थों का आसरा (विश्वास) हट गया है।

ग्रास किए त्रिगुन त्रैलोकी, ऐसो मोह अंध अहंकार।
सुध न होवे काहूं धाम धनी की, पोहोंचने न देवे पुकार।। १८ ।।

कलियुग के अन्धे मोह अहंकार ने त्रिगुन की शक्ति को भी हरण कर लिया है। ऐसे कलियुग के प्रभाव से किसी को भी धाम धनी की पहचान नहीं हो रही है और कोई धाम धनी को याद नहीं करता है।

पोहोंचे नहीं कल बल कुली को, कोई मिने चौदे भवन।
ऐसो महाबली ताए उड़ावें, बुध जी एकै खिन।। १९ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में कलियुग की शक्ति और हिकमत के सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता (किसी ने पार नहीं पाया)। ऐसे महान शक्ति वाले कलियुग को जागृत बुद्धि ने एक क्षण में मिटा दिया।

Nijanand App

चलता पूर लिए दोऊ किनारे, डर धरता बुधजी का।
मद चढ़यो करी एकल छत्री, ले बैठा सिर टीका।। २० ।।

पाताल से बैकुण्ठ तक कलियुग फैला है। उसे केवल बुधजी, (श्री प्राणनाथजी) का डर है। इस कलियुग को पारब्रह्म का जो हुकम मिला था, उसी हुकम को शिरोधार्य करके सब संसार पर राज्य कर रहा है।

बुध जी धनी हुकम मांहें, फरिस्ता असराफील।
तिन कान दिए सुनने अग्या को, अब हुकम को नाहीं ढील।। २१ ।।

विजियाभिनन्द बुधजी के अन्दर असराफील (जागृत बुद्धि का) फरिश्ता आकर बैठा है। सूर फूंकने के लिए वह आज्ञा के इन्तजार में खड़ा है।

पोहोंची पुकार सुनी धनी श्रवनों, कही कुली की सब गम।
कलपे जुथ जान ब्रह्मसृष्ट के, मिले नूर बुध हुकम।। २२ ।।

चालीस जुथ की बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों की माया में कलपने की आवाज को असराफील ने धनी को जाकर सुनाया और कलियुग की हकीकत बताई। तब धनी ने जागृत बुद्धि और तारतम को इन्द्रावती के तन में भेज दिया।

उड़ाए अंधेर किया मिलावा, प्रकास कियो सब अंग।
काढ़यो मोह अहंकार मूल थें, जो करता सबन सों जंग।। २३ ।।

श्री प्राणनाथजी ने अज्ञान के अन्धकार को मिटाकर ब्रह्मसृष्टियों को इकट्ठा किया, उनके अन्दर जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सब पहचान कराई तथा मोह और अहंकार जो सबके आड़े आता था, उसे जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया।

उदयो अखंड सूर निज वतनी, भई जोत कोटान कोट।
कहे महामत रात टली सबन को, आए सब धनी की ओट।। २४ ।।

अब जागृत बुद्धि की अखण्ड तारतम वाणी का निज वतन (परमधाम) का अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है। उसकी करोड़ो किरणें सारे ब्रह्माण्ड के अन्धकार की रात्रि को मिटा रही हैं। सभी श्री प्राणनाथजी की शरण में आ रहे हैं, ऐसा श्री महामति जी कह रहे हैं।

|| प्रकरण || ६० || चौपाई || ६९१ ||

राग श्री नट

साहेब तेरी साहेबी भारी।
कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी।। १ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आपकी साहेबी बड़ी भारी है। इस साहेबी का बोझ आपके बिना दूसरा कौन उठा सकता है। इतनी बड़ी साहेबी की शोभा आपने मुझे दे दी है।

त्रिगुन तिर्थंकर अवतार, कई फरिस्ते पैगंमर।
तिन सबकी सोभा ले स्याम, आया महंमद पर।। २ ।।

त्रिगुण, तीर्थंकर, अवतार, फरिश्ते, पैगम्बर, आदि सभी की शोभा लेकर श्याम (आतम अक्षर धनी का आवेश) रसूल साहब बनके (मुहम्मद में) आया।

Nijanand App

चलता पूर लिए दोऊ किनारे, डर धरता बुधजी का।
मद चढ़्यो करी एकल छत्री, ले बैठा सिर टीका।। २० ।।

पाताल से बैकुण्ठ तक कलियुग फैला है। उसे केवल बुधजी, (श्री प्राणनाथजी) का डर है। इस कलियुग को पारब्रह्म का जो हुकम मिला था, उसी हुकम को शिरोधार्य करके सब संसार पर राज्य कर रहा है।

बुध जी धनी हुकम मांहें, फरिस्ता असराफील।
तिन कान दिए सुनने अग्या को, अब हुकम को नाहीं ढील।। २१ ।।

विजियाभिनन्द बुधजी के अन्दर असराफील (जागृत बुद्धि का) फरिश्ता आकर बैठा है। सूर फूंकने के लिए वह आज्ञा के इन्तजार में खड़ा है।

पोहोंची पुकार सुनी धनी श्रवनों, कही कुली की सब गम।
कलपे जुथ जान ब्रह्मसृष्ट के, मिले नूर बुध हुकम।। २२ ।।

चालीस जुथ की बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों की माया में कलपने की आवाज को असराफील ने धनी को जाकर सुनाया और कलियुग की हकीकत बताई। तब धनी ने जागृत बुद्धि और तारतम को इन्द्रावती के तन में भेज दिया।

उड़ाए अंधेर किया मिलावा, प्रकास कियो सब अंग।
काढ़्यो मोह अहंकार मूल थें, जो करता सबन सों जंग।। २३ ।।

श्री प्राणनाथजी ने अज्ञान के अन्धकार को मिटाकर ब्रह्मसृष्टियों को इकट्ठा किया, उनके अन्दर जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सब पहचान कराई तथा मोह और अहंकार जो सबके आड़े आता था, उसे जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया।

उदयो अखंड सूर निज वतनी, भई जोत कोटान कोट।
कहे महामत रात टली सबन को, आए सब धनी की ओट।। २४ ।।

अब जागृत बुद्धि की अखण्ड तारतम वाणी का निज वतन (परमधाम) का अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है। उसकी करोड़ो किरणें सारे ब्रह्माण्ड के अन्धकार की रात्रि को मिटा रही हैं। सभी श्री प्राणनाथजी की शरण में आ रहे हैं, ऐसा श्री महामति जी कह रहे हैं।

|| प्रकरण || ६० || चौपाई || ६९१ ||

राग श्री नट

साहेब तेरी साहेबी भारी।
कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी।। १ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आपकी साहेबी बड़ी भारी है। इस साहेबी का बोझ आपके बिना दूसरा कौन उठा सकता है। इतनी बड़ी साहेबी की शोभा आपने मुझे दे दी है।

त्रिगुन तिर्थंकर अवतार, कई फरिस्ते पैगंमर।
तिन सबकी सोभा ले स्याम, आया महंमद पर।। २ ।।

त्रिगुण, तीर्थंकर, अवतार, फरिश्ते, पैगम्बर, आदि सभी की शोभा लेकर श्याम (आतम अक्षर धनी का आवेश) रसूल साहब बनके (मुहम्मद में) आया।

Nijanand App

नूर नामे में पैगंमर, एक लाख बीस हजार।
सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद स्याम सिरदार।। ३ ।।

नूरनामे में एक लाख बीस हजार पैगम्बरों का वर्णन है। इन सब पैगम्बरों की सारी सिफत हुकम के स्वरूप मुहम्मद में है। यह वही मुहम्मद हैं जो रास लीला खेलकर अरब में आए, अर्थात् (आतम अक्षर जोश धनी धाम)।

सो महंमद कासिद होए के, ले आया फुरमान।
वास्ते हमारे हम में, पोहोंचाय हैं निसान।। ४ ।।

यही रसूल मुहम्मद हम ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते कुरान रूपी फुरमान लेकर आए हैं। हम ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते ही हम को कुरान में घर के निशान बताए हैं।

रूह अल्ला किल्ली अल्लाह थें, ले उतरे चौथे आसमान।
सो हम मांहें बैठ के, खोले कुलफ कुरान।। ५ ।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) पारब्रह्म से तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर चौथे आसमान (लाहूत) से उतरकर आए हैं उन्होंने हमारे (इन्द्रावती के) अन्दर बैठकर कुरान के सारे ताले (भेद) खोल दिए।

सो फुरमान आप खोल के, करी जाहेर हकीकत।
खोले वेद कतेब के गुझ, आई सबों की सरत।। ६ ।।

श्री श्यामा महारानी ने मेरे तन (इन्द्रावती के तन) में बैठकर कुरान के सारे रहस्य खोले और घर की पहचान बताई। वेद और कतेब ग्रन्थों में जो भेद छिपे पड़े थे, उन सबको खोलने का समय आ गया।

कलीम अल्ला कह्या मूसे को, फुरमाया सब कहे।
सो कलाम अल्ला की रोसनी, ताबे हादी के रहे।। ७ ।।

मूसा पैगम्बर को कुरान में कलीम अल्लाह अर्थात् खुदा की वाणी को सुनने वाला कहा है। उस मूसा के सुने हुए ज्ञान (तौरेत) का रहस्य श्री प्राणनाथजी के पास है।

खलील अल्ला दोस्त खुदाए का, जाकी पोहोंची दुआ हजूर।
सो भी रहत इमाम में, कलाम अल्ला का जहूर।। ८ ।।

खलील अल्लाह को खुदा का दोस्त कहा है, जिसकी विनती खुदा तक पहुंचती है। वह खलील अल्लाह भी इमाम मेंहेदी श्री प्राणनाथजी के तन में बैठा है और पारब्रह्म के वचनों की पहचान कराता है, ऐसा कुरान में लिखा है।

अली वली सेर दरगाह का, जो दरगाह बड़ी खुदाए।
अवल सें किन पाई नहीं, सो आखिर प्रगटी आए।। ९ ।।

अली जिसको वली अल्लाह कहते हैं, जो बड़ी दरगाह (परमधाम) के दावेदार हैं, जिनकी शक्ति को आज दिन तक किसी ने जाना नहीं था, वह भी श्री प्राणनाथजी के तन में जाहिर हुए।

नूह नबी को वारसी, आदम दई पोहोंचाए।
आए ईसा नूह नबी इमाम, सो आदम सफी अल्लाह।। १० ।।

आद आदम सफी अल्लाह ने नूह पैगम्बर को अपना वारिस बनाया। वह नबी अल्लाह के नाम से, ईसा रूह अल्लाह के नाम से और आदम सफी अल्लाह के नाम से सातों कलमें वाले पैगम्बर (१) आदम सफी अल्लाह, (२) नूह नबी अल्लाह, (३) इब्राहीम खलील अल्लाह, (४) मूसा कलीम अल्लाह, (५) ईसा रूह अल्लाह, (६) मुहम्मद रसूल अल्लाह, (७) अली वली अल्लाह (श्री प्राणनाथ जी के तन में जाहिर हुए)।

Nijanand App

असराफील ले उतरया, जागृत बुध नूर।
सो बैठ बजाए इमाम में, मगज मुसाफी सूर।। ११ ।।

असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर इमाम मेंहदी में आकर बैठे और कुरान के रहस्यों को खोलने का इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के तन से सूर फूंका।

जबराईल जोस धनी का, सो आया गिरो जित।
करे वकीली उमत की, कहूं पैठ न सके कुमत।। १२ ।।

धनी का जोश जबराईल भी इमाम मेंहदी के तन में आया। जहां ब्रह्मसृष्टियां बैठी हैं, उस जमात की वकाल्त इमाम मेंहदी से कर रहा है ताकि ब्रह्मसृष्टियां माया में भटक न जाएं।

औलिए अंबिए गोस कुतब, सब आए बीच उमत।
रूहें पैगंमर फरिस्ते, सब मिले आखिरत।। १३ ।।

औलिए, अंबिए, गौस, कुतुब, सभी ब्रह्मसृष्टियों की जमात में शामिल हुए, रूहें, फरिश्ते, पैगम्बर आखिरत के वक्त में सब इकट्ठे हुए।

बनी असराईल जिकरिया, एहिया यूसफ इस्माईल।
बखत बदल्या दाऊद आए, हुए जाहेर नूर जमाल।। १४ ।।

बनी असराईल के बेटे जकरिया आए। एहिया, यूसुफ, इस्माईल आए। अपने समय पर दाऊद पैगम्बर भी आए। इन सब पैगम्बरों के साथ इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी जाहिर हुए।

इसहाक एलिया इद्रीस, आए बोहोना सलेमान।
मुलक हुआ नबियन का, मार दिया सैतान।। १५ ।।

इसहाक, एलिया, इद्रीस और बोहोना सुलेमान भी आए। इन सब पैगम्बरों का इमाम मेंहदी के आने से हिन्दुस्तान नबियों का मुल्क बन गया और कलियुग रूपी शैतान को मार दिया।

कई किताबें कई कलमें, कई जो नामें और।
जो कोई कहावे बुजरक, सब आए मिले इन ठौर।। १६ ।।

कई धार्मिक किताबें और कई छोटी-छोटी धार्मिक किताबें (सहिफें) लिखने वाले बुजरक आकर इमाम मेंहदी में इकट्ठे हुए।

दई बड़ी बड़ाई आपसी, दियो सो अपनों नाम।
करनी अपनी दे थापी, दे साहेदी अल्ला कलाम।। १७ ।।

पारब्रह्म अक्षरातीत ने इन्द्रावती को अपने समान बड़ी बड़ाई दी। अपना नाम भी दिया। जो काम उनको खुद करना था, वह भी इन्द्रावती को सौंप दिया। इसकी गवाही कुरान से दिला दी।

मोहे अपनों सब दियो, रही न कोई सक।
सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस तरह उन्होंने मुझे सब कुछ दे दिया। कोई संशय बाकी न रहा उन्होंने अपना असली नाम श्री प्राणनाथजी और अपने नाम की मोहर देकर मुझे संसार में अक्षरातीत बनाकर जाहिर किया।

खुदा काजी होय के, कजा करसी सबन।
सो हिसाब जरे जरे को, लियो चौदे भवन।। १९ ।।

सब पैगम्बरों ने भविष्यवाणी कर रखी थी कि खुदा काजी बनकर आखिरत को सबका इन्साफ करेंगे। इसलिए श्री प्राणनाथजी ने चौदह लोकों का जर्रे-जर्रे का हिसाब लिया।

Nijanand App

त्रैलोकी तिमर नसाइयो, कर रोसन अति जहूर।
चौदे लोक चारों तरफों, बरस्या खुदा का नूर।। २० ।।

तारतम वाणी के ज्ञान का प्रकाश फैलाकर चौदह लोक के अज्ञान का अन्धकार मिटाया। चौदह लोकों में चारों तरफ खुदाई ज्ञान (तारतम वाणी) का सुख मिल रहा है।

भई सोभा संसार में, अति बड़ी खूबी अपार।
दुनियां उठाई पाक कर, ना जरा रह्या विकार।। २१ ।।

सारे संसार में श्री प्राणनाथजी की महिमा फैली। उन्होंने दुनियां के सारे जीवों को निर्मल करके बहिश्तों में अखण्ड कर दिया। फिर कोई विकार नहीं रहा।

पेहेले प्रले करके, उठाए लिए ततखिन।
मेरे हाथ कराए के, दई सोभा चौदे भवन।। २२ ।।

पहले इस ब्रह्माण्ड का प्रलय करके तुरन्त सबको (योगमाया के ब्रह्माण्ड में) अखण्ड करेंगे। चौदह लोकों को अखण्ड करने की शोभा मुझे (श्री प्राणनाथजी ने) दी।

काटे करम सबन के, काल मार किया दुख दूर।
हिरदे मांहें नूर के, लिए नजर तले हजूर।। २३ ।।

सारे संसार के जीवों के पापों को माफ किया और जन्म-मरण के दुःख से मुक्त किया। अक्षर के हृदय में सब जीवों को अखण्ड बहिश्त मिली।

रोसनी पार के पार की, दई साहेब नाम धराए।
भई दुनियां साफ मुसाफ से, मुझसे कजा कराए।। २४ ।।

क्षर के पार अक्षर, अक्षर के पार अक्षरातीत धाम की कुलजम सरूप वाणी देकर मुझे प्राणनाथजी के नाम से जाहिर किया। कुलजम सरूप की वाणी से दुनियां को निर्मल कराकर मेरे से अखण्ड कराया।

नूर अछर की नजरों, कई कोट ऐसे इंड।
त्रिगुन त्रैलोकी पल में, कई उपज फना ब्रह्मांड।। २५ ।।

अक्षर ब्रह्म के पल में ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड त्रिगुण, त्रैलोकी सहित बनकर मिट जाते हैं।

सो नूर सरूप आवें नित, नूर तजल्ला के दीदार।
आस पुराई इन की, मेरे ऐसे इन आकार।। २६ ।।

ऐसे अक्षर ब्रह्म नित्य हमारे श्री राजजी महाराज के दर्शन करने के लिए परमधाम में चांदनी चौक तक आते हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे ऐसे आकार के अन्दर अक्षर ब्रह्म को साक्षात् दर्शन कराकर उसकी भी इच्छा पूरी कर दी।

ऐसी बड़ाई कई सिर मेरे, दे दे लई जो दाब।
सब दुनियां के दिल में आनी, दे साहेदी सब किताब।। २७ ।।

ऐसी कई बुजरकियां (महानता) धनी ने मुझे दे-देकर आपने एहसानों से मुझे झुका रखा है। सब धर्म ग्रन्थों की गवाही दिलाकर सबके दिलों में मेरे प्रति दृढ़ता दिला दी।

।। प्रकरण ।। ६१ ।। चौपाई ।। ७१८ ।।

Nijanand App

राग श्री

मांगत हों मेरे दुलहा, मन कर करम वचन।
ए जिन तुम खाली करो, मैं अर्ज करूं दुलहिन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धाम के दूल्हा! मैं मन, वचन और कर्म से आपकी, एक दुलहिन विनती करती हूं। इसे अवश्य ही स्वीकार करना।

मेरे धनी तुमारी साहेबी, तुम अपनी राखो आप।
इस्क दीजे मोहे अपनों, मैं तासों करूं मिलाप।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपने अपनी साहेबी जो मुझे दे दी है, उसे अपने पास ही रखो। मुझे तो केवल अपना इश्क ही दीजिए जिससे मैं आपसे मिल सकूं।

न चाहों मैं बुजरकी, न चाहों खिताब खुदाए।
इस्क दीजे मोहे अपना, मोहे याहीसों मुद्दाए।। ३ ।।

हे मेरे धनी! मैं बुजरकी (बड़ाई) नहीं चाहती। मैं खुदाई खिताब (श्री प्राणनाथजी बनना) नहीं चाहती हूं। मुझे तो आप अपना इश्क ही दीजिए जो अंगनाओं का असल खजाना है (न्यामत है)।

इलम चातुरी खूबी अंग की, मोहे एही पट लिख्या अंकूर।
एही न देवे देखने, मेरे दुलहे के मुख का नूर।। ४ ।।

इलम की चतुराई तो केवल अंग की शोभा है। यही मेरे आपके बीच में पर्दा है। यही मेरे दूल्हे के मुख का दर्शन नहीं करने दे रहा है।

एही अंकूर साथ कारने, करत मिलाप अंतराए।
न तो एकै आह इन पिया की, देवे सब उड़ाए।। ५ ।।

यही इलम की चतुराई सुन्दरसाथजी को आपसे मिलने में रुकावट डाल रही है। वरना धनी के विरह में एक आह की सांस लेने से शरीर छूट जाए।

एही खूबी मेरे अंग को, देत नाहीं दरद।
एही हांसी बुजरकी, करत इस्क को रद।। ६ ।।

यही इलम की चतुराई की खूबी मेरे अंग को विरह का दर्द नहीं आने देती। यही मान और बड़प्पन की हंसी ही धनी का इश्क नहीं आने देती।

इलम आतम संग बुध के, ए जो आवत जुबांए।
फेर श्रवना देवें आतम को, एही परदा नाम खुदाए।। ७ ।।

आत्मा को जागृत बुद्धि के साथ वाणी का सहारा लेकर ज्ञान के रूप में जब समझ में आ जाता है, तो वही सुना हुआ ज्ञान आत्मा में अहंकार पैदा करके पारब्रह्म के बीच परदा बन जाता है।

ना तो क्यों न उड़े इन आतमा, विचार के एह वचन।
इस्क जरे आतम को, इत हो जाए सब अगिन।। ८ ।।

नहीं तो इन वचनों को सुनते ही आत्मा तन को छोड़कर धनी के पास उड़ जाए। यदि आत्मा में जरा भी इश्क धनी से मिलने का आ जाए तो संसार उसको अग्नि के समान हो जाएगा।

Nijanand App

एही बुजरकी साथ जी, भया गले में तौक।
धनी को न देवे देखने, एही खूबी इन लोक।। ९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यही इलम की चतुराई की बुजरकी गले में लानत का फन्दा बना हुआ है। इस माया के संसार की यही खूबी है, जो धनी से मिलने नहीं देती।

साथ मोको सुख चाहें, जान धाम की प्रीत।
मैं परबोधों जान वतनी, मोहे बंधन भयो इन रीत।। १० ।।

मेरे धाम के सुन्दरसाथ धाम की निसबत जानकर ही मान बड़ाई से मुझे सुखी करना चाहते हैं। मैं भी उनको अपने घर का साथी समझकर ज्ञान देती हूं। यही मोह मेरे लिए बन्धन बन गया है।

वे सेवा करें बहु बिध, फेर फेर देवें बड़ाई।
हेत करें जान के साहेब, मोहे एही होत अंतराई।। ११ ।।

सुन्दरसाथ मेरी हर प्रकार से सेवा करते हैं और धाम का धनी जानकर मुझसे प्यार करते हैं। बार-बार मान बड़ाई देते हैं। हे धनी! यही मुझे आपसे दूर कर रही है।

मैं भी हेत करत हों इनसों, जान के वतन सगाई।
मोहे प्यारा साथ मेरे धनी का, एही पट आड़े आई।। १२ ।।

मैं भी परमधाम का नाता जानकर इनसे प्यार करती हूं, क्योंकि मेरे धनी के साथी मुझे प्यारे हैं। यही मेरे और धनी के बीच परदा बना है।

जिन दयाएं परदा उड़ाइया, मैं फेर फेर मांगों सो मेहेर।
इस्क दीजे मोहे अपना, जासों लगे बुजरकी जेहेर।। १३ ।।

हे धनी! आपकी जिस मेहर (कृपा) ने मेरे और आपके बीच का परदा उड़ाया था, उसी मेहर को मैं बार-बार मांगती हूं। हे धनी! मुझे आप अपना इश्क दें ताकि यह बुजरकी जहर के समान लगे।

मोहे सेवा प्यारी पिउ की, साहेब हो बैठो तुम।
अति सुख पाऊं इनमें, करों बंदगी खसम।। १४ ।।

मैं चाहती हूं कि आप मेरे खाविंद बनकर बैठें और मैं (आपकी अंगना) आपकी सेवा करूं। इस सेवा में मुझे अपार आनन्द मिलेगा कि मैं अपने खसम की सेवा करती हूं।

बोझ अपनों निज वतन को, सो सब मेरे सिर दियो।
नाम सिनगार सोभा सारी, मैं भेख तुमारो लियो।। १५ ।।

हे धनी! आपने अपने परमधाम के काम की सारी जिम्मेदारी मुझे सौंप दी है। आपने अपना नाम, भेष और सिनगार भी मुझे पहना दिया है।

अल्ला आसिक मासूक महंमद, इस्क दीजे हम।
हम आसिक नाम धराए के, मासूक करे हैं तुम।। १६ ।।

हे मेरे धनी! आप आशिक हैं और मैं (आखिरी मुहम्मद) आपकी माशूक हूं। मुझे आप अपना इश्क दो ताकि मैं आशिक बनकर आपके पास आपको माशूक बनाकर आ सकूं।

तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और न जानूं बात।
इस्क सों सेवा करूं, सब अंगों साख्यात।। १७ ।।

आप मेरे धनी हैं और मैं आपकी अंगना हूं। मैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं जानती। मैं सब अंगों से समर्पित होकर चित्त से आपकी सेवा करूं।

Nijanand App

अब तो उमत मिली खासी, और उमत दूसरी।
तीसरी भी कायम हुई, अब काहे को ढील करी।। १८ ।।

अब तो ब्रह्मसृष्टि मिल गई है और ईश्वरीसृष्टि भी मिल गई है। तीसरी जीवसृष्टि को भी अखण्ड करने का द्वार खोल दिया है। तो अब परमधाम ले चलने में देरी क्यों कर रहे हो?

सकल काम भए पूरन, रही ना किसी की सक।
महामत चाहे पिउ वतन, आए मिलूं ले इस्क।। १९ ।।

आपके सब काम पूर्ण हो चुके हैं और अब यहां किसी के अन्दर किसी प्रकार की चाहना नहीं रही है। अब श्री महामतिजी इश्क लेकर अपने घर में धनी से मिलना चाहती हैं।

प्रेम दरद इस्क तुमारा, मैं फेर फेर मांगूं फेर।
प्यारें मिलूं प्यारे पिउसों, प्यारी महामत कहे बेर बेर।। २० ।।

हे धनी! मैं आपसे आपका प्रेम-विरह का दर्द और इश्क बार-बार मांगती हूं, ताकि अपने धनी से प्यार से मिल सकूं।

|| प्रकरण || ६२ || चौपाई || ७३८ ||

राग श्री

जिन सुध सेवा की नहीं, ना कछू समझे बात।
सो काहे को गिनावे आप साथ में, जिन सुध ना सुपन साख्यात।। १ ।।

जिन सुन्दरसाथ को धनी और सुन्दरसाथ की सेवा की समझ नहीं है और जो इस वाणी को नहीं समझते हैं तथा जिन्हें यह सुध भी नहीं है कि संसार सपना है और अपना घर अखण्ड है, तो वह अपने आपको सुन्दरसाथ कहलाने योग्य नहीं हैं।

कमर बांधे देखा देखी, जाने हम भी लगे तिन लार।
ले कबीला कांध पर, हंस्ते चले नर नार।। २ ।।

जो सुन्दरसाथ की चाल को देखकर नकल करते हैं तथा अपने कन्धे पर घर, कुटम्ब, कबीले का बोझ ढो रहे हैं और समझते हैं कि हम भी परमधाम जाएंगे।

ए लोक राह न पावहीं, क्योंए न सुनें पुकार।
ए चले चींटी हार ज्यों, बांधे ऊंट कतार।। ३ ।।

वह संसार के जीवड़े (जीव) वाणी की पुकार को नहीं सुनते और इसलिए इनको पार का रास्ता नहीं मिलता। यह चींटी-हार और ऊंट-कतार की तरह एक-दूसरे के देखा-देखी चलते हैं।

इन लोकों की मैं क्या कहूं, जो जाए पड़े मुख काल।
जो साथ केहेलाए सामिल भए, सो भी कहूं नेक हाल।। ४ ।।

ऐसे संसार के लोगों की मैं क्या कहूं जो जान-बूझकर आवागमन के चक्कर में पड़े हैं। जो तारतम लेकर संसार के जीवड़े (जीव) सुन्दरसाथ में मिल गए हैं उनकी भी थोड़ी सी हकीकत बताती हूं।

दुध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपर का फैन।
दौड़ करें पड़े खैंच में, ए भी लगे दुख देन।। ५ ।।

ऐसे सुन्दरसाथ ने वाणी की हकीकत को नहीं समझा और ऊपर की देखा देखी से सुन्दरसाथ बन गए। वही अब आपस में खेंचा-खेंच (खींच तान) करके लड़ते हैं और दुःखी करते हैं।

Nijanand App

अब तो उमत मिली खासी, और उमत दूसरी।
तीसरी भी कायम हुई, अब काहे को ढील करी।। १८ ।।

अब तो ब्रह्मसृष्टि मिल गई है और ईश्वरीसृष्टि भी मिल गई है। तीसरी जीवसृष्टि को भी अखण्ड करने का द्वार खोल दिया है। तो अब परमधाम ले चलने में देरी क्यों कर रहे हो?

सकल काम भए पूरन, रही ना किसी की सक।
महामत चाहे पिउ वतन, आए मिलूं ले इस्क।। १९ ।।

आपके सब काम पूर्ण हो चुके हैं और अब यहां किसी के अन्दर किसी प्रकार की चाहना नहीं रही है। अब श्री महामतिजी इश्क लेकर अपने घर में धनी से मिलना चाहती हैं।

प्रेम दरद इस्क तुमारा, मैं फेर फेर मांगूं फेर।
प्यारें मिलूं प्यारे पिउसों, प्यारी महामत कहे बेर बेर।। २० ।।

हे धनी! मैं आपसे आपका प्रेम-विरह का दर्द और इश्क बार-बार मांगती हूं, ताकि अपने धनी से प्यार से मिल सकूं।

|| प्रकरण || ६२ || चौपाई || ७३८ ||

राग श्री

जिन सुध सेवा की नहीं, ना कछू समझे बात।
सो काहे को गिनावे आप साथ में, जिन सुध ना सुपन साख्यात।। १ ।।

जिन सुन्दरसाथ को धनी और सुन्दरसाथ की सेवा की समझ नहीं है और जो इस वाणी को नहीं समझते हैं तथा जिन्हें यह सुध भी नहीं है कि संसार सपना है और अपना घर अखण्ड है, तो वह अपने आपको सुन्दरसाथ कहलाने योग्य नहीं हैं।

कमर बांधे देखा देखी, जाने हम भी लगे तिन लार।
ले कबीला कांध पर, हंस्ते चले नर नार।। २ ।।

जो सुन्दरसाथ की चाल को देखकर नकल करते हैं तथा अपने कन्धे पर घर, कुटम्ब, कबीले का बोझ ढो रहे हैं और समझते हैं कि हम भी परमधाम जाएंगे।

ए लोक राह न पावहीं, क्योंए न सुनें पुकार।
ए चले चींटी हार ज्यों, बांधे ऊंट कतार।। ३ ।।

वह संसार के जीवड़े (जीव) वाणी की पुकार को नहीं सुनते और इसलिए इनको पार का रास्ता नहीं मिलता। यह चींटी-हार और ऊंट-कतार की तरह एक-दूसरे के देखा-देखी चलते हैं।

इन लोकों की मैं क्या कहूं, जो जाए पड़े मुख काल।
जो साथ केहेलाए सामिल भए, सो भी कहूं नेक हाल।। ४ ।।

ऐसे संसार के लोगों की मैं क्या कहूं जो जान-बूझकर आवागमन के चक्कर में पड़े हैं। जो तारतम लेकर संसार के जीवड़े (जीव) सुन्दरसाथ में मिल गए हैं उनकी भी थोड़ी सी हकीकत बताती हूं।

दुध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपर का फैन।
दौड़ करें पड़े खैंच में, ए भी लगे दुख देन।। ५ ।।

ऐसे सुन्दरसाथ ने वाणी की हकीकत को नहीं समझा और ऊपर की देखा देखी से सुन्दरसाथ बन गए। वही अब आपस में खेंचा-खेंच (खींच तान) करके लड़ते हैं और दुःखी करते हैं।

Nijanand App

लेने को बुजरकियां, सेवें चातुरी चैन।
सेवा करत सब खैंच की, ए यों लगे दुख देन।।६।।

सुन्दरसाथ के बीच आचार्य, महंत व सम्मानित पदों के लिए चतुराई से सेवा करते हैं और सेवा में भी आपस में लड़-झगड़ कर दुःख देते हैं।

देखा देखी न छूटहीं, सेवत हैं दिन रैन।
खुस बखत होवें खैंच में, ए यों लगे दुख देन।।७।।

देखा-देखी रात-दिन सेवा करते हैं और आपस में सेवा की होड़ में झगड़ते हैं और दुःखी करते हैं।

क्यों ए न प्रबोधें समझें, कोई आद अमल ऐसा घेन।
क्या मूरख क्या समझू, सबे लगे दुख देन।।८।।

यह बार-बार समझाने पर भी नहीं समझते। इन्हें शुरू से अपने अहंकार का नशा चढ़ा है। ऐसे क्या मूर्ख और क्या समझदार, सभी दुःख दे रहे हैं।

सनमुख होए सेवा करें, मुख बोलत मीठे बैन।
तित भी खैंच ऐसी भई, ए भी लगे दुख देन।।९।।

सुन्दरसाथ सामने आकर खूब सेवा करते हैं और मुंह से मीठी-मीठी बातें भी करते हैं। वह भी खींचतान में पड़कर दुःखी करते हैं।

निपट नजीकी सेवहीं, दौड़े एक दूजे पें लेन।
खैंचा खैंच ऐसी करें, ए भी लगे दुख देन।।१०।।

जो बिल्कुल नजदीकी होकर सेवा करते हैं, उनमें भी एक-दूसरे की सेवा छुड़ाने की होड़ लगी है। वह भी ऐसी खींचतान करके दुःख देते हैं।

मन वाचा कर सेवहीं, गलित गात रोवें नैन।
तहां भी खैंच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन।।११।।

कई मन, वचन और कर्म से चर्चा से गलित गात होकर आंखों से आंसू बहाते हैं। उनमें भी होड़ लगी है और दुःखी कर रहे हैं।

सेवक कई समझावहीं, साखी सबे मुख केहेन।
इन भी खैंच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन।।१२।।

कई सुन्दरसाथ एक-दूसरे को चौपाईयां कह-कहकर समझाते हैं! उनमें भी होड़ लगी है और दुःखी कर रहे हैं।

अर्थ अंदर का लेवहीं, समझें इसारत सेन।
खैंच उनकी भी ना गई, वे भी लगे दुख देन।।१३।।

कई वाणी की हकीकत के भेद को समझते हैं। कई इशारों को समझते हैं। इनके अन्दर भी होड़ लगी है और दुःखी कर रहे हैं।

अंदर बाहेर उजले, दोष देखें सब ऐन।
ताए भी खैंच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन।।१४।।

कई अन्दर और बाहर से निर्मल हैं पर औरों के अन्दर अवगुण देखते हैं। उनके अन्दर भी अपनी अच्छाई और दूसरों की बुराई की होड़ ने दुःखी कर रखा है।

Nijanand App

तारतम सब समझहीं, धाम सैयां हम बेहेन।
तित भी क्रोध छूटा नहीं, ए भी लगे दुख देन।। १५ ।।

सब सुन्दरसाथ वाणी को समझते हैं और जानते हैं कि हम सब परमधाम की आत्माएं (बहनें) हैं, फिर भी आपस में झगड़कर दुःख दे रहे हैं।

ए खेल है इन भांत का, क्यों ए न खुले मूल नैन।
निज नजर खुले बिना, कोई न देवे सुख चैन।। १६ ।।

यह इस तरह का खेल है कि यहां किसी को अपनी भूल दिखाई नहीं पड़ती। जब तक अपनी आत्म दृष्टि नहीं खुलती, कोई सुख और शान्ति नहीं देख सकता।

राह निपट बारीक है, तिन बारीक पर बारीक।
साथें लई लीक जाहेरी, सो उतरी लीक थें लीक।। १७ ।।

परमधाम के प्रेम का रास्ता अत्यन्त बारीक (सूक्ष्म) है, परन्तु सुन्दरसाथ जाहिरी रूप से देखकर एक-दूसरे की नकल करते हैं।

काहूं न दरवाजा नजीक, कहां कुलफ किल्ली कल गत।
राह भी नजरों न आवहीं, ए चले जाहेरी ले मत।। १८ ।।

किसी को भी इस माया से निकलने का दरवाजा, ताला चाबी और खोलने की कला मालूम नहीं है। यहां से निकलने का रास्ता भी मालूम नहीं है। इन्हें तो जो सामने दिख रहा है उसे ही अपनी बुद्धि से पकड़ रखा है।

अब कहा कहूं मैं इन पर, कोई ऐसी बनी जो आए।
ए जान बूझ तो भूलहीं, जो इनका कछू न बसाए।। १९ ।।

अब मैं इन सुन्दरसाथ की क्या कहूं? इनकी हालत ही कुछ ऐसी हो गई है। यह जानते-समझते हुए भी गलती करते हैं। इनमें इनका वश नहीं चलता।

राह जुदी दोऊ पेड़ से, तो कहा सके कोई कर।
उन आड़ो पट अंतर, इनों बाहेर पड़ी नजर।। २० ।।

जब शुरू से (श्री देवचन्द्रजी के समय से) ही नसली और नजरी (बिहारीजी और मेहराज ठाकुर) के रास्ते अलग हो गए तो अब कोई क्या कर सकता है? बिहारी जी की आत्मा के सामने माया का पर्दा पड़ा था और मेहराज ठाकुर की आत्म दृष्टि थी।

न तो सूरे क्यों न बल करें, कोई बुरा न आपको चाहे।
दौड़त हैं निस वासर, किन पट न टाल्यो जाए।। २१ ।।

नहीं तो बुद्धिमान लोग माया से क्यों नहीं लड़ते? कोई भी अपना बुरा नहीं चाहता। रात-दिन अपने आत्म-कल्याण के लिए भागे फिरते हैं, फिर भी माया का परदा हटता नहीं है।

महामत केहेवें यों कर, हम सैयां दौड़ी धाए।
पर ए पट सुन्दरबाई बिना, किनहूं न खोल्यो जाए।। २२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं और बिहारीजी दोनों ही आपस में झगड़ा कर जुदा-जुदा रास्ते चल रहे थे और अपने को ठीक समझते थे, परन्तु इस गलतफहमी को सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) जो हकीकत को समझती थीं, उनके बिना कोई हमें बता नहीं सकता।

Nijanand App

बात सुन्दर बाई और है, और उनकी और रवेस।
गत मत उनकी और है, हम लिया सब उनका भेस।। २३ ।।

सुन्दरबाई जिनके अन्दर श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, की रहनी और बुद्धि दुनियां से अलग परमधाम की है। अब मेरे अन्दर धनी श्री देवचन्द्रजी विराजमान हो गए हैं। हमने उनके दिखाए परमधाम के रास्ते को ही ग्रहण किया है।

मोहे सिखापन उनकी, दे फुरमान करी रोसन।
इन्द्रावती तो केहेवहीं, जो दोउ बिध करी चेतन।। २४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहते हैं कि श्री देवचन्द्रजी ने तन छोड़ने से पहले ही मुझे सब कुरान और भागवत की हकीकत समझाई। मुझे सांसारिक तथा परमधाम की होने वाली लीला की सुध देकर सावचेत (सावधान) कर दिया।

।। प्रकरण ।। ६३ ।। चौपाई ।। ७६२ ।।

राग श्री

तमें वाणी विचारी न चाल्या रे वैष्णवो, तमें वाणी विचारी न चाल्यो।
अखर एकनो अर्थ न लाध्यो, मद मस्त थईने हाल्यो।। १ ।।

हे वैष्णवो! तुम वल्लभाचार्यजी की वाणी का विचार करके नहीं चलते हो। तुमने उनकी वाणी के रहस्य के एक शब्द का भी अर्थ नहीं समझा और माया के नशे में चूर होकर चल रहे हो।

सत वाणी वैष्णव ने समझावूं, जेसूं मूल डाल प्रकासी।
श्री मुख आचारज जे ओचरया, तेणे जाए भरमना नासी।। २ ।।

हे वैष्णवो! आओ मैं तुम्हें सतवाणी समझाऊं, जहां से संसार की उत्पत्ति हुई है। श्री वल्लभाचार्यजी ने जो कहा है, उससे सब संशय मिट जाते हैं।

वैष्णव वाणी जो जो विचारी, ए भोम देखी पामो त्रास।
चौद भवनथीं ए वाणी न्यारी, तेमां पेर पेरना प्रकास।। ३ ।।

हे वैष्णवो! यदि तुम इस वाणी को विचार करके देखोगे तो इस संसार को देखकर हैरान हो जाओगे। वल्लभाचार्यजी की वाणी चौदह लोकों से अलग है। इसमें तरह-तरह का ज्ञान दिया है।

प्रथम मोह तत्व नी उतपन, ते माहें थी तत्व पांचे।
ए पांच तत्व थकी चौद लोक प्रगट्या, एमा वैष्णव होय ते न राचे।। ४ ।।

सबसे पहले मोह तत्व की उत्पत्ति हुई और उसमें से पांच तत्व पैदा हुए। पांच तत्व से चौदह लोक बने। जो वैष्णव होते हैं वह इस झूठे संसार में मग्न नहीं होते।

एमा प्रेमे पारब्रह्म पांमिए, ए वाणी बोले रे एम।
अनेक कसोटी आवे जो आड़ी, तो ए निध मूकिए केम।। ५ ।।

वल्लभाचार्यजी की वाणी इस प्रकार कहती है कि प्रेम से ही पारब्रह्म मिलता है, इसलिए लाख संकट आने पर भी प्रेम मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।

वैष्णवो सत वस्त एक देखाडयूं, बीजो कह्यो सर्वे नास।
महाप्रले मां तत्व लेवासे, आंहीं मुझ थकी अजवास।। ६ ।।

हे वैष्णवो! तुमको मैं अखण्ड न्यामत की पहचान कराती हूं जिसके बिना दूसरा सब नाशवान है। यहां प्रलय में पांचों तत्व भी मिट जाएंगे। उस अखण्ड का ज्ञान जो नाशवान नहीं है, मुझसे लो।

Nijanand App

बात सुन्दर बाई और है, और उनकी और रवेस।
गत मत उनकी और है, हम लिया सब उनका भेस।। २३ ।।

सुन्दरबाई जिनके अन्दर श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, की रहनी और बुद्धि दुनियां से अलग परमधाम की है। अब मेरे अन्दर धनी श्री देवचन्द्रजी विराजमान हो गए हैं। हमने उनके दिखाए परमधाम के रास्ते को ही ग्रहण किया है।

मोहे सिखापन उनकी, दे फुरमान करी रोसन।
इन्द्रावती तो केहेवहीं, जो दोउ बिध करी चेतन।। २४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहते हैं कि श्री देवचन्द्रजी ने तन छोड़ने से पहले ही मुझे सब कुरान और भागवत की हकीकत समझाई। मुझे सांसारिक तथा परमधाम की होने वाली लीला की सुध देकर सावचेत (सावधान) कर दिया।

|| प्रकरण || ६३ || चौपाई || ७६२ ||

राग श्री

तमें वाणी विचारी न चाल्या रे वैष्णवो, तमें वाणी विचारी न चाल्यो।
अखर एकनो अर्थ न लाध्यो, मद मस्त थईने हाल्यो।। १ ।।

हे वैष्णवो! तुम वल्लभाचार्यजी की वाणी का विचार करके नहीं चलते हो। तुमने उनकी वाणी के रहस्य के एक शब्द का भी अर्थ नहीं समझा और माया के नशे में चूर होकर चल रहे हो।

सत वाणी वैष्णव ने समझावूं, जेसूं मूल डाल प्रकासी।
श्री मुख आचारज जे ओचरया, तेणे जाए भरमना नासी।। २ ।।

हे वैष्णवो! आओ मैं तुम्हें सतवाणी समझाऊं, जहां से संसार की उत्पत्ति हुई है। श्री वल्लभाचार्यजी ने जो कहा है, उससे सब संशय मिट जाते हैं।

वैष्णव वाणी जो जो विचारी, ए भोम देखी पामो त्रास।
चौद भवनथीं ए वाणी न्यारी, तेमां पेर पेरना प्रकास।। ३ ।।

हे वैष्णवो! यदि तुम इस वाणी को विचार करके देखोगे तो इस संसार को देखकर हैरान हो जाओगे। वल्लभाचार्यजी की वाणी चौदह लोकों से अलग है। इसमें तरह-तरह का ज्ञान दिया है।

प्रथम मोह तत्व नी उतपन, ते माहें थी तत्व पांचे।
ए पांच तत्व थकी चौद लोक प्रगट्या, एमा वैष्णव होय ते न राचे।। ४ ।।

सबसे पहले मोह तत्व की उत्पत्ति हुई और उसमें से पांच तत्व पैदा हुए। पांच तत्व से चौदह लोक बने। जो वैष्णव होते हैं वह इस झूठे संसार में मग्न नहीं होते।

एमा प्रेमे पारब्रह्म पांमिए, ए वाणी बोले रे एम।
अनेक कसोटी आवे जो आड़ी, तो ए निध मूकिए केम।। ५ ।।

वल्लभाचार्यजी की वाणी इस प्रकार कहती है कि प्रेम से ही पारब्रह्म मिलता है, इसलिए लाख संकट आने पर भी प्रेम मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।

वैष्णवो सत व्स्त एक देखाडयूं, बीजो कह्यो सर्वे नास।
महाप्रले मां तत्व लेवासे, आंहीं मुझ थकी अजवास।। ६ ।।

हे वैष्णवो! तुमको मैं अखण्ड न्यामत की पहचान कराती हूं जिसके बिना दूसरा सब नाशवान है। यहां प्रलय में पांचों तत्व भी मिट जाएंगे। उस अखण्ड का ज्ञान जो नाशवान नहीं है, मुझसे लो।

Nijanand App

वैष्णवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपण ने अविनास।
नाम तत्व कह्यूं श्री कृष्ण जी, जे रमे अखंड लीला रास।।७।।

हे वैष्णवो! मोह तत्व से वह अखण्ड न्यामत अलग है जो कि हमको मिली है। इस अखण्ड तत्व का नाम श्री कृष्ण है जो अखण्ड रास लीला खेल रहे हैं।

एहने सरणे सोप्या वैष्णवने, जिहां बिध बिध ना विलास।
हवे नेहेचल रंग कीजे ते पुरुख सों, दई प्रेमनो पास।।८।।

वल्लभाचार्यजी ने वैष्णवों को इन श्री कृष्णजी की शरण में जाने को कहा है। जहां तरह-तरह से विलास की लीला हो रही है। अब उस अखण्ड श्री कृष्णजी से प्रेम के द्वारा अखण्ड आनन्द प्राप्त करें।

पुरुखपणें ए दृष्टें न आवे, ए अबलापणें लीजे अंग।
पुरुख नथी ए विना कोई बीजो, जे रमे नेहेचल लीला रंग।।९।।

इन श्री कृष्ण का दर्शन पुरुष भाव से नहीं मिलता। सखी भाव से मिलता है। इनके बिना और कोई दूसरा पुरुष नहीं है जो अखण्ड लीला खेल रहा हो।

ए प्रीछो तो पारब्रह्म चित आवे, समझे सुपन परूं थाय।
अखंड तणां सुख एणी पेरे लीजे, लाहो मायामां लेवाय।।१०।।

इनकी पहचान कर लो तो फिर पारब्रह्म का ध्यान आएगा और सपना छूट जाएगा। माया के अन्दर रहकर इस तरह से अखण्ड सुख प्राप्त करें।

सत वस्त घणूं स्या ने प्रकासूं, अर्थी बिना नव कहिये।
एहेना नेहेचल नेहड़ा गोप भला, आ उलटीमां प्रगट न थैये।।११।।

वह सत वस्तु (पारब्रह्म का ज्ञान) किसको दूं? कोई लेने वाला पात्र नहीं है। इनका अखण्ड प्रेम छिपा है जो झूठी माया में जाहिर नहीं करना चाहिए।

अर्थी होय ते आवी ने पूछे, मोटी मत तेहेने दाखूं।
ए निध देवा जोग नहीं, तेथीं अंतर राखूं।।१२।।

जो कोई इसका पात्र होगा वह आकर पूछेगा, तो मैं उसे अखण्ड पारब्रह्म का ज्ञान बताऊंगी। दूसरा कोई इसको लेने योग्य नहीं है, इसलिए उसे छिपा कर रखा है।

गुण मुख बोली भलूं न मनावूं, अवगुण न राखूं छानो।
सत वस्त देवाने सत भाखूं, एमा दुख मानो ते मानो।।१३।।

किसी का गुण गाना मैं अच्छा नहीं समझती और अवगुण को मैं छिपाती नहीं हूं। सत (पारब्रह्म) का ज्ञान देने के वास्ते ही सत बोलती हूं। इस वास्ते किसी को दुःख होता है तो हुआ करे।

पतलीने तमें पगला भरिया, लाग्यो स्वाद संसार।
पुरुखपणे रमया माया मां, तो आड़ी आवी अंधार।।१४।।

तुम संसार के स्वाद में लगकर वेश्या जैसी चाल चल रहे हो। इस संसार में अपने को पुरुष समझ रहे हो, इसलिए माया तुम्हारे आड़े आ रही है।

जोयूं नहीं तमें जागीने, अमृत ढोली ने विख पीधूं।
असत मंडल ने सतकरी समझया, अखंड ने वांसो दीधूं।।१५।।

तुमने सावचेत (सावधान) होकर पहचाना नहीं और अमृत को गिराकर विष पी लिया। झूठे ब्रह्माण्ड को सच्चा समझ बैठे हो और अखण्ड धाम को छोड़ बैठे हो।

Nijanand App

अंध थके तमें ए निध खोई, जे तमने सत स्वामिऐं दीधी।
कठण वचन तो कहूं छूं तमने, जो तमें दुष्टाई कीधी।। १६ ।।

तुमने वल्लभाचार्यजी की दी हुई निधि को अन्धे बनकर गंवा दिया। तुमने ऐसी दुष्टता की है, इसलिए मैं तुमको कठिन शब्द कहती हूं।

नहीं तो करूं कटका जे जिभ्या वदे वांकू, पणतमें लछणें आप एम कहावो।
जे स्वामी अविचल सुख आपे, तेहने तमें कां निंदावो।।१७।।

नहीं तो ऐसी जबान जो किसी को कठोर शब्द कहे, मैं उसके टुकड़े कर दूं, परन्तु अपनी रहनी से ही ऐसा कहलवाते हो, जो वल्लभाचार्य स्वामी अखण्ड तत्व का ज्ञान देते हैं तुम उनकी निन्दा क्यों करवाते हो?

ओलख्या नहीं तमें आचारज जी ने, तो भरम माहें भमया।
वैष्णव सकलने तमें वांकू कहावो, तो तमें नीचा नमया।। १८ ।।

तुमने वल्लभाचार्यजी को पहचाना नहीं और माया में भूल गए, इसलिए हे वैष्णवो! तुम्हारी उलटी चाल ने ही वैष्णव धर्म को झुकाया है।

पतिव्रता नारी ते पति ने पूजे, सेवे ते अनेक पेरे।
पिउ पर वचन सुणे जो वांकू, तो देह त्याग तिहां करे।। १९ ।।

पतिव्रता स्त्री पति की अनेक प्रकार से सेवा करती है। उसको यदि कोई पति के लिए गलत शब्द कह दे तो वह तुरन्त अपने तन को त्याग देती है।

तमें वांकू विसमूं कांई नव जोयूं, जेम भामनी भूंडी भंडावे।
कुकरम करतां कांई न विचारे, पछे नाहो ने नीचू जोवरावे।। २० ।।

जिस तरह से दुष्टा स्त्री अपने पति को बदनाम करती है, उसी प्रकार तुमने उलटा रास्ता पकड़ते समय कुछ विचार नहीं किया। ऐसी दुष्टा स्त्री नीच कर्म करते समय कुछ नहीं विचारती। वही स्त्री पीछे पति को कलंक लगवाती है।

एणी पेरे सेव्या तमें स्वामीने, चितसूं जुओ विचारी।
दुष्टपणें तमें धणी ने दुखवया, हवे केही पेर थासे तमारी।। २१ ।।

आप जरा चित्त से विचार कर देखो तो तुमने भी ऐसी दुष्टा स्त्री की तरह अपने इष्ट श्री कृष्णजी की सेवा की है। तुम्हारी इस दुष्टता ने तुम्हारे धनी को दुःखी किया है, तो अब तुम्हारा क्या हाल होगा?

सत कहे संतोख उपजे, कुली तणे कांधे चढ्या।
ते वैष्णव नहीं तेथी रहिए वेगला, जे ए निध मूकी पाछा पडया।। २२ ।।

संसार की परवाह न करके माया की चाहना (मान मर्यादा) को ठोकर मारकर जिसको श्री कृष्णजी को मानने में सन्तोष होता है वही वैष्णव है। जो इससे उलटा चलता है वह वैष्णव नहीं है। उससे अलग रहो।

केहेतां सवलूं आंणे चित अवलूं, वस्त विना करे विवाद।
महामत कहे तेहने केम मलिए, जे करे अवला उदमाद।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सीधा कहने में जो उलटा समझते हैं, बिना आधार के विवाद करते हैं (झगड़ते हैं) और उलटा पागलपन दिखाते हैं, उनको हम क्या समझाएं?

|| प्रकरण || ६४ || चौपाई || ७८५ ||

Nijanand App

राग श्री

ए माया आद अनाद की, चली जात अंधेर।
निरगुन सरगुन होए के व्यापक, आए फिरत है फेर।। १ ।।

यह बनने मिटने वाली माया अनादि काल से ही अज्ञान के अन्धकार में डूबी चली जाती है। इस संसार में माया निराकार और साकार होकर सबके अन्दर व्यापक है और जन्म-मरण का चक्कर चलाती है।

ना पेहेचान प्रकृत की, ना पेहेचान हुकम।
ना सुध ठौर नेहेचल की, और ना सुध सरूप ब्रह्म।। २ ।।

इस ब्रह्माण्ड में न किसी को प्रकृति की पहचान है और न जिसके हुकम से यह बनी है उसकी (अक्षर ब्रह्म की) और न अखण्ड घर परमधाम की और न ही यहां पारब्रह्म की पहचान है।

सुध नाहीं निराकार की, और सुध नाहीं सुंन।
सुध ना सरूप काल की, ना सुध भई निरंजन।। ३ ।।

इसमें न किसी को निराकार की खबर है और न ही शून्य, काल तथा निरंजन की खबर है।

ना सुध जीव सरूप की, ना सुध जीव वतन।
ना सुध मोह तत्व की, जिनथें अहं उतपन।। ४ ।।

न जीव के स्वरूप की, न जीव के घर की और न मोह तत्व जिससे अहंकार की उत्पत्ति हुई है, की खबर है।

सास्त्रों जीव अमर कह्यो, और प्रले चौदे भवन।
और प्रले पांचो तत्व, और प्रले कहे त्रिगुन।। ५ ।।

शास्त्रों ने जीव को अमर तथा चौदह लोक, पांच तत्व और तीन गुणों को नाशवान कहा है।

और प्रले प्रकृत कही, और प्रले सब उतपन।
ना सुध ब्रह्म अद्वैत की, ए कबहूं न कही किन।। ६ ।।

शास्त्रों ने प्रकृति को तथा इससे जो पैदा हुए हैं सभी को नाशवान बताया है। इसमें अद्वैत पारब्रह्म की पहचान किसी ने नहीं बताई।

ए त्रिगुन की पैदास जो, सो समझे क्यों कर।
त्रिगुन उपजे अहं थें, और हिजाब अहं के पर।। ७ ।।

यह सारी सृष्टि त्रिगुण से पैदा है। त्रिगुण अहंकार से पैदा हुए हैं। अहंकार के परे निराकार का आवरण है, इसलिए इसके अन्दर के जीव अद्वैत (पारब्रह्म) को कैसे समझेंगे?

ए आद के संसे अबलों, किनहूं न खोले कब।
सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब।। ८ ।।

यह शुरू से ही संशय चले आ रहे हैं जिसे आज तक किसी ने नहीं खोला। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब श्री प्राणनाथजी (पारब्रह्म) ने आकर वह सब मुझे बता दिया है।

रूहअल्ला की मेहेर से, उपज्यो एह इलम।
और महंमद की मेहेर थें, सुध कहूं माया ब्रह्म।। ९ ।।

रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) की मेहर (कृपा) से यह ज्ञान मिला और श्री प्राणनाथजी आखिरी मुहम्मद की मेहर से माया और ब्रह्म की पहचान कराती हूं।

Nijanand App

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम।। १० ।।

सबलिक ब्रह्म ऐसे करोड़ो माया के ब्रह्माण्ड बनाते और मिटाते हैं। यही सबलिक ब्रह्म प्रकृति और त्रिगुण का मूल ठिकाना है।

कई इंड अछर की नजरों, पल में होय पैदास।
ऐसे ही उड़ जात हैं, एकै निमख में नास।। ११ ।।

अक्षर के एक पल में ऐसे कई ब्रह्माण्ड पैदा होकर मिट जाते हैं।

केवल ब्रह्म अछरातीत, सत-चित-आनन्द ब्रह्म।
ए कह्यो मोहे नेहेचेकर, इन आनन्द में हम तुम।। १२ ।।

सिर्फ अक्षरातीत ही पारब्रह्म सच्चिदानन्द हैं। श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी ने मुझे आकर यह दृढ़ता से बताया कि यही हमारा और सब सुन्दरसाथ के आनन्द का घर है।

कहे कतेब साहेदी साहेब की, दे न सके कोई और।
खुदाए की खुदाए बिना, किन पाया नाहीं ठौर।। १३ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान ग्रन्थ यही कहते हैं कि खुदा की गवाही खुदा के सिवाय और कोई नहीं दे सकता, क्योंकि खुदा के घर का खुदा के सिवाय किसी को पता नहीं है।

ए कतेब यों कहत है, हादी सोई हक।
बिना साहेब साहेब वतन की, कोई और न मेटे सक।। १४ ।।

अंजील, जंबूर तौरेत, कुरान सभी कहते हैं कि खुदा की हकीकत जो बताता है, वही हादी है, वही हक है। उस साहेब के बिना साहेब के घर की पहचान और कोई नहीं दे सकता।

संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए।
सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख बरन्यो न जाए।। १५ ।।

सतगुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (श्यामाजी) ने ही आकर सब संशय मिटाए और साहेब पारब्रह्म खुदा की पहचान कराई। उस अखण्ड वतन तथा उस अखण्ड स्वरूप की शोभा का वर्णन इस मुंह से नहीं हो सकता।

साख पुराई वेद ने, और पूरी साख कतेब।
अनुभव करायो आतमा, जो न आवे मिने हिसेब।। १६ ।।

खुदा की गवाही खुदा ही देगा। इस बात की गवाही वेद और कतेब ने दी। आत्मा ने भी अनुभव किया जिसे यहां के शब्दों में वर्णन करना सम्भव नहीं है।

हबीब बताया हादिएं, मेरा ही मुझ पास।
कर कुरबांनी अपनी, जाहेर करूं विलास।। १७ ।।

श्यामाजी ने आकर मेरे प्यारे धनी की पहचान कराई। वह मेरा प्यारा धनी मेरे अन्दर विराजमान है। अब मैं अपनी कुर्बानी करके धनी के आनन्द को जाहिर करती हूं।

तुम देखत मोहे इन इंड में, मैं चौदे तबक से दूर।
अंतरगत ब्रह्मांड तें, सदा साहेब के हजूर।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साथजी! तुम मुझे माया का तन होने के कारण इस ब्रह्माण्ड में समझ रहे हो। मैं चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड से बहुत दूर, ब्रह्माण्ड से अलग, सदा अपने धनी के पास रहती हूं।

Nijanand App

ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद।
सो आप आखिर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद।। १९ ।।

वेद और कतेब में ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की जो पहचान बताई है, श्री राजजी महाराज ने आकर अपने सब भेद खोले।

महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन।
दुनियां करी सब कायम, सही भए महंमद के वचन।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम की आत्माएं हैं, वह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं। उन्हीं के लिए सारी दुनियां को अखण्ड किया और रसूल मुहम्मद की कही वाणी को सही ठहराया।

।। प्रकरण ।। ६५ ।। चौपाई ।। ८०५ ।।

सैयां मेरी सुध लीजियो, जो कोई अहेल किताब।
तुम ताले लिख्या नूरतजल्ला, सुनके जागो सिताब।। १ ।।

हे कुरान के वारिस ब्रह्मसृष्टि (मोमिनो)! मेरी पहचान करना तुम्हारे नसीब में नूरतजल्ला (पारब्रह्म) ही लिखा है। उसकी हकीकत मुझ से समझकर जल्दी से सावधान हो जाओ।

ना छूटी सरीयत करम की, ना छूटी तरीकत उपासन।
मगज न पावे माएना, चले सब बस परे मन।। २ ।।

हिन्दुओं से कर्मकाण्ड और उपासना तथा मुसलमानों से शरीयत और तरीकत की रस्में नहीं छूटीं। उनको कुरान और पुराण की हकीकत की जानकारी नहीं है। सब मन के वश में होकर भटक रहे हैं।

दोऊ दौड़ करत हैं, हिंदू या मुसलमान।
ए जो उरझे बीच में, इनका सुन्य मकान।। ३ ।।

हिन्दू और मुसलमान दोनों दौड़ते हैं, परन्तु निराकार में जाकर उलझ जाते हैं।

जोगारंभी या कसबी, पोहोंचे ला मकान।
मोह तत्व क्यों ए न छूटहीं, कह्या परदा ऊपर आसमान।। ४ ।।

योग करने वाले हिन्दू या कसबी करने वाले मुसलमान निराकार तक ही पहुंचते हैं। इन किसी ने भी मोहतत्व को पार नहीं किया। इनके लिए खुदा (पारब्रह्म) आसमान के परदे में ही रह गया।

एक इलम ले दौड़हीं, और ले दौड़े ग्यान।
तित बुध न पोहोंचे सब्द, ए भी थके इन मकान।। ५ ।।

हिन्दू ज्ञान लेकर तथा मुसलमान इलम से दौड़े, परन्तु निराकार में जाकर फंस गए। इनकी बुद्धि आगे नहीं जा सकी।

दूजी कुरसी इत तरीकत, जाहेरी ऊपर फुरमान।
हकीकत मारफत की, ना किन किया बयान।। ६ ।।

दूसरी बन्दगी (तरीकत, उपासना) से मलकूत (बैकुण्ठ) की प्राप्ति होती है। यह शरीयत और तरीकत (कर्मकाण्ड और उपासना) की जाहिरी बन्दगी जीवों की बन्दगी है, ऐसा कुरान में फरमाया है। हकीकत और मारफत (ज्ञान और विज्ञान) की बन्दगी का वर्णन किसी ने नहीं किया।

Nijanand App

ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद।
सो आप आखिर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद।। १९ ।।

वेद और कतेब में ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की जो पहचान बताई है, श्री राजजी महाराज ने आकर अपने सब भेद खोले।

महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन।
दुनियां करी सब कायम, सही भए महंमद के वचन।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम की आत्माएं हैं, वह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं। उन्हीं के लिए सारी दुनियां को अखण्ड किया और रसूल मुहम्मद की कही वाणी को सही ठहराया।

|| प्रकरण || ६५ || चौपाई || ८०५ ||

सैयां मेरी सुध लीजियो, जो कोई अहेल किताब।
तुम ताले लिख्या नूरतजल्ला, सुनके जागो सिताब।। १ ।।

हे कुरान के वारिस ब्रह्मसृष्टि (मोमिनो)! मेरी पहचान करना तुम्हारे नसीब में नूरतजल्ला (पारब्रह्म) ही लिखा है। उसकी हकीकत मुझ से समझकर जल्दी से सावधान हो जाओ।

ना छूटी सरीयत करम की, ना छूटी तरीकत उपासन।
मगज न पावे माएना, चले सब बस परे मन।। २ ।।

हिन्दुओं से कर्मकाण्ड और उपासना तथा मुसलमानों से शरीयत और तरीकत की रस्में नहीं छूटीं। उनको कुरान और पुराण की हकीकत की जानकारी नहीं है। सब मन के वश में होकर भटक रहे हैं।

दोऊ दौड़ करत हैं, हिंदू या मुसलमान।
ए जो उरझे बीच में, इनका सुन्य मकान।। ३ ।।

हिन्दू और मुसलमान दोनों दौड़ते हैं, परन्तु निराकार में जाकर उलझ जाते हैं।

जोगारंभी या कसबी, पोहोंचे ला मकान।
मोह तत्व क्यों ए न छूटहीं, कह्या परदा ऊपर आसमान।। ४ ।।

योग करने वाले हिन्दू या कसबी करने वाले मुसलमान निराकार तक ही पहुंचते हैं। इन किसी ने भी मोहतत्व को पार नहीं किया। इनके लिए खुदा (पारब्रह्म) आसमान के परदे में ही रह गया।

एक इलम ले दौड़हीं, और ले दौड़े ग्यान।
तित बुध न पोहोंचे सब्द, ए भी थके इन मकान।। ५ ।।

हिन्दू ज्ञान लेकर तथा मुसलमान इलम से दौड़े, परन्तु निराकार में जाकर फंस गए। इनकी बुद्धि आगे नहीं जा सकी।

दूजी कुरसी इत तरीकत, जाहेरी ऊपर फुरमान।
हकीकत मारफत की, ना किन किया बयान।। ६ ।।

दूसरी बन्दगी (तरीकत, उपासना) से मलकूत (बैकुण्ठ) की प्राप्ति होती है। यह शरीयत और तरीकत (कर्मकाण्ड और उपासना) की जाहिरी बन्दगी जीवों की बन्दगी है, ऐसा कुरान में फरमाया है। हकीकत और मारफत (ज्ञान और विज्ञान) की बन्दगी का वर्णन किसी ने नहीं किया।

Nijanand App

सो खिताब खोलन का, हुकम हादी पर।
जो औलाद आदम हवा की, सो खोले क्यों कर।। ७ ।।

हकीकत और मारफत की बन्दगी (ज्ञान और विज्ञान की बन्दगी) का रहस्य खोलने का हुकम श्यामाजी पर है। आदम (नारायण) की औलाद जो जीवसृष्टि है, वह इन रहस्यों को कैसे खोल सकती हैं?

पातसाह अबलीस दिल पर, सब पर हुआ हुकम।
इन दोऊ की अकल सों, कहें खोलें बातून हम।। ८ ।।

क्योंकि जीवसृष्टि के दिलों पर शैतान अबलीस (मन, नारद) की बादशाही है और उसी के हुकम के यह अधीन है। कहते हैं कि हम अपनी अक्ल से हकीकत और मारफत दोनों के भेद खोलेंगे।

जहां कछुए है नहीं, सब कहें बेचून बेचगून।
सुन्य निराकार निरंजन, बेसबी बे निमून।। ९ ।।

जहां कुछ नहीं है हिन्दू उसे शून्य, निराकार, निरंजन कहते हैं और मुसलमान उसी को बेचून, बेचगून, बेशबी और बेनिमून कहते हैं।

इत खावंद तो न पाइए, बीच आप के ऐब।
पीछे कहें हम पाया बातून, हम हीं हैं साहेब।। १० ।।

यहां अहंकार रूपी ऐब (दोष) होने के कारण से किसी को भी पारब्रह्म की पहचान नहीं होती। पीछे अपने समाज में कहते हैं कि हमें सब भेदों का पता है और हम ही ब्रह्म हैं।

आतम रूह न चीन्ह हीं, ले माएने इलम ग्यान।
आप खुदा हो बैठहीं, ए अबलीसें फूके कान।। ११ ।।

इलम और ज्ञान से रूह और आत्मा की पहचान मुसलमान या हिन्दू किसी को नहीं है। वह अपने आप को खुदा समझ बैठे हैं (अहं ब्रह्मास्मि), क्योंकि इनको ज्ञान देने वालों के दिलों में अबलीस (शैतान) बैठा है।

लोक जिमी आसमान के, तिनके सब्द अकल चित मन।
सो आगूं ना चल सके, रहे हवा बीच सुंन।। १२ ।।

इस ब्रह्माण्ड के अन्दर के हिन्दू मुसलमान के शब्द, अक्ल, चित्त और मन निराकार, शून्य में रह गए। आगे नहीं जा सके।

एह सिपारे दूसरे, या बिध कर लिखे बयान।
बीच हवा के पलना, चौदे तबक झुलान।। १३ ।।

यह कुरान के दूसरे सिपारे सायकूल में लिखा है—यह चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड निराकार, हवा, शून्य में पलने की तरह झूल रहा है।

भूले सब जुदे पड़े, माएना सबों का एक।
ए सतगुर हादी बिना, क्यों कर पावे विवेक।। १४ ।।

हिन्दू और मुसलमान दोनों ही भूलकर अलग हो गए हैं जबकि दोनों का मालिक एक ही है। यह सतगुरु, श्यामाजी और हादी श्री प्राणनाथजी के बिना इसके भेद कैसे पा सकते हैं? और कोई दे नहीं सकता।

Nijanand App

हवा पार महंमद नूर कह्या, नूर पार तजल्ला नूर।
अर्ज करी वास्ते उमत, पोहोंच के हक हजूर।। १५ ।।

निराकार के पार मुहम्मद साहब ने नूर (अक्षर) को तथा नूर (अक्षर) के पार नूरतजल्ला (परमधाम अक्षरातीत) बताया है, जहां पर पारब्रह्म अक्षरातीत के सामने जाकर उन्होंने अपनी उम्मत (ब्रह्मसृष्टि) के वास्ते अर्ज की।

नब्बे हजार हरफ कहे, यों कर किया हुकम।
तीस हजार जाहेर करो, आखिर बाकी खोलें हम।। १६ ।।

खुदा ने नब्बे हजार शब्द कहकर (बातें कहकर) हुकम किया कि तीस हजार शरीयत के शब्द जाकर जाहिर करो और बाकी शब्दों को आखिरत के वक्त में मैं खुद आकर बताऊंगा।

सो जाहेरी सब जानत, जो ले खड़े सरीयत।
और मुदा बिलंदी गुझ रख्या, सो खोलसी बीच आखिरत।। १७ ।।

शरीयत पर चलने वाले मुसलमान यह सब जानते हैं। वह महान गुझ (गुह्य) ज्ञान जो छिपा रखा है वह खुद खुदा आखिरत में आकर खोलेंगे, ऐसा भी सब मुसलमान जानते हैं।

सोई साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल।
भिस्त दरवाजे कायम, सबको देसी खोल।। १८ ।।

खुदा ने मुहम्मद साहब से वायदा किया था कि मैं आखिर में आऊंगा और सबके वास्ते बहिश्त के दरवाजे खोलूंगा।

काजी होए के बैठसी, हिसाब लेसी सबन।
पल में प्रले करके, उठाए लेसी ततखिन।। १९ ।।

मैं काजी (न्यायाधीश) बनकर बैठूंगा तथा सबका हिसाब लूंगा। पल में प्रलय करके सबको योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड कर दूंगा।

ए सब उमत कारने, आखिर करी सरत।
देसी भिस्त सबन को, सो रूहअल्ला की बरकत।। २० ।।

यह सब उम्मत (ब्रह्मसृष्टि) के वास्ते ही आखिरत में आने का वायदा किया था। श्यामाजी की कृपा से सबको अखण्ड बहिश्तों में कायमी मिलेगी।

सो हुकम हादी का छोड़ के, छोड़ साहेब के पाए।
बीच अंधेरी सुन्य के, जाए जल बिन गोते खाए।। २१ ।।

ऐसे श्री राजजी महाराज के हुकम और चरणों को छोड़कर यह जाहिरी मुसलमान बिना जल के भवसागर में ही अंधे होकर गोते खा रहे हैं।

अब पूछो दिल अपना, इत कहां रह्या आकीन।
मुख से कहें हम महंमद के, कायम खड़े बीच दीन।। २२ ।।

हे जाहिरी मुसलमानो! अब तुम सुनो। अपने मुख से कहते हो कि हम मुहम्मद के दीन पर खड़े हैं। अब अपने दिल से पूछकर देखो तुम्हारा यकीन कहां का है?

Nijanand App

ए विचारे क्या करें, सुख ताले लिख्या नाहें।
न तो जान बूझ पढ़े आरिफ, क्यों पड़े दोजख माहें।। २३ ।।

यह जाहिरी मुसलमान बेचारे क्या करें? इनके नसीब में सुख लिखा ही नहीं। वरना पढ़े-लिखे ज्ञानी लोग जान-बूझकर दोजख की आग में नहीं जलते।

तो आंखां मूंदे कहे, और बेहेरे कहे श्रवण।
पढ़े तो पावें नहीं, कुलफ दिलों पर इन।। २४ ।।

इसलिए इन पढ़े-लिखे लोगों को आंखों से अन्धा और कानों से बहरा कहा है, क्योंकि इनके दिलों पर ताला लगा है और यह उस रहस्य को नहीं समझ सकते।

सो पोहोंची सरत सबन की, हुए वेद कतेब रोसन।
ए सदी अग्यारहीं बीच में, होसी दोजख भिस्त सबन।। २५ ।।

अब पुराण और कुरान की भविष्यवाणी में लिखा समय आ गया है और रहस्य वाली छिपी बातें जाहिर हो रही हैं। ग्यारहवीं सदी के बीच इमाम मेंहदी साहेब जाहिर होकर सबका हिसाब लेकर बहिश्त और दोजख का हुकम देंगे, ऐसा कुरान में लिखा है।

दिया दोऊ हाथों कर, सिर साहेबें खिताब।
महामत खोले सो माएने, आगे अहेल किताब।। २६ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने दोनों हाथों से मुझे आशीर्वाद देते हुए सुन्दरसाथ को वेद-कतेब के छिपे भेदों के रहस्य खोलने की जिम्मेदारी दी।

ए अहमद अल्ला के हुकमें, महंमद कह्या समझाए।
अब क्या कहिए तिनको, जो ए सुनके फेर उरझाए।। २७ ।।

श्री राजजी (मुहम्मद) और श्री श्यामाजी (अहमद) के हुकम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने (मैंने) समझाया। इतना सुनकर भी जिनके संशय नहीं जाते तो उन्हें और क्या समझाया जाए।

|| प्रकरण || ६६ || चौपाई || ८३२ ||

राग सिंधुड़ा

वाटडी विसमी रे साथीडा वेहदतणी, ऊवट कोणे न अगमाय।
खांडानी धारे रे एणी वाटें चालवूं, भाला अणी केहेने न भराय।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! बेहद का रास्ता कठिन, ऊबड़-खाबड़ है, जिस पर किसी से चला नहीं जाता। इस रास्ते पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है। भाले की नोंक ऐसी चुभती है जो किसी से सहन नहीं होती।

आडी ने आडी रे अगनी जोने पर जले, वैराट माहें न समाय।
ब्रह्मांड फोडीने झालो जोने नीसरी, ओलाडी ते केहेने न जाय।। २ ।।

माया की आग की लपटें जल रही हैं जिससे पैर जलते हैं। यह चौदह लोकों के वैराट में समाती नहीं है। इस ब्रह्माण्ड के बाहर भी आग की लपटें फैली हुई हैं, इसलिए कोई इनको उलंघ कर आगे नहीं जा सका।

Nijanand App

ए विचारे क्या करें, सुख ताले लिख्या नाहें।
न तो जान बूझ पढ़े आरिफ, क्यों पड़े दोजख माहें।। २३ ।।

यह जाहिरी मुसलमान बेचारे क्या करें? इनके नसीब में सुख लिखा ही नहीं। वरना पढ़े-लिखे ज्ञानी लोग जान-बूझकर दोजख की आग में नहीं जलते।

तो आंखां मूंदे कहे, और बेहेरे कहे श्रवण।
पढ़े तो पावें नहीं, कुलफ दिलों पर इन।। २४ ।।

इसलिए इन पढ़े-लिखे लोगों को आंखों से अन्धा और कानों से बहरा कहा है, क्योंकि इनके दिलों पर ताला लगा है और यह उस रहस्य को नहीं समझ सकते।

सो पोहोंची सरत सबन की, हुए वेद कतेब रोसन।
ए सदी अग्यारहीं बीच में, होसी दोजख भिस्त सबन।। २५ ।।

अब पुराण और कुरान की भविष्यवाणी में लिखा समय आ गया है और रहस्य वाली छिपी बातें जाहिर हो रही हैं। ग्यारहवीं सदी के बीच इमाम मेंहदी साहेब जाहिर होकर सबका हिसाब लेकर बहिश्त और दोजख का हुकम देंगे, ऐसा कुरान में लिखा है।

दिया दोऊ हाथों कर, सिर साहेबें खिताब।
महामत खोले सो माएने, आगे अहेल किताब।। २६ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने दोनों हाथों से मुझे आशीर्वाद देते हुए सुन्दरसाथ को वेद-कतेब के छिपे भेदों के रहस्य खोलने की जिम्मेदारी दी।

ए अहमद अल्ला के हुकमें, महंमद कह्या समझाए।
अब क्या कहिए तिनको, जो ए सुनके फेर उरझाए।। २७ ।।

श्री राजजी (मुहम्मद) और श्री श्यामाजी (अहमद) के हुकम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने (मैंने) समझाया। इतना सुनकर भी जिनके संशय नहीं जाते तो उन्हें और क्या समझाया जाए।

॥ प्रकरण ॥ ६६ ॥ चौपाई ॥ ८३२ ॥

राग सिंधुड़ा

वाटडी विसमी रे साथीडा वेहदतणी, ऊवट कोणे न अगमाय।
खांडानी धारे रे एणी वाटें चालवूं, भाला अणी केहेने न भराय।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! बेहद का रास्ता कठिन, ऊबड़-खाबड़ है, जिस पर किसी से चला नहीं जाता। इस रास्ते पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है। भाले की नोंक ऐसी चुभती है जो किसी से सहन नहीं होती।

आडी ने आडी रे अगनी जोने पर जले, वैराट माहें न समाय।
ब्रह्मांड फोडीने झालो जोने नीसरी, ओलाडी ते केहेने न जाय।। २ ।।

माया की आग की लपटें जल रही हैं जिससे पैर जलते हैं। यह चौदह लोकों के वैराट में समाती नहीं है। इस ब्रह्माण्ड के बाहर भी आग की लपटें फैली हुई हैं, इसलिए कोई इनको उलंघ कर आगे नहीं जा सका।

Nijanand App

इहां हस्ती थई ने एणी वाटे हींडवूं, पेसवूं सुईना नाका मांहें।
आल न देवी रे भाई आकार ने, झांप तो भैरव खाए।। ३ ।।

इस रास्ते पर मस्त हाथी की तरह चलना है। अपने अहंकार को मिटाकर अपने को इतना निर्मल बना लेना है, उस धागे के समान जो सुई के नाके में से सहज ही निकल जाता है अर्थात् गरीबी और नम्रता को ग्रहण कर यहां से चलना है। इस शरीर को आलस्य नहीं आने देना। यहां तो अपने आपको समर्पण कर भैरव झांप खानी है, अर्थात् माया रूपी पहाड़ से कूदना है।

ओतड दीसे रे अति घणूं दोहेली, हाथ न थोभे रे पाय।
काम नहीं रे इहां कायर तणूं, सूरे पूरे घायलें लेवाय।। ४ ।।

यह औघट (ऊबड़-खाबड़) रास्ता बड़ा कठिन दिखाई देता है। यहां मोह रूपी ऐसी फिसलन है कि यहां पर हाथ पैर नहीं टिकते। इस रास्ते पर चलना कायरों का काम नहीं है। इस रास्ते पर पूरा शूरवीर ही चल सकता है जो चोट पर चोट खाने पर भी हौसला न छोड़े और आगे बढ़ता जाए।

सागरना पंथ रे बीजा जो ने पाधरा, चाले चाले उतरता उजाए।
स्वांत लईने सेहेजल सुखमां, प्रघल जाय रे प्रवाहे।। ५ ।।

भवसागर के दूसरे रास्ते (कर्मकाण्ड के रास्ते) आराम से चलकर पार किए जा सकते हैं। शान्ति और सरलता से सुख प्राप्त होते हैं। वह तो माया के प्रवाह में ही मिलते हैं।

ते तो आकार करे रे जोने उजला, माहें तो अधम अंधार।
खाय ने पिए रे सेज्या सुख भोगवे, एणी वाटे चालतां करार।। ६ ।।

ऐसी राह पर चलने वाले लोग अपने तन की स्वच्छता दिखाते हैं, परन्तु उनके अन्दर माया का घोर अन्धकार भरा होता है। यह खाने-पीने तथा सेज (शैया) का सुख भोगने में ही आराम समझते हैं।

भ्रांत माहेली जिहां भाजे नहीं, तिहां लगे जाय नहीं कपट।
भेख ने बनावो रे अनेक विधना, पण मूके नहीं वेहेवट।। ७ ।।

जब तक अन्दर के संशय नहीं मिट जाते तब तक छल और कपट नहीं छूटता। वह तरह-तरह के भेष बनाकर भी रूढ़िवादिता (कुल के रीति-रिवाज) को नहीं छोड़ते।

वेहद वाटे रे कपट चाले नहीं, राखे नहीं रज मात्र।
जेने आवो रे ते तो पेहेलूं आगमी, पछे ने करूं प्रेमना पात्र।। ८ ।।

बेहद के रास्ते में थोड़ा भी छल और कपट नहीं चलता। जिसको इस बेहद के रास्ते पर आना हो वह पहले मेरे पास आए। मैं उनको प्रेम का सच्चा पात्र बना दूंगी।

भ्रांत माहेंली रे महामत भाजवी, रदे माहें करवो प्रकास।
पछे ने देखाडूं घेर मुख आगल, जेम सोहेलो आवे मारो साथ।। ९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं उनके संशय मिटाकर उनके अन्दर ज्ञान का प्रकाश कर दूंगी और फिर उनको मैं परमधाम दिखा दूंगी, जिससे मेरे सुन्दरसाथ सरलता से आ जाएं।

|| प्रकरण || ६७ || चौपाई || ८४१ ||

Nijanand App

राग श्री धौल धना

अटकलें ए केम पांमिए, ए तो नहीं पंथ प्रपंच मारा संमंधी।
एणे पगले न पोहोंचाय, जिहां चोकस न कीजे चित मारा संमंधी।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अटकल के ज्ञान से पारब्रह्म को नहीं पाया जा सकता है। मेरे निसबती सुन्दरसाथजी! धनी को पाना झूठ का मार्ग नहीं है। जब तक चित्त को चौकस (एकाग्र) नहीं कर लोगे, तब तक धनी के पास नहीं पहुंचा जाएगा।

जिहां अटकल तिहां भ्रांतडी, अने भ्रांत तो थई आडी पाल।
पार जवाय पूरण दृष्टे, इहां रज न समाय पंपाल।। २ ।।

जहां पर अटकल है वहां संशय है। संशय ही परदा है। निराकार के पार जाना है तो पक्के ईमान वाला ही जा सकता है। एक कण के बराबर भी पाखण्ड यहां नहीं चलेगा।

भ्रांत आडी जिहां भाजे नहीं, तिहां माहें थी न पूरे साख।
वचन रुदे प्रकासी ने, जिहां आतमा न देखे साख्यात।। ३ ।।

जब तक दिल से संशय नहीं मिटेगा तब तक अन्दर से आत्मा गवाही नहीं देगी और उसके अन्दर ज्ञान का प्रकाश नहीं होगा, तब तक आत्मा को साक्षात्कार नहीं होगा।

इहां सर्व ने साख पुराविए, गुण अंग इंद्री ने पख।
आउध सर्वे संभारिए, ए तो अलख नी करवी छे लख।। ४ ।।

यहां सब गुण, अंग, इन्द्रिय तथा पख (अंतःकरण) रूपी हथियारों को शास्त्रों की गवाही देकर सम्भाल लो क्योंकि उस पारब्रह्म की पहचान करनी है जिसकी पहचान किसी को नहीं हुई है।

वाट विना इहां चालवूं, अने पग विना करवूं पंथ।
अंग विना आउध लेवा, जुध ते करवूं निसंक।। ५ ।।

यहां बिना किसी रास्ते के (बिना किसी धर्म का सहारा लिए) बिना पैर के (बिना कर्म-काण्ड किए) चलना है और बिना शरीर हथियार लेना है। इस सपने के तन से जो हकीकत में है नहीं) शील, सन्तोष, शुक्र, गरीबी, सब्र के हथियार लेकर निडरता से युद्ध करना है।

सुपन माहें सुख साख्यात लेवूं, ते निद्रामा केम लेवाए।
जागी अखण्ड सुख ओलखिए, आ सुपन लगाडिए वली तांहें।। ६ ।।

इस सपने के तन से यदि परमधाम के अखण्ड सुखों को लेना है तो अज्ञानता के अन्धकार में कैसे लिए जा सकते हैं? इस सपने के तन से सावचेत होकर ही अखण्ड सुख देखे जा सकते हैं।

एम ने अखण्ड सुख उदे थयूं, ज्यारे समझया सुपन मरम।
जागी साख्यात बेठा थैए, त्यारे आगल पूरण पारब्रह्म।। ७ ।।

जब सपने के भेद को समझ लिया तो अखण्ड सुख की पहचान हुई। पहचान के बाद ही पूर्ण ब्रह्म के सामने हम बैठे हैं, ऐसा लगेगा।

वचने कामस धोई काढिए, राखिए नहीं रज मात्र।
जोगवाई सर्वे जीतिए, त्यारे थैए प्रेमना पात्र।। ८ ।।

अपने अन्दर के विकार को इस वाणी से जड़ (मूल) से निकाल दो तथा सब गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में कर लो। तभी प्रेम के पात्र बन पाओगे।

Nijanand App

ए पगले एणे पंथडे, प्रेम विना न पोहोंचाय।
वैकुण्ठ सुन्य ने मारगे, बीजी अनेक कथनी कथाय।। ९ ।।

इस तरह से रास्ते पर, प्रेम के बिना पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं होगी। बैकुण्ठ और शून्य तक जाने के लिए तो और कई रास्ते बताए गए हैं।

ए तो हद नहीं आ तो वेहद, इहां अनेक अटकलो तणाय।
अनेक सूरा संग्राम करे, अनेक उथडतां जाय।। १० ।।

यह क्षर का ब्रह्माण्ड नहीं, अक्षर ब्रह्म का योगमाया का ब्रह्माण्ड है जिसके लिए अनेक लोग अटकल लगाते रहे। अनेक बहादुरों ने (त्रिगुण, ऋषि, मुनि, इत्यादि ने) युद्ध किया, किन्तु उलटे मुंह निराकार में गिरे।

साध सूरधीर अनेक मलो, अनेक जाओ वैकुंठ पार।
पण अखण्ड तणां दरवाजा कोणें, ते तो नव उघडे निरधार।। ११ ।।

अनेक साधु, महात्मा और ज्ञानी जन मिलकर बैकुण्ठ के पार भी यदि जाओ तो अखण्ड का दरवाजा किसी तरह भी नहीं खुल सकता।

तमने मोटी मतवाला साध देखाडूं, जेणे भरया ब्रह्मांडमां पाय।
कोई वैकुण्ठ कोई सुन्य मंडलमां, एटला लगे पोहोंचाय।। १२ ।।

मैं तुमको इस ब्रह्माण्ड के बड़े-बड़े साधु और ज्ञानियों के बारे में बताती हूं, जिन्होंने ब्रह्माण्ड से आगे निकलने के उपाय किए, किन्तु उनमें से कोई ही बैकुण्ठ तथा शून्य तक पहुंच पाए।

पारब्रह्म पाम्यां तणां, अनेक उदम करे साध।
चढी वैकुण्ठ आघा वहे, तिहां तो आडी छे अगम अगाध।। १३ ।।

पारब्रह्म को पाने के लिए साधुओं ने बहुत उपाय किए। वह बैकुण्ठ के आगे भी बढ़े पर उनके आड़े निराकार आ गया।

साध आउध सर्वे साचवी, जुध ते करतां जाय।
लोही मांस न रहे अंग ऊपर, वचमां स्वांस न खाय।। १४ ।।

ऐसे साधु-महात्मा लोग अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके हर कसौटी को पार करते जाते हैं, जिससे उनके अंगों का मांस तक सूख जाता है। प्राणायाम से सांस भी रोके रहते हैं।

चौदे चढी चाले एणी विधें, आगल निराकार केहेवाय।
तिहां पंथ न थाय पग थोभ विना, साध इहां जईने समाय।। १५ ।।

इस तरीके से चौदह लोकों के बाहर चलते हैं और आगे निराकार मिल जाता है। निराकार में न कोई रास्ता है और न कोई सहारा है, अतः सभी साधु निराकार में ही समा जाते हैं।

केटलाक जोर करे जुध करवा, पण पग पंथ सब्द न कोय।
सूं करे साध सनंध विना, मोटी मत वाला जोय।। १६ ।।

कितने ही साधु पार जाने के लिए ताकत से निकलते हैं, किन्तु उन्हें रास्ते का ज्ञान नहीं होता। बिना ज्ञान के यह साधु भी नहीं चल पाते चाहे वह कितने ज्ञानी ही क्यों न हों।

Nijanand App

आ पांचे तणूं मूल कोय न प्रीछे, अनेक करे छे उपाय।
साध मोटा पोहोंचे सुन्य लगे, पण सत सुख केणे न लेवाय।। १७ ।।

इन पांच तत्वों की जड़ कहां है, कोई नहीं जान पाया। बहुतों ने उपाय किए तथा कुछ बड़े लोग शून्य तक पहुंचे भी, परन्तु अखण्ड सुख कोई नहीं ले सका।

वेदें वैराट जोयूं दसो दिसा, कही आ पांच चौदनी उतपन।
चौद लोक जोया चारे गमा, चाल्या आघा जोवा माहें सुंन।। १८ ।।

वेदों के ज्ञान से साधुओं ने ब्रह्माण्ड की दसों दिशाओं को देखा और यह जाना कि यह चौदह लोक पांच तत्व से पैदा हुए हैं। चौदह लोकों को भी चारों तरफ से देखा तो आगे शून्य निराकार ही पाया।

सुन्य जोयूं घणूं श्रम करी, त्यारे नाम धराव्या निगम।
सनंध न लाधी सुन्य तणी, त्यारे कहीनें वल्या अगम।। १९ ।।

बड़ा परिश्रम करके उन्होंने शून्य मण्डल को खोजा। जब उन्हें कुछ नहीं मिला तो अपने को निगम कहा। जब उनको शून्य की हकीकत नहीं मिली तो पारब्रह्म को अगम कहकर लौट आए।

वेदे वलतां वाणी जे ओचरी, ते तां चढी वैराट ने मुख।
कुलिए ते लई मुख विप्रोने, करी आपी व्रत भख।। २० ।।

वेदों ने (ब्रह्मा ने) लौटते समय जो वाणी कही, उसे चौदह लोकों के लोगों ने समझ लिया। कलियुग में पंडितों ने तो इसे अपनी रोजी-रोटी का धन्धा बना लिया।

वेद सनमुख चढ्या ज्यारे ऊंचा, त्यारे मूल हता पाताल।
फरीने वाणी पाछी वली, त्यारे थया मूल ऊंचा ने नीची डाल।। २१ ।।

वेद (ब्रह्मा) जब खोज करते हुए ऊंचे बढ़े क्योंकि उनकी उत्पत्ति नाभि-कमल से थी तब उन्होंने पाताल से चढ़ते-चढ़ते खोजना शुरू किया। बाद में निराकार से लौटते समय नीचे (चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड) का वर्णन करना शुरू किया। तब जड़ उलटी निराकार में और डालें पाताल की तरफ हो गईं, अर्थात् ज्ञान अधोमुखी (नीचे की तरफ देखने वाला) हो गया।

कल्प विरिख तिहां वेद थयो, तेहेनूं फल निपनूं भागवत।
बन पकव रस ग्रही मुनि थया, एम सुकें परसव्या संत।। २२ ।।

चाही हुई इच्छा को पूर्ण करने वाले वृक्ष अब वेद बन गए। इसका फल (सार) भागवत निकला। इस वन में पके फल के रस को लेने वाले शुकदेवजी हुए जिन्होंने रस ग्रहण कर ज्ञान संतों में बांटा।

ए रस सनमुख साध लई ने, वैकुण्ठ सुन्य समाय।
बीजा काष्ट भखी जन जे हेठां उतर्या, तेतां जल बिना लेहेरें पछटाय।। २३ ।।

इस रस को ग्रहण कर साधु लोग बैकुण्ठ व निराकार में जाकर समा जाते हैं। दूसरे लोग कष्ट उठाकर नीचे गिर पड़ते हैं और बिना जल के ही भवसागर में छटपटाते हैं।

।। प्रकरण ।। ६८ ।। चौपाई ।। ८६४ ।।

सुन्य मंडल सुध जो जो मारा संमंधी, आ इंडू जेहेने आधार।
नेत नेत कही ने निगम वलिया, निगम ने अगम अपार।। १ ।।

हे मेरे निसबती सुन्दरसाथजी! निराकार के मण्डल को देखो जिसमें इस ब्रह्माण्ड का आधार है। जहां वेद पहुंचकर नेति-नेति कहकर उलटे लौटे और पारब्रह्म को अगम कहा।

Nijanand App

आ पांचे तणूं मूल कोय न प्रीछे, अनेक करे छे उपाय।
साध मोटा पोहोंचे सुन्य लगे, पण सत सुख केणे न लेवाय।। १७ ।।

इन पांच तत्वों की जड़ कहां है, कोई नहीं जान पाया। बहुतों ने उपाय किए तथा कुछ बड़े लोग शून्य तक पहुंचे भी, परन्तु अखण्ड सुख कोई नहीं ले सका।

वेदें वैराट जोयूं दसो दिसा, कही आ पांच चौदनी उतपन।
चौद लोक जोया चारे गमा, चाल्या आघा जोवा माहें सुंन।। १८ ।।

वेदों के ज्ञान से साधुओं ने ब्रह्माण्ड की दसों दिशाओं को देखा और यह जाना कि यह चौदह लोक पांच तत्व से पैदा हुए हैं। चौदह लोकों को भी चारों तरफ से देखा तो आगे शून्य निराकार ही पाया।

सुन्य जोयूं घणूं श्रम करी, त्यारे नाम धराव्या निगम।
सनंध न लाधी सुन्य तणी, त्यारे कहीनें वल्या अगम।। १९ ।।

बड़ा परिश्रम करके उन्होंने शून्य मण्डल को खोजा। जब उन्हें कुछ नहीं मिला तो अपने को निगम कहा। जब उनको शून्य की हकीकत नहीं मिली तो पारब्रह्म को अगम कहकर लौट आए।

वेदे वलतां वाणी जे ओचरी, ते तां चढी वैराट ने मुख।
कुलिए ते लई मुख विप्रोने, करी आपी व्रत भख।। २० ।।

वेदों ने (ब्रह्मा ने) लौटते समय जो वाणी कही, उसे चौदह लोकों के लोगों ने समझ लिया। कलियुग में पंडितों ने तो इसे अपनी रोजी-रोटी का धन्धा बना लिया।

वेद सनमुख चढ़या ज्यारे ऊंचा, त्यारे मूल हता पाताल।
फरीने वाणी पाछी वली, त्यारे थया मूल ऊंचा ने नीची डाल।। २१ ।।

वेद (ब्रह्मा) जब खोज करते हुए ऊंचे बढ़े क्योंकि उनकी उत्पत्ति नाभि-कमल से थी तब उन्होंने पाताल से चढ़ते-चढ़ते खोजना शुरू किया। बाद में निराकार से लौटते समय नीचे (चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड) का वर्णन करना शुरू किया। तब जड़ उलटी निराकार में और डालें पाताल की तरफ हो गईं, अर्थात् ज्ञान अधोमुखी (नीचे की तरफ देखने वाला) हो गया।

कल्प विरिख तिहां वेद थयो, तेहेनूं फल निपनूं भागवत।
बन पकव रस ग्रही मुनि थया, एम सुकें परसव्या संत।। २२ ।।

चाही हुई इच्छा को पूर्ण करने वाले वृक्ष अब वेद बन गए। इसका फल (सार) भागवत निकला। इस वन में पके फल के रस को लेने वाले शुकदेवजी हुए जिन्होंने रस ग्रहण कर ज्ञान संतों में बांटा।

ए रस सनमुख साध लई ने, वैकुण्ठ सुन्य समाय।
बीजा काष्ट भखी जन जे हेठां उतस्या, तेतां जल बिना लेहेरें पछटाय।। २३ ।।

इस रस को ग्रहण कर साधु लोग बैकुण्ठ व निराकार में जाकर समा जाते हैं। दूसरे लोग कष्ट उठाकर नीचे गिर पड़ते हैं और बिना जल के ही भवसागर में छटपटाते हैं।

।। प्रकरण ।। ६८ ।। चौपाई ।। ८६४ ।।

सुन्य मंडल सुध जो जो मारा संमंधी, आ इंडू जेहेने आधार।
नेत नेत कही ने निगम वलिया, निगम ने अगम अपार।। १ ।।

हे मेरे निसबती सुन्दरसाथजी! निराकार के मण्डल को देखो जिसमें इस ब्रह्माण्ड का आधार है। जहां वेद पहुंचकर नेति-नेति कहकर उलटे लौटे और पारब्रह्म को अगम कहा।

Nijanand App

इहां आद अंत नहीं थावर जंगम, अजवास न कांई अंधार जी।
निराकार आकार नहीं, नर न केहेवाय कांई नार जी।। २ ।।

यहां इसमें आदि-अन्त, चल-अचल, उजाला-अंधेरा, निराकार-आकार तथा स्त्री-पुरुष कुछ नहीं है।

नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, पख नहीं परवान जी।
आवन गवन नहीं अंग इन्द्री, लख न कांई निरमान जी।। ३ ।।

नाम, स्थान, गुण, निर्गुण, पख (अंतःकरण), आना, जाना, अंग, इन्द्रियां, देखने में जो आता है, वह कुछ नहीं है।

इहां रूप न रंग नहीं तेज जोत, दिवस न कांई रात जी।
भोम न अगिन नहीं जल वाए, न सब्द सोहं आकास जी।। ४ ।।

रूप नहीं है, रंग नहीं है। तेज, ज्योति, दिन, रात, भूमि, अग्नि, जल, वायु, आकाश और सोऽहं शब्द, आदि कुछ भी नहीं हैं।

इहां रस न धात नहीं कोई तत्व, गिनान नहीं बल गंध जी।
फूल न फल नहीं मूल बिरिख, भंग न कांई अभंग जी।। ५ ।।

यहां रस, धातु, तत्व, ज्ञान, बल, सुगंधि कुछ भी नहीं है। फूल, फल, जड़, पेड़, मरण, जीवन भी नहीं हैं।

अखंड तणां दरवाजा आडी, सुन्य मंडल विस्तार जी।
एणें ठेकांणे बेठी अछती, बांधी ने हथियार जी।। ६ ।।

इस शून्य मण्डल का विस्तार परदे के रूप में अखण्ड बेहद के दरवाजे तक है। इस ठिकाने पर काल निरंजन शक्ति हथियार बांध कर बैठी है।

ए बल जोजो बलवंती नूं, एहनो कोई न काढे पार जी।
अनेक उपाय कीधां घणें, पण कोए न पोहोंता दरबार जी।। ७ ।।

इस बलवंती काल निरंजन की शक्ति को देखो। इसका किसी ने पार नहीं पाया है। इस कारण ही कोई परमधाम नहीं पहुंचा।

कोई न पोहोंतो इहां लगे, एहनो बोली मारे प्रताप जी।
आ पांचो एहनी छाया पड़ी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी।। ८ ।।

यहां निराकार तक कोई नहीं पहुंचा है। इसके नाम से बड़े-बड़े हार जाते हैं। यह पांच तत्व इसी की छाया है और इस तरह से यह शून्य मण्डल बना है।

|| प्रकरण || ६९ || चौपाई || ८७२ ||

मूलगी चाल

हवे वासना हसे जे वेहदनी, ते जागीने जोसे निरधार।
सत असत बंने जुआ करसे, एहनो तेहज उघाडसे बार।। १ ।।

अब जो बेहद की आत्मा होगी वह जागकर देखेगी। वह हद और बेहद (झूठ और सत) को अलग-अलग करके बेहद के दरवाजे खोलेगी।

Nijanand App

इहां आद अंत नहीं थावर जंगम, अजवास न कांई अंधार जी।
निराकार आकार नहीं, नर न केहेवाय कांई नार जी।। २ ।।

यहां इसमें आदि-अन्त, चल-अचल, उजाला-अंधेरा, निराकार-आकार तथा स्त्री-पुरुष कुछ नहीं है।

नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, पख नहीं परवान जी।
आवन गवन नहीं अंग इन्द्री, लख न कांई निरमान जी।। ३ ।।

नाम, स्थान, गुण, निर्गुण, पख (अंतःकरण), आना, जाना, अंग, इन्द्रियां, देखने में जो आता है, वह कुछ नहीं है।

इहां रूप न रंग नहीं तेज जोत, दिवस न कांई रात जी।
भोम न अगिन नहीं जल वाए, न सब्द सोहं आकास जी।। ४ ।।

रूप नहीं है, रंग नहीं है। तेज, ज्योति, दिन, रात, भूमि, अग्नि, जल, वायु, आकाश और सोऽहं शब्द, आदि कुछ भी नहीं हैं।

इहां रस न धात नहीं कोई तत्व, गिनान नहीं बल गंध जी।
फूल न फल नहीं मूल बिरिख, भंग न कांई अभंग जी।। ५ ।।

यहां रस, धातु, तत्व, ज्ञान, बल, सुगंधि कुछ भी नहीं है। फूल, फल, जड़, पेड़, मरण, जीवन भी नहीं हैं।

अखंड तणां दरवाजा आडी, सुन्य मंडल विस्तार जी।
एणें ठेकांणे बेठी अछती, बांधी ने हथियार जी।। ६ ।।

इस शून्य मण्डल का विस्तार परदे के रूप में अखण्ड बेहद के दरवाजे तक है। इस ठिकाने पर काल निरंजन शक्ति हथियार बांध कर बैठी है।

ए बल जोजो बलवंती नूं, एहनो कोई न काढे पार जी।
अनेक उपाय कीधां घणें, पण कोए न पोहोंता दरबार जी।। ७ ।।

इस बलवंती काल निरंजन की शक्ति को देखो। इसका किसी ने पार नहीं पाया है। इस कारण ही कोई परमधाम नहीं पहुंचा।

कोई न पोहोंतो इहां लगे, एहनो बोली मारे प्रताप जी।
आ पांचो एहनी छाया पड़ी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी।। ८ ।।

यहां निराकार तक कोई नहीं पहुंचा है। इसके नाम से बड़े-बड़े हार जाते हैं। यह पांच तत्व इसी की छाया है और इस तरह से यह शून्य मण्डल बना है।

।। प्रकरण ।। ६९ ।। चौपाई ।। ८७२ ।।

मूलगी चाल

हवे वासना हसे जे वेहदनी, ते जागीने जोसे निरधार।
सत असत बंने जुआ करसे, एहनो तेहज उघाडसे बार।। १ ।।

अब जो बेहद की आत्मा होगी वह जागकर देखेगी। वह हद और बेहद (झूठ और सत) को अलग-अलग करके बेहद के दरवाजे खोलेगी।

Nijanand App

एहमां वासना पांचे प्रगट थई, रची रामत देखाडी रूडी पेर।
कारज करीने अखंडमां भलसे, अछर सरूप एहनूं घेर।। २ ।।

इसमें अक्षर ब्रह्म की पांच वासनाएं हमको अच्छी तरह खेल दिखाने के लिए प्रगट हुईं जो अपने कार्य समाप्त करके अखण्ड योगमाया में समा जाएंगी जहां अक्षर के हृदय में सबलिक ब्रह्म है।

रामत जोवा वाला ते जुआ, ते आगल वाणी थासे विस्तार।
माया देखाडी ने वार उघाडी, जावूं अछर ने पार।। ३ ।।

इस खेल को देखने वाले अलग हैं। इनका विस्तार वाणी में आगे किया जाएगा। इन्होंने माया का खेल देखकर, बेहद के दरवाजे खोलकर अक्षर के पार जाना है।

सास्त्र साधोनी वाणी सर्वे, आगम भाखी छे अनेक।
ते सर्वे आंही आवी ने मलसे, तेहना वंचासे ववेक।। ४ ।।

बड़े-बड़े साधुओं और शास्त्रों की वाणी में इनके आने की भविष्यवाणी की गई है। अब सब भविष्यवाणियां यहां आकर मिलेंगी और उनका सारा भेद खुलेगा।

छर थी तीत अछर थया, अने अछरातीत केहेवाय।
आपणने जावूं एणें घरें, इहां अटकलें केम पोहोंचाय।। ५ ।।

क्षर ब्रह्माण्ड से आगे अक्षर और अक्षर से पार अक्षरातीत कहे जाते हैं। हमें उसी घर में चलना है जहां अटकल से नहीं पहुंचा जा सकता।

पार सुख थयूं एणी पेरे, हजी रमो तमें छाया माहें।
तमने फरी फरी आ भोम आडी आवे, तमें कामस न टालो क्यांहें।। ६ ।।

हे साथजी! इस तरह से तुम्हारे घर का सुख अलग है। अभी तुम माया में खेल रहे हो और यह झूठी भूमि बार-बार रास्ते में रुकावट डालती है। तुम अपने विकार (माया की चाहना) क्यों नहीं निकालते हो?

हूं संमंधी माटे बार उघाडूं, आपवाने सुख सत।
खीजी वढीने हंसी तमारा, फरी फरी वालूं छूं चित।। ७ ।।

मैं अपने निसबती सुन्दरसाथजी को अखण्ड सुख देने के लिए दरवाजा खोलती हूं। गुस्सा करके, लड़ करके, हंस करके तुम्हारे चित्त को बार-बार माया से हटाती हूं।

तमें राखी रदेमां अंधेर, ओलाडवा हींडो छो संसार।
एणी पेरे उवट चढ़ाय नहीं, जवाय नहीं पेले पार।। ८ ।।

तुम अपने हृदय में माया को बसाकर, माया की आग को बुझाना चाहते हो। इस औघट रास्ते पर इस तरह से चलकर उस पार नहीं जाया जाएगा।

सतगुर संग करे आप ग्रही, वचने धमावे निसंक।
रस थई कस पूरे कसोटी, त्यारे आडो न आवे प्रपंच।। ९ ।।

सतगुरु की शरण, संगति करने से वह तुम्हारा हाथ पकड़कर अपनी वाणी से तुम्हारे संशय मिटाएंगे और कसनी से निखारकर तुम्हें कंचन बनाएंगे। तब यह माया का प्रपंच तुम्हारे आड़े नहीं आएगा।

Nijanand App

तमसूं जुध करे घेन घारण, लज्या ने अहंकार।
कायर ने कंपावे ए बल, बीक ने भ्रांत विचार।। १० ।।

फिर तुमसे लड़ने यह माया की नशीली नींद, लोक-लाज और अहंकार आएंगे। इनकी ताकत से कायर डर जाएंगे और डरकर संशय में पड़ जाएंगे।

तमें गिनान तणो अजवास लईने, उपलो टालो छो अंधेर।
पण मांहेलो सूतो निद्रा माहें, तो केम जाए मननो फेर।। ११ ।।

तुम तारतम वाणी का उजाला लेकर इस ऊपर के अज्ञान को तो हटाते हो, किन्तु तुम्हारे अन्दर का मन विकारों से भरा है। इस तरह से तुम्हारे मन के संशय कैसे मिटेंगे?

ज्यारे वचने जगवसो वासना, त्यारे आप ओलखसो प्रकास।
त्यारे पार ब्रह्म नों पार थकी, तमें आहीं देखसो अजवास।। १२ ।।

जब तारतम वाणी के वचनों से तुम अपनी आत्मा को जगाओगे, तब तुम वाणी के उजाले को देखोगे। तब यहां बैठे-बैठे पारब्रह्म को पार से देखोगे।

हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहना चरण ग्रहिए चित मांहें।
निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए जांहें।। १३ ।।

अब जिसने हमें यह न्यामत दी है उसके चरण को चित्त में रखो। यह सतगुरु तुम्हारी नींद उड़ाकर सपने को भगा देंगे। तब जहां तुम बैठे हो वहां जाग जाओगे, अर्थात् मूल मिलावा में जाग जाओगे।

हवे एणे चरणें तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह।
सर्वा अंगे चित सुध करी, तमें सेवा ते करजो एह।। १४ ।।

अब तुम इन सतगुरु के चरणों की कृपा से अखण्ड सुख पाओगे, इसलिए सावचेत होकर सब अंगों से इनकी सेवा करो।

महामत कहे संमंधी सांभलो, मारा सब्दातीत सुजाण।
चरण सों चित पूरो बांधजो, जिहां लगे पिंडमा प्राण।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे निसबती सुन्दरसाथ! सुनो, शब्दों से परे उस पारब्रह्म को पहचानो। जब तक तुम्हारे तन में प्राण हैं तब तक उनके चरणों में चित्त लगाओ।

|| प्रकरण || ७० || चौपाई || ८८७ ||

किरंतन आखिर के
राग श्री आसावरी

लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी की अंगनाएं परमधाम की रहने वाली हैं। इनके मूल तन चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) में हैं। इनका बड़ा मरातबा है, स्वयं पारब्रह्म इनकी सिफत करते हैं।

सो उतरी अर्स अजीम से, रूहें बारे हजार।
साथ सेवक मलायक, पावे दुनियां सब दीदार।। २ ।।

यह बारह हजार ब्रह्मसृष्टि अर्श अजीम से खेल में उतरी है। इनके साथ खूबखुशालियां और अनेक फरिश्ते आए हैं। इनका सब दुनियां अब दर्शन करेगी।

Nijanand App

तमसूं जुध करे घेन घारण, लज्या ने अहंकार।
कायर ने कंपावे ए बल, बीक ने भ्रांत विचार।। १० ।।

फिर तुमसे लड़ने यह माया की नशीली नींद, लोक-लाज और अहंकार आएंगे। इनकी ताकत से कायर डर जाएंगे और डरकर संशय में पड़ जाएंगे।

तमें गिनान तणो अजवास लईने, उपलो टालो छो अंधेर।
पण मांहेलो सूतो निद्रा माहें, तो केम जाए मननो फेर।। ११ ।।

तुम तारतम वाणी का उजाला लेकर इस ऊपर के अज्ञान को तो हटाते हो, किन्तु तुम्हारे अन्दर का मन विकारों से भरा है। इस तरह से तुम्हारे मन के संशय कैसे मिटेंगे?

ज्यारे वचने जगवसो वासना, त्यारे आप ओलखसो प्रकास।
त्यारे पार ब्रह्म नों पार थकी, तमें आहीं देखसो अजवास।। १२ ।।

जब तारतम वाणी के वचनों से तुम अपनी आत्मा को जगाओगे, तब तुम वाणी के उजाले को देखोगे। तब यहां बैठे-बैठे पारब्रह्म को पार से देखोगे।

हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहना चरण ग्रहिए चित मांहें।
निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए जांहें।। १३ ।।

अब जिसने हमें यह न्यामत दी है उसके चरण को चित्त में रखो। यह सतगुरु तुम्हारी नींद उड़ाकर सपने को भगा देंगे। तब जहां तुम बैठे हो वहां जाग जाओगे, अर्थात् मूल मिलावा में जाग जाओगे।

हवे एणे चरणे तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह।
सर्वा अंगे चित सुध करी, तमें सेवा ते करजो एह।। १४ ।।

अब तुम इन सतगुरु के चरणों की कृपा से अखण्ड सुख पाओगे, इसलिए सावचेत होकर सब अंगों से इनकी सेवा करो।

महामत कहे संमंधी सांभलो, मारा सब्दातीत सुजाण।
चरण सों चित पूरो बांधजो, जिहां लगे पिंडमा प्राण।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे निसबती सुन्दरसाथ! सुनो, शब्दों से परे उस पारब्रह्म को पहचानो। जब तक तुम्हारे तन में प्राण हैं तब तक उनके चरणों में चित्त लगाओ।

|| प्रकरण || ७० || चौपाई || ८८७ ||

किरंतन आखिर के
राग श्री आसावरी

लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी की अंगनाएं परमधाम की रहने वाली हैं। इनके मूल तन चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) में हैं। इनका बड़ा मरातबा है, स्वयं पारब्रह्म इनकी सिफत करते हैं।

सो उतरी अर्स अजीम से, रूहें बारे हजार।
साथ सेवक मलायक, पावे दुनियां सब दीदार।। २ ।।

यह बारह हजार ब्रह्मसृष्टि अर्श अजीम से खेल में उतरी है। इनके साथ खूबखुशालियां और अनेक फरिश्ते आए हैं। इनका सब दुनियां अब दर्शन करेगी।

Nijanand App

मोती कहे जो इन को, जाको मोल न काहूं होए।
बारे डाली गिनती, सूरत आदमी सोए।। ३ ।।

इन ब्रह्मसृष्टियों को अनमोल मोती कहा है। इनकी गिनती बारह हजार है। यह साधारण आदमी की शक्ल में हैं।

मोमिन बड़े मरातबे, नूर बिलंद से नाजल।
इनों काम हाल सब नूर के, अंग इस्कै के भीगल।। ४ ।।

इन मोमिनों का बड़ा ऊंचा दर्जा है। यह परमधाम से आए हैं। इनके काम और व्यवहार सब नूरी हैं। यह अपने धनी की मस्ती में डूबे हैं।

साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब।
रूहअल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरे तब।। ५ ।।

रसूल साहब के बाद जब नौ सौ नब्बे साल और नौ महीने हो गए तब श्यामाजी अपने साथ मर्द (गाजी) मोमिनों की जमात लेकर खेल में उतरे।

औलिया लिल्ला दोस्त, जाके हिरदे हक सूरत।
बंदगी खुदा और इनकी, बीच नाहीं तफावत।। ६ ।।

इन मोमिनों के दिलों में पारब्रह्म विराजमान हैं, इसलिए इनको पारब्रह्म का ज्ञान जानने वाले औलिया और खुदा का दोस्त कहा है। खुदा की बन्दगी और मोमिनों की बन्दगी में कोई फर्क नहीं है।

एही गिरो इसलाम की, खड़ियां तले अर्स।
या दुनियां या दीन में, सब में इनको जस।। ७ ।।

इस्लाम पर समर्पित होने वाली यही जमात है जो परमधाम के रास्ते पर खड़ी है। धर्म में या दुनियां में सब जगह इनकी शोभा का यश फैला हुआ है।

लोक जिमी आसमान के, साफ जो करसी सब।
बुजरकी इन गिरोह की, ऐसी देखी न सुनी कब।। ८ ।।

संसार के आदमी तथा आसमान के देवी-देवताओं को यह ब्रह्मसृष्टि निर्मल करेगी। इस गिरोह की ऐसी मान्यता है, जो आज दिन तक किसी ने न देखी और न सुनी है।

गिरो उठाई अदल से, वास्ते पैगंमरों।
देवें ग्वाही आखिर को, ऊपर मुनकरों।। ९ ।।

न्याय के दिन पहले ही इसे (ब्रह्मसृष्टि को) उठा दिया जाएगा और पैगम्बरों को आखिरी दिन मुनकरों की गवाही देने के लिए रखा गया।

करें इमारत भिस्त की, कोसिस सिफत कामिल।
देवें खुसखबरी खुदा तिनको, जिनके नेक अमल।। १० ।।

इन मोमिनों के प्रयत्न से बहिश्तें बनेंगी। जिनके अमल रहनी (कर्म) नेक हैं उनको बहिश्तों में कायम करने की खुशखबरी खुदा खुद देंगे।

Nijanand App

गिरो बनी असराईल, जित महंमद पैगंमर।
जिन कौल मकसूद सबन के, सो बीच इन आखिर।। ११ ।।

इब्राहीम के बेटे बनी असराईल की जमात में आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी पैगम्बर हुए। उन्होंने अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान की वाणी से वक्त आखिरत की भविष्यवाणी पूरी की।

मुलक हुआ नबियन का, आखिर हिंदुओं के दरम्यान।
गिरो भेख फकीर में, पातसाह महंमद परवान।। १२ ।।

उसी के अनुसार हिन्दुओं के बीच बारह हजार ब्रह्मसृष्टियां आईं जिनमें आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी फकीरों के भेष में मोमिनों के बीच बादशाही करते हैं।

माएने रूजू सब इनसें, तौरेत दई है जित।
होत पेहेचान खुदाए की, इन गिरो की सोहोबत।। १३ ।।

श्री प्राणनाथजी को कलश (तौरेत) की किताब उतरी। जिससे सब धर्मग्रन्थों के भेद खुले। मोमिनों की सोहोबत (संगति) से दुनियां को श्री प्राणनाथजी (खुदा) की पहचान हुई।

बरसे बयान राह वतनी, कही सूरत मेह इसलाम।
गिरे भुने मुरग आसमान से, बनी असराईल पर तमाम।। १४ ।।

कुरान में लिखा है कि बनी असराईल की जमात में आसमान से भुने मुर्गों की वर्षा हुई। इसका भावार्थ यह है कि स्वामी श्री प्राणनाथजी की जमात (सुन्दरसाथ) की आत्मिक खुराक के लिए आसमान से वाणी की वर्षा हुई।

छे हजार बाजू दोए बगल, जबराईल ऊपर रूहन।
अग्यारैं सदी गिरह खोल के, चले महंमद संग मोमिन।। १५ ।।

कुरान में किस्सा लिखा है कि जबराईल के दो पंखों पर छः छः हजार रूहें बैठी हैं। ग्यारहवीं सदी की टोने की ग्यारह गांठों का भेद खोलकर आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के संग मोमिन चले जाएंगे।

खुदा देवे साहेदी खुदाए की, और न किनहूं होए।
करें बयान फुरमावें हुकम, लायक पूजने के सोए।। १६ ।।

खुदा की गवाही खुद खुदा ही देंगे और कोई नहीं दे सकेगा। कुरान में ऐसा लिखा है जो खुदा का बयान करे, केवल वही पूजा के योग्य है।

अलिफ लाम मीम हरफ ए कहे, ए भेद न किन समझाए।
सो छीले गए कुरान से, ए भेद जानें एक खुदाए।। १७ ।।

अलिफ, लाम और मीम अक्षरों का भेद किसी की समझ में नहीं आता था। इसका भेद केवल खुदा ही जानता है, इसलिए कुरान में इन हरफों पर जो ताला लगा था उसको खोल दिया (अब आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने इसके भेद खोले अलिफ रसूल मुहम्मद को, लाम ईसा रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी को, मीम पाक मेहेंदी श्री प्राणनाथजी को कहा गया है)।

इत हुज्जत न रही काहू की, तुम देखो एह सुकन।
एह खिताब महंमद मेंहेदी पें, जिन रोसन किए मोमिन।। १८ ।।

इन शब्दों के भेद न खुलने के कारण कोई खुदाई दावा नहीं ले सका। ऐसा इन वचनों से विचार कर देखो। खुदा का खिताब स्वामी श्री प्राणनाथजी को मिला, जिन्होंने आकर इन वचनों को मोमिनों में ज़ाहिर किया।

Nijanand App

कुंन के रोज की साहेदी, देवे एही उमत।
सो कहे उस बखत की, जो ल्यावे एह हुज्जत।। १९ ।।

जिस दिन 'कुंन' कहने से ब्रह्माण्ड बना, उसकी गवाही यही मोमिन देंगे, क्योंकि परमधाम में यही मोमिन थे और यही मोमिन उस वक्त को कह सकते हैं।

तौरेत आई नूर बिलंद से, आखिर उमत करी बेसक।
भई चिन्हार महंमद मुसाफ, जैसे पेहेचानने का हक।। २० ।।

परमधाम से कलस (तौरेत) की किताब आई जिसने ब्रह्मसृष्टि को बेशक किया। इस ज्ञान से श्री प्राणनाथजी की और कुरान की पहचान हुई। उससे श्री प्राणनाथजी को खुदा के रूप में पहचाना गया।

सब सिफतें एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर।
कोई पावे न दूजा माएना, बिना महंमद फकीर।। २१ ।।

कुरान के अलग-अलग प्रसंगों में इसी एक मोमिन की जमात की सिफत लिखी है। बिना आखिरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के इन भेदों को कोई खोल नहीं पाता।

|| प्रकरण || ७१ || चौपाई || ९०८ ||

जंजीरां मुसाफ की, मोतियों में परोइए जब।
जिनसें जिनस मिलाइए, पाइए मगज माएने तब।। १ ।।

कुरान की आयतों की हकीकत जो कुरान में अलग-अलग सिपारों में लिखी है, उन प्रसंगों को मिलाकर इकट्ठा कर देखें, तभी उनकी हकीकत वाले छिपे भेद खुलते हैं।

देऊं हरफ हरफ की आयतें, जो हादिऐं खोले द्वार।
सब सिफत खास गिरोह की, लिखी विध विध बेसुमार।। २ ।।

श्री छत्रसालजी कह रहे हैं कि श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान की आयतों के एक-एक शब्द के अर्थ खोल दिए हैं। इन सब आयतों में खास गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) की सिफत का वर्णन है जो अलग-अलग तरीकों से लिखी है।

कलाम अल्ला की इसारतें, खोल दैयां खसम।
महामत पर मेहेर मेहेबूबें, करी ईसे के इलम।। ३ ।।

कुरान की इशारत (संक्षिप्त कथन) को श्री राजजी महाराज ने खोल दिया है। महामति के ऊपर श्री प्राणनाथजी ने सतगुरु देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) के तारतम वाणी के ज्ञान से कृपा की है। जिनसे यह भेद खुले।

ब्रह्मसृष्ट वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान।
कई विध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान।। ४ ।।

ब्रह्मसृष्टि को वेद पुराण में ब्रह्म के समान बताया है और इन ब्रह्मसृष्टि की सिफत कुरान में भी कई तरह से लिखी है (जिसकी गवाही कुरान में लिखी है)।

कहे छत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीरां जोर।
सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर।। ५ ।।

श्री छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान की सार वाली आयतों में खास गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) की सिफत है और इसके भेद वही ब्रह्मसृष्टि ही समझ सकती हैं।

|| प्रकरण || ७२ || चौपाई || ९१३ ||

Nijanand App

कुंन के रोज की साहेदी, देवे एही उमत।
सो कहे उस बखत की, जो ल्यावे एह हुज्जत।। १९ ।।

जिस दिन 'कुंन' कहने से ब्रह्माण्ड बना, उसकी गवाही यही मोमिन देंगे, क्योंकि परमधाम में यही मोमिन थे और यही मोमिन उस वक्त को कह सकते हैं।

तौरेत आई नूर बिलंद से, आखिर उमत करी बेसक।
भई चिन्हार महंमद मुसाफ, जैसे पेहेचानने का हक।। २० ।।

परमधाम से कलस (तौरेत) की किताब आई जिसने ब्रह्मसृष्टि को बेशक किया। इस ज्ञान से श्री प्राणनाथजी की और कुरान की पहचान हुई। उससे श्री प्राणनाथजी को खुदा के रूप में पहचाना गया।

सब सिफतें एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर।
कोई पावे न दूजा माएना, बिना महंमद फकीर।। २१ ।।

कुरान के अलग-अलग प्रसंगों में इसी एक मोमिन की जमात की सिफत लिखी है। बिना आखिरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के इन भेदों को कोई खोल नहीं पाता।

।। प्रकरण ।। ७१ ।। चौपाई ।। ९०८ ।।

जंजीरां मुसाफ की, मोतियों में परोइए जब।
जिनसें जिनस मिलाइए, पाइए मगज माएने तब।। १ ।।

कुरान की आयतों की हकीकत जो कुरान में अलग-अलग सिपारों में लिखी है, उन प्रसंगों को मिलाकर इकट्ठा कर देखें, तभी उनकी हकीकत वाले छिपे भेद खुलते हैं।

देऊं हरफ हरफ की आयतें, जो हादिऐं खोले द्वार।
सब सिफत खास गिरोह की, लिखी बिध बिध बेसुमार।। २ ।।

श्री छत्रसालजी कह रहे हैं कि श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान की आयतों के एक-एक शब्द के अर्थ खोल दिए हैं। इन सब आयतों में खास गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) की सिफत का वर्णन है जो अलग-अलग तरीकों से लिखी है।

कलाम अल्ला की इसारतें, खोल दैयां खसम।
महामत पर मेहेर मेहेबूबें, करी ईसे के इलम।। ३ ।।

कुरान की इशारत (संक्षिप्त कथन) को श्री राजजी महाराज ने खोल दिया है। महामति के ऊपर श्री प्राणनाथजी ने सतगुरु देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) के तारतम वाणी के ज्ञान से कृपा की है। जिनसे यह भेद खुले।

ब्रह्मसृष्ट वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान।
कई बिध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान।। ४ ।।

ब्रह्मसृष्टि को वेद पुराण में ब्रह्म के समान बताया है और इन ब्रह्मसृष्टि की सिफत कुरान में भी कई तरह से लिखी है (जिसकी गवाही कुरान में लिखी है)।

कहे छत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीरां जोर।
सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर।। ५ ।।

श्री छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान की सार वाली आयतों में खास गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) की सिफत है और इसके भेद वही ब्रह्मसृष्टि ही समझ सकती हैं।

।। प्रकरण ।। ७२ ।। चौपाई ।। ९१३ ।।

Nijanand App

शास्त्रों की प्रनालिका

राग श्री

जो कोई सास्त्र संसार में, निरने कियो आचार।
त्रिगुन त्रैलोकी पांच तत्व, ए मोह अहंको विस्तार।। १ ।।

संसार में जितने भी धर्मशास्त्र हैं, उनके आचार्यों ने एक निर्णय लिया कि त्रिगुण, चौदह लोक, पांच तत्व सभी मोह और अहंकार से पैदा हैं।

निराकार निरंजन सुन्य की, पाई न काल की विध।
ना प्रकृत पुरूख की, न मोह अहं की सुध।। २ ।।

निराकार, निरंजन, शून्य और काल की हकीकत और प्रकृति, पुरुष, मोह तत्व और अहंकार की पहचान किसी को नहीं है।

उपज्या याको केहेवही, कहे प्रले होसी ए।
ब्रह्म बतावें याही में, कहे ए सब माया के।। ३ ।।

सभी कहते हैं कि यह सब पैदा हुआ है, बना है। यह प्रलय में नष्ट हो जाएगा। यह माया के जीव ब्रह्म को भी इसी में बतलाते हैं।

उरझे सब याही में, पार सब्द न काढ़े एक।
कथ कथ ग्यान जुदे पड़े, द्वैतै में देख देख।। ४ ।।

सब इसी में उलझे पड़े हैं। किसी ने भी पार का एक शब्द भी नहीं कहा है। अपने-अपने ज्ञान को कहकर, ब्रह्म को इस माया में ढूंढ़-ढूंढ़कर अलग-अलग हो गए।

किन माया पार न पाइया, किन कह्यो न मूल वतन।
सरूप न कह्यो काहूं ब्रह्म को, कहे उत चले न मन वचन।। ५ ।।

किसी को माया का पार नहीं मिला और न ही मूल घर का ठिकाना मिला। किसी ने ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन नहीं किया, क्योंकि किसी के मन, वचन ब्रह्म तक पहुंचते नहीं हैं।

जो सास्त्रों की प्रनालिका, कहियत हैं विध इन।
सो कर देऊं जाहेर, समझो चित चेतन।। ६ ।।

शास्त्रों की जो प्रणालिका है वह इस प्रकार है। अब मैं उसे जाहिर करती हूं। उसे ध्यान से सुनना।

जो सुख परआतम को, सो आतम न पोहोंचत।
जो अनुभव होत है आतमा, सो नाहीं जीव को इत।। ७ ।।

जो सुख परआतम को है वह आत्मा को नहीं मिलता। जो आत्मा को अनुभव होता है वह यहां जीव को नहीं मिलता।

जो कछू सुख जीव को, सो बुध ना अंतस्करन।
सुख अंतस्करन इंद्रियन को, उतर पोहोंचावे मन।। ८ ।।

जो सुख जीव को मिलता है, वह बुद्धि और अंतःकरण को नहीं मिलता। जो सुख अंतःकरण से इन्द्रियों को होता है, वही सुख इन्द्रियों के द्वारा मन को होता है।

Nijanand App

जो सुख मन में आवत, सो आवे ना जुबां मों।
और जो सुख जुबां से निकसे, सो क्यों पोहोंचे परआतम को।। ९ ।।

जो सुख मन में आता है वह जबान से कहा नहीं जाता। जो सुख जबान से निकले वह परआतम को कैसे पहुंचेगा?

तो कह्या तीत सब्द से, जो कछू इत का पोहोंचे नाहें।
असत ना मिले सत को, ऐसा लिख्या सास्त्रों मांहें।। १० ।।

शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि यहां की कोई भी चीज पारब्रह्म तक नहीं पहुंचती क्योंकि वह पारब्रह्म शब्दातीत है। तथा झूठ और सत मिल नहीं सकते।

जो कछू पिंड ब्रह्मांड की, सब फना कही सास्त्रन।
अखंड के पार जो अखंड, तहां क्यों पोहोंचे झूठ सुपन।। ११ ।।

इस पिण्ड में या ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है, शास्त्रों में उसे नाशवान बताया है, इसलिए बेहद के पार जो अखण्ड सुख हैं, वहां झूठा सपना नहीं पहुंचता।

पंडित पढ़े सब इत थके, उत चले ना सब्द बुध मन।
निरंजन के पार के पार, पोहोंचाऊं याही सास्त्रन।। १२ ।।

पण्डित सब इसी को पढ़-पढ़ कर थक गए। किसी के भी मन बुद्धि और शब्द उसे जाहिर नहीं कर सके। श्री महामतिजी कहते हैं कि इन्हीं शास्त्रों से निराकार के पार अक्षर और अक्षरातीत तक मैं पहुंचाती हूं।

मेरा अंग पांच तत्व का, इन अंतस्करन विचार।
केहेनी लीला अछरातीत की, जो परआतम के पार।। १३ ।।

मेरा तन पांच तत्व का है। इसी अंतःकरण के विचारों से अक्षरातीत की लीला का वर्णन करना है जो परआतम के भी पार है।

ए देह मेरी हद की, इसी देह की अकल।
धाम धनी सुख बरनन, केहेने चाहे असल।। १४ ।।

यह मेरा तन संसार का है। इसी तन की अक्ल से धाम धनी के सच्चे सुखों का वर्णन करना चाहती हूं।

आतम मेरी हद में, जीव कहे बुधें उतर।
बुध मन पें कहावे जुबान सों, सो जुबां कहे क्यों कर।। १५ ।।

मेरी आत्मा संसार में है। आत्मा जीव को कहती है, जीव बुद्धि को बताता है, बुद्धि जबान से मन को कहती है। उस अक्षरातीत के अखण्ड सुख का वर्णन जबान कैसे कहे?

असलें आतम न पोहोंचहीं, क्यों पोहोंचे जीव ग्यान।
जो मन देत जुबांन को, सो जुबां करत बयान।। १६ ।।

जब तक वह सुख असल आत्मा में नहीं पहुंचता, तब तक जीव को ज्ञान कैसे हो? जो मन जबान को देता है, वही जबान वर्णन करती है।

मैं बैठ सुपन की सृष्ट में, बोलूं इन जुबांन।
जीव सृष्ट क्यों मानहीं, तो भी कर देऊं नेक पेहेचान।। १७ ।।

मैं स्वप्न की सृष्टि में बैठकर यहां की जबान से बोलती हूं। इसे जीव सृष्टि कैसे मानेगी? फिर भी थोड़ी सी पहचान कराती हूं।

Nijanand App

आतम रोग मिटावने, ए सुख, कहों मांहें सब्द।
बेहद के पार के पार सुख, सो नेक बताऊं मांहें हद।। १८ ।।

आत्मा की चाहना को पूर्ण करने के लिए अखण्ड सुखों को जो शब्दों में नहीं आ सकते, उन्हें शब्दों में लाकर कहती हूं।

मेरे केहेना ब्रह्मसृष्ट को, इन मन जुबां माफक।
झूठी जिमिएं याही सास्त्रन सों, जाहेर कर देऊं हक।। १९ ।।

यहां के मन और जबान की शक्ति के अनुसार ब्रह्मसृष्टियों को बताना है। झूठी जमीन में और यहीं के धर्मग्रन्थों से हक (श्री राजजी महाराज) की पहचान कराती हूं।

साथ मेरा ब्रह्मसृष्ट का, तिन हिरदे साफ करन।
सो निरमल क्यों होवहीं, धाम अखंड देखाए बिन।। २० ।।

मेरे परमधाम के साथी ब्रह्मसृष्टि के हृदय के संशय को मिटाना है। जब तक उन्हें अखण्ड धाम के दर्शन नहीं कराऊंगी, तब तक वह कैसे निर्मल होंगे?

सो हिरदे साफ हुए बिना, क्यों कर पोंहोचे धाम।
हम भेजे आए धनी के, एही हमारा काम।। २१ ।।

जब तक ब्रह्मसृष्टियों के हृदय साफ नहीं होंगे, तब तक वह परमधाम कैसे पहुंचेंगी? श्री राजजी महाराज ने इन्हें परमधाम लाने का ही काम मुझे सौंपा है।

सास्त्रों तीनों सृष्ट कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म।
तिनके ठौर जुदे जुदे, ए देखियो अनुकरम।। २२ ।।

शास्त्रों में तीन सृष्टि जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि का वर्णन है। इनके ठिकाने भी अलग-अलग सिलसिले से हैं।

जीव सृष्ट बैकुंठ लों, सृष्ट ईश्वरी अछर।
ब्रह्मसृष्ट अछरातीत लों, कहे सास्त्र यों कर।। २३ ।।

जीवसृष्टि बैकुण्ठ तक, ईश्वरीसृष्टि अक्षर तक और ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत तक जाएगी, ऐसा शास्त्रों में कहा है।

जो सृष्ट आई जिन ठौर से, घर पोहोंचे आप अपनी।
पार दरवाजे खोल के, आखिर पोहोंचे कर करनी।। २४ ।।

जो सृष्टि जिस ठिकाने से आई, उसे उसके घर ही पहुंचना है। अपनी करनी करके पार के दरवाजे खोलकर पहुंचेगी।

आप अपने वतन पोहोंचते, अटकाव न होवे किन।
जो जहां से आइया, धनी तहां पोहोंचावें तिन।। २५ ।।

किसी भी सृष्टि को अपने घर पहुंचने में कोई रूकावट नहीं आएगी। जो जहां से आई है, धनी उनको वहां पहुंचाएंगे।

जिन जानो सास्त्रों में नहीं, है सास्त्रों में सब कुछ।
पर जीव सृष्ट क्यों पावहीं, जिनकी अकल है तुच्छ।। २६ ।।

ऐसा मत समझो कि शास्त्रों में कुछ नहीं लिखा है। शास्त्रों में तो सब कुछ है, परन्तु जीवसृष्टि जिनकी अक्ल तुच्छ है, समझ नहीं सकती।

Nijanand App

लोक जिमी आसमान के, ए सुपन की अकल।
सो पांच तत्व को छोड़ के, आगे न सकें चल।। २७ ।।

यहां संसार के जीव या देवी-देवताओं की अक्ल सपने की है, इसलिए यह पांच तत्व को छोड़कर आगे नहीं जा सकते।

जो सुध आचारजों नहीं, सो जीवों नहीं बरतत।
जाग्रत बुध ब्रह्मसृष्ट में, लिख्या जाहेर होसी आखिरत।। २८ ।।

जिस ज्ञान की सुध आचार्यों को नहीं है, वह जीवों को कैसे प्राप्त होगी? जागृत बुद्धि आखिरत में ब्रह्मसृष्टियों में जाहिर होगी, ऐसा शास्त्रों में लिखा है।

ऐसा सास्त्रों में लिख्या, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी सों।
इत आए करसी अदल, दे दीदार सब को।। २९ ।।

ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि संसार में आकर सबको दर्शन देंगी। सबका न्याय करेंगी, ऐसा शास्त्रों में लिखा है।

ब्रह्मसृष्टि धाम पोहोंचावसी, और मुक्त देसी सबन।
कलजुग असुराई मेट के, पार पोहोंचावसी त्रिगुन।। ३० ।।

ब्रह्मसृष्टि सबको मुक्ति देकर उनके ठिकाने पर पहुंचाएंगी। कलियुग का अज्ञान मिटाकर, ब्रह्मा, विष्णु और महेश को भी भवसागर से पार पहुंचाएंगी।

और भी साख नीके देऊं, कर देखो विचार।
आखिर अथर्वन वेद पर, सब सृष्टों का मुद्दार।। ३१ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि और भी साक्षी तुमको देती हूं। विचार करके देखो। इसका बयान अथर्ववेद में लिखा है। अथर्ववेद के भेद खुलने पर ही सब सृष्टियों को यकीन आएगा।

तीनों वेदों ने यों कह्या, वेद अथर्वन सबको सार।
ए वेद कुली में आखिर, त्रिगुन को उतारे पार।। ३२ ।।

ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद में भी लिखा है कि अखण्ड ज्ञान का सार अथर्ववेद में है और इसी वेद का ज्ञान त्रिगुण को पार पहुंचाएगा।

ऐसा जाहेर कर लिख्या, पर जिनको नहीं आकीन।
सो कैसे कर मानहीं, जिनकी मत मलीन।। ३३ ।।

ऐसा स्पष्ट लिखा है, पर जिनको अथर्ववेद पर यकीन नहीं है और जिनकी बुद्धि मलीन है, वह इसे कैसे मानेंगे?

कहे रसूल खुदा मैं देखिया, और ले आया फुरमान।
कौल किया आखिर आवने, दीदार होसी सब जहान।। ३४ ।।

रसूल साहिब कहते हैं कि मैंने खुदा को देखा है और खुदा का फरमान लेकर आया हूं। खुदा ने आखिरत में आने का वायदा किया है। वह सारी दुनियां को आकर दर्शन देंगे।

लिख्या है फुरमान में, खुदा काजी होसी आखिर।
जरे जरे हिसाब लेय के, पोहोंचावे किसमत कर।। ३५ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरत में खुदा न्यायाधीश बनकर आएंगे और सबका हिसाब लेकर उनको बहिश्तों में करनी के माफिक पहुंचाएंगे।

Nijanand App

मोमिन मुतकी वास्ते, इत आवसी खुदाए।
भिस्त देसी सबन को, लिख्या है इसदाए।। ३६ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि के वास्ते खुदा आएंगे और जीवसृष्टि को मुक्ति देकर बहिश्तें देंगे। ऐसा शुरू से ही लिखा है।

सो समया सरतें सब लिखी, बीच अथर्वन।
कहावें पढ़े महंमद के, पर पावें ना आकीन बिन।। ३७ ।।

वह समय और सब हकीकत अथर्ववेद में लिखी है। जो कुरान के आलिम और मुहम्मद साहब के मुसलमान कहलाते हैं, वह भी यकीन के बिना पार का ज्ञान नहीं पाते।

रब एक राह चलावसी, दे कर अपना इलम।
करसी कायम सबन को, अपना चलाए हुकम।। ३८ ।।

पारब्रह्म आकर सबको अपना इलम देकर सबको एक धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) में चलाएंगे। वह अपने हुकम से सब जीवसृष्टि को अखण्ड कर देंगे।

सरीयत सो माने नहीं, खुदा बेचून बेचगून।
कहे खुदाए की सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून।। ३९ ।।

शरीयत के मानने वाले मुसलमान कहते हैं कि खुदा की सूरत नहीं है, इसलिए वह खुदा को बेचून (किसी ने पहचाना नहीं), बेचगून (गुण रहित), बेशबीह (उसकी शक्ल किसी से नहीं मिलती), बेनिमून (उसका सानी नहीं है) कहते हैं।

कहे आकीन महंमद पर, ऊपर कयामत और फुरमान।
और कह्या न माने महंमद का, बड़ा देख्या ए ईमान।। ४० ।।

मुसलमान सभी कहते हैं कि हम मुहम्मद, कुरान तथा कयामत पर पक्का यकीन रखते हैं, परन्तु हकीकत में वे मुहम्मद का कहना नहीं मानते। ऐसा यकीन है इनका?

नास्तिक कर बैठे हते, देख वेद कतेब के मांहें।
पांच तत्व त्रिगुन बिना, कहे और कछुए नाहें।। ४१ ।।

वेद और कुरान को देखकर भी संसार के हिन्दू और मुसलमान विश्वास खो बैठे थे। पांच तत्व और ब्रह्मा, विष्णु, महेश के बिना किसी को नहीं मानते थे।

और कहे नासूत मलकूत, और तिन पर ला-मकान।
पढ़ के वेद कतेब को, करत माएने एह निदान।। ४२ ।।

कहते हैं कि मृत्युलोक के ऊपर बैकुण्ठ तथा उसके ऊपर निराकार है। पढ़े-लिखे लोग इस तरह का अर्थ करते हैं।

न तो ए सब्द सास्त्रों के, हुती सबों को सुध।
तो भी पकड़े ला मकान सुन्य को, ऐसी जीवों नास्तिक बुध।। ४३ ।।

यह सब शब्द शास्त्रों के हैं और सबको खबर भी है, परन्तु फिर भी निराकार को पकड़े बैठे हैं। ऐसी जीवों की नास्तिक बुद्धि है।

Nijanand App

अब जाहेर हुई सृष्टब्रह्म की, और जाहेर वतन ब्रह्म
अर्स उमत जाहेर हुई, हुई जाहेर सूरत खसम।। ४४ ।।

अब ब्रह्मसृष्टि जाहिर हो गई है। परमधाम और पारब्रह्म का पता सबको लग गया है। कुरान के अनुसार अर्श की उम्मत (मोमिन) जाहिर हो गए हैं। खुदा की सूरत का पता लग गया है।

खेल देखाया ब्रह्मसृष्ट को, करके हुकम आप।
ए झूठा खेल कायम किया, करके इत मिलाप।। ४५ ।।

आप स्वयं पारब्रह्म ने हुकम करके ब्रह्मसृष्टि को खेल दिखाया और इसलिए यहां आकर झूठे खेल को कायम (अखण्ड) किया।

महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, ऐसा हुआ न होसी कब।
गुझ सब जाहेर किया, ए जो लीला जाहेर हुई अब।। ४६ ।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टि को कहते हैं कि ऐसा न कभी हुआ है और न कभी होगा। सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों को जाहिर कर दिया है।

।। प्रकरण ।। ७३ ।। चौपाई ।। ९५९ ।।

राग श्री

भवजल चौदे भवन, निराकार पाल चौफेर।
त्रिगुन लेहेरी निरगुन की, उठें मोह अहं अंधेर।। १ ।।

चौदह लोकों (भवसागर) के चारों तरफ निराकार का आवरण है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, निराकार की लहरें, मोह और अहंकार के अंधेरों से बनी हैं।

तान तीखे ग्यान इलम के, दुन्द भमरियां अकल।
बहें पंद पैंडे आड़े उलटे, झूठ अथाह मोह जल।। २ ।।

इसमें शक और इलम की भंवर संशय से भरी है। जिनसे धर्म पैंडे इस झूठे भवसागर में चल रहे हैं।

तामें बड़े जीव मोह जल के, मगर मच्छ विक्राल।
बड़ा छोटे को निगलत, एक दूजे को काल।। ३ ।।

इस भवसागर में बड़े-बड़े जीव हैं। मगरमच्छ हैं। यह एक दूसरे के काल हैं। बड़े छोटों को खा जाते हैं। यहां बड़े-बड़ें आचार्य, पीठाधीश्वर और गादीपति अपने-अपने चेलों को लूट रहे हैं।

घाट ना पाई बाट किने, दिस न काहू द्वार।
ऊपर तले मांहें बाहेर, गए कर कर खाली विचार।। ४ ।।

इस भवसागर को किसी ने नहीं पाया। इससे निकलने का रास्ता, ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर खूब विचार कर खोजने पर भी निकलने का दरवाजा तथा दिशा नहीं मिली।

जीवें आतम अंधी करी, मिल अंतस्करन अंधेर।
गिरदवाए अंधी इंद्रियां, तिन लई आतम को घेर।। ५ ।।

जीव ने अंतस्करण से मिलकर आत्मा को अन्धा कर रखा है। आत्मा को अन्धी इन्द्रियों ने चारों तरफ से घेर रखा है।

Nijanand App

अब जाहेर हुई सृष्टब्रह्म की, और जाहेर वतन ब्रह्म
अर्स उमत जाहेर हुई, हुई जाहेर सूरत खसम।।४४।।

अब ब्रह्मसृष्टि जाहिर हो गई है। परमधाम और पारब्रह्म का पता सबको लग गया है। कुरान के अनुसार अर्श की उम्मत (मोमिन) जाहिर हो गए हैं। खुदा की सूरत का पता लग गया है।

खेल देखाया ब्रह्मसृष्ट को, करके हुकम आप।
ए झूठा खेल कायम किया, करके इत मिलाप।।४५।।

आप स्वयं पारब्रह्म ने हुकम करके ब्रह्मसृष्टि को खेल दिखाया और इसलिए यहां आकर झूठे खेल को कायम (अखण्ड) किया।

महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, ऐसा हुआ न होसी कब।
गुझ सब जाहेर किया, ए जो लीला जाहेर हुई अब।।४६।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टि को कहते हैं कि ऐसा न कभी हुआ है और न कभी होगा। सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों को जाहिर कर दिया है।

।। प्रकरण ।। ७३ ।। चौपाई ।। ९५९ ।।

राग श्री

भवजल चौदे भवन, निराकार पाल चौफेर।
त्रिगुन लेहेरी निरगुन की, उठें मोह अहं अंधेर।।१।।

चौदह लोकों (भवसागर) के चारों तरफ निराकार का आवरण है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, निराकार की लहरें, मोह और अहंकार के अंधेरों से बनी हैं।

तान तीखे ग्यान इलम के, दुन्द भमरियां अकल।
बहें पंद पैंडे आड़े उलटे, झूठ अथाह मोह जल।।२।।

इसमें शक और इलम की भंवर संशय से भरी है। जिनसे धर्म पैंडे इस झूठे भवसागर में चल रहे हैं।

तामें बड़े जीव मोह जल के, मगर मच्छ विक्राल।
बड़ा छोटे को निगलत, एक दूजे को काल।।३।।

इस भवसागर में बड़े-बड़े जीव हैं। मगरमच्छ हैं। यह एक दूसरे के काल हैं। बड़े छोटों को खा जाते हैं। यहां बड़े-बड़ें आचार्य, पीठाधीश्वर और गादीपति अपने-अपने चेलों को लूट रहे हैं।

घाट ना पाई बाट किने, दिस न काहूं द्वार।
ऊपर तले मांहें बाहेर, गए कर कर खाली विचार।।४।।

इस भवसागर को किसी ने नहीं पाया। इससे निकलने का रास्ता, ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर खूब विचार कर खोजने पर भी निकलने का दरवाजा तथा दिशा नहीं मिली।

जीवें आतम अंधी करी, मिल अंतस्करन अंधेर।
गिरदवाए अंधी इंद्रियां, तिन लई आतम को घेर।।५।।

जीव ने अंतस्करण से मिलकर आत्मा को अन्धा कर रखा है। आत्मा को अन्धी इन्द्रियों ने चारों तरफ से घेर रखा है।

Nijanand App

पांच तत्व तारा ससि सूर फिरें, फिरें त्रिगुन निरगुन।
पुरुख प्रकृति यामें फिरें, निराकार निरंजन सुंन।। ६ ।।

इस भवसागर में पांच तत्व, सितारे, चन्द्रमा और सूर्य घूमते हैं। त्रिगुण, निराकार, पुरुष, प्रकृति जिनको निराकार, निरंजन शून्य कहते हैं, सब घूमते हैं।

ए चौदे पल में पैदा किए, पांच तत्व गुन निरगुन।
याही पल में फना हुए, निराकार सुन्य निरंजन।। ७ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड, पांच तत्व, तीन गुण तथा निराकार एक पल में पैदा होते हैं और उसी पल में नष्ट होकर शून्य में समा जाते हैं। यह आंखों से दिखाई नहीं देता।

ए चौदे चुटकी में चल जासी, गुन निरगुन सुन्य तत्व।
निराकार निरंजन सामिल, उड़ जासी ज्यों असत।। ८ ।।

गुण, निरगुण, शून्य, पांच तत्व, निराकार, निरंजन और चौदह लोक झूठ की तरह चुटकी बजाते ही समाप्त हो जाएंगे।

देत काल परिकरमा इनकी, दोऊ तिमर तेज देखाए।
गिनती सरत पोहोंचाए के, आखिर सबे उड़ाए।। ९ ।।

इन सबको काल ने घेर रखा है। अन्धकार और प्रकाश, रात और दिन दिखाकर सांसों की गिनती पूरी करके सबको उड़ा देता है।

ए इंड जो पैदा किया, ए जो विश्व चौदे भवन।
इनमें सुध न काहू को, ए उपजाए किन।। १० ।।

इन चौदह लोकों को जिसने पैदा किया है उसकी सुध इसमें किसी को नहीं मिली।

हम भी आए इन खेल में, बुध न कछुए सुध।
धनी आए अछरातीत, मोहे जगाई कई बिध।। ११ ।।

हम भी तो इस खेल में हैं, पर हमें न कुछ होश है और न कुछ समझ में आता है। अक्षरातीत धाम धनी ने यहां आकर मुझे कई प्रकार से जागृत किया।

कह्या खेल किया तुम कारने, ए जो मांग्या खेल तुम।
खेल देख के घर चलो, आए बुलावन हम।। १२ ।।

धनी ने मुझे कहा कि जो खेल तुमने मांगा था, वह तुम्हारे वास्ते बनाया है। अब खेल देखकर घर चलो। हम बुलाने आए हैं।

निबेरा खीर नीर का, सास्त्र सबों का सार।
अठोतर सौ पख को, कर दियो निरवार।। १३ ।।

सब शास्त्रों का सार, माया और ब्रह्म की पहचान करा दी तथा एक सौ आठ पक्ष का भेद भी बता दिया।

कई साखें सास्त्र साधुन की, दे दे कराई पेहेचान।
मूल सरूप देखाए धाम के, कर सनमंध दियो ईमान।। १४ ।।

कई साधुओं की वाणी और शास्त्रों की गवाही देकर पहचान कराई तथा मूल स्वरूप दिखाकर अपनी निसबत बताई। इससे हमारा ईमान और दृढ़ किया।

Nijanand App

अंतस्करन में रोसनी, और रोसन करी आतम।
गुन पख इन्द्री रोसन, ऐसा बरस्या नूर खसम।। १५ ।।

हमारे मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार में ज्ञान दिया और आत्मा की पहचान कराई। गुण-पक्ष (अंतःकरण) इन्द्रियों को जागृत करके धनी ने ऐसी कृपा की वर्षा की।

बोहोत सोर किया मुझ ऊपर, रोए रोए कहे वचन।
अपनायत अपनी जान के, मोहे खोल दिए द्वार वतन।। १६ ।।

मेरे धनी ने बहुत रो-रोकर, पुकार-पुकारकर समझाया और मुझे अपनी जानकर धाम के दरवाजे खोल दिए।

क्यों कर कहूं मैं हेत की, जो धनिऐं किए भांत भांत।
जगाई धाम देखावने, कई विध करी एकांत।। १७ ।।

धनी ने जो तरह-तरह से मुझ पर कृपा की है उसको मै कैसे कहूं? उन्होंने एकान्त में बैठकर धाम दिखाने के लिए धाम की चर्चा की और मुझे जागृत किया।

जिनसों सब विध समझिए, ऐसी दई मोहे सुध।
सास्त्रों आगूं यों कह्या, धनी ले आवसी जाग्रत बुध।। १८ ।।

उनकी कृपा से सब कुछ मुझे जानकारी हो जाए, ऐसा ज्ञान मुझे दिया। शास्त्रों में पहले से ही लिखवा रखा था कि धनी (पारब्रह्म) जागृत बुद्धि लेकर आएंगे।

अनेक लिखी निसानियां, करावने हमारी पेहेचान।
जाने सब कोई सेवें इनको, कई किए साख निसान।। १९ ।।

हमारी पहचान कराने के वास्ते ही सब शास्त्रों में निशान लिखाए, जिससे सबको हमारी पहचान हो जाए और वह हमारी सेवा करें।

यों कई बिध समझाई दुनियां, देने हम पर ईमान इस्क।
धनी नाम खिताब दे अपनों, मुझे बैठाई कर हक।। २० ।।

दुनियां को हम पर ईमान और इश्क लाने के लिए कई तरह से समझाया। धनी ने मुझे अपना ही नाम और खिताब देकर मुझे प्राणनाथ बनाकर बिठा दिया।

कई दिन सुनाई मुझ को, श्री मुख की चरचा।
और सबे विध समझी, पर लग्या न कलेजे घा।। २१ ।।

धनी ने अपने श्रीमुख से बहुत दिन तक (श्री देवचन्द्रजी के तन में बैठकर) चर्चा सुनाई। मैं हर तरह समझ भी गई, परन्तु कलेजे में चोट नहीं लगी।

चौदे भवन के जो धनी, विस्व पूजत सब ताए।
ए सुध नहीं काहू को, कोई और है इसदाए।। २२ ।।

चौदह लोकों के मालिक, आदि नारायण जिनकी पूजा सारा संसार करता है उनको तथा अन्य को इसकी सुध नहीं है कि इनके अलावा कोई और भी पारब्रह्म है।

Nijanand App

त्रिगुन इस ब्रह्मांड के, तिनको भी ए सुध नाहें।
कहां से आए हम कौन हैं, कौन इन जिमी मांहें।। २३ ।।

इस ब्रह्माण्ड के देवता—ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी खबर नहीं है कि वह कौन हैं? कहां से आए हैं? और यह ब्रह्माण्ड कौन सा है?

महाविष्णु सुन्य प्रकृती, निराकार निरंजन।
ए काल द्वैत को कोहै, ए सुध नहीं त्रिगुन।। २४ ।।

महाविष्णु (आदि नारायण), शून्य, प्रकृति, निराकार, निरंजन, सबको समाप्त करने वाला कौन काल का रूप है। यह खबर त्रिगुण को नहीं है।

प्रले पैदा की सुध नहीं, तो ए क्यों जाने अछर।
लोक जिमी आसमान के, इनकी याही बीच नजर।। २५ ।।

जब इनको ब्रह्माण्ड के बनने और मिटने की सुध नहीं है, तो वह इसे बनाने वाले अक्षर ब्रह्म को कैसे जान सकते हैं? जमीन के देवी-देवता तथा संसार के लोगों की नजर संसार में ही है, अर्थात् वह मानते हैं कि परमात्मा संसार में ही है।

अछर सरूप के पल में, ऐसे कई कोट इंड उपजे।
पल में पैदा करके, फेर वाही पल में खपे।। २६ ।।

अक्षर के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते हैं और मिट जाते हैं।

ए जो न्यारा पारब्रह्म, इनकी भी करी रोसन।
ए जो अछर अद्वैत, भी कहे तिनके पार वचन।। २७ ।।

अक्षर से भी न्यारा पारब्रह्म अक्षरातीत है। उनकी भी जानकारी देती हूं। अक्षर ब्रह्म अनादि है। अक्षरातीत इनसे भी परे है।

सो अछर मेरे धनी के, नित आवें दरसन।
ए लीला इन भांत की, इत होत सदा बरतन।। २८ ।।

ऐसे अनादि अक्षर ब्रह्म हमारे धनी अक्षरातीत के दर्शन करने रोज आते हैं। इस प्रकार की दर्शन लीला सदा होती है।

अछरातीत के मोहोल में, प्रेम इस्क बरतत।
सो सुध अछर को नहीं, जो किन विध केलि करत।। २९ ।।

अक्षरातीत के मोहोल (परमधाम रंग-महल) में प्रेम और इश्क की जो लीला होती है, उसकी खबर अक्षर को नहीं है।

सो धाम वतन मोहे कर दियो, मेरो अछरातीत धनी।
ब्रह्म सृष्ट मिनें सिरोमन, मैं भई सोहागिनी।। ३० ।।

उस सतगुरु ने धाम और मेरे धनी अक्षरातीत की पहचान करा दी जिससे मैं सुहागिनी तथा ब्रह्मसृष्टि की सिरदार बन गई।

साख गुन पख इंद्रियां, आतम परआतम साख।
सास्त्र सब ब्रह्मांड के, देत भाख भाख कई लाख।। ३१ ।।

इस बात की गवाही, मेरे गुण, पक्ष (अंतःकरण) इन्द्रियां, आत्मा, परआतम तथा संसार के सभी शास्त्र अनेक भाषाओं में देते हैं।

Nijanand App

ऐसा सुच्छम सरूप देखाए के, दे धाम करी चेतन।
इत विलास कई बिध के, मांहें सिरदारी सैयन।। ३२ ।।

परमधाम का ऐसा सूक्ष्म (चेतन) स्वरूप दिखाकर तथा परमधाम की पहचान कराकर वहां के कई तरह के सुखों को बताया। ब्रह्मसृष्टियों में मुझे सिरदार बना दिया।

ऐसी साख देवाई कर सनमंध, आतम करी जाग्रत।
सो आए धनी मेरे धाम से, कही विवेके कयामत।। ३३ ।।

ऐसी गवाहियां दिलवा कर निसबत की पहचान कराई जिससे मेरी आत्मा जागृत हो गई। मेरे धाम के धनी ने आकर के कयामत के भेद भी बताए।

ऐसे कई सुख परआतम के, अनुभव कराए अंग।
तो भी इस्क न आइया, नेहेचल धनी सों रंग।। ३४ ।।

धनी ने परआतम के ऐसे कई सुखों का अनुभव कराया। फिर भी मेरे अन्दर इश्क नहीं आया और न अखण्ड में धनी से मिलने की चाहना हीं आई।

इन धाम की लीला मिने, इन धनी की अरधांग।
तो भी प्रेम ना उपज्या, कोई आतम भई ऐसी अंध।। ३५ ।।

मैं उस परमधाम में धनी की अंगना हूं और आनन्द की लीला करती हूं। इतना समझकर भी मुझे प्रेम नहीं आया। आत्मा ऐसी अन्धी हो गई।

तब आप अंतरध्यान होए के, भेज दिया फुरमान।
हम को इस्क उपजावने, इत कई बिध लिखे निसान।। ३६ ।।

तब आप सतगुरु श्री देवचन्द्रजी के तन को छोड़कर अन्तर्ध्यान हो गए और हम में इश्क पैदा करने के लिए हवसा में विरह की वाणी बख्शीश की जिससे घर की पहचान होती है।

इन बिध देने ईमान, उपजावने इस्क।
सो इस्क बिना न पाइए, ए जो नूर तजल्ला हक।। ३७ ।।

इस तरह से ईमान देने के लिए और इश्क पैदा करने के लिए धनी ने मेहर की, क्योंकि इश्क के बिना पारब्रह्म धाम धनी की पहचान नहीं की जा सकती।

।। प्रकरण ।। ७४ ।। चौपाई ।। ९९६ ।।

राग श्री साखी

मेरे धनी धाम के दुलहा, मैं कर न सकी पेहेचान।
सो रोऊं मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान।। १ ।।

हे मेरे धनी! धाम के दूल्हा मैं आपको पहचान नहीं सकी। आपने मुझे मेरी भलाई के वास्ते जो बातें बताई थीं, उन वचनों को याद कर मैं अब रोती हूं।

सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजे घाए।
अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रहत अरवाहे।। २ ।।

अब उन्हीं बातों के याद आने से कलेजे में घाव लग रहे हैं। फिर भी हैरानी इस बात की है कि यह तन खड़ा क्यों है? मर क्यों नहीं जाता?

Nijanand App

ऐसा सुच्छम सरूप देखाए के, दे धाम करी चेतन।
इत विलास कई बिध के, मांहें सिरदारी सैयन।। ३२ ।।

परमधाम का ऐसा सूक्ष्म (चेतन) स्वरूप दिखाकर तथा परमधाम की पहचान कराकर वहां के कई तरह के सुखों को बताया। ब्रह्मसृष्टियों में मुझे सिरदार बना दिया।

ऐसी साख देवाई कर सनमंध, आतम करी जाग्रत।
सो आए धनी मेरे धाम से, कही विवेके कयामत।। ३३ ।।

ऐसी गवाहियां दिलवा कर निसबत की पहचान कराई जिससे मेरी आत्मा जागृत हो गई। मेरे धाम के धनी ने आकर के कयामत के भेद भी बताए।

ऐसे कई सुख परआतम के, अनुभव कराए अंग।
तो भी इस्क न आइया, नेहेचल धनी सों रंग।। ३४ ।।

धनी ने परआतम के ऐसे कई सुखों का अनुभव कराया। फिर भी मेरे अन्दर इश्क नहीं आया और न अखण्ड में धनी से मिलने की चाहना हीं आई।

इन धाम की लीला मिने, इन धनी की अरधांग।
तो भी प्रेम ना उपज्या, कोई आतम भई ऐसी अंध।। ३५ ।।

मैं उस परमधाम में धनी की अंगना हूं और आनन्द की लीला करती हूं। इतना समझकर भी मुझे प्रेम नहीं आया। आत्मा ऐसी अन्धी हो गई।

तब आप अंतरध्यान होए के, भेज दिया फुरमान।
हम को इस्क उपजावने, इत कई बिध लिखे निसान।। ३६ ।।

तब आप सतगुरु श्री देवचन्द्रजी के तन को छोड़कर अन्तर्ध्यान हो गए और हम में इश्क पैदा करने के लिए हवसा में विरह की वाणी बख्शीश की जिससे घर की पहचान होती है।

इन बिध देने ईमान, उपजावने इस्क।
सो इस्क बिना न पाइए, ए जो नूर तजल्ला हक।। ३७ ।।

इस तरह से ईमान देने के लिए और इश्क पैदा करने के लिए धनी ने मेहर की, क्योंकि इश्क के बिना पारब्रह्म धाम धनी की पहचान नहीं की जा सकती।

।। प्रकरण ।। ७४ ।। चौपाई ।। ९९६ ।।

राग श्री साखी

मेरे धनी धाम के दुलहा, मैं कर न सकी पेहेचान।
सो रोऊं मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान।। १ ।।

हे मेरे धनी! धाम के दूल्हा मैं आपको पहचान नहीं सकी। आपने मुझे मेरी भलाई के वास्ते जो बातें बताई थीं, उन वचनों को याद कर मैं अब रोती हूं।

सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजे घाए।
अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रहत अरवाहे।। २ ।।

अब उन्हीं बातों के याद आने से कलेजे में घाव लग रहे हैं। फिर भी हैरानी इस बात की है कि यह तन खड़ा क्यों है? मर क्यों नहीं जाता?

Nijanand App

अपनायत केती कहूं, जो करी हमसों तुम।
नींद उड़ाई बुलावने, पोहोंचाया कौल हुकम।। ३ ।।

हे धनी! आपने मुझे अपनी जानकर मेरे अज्ञान की नींद उड़ाई और अपने वायदे को पूरा किया।

क्या रोई क्या रोऊंगी, उठी आग इस्क।
थिर चर सारा जलिया, जाए झालां पोहोंची हक।। ४ ।।

अब विरह होने से इश्क जागा है। अब तन की सारी चाहना जलकर राख हो गई है। धनी से मिलने के लिए मैं तड़प रही हूं।

जो साहेब मैं देखिया, सो मिले होए सुख चैन।
तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन।। ५ ।।

जिस धनी को मैंने देखा है उनको मिलने से ही सुख और चैन होगा। जब तक वह धाम धनी मिल नहीं जाते तब तक आंखों से आंसू आते रहेंगे और शरीर का खून जलता रहेगा।

जो पट आड़े धाम के, मैं ताए देऊं जार बार।
कोई बिध करके उड़ाइए, ए जो लाग्यो देह विकार।। ६ ।।

परमधाम के रास्ते में जो रुकावटें आ रही हैं मैं उन्हें जला दूंगी। मेरे तन में माया मोह के जो विकार हैं, उनको किसी न किसी तरह से समाप्त करूंगी।

बन बेली सब रोइया, और जंगल जानवर।
कई पसु पंखी केते कहूं, जले जो दरदा कर।। ७ ।।

मेरे तन रूपी जंगल की बेलें रो रही हैं। जंगल के जानवर, पशु, पक्षी सब विरहा के दर्द में जल रहे हैं, अर्थात् मेरे तन के सब गुण, अंग, इन्द्रियां आपके विरह के दर्द से जल रहे हैं।

जंगल रोया जलिया, जल बल हुआ खाक।
इनमें पंखी क्यों रहे, जो पर जल हुए पाक।। ८ ।।

मेरा तन रूपी जंगल जलकर खाक हो गया, अर्थात् उसका विनाश हो गया। अब इस तन में जीव रूपी पक्षी जिसके गुण, अंग, इन्द्रियां विरह से निर्मल हो गई हों, वह कैसे रह सकता है?

पहाड़ रोए टूटे टुकड़े, हुए हैं भूक भूक।
भवजल रोया सागर, सो गया सारा सूक।। ९ ।।

काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी पहाड़ भी रो-रोकर टूटे और टुकड़े होकर चूर-चूर हो गए। शरीर के अन्दर का पानी रो-रोकर भवसागर की तरह सूख गया।

भोम रोई भली भांत सों, टूट गई रसातल।
नाग लोक सब रोइया, सो पड़या जाए पाताल।। १० ।।

मेरे पांवों से लेकर सिर तक सारे अंग विरहा की अग्नि में रो रहे हैं।

रोए पांच तत्व तीन गुन, निरंजन निराकार।
रोई द्वैत पुरुख प्रकृती, पट उड़यो अंतर आकार।। ११ ।।

मेरे पांच तत्व और तीन गुण, निरंजन, निराकार, पुरुष, प्रकृति, सब गुण, अंग, इन्द्रियां, माया और अहं सभी रोए और अन्दर के विकार के परदे उड़ गए।

Nijanand App

आकास रोया सब अंगों, मोह अहं गल्यो चहुंओर।
निराकार निरंजन गलया, जाए रह्या अंतर ठौर।। १२ ।।

आकाश रोया, मोह तत्व और अहंकार का आवरण रोया। निराकार और निरंजन तक सब विरह में गल गया। अब अन्तर्मन में जीव के लिए कहीं ठिकाना नहीं रहा।

इस्कें आग फूंक दई, लाग्यो सब ब्रह्माण्ड।
जब पोहोंची झालां अंतर लों, तब क्यों रहे ए पिंड।। १३ ।।

मेरे अन्दर विरह की आग ऐसी जली कि सारा तन मिट्टी हो गया। जब उस आग की लपटें अन्दर चली गईं तो यह शरीर कैसे रह सकता है?

आग इस्क ऐसी उठी, लोहू रोया वैराट।
खाक हुआ जल बल के, उड़ गया सब ठाट।। १४ ।।

इश्क के विरह की आग ऐसी लगी कि सारा तन रूपी ब्रह्माण्ड रोने लगा और शरीर का सारा ठाट-बाट समाप्त हो गया।

महामत कहे मेहेबूब जी, खेल देख्या चाहया दिल।
हांसी करी भली भांत सों, अब उठो सुख लीजे मिल।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेहबूब जी! जैसा खेल हमने चाहा था वैसा ही खेल हमने देखा है। आपने हमारी अच्छी हंसी उड़ाई (आपने हमसे अच्छा मजाक किया)। अब उठो मिलकर आनन्द मनाएं।

।। प्रकरण ।। ७५ ।। चौपाई ।। १०११ ।।

राग श्री

निज नाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।
मुक्त देसी ब्रह्मांड को, आए ब्रह्म आतम सत।। १ ।।

आज दिन तक दुनियां जिसके नाम की इन्तजार में थी कि उनके आने से अखण्ड मुक्ति मिलेगी, वह मुक्ति के देने वाली ब्रह्मसृष्टि और भवसागर से जीवों को पार उतारने वाला पारब्रह्म का नाम आ गया है, जिससे सारे जीवों और ब्रह्माण्ड को मुक्ति मिल जाएगी।

हो मेरी सत आतमा, तुम आओ घर सत खसम।
नजर छोड़ो री झूठ सुपन, आए देखो सत वतन।। २ ।।

हे मेरी परमधाम की सच्ची आत्माओ! अपने अखण्ड घर परमधाम में अपने सच्चे धनी के पास आओ। झूठे संसार से नजर को हटाकर अपने अखण्ड घर को देखो।

तुम निरखो सत सरूप, सत स्यामाजी रूप अनूप।
साजो री सत सिनगार, विलसो संग सत भरतार।। ३ ।।

तुम अपने अखण्ड तनों को देखो। सुभान श्यामाजी का अनुपम स्वरूप देखो तथा अपने अखण्ड धनी से विलसने के लिए अपने अखण्ड सिनगार को धारण करो (अर्थात् संसार में सच्चे अंग के भाव से चलो)।

सत धनी सों करो हांस, पीछे करो प्रेम विलास।
सत बरनन कीजो एह, उपजे सत प्रेम सनेह।। ४।।

अपने सच्चे धनी से प्रेम की मीठी मीठी बातें करो। फिर उनसे प्रेम और आनन्द की लीला करो। सुन्दरसाथ को ऐसी सच्ची वाणी सुनाओ जिससे उनको भी धनी से सच्चा प्रेम हो जाए।

Nijanand App

आकास रोया सब अंगों, मोह अहं गल्यो चहुंओर।
निराकार निरंजन गलया, जाए रह्या अंतर ठौर।। १२ ।।

आकाश रोया, मोह तत्व और अहंकार का आवरण रोया। निराकार और निरंजन तक सब विरह में गल गया। अब अन्तर्मन में जीव के लिए कहीं ठिकाना नहीं रहा।

इस्कें आग फूंक दई, लाग्यो सब ब्रह्माण्ड।
जब पोहोंची झालां अंतर लों, तब क्यों रहे ए पिंड।। १३ ।।

मेरे अन्दर विरह की आग ऐसी जली कि सारा तन मिट्टी हो गया। जब उस आग की लपटें अन्दर चली गईं तो यह शरीर कैसे रह सकता है?

आग इस्क ऐसी उठी, लोहू रोया वैराट।
खाक हुआ जल बल के, उड़ गया सब ठाट।। १४ ।।

इश्क के विरह की आग ऐसी लगी कि सारा तन रूपी ब्रह्माण्ड रोने लगा और शरीर का सारा ठाट-बाट समाप्त हो गया।

महामत कहे मेहेबूब जी, खेल देख्या चाहया दिल।
हांसी करी भली भांत सों, अब उठो सुख लीजे मिल।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेहबूब जी! जैसा खेल हमने चाहा था वैसा ही खेल हमने देखा है। आपने हमारी अच्छी हंसी उड़ाई (आपने हमसे अच्छा मजाक किया)। अब उठो मिलकर आनन्द मनाएं।

॥ प्रकरण ॥ ७५ ॥ चौपाई ॥ १०११ ॥

राग श्री

निज नाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।
मुक्त देसी ब्रह्मांड को, आए ब्रह्म आतम सत।। १ ।।

आज दिन तक दुनियां जिसके नाम की इन्तजार में थी कि उनके आने से अखण्ड मुक्ति मिलेगी, वह मुक्ति के देने वाली ब्रह्मसृष्टि और भवसागर से जीवों को पार उतारने वाला पारब्रह्म का नाम आ गया है, जिससे सारे जीवों और ब्रह्माण्ड को मुक्ति मिल जाएगी।

हो मेरी सत आतमा, तुम आओ घर सत खसम।
नजर छोड़ो री झूठ सुपन, आए देखो सत वतन।। २ ।।

हे मेरी परमधाम की सच्ची आत्माओ! अपने अखण्ड घर परमधाम में अपने सच्चे धनी के पास आओ। झूठे संसार से नजर को हटाकर अपने अखण्ड घर को देखो।

तुम निरखो सत सरूप, सत स्यामाजी रूप अनूप।
साजो री सत सिनगार, विलसो संग सत भरतार।। ३ ।।

तुम अपने अखण्ड तनों को देखो। सुभान श्यामाजी का अनुपम स्वरूप देखो तथा अपने अखण्ड धनी से विलसने के लिए अपने अखण्ड सिनगार को धारण करो (अर्थात् संसार में सच्चे अंग के भाव से चलो)।

सत धनी सों करो हांस, पीछे करो प्रेम विलास।
सत बरनन कीजो एह, उपजे सत प्रेम सनेह।। ४।।

अपने सच्चे धनी से प्रेम की मीठी मीठी बातें करो। फिर उनसे प्रेम और आनन्द की लीला करो। सुन्दरसाथ को ऐसी सच्ची वाणी सुनाओ जिससे उनको भी धनी से सच्चा प्रेम हो जाए।

Nijanand App

सत साथ देत देखाई, सत आनन्द अंग न माई।
सत साथ सों करो प्रीत, देखो सत घर की ए रीत।। ५ ।।

हर समय तुम्हारी नजर सच्चे सुन्दरसाथ पर हो। तुम्हारे अन्दर आनन्द भरपूर हो तथा सुन्दरसाथ से सच्चा प्यार करो, क्योंकि हमारे सच्चे घर परमधाम की यही रीति है।

सत रेहेस सत रंग, सत साथ को सुख अभंग।
तुम संग करो सत बातें, सत दिन और सत रातें।। ६ ।।

परमधाम की लीला, आनन्द तथा सुन्दरसाथ के सुख सदा अखण्ड हैं। परमधाम की बातें, वहां के दिन और रात सब अखण्ड हैं।

सत चांद और सत सूर, हिसाब बिना सत नूर।
सत सोभा सत मन्दिर, सत सुख सेज्या अंदर।। ७ ।।

वहां का चन्द्रमा, सूर्य, प्रकाश, शोभा, महल, सेज्या-सुख सभी अखण्ड हैं।

सत जिमी सत बन, खुसबोए सत पवन।
लेहेरी लेवे सत जल, सत आकास निरमल।। ८ ।।

परमधाम की जमीन, वन, सुगन्धित हवा, शीतल जल की लहरें, निर्मल आकाश, आदि सभी अखण्ड हैं।

सत पसु पंखी अलेखें, सत खेल राज साथ देखें।
सत खेलें बोलें बन माहीं, सत सुख हिसाब काहूं नाहीं।। ९ ।।

बेशुमार पशु-पक्षी जिनके खेल को ब्रह्मसृष्टियां श्री राजजी के साथ देखती हैं, अखण्ड हैं। परमधाम में पशु-पक्षियों का वन में खेलना, बोलना, सभी सुख ही सुख हैं।

रुत रंग रस नए नए, अलेखे सदा सुख कहे।
सत जमुना त्रट किनारें, दोऊ तरफ बराबर हारें।। १० ।।

परमधाम की ऋतुओं के नए-नए रंग-रस जो बेशुमार सुख के कहे हैं, वह अखण्ड हैं। जमुनाजी के किनारे तथा दोनों ओर सुन्दर पेड़ों की हार अखण्ड हैं।

सत डारी झलूबे ऊपर जल, खुसबोए हिंडोले सीतल।
सत सुख तलाब के त्रट, खोल देखो नैना पट।। ११ ।।

इन पेड़ों की डालियां जल पर झूलती हैं जिनमें लगे हिंडोलों में झूलते समय शीतल सुगन्धि आती है। यह सब अखण्ड हैं। हौज कौसर तालाब के किनारों को अन्दर की नजर खोल कर देखो तो बड़े सुखदायी हैं और अखण्ड हैं।

पसु गाए लगावें रट, गिरदवाए द्योहरी निकट।
बड़ा अचरज मोहे एह, ए सुन क्यों रहे झूठी देह।। १२ ।।

हौज कौसर तालाब के चारों तरफ पशु पिउ-पिउ करते हैं तथा चारों तरफ घेरकर द्योहरियां आई हैं। मुझे इस बात की हैरानी होती है कि अखण्ड घर के ऐसे सुख सुनकर यह झूठा तन क्यों खड़ा है?

ए खेल झूठा तो छोड़या जाए, जो सत सुख अंग में भराए।
जब सत सुख देखो केलि, तब झूठा दुख देओगे ठेलि।। १३ ।।

जब अखण्ड सुख अंग में आ जाएंगे तब यह झूठा संसार छूट जाएगा। हे साथजी! जब तुम सच्चे सुख में आनन्द का अनुभव करोगे तो झूठे दुःख को छोड़ दोगे।

Nijanand App

सत सांई सों करो विलास, तब टूट जाए झूठी आस।
ज्यों ज्यों लेओगे सत सुख, त्यों त्यों छूटे असत दुख।। १४ ।।

हे साथजी! तुम अपने धनी से आनन्द करो। इस तरह से तुम्हारी झूठी माया की चाहना हट जाएगी। जैसे-जैसे अखण्ड सुख को लेते जाओगे वैसे-वैसे झूठे सुख छूट जाएंगे।

ज्यों ज्यों उठें सत सुख के तरंग, त्यों त्यों उड़े सुपन को संग।
जब याद आवे सुख अपनों, तब छूटेगो झूठो सुपनो।। १५ ।।

ज्यों-ज्यों अखण्ड सुख की लहरें आएंगी, वैसे-वैसे सपने के झूठे सुख छूट जाएंगे। जब अपना सुख याद आ जाएगा तो झूठा सपना छूटेगा।

देखो मन्दिर मोहोल झरोखे, ज्यों छूट जाए दुख धोखे।
देखो झूठी फेर फेर मारे, सत सुख बिना कोई न उबारे।। १६ ।।

जब अपने रंग महल के मन्दिर, महल और झरोखों को देखोगे, तो यह छल कपट के दुःख छूट जाएंगे। देखो यह झूठी माया की चाहना बार-बार पीछे घसीटती है। सच्चे अखण्ड सुख के बिना इससे कोई नहीं छुड़ा सकता।

छोड़ घर को सुख अलेखे, आतम काहे को दुखड़ा देखे।
आतम परआतम पेखे, सुख उपजे सत अलेखे।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि आत्मा को जब घर का बेशुमार सुख मिल जाता है और आतम परआतम को परख लेती है, तो फिर वह दुःख काहे को देखेगी।

जब आतम ने दई साख, साथें भी कही बेर लाख।
सत धनिएं साख आए दई, सो तो सत वतन वालों ने लई।। १८ ।।

जब आत्मा ने अन्दर से पहचान लिया, और सुन्दरसाथ को भी लाखों बार कहकर भरोसा दिलाया और धनी ने भी आकर साक्षी दी, तब ब्रह्मसृष्टियों ने सत का मार्ग लिया।

आतम ने सत परचे पाए, तो भी झूठा दुख छोड़या न जाए।
जब सत सुख पाया रस, जीवरा तबहीं चल्या निकस।। १९ ।।

आत्मा को सच्ची पहचान मिल जाने पर भी झूठे दुःख को छोड़ा नहीं जाता। झूठा दुःख जीव तभी छोड़ेंगे जब सच्चे सुख का आनन्द मिल जाएगा।

जब सत सुख लाग्यो रंग, तब क्यों रहे झूठे को संग।
जब धनीसों उपज्यो सत सनेह, तब क्यों रहे झूठी देह।। २० ।।

जब अखण्ड सुख का आनन्द मिला तब झूठे सुख कैसे रह जाएंगे? जब धनी से अखण्ड प्रेम हो गया, तब यह झूठी देह क्यों रहेगी?

जब सत सुख हिरदे में आवे, अरवा तबहीं निकस के जावे।
जब सत सुख धनी पाया, तब जीवरा क्यों कर पकरे काया।। २१ ।।

जब अखण्ड सुख हृदय में आ जाएंगे तब इस तन से आत्मा तुरन्त निकल जाएगी। जब धनी का अखण्ड सुख मिल गया तो जीव क्यों शरीर को पकड़कर रखेगा?

Nijanand App

जब अंतर आंखां खुलाई, तब तो बाहेर की मुंदाई।
जब अंतर में लीला समानी, तब अंग लोहू रह्या न पानी।। २२ ।।

जब अन्दर की आंखें खुल जाएंगी और पारब्रह्म का अनुभव हो जाएगा, तो बाहरी दुनियां को देखने वाली दृष्टि बन्द हो जाएगी। जब अन्दर लीला का भाव आएगा, तब संसारी अंग में खून, पानी कुछ नहीं रहेगा अर्थात माया के सब विकार दूर हो जाएंगे।

जब देख्या हांस विलास, गल गया हाड मांस स्वांस।
जब अन्तर आया सुमरन, रह्यों अंग न अंतस्करन।। २३ ।।

जब धनी से हंसी-विनोद का सुख मिलेगा तब हड्डी-मांस गलकर सांस भी खत्म हो जाएगी। जब अंतर में धनी और वतन की याद आएगी, तब अंग में मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार कुछ नहीं रहेगा।

जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे न पिंड ब्रह्मांड।
जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब चैन ना रहे कछू नेम।। २४ ।।

जब अखण्ड सुख याद आएगा, तब यह शरीर और रिश्तेदार सब महत्वहीन हो जाएंगे। जब धनी के प्रेम की मस्ती छा जाएगी, तब नियम कर्म कुछ नहीं रह जाएगा।

महामत कहे सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राणनाथ।
धनी ल्याए धाम से वचन, जिनसे न्यारे न होए चरन।। २५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे सुन्दरसाथजी! सुनो और अपने धनी परमधाम से जो वाणी लाए हैं, उसे खोलकर देखो। इन धाम धनी की वाणी से उनके चरण कमल अलग नहीं होंगे।

।। प्रकरण ।। ७६ ।। चौपाई ।। १०३६ ।।

राग श्री

वतन बिसारिया रे, छलें किए हैरान।
धनी आप बुध भूलियां, सुध न रही वृद्धि हान।। १ ।।

हे साथजी! माया ने हमें इतना परेशान कर दिया है कि हम अपने घर को ही भूल गए। अपने धनी और अपनी जागृत बुद्धि को भूल गए। यह सुध भी नहीं रही कि किसमें लाभ है किसमें हानि।

ब्रह्मसृष्ट सखियां धाम की, आइयां छल देखन।
जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भुलाए दिया वतन।। २ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां खेल में छल देखने आयीं और अलग-अलग घर बनाकर बैठ गईं तथा मूल घर परमधाम को भुला दिया।

धाम से रब्द करके, हम कब आवें दूजी बेर।
सब भूले सुध हार जीत की, तो मैं कह्या फेर फेर।। ३ ।।

परमधाम से रबद कर के ब्रह्मसृष्टियां अपने प्रेम की परख करने आई हैं। वह यह जानती हैं कि अब हमें दूसरी बार नहीं आना है। वह हार-जीत की सुध ही भूल गई हैं, इसलिए महामतिजी बार-बार समझाते हैं।

मांहों मांहें कई प्रीत रीतसों, खेले हंसें रस रंग।
पेहेचान जिनों को पेड़ की, धनी को रिझावें सेवा संग।। ४ ।।

इनमें से कई सखियां जिन्हें इस माया की पहचान हो गई है वह आपस में प्रेम करके हंसते-खेलते अपने धनी को सेवा से रिझाती हैं।

Nijanand App

जब अंतर आंखां खुलाई, तब तो बाहेर की मुंदाई।
जब अंतर में लीला समानी, तब अंग लोहू रह्या न पानी।। २२ ।।

जब अन्दर की आंखें खुल जाएंगी और पारब्रह्म का अनुभव हो जाएगा, तो बाहरी दुनियां को देखने वाली दृष्टि बन्द हो जाएगी। जब अन्दर लीला का भाव आएगा, तब संसारी अंग में खून, पानी कुछ नहीं रहेगा अर्थात माया के सब विकार दूर हो जाएंगे।

जब देख्या हांस विलास, गल गया हाड मांस स्वांस।
जब अन्तर आया सुमरन, रह्यो अंग न अंतस्करन।। २३ ।।

जब धनी से हंसी-विनोद का सुख मिलेगा तब हड्डी-मांस गलकर सांस भी खत्म हो जाएगी। जब अंतर में धनी और वतन की याद आएगी, तब अंग में मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार कुछ नहीं रहेगा।

जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे न पिंड ब्रह्मांड।
जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब चैन ना रहे कछू नेम।। २४ ।।

जब अखण्ड सुख याद आएगा, तब यह शरीर और रिश्तेदार सब महत्वहीन हो जाएंगे। जब धनी के प्रेम की मस्ती छा जाएगी, तब नियम कर्म कुछ नहीं रह जाएगा।

महामत कहे सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राणनाथ।
धनी ल्याए धाम से वचन, जिनसे न्यारे न होए चरन।। २५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे सुन्दरसाथजी! सुनो और अपने धनी परमधाम से जो वाणी लाए हैं, उसे खोलकर देखो। इन धाम धनी की वाणी से उनके चरण कमल अलग नहीं होंगे।

|| प्रकरण || ७६ || चौपाई || १०३६ ||

राग श्री

वतन बिसारिया रे, छलें किए हैरान।
धनी आप बुध भूलियां, सुध न रही वृद्धि हान।। १ ।।

हे साथजी! माया ने हमें इतना परेशान कर दिया है कि हम अपने घर को ही भूल गए। अपने धनी और अपनी जागृत बुद्धि को भूल गए। यह सुध भी नहीं रही कि किसमें लाभ है किसमें हानि।

ब्रह्मसृष्ट सखियां धाम की, आइयां छल देखन।
जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भुलाए दिया वतन।। २ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां खेल में छल देखने आयीं और अलग-अलग घर बनाकर बैठ गईं तथा मूल घर परमधाम को भुला दिया।

धाम से रब्द करके, हम कब आवें दूजी बेर।
सब भूले सुध हार जीत की, तो मैं कह्या फेर फेर।। ३ ।।

परमधाम से रबद कर के ब्रह्मसृष्टियां अपने प्रेम की परख करने आई हैं। वह यह जानती हैं कि अब हमें दूसरी बार नहीं आना है। वह हार-जीत की सुध ही भूल गई हैं, इसलिए महामतिजी बार-बार समझाते हैं।

मांहों मांहें कई प्रीत रीतसों, खेले हंसें रस रंग।
पेहेचान जिनों को पेड़ की, धनी को रिझावें सेवा संग।। ४ ।।

इनमें से कई सखियां जिन्हें इस माया की पहचान हो गई है वह आपस में प्रेम करके हंसते-खेलते अपने धनी को सेवा से रिझाती हैं।

Nijanand App

कई मिनो मिने काल क्रोध सों, लड़ाई करते दिन जाए।
सेवा धनी न प्रीत सैयन सों, सो डारी आसमान से पटकाए।। ५ ।।

कई सखियां आपस में लड़ाई-झगड़ा करते-करते उम्र गंवा रही हैं। उन्हें अपने धनी की सेवा और सुन्दरसाथ का प्रेम भी भूल गया, इसलिए वह अपनी ऊंची महिमा से नीचे गिर गईं।

कई सेवें धनीय को, करके प्रेम सनेह।
हम सैयों को पेहेचान पेड़ की, होसी धाम में धंन धंन एह।। ६ ।।

कई सुन्दरसाथ धनी की प्रेम से सेवा कर रहे हैं, क्योंकि इन्हें पता चल गया है कि यह माया झूठी है। सच्चे धनी की सेवा में लगकर वे धाम में धन्य-धन्य हो जाएंगे।

कई अवगुन लेवें धनीय का, करें आप भी अवगुन।
नाहीं सनेह सुख साथ सों, यों वृथा खोवें रात दिन।। ७ ।।

कई अपने धनी के अन्दर लौकिक अवगुण ढूंढ़ते हैं और खुद भी अवगुण करने लगते हैं। उन्हें सुन्दरसाथ के प्रेम का सुख नहीं है। वह व्यर्थ में रात-दिन अपना जीवन गंवा रहे हैं।

तुम सूती धनिएं जगाइया, कह्या आगे मौत का दिन।
कई साख पुराई आपे अपनी, तो भी छूटे न दुख अगिन।। ८ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम भूले हुओं को आगे कयामत का दिन बताकर धनी ने जागृत किया और कई प्रकार से गवाहियां भी दिलाईं। फिर भी तुमसे आग के समान लगे माया के दुःख नहीं छूटते।

सुख देखाए वतन के, सो भी कायम सुख अलेखे।
तो भी छल छूटे नहीं, जो आपे आंखें अपनी देखे।। ९ ।।

धनी ने धाम के बेशुमार अखण्ड सुखों को दिखाया। फिर भी अपनी ही आंखों से देखने के बाद भी माया नहीं छूटी।

देख के अवसर भूलहीं, बहोरि न आवे ए अवसर।
जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंए कर।। १० ।।

हे साथजी! यह सब देखकर भी समय अपने हाथ से गंवा रहे हो। यह अवसर दुबारा नहीं आने वाला। यह भी जानते हो कि समय निकल जाने से माया की आग लग जाएगी। फिर भी तुमसे अपने मन के विकार नहीं छूटते।

पीछे पछतावा क्या करे, जब गया समया चल।
ऐसे क्यों भूलें अंकूरी, जाके सांचे घर नेहेचल।। ११ ।।

जब समय हाथ से निकल जाएगा तो पीछे पछताने से क्या होगा? परमधाम की अंकूरी ब्रह्मसृष्टियां अपने सच्चे अखण्ड घर को कैसे भूल सकती हैं?

जो जाग बातें करें उमंगसों, सो हंस हंस ताली दे।
जिन नींद दई सुख इंद्रियों, सो उठी उंघाती दुख ले।। १२ ।।

जिन्होंने यहां जागकर अपने धनी और सुन्दरसाथ को पहचान कर सेवा की, वह हंसती हुई बड़ी उमंग से परमधाम में उठेंगी। जिन्होंने अपनी इन्द्रियों के सुख के वास्ते ही समय बिताया, वह नींद भरी आंखों से उठेंगी और शर्मिंदगी से दुःखी होंगी।

Nijanand App

क्या बल केहेसी कायर माया को, जो गए सागर में रल।
सामें पूर जो चढ़या होसी, सो केहेसी तिखाई मोह जल।। १३ ।।

वह कायर जो माया में मग्न होंगे, वह माया की शक्ति का क्या बखान करेंगे? जो माया की रीतियों को उलटकर धनी की तरफ चलेगा तो वही माया की शक्ति को बताएगा।

दे साख धनिऐं जगाइया, दई बिध बिध की सुध।
भांत भांत दई निसानियां, तो भी ठौर न आवे निज बुध।। १४ ।।

धनी ने कई प्रकार की गवाहियां देकर जगाया। तरह-तरह के अखण्ड परमधाम के निशान बताए, फिर भी परमधाम की पहचान नहीं हुई।

महामत कहे जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा।
ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो धाम के सुन्दरसाथ हों, वह इन शब्दों को पहचानकर अखण्ड सुख का लाभ ले सको तो ले लेना नहीं तो दुबारा ऐसा मौका हाथ नहीं आएगा।

|| प्रकरण || ७७ || चौपाई || १०५१ ||

राग श्री

सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड।। १ ।।

हे साथजी! ऐसे अखण्ड सुखों को पहचानकर क्यों गंवाते हो? इस ब्रह्माण्ड के सुख झूठे हैं। ऐसा समझकर भी भूलने की गलती क्यों करते हो?

कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान।
सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान।। २ ।।

करोड़ों बैकुण्ठों के राज्य के सुख परमधाम के सुखों के सामने यहां के एक क्षण के समान भी नहीं हैं, इसलिए जान बूझकर अपने जन्म को व्यर्थ में क्यों गवां रहे हो? इसलिए हे साथजी! तुम समझदार हो। सावचेत (सावधान) हो जाओ।

एक खिन न पाइए सिर साटें, कई मोहोरों पदमों लाख करोड़।
पल एक जाए इन समें की, कछू न आवे इन की जोड़।। ३ ।।

लाखों-करोड़ों और पदमों मोहरें खर्च करने पर तथा सिर कटवा देने पर भी एक क्षण की आयु नहीं मिलेगी। इस समय का एक पल भी बड़ा कीमती है और इसकी बराबरी में कुछ भी नहीं है।

इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास बरस।
सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसो भई ना रंग रस।। ४ ।।

जब एक पल की कीमत नहीं हो सकती, तो दिन, महीना और वर्ष की कीमत कैसे कहूं? तुमने झूठी माया के सुखों में जन्म गवां दिया है और धनी की पहचान कर उनका आनन्द नहीं लिया।

Nijanand App

क्या बल केहेसी कायर माया को, जो गए सागर में रल।
सामें पूर जो चढ़या होसी, सो केहेसी तिखाई मोह जल।। १३ ।।

वह कायर जो माया में मग्न होंगे, वह माया की शक्ति का क्या बखान करेंगे? जो माया की रीतियों को उलटकर धनी की तरफ चलेगा तो वही माया की शक्ति को बताएगा।

दे साख धनिऐं जगाइया, दई बिध बिध की सुध।
भांत भांत दई निसानियां, तो भी ठौर न आवे निज बुध।। १४ ।।

धनी ने कई प्रकार की गवाहियां देकर जगाया। तरह-तरह के अखण्ड परमधाम के निशान बताए, फिर भी परमधाम की पहचान नहीं हुई।

महामत कहे जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा।
ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो धाम के सुन्दरसाथ हों, वह इन शब्दों को पहचानकर अखण्ड सुख का लाभ ले सको तो ले लेना नहीं तो दुबारा ऐसा मौका हाथ नहीं आएगा।

|| प्रकरण || ७७ || चौपाई || १०५१ ||

राग श्री

सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड।। १ ।।

हे साथजी! ऐसे अखण्ड सुखों को पहचानकर क्यों गंवाते हो? इस ब्रह्माण्ड के सुख झूठे हैं। ऐसा समझकर भी भूलने की गलती क्यों करते हो?

कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान।
सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान।। २ ।।

करोड़ों बैकुण्ठों के राज्य के सुख परमधाम के सुखों के सामने यहां के एक क्षण के समान भी नहीं हैं, इसलिए जान बूझकर अपने जन्म को व्यर्थ में क्यों गवां रहे हो? इसलिए हे साथजी! तुम समझदार हो। सावचेत (सावधान) हो जाओ।

एक खिन न पाइए सिर साटें, कई मोहोरों पदमों लाख करोड़।
पल एक जाए इन समें की, कछू न आवे इन की जोड़।। ३ ।।

लाखों-करोड़ों और पदमों मोहरें खर्च करने पर तथा सिर कटवा देने पर भी एक क्षण की आयु नहीं मिलेगी। इस समय का एक पल भी बड़ा कीमती है और इसकी बराबरी में कुछ भी नहीं है।

इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास बरस।
सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसो भई ना रंग रस।। ४ ।।

जब एक पल की कीमत नहीं हो सकती, तो दिन, महीना और वर्ष की कीमत कैसे कहूं? तुमने झूठी माया के सुखों में जन्म गवां दिया है और धनी की पहचान कर उनका आनन्द नहीं लिया।

Nijanand App

काहूं बदले न पाइए, कई दौड़त मुझ देखत।
पर रास न आया किनको, जो लों धनी नहीं बकसत।। ५ ।।

दुनियां की कोई भी चीज देने पर वह अखण्ड सुख नहीं मिल सकता। बहुतेरे मुझे देखकर नकल करते हैं (और ऊपरी रूप धारण कर श्री प्राणनाथजी बनना चाहते हैं), परन्तु ऊपरी दिखावा करके किसी को वह सुख नहीं मिला, क्योंकि यह तो बख्शीश होती है। धनी कृपा कर के दें तो ही मिलता है।

सुख अखण्ड अछरातीत को, इन समें पाइयत हैं इत।
कहा कहूं कुकरम तिनके, जो माहें रेहे के खोवत।। ६ ।।

अक्षरातीत धाम धनी के अखण्ड सुख यहां मिल रहे हैं, पर क्या कहूं उन सुन्दरसाथ को जो साथ में रहकर भी कुकर्म करते हैं और अखण्ड सुख गंवाते हैं।

कैयों खोया जनम अपना, रहे धनी के जमाने माहें।
हाए हाए कहा कहूं मैं तिनको, जो इनमें से निरफल जाए।। ७ ।।

कईयों ने श्री प्राणनाथजी के साथ रहकर भी अपना जन्म गंवा दिया। ऐसे सुन्दरसाथ को मैं क्या कहूं जो ऐसे समय में भी निष्फल चले जाएं और धनी का सुख न पा सकें।

कैयों जनम सुफल किए, ऐसा पिउ का समया पाए।
सेवा सनमुख जनम लों, लिया हुकम सिर चढ़ाए।। ८ ।।

कईयों ने श्री प्राणनाथजी को धाम का धनी पहचान कर तथा उनके हुकम को सिर चढ़ाकर जन्म भर सेवा करके अपना जन्म सफल किया।

एक साइत वृथा न गई, धनी किए सनकूल।
चले चित्त पर होए आधीन, परी ना कबहूं भूल।। ९ ।।

उन्होंने एक पल भी व्यर्थ न गंवाकर धनी की सेवा करके सदा खुश किया और सदा धनी की इच्छानुसार चले। उनसे कभी सेवा में भूल नहीं हुई।

सो इत भी होए चले धंन धंन, धाम धनी कहें धंन धंन।
साथ में भी धंन धंन हुइयां, याके धंन धंन हुए रात दिन।। १० ।।

ऐसे सुन्दरसाथ यहां भी धन्य-धन्य हुए और परमधाम में श्री राजजी महाराज भी उनको धन्य-धन्य कहेंगे। वह सुन्दरसाथ में भी यहां धन्य-धन्य हुए और इनका सारा जीवन भी रात-दिन धन्य-धन्य हो गया।

कई छिपे रहे मांहें दुस्मन, और मारें राह औरन।
चाल उलटी चल देखावहीं, तो भी धनी न तजें तिन।। ११ ।।

कई सुन्दरसाथ में रहकर भी दिल के कपटी थे और दूसरों के भी ईमान को गिराते थे तथा उलटी चाल चलते थे। फिर भी धनी तो मेहरबान हैं। उनको भी नहीं छोड़ते।

दुष्ट उपली सजन हो रहे, बोल देखावें मीठे बैन।
जनम सारा धनी संग रहे, कबूं दिल न दिया सुख चैन।। १२ ।।

ऊपर के दिखावे में वह हितैषी बने रहे और मीठे-मीठे वचन बोलते रहे। सारा जन्म धनी के साथ में रहे, परन्तु कभी भी दिल में भाव नहीं लाए और सुख प्राप्त नहीं किया।

Nijanand App

इन बिध कई रंग साथ में, यों बीते कई बीतक।
सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावे करनी माफक।। १३ ।।

सुन्दरसाथ के बीच में तरह-तरह की भावना के लोग थे। ऐसी कई घटनाएं घटीं। धनी की मेहर तो सब पर एक जैसी ही थी, पर सबको फल अपनी करनी के माफिक मिला।

दुख माया धनीपें मांग के, हम आए जिमी इन।
सो छल सरूप अपनो देखावहीं, तो भी भूलें नहीं सोहागिन।। १४ ।।

हम परमधाम में धनी से दुःख मांगकर इस संसार में आए हैं, इसलिए यह माया अपना रूप दिखा रही है, परन्तु जो सुहागिनी ब्रह्मसृष्टि है वह कभी नहीं भूलती।

और भी देखो विचार के, तो हुकमें सब कछू होए।
बिना हुकम जरा नहीं, हार जीत देखावे दोए।। १५ ।।

यदि और भी विचार कर देखो तो हुकम से ही सब कुछ होता है। बिना हुकम के कोई भी काम नहीं होता। हार-जीत दोनों हुकम से होती हैं।

महामत कहें लिया मांग के, ए धनिएं देखाया छल।
जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छल को बल।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी से हमने यह माया का खेल मांगकर लिया है। जो सदा धनी के सम्मुख रहेगा उसको ही माया की शक्ति का अनुभव होगा (क्योंकि धनी के सामने रहना माया से उल्टा चलना है जिसमें लाख मुसीबतें आती हैं) और दूसरों को भी माया का बल बताकर सावचेत करेगा।

॥ प्रकरण ॥ ७८ ॥ १०६७ ॥

राग श्री मारू

साथ जी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर।
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस वाणी को पहचानो। यह वाणी अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश करती है। यह तुम्हारे वास्ते ही आई है। अपनी निज नजर को खोलकर देखो।

त्रिविध दुनी तीन ठौर की, चले तीन विध मांहें।
कोई छोड़े न अंकूर अपना, होवे करनी तैसी तांहें।। २ ।।

इस दुनियां में तीन तरह की सृष्टियां तीन ठिकाने की हैं। यह चाल भी तीन तरह की चलती हैं। इनमें कोई भी अपने अंकुर को नहीं छोड़ रही हैं। यह अपनी असलियत के अनुसार करनी कर रही हैं।

सुरता तीनों ठौर की, इत आई देह धर।
ए तीनों रोसन नासूत में, किया बेवरा इमामें आखिर।। ३ ।।

तीनों ठिकानों की सुरताओं ने यहां आकर तन धारण किए हैं। यह तीनों सृष्टियां मृत्यु लोक में हैं। इनकी हकीकत इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने आखिरत में आकर बताई हैं।

इन बिध जाहेर कर लिख्या, सास्त्रों के दरम्यान।
तीन सृष्ट आई जुदी जुदी, पोहोंचे अपने ठौर निदान।। ४ ।।

शास्त्रों में इस तरह से जाहिर करके लिखा है कि तीन प्रकार की सृष्टियां तीन ठिकाने से आईं और अपने-अपने ठिकाने जाएंगी।

Nijanand App

इन बिध कई रंग साथ में, यों बीते कई बीतक।
सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावे करनी माफक।। १३ ।।

सुन्दरसाथ के बीच में तरह-तरह की भावना के लोग थे। ऐसी कई घटनाएं घटीं। धनी की मेहर तो सब पर एक जैसी ही थी, पर सबको फल अपनी करनी के माफिक मिला।

दुख माया धनीपें मांग के, हम आए जिमी इन।
सो छल सरूप अपनो देखावहीं, तो भी भूलें नहीं सोहागिन।। १४ ।।

हम परमधाम में धनी से दु:ख मांगकर इस संसार में आए हैं, इसलिए यह माया अपना रूप दिखा रही है, परन्तु जो सुहागिनी ब्रह्मसृष्टि है वह कभी नहीं भूलती।

और भी देखो विचार के, तो हुकमें सब कछू होए।
बिना हुकम जरा नहीं, हार जीत देखावे दोए।। १५ ।।

यदि और भी विचार कर देखो तो हुकम से ही सब कुछ होता है। बिना हुकम के कोई भी काम नहीं होता। हार-जीत दोनों हुकम से होती हैं।

महामत कहें लिया मांग के, ए धनिएं देखाया छल।
जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छल को बल।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी से हमने यह माया का खेल मांगकर लिया है। जो सदा धनी के सम्मुख रहेगा उसको ही माया की शक्ति का अनुभव होगा (क्योंकि धनी के सामने रहना माया से उल्टा चलना है जिसमें लाख मुसीबतें आती हैं) और दूसरों को भी माया का बल बताकर सावचेत करेगा।

।। प्रकरण ।। ७८ ।। १०६७ ।।

राग श्री मारू

साथ जी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर।
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस वाणी को पहचानो। यह वाणी अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश करती है। यह तुम्हारे वास्ते ही आई है। अपनी निज नजर को खोलकर देखो।

त्रिविध दुनी तीन ठौर की, चले तीन विध मांहें।
कोई छोड़े न अंकूर अपना, होवे करनी तैसी तांहें।। २ ।।

इस दुनियां में तीन तरह की सृष्टियां तीन ठिकाने की हैं। यह चाल भी तीन तरह की चलती हैं। इनमें कोई भी अपने अंकुर को नहीं छोड़ रही हैं। यह अपनी असलियत के अनुसार करनी कर रही हैं।

सुरता तीनों ठौर की, इत आई देह धर।
ए तीनों रोसन नासूत में, किया बेवरा इमामें आखिर।। ३ ।।

तीनों ठिकानों की सुरताओं ने यहां आकर तन धारण किए हैं। यह तीनों सृष्टियां मृत्यु लोक में हैं। इनकी हकीकत इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने आखिरत में आकर बताई हैं।

इन बिध जाहेर कर लिख्या, सास्त्रों के दरम्यान।
तीन सृष्ट आई जुदी जुदी, पोहोंचे अपने ठौर निदान।। ४ ।।

शास्त्रों में इस तरह से जाहिर करके लिखा है कि तीन प्रकार की सृष्टियां तीन ठिकाने से आईं और अपने-अपने ठिकाने जाएंगी।

Nijanand App

त्रिगुन से पैदा हुई, ए जो सकल जहान।
सो खेले तीनों गुन लिए, नाहीं एक दूजे समान।।५।।

सारा संसार त्रिगुण से पैदा हुआ है। वह एक दूसरे के समान नहीं है, क्योंकि ये तामसी, राजसी, स्वांतसी के भिन्न-भिन्न स्वभावों में खेल रहे हैं, इसलिए एक दूसरे के स्वभाव, रूप, रंग नहीं मिलते।

आतम एक्यासी पख ले, सब दुनियां में खेलत।
मोह अहं मूल इनको, सब याही बीच फिरत।।६।।

जीव यहां इक्यासी पक्ष की भक्ति से दुनियां में खेल रहे हैं। इन जीवों का मूल मोह तत्व और अहंकार है, इसलिए यह मोह और अहंकार में घूमते हैं।

मोह अहं गुन की इंद्रियां, करे फैल पसु परवान।
फिरे अवस्था तीन में, ए जीव सृष्ट पेहेचान।।७।।

इन जीवों की गुण, अंग, इन्द्रियां मोह तत्व और अहंकार के अधीन हैं। जीवों की भांति कर्म करते हुए यह तीन अवस्था (स्वप्न, सुषुप्ति और जागृत) में अपना जीवन बिताते हैं। यह जीवसृष्टि की पहचान है।

सुबुध निकट न आवहीं, चले बेहेर दृष्ट।
आतम दृष्ट न लेवहीं, तो कही सुपन की सृष्ट।।८।।

इनके पास में जागृत बुद्धि नहीं आती। यह बाहरी दृष्टि से काम चलाते हैं। यह आत्मदृष्टि से काम नहीं लेते, इसलिए इनको सपने की सृष्टि (जीवसृष्टि) कहा है।

जाग्रत तरफ दुनीय की, सोवत सुपना ले।
देखत सुपना नींद से, ए तीनों अवस्था जीव के।।९।।

जागृत अवस्था में यह दुनियां के ही काम धन्धे करते हैं। जब यह सोते हैं तो सपने में भी माया को ही देखते हैं। इस तरह से जागृत, सपने और नींद की तीनों अवस्था में जीव माया का ही ध्यान करता है।

और सृष्ट जो ईश्वरी, कही जाग्रत सृष्ट आतम।
सुबुध अंग करनी सुध, चले फुरमान हुकम।।१०।।

जिसको ईश्वरीसृष्टि कहते हैं, उनकी आत्मा जागृत है। उनके पास सुबुद्धि है। उनके कर्म शुद्ध हैं। धर्म शास्त्रों के बताए रास्तों पर वह चलती हैं।

एही सृष्ट ईश्वरी जाग्रत, आई अछर नूर से जे।
मेहेर ले मेहेबूब की, रहे तुरी अवस्था ए।।११।।

यही जागृत सृष्टि ईश्वरीसृष्टि कहलाती है और यही अक्षर के नूर से आई है। यह धनी की मेहर लेकर तुरीय अवस्था में रहती है अर्थात संसार में रहते हुए भी धनी की भक्ति में लीन रहती है।

ब्रह्मसृष्टी आई अर्स से, जीत इंद्री सुध अंग।
छोड़ मांहें बाहेर दृष्ट अंतर, परआतम धनी संग।।१२।।

ब्रह्मसृष्टियां परमधाम से आई हैं। इन्होंने अपनी इन्द्रियों को जीत रखा है। इन्हें अपने घर की सुध है। यह अन्दर बाहर का दिखावा छोड़कर परआतम के द्वारा धनी का संग करती हैं।

Nijanand App

एक सुख नेहेचल धाम को, और सुख अखंड अछर।
तीसरो बैकुंठ सुपनों, ए त्रिधा सृष्ट यों कर।। १३ ।।

एक को अखण्ड सुख परमधाम का है। दूसरी को अखण्ड सुख अक्षर का है। तीसरी को सपने का सुख बैकुण्ठ का है। इस तरह से यह तीन तरह की सृष्टियां हैं।

कृपा है कई विध की, ए जो तीनों सृष्ट ऊपर।
एक एक पर कई विध, इनका बेवरा सुनो दिल धर।। १४ ।।

इन तीनों सृष्टियों के ऊपर धाम-धनी की कई प्रकार की मेहर है। एक-एक सृष्टि पर कई तरह की मेहर होती है। उसकी हकीकत सुनो।

कृपा करनी माफक, कृपा माफक करनी।
ए दोऊ माफक अंकूर के, कई कृपा जात ना गिनी।। १५ ।।

धनी की मेहर करनी माफिक होती है। धनी की कृपा के अनुसार ही करनी बनती है। यह दोनों करनी और मेहर अंकूर के माफिक मिलते हैं।। इस तरह से धनी की मेहर का हिसाब नहीं होता।

धाम अंकूर एक विध को, कई विध कृपा केलि।
ए माफक कृपा करनी भई, करने खुसाली खेलि।। १६ ।।

धाम का अंकूर सबका एक जैसा है, परन्तु खेल में मेहर कई तरह की है। वह धनी के मेहर के अनुसार ही करनी करते हैं, ताकि तरह-तरह की लीला से खेल का सुख मिले।

सृष्ट ईश्वरी कही अंकूरी, औरों अंकूर दिए कई।
तिन जुदा जुदा ठौर नेहेचल, कृपा अंकूर से भई।। १७ ।।

ईश्वरीसृष्टि भी अंकूरी है। इन ईश्वरीसृष्टि की कृपा से औरों को अंकूर मिलेगा तथा इनको अलग-अलग अखण्ड बहिश्त में अंकूर के हिसाब से कायमी मिलेगी।

भिस्त होसी आठ विध की, और आठ विध का अंकूर।
हर अंकूर कृपा कई बिध, ले उठसी नेहेचल नूर।। १८ ।।

जीवसृष्टि को भी आठ तरह की बहिश्तें मिलेंगी। उनके अन्दर आठ तरह के ही अंकूर जागृत होंगे। हर अंकूर पर कई तरह की मेहर होगी जिससे वह अक्षर की नजर में अखण्ड हो जाएंगे।

करनी देखाई अंकूर की, हुई तीनों की तफावत।
सो तीनों रोसन भए, चढ़ते तराजू बखत।। १९ ।।

इस तरह से तीनों तरह की सृष्टियों के अंकूर की करनी बताई जो ब्रह्माण्ड की कायमी के समय में जाहिर होगी।

करनी छिपी ना रहे, न कछू छिपे अंकूर।
मेहेर भी माफक अंकूर के, उदे होत सत सूर।। २० ।।

कायमी के वक्त किसी की करनी और अंकूर छिपे नहीं रहेंगे। तारतम वाणी के ज्ञान की पहचान होने से अंकूर के माफिक ही धनी की मेहर होगी।

क्या गरीब क्या पातसाह, क्या नजीक क्या दूर।
निकस आया सबन का, तीन बिध का अंकूर।। २१ ।।

गरीब हो या बादशाह हो, नजदीक का हो या दूर का हो। सभी के अंकूर किस सृष्टि के हैं, जाहिर हो जाएंगे।

Nijanand App

हर एक के तीन तीन, तिन तीनों के सत्ताईस।
यों चढ़ते तराजू चढ़े, नफा नसल न नाते रीस।। २२ ।।

इस प्रकार तीन प्रकार की सृष्टि के तीन गुणों के अनुसार नौ भाग एवं तीन पक्ष के अनुसार सत्ताईस भाग हो गए। ब्रह्माण्ड की कायमी के समय किसी को नफा जाति, रिश्तेदारी या दुश्मनी से नहीं मिलेगा। सब अपनी करनी के अनुसार ही फल पाएंगे अर्थात् बहिश्तें मिलेंगी।

दया भी तिन पर होएसी, जिनके असल अंकूर।
अव्वल मध और आखिर, सनमुख सदा हजूर।। २३ ।।

ब्रह्मसृष्टि की असल परमधाम में है। धनी की दया उन पर होगी। वह सदा ही शुरू से, बीच में और आखिर तक धनी के सामने रही हैं।

ए छल जिमी करम करावहीं, आपको बुरा न चाहे कोए।
तो भी मेहेर न छोड़े मेहेबूब, पर करनी छल बस होए।। २४ ।।

यह संसार कर्म-भूमि है, वरन् अपना बुरा कोई नहीं चाहता। धनी फिर भी अपनी मेहर करना नहीं छोड़ते, पर करनी माया के अधीन होने से होती है।

जाहेर हुई सबन की, आखिर गिरो आकल।
अंदर की उदे हुई, समें पावने फल।। २५ ।।

अखण्ड होने के आखिरत के समय में सबकी अन्दर की बुद्धि जाहिर हो जाएगी और उसी के अनुसार बहिश्त मिलेगी।

छिपी किसी की ना रहे, करना धनी अदल।
सांच झूठ जैसा जिनों, चढ़ आया तराजू दिल।। २६ ।।

धनी के न्याय में किसी की करनी छिपी नहीं रहेगी। जिसने सही या गलत जैसा किया है, न्याय के समय सबके सामने आ जाएगा।

वतन के अंकूर बिना, इत दुनी करे कई बल।
मुक्त सुख इत होएसी, पर पावे न धाम नेहेचल।। २७ ।।

जब तक परमधाम का अंकूर न हो, दुनियां कितनी ही ताकत लगा ले उन्हें परमधाम का अखण्ड सुख नहीं मिलेगा। उन्हें केवल बहिश्त में अखण्ड सुख प्राप्त होगा।

कई आए अनुभव लेयके, सो पीछे दिए पटकाए।
धनी दया अंकूर बिना, किन सत सुख लियो न जाए।। २८ ।।

कई पण्डित, ज्ञानी और मौलवी अपना अनुभव लेकर आए, किन्तु धनी की दया और अंकूर बिना अखण्ड सुख नहीं ले सके। वह हारकर माया में पीछे रह गए।

कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनुभव सौ बेर।
मूल अंकूर दया बिना, ले करमें डाले अंधेर।। २९ ।।

यदि आप सौ वर्ष भी सुन्दरसाथ में रहो और धनी की वाणी को सुनो, पर जब तक परमधाम का मूल अंकूर नहीं है, श्री राजजी की मेहर नहीं होगी। कर्मों के अनुसार नरक भोगना पड़ेगा।

Nijanand App

दया और अंकूर की, छिपे न करनी नूर।
मन वाचा करम बांध के, दूजा ऐसा कर न सके जहूर।। ३० ।।

दया और अंकूर की करनी का तेज छिपा नहीं रहेगा। मन, वचन और कर्म से ब्रह्मसृष्टि के बिना और कोई ऐसा प्रकाश नहीं कर सकेगा।

महामत कहे तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल।
करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे न अमल।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यहां हमारे सुन्दरसाथ में तीनों प्रकार की सृष्टि शामिल है। इसलिए तीनों के वास्ते करनी, कृपा और अंकूर की हकीकत बताई। अब तीनों की रहनी छिपी नहीं रहेगी।

।। प्रकरण ।। ७९ ।। चौपाई ।। १०९८ ।।

राग श्री

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम।
प्रेमै में मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम।
सखी री धाम जईए।। १ ।। टेक ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरी इस वाणी के मीठे वचनों के बोलने से तुम्हारा सब काम हो गया। धाम का दरवाजा खुल गया है। अब प्रेम में मग्न होकर घर चलो।

दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर।
फुरमान में फुरमाइया, आया सो आखिर।। २ ।।

आखिरत का समय आ गया है। जो दौड़ सके वह दौड़कर आ जाए। जो कुरान में आखिरत का समय कहा था, वह आ गया है।

बरनन करते जिनको, धनी केहेते सोई धाम।
सेवा सुरत संभारियो, करना एही काम।। ३ ।।

परमधाम का जो वर्णन धनी करते थे उसी परमधाम में अपनी सुरता लगाओ और सुन्दरसाथ की सेवा करो। यही अपना काम है।

बन विसेखे देखिए, माहें खेलन के कई ठाम।
पसु पंखी खेलें बोलें सुन्दर, सो मैं केते लेऊं नाम।। ४ ।।

परमधाम के वनों को खासकर अपने चितवन से देखो। जहां खेलने के कई ठिकाने हैं, जहां पशु पक्षी खेलते हैं, सुन्दर बोली बोलते हैं। उनके नाम कहां तक गिनाऊं?

स्याम स्यामा जी सुन्दर, देखो करके उलास।
मन के मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास।। ५ ।।

श्याम श्यामाजी के सुन्दर स्वरूप को मन में उमंग भर के देखो। अपने मन की चाहना पूर्ण करने के लिए अपने धनी से आनन्द विलास करो।

इस्क आयो पिउ को, प्रेम सनेही सुध।
विविध विलास जो देखिए, आई जागनी बुध।। ६ ।।

धनी का इश्क आया है जो अपने प्रेम स्नेह की सुध देता है। जागृत बुद्धि आई है। उससे परमधाम की तरह-तरह के आनन्द की लीला को देखो।

Nijanand App

दया और अंकूर की, छिपे न करनी नूर।
मन वाचा करम बांध के, दूजा ऐसा कर न सके जहूर।। ३० ।।

दया और अंकूर की करनी का तेज छिपा नहीं रहेगा। मन, वचन और कर्म से ब्रह्मसृष्टि के बिना और कोई ऐसा प्रकाश नहीं कर सकेगा।

महामत कहे तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल।
करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे न अमल।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यहां हमारे सुन्दरसाथ में तीनों प्रकार की सृष्टि शामिल है। इसलिए तीनों के वास्ते करनी, कृपा और अंकूर की हकीकत बताई। अब तीनों की रहनी छिपी नहीं रहेगी।

।। प्रकरण ।। ७९ ।। चौपाई ।। १०९८ ।।

राग श्री

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम।
प्रेमै में मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम।
सखी री धाम जईए।। १ ।। टेक ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरी इस वाणी के मीठे वचनों के बोलने से तुम्हारा सब काम हो गया। धाम का दरवाजा खुल गया है। अब प्रेम में मग्न होकर घर चलो।

दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर।
फुरमान में फुरमाइया, आया सो आखिर।। २ ।।

आखिरत का समय आ गया है। जो दौड़ सके वह दौड़कर आ जाए। जो कुरान में आखिरत का समय कहा था, वह आ गया है।

बरनन करते जिनको, धनी केहेते सोई धाम।
सेवा सुरत संभारियो, करना एही काम।। ३ ।।

परमधाम का जो वर्णन धनी करते थे उसी परमधाम में अपनी सुरता लगाओ और सुन्दरसाथ की सेवा करो। यही अपना काम है।

बन विसेखे देखिए, माहें खेलन के कई ठाम।
पसु पंखी खेलें बोलें सुन्दर, सो मैं केते लेऊं नाम।। ४ ।।

परमधाम के वनों को खासकर अपने चितवन से देखो। जहां खेलने के कई ठिकाने हैं, जहां पशु पक्षी खेलते हैं, सुन्दर बोली बोलते हैं। उनके नाम कहां तक गिनाऊं?

स्याम स्यामा जी सुन्दर, देखो करके उलास।
मन के मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास।। ५ ।।

श्याम श्यामाजी के सुन्दर स्वरूप को मन में उमंग भर के देखो। अपने मन की चाहना पूर्ण करने के लिए अपने धनी से आनन्द विलास करो।

इस्क आयो पिउ को, प्रेम सनेही सुध।
विविध विलास जो देखिए, आई जागनी बुध।। ६ ।।

धनी का इश्क आया है जो अपने प्रेम स्नेह की सुध देता है। जागृत बुद्धि आई है। उससे परमधाम की तरह-तरह के आनन्द की लीला को देखो।

Nijanand App

आनंद वतनी आइयो, लीजो उमंग कर।
हंसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर।। ७ ।।

अखण्ड घर का आनन्द आ गया। इसे बड़ी उमंग से ग्रहण करो। हंसते-खेलते चलो और अपने घर को देखो।

सुख अखंड जो धाम को, सो तो अपनों अलेखें।
निपट आयो निकट, जो आंखां खोल के देखे।। ८ ।।

अपने अखण्ड घर के सुख तो बेशुमार हैं। विचार कर देखो (आंखें खोलकर देखो), उनके प्राप्त करने का समय आ गया है।

अंग अनुभवी असल के, सुखकारी सनेह।
अरस परस सबमें भया, कछु प्रेमें पलटी देह।। ९ ।।

अपने परआतम के अंगों के सच्चे सुख और प्यार अनुभव में आने लगे हैं जिससे आत्मा को परआतम से अरस परस (परस्पर) सुख मिलने लगे और यह तन प्रेम में बदल गया (मग्न हो गया)।

मंगल गाइए दुलहे के, आयो समें स्यामा वर स्याम।
नैनों भर भर निरखिए, विलसिए रंग रस काम।। १० ।।

अब अपने श्यामा, श्याम को देखकर मंगल गीत गाइए और अपने दूल्हा को प्यार भरी नजरों से देखकर आनन्द लीजिए।

धाम के मोहोलों सामग्री, माहें सुखकारी कई विध।
अंदर आंखें खोलिए, आई है निज निध।। ११ ।।

परमधाम के महलों में सब तरह के सुख की सामग्री है। अन्दर की आंखें खोलकर देखो। अब अपनी न्यामत (अखण्ड निधि) आ गई है।

विलास विसेखें उपज्या, अंदर कियो विचार।
अनुभव अंगे आइया, याद आए आधार।। १२ ।।

इस तरह धनी के आनन्द की विशेष तरह से लेने की इच्छा हुई। धनी की याद आने से परमधाम के अनुभव अंग में आने लगे (सुख मिलने लगे)।

दरदी विरहा के भीगल, जानों दूरथे आए विदेसी।
घर उठ बैठे पल में, रामत देखाई ऐसी।। १३ ।।

विरह के दुःख में भीगी ब्रह्मसृष्टियां धाम-धनी के सामने ऐसी पहुंचीं मानो कोई बहुत दूर विदेश से आया हो, जबकि एक क्षण में ही खेल देखकर घर में उठ बैठेंगी। ऐसा यह खेल दिखाया।

उठ के नहाइए जमुना जी, कीजे सकल सिनगार।
साथ सनमंधी मिल के, खेलिए संग भरतार।। १४ ।।

अब उठकर चलो, जमुनाजी नहाने चलें। वहां जाकर सिनगार करें तथा सब सुन्दरसाथ मिलकर धनी के साथ खेलें।

Nijanand App

महामत कहे मलपतियां, आओ निज वतन।
विलास करो विध विध के, जागो अपने तन।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम अब मुस्कराती हुई मस्ती में मिलकर घर आओ और अपने मूल तन परआतम में जागृत होकर तरह-तरह से विलास के आनन्द लो।

|| प्रकरण || ८० || चौपाई || १११३ ||

राग मारू

सुन्दर साथजी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएं किए अलेखे।। टेक ।।
क्यों ए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए।
अरस-परस यों भई बज्र में, सो मेरे धनिएं दई छुटकाए।। १ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! धनी की मेहर (कृपा) देखो जो मेरे ऊपर बेशुमार कर रहे हैं। यह माया हमको नहीं छोड़ती और हमसे भी माया नहीं छोड़ी जाती। यह माया जो हमको बज्रलेप की तरह लिपट गई थी, उसे मेरे धनी ने छुड़ा दिया।

कोई ना निकस्या इन माया से, अव्वल सेती आज दिन।
सो धनिएं बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन।। २ ।।

शुरू से आज दिन तक इस माया से कोई इसे छोड़कर निकल नहीं सका। अब धनी ने हमको ऐसी शक्ति दी कि हमने चौदह लोकों को भी माया से छुड़ाकर अखण्ड कर दिया।

आगे हुई ना होसी कबहूं, हमें धनिएं ऐसी सोभा दई।
सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई।। ३ ।।

धनी ने हमें ऐसी शोभा दी जो आज दिन तक किसी को नहीं मिली और न मिलेगी। हमारे जीव के योगमाया वाले तन जो पहली बहिश्त में होंगे, अब सभी उन्हें पूजेंगे।

धनिएं भिस्त कराई हमपे, किल्ली हाथ हमारे।
लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे।। ४ ।।

धनी ने हमें तारतम वाणी की कुंजी देकर चौदह तबकों को बहिश्तों में अखण्ड कराया और अब यह चौदह तबकों के जीव, हमारे तन जो योगमाया में पहली बहिश्त में अखण्ड होंगे, उनकी सेवा करेंगे।

ऐसी बड़ाई दई हम गिरो को, और किए औरों के अधीन।
फेर कहे इन पिउ पेहेचाने, याही में आकीन।। ५ ।।

हमको इतनी बड़ी साहेबी देकर त्रिगुण के अधीन कर दिया और फिर यह भी कह दिया कि ब्रह्मसृष्टि को ही धनी की पहचान है और इनको ही पारब्रह्म पर भरोसा है।

चौदे भवन को दिया आकीन, सो भी कहे गिरो बल दिया।
सोभा अलेखें कहूं मैं केती, ऐसा धनिएं हमसों किया।। ६ ।।

चौदह लोकों को भी पारब्रह्म पर यकीन दिया। वह भी कहते हैं कि यह ब्रह्मसृष्टि के बल से हुआ है, अर्थात् करते खुद हैं और शोभा हमें दिलवाते हैं। मैं इस शोभा की क्या कहूं? बेशुमार है। धनी ने हमको शोभा दी है। ऐसा हमारे साथ धनी कर रहे हैं।

Nijanand App

महामत कहे मलपतियां, आओ निज वतन।
विलास करो विध विध के, जागो अपने तन।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम अब मुस्कराती हुई मस्ती में मिलकर घर आओ और अपने मूल तन परआतम में जागृत होकर तरह-तरह से विलास के आनन्द लो।

।। प्रकरण ।। ८० ।। चौपाई ।। १११३ ।।

राग मारू

सुन्दर साथजी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएं किए अलेखे।। टेक ।।
क्यों ए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए।
अरस-परस यों भई बज्र में, सो मेरे धनिएं दई छुटकाए।। १ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! धनी की मेहर (कृपा) देखो जो मेरे ऊपर बेशुमार कर रहे हैं। यह माया हमको नहीं छोड़ती और हमसे भी माया नहीं छोड़ी जाती। यह माया जो हमको बज्रलेप की तरह लिपट गई थी, उसे मेरे धनी ने छुड़ा दिया।

कोई ना निकस्या इन माया से, अव्वल सेती आज दिन।
सो धनिएं बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन।। २ ।।

शुरू से आज दिन तक इस माया से कोई इसे छोड़कर निकल नहीं सका। अब धनी ने हमको ऐसी शक्ति दी कि हमने चौदह लोकों को भी माया से छुड़ाकर अखण्ड कर दिया।

आगे हुई ना होसी कबहूं, हमें धनिएं ऐसी सोभा दई।
सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई।। ३ ।।

धनी ने हमें ऐसी शोभा दी जो आज दिन तक किसी को नहीं मिली और न मिलेगी। हमारे जीव के योगमाया वाले तन जो पहली बहिश्त में होंगे, अब सभी उन्हें पूजेंगे।

धनिएं भिस्त कराई हमपे, किल्ली हाथ हमारे।
लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे।। ४ ।।

धनी ने हमें तारतम वाणी की कुंजी देकर चौदह तबकों को बहिश्तों में अखण्ड कराया और अब यह चौदह तबकों के जीव, हमारे तन जो योगमाया में पहली बहिश्त में अखण्ड होंगे, उनकी सेवा करेंगे।

ऐसी बड़ाई दई हम गिरो को, और किए औरों के अधीन।
फेर कहे इन पिउ पेहेचाने, याही में आकीन।। ५ ।।

हमको इतनी बड़ी साहेबी देकर त्रिगुण के अधीन कर दिया और फिर यह भी कह दिया कि ब्रह्मसृष्टि को ही धनी की पहचान है और इनको ही पारब्रह्म पर भरोसा है।

चौदे भवन को दिया आकीन, सो भी कहे गिरो बल दिया।
सोभा अलेखें कहूं मैं केती, ऐसा धनिएं हमसों किया।। ६ ।।

चौदह लोकों को भी पारब्रह्म पर यकीन दिया। वह भी कहते हैं कि यह ब्रह्मसृष्टि के बल से हुआ है, अर्थात् करते खुद हैं और शोभा हमें दिलवाते हैं। मैं इस शोभा की क्या कहूं? बेशुमार है। धनी ने हमको शोभा दी है। ऐसा हमारे साथ धनी कर रहे हैं।

Nijanand App

बिन जाने बिन पेहेचाने कई सुख, ऐसे धनिएं हमको देखाए।
अबलों गिरो न जाने धनी गुन, सो जागनी हिरदे चढ़ आए।। ७ ।।

धनी ने हमको कई सुख ऐसे दिए जिनको न हम जानते हैं और न पहचानते हैं। आज दिन तक ब्रह्मसृष्टि धनी की मेहर को नहीं जानती थी। अब जागनी के ब्रह्माण्ड में उन गुणों की पहचान हो गई।

ऐसे ब्रह्मांड अलेखें अछरथें, पलथें पैदा फना होत।
ऐसे इंड में चींटी बराबर, हम गिरो हुई उद्दोत।। ८ ।।

ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड अक्षर के एक पल में बनकर मिट जाते हैं। ऐसे इस ब्रह्माण्ड में हम ब्रह्मसृष्टि की गिनती एक चींटी के समान है।

सो चींटी सहूर दे समझाई, धनिएं आप जैसे कर लिए।
कर सनमंध अछरातीत सों, ले धनी धाम के किए।। ९ ।।

उस चींटी जैसी संख्या में ब्रह्मसृष्टि को भी तारतम वाणी का बल देकर समझाया और अपने जैसा बना लिया। अक्षरातीत की निसबत बताकर हमें परमधाम के योग्य बनाया।

अवगुन अलेखें हम किए पिउ सों, तापर ऐसे धनी के गुन।
कई विध सुख ऐसे धनीय के, क्यों कर कहूं जुबां इन।। १० ।।

हमने धनी से बेशुमार अवगुण किए, फिर भी धनी की ऐसी मेहर हुई। धनी ने कई तरह से ऐसे सुख दिए जिसका इस जबान से कैसे वर्णन किया जाए?

इन विध सुख दिए अलेखें, ऐसे गुन मेरे पिउ।
तामें एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं निकस जाए जिउ।। ११ ।।

इस तरह के बेशुमार सुख धनी ने दिए। ऐसी उस धनी की मेहर है। यदि उस धनी की मेहर में से एक भी याद आ जाए तो यह जीव तन को उसी समय छोड़ दे।

महामत कहे गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए।
एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की इस मेहर का वर्णन इस मुख से नहीं हो सकता। यदि धनी की एक मेहर भी याद आ जाए तो यह आत्मा उसी समय तन छोड़कर निकल जाए।

।। प्रकरण ।। ८१ ।। चौपाई ।। ११२५ ।।

राग श्री

सखीरी मेहेर बड़ी मेहेबूब की, अखंड अलेखे।
अंतर आंखां खोलसी, ए सुख सोई देखे।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! श्री राजजी महाराज की मेहर बहुत बड़ी है। अखण्ड है। बेशुमार है। जो अन्दर की आंखें खोलकर देखेगा (विचार करेगा), तभी उसे यह सुख प्राप्त होंगे।

न था भरोसा हम को, जो भवजल उतरें पार।
इन जुबां केती कहूं, इन मेहेर को नाहीं सुमार।। २ ।।

हमें भरोसा नहीं था कि हम भवसागर से पार हो सकेंगे। अब इस जबान से किस तरह से कहूं कि धनी की मेहर कितनी बेशुमार है।

Nijanand App

बिन जाने बिन पेहेचाने कई सुख, ऐसे धनिएं हमको देखाए।
अबलों गिरो न जाने धनी गुन, सो जागनी हिरदे चढ़ आए।। ७ ।।

धनी ने हमको कई सुख ऐसे दिए जिनको न हम जानते हैं और न पहचानते हैं। आज दिन तक ब्रह्मसृष्टि धनी की मेहर को नहीं जानती थी। अब जागनी के ब्रह्माण्ड में उन गुणों की पहचान हो गई।

ऐसे ब्रह्मांड अलेखें अछरथें, पलथें पैदा फना होत।
ऐसे इंड में चींटी बराबर, हम गिरो हुई उद्दोत।। ८ ।।

ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड अक्षर के एक पल में बनकर मिट जाते हैं। ऐसे इस ब्रह्माण्ड में हम ब्रह्मसृष्टि की गिनती एक चींटी के समान है।

सो चींटी सहूर दे समझाई, धनिएं आप जैसे कर लिए।
कर सनमंध अछरातीत सों, ले धनी धाम के किए।। ९ ।।

उस चींटी जैसी संख्या में ब्रह्मसृष्टि को भी तारतम वाणी का बल देकर समझाया और अपने जैसा बना लिया। अक्षरातीत की निसबत बताकर हमें परमधाम के योग्य बनाया।

अवगुन अलेखें हम किए पिउ सों, तापर ऐसे धनी के गुन।
कई विध सुख ऐसे धनीय के, क्यों कर कहूं जुबां इन।। १० ।।

हमने धनी से बेशुमार अवगुण किए, फिर भी धनी की ऐसी मेहर हुई। धनी ने कई तरह से ऐसे सुख दिए जिसका इस जबान से कैसे वर्णन किया जाए?

इन विध सुख दिए अलेखें, ऐसे गुन मेरे पिउ।
तामें एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं निकस जाए जिउ।। ११ ।।

इस तरह के बेशुमार सुख धनी ने दिए। ऐसी उस धनी की मेहर है। यदि उस धनी की मेहर में से एक भी याद आ जाए तो यह जीव तन को उसी समय छोड़ दे।

महामत कहे गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए।
एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की इस मेहर का वर्णन इस मुख से नहीं हो सकता। यदि धनी की एक मेहर भी याद आ जाए तो यह आत्मा उसी समय तन छोड़कर निकल जाए।

।। प्रकरण ।। ८१ ।। चौपाई ।। ११२५ ।।

राग श्री

सखीरी मेहेर बड़ी मेहेबूब की, अखंड अलेखे।
अंतर आंखां खोलसी, ए सुख सोई देखे।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! श्री राजजी महाराज की मेहर बहुत बड़ी है। अखण्ड है। बेशुमार है। जो अन्दर की आंखें खोलकर देखेगा (विचार करेगा), तभी उसे यह सुख प्राप्त होंगे।

न था भरोसा हम को, जो भवजल उतरें पार।
इन जुबां केती कहूं, इन मेहेर को नाहीं सुमार।। २ ।।

हमें भरोसा नहीं था कि हम भवसागर से पार हो सकेंगे। अब इस जबान से किस तरह से कहूं कि धनी की मेहर कितनी बेशुमार है।

Nijanand App

मेरे दिल की देखियो, दरद न कछू इस्क।
ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी बीतक।। ३ ।।

मेरे दिल को देखो। न तो धनी के विरह का दर्द है और न मिलने का ही इश्क है, न कुछ सेवा के भाव हैं और न कुछ बन्दगी ही की है, ऐसी मेरी हालत है।

मेहेरें हमको ऐसा किया, करी वतन रोसन।
मुक्त दे सचराचर, हम तारे चौदे भवन।। ४ ।।

धनी ने हम पर ऐसी मेहर की कि हमने तारतम वाणी के ज्ञान से उस अखण्ड परमधाम को जाहिर कर दिया। चौदह लोकों के जीवों को मुक्ति देकर अखण्ड किया।

क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक।
मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक।। ५ ।।

धनी की मेहर मेरे ऊपर ही इतनी क्यों हुई? यही दिल में संशय था। अब मुझे मालूम हुआ कि यह तो धनी की अपनी मौज है। जितनी बड़ी उनकी साहेबी है उतनी ही वह बड़ी मेहर करते हैं।

बढ़त बढ़त मेहेर बढ़ी, वार न पाइए पार।
एक ए निरने में ना हुई, वाकों वाही जाने सुमार।। ६ ।।

धनी की मेहर बढ़ते-बढ़ते इतनी बढ़ी कि उसका पारावार क्या बताऊं? मैं तो एक मेहर की हकीकत न जान सकी। उनकी मेहर कितनी बड़ी है, यह वही जानते हैं।

और मेहेर ए देखियो, कर दियो धाम वतन।
साख पुराई सब अंगों, यों कई विध कृपा रोसन।। ७ ।।

धनी की एक और मेहर देखिए—हमारा घर परमधाम है, यह बता दिया। इसकी गवाही हमारी आत्मा ने भी दी। इस तरह से कई प्रकार की कृपा करते हैं।

अंदर सब मेरे यों कहें, धाम से आए माहें सुपन।
है सनमंध धनी धामसों, ए साख मेहेर से उतपन।। ८ ।।

मेरे अन्दर से सब गुण, अंग, इन्द्रियां कहते हैं कि हम परमधाम से सपने में आए हैं। हमारी निसबत धनी से है। यह धनी की कृपा ने मेरे अन्दर आत्मा में गवाही दी है।

मेरे सतगुर धनिएं यों कह्या, और कह्या वेद पुरान।
सो खोल दिए मोहे माएने, कर दई आतम पेहेचान।। ९ ।।

मेरे सतगुरु धनी ने जो कुछ मेरे प्रति कहा, उसी की गवाही वेद और पुराणों ने दी। मुझे मेरी आत्मा की पहचान कराकर मेरे हाथों से सब ग्रन्थों के छिपे रहस्य खुलवाए।

सब मिल साख ऐसी दई, जो मेरी आतम को घर धाम।
सनमंध मेरा सब साथ सों, मेरो धनी सुंदर वर स्याम।। १० ।।

सब शास्त्रों ने ऐसी गवाही दी कि मेरी आत्मा का घर परमधाम है। मेरी निसबत सुन्दरसाथजी से है। सुन्दरबाई (श्यामाजी) के पति हमारे धनी हैं।

इत अछर आवे नित्याने, मेरे धनी के दीदार।
ए निसबत भई हम गिरोह की, क्यों कहूं इन सुख को पार।। ११ ।।

यहां अक्षर ब्रह्म मेरे धनी के दर्शन करने के लिए नित्य आते हैं। हम ब्रह्मसृष्टियों की निसबत उसी धनी से है, इस सुख का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

ए आतम को नेहेचे भयो, संसे दियो सब छोड़।
परआतम मेरी धाम में, तो कही सनमंध संग जोड़।। १२ ।।

अब मेरे संशय मिटकर आतम में दृढ़ता आ गई है कि मेरी परआतम परमधाम में है जिससे सम्बन्ध जोड़ना है।

परआतम के अंतस्करन, जेती बीतत बात।
तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात।। १३ ।।

परआतम के मन में जितनी विचारधाराएं आती हैं, वह मेरी आतम का तन इस संसार में साक्षात रूप से अनुभव करता है।

ए भी धनिएं श्रीमुख कह्या, और दई साख फुरमान।
ए दोऊ मिल नेहेचे कियो, यों भई दृढ़ परवान।। १४ ।।

परआतम और आतम का इस तरह का वर्णन श्री राजजी महाराज ने किया और इसकी गवाही शास्त्रों ने दी। इन दोनों की हकीकत सुनकर आतम को दृढ़ता आ गई।

और मेहेर ए देखियो, ऐसा कर दिया सुगम।
बिन कसनी बिन भजन, दियो धाम धनी खसम।। १५ ।।

धनी की एक मेहर यह भी देखिए कि बिना किसी कसनी (तप) और बिना किसी भजन के परमधाम और धनी का मिलना आसान कर दिया।

ना जप तप ना ध्यान कछू, ना जोगारंभ कष्ट।
सो देखाई बृज रास में, एही वतन चाल ब्रह्मसृष्ट।। १६ ।।

अब हमें जप, तप, ध्यान, योग, साधना कुछ नहीं करनी पड़ती। ऐसा हमने बृज रास में किया। परमधाम में ब्रह्मसृष्टि की यही रीति है।

चलत चाल घर अपने, होए न कसाला किन।
आयस कछू न आवही, सब अपनी में मगन।। १७ ।।

अपने घर जाते समय किसी को भी कष्ट नहीं होता और अपनी करनी का कुछ भी पश्चाताप नहीं होता, क्योंकि सब अपने घर जाने के ध्यान में मग्न होते हैं।

सोई गुन पख इंद्रियां, धाम वतन की देह।
सोई मिलना परआतम का, सब सुखै के सनेह।। १८ ।।

घर में गुण पक्ष (अंत:करण), इन्द्रियों के परआतम के मिलने से सब सुख और प्यार मिलता है।

सोई सेहेज सोई सुभाव, सोई अपना वतन।
सोई आसा लज्या सोई, सोई करना न कछू अन।। १९ ।।

घर पहुंचकर वही सहज स्वभाव, वही अपना घर, वही पिया मिलन की आशा, वही लज्जा हो जाती है और कोई काम नहीं करना पड़ता। ऐसा स्वयं हो जाता है।

सोई लोभ सोई लालच, सोई अपनों अहंकार।
सोई काम प्रेम करतब, सोई अपना वेहेवार।। २० ।।

घर पहुंचने पर केवल एक धनी का ही प्रेम पाने की चाहना होती है। अपने सम्बन्ध का मान होता है। वही अपना ध्येय और कर्त्तव्य है। उसी के अनुसार सब व्यवहार करते हैं।

Nijanand App

सोई मन बुध चितवन, सोई मिलाप सैयन।
सोई हांस विलास सोई, करते रात दिन।। २१ ।।

घर पहुंचने पर मन, बुद्धि, चितवन, सुन्दरसाथ का मिलना, हंसना, आनन्द करना, जो सब कुछ है, अनुभव में आता है।

धाम लीला जाहेर करी, विध विध की रोसन।
दिया सुख अखंड दुनी को, और कायम किए त्रिगुन।। २२ ।।

परमधाम की लीला जाहिर कर तरह-तरह के सुख दिए। दुनियां को भी अखण्ड करके सुख दिया और त्रिगुण को भी मुक्ति दी।

जो जागो सो देखियो, ए लीला सब्दातीत।
मेहेरें इत प्रगट करी, मूल धाम की रीत।। २३ ।।

हे साथजी! जागकर देखो। इस लीला के सुख शब्दातीत हैं। मूल निसबत होने के कारण श्री राजजी महाराज ने मेहर करके उस लीला को संसार में प्रगट किया।

हुकम सरत इत आए मिली, जो फुरमाई थी फुरमान।
महामत साथ को ले चले, कर लीला निदान।। २४ ।।

जो कुरान में मुहम्मद साहब ने वायदा किया था कि खुदा आकर अर्श अजीम (अखण्ड परमधाम) को जाहिर करेंगे। वह समय आ गया है। श्री महामतिजी वही लीला करके सुन्दरसाथ को लेकर चलेंगे।

।। प्रकरण ।। ८२ ।। चौपाई ।। ११४९ ।।

राग श्री

धंन धंन ए दिन साथ आनंद आयो।। टेक ।।

अखंड में याद देने, ए जो बैन बजायो।
चित दे साथ को ले, आप में समायो।। १ ।।

यह दिन धन्य-धन्य है, जिस दिन श्री राजजी महाराज ने सुन्दरसाथ को दिल में लेकर अखण्ड परमधाम में इस खेल की याद दिलाने के वास्ते तारतम ज्ञान (वाणी) की बंसी बजाई और सुन्दरसाथ को सम्पूर्ण ज्ञान देकर अपने साथ मिला लिया।

अखंड में याद देने, ए जो खेल बनायो।
बृज रास जागनी में, ए जो खेल खेलायो।। २ ।।

अखण्ड परमधाम में ही याद देने के वास्ते यह खेल बनाया है जिसमें बृज, रास, जागनी के खेल खिलाए।

पिउ ने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर।
बृज ले रास में खेले, खेले निज घर।। ३ ।।

धनी ने जो पहले बताया था वह समय आ गया। पहले बृज में खेले, रास में खेले और फिर घर गए।

Nijanand App

सोई मन बुध चितवन, सोई मिलाप सैयन।
सोई हांस विलास सोई, करते रात दिन।। २१ ।।

घर पहुंचने पर मन, बुद्धि, चितवन, सुन्दरसाथ का मिलना, हंसना, आनन्द करना, जो सब कुछ है, अनुभव में आता है।

धाम लीला जाहेर करी, विध विध की रोसन।
दिया सुख अखंड दुनी को, और कायम किए त्रिगुन।। २२ ।।

परमधाम की लीला जाहिर कर तरह-तरह के सुख दिए। दुनियां को भी अखण्ड करके सुख दिया और त्रिगुण को भी मुक्ति दी।

जो जागो सो देखियो, ए लीला सब्दातीत।
मेहेरें इत प्रगट करी, मूल धाम की रीत।। २३ ।।

हे साथजी! जागकर देखो। इस लीला के सुख शब्दातीत हैं। मूल निसबत होने के कारण श्री राजजी महाराज ने मेहर करके उस लीला को संसार में प्रगट किया।

हुकम सरत इत आए मिली, जो फुरमाई थी फुरमान।
महामत साथ को ले चले, कर लीला निदान।। २४ ।।

जो कुरान में मुहम्मद साहब ने वायदा किया था कि खुदा आकर अर्श अजीम (अखण्ड परमधाम) को जाहिर करेंगे। वह समय आ गया है। श्री महामतिजी वही लीला करके सुन्दरसाथ को लेकर चलेंगे।

|| प्रकरण || ८२ || चौपाई || ११४९ ||

राग श्री

धंन धंन ए दिन साथ आनंद आयो।। टेक ।।

अखंड में याद देने, ए जो बैन बजायो।
चित दे साथ को ले, आप में समायो।। १ ।।

यह दिन धन्य-धन्य है, जिस दिन श्री राजजी महाराज ने सुन्दरसाथ को दिल में लेकर अखण्ड परमधाम में इस खेल की याद दिलाने के वास्ते तारतम ज्ञान (वाणी) की बंसी बजाई और सुन्दरसाथ को सम्पूर्ण ज्ञान देकर अपने साथ मिला लिया।

अखंड में याद देने, ए जो खेल बनायो।
बृज रास जागनी में, ए जो खेल खेलायो।। २ ।।

अखण्ड परमधाम में ही याद देने के वास्ते यह खेल बनाया है जिसमें बृज, रास, जागनी के खेल खिलाए।

पिउ ने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर।
बृज ले रास में खेले, खेले निज घर।। ३ ।।

धनी ने जो पहले बताया था वह समय आ गया। पहले बृज में खेले, रास में खेले और फिर घर गए।

Nijanand App

विध विध विलास हांस, अंग थें उतपन।
नए नए सुख सनेह, हुए हैं रोसन।। ४ ।।

इन तीनों लीलाओ में तरह-तरह के हंसी और आनन्द के सुख अंग में मिले। इसमें नए-नए सुखों का अनुभव हुआ।

चेहेन चरित्र चातुरी, बृज रास की लई।
अनुभव असलू अंग में, आए चढ़ी धाम की सही।। ५ ।।

बृज, रास से वापस परमधाम में जाने के लिए इन दोनों लीलाओं का नाटक, चतुराई और चालाकी से किया था। उनके आनन्द परमधाम के मूल तनों में याद आ गए।

बढ़त बढ़त प्रीत, जाए लई धाम की रीत।
इन बिध हुई है इत, साथ की जीत।। ६ ।।

सुन्दरसाथ में बृज रास की लीलाओं में धीरे-धीरे प्रेम बढ़ा और फिर आखिर में परमधाम जैसा ही लगने लगा। इस तरह उस खेल में सुन्दरसाथ की माया में जीत हुई।

झूठी जिमी में बैठाए के, देखाए सुख अपार।
कौन देवे सुख दूजा ऐसे, बिना इन भरतार।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज ने इस झूठी माया के संसार में बेशुमार सुख दिखाए। ऐसी माया में ऐसे निराले सुख अपने धनी के बिना कौन दे सकता है?

मैं सुन्यो पिउ जी पे, श्री धाम को बरनन।
सो भेदयो रोम रोम मांहें, अंग अंतस्करन।। ८ ।।

मैंने अपने धनी से परमधाम का वर्णन सुना। वह मेरे रोम-रोम और अंतःकरण को छेदकर पार हो गया।

छक्यो साथ प्रेम रस मातो, छूटे अंग विकार।
परआतम अन्तस्करन उपज्यो, खेले संग आधार।। ९ ।।

सुन्दरसाथ अब प्रेम की मस्ती में छक गया और माया के सारे विकार अंग से छूट गए। हमारी परआतम को ऐसा लगा जैसे हम धनी के संग ही खेल रहे हों।

दुलहे ने दिल हाल दे, खैंच लिए दिल सारे।
कहा कहूं सुख इन विध, जो किए हाल हमारे।। १० ।।

हमारे दूल्हा श्री प्राणनाथजी ने ऐसा सुख देकर हम सब ब्रह्मसृष्टियों के दिल को जीत लिया। ऐसे अद्भुत अखण्ड सुख देकर जो हमारी हालत की है, उसको मैं कैसे कहूं?

मद चढ़यो महामत भई, देखो ए मस्ताई।
धाम स्याम स्यामा जी साथ, नख सिख रहे भराई।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इन सुखों से मुझे ऐसी मस्ती आई कि धाम धनी श्री राजजी, श्री श्यामाजी मेरे रोम-रोम में समा गए।

अन्तस्करन निसान आए, ले आतम को पोहोंचाए।
इन चोटें ऐसे चुभाए, नींद दई उड़ाए।। १२ ।।

ऐसे सुख जब आत्मा से अन्तःकरण में आए तो उसकी चोट से मेरी सारी माया की नींद उड़ गई।

Nijanand App

चढ़ते चढ़ते रंग सनेह, बढ़यो प्रेम रस पूर।
बन जमुना हिरदे चढ़ आए, इन विध हुए हजूर।। १३ ।।

ऐसे सुखों की मस्ती आते-आते, धनी का प्यार, आनन्द तथा प्रेम खूब बढ़ गया जिससे जमुनाजी, वन, आदि सब याद आ गए और ऐसा लगा जैसे हम श्री राजजी महाराज के सामने ही खड़े हों।

पिए हैं सराब प्रेम, छूटे सब बन्धन नेम।
उठ बैठे मांहें धाम, हंस पूछे कुसल खेम।। १४ ।।

परमधाम के प्रेम की मस्ती आने पर संसार के सारे नियम, बन्धन छूट गए। ऐसा लगा कि जैसे हमारी परआतम उठ बैठी हैं और हम आपस में एक दूसरे से हंस-हंस कर हाल-चाल पूछ रहे हैं।

महामत महामद चढ़ी, आयो धाम को अहमद।
साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस खेल में ऐसी मस्ती चढ़ी कि ऐसा लगने लगा कि मैं परमधाम में धनी के सामने हूं और सब सुन्दरसाथ भी प्रेम की मस्ती में डूबा हुआ घर पहुंच गया है।

।। प्रकरण ।। ८३ ।। चौपाई ।। ११६४ ।।

राग श्री धना श्री

धंन धंन सखी मेरे सोई रे दिन, जिन दिन पिया जी सो हुओ रे मिलन।
धंन धंन सखी मेरे हुई पेहेचान, धंन धंन पिउ पर मैं भई कुरबान।। १ ।।

हे सखी! जब मेरा धनी से मिलन हुआ वह दिन धन्य-धन्य है। जब मुझे धनी की पहचान हुई और मैं धनी पर कुर्बान हो गई वह दिन भी धन्य-धन्य है।

धंन धंन सखी मेरे नेत्र अनियाले, धंन धंन धनी नेत्र मिलाए रसाले।
धंन धंन मुख धनी को सुन्दर, धंन धंन धनी चित चुभायो अन्दर।। २ ।।

हे सखी! मैंने अपने बांके नयनों से श्री राजजी के रसीले नयन मिलाए और इस तरह से धनी का लुभावना मुखारबिन्द मेरे हृदय में चुभ गया, तो मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन धनी के वस्तर भूखन, धंन धंन आतम से न छोडूं एक खिन।
धंन धंन सखी मैं सजे सिनगार, धंन धंन धनिएं मोकों करी अंगीकार।। ३ ।।

हे सखी! श्री राजजी महाराज के वस्त्र-आभूषण धन्य-धन्य हैं जिनको मैं अपनी आत्मा से अलग नहीं कर सकती। धन्य-धन्य वह सिनगार है जो मैंने धनी को रिझाने के लिए धारण किया है। मैं भी धन्य-धन्य हो गई, क्योंकि धनी ने मुझे अंगीकार कर लिया।

धंन धंन सखी मैं सेज बिछाई, धंन धंन धनी मोको कंठ लगाई।
धंन धंन सखी मेरे सोई सायत, धंन धंन विलसी मैं पिउसों आयत।। ४ ।।

हे सखी! मैंने प्रेम में डूबकर सुन्दर सेज्या बिछाई। धनी ने मुझे कण्ठ से लगा लिया। वह समय धन्य-धन्य है जिसमें मैंने पिया से मिलाप का अधिक आनन्द लिया।

धंन धंन सखी मेरी सेज रस भरी, धंन धंन विलास मैं कई विध करी।
धंन धंन सखी मेरे सोई रस रंग, धंन धंन सखी मैं किए स्याम संग।। ५ ।।

हे सखी! मेरी सेज (दिल की तड़प) प्रेम के रस में भरी है। मैंने कई तरह से प्रीतम के साथ आनन्द किया। हे सखी! मुझे वैसा ही आनन्द आया जैसा मैंने श्याम (धनी) के संग आनन्द लिया था। इस तरह के आनन्द लेने से मैं धन्य-धन्य हो गई।

Nijanand App

चढ़ते चढ़ते रंग सनेह, बढ़यो प्रेम रस पूर।
बन जमुना हिरदे चढ़ आए, इन विध हुए हजूर।। १३ ।।

ऐसे सुखों की मस्ती आते-आते, धनी का प्यार, आनन्द तथा प्रेम खूब बढ़ गया जिससे जमुनाजी, वन, आदि सब याद आ गए और ऐसा लगा जैसे हम श्री राजजी महाराज के सामने ही खड़े हों।

पिए हैं सराब प्रेम, छूटे सब बन्धन नेम।
उठ बैठे मांहें धाम, हंस पूछे कुसल खेम।। १४ ।।

परमधाम के प्रेम की मस्ती आने पर संसार के सारे नियम, बन्धन छूट गए। ऐसा लगा कि जैसे हमारी परआतम उठ बैठी हैं और हम आपस में एक दूसरे से हंस-हंस कर हाल-चाल पूछ रहे हैं।

महामत महामद चढ़ी, आयो धाम को अहमद।
साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस खेल में ऐसी मस्ती चढ़ी कि ऐसा लगने लगा कि मैं परमधाम में धनी के सामने हूं और सब सुन्दरसाथ भी प्रेम की मस्ती में डूबा हुआ घर पहुंच गया है।

|| प्रकरण || ८३ || चौपाई || ११६४ ||

राग श्री धना श्री

धंन धंन सखी मेरे सोई रे दिन, जिन दिन पिया जी सो हुओ रे मिलन।
धंन धंन सखी मेरे हुई पेहेचान, धंन धंन पिउ पर मैं भई कुरबान।। १ ।।

हे सखी! जब मेरा धनी से मिलन हुआ वह दिन धन्य-धन्य है। जब मुझे धनी की पहचान हुई और मैं धनी पर कुर्बान हो गई वह दिन भी धन्य-धन्य है।

धंन धंन सखी मेरे नेत्र अनियाले, धंन धंन धनी नेत्र मिलाए रसाले।
धंन धंन मुख धनी को सुन्दर, धंन धंन धनी चित चुभायो अन्दर।। २ ।।

हे सखी! मैंने अपने बांके नयनों से श्री राजजी के रसीले नयन मिलाए और इस तरह से धनी का लुभावना मुखारबिन्द मेरे हृदय में चुभ गया, तो मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन धनी के वस्तर भूखन, धंन धंन आतम से न छोडूं एक खिन।
धंन धंन सखी मैं सजे सिनगार, धंन धंन धनिएं मोकों करी अंगीकार।। ३ ।।

हे सखी! श्री राजजी महाराज के वस्त्र-आभूषण धन्य-धन्य हैं जिनको मैं अपनी आत्मा से अलग नहीं कर सकती। धन्य-धन्य वह सिनगार है जो मैंने धनी को रिझाने के लिए धारण किया है। मैं भी धन्य-धन्य हो गई, क्योंकि धनी ने मुझे अंगीकार कर लिया।

धंन धंन सखी मैं सेज बिछाई, धंन धंन धनी मोको कंठ लगाई।
धंन धंन सखी मेरे सोई सायत, धंन धंन विलसी मैं पिउसों आयत।। ४ ।।

हे सखी! मैंने प्रेम में डूबकर सुन्दर सेज्या बिछाई। धनी ने मुझे कण्ठ से लगा लिया। वह समय धन्य-धन्य है जिसमें मैंने पिया से मिलाप का अधिक आनन्द लिया।

धंन धंन सखी मेरी सेज रस भरी, धंन धंन विलास मैं कई विध करी।
धंन धंन सखी मेरे सोई रस रंग, धंन धंन सखी मैं किए स्याम संग।। ५ ।।

हे सखी! मेरी सेज (दिल की तड़प) प्रेम के रस में भरी है। मैंने कई तरह से प्रीतम के साथ आनन्द किया। हे सखी! मुझे वैसा ही आनन्द आया जैसा मैंने श्याम (धनी) के संग आनन्द लिया था। इस तरह के आनन्द लेने से मैं धन्य-धन्य हो गई।

Nijanand App

धंन धंन सखी मोको कहे दिल के सुकन, धंन धंन पायो मैं तासों आनंद घन।
धंन धंन मनोरथ किए पूरन, धंन धंन स्यामें सुख दिए वतन।। ६ ।।

हे सखी! मेरे धनी ने मुझे दिल की बातें बताईं जिससे मुझे बहुत आनन्द आया। धनी ने मेरी सभी इच्छाओं को पूरा किया और श्री राजजी महाराज ने मुझे अखण्ड घर के सुख दिए, इसलिए मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन सखी मेरे पिउ कियो विलास, धंन धंन सखी मेरी पूरी आस।
धंन धंन सखी मैं भई सोहागिन, धंन धंन धनी मुझ पर सनकूल मन।। ७ ।।

हे सखी! मैंने धनी से आनन्द विलास किया और उन्होंने मेरी इच्छा को पूरा किया। इस तरह से मैं सुहागिनी बन गई। धनी ने मुझे प्रसन्न मन से सुहागिनी बनाकर धन्य-धन्य किया।

धंन धंन सखी मेरे मन्दिर सोभित, धंन धंन सरूप सुन्दर प्रेम प्रीत।
धंन धंन चौक चबूतरे सुन्दर, धंन धंन मोहोल झरोखे अन्दर।। ८ ।।

हे सखी! मुझे परमधाम के शोभायमान मन्दिर याद आ गए। धनी के स्वरूप की प्रेम-प्रीति याद आ गई। परमधाम के चौक और चबूतरे याद आए। मोहोलों के अन्दर झरोखों में से झांककर मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन जवेर नकस चित्रामन, धंन धंन देखत कई रंग उतपन।
धंन धंन थंभ गलियां दिवाल, धंन धंन सखियां करें लटकती चाल।। ९ ।।

परमधाम की दीवारों के जवेर (जवाहरात) नक्शकारी के चित्र जिनसे तरह-तरह के रंगों की लहरें निकलती हैं, परमधाम के थंभ, गलियां और दीवारें तथा सखियों की लटकती चाल की याद आते ही मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन सखी मेरे भयो उछरंग, धंन धंन सखियों को बाढ़यो रस रंग।
धंन धंन सखी मैं जोवन मदमाती, धंन धंन धाम धनी सों रंगराती।। १० ।।

हे सखी! इससे मुझे बड़ा आनन्द आया और सुन्दरसाथ में भी खूब प्रेम बढ़ा और मैं यौवन की मस्ती में धनी की अठखेलियों, प्यार भरी चपलता के रंगों में रंगकर धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन साथ मुख नूर रोसन, धंन धंन सुख सदा धाम वतन।
धंन धंन सखी मेरे भूखन झलकार, कौन विध कहूं न पाइए पार।। ११ ।।

हे सखी! अब सुन्दरसाथ के नूरमयी मुख झलक रहे हैं। इनमें परमधाम के अखण्ड सुखों की प्रसन्नता दिखाई देती है। हे सखी! मेरे भूषणों की झलकार अति प्यारी है और किस तरह कहूं वहां बेशुमार सुख हैं जिन्हें पाकर मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन नूर सब में रह्यो भराई, देखे आतम सो मुख कह्यो न जाई।
धंन धंन साथ छक्यो अलमस्त, धंन धंन प्रेम माती महामत।। १२ ।।

प्रेम में अलमस्त बनी हुई श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के अपार सुख सुन्दरसाथ के मुख से झलक रहे हैं। इसका अनुभव आत्मा से होता है। यह कहनी में नहीं आता, क्योंकि मेरे सुन्दरसाथ इश्क की मस्ती में झूम रहे हैं। ऐसा देखकर मैं धन्य-धन्य हो गई।

|| प्रकरण || ८४ || चौपाई || ११७६ ||

Nijanand App

राग श्री

तीन विध का चलना

ए जो कही जागन, सखी री जाग चलो।। टेक ।।

वचन नीके विचारियो, जो कोई सोहागिन।
जाग चलो पिउसों मिलो, सुख अखण्ड आनन्द अति घन।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत होकर चलो। जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो वह इसे अच्छी तरह से विचार करे कि हमको जागृत होकर धनी से मिलना है और बेशुमार अखण्ड सुखों को प्राप्त करना है।

जाग्रत सब्द धनीय के, ततखिन करें मकसूद।
सोई सब्द लिए बिना, होए जात नाबूद।। २ ।।

धनी की जागृत बुद्धि की वाणी तुरन्त ही मन की इच्छाओं की पूर्ति करती है। इस वाणी के बिना सब मिटे जा रहे हैं।

कई किताबें या बानियां, कही मैं साथ कारन।
इनमें से मैं मेरे सिर, लिया ना एक वचन।। ३ ।।

मैंने सुन्दरसाथ के वास्ते कई ग्रन्थों के सार बताए, प्रमाण दिये, परन्तु इनमें से मैंने एक वचन भी अमल में नहीं लिया।

ए जो जाग्रत वचन, सुपन रहे ना आगूं जाग।
पर लिया ना सिर अपने, तो रही सुपन देह लाग।। ४ ।।

इस जागृत वाणी के सामने सपने की वाणी नहीं टिकेगी, परन्तु मैंने जागृत वाणी को अमल में नहीं लिया, इसलिए सपने के तन में बैठी हूं।

अवहीं जो सिर लीजिए, एक वचन जाग्रत।
तो तबहीं जाग के बैठिए, उड़ जाए सुपन सुरत।। ५ ।।

अब भी यदि इस जागृत वाणी का एक भी शब्द अमल में ले लें, तो तुरन्त ही परमधाम में जग जाएंगे और यह सपने का तन उड़ जाएगा।

ए वचन ऐसे जाग्रत, जगावत ततखिन।
जो न लीजे सिर अपने, तो कहा करे वचन।। ६ ।।

यह वचन तो ऐसे जागृत हैं कि तुरन्त ही माया का परदा हटाकर जगा देते हैं पर जो वाणी को अमल में न ले तो वाणी क्या करे (वाणी का क्या दोष)?

मैं न लिया सिर अपने, तो कहा देऊं दोष औरन।
जागे सुपना क्यों रहे, पर हुआ हाथ इजन।। ७ ।।

जब मैंने ही वाणी पर अमल नहीं किया तो दूसरों को क्या दोष दूं? जागृत होने पर सपने का तन रह नहीं सकता, परन्तु यह धनी के हुकम के अनुसार खड़ा है।

जाग्रत वचन अनुभवें, अखंड घर वतन।
अचरज बड़ो होत है, देह उड़त ना झूठ सुपन।। ८ ।।

जागृत बुद्धि से अखण्ड घर (परमधाम) का अनुभव होता है। मुझे बड़ी हैरानी हो रही है कि यह मेरा स्वप्न का तन क्यों नहीं छूटता?

Nijanand App

साख देवाई सब अंगों, दया और अंकूर।
अनुभव वतनी होत है, देह होत न झूठी दूर।। ९ ।।

धनी ने इस वाणी से मेरे अन्दर सभी अंगों से साक्षी दिलवाई, अर्थात् मेरे अंगों ने स्वीकार किया। मुझे घर का अनुभव होने लगा। श्री राजजी की कृपा और अंकूर भी है। फिर भी यह झूठा तन नहीं छूट रहा है।

मैं बिध बिध करके वचनों, मारे तरवारों घाए।
टूक टूक जुदे करहीं, तो भी उड़त नहीं अरवाहे।। १० ।।

मैंने खण्डनी के जागृत वचन सुन्दरसाथ को कह-कहकर तलवारों जैसे घाव मारे जो अंग के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं फिर भी अरवाहें उड़ती नहीं।

सब्द बान सतगुर के, रोम रोम निकसे फूट।
बड़ा अचंभा होत है, देह जात न झूठी टूट।। ११ ।।

सतगुरु की वाणी के शब्द मेरे रोम-रोम में चुभ रहे हैं। फिर भी यह हैरानी की बात है कि यह झूठा तन मिटता क्यों नहीं?

मैं जान्या अपने तन को, मारों भर भर बान।
तिनसे झूठी देह को, फना करों निदान।। १२ ।।

मैंने समझा था कि मैं वाणी के बाणों से अपने तन को छेदूंगी और इस झूठे तन को निश्चित ही समाप्त कर दूंगी।

ए सब्द धनी फुरमान के, भी ले अनुभव आतम।
तिनसे उड़ाऊं सुपना, पर कोई साइत हाथ हुकम।। १३ ।।

इस जागृत वाणी के शब्द श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के हैं और कुरान में भी लिखे हैं। मेरी आत्मा इसका अनुभव कर इस झूठे तन को उड़ाना चाहती थी, परन्तु यह घड़ी धनी के हुकम के हाथ में है।

अब तो आत्म ने ए दृढ़ किया, देह उड़े ना बिना इस्क।
जोस इस्क दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेसक।। १४ ।।

अब आत्मा में यह निश्चय हो गया है कि बिना इश्क के यह तन नहीं छूटेगा। धनी का जोश और इश्क दोनों जब मिल जाएंगे तभी यह तन छूटेगा।

दुख ना दीजे देह को, सुखे छोड़िए सरीर।
ए सिध इन विध होवही, जो जोस इस्क करे भीर।। १५ ।।

इसलिए शरीर को कष्ट मत दो। जब तक जोश और इश्क दोनों मिलकर जोर नहीं लगाएंगे, तब तक सपने का तन नहीं छूटेगा और इसलिए श्री राजजी के जोश और इश्क को पाकर ही सुख से शरीर छोड़ो।

अब दौड़े जोस इस्क को, याद कर साथ धनी धाम।
ए धनी बिना ना आवहीं, जोस इस्क प्रेम काम।। १६ ।।

अब सुन्दरसाथ धनी को याद करके जोश और इश्क के वास्ते दौड़ेगा। यह धनी के बिना नहीं मिलेगा। धनी से ही जोश, इश्क, प्रेम और आनन्द प्राप्त होगा।

Nijanand App

तामस राजस स्वांतस, चलें माहें गुन तीन।
वचन अनुभव इस्क, हुआ जाहेर आकीन।। १७ ।।

सात्विक, राजस और तामस तीनों गुणों में आत्माएं हैं। इनके वचनों के अनुभव और इश्क से उनके यकीन की जाहिरी पहचान होती है।

हंसे खेले बिध तीन में, छोड़ें देह सुपन।
महामत कहें सुख चैन में, धनी साथ मिलन।। १८ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हंसते-खेलते तीनों तरह से अपने शरीर से धनी से मिलने और अखण्ड सुख को प्राप्त करने के लिए तीन तरह से शरीर छोड़ेगी।

|| प्रकरण || ८५ || चौपाई || ११९४ ||

राग श्री

साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर।
सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आखिरत की इस वाणी को सुनकर जागृत हो जाओ और (जोश और इश्क के) अस्त्रों से सजो और दौड़कर अपने घर परमधाम में अपने धनी से मिलो।

धनी के केहेलाए मैं कहे, तुमको चार सब्द।
किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद।। २ ।।

धनी के हुकम से ही मैंने तुमको चार वचन जागृत होने के लिए कहे। इन्हें किसी ने ज्यादा और किसी ने कम लिया। किसी ने तो ग्रहण ही नहीं किए।

किन कम किन ज्यादा जीतिया, कोई हाथ पटक चल्या हार।
साथ जी यों बाजी मिने, कोई जीत्या बेसुमार।। ३ ।।

किसी ने कम और किसी ने ज्यादा लेकर बाजी जीती और कोई हाथ पटकते ही रह गए। हे सुन्दरसाथजी! इस खेल की बाजी में कोई (ब्रह्मसृष्टि) ही बेशुमार जीती।

अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर।
धनिएं बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्यों कर।। ४ ।।

अब वह समय आ गया है जब मुझे धनी के वचनों को सिर चढ़ाना है। धनी ने वाणी कर्ता मुझे बनाया, तो इससे मैं पीछे कैसे हट सकती हूं?

कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएं केहेलाए साथ कारन।
न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन।। ५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! कोई लेना चाहो तो ले लो। धनी ने सुन्दरसाथ के वास्ते ही यह वाणी कहलवाई है। नहीं तो मुझे अवश्य अमल में लेना है क्योंकि यह वाणी ही घर (परमधाम) की ताकत है।

ए नीके मैं जानत हों, करी है तुम पेहेचान।
तुममें विरला कोई पीछे पड़े, आखिर ल्योगे सिर निदान।। ६ ।।

यह मैं अच्छी तरह जानती हूं कि तुमको वाणी की पहचान अच्छी तरह से है। तुममें से शायद ही कोई पीछे रहेगा, क्योंकि अन्त में घर जाने के लिए इसे लेना ही पड़ेगा।

Nijanand App

तामस राजस स्वांतस, चलें माहें गुन तीन।
वचन अनुभव इस्क, हुआ जाहेर आकीन।। १७ ।।

सात्विक, राजस और तामस तीनों गुणों में आत्माएं हैं। इनके वचनों के अनुभव और इश्क से उनके यकीन की जाहिरी पहचान होती है।

हंसे खेले बिध तीन में, छोड़ें देह सुपन।
महामत कहें सुख चैन में, धनी साथ मिलन।। १८ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हंसते-खेलते तीनों तरह से अपने शरीर से धनी से मिलने और अखण्ड सुख को प्राप्त करने के लिए तीन तरह से शरीर छोड़ेगी।

|| प्रकरण || ८५ || चौपाई || ११९४ ||

राग श्री

साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर।
सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आखिरत की इस वाणी को सुनकर जागृत हो जाओ और (जोश और इश्क के) अस्त्रों से सजो और दौड़कर अपने घर परमधाम में अपने धनी से मिलो।

धनी के केहेलाए मैं कहे, तुमको चार सब्द।
किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद।। २ ।।

धनी के हुकम से ही मैंने तुमको चार वचन जागृत होने के लिए कहे। इन्हें किसी ने ज्यादा और किसी ने कम लिया। किसी ने तो ग्रहण ही नहीं किए।

किन कम किन ज्यादा जीतिया, कोई हाथ पटक चल्या हार।
साथ जी यों बाजी मिने, कोई जीत्या बेसुमार।। ३ ।।

किसी ने कम और किसी ने ज्यादा लेकर बाजी जीती और कोई हाथ पटकते ही रह गए। हे सुन्दरसाथजी! इस खेल की बाजी में कोई (ब्रह्मसृष्टि) ही बेशुमार जीती।

अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर।
धनिएं बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्यों कर।। ४ ।।

अब वह समय आ गया है जब मुझे धनी के वचनों को सिर चढ़ाना है। धनी ने वाणी कर्ता मुझे बनाया, तो इससे मैं पीछे कैसे हट सकती हूं?

कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएं केहेलाए साथ कारन।
न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन।। ५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! कोई लेना चाहो तो ले लो। धनी ने सुन्दरसाथ के वास्ते ही यह वाणी कहलवाई है। नहीं तो मुझे अवश्य अमल में लेना है क्योंकि यह वाणी ही घर (परमधाम) की ताकत है।

ए नीके मैं जानत हों, करी है तुम पेहेचान।
तुममें विरला कोई पीछे पड़े, आखिर ल्योगे सिर निदान।। ६ ।।

यह मैं अच्छी तरह जानती हूं कि तुमको वाणी की पहचान अच्छी तरह से है। तुममें से शायद ही कोई पीछे रहेगा, क्योंकि अन्त में घर जाने के लिए इसे लेना ही पड़ेगा।

Nijanand App

मेरे तो आगूं होवना, धनिएं दिया सिर भार।
समझ सको सो समझियो, कर आतम अंतर विचार।। ७ ।।

धनी ने यह जिम्मेदारी मेरे सिर सौंपी है, इसलिए मुझे तो आगे होना ही है। इसलिए आत्मा के अन्दर विचार के समझ सको तो समझ लेना।

अब मैं दिल विचारिया, लिया न सिर सब्द।
तो झूठी देह लग रही, जो बांधी माहें हद।। ८ ।।

अब मैंने दिल से समझ लिया है कि इन वचनों को रहनी में न लेने से ही मैं माया के संसार में झूठा तन धारण किए बैठी हूं।

एक सब्द जो जाग्रत, अंतर आतम चुभाए।
तो ए देह झूठी सुपन की, तबहीं देवे उड़ाए।। ९ ।।

वरना तारतम वाणी का एक वचन भी यदि आत्मा के अन्दर चुभ जाए तो यह सपने का झूठा तन तुरन्त ही समाप्त हो जाएगा।

आगूं जाग्रत वचन के, क्यों रहे देह सुपन।
मोहे अचरज आगूं सांच के, देह झूठी राखी किन।। १० ।।

तारतम वाणी के वचनों के आगे सपने की झूठी देह कैसे रह सकती है? मुझे बड़ी हैरानी होती है कि सत के आगे झूठी देह को किसने कायम रखा?

ए भी फेर विचारिया, सांच आगे न रहे अनित।
एह बल हुकम के, देह सुपन रही इत।। ११ ।।

मैंने यह भी विचार कर देखा कि सच्ची तारतम वाणी के आगे झूठी देह नहीं रह सकती, परन्तु यह हुकम की ताकत से ही खड़ी है।

सोई हुकम आए पोहोंचिया, जो करी थी सरत।
सब्द भी सिर पर लिए, आया वतन बल जाग्रत।। १२ ।।

वह हुकम जिसका वायदा किया था, अब आ गया हमने भी अब तारतम वाणी को रहनी में (सिर पर) ले लिया और अब परमधाम की शक्ति प्राप्त हो गयी।

अब हुकम धनीय के, सब बिध दई पोहोंचाए।
चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए।। १३ ।।

अब धनी के हुकम से ही, हे साथजी! मैंने हर तरह से यह ज्ञान तुम्हें पहुंचाया। अब चेत सको तो चेतो (पहचान सको तो पहचान करो) और अपनी आत्मा को जगा लो।

अब भली बुरी इन दुनीय की, ए जिन लेओ चित ल्याए।
सुरत पकी करो धाम की, परआतम धनी मिलाए।। १४ ।।

अब किसी ने भला किया या बुरा किया, इसको भूल जाओ और अपनी आत्मा को दृढ़कर धनी से मिला दो।

दुख सुख डारो आग में, ए जो झूठी माया के।
पिंड ना देखो ब्रह्मांड, राखो धाम धनी सुरत जे।। १५ ।।

झूठी माया के दुःख और सुख को आग में डाल दो। अपने शरीर और संसार के लोगों को भुला दो। आत्मा को धनी के चरणों में लगा दो।

Nijanand App

कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन।। १६ ।।

ऐसा करने में यदि कोई तुमको कष्ट पहुंचाता है तो तुम उसका भला ही सोचना (अनदेखा करना)। परमधाम में एक दूसरे को जगाने वाले वायदे को नहीं छोड़ना और अपनी सुरता को भी माया में नहीं लगाना।

जो कोई होवे ब्रह्मसृष्ट का, सो लीजो वचन ए मान।
अपने पोहोरे जागियो, समया पोहोंच्या आन।। १७ ।।

जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो, मेरे इन वचनों को मानना। अब समय जागने का आ गया है। हमको अपने समय पर जागना है।

सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए।
बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा पांउ भरे आगे सोए।। १८ ।।

जो अभी भी माया में भूले हों, इन वचनों से जागृत हो जाएं। जो जागृत हो गए हैं वह सावचेत (सावधान) होकर इन वचनों पर विचार कर बैठ जाएं और जो जागृत होकर बैठ गए हैं वह खड़े हो जाएं। जो जागृत होकर खड़े हो गए हों, वह सुन्दरसाथ को जगाने के कार्य में आगे बढ़ें।

यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड़।
सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़।। १९ ।।

इस तरह से सभी मिलकर तैयारी करो और अपने रोम रोम में धनी का इश्क लेकर इस माया के ब्रह्माण्ड को उलंघकर आगे परमधाम की तरफ दौड़ो।

महामत कहें मेरे साथ जी, लीजो आखिर के वचन।
हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे सुन्दरसाथजी! इन आखिर के वचनों पर अमल करो। अब श्री राजजी महाराज की मेहर, हुकम और समय आ गया है। तुम भी कुछ अपना कार्य करके दिखाओ।

|| प्रकरण || ८६ || चौपाई || १२१४ ||

राग श्री

आग परो तिन कायरों, जो धाम की राह न लेत।
सरफा करे जो सिर का, और सकुचे जीव देत।। १ ।।

ऐसे कायर भाड़ में जाएं जो धनी की इतनी मेहर से सब कुछ होने पर भी परमधाम के रास्ते पर आगे नहीं बढ़ते तथा अपने मिटने वाले तन से भी कुर्बानी करने में संकोच करते हैं।

पाइयत झूठ के बदले सत सुख अखंड।
सो देख पीछे क्यों होवहीं, करते कुरबानी पिंड।। २ ।।

ऐसे झूठे तन के बदले में सच्चे अखण्ड सुख मिलते हैं। यह जानकर के भी इस मिटने वाले तन की कुर्बानी करने में क्यों पीछे रहते हैं?

इन विध कहे संसार में, धनी रंचक दिलासा दे।
टूक टूक होए जाए फना, सब अंग आसिक के।। ३ ।।

संसार में ऐसा कहा जाता है कि माशूक जरा सा भी इश्क का इशारा करता है तो आशिक अपने तन को माशूक पर फना कर देता है।

कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन।। १६ ।।

ऐसा करने में यदि कोई तुमको कष्ट पहुंचाता है तो तुम उसका भला ही सोचना (अनदेखा करना)। परमधाम में एक दूसरे को जगाने वाले वायदे को नहीं छोड़ना और अपनी सुरता को भी माया में नहीं लगाना।

जो कोई होवे ब्रह्मसृष्ट का, सो लीजो वचन ए मान।
अपने पोहोरे जागियो, समया पोहोंच्या आन।। १७ ।।

जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो, मेरे इन वचनों को मानना। अब समय जागने का आ गया है। हमको अपने समय पर जागना है।

सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए।
बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा पांउ भरे आगे सोए।। १८ ।।

जो अभी भी माया में भूले हों, इन वचनों से जागृत हो जाएं। जो जागृत हो गए हैं वह सावचेत (सावधान) होकर इन वचनों पर विचार कर बैठ जाएं और जो जागृत होकर बैठ गए हैं वह खड़े हो जाएं। जो जागृत होकर खड़े हो गए हों, वह सुन्दरसाथ को जगाने के कार्य में आगे बढ़ें।

यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड़।
सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़।। १९ ।।

इस तरह से सभी मिलकर तैयारी करो और अपने रोम रोम में धनी का इश्क लेकर इस माया के ब्रह्माण्ड को उलंघकर आगे परमधाम की तरफ दौड़ो।

महामत कहें मेरे साथ जी, लीजो आखिर के वचन।
हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे सुन्दरसाथजी! इन आखिर के वचनों पर अमल करो। अब श्री राजजी महाराज की मेहर, हुकम और समय आ गया है। तुम भी कुछ अपना कार्य करके दिखाओ।

|| प्रकरण || ८६ || चौपाई || १२१४ ||

राग श्री

आग परो तिन कायरों, जो धाम की राह न लेत।
सरफा करे जो सिर का, और सकुचे जीव देत।। १ ।।

ऐसे कायर भाड़ में जाएं जो धनी की इतनी मेहर से सब कुछ होने पर भी परमधाम के रास्ते पर आगे नहीं बढ़ते तथा अपने मिटने वाले तन से भी कुर्बानी करने में संकोच करते हैं।

पाइयत झूठ के बदले सत सुख अखंड।
सो देख पीछे क्यों होवहीं, करते कुरबानी पिंड।। २ ।।

ऐसे झूठे तन के बदले में सच्चे अखण्ड सुख मिलते हैं। यह जानकर के भी इस मिटने वाले तन की कुर्बानी करने में क्यों पीछे रहते हैं?

इन विध कहे संसार में, धनी रंचक दिलासा दे।
टूक टूक होए जाए फना, सब अंग आसिक के।। ३ ।।

संसार में ऐसा कहा जाता है कि माशूक जरा सा भी इश्क का इशारा करता है तो आशिक अपने तन को माशूक पर फना कर देता है।

Nijanand App

धनिएं दई दिलासा मुझको, कई पदमों लाख करोड़।
तब आतम ने यों कह्या, परआतम धनी संग जोड़।। ४ ।।

फिर धनी ने तो मुझे लाखों, करोड़ों, पद्मों, दिलासे दिए हैं। तभी मेरी आतम ने कहा कि अपनी परआतम को धनी के संग जोड़ो।

देख दिलासा धनीय की, भी साख दई सबन।
मांहें बाहेर अंतर मिने, सब अंग किए रोसन।। ५ ।।

धनी के दिलासे को भी देखा और सब धर्म शास्त्रों ने गवाही भी दी। तब मेरे अन्दर और बाहर के संशय मिट गए और मुझे सब गुण, अंग, इन्द्रिय से पूर्ण पहचान हो गई।

तूं पूछ मन चित बुध को, और गुन अंग इन्द्री पख।
देख तत्व सब सास्त्रों का, फेर कर नीके लख।। ६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम भी अपने मन, चित्त, बुद्धि, गुण, अंग, इन्द्रिय तथा शास्त्रों की वाणी को अच्छी तरह से विचार कर देख लो।

तूं बल कर कछू अपना, चल राह तामसी सूर।
ब्रह्मसृष्ट निकसी बृज से, देख क्यों कर पोहोंची हजूर।। ७ ।।

और फिर तुम अपनी ताकत से बहादुर तामसी सखियों की राह पर चलो जैसे वह ब्रह्मसृष्टि बृज से रास में तुरन्त ही श्री राजजी महाराज के पास पहुंच गई थी।

कर कबीला पार का, अंकूर बल सूर धीर।
एक धनी नजर में लेय के, उड़ाए दे सरीर।। ८ ।।

तुम संसार का झूठा कबीला छोड़कर अंकूरी बल या धैर्य करने वाले सुन्दरसाथ को अपना परिवार समझो और अपनी नजर केवल धनी में लगाकर अपने शरीर को छोड़ दो।

पूछ नीके अपने धनी को, भी नीके देख तारतम।
नीके देख फुरमान को, भी पूछ नीके आतम।। ९ ।।

तुम अच्छी तरह तारतम वाणी को और कुरान को देखकर अपनी आत्मा और धनी से पूछकर दृढ़ता लाओ।

भी पूछ संगी तूं अपने, जो हुए पिंडथे दूर।
कई साखें अजूं ले खड़ी, देख रोसन अपना नूर।। १० ।।

तुम्हारे दूसरे साथी जिन्होंने अपने तन से मोह त्याग दिया है, उनसे भी पूछ लो। यह सब गवाहियों को लेकर अभी तक संसार में कैसे खड़ी हैं? इसलिए तुम अपने अखण्ड तन की तरफ देखो।

एती साखें लेय के, कहा लगत झूठे अंग।
अजूं न लगे तोकों धाम को, सांचो सनमंध संग।। ११ ।।

इतनी गवाही लेकर भी क्या झूठे तनको लेकर बैठे हो। अभी तक भी तुमको धाम धनी से सच्ची निसबत की पहचान नहीं हुई।

सास्त्र संगी सब यों कहें, विचार देख महामत।
जैसी होए हिरदे मिने, तैसी पाइए गत।। १२ ।।

सभी शास्त्र और साथी इस तरह से कहते हैं कि जैसी दिल में भावना होती है वैसी गति मिलती है। श्री महामतिजी कहते हैं कि तुम इस पर भी विचार कर लो।

Nijanand App

महामत कहे पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाहे।
एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दे अरवाहे।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि पीछे माया में मत देखो और माया वालों की परवाह मत करो। धाम की एक चाहना हृदय में लेकर तन को छोड़ दो।

॥ प्रकरण ॥ ८७ ॥ चौपाई ॥ १२२७ ॥

राग श्री

सैयां हम धाम चले।। टेक ।।

जो आओ सो आइयो, पीछे रहे ना एक खिन।
हम पीठ दई संसार को, जाए सुरत लगी वतन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साथजी! मैं इस तरह से परमधाम चलती हूं। अब तुमको आना हो तो आओ। हम अब आपकी एक पल के लिए भी इन्तजार न करेंगे। हमने श्री राजजी महाराज के चरणों में ध्यान लगाकर संसार को छोड़ दिया है।

सुध महूरत ले कूच किया, साइत देखी अति सारी।
अब दौड़ सको सो दौड़ियो, न रहे दौड़ पकड़ी हमारी।। २ ।।

मैंने इस समय को शुभ मुहूर्त और अच्छी घड़ी समझा, क्योंकि इस समय मेरा चित्त माया को छोड़कर श्री राजजी महाराज के चरणों में लगा। अब तुम अपना चित्त माया से हटाकर मेरे साथ आ सको तो आ जाओ। मेरी चाल को अब कोई नहीं पकड़ सकेगा, अर्थात् मेरे रास्ते में अब कोई आड़ा नहीं आ सकेगा।

कोई दिन राह देखी साथ की, पीछे नजर फिराए।
पोहोंचे दिन आए आखिर, अब हम रहयो न जाए।। ३ ।।

मैं कुछ दिन तक तो माया में ही रहकर सुन्दरसाथ को जगाने में लगी रही अर्थात उनकी राह देखी। आखिरत के समय के लिए जो भविष्यवाणियां की गई थीं, वह समय अब आ गया है। अब हम और अधिक तुम्हारा इन्तजार नहीं करेंगे।

हम संग चलो सो ढील जिन करो, छोड़ो आस संसार।
सुरत हमारी कछू ना रही, हम छोड़ी आस आकार।। ४ ।।

मेरे साथ चलना हो तो संसार की चाहना छोड़ दो। मेरी माया में कोई चाहना नहीं रह गई और हमने शरीर की भी चिन्ता छोड़ दी है।

नेक बसे हम बृज में, नेक बसे रास मांहें।
आगे तो धाम आइया, तब तो आंखें खुल जाए।। ५ ।।

कुछ समय तक हमने बृज का आनन्द लिया। कुछ समय रास का आनन्द लिया और अब जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से आंखें खुलीं तो घर की पहचान हुई। यह पहचान बृज रास में नहीं थी।

साथ चले जो ना चलिया, ताए लगसी आग दोजक।
तलफ तलफ जीव जाएसी, जिन जानो यामें सक।। ६ ।।

अब जो मेरे कदमों पर कदम नहीं रखेगा (मेरी चाल नहीं चलेगा) उसे दोजख की आग में जलना पड़ेगा और तड़प-तड़पकर मरना होगा। इसमें किसी तरह से संशय नहीं लाना।

Nijanand App

महामत कहे पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाहे।
एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दे अरवाहे।।१३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि पीछे माया में मत देखो और माया वालों की परवाह मत करो। धाम की एक चाहना हृदय में लेकर तन को छोड़ दो।

॥ प्रकरण ॥ ८७ ॥ चौपाई ॥ १२२७ ॥

राग श्री

सैयां हम धाम चले।। टेक ।।

जो आओ सो आइयो, पीछे रहे ना एक खिन।
हम पीठ दई संसार को, जाए सुरत लगी वतन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साथजी! मैं इस तरह से परमधाम चलती हूं। अब तुमको आना हो तो आओ। हम अब आपकी एक पल के लिए भी इन्तजार न करेंगे। हमने श्री राजजी महाराज के चरणों में ध्यान लगाकर संसार को छोड़ दिया है।

सुध महूरत ले कूच किया, साइत देखी अति सारी।
अब दौड़ सको सो दौड़ियो, न रहे दौड़ पकड़ी हमारी।। २ ।।

मैंने इस समय को शुभ मुहूर्त और अच्छी घड़ी समझा, क्योंकि इस समय मेरा चित्त माया को छोड़कर श्री राजजी महाराज के चरणों में लगा। अब तुम अपना चित्त माया से हटाकर मेरे साथ आ सको तो आ जाओ। मेरी चाल को अब कोई नहीं पकड़ सकेगा, अर्थात् मेरे रास्ते में अब कोई आड़ा नहीं आ सकेगा।

कोई दिन राह देखी साथ की, पीछे नजर फिराए।
पोहोंचे दिन आए आखिर, अब हम रह्यो न जाए।। ३ ।।

मैं कुछ दिन तक तो माया में ही रहकर सुन्दरसाथ को जगाने में लगी रही अर्थात उनकी राह देखी। आखिरत के समय के लिए जो भविष्यवाणियां की गई थीं, वह समय अब आ गया है। अब हम और अधिक तुम्हारा इन्तजार नहीं करेंगे।

हम संग चलो सो ढील जिन करो, छोड़ो आस संसार।
सुरत हमारी कछू ना रही, हम छोड़ी आस आकार।। ४ ।।

मेरे साथ चलना हो तो संसार की चाहना छोड़ दो। मेरी माया में कोई चाहना नहीं रह गई और हमने शरीर की भी चिन्ता छोड़ दी है।

नेक बसे हम बृज में, नेक बसे रास मांहें।
आगे तो धाम आइया, तब तो आंखें खुल जाए।। ५ ।।

कुछ समय तक हमने बृज का आनन्द लिया। कुछ समय रास का आनन्द लिया और अब जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से आंखें खुलीं तो घर की पहचान हुई। यह पहचान बृज रास में नहीं थी।

साथ चले जो ना चलिया, ताए लगसी आग दोजक।
तलफ तलफ जीव जाएसी, जिन जानो यामें सक।। ६ ।।

अब जो मेरे कदमों पर कदम नहीं रखेगा (मेरी चाल नहीं चलेगा) उसे दोजख की आग में जलना पड़ेगा और तड़प-तड़पकर मरना होगा। इसमें किसी तरह से संशय नहीं लाना।

Nijanand App

पीछे अटकाव न राखो रंचक, जो आओ संग हम।
तुम जानोगे वह नेक है, पर जरा होसी जुलम।। ७ ।।

अगर मेरे कदमों पर कदम रखना चाहते हो (मेरे साथ आना चाहते हो) तो माया की चाहना बिलकुल छोड़ दो। तुम माया को अच्छा समझते हो परन्तु तुम्हारे लिए इसकी थोड़ी सी चाहना भी घातक हो जाएगी।

जो न आवे सो जुदा होइयो, ना तो होसी बड़ी जलन।
हम तो चले धाम को, तुम रहियो माहें करन।। ८ ।।

जिनको मेरे रास्ते नहीं चलना है वह अलग हो जाओ। नहीं तो दोरंगी चाल चलकर दु:खी हो जाओगे। हम तो धाम की राह पर चल रहे हैं। तुम्हें माया में रहना है, तो रहो।

हम छोड़े सुख सुपन के, आए नजरों सुख अखंड।
विरहा उपज्या धाम का, पीछे हो गई आग ब्रह्मांड।। ९ ।।

हमने सपने के सुख को छोड़ दिया है। अखण्ड सुख दिखने लगे हैं। इससे हमें धाम से बिछुड़ने का विरह सता रहा है और इससे सारा संसार आग के समान दु:खदायी लग रहा है।

मैं आग देऊं तिन सुख को, जो आड़ी करे जाते धाम।
मैं पिंड न देखूं ब्रह्मांड, मेरे हिरदे बसे स्यामा स्याम।। १० ।।

धाम के रास्ते चलने में संसारी सुख जो आड़े आते हैं, उनको मैं त्याग देती हूं। मैं अपने शरीर को और रिश्तेदारों को नहीं देखती हूं। मेरे हृदय में श्री राजश्यामा जी विराजमान हो गए हैं।

कई किताबें करी साथ कारने, सो भी गाई जगावन।
ए सुन के जो न दौड़िया, जिमी ताबा होसी तिन।। ११ ।।

सुन्दरसाथ को जगाने के वास्ते मैंने बहुत सारी किताबें लिखी हैं। इस जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी को सुनकर भी जो नहीं चलेगा, उसके लिए यह संसार अग्नि के समान हो जाएगा।

कई लोभें लिए लज्या लिए, कई लिए अहंकार।
यों छलें पीछे कई पटके, जो केहेते हम सिरदार।। १२ ।।

कई सुन्दरसाथ लोभ, लोक-लाज और अपने अहंकार में डूबे हैं। वह कहते हैं कि हम ब्रह्मसृष्टि हैं, परन्तु माया की चाहना ने उन्हें पीछे पटक दिया।

विखे स्वाद जिन लग्यो, सो लिए इंद्रियों घेर।
जो एक साइत साथ आगे चल्या, पीछे पड़े मांहें करन अंधेर।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस माया के सुख जहर के समान हैं, इसलिए इन सुखों के पीछे मत पड़ना। यदि एक क्षण के लिए भी तुम अपनी गुण, अंग, इन्द्रियों को इसमें लगाओगे, तो बाद में घोर अन्धकार में डूब जाओगे।

गुन अवगुन सबके माफ किए, जो रहो या चलो हम संग।
हम पीछे फेर न देखहीं, पिउसों करें रस रंग।। १४ ।।

मेरी सेवा करके जो मुझे माया के सुख देना चाहते हैं वह सेवा धाम के रास्ते में दु:खदायी है। ऐसे सुन्दरसाथ के गुणों को माफ कर दिया और अवगुण करने वालों की तरफ ध्यान ही नहीं दिया, अर्थात् इस तरह से दोनों को माफ किया। अब तुम चाहो तो माया में रहो और चाहो तो हमारे साथ हमारी चाल चलो। अब हम पीछे तुम्हारी तरफ नहीं देखेंगे। धनी के आनन्द में अपने चित्त को लगाएंगे।

Nijanand App

साथ होवे जो धाम को, सो भूले नहीं अवसर।
सनमंधी जब उठ चले, तब पीछे रहे क्यों कर।। १५ ।।

जो सुन्दरसाथ परमधाम के होंगे, वह इस अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। जब उनके परमधाम के सम्बन्धी माया से चित्त हटाकर धनी के रंग में मग्न होने लगे, तो वह पीछे कैसे रहेंगे?

महामत कहें मेहेबूब का, सांचा स्वाद आया जिन।
परीछा तिनकी प्रगट, छेद निकसें बान वचन।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं जिनको धनी का सच्चा स्वाद लग गया उनको यह वचन बाण की तरह लगेंगे। यह उनकी ब्रह्मसृष्टि होने की परीक्षा है।

|| प्रकरण || ८८ || चौपाई || १२४३ ||

राग वसंत

चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम।
मूल वतन धनिएं बताया, जित ब्रह्मसृष्ट स्यामा जी स्याम।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! चलो, माया से चित्त हटाकर श्री राजजी के चरणों में चित्त लगाएं। धनी ने अपने मूल घर की पहचान बता दी है, जहां मूल मिलावे में श्री राजजी, श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि हैं।

मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर।
जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी बिना नहीं कोई और।। २ ।।

अब यहां बैठे-बैठे अपने परमधाम के मोहोल, मन्दिर और खेलने के सब ठिकाने चितवन से देखिए। जहां हम श्री राज श्यामाजी के साथ लीला करते हैं और वहां सुन्दरसाथ के अलावा और कोई नहीं है।

रेत सेत जमुना जी तलाव, कई ठौर बन करे विलास।
इस्क के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद कई हांस।। ३ ।।

जमुनाजी के किनारे की सुन्दर रेत, हौज कौसर तालाब और वनों के बीच में खेलने के कई ठिकाने जहां हम इश्क में भीगे हुए श्री राजजी के साथ हंसी और आनन्द करते हैं, वह सब चितवन से देखो।

पसु पंखी माहें सुन्दर सोभित, करत कलोल मुख मीठी बान।
अनेक बिध के खेल जो खेलत, सो केते कहूं मुख इन जुबान।। ४ ।।

इन वनों में पशु, पक्षी सुन्दर शोभायुक्त हैं और मीठी वाणी बोलकर रिझाते हैं। वह तरह-तरह के खेल खेलते हैं। ऐसे अखण्ड सुखों का इस मुख और जबान से कैसे बयान करूं?

ऐही सुरत अब लीजो साथ जी, भुलाए देओ सब पिंड ब्रह्मांड।
जागे पीछे दुख काहे को देखें, लीजे अपना सुख अखंड।। ५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब अपने तन और घर परिवार को भूल कर अपनी सुरता को इन अखण्ड सुखों में लगाओ। जब अपने को अखण्ड सुखों की पहचान हो गई है, तो अब जागृत होने पर भी दुःख क्यों देखें।

साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप।
भूलियां धाम धनी के वचन, न कछू सुध रही जो आप।। ६ ।।

हे साथजी! तुम मिलकर परमधाम से आए थे और यहां आकर अपने मूल मेले को भी भूल गए। धाम को और धनी के वचनों को भी भूल गए और अपने आप की भी सुध नहीं रही।

Nijanand App

साथ होवे जो धाम को, सो भूले नहीं अवसर।
सनमंधी जब उठ चले, तब पीछे रहे क्यों कर।। १५ ।।

जो सुन्दरसाथ परमधाम के होंगे, वह इस अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। जब उनके परमधाम के सम्बन्धी माया से चित्त हटाकर धनी के रंग में मग्न होने लगे, तो वह पीछे कैसे रहेंगे?

महामत कहें मेहेबूब का, सांचा स्वाद आया जिन।
परीछा तिनकी प्रगट, छेद निकसें बान वचन।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं जिनको धनी का सच्चा स्वाद लग गया उनको यह वचन बाण की तरह लगेंगे। यह उनकी ब्रह्मसृष्टि होने की परीक्षा है।

|| प्रकरण || ८८ || चौपाई || १२४३ ||

राग वसंत

चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम।
मूल वतन धनिएं बताया, जित ब्रह्मसृष्ट स्यामा जी स्याम।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! चलो, माया से चित्त हटाकर श्री राजजी के चरणों में चित्त लगाएं। धनी ने अपने मूल घर की पहचान बता दी है, जहां मूल मिलावे में श्री राजजी, श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि हैं।

मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर।
जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी बिना नहीं कोई और।। २ ।।

अब यहां बैठे-बैठे अपने परमधाम के मोहोल, मन्दिर और खेलने के सब ठिकाने चितवन से देखिए। जहां हम श्री राज श्यामाजी के साथ लीला करते हैं और वहां सुन्दरसाथ के अलावा और कोई नहीं है।

रेत सेत जमुना जी तलाव, कई ठौर बन करे विलास।
इस्क के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद कई हांस।। ३ ।।

जमुनाजी के किनारे की सुन्दर रेत, हौज कौसर तालाब और वनों के बीच में खेलने के कई ठिकाने जहां हम इश्क में भीगे हुए श्री राजजी के साथ हंसी और आनन्द करते हैं, वह सब चितवन से देखो।

पसु पंखी माहें सुन्दर सोभित, करत कलोल मुख मीठी बान।
अनेक बिध के खेल जो खेलत, सो केते कहूं मुख इन जुबान।। ४ ।।

इन वनों में पशु, पक्षी सुन्दर शोभायुक्त हैं और मीठी वाणी बोलकर रिझाते हैं। वह तरह-तरह के खेल खेलते हैं। ऐसे अखण्ड सुखों का इस मुख और जबान से कैसे बयान करूं?

ऐही सुरत अब लीजो साथ जी, भुलाए देओ सब पिंड ब्रह्मांड।
जागे पीछे दुख काहे को देखें, लीजे अपना सुख अखंड।। ५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब अपने तन और घर परिवार को भूल कर अपनी सुरता को इन अखण्ड सुखों में लगाओ। जब अपने को अखण्ड सुखों की पहचान हो गई है, तो अब जागृत होने पर भी दुःख क्यों देखें।

साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप।
भूलियां धाम धनी के वचन, न कछू सुध रही जो आप।। ६ ।।

हे साथजी! तुम मिलकर परमधाम से आए थे और यहां आकर अपने मूल मेले को भी भूल गए। धाम को और धनी के वचनों को भी भूल गए और अपने आप की भी सुध नहीं रही।

Nijanand App

धनी भेज्या फुरमान बुलावने, कह्या आइयो सरत इन दिन।
खेल में लाहा लेय के आपन, चलिए इत होए धंन धंन।। ७ ।।

धनी ने हमें बुलाने के वास्ते कुरान भेजा और खेल देखकर घर वापस आने का समय निश्चित कर दिया। अब हम खेल में जागृत होकर धन्य-धन्य होकर घर चलेंगे।

चौदे लोक में झूठ विस्तरयो, तामें एक सांचे किए तुम।
हंसते खेलते नाचते चलिए, आनंद में बुलाइयां ख्वसम।। ८ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में सब जगह झूठ फैला है। उसमें तुम्हीं एक अखण्ड परमधाम को जाओगे बाकी संसार मिट जाने वाला है, इसलिए इस खेल को देखकर हंसते-खेलते, नाचते हुए अखण्ड आनन्द में घर चलो, श्री राजजी बुला रहे हैं।

अब छल में कैसे कर रहिए, छोड़ देओ सब झूठ हराम।
सुरत धनी सो बांध के चलिए, ले विरहा रस प्रेम काम।। ९ ।।

अब धनी के बुलाने पर माया में कैसे रह सकते हैं? झूठ और मिट जाने वाले संसार को छोड़ दो। धनी के चरणों में चित्त लगाकर विरह के रस में मग्न होकर घर चलो।

जो जो खिन इत होत है, लीजो लाभ साथ धनी पेहेचान।
ए समया तुमें बहुरि न आवे, केहेती हों नेहेचे बात निदान।। १० ।।

जितने समय संसार में रहना है उतने दिन तक धनी और सुन्दरसाथ की पहचान करने में चित्त लगाओ। यह समय दुबारा हाथ नहीं आएगा। यह बात निश्चित जानो।

अब जो घड़ी रहो साथ चरने, होए रहियो तुम रेनु समान।
इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान।। ११ ।।

जितने दिन इस संसार में रहते हो, सुन्दरसाथ के चरणों की धूल के समान, अर्थात् अहंकार छोड़कर गरीबी भाव से रहना। यहां जागृत होने का यही फल है, इसलिए जो चतुर सुजान सुन्दरसाथ है वह सावधान हो जाओ।

ज्यों ज्यों गरीबी लीजे साथ में, त्यों त्यों धनी को पाइए मान।
इत दोए दिन का लाभ जो लेना, एही वचन जानो परवान।। १२ ।।

जैसे-जैसे सुन्दरसाथ में गरीबी, नम्रता से रहोगे, वैसे-वैसे धनी का अधिक प्यार मिलेगा। इस संसार में दो दिन का ही यह लाभ है। इन वचनों को निश्चित रूप से ग्रहण करो।

अब जो साइत इत होत है, सो पिउ बिना लगत अगिन।
ए हम सह्यो न जावही, जो साथ में कहे कोई कटुक वचन।। १३ ।।

अब इस संसार में जागृत होने पर धनी के बिना जो समय बीत रहा है, वह अग्नि के समान लगता है। मेरे सुन्दरसाथ आपस में कोई दुःख देने वाले वचन कहते हैं, तो वह मेरे से सहन नहीं होते।

ज्यों ज्यों साथ में होत है प्रीत, त्यों त्यों मोही को होत है सुख।
ज्यों ज्यों क्रोध करत हैं साथ में, अंत वाही को है जो दुख।। १४ ।।

सुन्दरसाथ में जैसे-जैसे प्रेम बढ़ता है मुझे बहुत सुख होता है। जो सुन्दरसाथ में झगड़ा करता है वही इस संसार में दुःख को भोगेगा।

Nijanand App

इन खिनका है जो लटका, जीत चलो भांवें हार।
महामत हेत कर कहें साथ को, बिध बिध की करत पुकार।। १५ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को प्रेम से तरह-तरह से समझाकर कहते हैं कि इस संसार की लीला एक पल की है। इसमें माया में मग्न रहकर हारकर चलो या धनी से प्रेम करके जीतकर चलो, यह तुम्हारे हाथ में है।

॥ प्रकरण ॥ ८९ ॥ चौपाई ॥ १२५८ ॥

राग मारू

साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी आतम।
वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम।। १ ।।

हे साथजी! धाम धनी श्री राजजी महाराज की पहचान कर, नख से शिख तक, अर्थात् तन, मन, जीव न्यौछावर करके सुन्दरसाथ में शोभा लो।

लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमिन।
अग्यारे सै साल का, सो आए पोहोंच्या दिन।। २ ।।

कुरान में लिखा है कि ग्यारह सौ साल बाद मोमिन ही कुर्बानी करेंगे। वह समय अब आ गया है।

देख्या मैं विचार के, हम सिर किया फरज।
बड़ी बुंजरकी मोमिनों, देखो कौन क्यों देत करज।। ३ ।।

मैंने दिल में विचार करके देखा कि श्री राजजी महाराज ने हमारे सिर पर सुन्दरसाथ को जगाने का काम सौंपा है। अब मोमिनों की बड़ी भारी साहेबी है। अब देखते हैं कि कौन कितना जागनी का काम करके अपना फर्ज निभाता है।

करी कुरबानी तिन कारने, परीछा सबकी होए।
करे कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए।। ४ ।।

मैंने वह फर्ज निभाया है, कुर्बानी करके दिखाई है। अब सबकी परीक्षा होनी है। अब सच्ची आत्माएं और झूठे जीव अलग-अलग तरीके से कुर्बानी देंगे। जिससे पहचान हो जाएगी कि कौन ब्रह्मसृष्टि है और कौन जीवसृष्टि है।

कस न पाइए कसौटी बिना, रंग देखावे कसौटी।
कच्ची पक्की सब पाइए, मत छोटी या मोटी।। ५ ।।

कसौटी पर कसने से ही सोने की परख होती है। उसी तरह से कुर्बानी से कच्चे ईमान वाले जीवों की और पक्के ईमान वाली ब्रह्मसृष्टि की पहचान होती है।

कसौटी कस देखावहीं, कसनी के बखत।
अबहीं प्रगट होएसी, जुदे झूठ से निकस के सत।। ६ ।।

अब कसनी का समय है। कुर्बानी से ही सबकी परीक्षा होगी। झूठे जीव माया को छोड़ नहीं सकेंगे तथा सच्ची ब्रह्मसृष्टि माया को तुरन्त छोड़ देगी। इससे जीव और ब्रह्मसृष्टि की पहचान हो जाएगी।

Nijanand App

इन खिनका है जो लटका, जीत चलो भांवें हार।
महामत हेत कर कहें साथ को, बिध बिध की करत पुकार।। १५ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को प्रेम से तरह-तरह से समझाकर कहते हैं कि इस संसार की लीला एक पल की है। इसमें माया में मग्न रहकर हारकर चलो या धनी से प्रेम करके जीतकर चलो, यह तुम्हारे हाथ में है।

।। प्रकरण ।। ८९ ।। चौपाई ।। १२५८ ।।

राग मारू

साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी आतम।
वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम।। १ ।।

हे साथजी! धाम धनी श्री राजजी महाराज की पहचान कर, नख से शिख तक, अर्थात् तन, मन, जीव न्यौछावर करके सुन्दरसाथ में शोभा लो।

लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमिन।
अग्यारे सै साल का, सो आए पोहोंच्या दिन।। २ ।।

कुरान में लिखा है कि ग्यारह सौ साल बाद मोमिन ही कुर्बानी करेंगे। वह समय अब आ गया है।

देख्या मैं विचार के, हम सिर किया फरज।
बड़ी बुंजरकी मोमिनों, देखो कौन क्यों देत करज।। ३ ।।

मैंने दिल में विचार करके देखा कि श्री राजजी महाराज ने हमारे सिर पर सुन्दरसाथ को जगाने का काम सौंपा है। अब मोमिनों की बड़ी भारी साहेबी है। अब देखते हैं कि कौन कितना जागनी का काम करके अपना फर्ज निभाता है।

करी कुरबानी तिन कारने, परीछा सबकी होए।
करे कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए।। ४ ।।

मैंने वह फर्ज निभाया है, कुर्बानी करके दिखाई है। अब सबकी परीक्षा होनी है। अब सच्ची आत्माएं और झूठे जीव अलग-अलग तरीके से कुर्बानी देंगे। जिससे पहचान हो जाएगी कि कौन ब्रह्मसृष्टि है और कौन जीवसृष्टि है।

कस न पाइए कसौटी बिना, रंग देखावे कसौटी।
कच्ची पक्की सब पाइए, मत छोटी या मोटी।। ५ ।।

कसौटी पर कसने से ही सोने की परख होती है। उसी तरह से कुर्बानी से कच्चे ईमान वाले जीवों की और पक्के ईमान वाली ब्रह्मसृष्टि की पहचान होती है।

कसौटी कस देखावहीं, कसनी के बखत।
अबहीं प्रगट होएसी, जुदे झूठ से निकस के सत।। ६ ।।

अब कसनी का समय है। कुर्बानी से ही सबकी परीक्षा होगी। झूठे जीव माया को छोड़ नहीं सकेंगे तथा सच्ची ब्रह्मसृष्टि माया को तुरन्त छोड़ देगी। इससे जीव और ब्रह्मसृष्टि की पहचान हो जाएगी।

Nijanand App

करत कुरबानी सकुचें, मोमिन करे न कोए।
तीन गिरो की परीछा, अब सो जाहेर होए।।७ ।।

कुर्बानी करने में मोमिन संकोच नहीं करेंगे। ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि की पहचान अब कुर्बानी से हो जाएगी।

कहा कहूं वतन सैयां, जो मगज लगे अर्थ।
कुरबानी समे देख्या चाहिए, सांचे सूर समर्थ।।८ ।।

अपने घर की ब्रह्मसृष्टियों को मैं क्या कहूं जो इस समय भी माया में लगी हैं। कुर्बानी के समय उन्हें अपने सच्चे साथियों को देखकर उनका साथ निभाना चाहिए।

कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग।
पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग।।९ ।।

कुर्बानी का नाम सुनते ही मोमिनों के अंग में उमंग की लहरें उठती हैं और जो मोमिन पीछे रह गए थे वह भी कुर्बानी देने के समय दौड़कर आ जाते हैं।

मोमिन एही परीछा, जोस न अंग समाए।
बाहेर सीतलता होए गई, मांहें मिलाप धनी को चाहे।। १० ।।

कुर्बानी के समय में मोमिनों के अंग में खुशी नहीं समाती। वह माया के झूठे सुखों से विमुख हो जाते हैं, क्योंकि उनके अन्दर धनी से मिलने की चाहना लगी है।

सुनत कुरबानी मोमिन, होए गए आगे से निरमल।
इत एक एक आगे दूसरा, जाने कब जासी हम चल।। ११ ।।

मोमिन कुर्बानी का नाम सुनते ही माया के विकार छोड़कर निर्मल हो जाते हैं और होड़ में एक दूसरे से आगे होकर कुर्बानी करने को तैयार रहते हैं (हम कब धाम चलेंगे की होड़ में)।

मोमिन बड़ा मरातबा, सो अब होसी जाहेर।
छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर।।१२।।

मोमिनों का बड़ा दर्जा है। वह अब जाहिर हो जाएंगे। अभी तक वह दुनियां में छिपे थे। अब उनकी कुर्बानी ने उनको जाहिर कर दिया।

सांचे छिपे ना रहें, अपने समें पर।
दोस्त कहे धनी के, सो छिपे रहें क्यों कर।। १३ ।।

सच्चे मोमिन कुर्बानी के समय पर छिपे नहीं रह सकते। कुरान में इनको खुदा (श्री राजजी) का दोस्त कहा है, इसलिए यह छिपे कैसे रह सकते हैं?

जो होए आतम धाम की, सो अपने समें पर।
अपना सांच देखावहीं, भूले नहीं अवसर।। १४ ।।

जो परमधाम की आत्मा होगी वह कुर्बानी के समय पर अपनी सच्चाई दिखाएगी और समय को हाथ से नहीं जाने देगी।

जो भूले अब को अवसर, सो फेर न आवे ठौर।
नेहेचे सांचे न भूलहीं, इत भूलेंगे कोई और।। १५ ।।

जो इस समय भूल गए तो दुबारा यह समय मिलने वाला नहीं, इसलिए यह निश्चित है कि मोमिन नहीं भूलेंगे, और कोई भले ही भूल जाए।

Nijanand App

आया दरवाजा धाम का, सांचों बाढया बल।
आए गए छाया मिने, धनी छाया निरमल।। १६ ।।

जिनको धाम की पहचान हो गई है उनका आत्मिक बल बढ़ गया है। वह झूठी दुनियां में आ जरूर गए थे पर धनी की कृपा ने उनको निर्मल कर दिया।

साफ सेहेजे हो गए, करने पड़या न जोर।
रात मिटी कुफर अंधेरी, भयो रोसन वतनी भोर।। १७ ।।

मोमिन बिना ताकत लगाए तारतम वाणी से सरलता से ही निर्मल हो गए। उनके अज्ञान का अन्धकार मिट गया और घर के ज्ञान का सवेरा हो गया (घर की पहचान हो गई)।

कुरबानी सुन सखियां, उलसत सारे अंग।
सुरत पोहोंची जाए धाम में, मिलाप धनी के संग।। १८ ।।

घर चलने की खबर सुनकर मोमिन बड़े खुश होते हैं। उनकी सुरता परमधाम में धनी के मिलाप में लग जाती है।

मोमिन बल धनीय का, दुनी तरफ से नाहें।
तो कहे धनी बराबर, जो मूल सरूप धाम माहें।। १९ ।।

मोमिन का बल धनी का प्रेम है। वह दुनियांवी अहंकार से हट गए हैं। उनको धनी के बराबर कहा गया है, क्योंकि उनकी परआतम परमधाम में है।

लड़कपने सुध न हुती, तो भी मोमिन मूल अंकूर।
कोई कोई बात की रोसनी, लिए खड़े थे जहूर।। २० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अनजाने में भले ही मैंने सतगुरु श्री देवचन्द्रजी के अन्दर विराजमान धनी को नहीं पहचाना पर परमधाम का मूल अंकूर होने से धनी के ज्ञान की रोशनी हृदय में आती थी।

अब तो किए धनिऐं जाग्रत, दई भांत भांत पेहेचान।
तोड़ दई आसा छल की, क्यों सकुचे करत कुरबान।। २१ ।।

धनी ने जागृत वाणी देकर तरह-तरह से पहचान करा दी है और माया से छुड़ा दिया है, तो अब कुर्बानी करने में क्यों संकोच करें।

अब तो धनी बल जाहेर, आयो अलेखे अंग।
ए जिन दिया सो जानहीं, या जिन लिया रस रंग।। २२ ।।

अब तो धनी की बेशुमार शक्ति मेरे अन्दर आ गई है। इसे जिसने दिया है वह धनी जानते हैं या मैं, जिसने उसका आनन्द लिया है।

ए दुनी न जाने सुपन की, न जाने मलकूती फरिस्तन।
ए अछर को भी सुध नहीं, जाने स्याम स्यामा मोमिन।। २३ ।।

इस आनन्द को सपने के ब्रह्माण्ड की जीवसृष्टि तथा बैकुण्ठ के फरिश्ते कैसे जान सकते हैं? अक्षर को भी इस आनन्द की खबर नहीं है। इसको श्री राजजी, श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि ही जानती हैं।

मैं मेरे धनीय की, चरन की रेनु पर।
कोट बेर वारों अपना, टूक टूक जुदा कर।। २४ ।।

मैं अपने धनी की चरण-रज पर अपने तन के करोड़ों बार टुकड़े-टुकड़े करके कुर्बान कर दूं (ऐसा मन में आता है)।

Nijanand App

अंग अंग सब उलसत, कुरबानी कारन।
जरे जरे पर वार हूं, ए जो बीच जरे राह इन॥२५॥

कुर्बानी के वास्ते मेरे सारे अंगों में उमंग भरी है और इस रास्ते के एक-एक कण पर मैं अपने आपको कुर्बान करती हूं।

जिन दिस मेरा पिउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान।
रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव सों प्रान॥ २६ ॥

जिस दिशा में मेरे धनी बसते हैं उस रास्ते पर मैं अपने रोम-रोम, नख से शिख तक जीव को प्राण सहित कुर्बान कर दूं।

सूरातन सखियन का, मुख थें कह्यो न जाए।
महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए॥ २७ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब कुर्बानी का समय निकट आ गया है। मोमिन बहादुरी की वह कुर्बानी करेंगे जिसका वर्णन इस मुख से नहीं होता।

॥ प्रकरण ॥ ९० ॥ चौपाई ॥ १२८५ ॥

राग श्री

आगूं आसिक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन।
कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन॥ १ ॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! इस माया में पहले भी आशिक हुए हैं, जिन्होंने अपने माशूक पर करोड़ों बार अपने तन को कुर्बान कर दिया है।

जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखे दृष्ट।
ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट॥ २ ॥

ऐसे आशिकों को बहुतों ने देखा है। यदि माया के जीव ऐसा कर सकते हैं तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं। कुर्बानी से क्यों पीछे हटें?

धिक धिक पड़ो तिन समझ को, जो पीछे देवें पाए।
कुरबानी को नाम सुन, क्यों न उड़े अरवाहें॥ ३ ॥

ऐसे सुन्दरसाथ जो कुर्बानी से पीछे हटते हैं, उनकी समझ पर धिक्कार है। कुर्बानी का नाम सुनते ही उन्हें अपनी अरवाहें छोड़ देनी चाहिएं।

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल।
तो पीछे पांउ हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल॥ ४ ॥

हमारी नकल फरिश्ते और फरिश्तों की नकल जीवसृष्टि है। वह यदि इतनी कुर्बानी कर सकते हैं तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं। हमारे धनी श्री राजजी महाराज हैं तो कुर्बानी से हम क्यों पीछे हटें?

जो आसिक असल अर्स की, सो क्यों सकुचे देते जिउ।
करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पिउ॥ ५ ॥

जो धाम धनी के असल आशिक हैं वह अपने जीव तक की कुर्बानी देने में संकोच नहीं करेंगे। वह अपने प्राण श्री राजजी महाराज पर कुर्बान होने के लिए करोड़ों बार तैयार रहेंगे।

Nijanand App

अंग अंग सब उलसत, कुरबानी कारन।
जरे जरे पर वार हूं, ए जो बीच जरे राह इन।।२५।।

कुर्बानी के वास्ते मेरे सारे अंगों में उमंग भरी है और इस रास्ते के एक-एक कण पर मैं अपने आपको कुर्बान करती हूं।

जिन दिस मेरा पिउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान।
रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव सों प्रान।।२६।।

जिस दिशा में मेरे धनी बसते हैं उस रास्ते पर मैं अपने रोम-रोम, नख से शिख तक जीव को प्राण सहित कुर्बान कर दूं।

सूरातन सखियन का, मुख थें कह्यो न जाए।
महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए।।२७।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब कुर्बानी का समय निकट आ गया है। मोमिन बहादुरी की वह कुर्बानी करेंगे जिसका वर्णन इस मुख से नहीं होता।

।। प्रकरण ।। ९० ।। चौपाई ।। १२८५ ।।

राग श्री

आगूं आसिक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन।
कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन।।१।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! इस माया में पहले भी आशिक हुए हैं, जिन्होंने अपने माशूक पर करोड़ों बार अपने तन को कुर्बान कर दिया है।

जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखे दृष्ट।
ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट।।२।।

ऐसे आशिकों को बहुतों ने देखा है। यदि माया के जीव ऐसा कर सकते हैं तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं। कुर्बानी से क्यों पीछे हटें?

धिक धिक पड़ो तिन समझ को, जो पीछे देवें पाए।
कुरबानी को नाम सुन, क्यों न उड़े अरवाहें।।३।।

ऐसे सुन्दरसाथ जो कुर्बानी से पीछे हटते हैं, उनकी समझ पर धिक्कार है। कुर्बानी का नाम सुनते ही उन्हें अपनी अरवाहें छोड़ देनी चाहिएं।

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल।
तो पीछे पांउं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल।।४।।

हमारी नकल फरिश्ते और फरिश्तों की नकल जीवसृष्टि है। वह यदि इतनी कुर्बानी कर सकते हैं तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं। हमारे धनी श्री राजजी महाराज हैं तो कुर्बानी से हम क्यों पीछे हटें?

जो आसिक असल अर्स की, सो क्यों सकुचे देते जिउ।
करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पिउ।।५।।

जो धाम धनी के असल आशिक हैं वह अपने जीव तक की कुर्बानी देने में संकोच नहीं करेंगे। वह अपने प्राण श्री राजजी महाराज पर कुर्बान होने के लिए करोड़ों बार तैयार रहेंगे।

Nijanand App

सो भी पिउ अछरातीत, इत कायर न होवे कोए।
सुनत कुरबानी के आगे हीं, तन रोम रोम जुदे होए।। ६ ।।

वह भी श्री राजजी महाराज अक्षरातीत धाम के हैं, इसलिए कोई कायरता नहीं दिखाएंगे। कुर्बानी का नाम सुनते ही उनके रोम-रोम पहले से ही कुर्बान हो जाएंगे।

इन खसम के नाम पर, कई कोट बेर वारों तन।
टूक टूक कर डार हूं, कर मन वाचा करमन।। ७ ।।

ऐसे धनी के नाम पर अपने तन को करोड़ो बार कुर्बान कर दूं। मन, वचन और कर्म से इस तन के टुकड़े-टुकड़े कर डालूं।

जो आसिक अर्स अजीम के, तिन सिर नूरजमाल।
परीछा तिनकी जाहेर, सब्द लगें ज्यों भाल।। ८ ।।

जो मोमिन अर्श अजीम (परमधाम) के हैं उनके धनी नूरजमाल श्री राजजी महाराज हैं। ऐसे मोमिनों की परीक्षा यह है कि उनको यह वाणी भाले के समान हृदय में घाव कर देती है।

जो सोहागिन वतनी, ताकी प्रगट पेहेचान।
रोम रोम सब अंगों, जुदी जुदी दे कुरबान।। ९ ।।

जो परमधाम की सुहागिनी अंगना हैं उनकी यही जाहिरी पहचान है कि वह अपने सब अंगों के रोम-रोम के टुकड़े कर कुर्बान कर देंगी।

कुरबानी को सब अंग, हंस हंस दिल हरखत।
पिउ पर फना होवने, सब अंगों नाचत।।१० ।।

धनी पर कुर्बान होने के लिए उनके सब अंग हंसते हुए तैयार रहते हैं और धनी पर फना होने के लिए खुशी से नाचते हैं।

आसिक कबूं ना अटके, करत अंग कुरबान।
ना जीव अंग आसिक के, जीव पिउ अंग में जान।। ११ ।।

अपने अंग को कुर्बान करने में आशिक कभी पीछे नहीं हटते। आशिक का जीव उसके अंग में नहीं होता। उसका जीव प्यारे माशूक में होता है।

अंग आसिक आगूं हीं फना, जीवत मासूक के माहें।
डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए।। १२ ।।

आशिक के अंग जीते जी ही माशूक पर फना होते हैं। उसका जीवन माशूक ही होता है। उसका जीवन उसके माशूक के हाथ होता है। वह उसे जिन्दा रखे या मार डाले।

तो अंग आधा अरधांग, मासूक का आसिक।
तो दोऊ तन एक भए, जो इस्क लाग्या हक।। १३ ।।

इसलिए आशिक माशूक की अंगना (अर्धांग) कहलाती है। जब पारब्रह्म से इश्क हो जाता है तो दोनों तन एक हो जाते हैं।

सोई कहावत आसिक, जिन अंग जोस फुरत।
अहनिस पिउ के अंग में, रेहेत आसिक की सुरत।। १४ ।।

आशिक उसी को कहते हैं जिसके अंग में धनी से मिलने के लिए जोश की तंरगें उठती हैं और रात-दिन धनी के अंग में जिसका ध्यान रहता है।

Nijanand App

मासूक की नजर तले, आठों जाम आसिक।
पिए अमीरस सनकूल, हुकम तले बेसक।। १५ ।।

आशिक आठों पहर (रात-दिन) माशूक की नजर में बसा रहता है और निडर होकर माशूक की नजरे करम का रसपान करता है।

न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद।
आसिक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद।। १६ ।।

आशिक को कभी भी अपने माशूक को याद नहीं करना पड़ता क्योंकि वह एक क्षण भी जुदा नहीं होता है। आशिक को माशूक की मस्ती का ऐसा नशा चढ़ा रहता है जो कभी नहीं उतरता है।

रोम रोम बीच रमि रह्या, पिउ आसिक के अंग।
इस्कें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग।। १७ ।।

आशिक के अंग के रोम-रोम में उसका माशूक समाया रहता है और इश्क में दोनों एक ही मस्ती में होते हैं।

इन जुबां इन आसिक का, क्यों कर कहूं सो बल।
धाम धनी आसिक सों, जुदा होए न सकें एक पल।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस जबान से आशिक की शक्ति का वर्णन कैसे करूं? धाम-धनी अपने आशिक (ब्रह्मसृष्टि) से एक क्षण के लिए भी जुदा नहीं होते।

महामत कहें मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए।
इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए।। १९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे लाडले श्री राजजी महाराज के इश्क के घाव मेरे रोम-रोम में लगे हैं। फिर भी हैरानी की बात है कि यह तन खड़ा कैसे है?

|| प्रकरण || ९१ || चौपाई || १३०४ ||

राग श्री

अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार।
एक खिन की बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथजी को कहते हैं कि अब हम सब तरफ से चित्त हटाकर परमधाम में चित्त लगाते हैं और तुम सभी सावचेत हो जाना। यदि तुम भी वह सुख चाहते हो तो तुम एक पल की देरी न करो और अपने अखण्ड घर परमधाम में सुरता लगाकर मगन हो जाओ।

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान।
आए पोहोंचे बृज में, याद करो निसान।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर मौका हाथ आया है। अपनी आत्मा की पहचान कर लो। पहले धाम से बृज में आए थे। उसी लीला को याद करो।

धनिएं देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए।
अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदे चढ़ आए।। ३ ।।

धनी ने सुरता घुमाकर बृज का खेल दिखाया। उसके बाद हम रास में गए और धनी के साथ मस्ती में खेले।

Nijanand App

मासूक की नजर तले, आठों जाम आसिक।
पिए अमीरस सनकूल, हुकम तले बेसक।। १५ ।।

आशिक आठों पहर (रात-दिन) माशूक की नजर में बसा रहता है और निडर होकर माशूक की नजरे करम का रसपान करता है।

न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद।
आसिक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद।। १६ ।।

आशिक को कभी भी अपने माशूक को याद नहीं करना पड़ता क्योंकि वह एक क्षण भी जुदा नहीं होता है। आशिक को माशूक की मस्ती का ऐसा नशा चढ़ा रहता है जो कभी नहीं उतरता है।

रोम रोम बीच रमि रह्या, पिउ आसिक के अंग।
इस्कें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग।। १७ ।।

आशिक के अंग के रोम-रोम में उसका माशूक समाया रहता है और इश्क में दोनों एक ही मस्ती में होते हैं।

इन जुबां इन आसिक का, क्यों कर कहूं सो बल।
धाम धनी आसिक सों, जुदा होए न सकें एक पल।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस जबान से आशिक की शक्ति का वर्णन कैसे करूं? धाम-धनी अपने आशिक (ब्रह्मसृष्टि) से एक क्षण के लिए भी जुदा नहीं होते।

महामत कहें मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए।
इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए।। १९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे लाडले श्री राजजी महाराज के इश्क के घाव मेरे रोम-रोम में लगे हैं। फिर भी हैरानी की बात है कि यह तन खड़ा कैसे है?

|| प्रकरण || ९१ || चौपाई || १३०४ ||

राग श्री

अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार।
एक खिन की बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथजी को कहते हैं कि अब हम सब तरफ से चित्त हटाकर परमधाम में चित्त लगाते हैं और तुम सभी सावचेत हो जाना। यदि तुम भी वह सुख चाहते हो तो तुम एक पल की देरी न करो और अपने अखण्ड घर परमधाम में सुरता लगाकर मगन हो जाओ।

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान।
आए पोहोंचे बृज में, याद करो निसान।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर मौका हाथ आया है। अपनी आत्मा की पहचान कर लो। पहले धाम से बृज में आए थे। उसी लीला को याद करो।

धनिएं देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए।
अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदे चढ़ आए।। ३ ।।

धनी ने सुरता घुमाकर बृज का खेल दिखाया। उसके बाद हम रास में गए और धनी के साथ मस्ती में खेले।

Nijanand App

जाग्रत बुध हिरदे आई, अब रहे ना सकें एक खिन।
सुरत टूटी नासूत से, पोहोंची सुरत वतन।। ४ ।।

अब जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि के हृदय में आने से पहचान हो जाने पर एक क्षण भी यहां नहीं रहा जाता। अब इस माया के ब्रह्माण्ड से सुरता हटकर परमधाम के चितवन में लग गई है।

चिन्हार भई सब साथ में, आई धाम की खुसबोए।
प्रेम उपज्या मूल का, सुपन रेहेना क्यों होए।। ५ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सुन्दरसाथ को परमधाम की पहचान हुई और अब मूल परमधाम का प्रेम आ गया है, इसलिए अब सपने के ब्रह्माण्ड में नहीं रहा जाता।

अब नींद हमारी क्यों रहे, इन बखत दिए जगाए।
जागे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रह्यो जाए।। ६ ।।

जागृत बुद्धि के आने से नींद कैसे रह सकती है? इस समय जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि ने जगा दिया है। अब जागने के बाद झूठे ब्रह्माण्ड में कैसे रहा जाए?

देख तैयारी साथ की, ओ समया रह्या न हाथ।
अवसर नया उदे हुआ, उमंगियो सब साथ।। ७ ।।

लालदास और गोवर्धनदास के झगड़े से सुन्दरसाथ में आई कायरता से जागनी का कार्य रुक गया। अब सब सुन्दरसाथ जागृत बुद्धि से जागकर उमंग के साथ कुर्बान होने की तैयारी में हैं। ऐसी नई भावना सभी में आ गई है।

क्यों रहे सुरतें पकड़ी, एक दूजे के आगे होए।
दौड़ा दौड़ ऐसी हुई, पीछे रहे न कोए।। ८ ।।

मोमिन कुर्बानी के जोश में एक-दूसरे के आगे आ रहे हैं और ऐसी होड़ लगी है कि कोई कुर्बानी करने में पीछे नहीं रहेगा।

कई हुती देस परदेस में, ए बातें सुनियां तिन।
तिनकी सुरतें इत बांधियां, तित रहे न सकें एक खिन।। ९ ।।

सुन्दरसाथ की कुर्बानी की हकीकत सुनकर जो सुन्दरसाथ देश और परदेश में घरों में रह गए थे। उनका ध्यान भी यहीं श्री पन्नाजी में लगा था। वह अपने घरों में एक क्षण के लिए भी चैन नहीं ले सके।

परदेसें साथ पसरयो हुतो, तित सबे पड़यो सोर।
यों ठौर ठौर रंग फैलिया, हुआ महंमदी दौर।। १० ।।

मोमिनों की कुर्बानी का समाचार जब परदेस (विदेश) के सुन्दरसाथ को मिला तो उनमें भी खलबली मच गई। वह भी कुर्बानी के लिए (वह भी मेरी राह पर चलने को) तैयार हो गए।

पीछला साथ आए मिलसी, पर अगले करें उतावल।
केताक साथ विचार नीका, सो जानें चलें सब मिल।। ११ ।।

पीछे जो सुन्दरसाथ देश-विदेश में माया में रह गए हैं, वह तो बाद में आकर मिलेंगे ही, परन्तु जो साथ में हैं उनको कुर्बानी करने की उतावली लगी है। कुछ सुन्दरसाथ ऐसे विचारों वाले थे जो सोचते थे कि सबको आ जाने दो फिर चलेंगे।

Nijanand App

इन बिध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पुकार।
एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार।। १२ ।।

इस तरह से सुन्दरसाथ में कुर्बानी की लहर दौड़ गई। कोई चरणों में आ गए, कोई आ रहे हैं और कोई आने की तैयारी में हैं।

ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल।
कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल।। १३ ।।

उस समय सुन्दरसाथ के अन्दर ऐसा हो गया कि जैसे हम अपनी मंजिल तक पहुंच गए हैं। उनमें से जो जागकर (धनी की पहचान कर) चले, उन्होंने कुर्बानी का लाभ लिया।

सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन।
कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन।। १४ ।।

सब सुन्दरसाथ के बीच में जागृति आई। माया से मन हटाकर कोई आगे, कोई पीछे आए। कोई शुरू में आए। इसी तरह सब सावचेत हो गए।

कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम मांहें।
ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नाहें।। १५ ।।

कोई-कोई सुन्दरसाथ माया में रह गया पर उनकी सुरता तो सदा हमारे साथ रही। उनके तन सेवा का लाभ नहीं ले सके और उन्होंने सांसारिक कष्ट उठाए। वैसे ही जैसे स्वांतसी सखियों को देरी करने के कारण माया के कष्ट सहने पड़े।

कहे महामत परीछा तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल।
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इस्क अव्वल।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्होंने जागृत बुद्धि की वाणी से अपने विकार निकालकर अपने को निर्मल कर लिया और सबसे पहले धनी का इश्क लेकर चरणों में आए, यही मोमिनों की परीक्षा है।

|| प्रकरण || ९२ || चौपाई || १३२० ||

राग श्री

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले।
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में लिखे कौल के अनुसार (बारहवीं सदी में फजर का) समय आ गया है। अब हम सुन्दरसाथ को लेकर धाम के चितवन में मग्न हो रहे हैं।

सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार।
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार।। २ ।।

हे सखी! हम तो अपने घर परमधाम में मग्न हो रहे हैं। तुम सावचेत हो जाना। हमने संसार को पीठ करके अपनी सुरता को परमधाम में लगा लिया है।

हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो।
गुन अवगुन सबके माफ किए, जिन जो भावे सो कहो।। ३ ।।

अब हमारे सुन्दरसाथ में कोई पीछे नहीं रहना चाहिए। कोई रहे तो रहे। हमने तो सबके गुण और अवगुण को भुला दिया है। अब जिन्हें जैसा कहना है, कहते रहो।

Nijanand App

इन बिध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पुकार।
एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार।। १२ ।।

इस तरह से सुन्दरसाथ में कुर्बानी की लहर दौड़ गई। कोई चरणों में आ गए, कोई आ रहे हैं और कोई आने की तैयारी में हैं।

ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल।
कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल।। १३ ।।

उस समय सुन्दरसाथ के अन्दर ऐसा हो गया कि जैसे हम अपनी मंजिल तक पहुंच गए हैं। उनमें से जो जागकर (धनी की पहचान कर) चले, उन्होंने कुर्बानी का लाभ लिया।

सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन।
कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन।। १४ ।।

सब सुन्दरसाथ के बीच में जागृति आई। माया से मन हटाकर कोई आगे, कोई पीछे आए। कोई शुरू में आए। इसी तरह सब सावचेत हो गए।

कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम मांहें।
ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नाहें।। १५ ।।

कोई-कोई सुन्दरसाथ माया में रह गया पर उनकी सुरता तो सदा हमारे साथ रही। उनके तन सेवा का लाभ नहीं ले सके और उन्होंने सांसारिक कष्ट उठाए। वैसे ही जैसे स्वांतसी सखियों को देरी करने के कारण माया के कष्ट सहने पड़े।

कहे महामत परीछा तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल।
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इस्क अव्वल।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्होंने जागृत बुद्धि की वाणी से अपने विकार निकालकर अपने को निर्मल कर लिया और सबसे पहले धनी का इश्क लेकर चरणों में आए, यही मोमिनों की परीक्षा है।

॥ प्रकरण ॥ ९२ ॥ चौपाई ॥ १३२० ॥

राग श्री

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले।
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में लिखे कौल के अनुसार (बारहवीं सदी में फजर का) समय आ गया है। अब हम सुन्दरसाथ को लेकर धाम के चितवन में मग्न हो रहे हैं।

सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार।
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार।। २ ।।

हे सखी! हम तो अपने घर परमधाम में मग्न हो रहे हैं। तुम सावचेत हो जाना। हमने संसार को पीठ करके अपनी सुरता को परमधाम में लगा लिया है।

हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो।
गुन अवगुन सबके माफ किए, जिन जो भावे सो कहो।। ३ ।।

अब हमारे सुन्दरसाथ में कोई पीछे नहीं रहना चाहिए। कोई रहे तो रहे। हमने तो सबके गुण और अवगुण को भुला दिया है। अब जिन्हें जैसा कहना है, कहते रहो।

Nijanand App

अब हम रह्यो न जावहीं, मूल मिलावे बिन।
हिरदे चढ़ चढ़ आवहीं, संसार लगत अगिन।।४ ।।

अब हमसे मूल-मिलावे के बिना नहीं रहा जाता। मूल-मिलावे का ध्यान आता है तो संसार आग के समान लगता है।

सोई बस्तर सोई भूखन, सोई सेज्या सिनगार।
सोई मेवा मिठाइयां, अलेखें अपार।।५ ।।

अब ऐसा लगता है कि हम परमधाम के वस्त्र, आभूषण, सेज्या, सिनगार, मेवा, मिठाइयों आदि के बेशुमार अखण्ड सुखों को ले रहे हैं।

सोई धनी सोई वतन, सोई मेरो सुंदरसाथ।
सोई विलास अब देखिए, दोरी खैंची उनके हाथ।।६ ।।

अपने धनी, वतन तथा सुन्दरसाथ के आनन्द दिखाई दे रहे हैं। मेरी आत्मा श्री राजजी के चरणों में है। वह मेरी सुरता को खींचकर धाम में ले जा रहे हैं।

सोई चौक गलियां मंदिर, सोई थंभ दिवालें द्वार।
सोई कमाड़ सोई सीढ़ियां, झलकारों झलकार।।७ ।।

परमधाम के चौक, गलियां, मन्दिर, थंभ, दीवारें, दरवाजे, किवाड़ और सीढ़ियां सब झलकती हुई दिखाई दे रही हैं।

सोई मोहोल सोई मालिए, सोई छज्जे रोसन।
सोई मिलावे साथ के, सोई बोलें मीठे वचन।।८ ।।

रंग महल की मंजिलें, नवीं भौम के छज्जे व सुन्दरसाथ के मिल बैठकर मीठे वचन बोलने के आनन्द मिलने लगे हैं।

सोई झरोखे धाम के, जित झांकत हम तुम।
सो क्यों ना देखो नजरों, बुलाइयां खसम।।९ ।।

परमधाम के मन्दिरों के यह वही झरोखे हैं जहां से हम सुन्दरसाथ झांककर वनों की शोभा देखते थे। हे सुन्दरसाथजी! धनी बुला रहे हैं। तुम आंखें खोलकर क्यों नहीं देखते?

सोई खेलना सोई हंसना, सोई रस रंग के मिलाप।
जो होवे इन साथ का, सो याद करो अपना आप।।१० ।।

परमधाम का खेलना, हंसना व आनन्द से मिलना, जो सुन्दरसाथ परमधाम के हैं वह याद करके अपने चितवन से देखो।

सोई चाल गत अपनी, जो करते माहें धाम।
हंसना खेलना बोलना, संग स्यामाजी स्याम।।११ ।।

परमधाम में अपनी चाल, गति, हंसने, बोलने, खेलने की जो लीला श्री राजजी श्री श्यामाजी के साथ करते थे, उसे चितवन कर याद करो।

सोई बातें प्रेम की, सोई सुख सनेह।
सुख अखंड को भूल के, क्यों रहे झूठी देह।।१२ ।।

परमधाम की प्रेम की बातें तथा अखण्ड सुख और स्नेह को भूलकर झूठे तन की माया में क्यों लगे हो?

Nijanand App

सोई सेज्या सोई मन्दिर, सोई पिउ जी को विलास।
सोई मुख के मरकलड़े, छूटी अंग की आस।। १३ ।।

परमधाम की सेज्या, मन्दिर, धनी का विलास और मुख की मुस्कान देखकर इस झूठे तन की चाहना मिट गई।

सोई रसीले रंग भरे, निरखें नेत्र चढ़ाए।
सुन्दर मुख सनकूल की, भर भर अमृत पिलाए।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क के भरे नेत्र, जिनसे वह बांकी चितवन से देखते थे और उनका सुन्दर मुखारबिन्द जिससे वह अमृत भर-भर पिलाते थे।

सोई कटाछे स्याम की, सींचत सुरत चलाए।
बंके नैन मरोर के, दृष्टें दृष्ट मिलाए।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज तिरछी निगाहों से इश्क पिलाकर हमारी सुरता को प्रेम से सींचते हैं और बांके नैनों की नजर से हमारी नजर मिलाते हैं।

कहा कहूं सुख साथ को, देखें भृकुटी भौंह चढ़ाए।
सुखकारी सीतल सदा, सुख कहा केहेसी जुबांए।। १६ ।।

जब श्री राजजी महाराज अपनी भौहें चढ़ाकर देखते हैं तब सुन्दरसाथ को जो शीतल सुख होता है उसका वर्णन इस जबान से नहीं हो सकता।

सुच्छम सरूप ने सुंदरता, उनमद सारे अंग।
बराबर एकै भांत के, और कई विध के रस रंग।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप सुन्दर और सूक्ष्म है तथा सारे अंग मस्ती से भरे हैं। विविध प्रकार के आनन्द रस-रंग से भरपूर हैं।

एक दूजे के चित्त पर, चाल चले माहोंमाहें।
पात्र प्रेम प्रीत के, हांस विनोद बिना कछू नाहें।। १८ ।।

परमधाम की सखियां परस्पर एक-दूसरे की चित्त की चाहना के अनुसार चाल चलती हैं। इनके तन प्रेम के स्वरूप हैं जिनमें हंसी और विनोद के बिना कुछ नहीं है।

बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे।
सो तबहीं ततखिन में, पिउ जी पे पोहोंचाए।। १९ ।।

ऐसे परमधाम की जरा सी भी सुगंधि मिल जाए तो इस संसार का तन एक ही आह में छूट जाए और सुरता तुरन्त ही धनी के चरणों में पहुंच जाए।

याद करो जो मांगिया, धनिएं खेल देखाया कर हेत।
महामत कहें मेहेबूब के, सुख में हो सावचेत।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि उस खेल को याद करो जो तुमने मांगा था और जिसे धनी ने प्यार करके दिखलाया है। अब खेल देखकर धनी के अखण्ड सुख में सावचेत होकर सुख लो।

।। प्रकरण ।। ९३ ।। चौपाई ।। १३४० ।।

Nijanand App

राग श्री गौड़ी

सुनों साथ जी सिरदारो, ए कीजो वचन विचार।
देखो बाहेर माहें अन्तर, लीजो सार को सार जों सार।।।१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! सुनो और इन वचनों को अपनी आत्मिक दृष्टि से विचार करके देखो, तो पाओगे कि तारतम का सार वाणी और वाणी का सार पांचों शक्तियों का इन्द्रावती के तन पर इकट्ठा बैठना है।

सुन्दरबाई कहे धाम से, मैं साथ बुलावन आई।
धाम से ल्याई तारतम, करी ब्रह्मांड में रोसनाई।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) ने कहा कि मैं परमधाम से सुन्दरसाथ को बुलाने आई हूं। परमधाम से तारतम लाकर संसार में अखण्ड घर की जानकारी दी है।

सो सुन्दरबाई धाम चलते, जाहेर कहे वचन।
आडी खड़ी इंद्रावती, कहे मैं रेहे ना सकों तुम बिन।। ३ ।।

श्यामाजी ने (सुन्दरबाई श्री देवचन्द्रजी) भौतिक तन छोड़ते समय स्पष्ट कहा था कि धाम के दरवाजे में इन्द्रावती खड़ी है और कहती है कि मैं तुम्हारे बिना संसार में नहीं रह सकती।

दई दिलासा बुलाए के, मैं लई सिखापन।
रूहअल्ला के फुरमान में, लिखे जामें दोए तन।। ४ ।।

इन्होंने इन्द्रावती को (धरौल से) बुलाकर समझाया और बताया कि कुरान में लिखा है कि रूह अल्लाह (श्यामाजी) दो तनों में बैठकर लीला करेंगे।

मूल सरूप बीच धाम के, खेल में जामें दोए।
हरा हुल्ला सुपेत गुदरी, कहे रूह अल्ला के सोए।। ५ ।।

श्यामाजी का परमधाम में मूल तन एक है और खेल में उन्होंने लीला दो तनों से करनी है। पहले तन हरा हुल्ला (देवचन्द्रजी) से ज्ञान की लीला करना और दूसरे तन सफेद गुदड़ी (मेहराज ठाकुर के तन) से बेशक इलम की लीला करना कुरान में लिखा है।

हदीसों भी यों कह्या, आखिर ईसा बुजरक।
इमाम ज्यादा तिनसें, जिन सबों पोहोंचाए हक।। ६ ।।

हदीस में भी कहा है कि आखिर में ईसा रूह अल्लाह बुजरक होंगे और उनसे भी ज्यादा इमाम मेंहदी का ज्ञान होगा। यह सभी को धनी के पास पहुंचाएंगे।

खासी गिरो के बीच में, आखिर इमाम खावंद होए।
ए जो लिख्या फुरमान में, रूहअल्ला के जामें दोए।। ७ ।।

मोमिनों की जमात के बीच में इमाम मेंहदी खाविंद होंगे। यही रूह अल्लाह का दूसरा तन है जो कुरान में लिखा है।

भी कह्या बानीय में, पांच सरूप एक ठौर।
फुरमान में भी यों कह्या, कोई नाहीं या बिन और।। ८ ।।

वाणी में भी यह कहा है कि श्री राजजी महाराज के पांच स्वरूप हैं : ब्रज, रास के श्री कृष्ण, मुहम्मद साहब, श्री देवचन्द्रजी और श्री प्राणनाथजी। कुरान में भी इन पांचों स्वरूपों का वर्णन (सूरे-नास) में लिखा है। इनके बिना और कोई दूसरा नहीं है।

Nijanand App

कहे सुन्दरबाई अछरातीत से, खेल में आया साथ।
दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राणनाथ।। ९ ।।

सुन्दरबाई श्यामाजी कहते हैं कि अक्षरातीत धाम से सुन्दरसाथ खेल में आया है जिन्हें माया में दो बार बृज और रास का सपने का खेल और यह जागनी का तीसरा खेल श्री राजजी महाराज दिखा रहे हैं।

कहे फुरमान नूर बिलंद से, खेल में उतरे मोमिन।
खेल तीन देखे तीन रात में, चले फजर इनका इजन।। १० ।।

कुरान में भी लिखा है कि नूर बिलंद (परमधाम) से मोमिन खेल में आए हैं और तीन खेल रात्रि के तीन हिस्सों में देखे। फजर के वक्त इनका ही हुकम चलेगा।

यों बिध बिध दृढ़ कर दिया, दे साख धनी फुरमान।
अपनी अकल माफक, केहे केहे मुख की बान।। ११ ।।

इस तरह से श्री देवचन्द्रजी ने कुरान की गवाही देकर इस बात को निश्चित कर दिया तथा अपने मुखारबिन्द से भी अपनी समझ अनुसार यही बात बताई।

धनी फुरमान साख लेय के, देखाए दई असल।
सो फुरमाया छोड़ के, करें चाह्या अपने दिल।।१२।।

श्री श्यामाजी और कुरान की गवाहियां देकर कि असल स्वरूप श्री इन्द्रावतीजी के तन में बैठे हैं, पहचान करवाई। ऐसा कुरान का और देवचन्द्रजी का बताया रास्ता छोड़कर कई अपने मन की करना चाहते हैं।

तोड़त सरूप सिंघासन, अपनी दौड़ाए अकल।
इन बातों मारे जात हैं, देखो उनकी असल।। १३ ।।

कई लोग अपनी अक्ल से इन्द्रावती के हृदय रूपी सिंहासन पर विराजमान धनी की पहचान (अर्श दिल मोमन) नहीं करते और उनको झूठा कहकर अपमान करते हैं। वह इन्हीं बातों से मारे जाते हैं और हकीकत उनकी समझ में नहीं आती। (बिहारीजी अपनी अक्ल से परेशान करते थे)

बिना दरद दौड़ावे दानाई, सो पड़े खाली मकान।
इस्क नाहीं सरूप बिना, तो ए क्यों कहिए ईमान।। १४ ।।

जिनके दिल में धनी की बैठक नहीं है वह सूने दिल में धनी के दर्द बिना अपनी चतुराई दिखाते हैं। पहचान के बिना इश्क और ईमान नहीं आता।

दरदी जाने दिल की, जाहेरी जाने भेख।
अंतर मुस्किल पोहोंचना, रंग लाग्या उपला देख।। १५ ।।

जिनके दिल में धनी का दर्द है वही धनी की पहचान कर सकते हैं (और वही परमधाम की ब्रह्मसृष्टि है)। और जाहिरी लोग (जीवसृष्टि) तो बाहरी बनाए हुए भेष पर ही यकीन रखते हैं। वह अन्दर बैठे श्री राजजी की पहचान नहीं करते। वह ऊपर के पहनावे को देखकर उनसे चिपटे हुए हैं।

इन बिध सेवें स्याम को, कहे जो मुनाफक।
कहावें बराबर बुजरक, पर गई न आखिर लों सक।। १६ ।।

इस तरह से बेईमान लोग उन्हीं को अपना खुदा समझकर पूजा करते हैं। गादीपति श्री प्राणनाथजी की साहेबी का दावा लिए बैठे हैं, पर मरते दम तक अपने संशय नहीं मिटाते।

Nijanand App

मूल न लेवें माएना, लेत उपली देखा देख।
असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख।। १७ ।।

असल वाणी की हकीकत को समझते नहीं हैं उपर की देखा देखी की बातों में उलझे रहते हैं। असल श्री राजजी महाराज जिनके तन में बैठे हैं उनसे दूर रहकर उनके बाहरी रूप (गद्दियों) की पूजा करते हैं।

इत बात बड़ी है समझ की, और ईमान का काम।
साथ जी समझ ऐसी चाहिए, जैसा कह्या अल्ला कलाम।। १८ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यहां बड़ी समझदारी और यकीन का काम है। जैसा कुरान में फरमाया है कि रूह अल्लाह का दूसरा तन ही खुदा का तन होगा।

जेती बातें कहूं साथ जी, तिनके देऊं निसान।
और मुख थें न बोलहूं, बिना धनी फुरमान।। १९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! जितनी बातें मैं कहूंगी उनके प्रमाण धनी की वाणी से या कुरान से कहूंगी। बिना प्रमाण कोई बात नहीं कहूंगी।

इन फुरमान में ऐसा लिख्या, करे पातसाही दीन।
बड़ी बड़ाई होएसी, पर उमराओं के आधीन।। २० ।।

कुरान में लिखा है ईसा रूह अल्लाह अपने दूसरे तन (इमाम मेंहदी) से दीन की बादशाही करेंगे। उनकी महिमा बहुत बढ़ेगी, परन्तु गादीपति को शासकीय अधिकारी के अधीन रहना होगा, अर्थात् गादी पति लोग जो धर्म की हकीकत को नहीं समझते, वह सच्चे धर्म का प्रसार नहीं होने देंगे।

कहे कुरान बंद करसी, इनके जो उमराह।
एक तो करसी बन्दगी, और जो कहे गुमराह।। २१ ।।

ऐसे गादीपति श्री प्राणनाथजी की वाणी को बन्द कर देंगे। प्रचार नहीं होने देंगे। बन्दगी करने वालों को भी यह गादीपति गुमराह कर देंगे।

मैं करूं खुसामद उनकी, मैं डरता हों उनसे।
जो कहावें मेरे उमराह, और मेरे हुकम में।। २२ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मैं ऐसे लोगों से डरता हूं। मैं इनकी खुशामद करता हूं कि जो मेरे साथ चलने वाले ईमान के पक्के सुन्दरसाथ हैं उनको गुमराह न करें।

ऐसा न कोई उमराह, जो भाने दिल का दुख।
जब करसी तब होएसी, दिया साहेब का सुख।। २३ ।।

मुझे कोई ऐसा हिम्मतवाला, ईमानवाला (मर्द) सुन्दरसाथ नहीं मिला जो मेरे दिल का दुःख मिटा सके। जब धनी ही किसी ऐसे सुन्दरसाथ को मिला देंगे तो ही साहेब का सुख मिलेगा।

एही बड़ा अचरज, कहावत हैं बंदे।
जानों पेहेचान कबूं ना हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे।। २४ ।।

मुझे बड़ी हैरानी होती है कि यह अपने आपको धनी के अंग कहलवाते हैं पर गादी पर बैठकर ऐसे दिल के अन्धे हो गए हैं कि मानो वह अनजाने लोग हों।

Nijanand App

मैं बुरा न चाहूं तिनका, पर वे समझत नाहीं सोए।
यार सजा दे सकत हैं, पर सो मुझसे न होए।। २५ ।।

मैं उनका कभी भी बुरा नहीं चाहती, परन्तु वह गादीपति समझते नहीं हैं। वह मुझे दुःखी कर सकते हैं पर मैं तो उनको दुःखी नहीं कर सकती।

मेरे दिल के दरद की, एक साहेब जाने बात।
ऐसा कोई ना मिल्या, जासों करों विख्यात।। २६ ।।

मेरे दिल के दर्द की बातों को साहेब (धनी) ही जानते हैं और कोई नहीं जानता है। मेरे दिल में सुन्दरसाथ के लिए क्या दर्द है? ऐसा मुझे कोई नहीं मिला जिससे दिल की बात कर सकूं।

जो कोई साथ में सिरदार, लई धाम धनी रोसन।
खैंच छोड़ सको सो छोड़ियो, ना तो आपे छूटे हुए दिन।। २७ ।।

धाम धनी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी को जिसने सुना है उनसे मेरा कहना है कि आपस की खींचातानी छोड़ सको तो छोड़ो, नहीं तो फजर के समय वाणी की पहचान होने से अपने आप छूट जाएगी।

मेरे तो गुजरान होएसी, जो पड़या हों बंध।
जो कदी न छूट्या रात में, तो फजर छूटसी फंद।। २८ ।।

मेरा तो किसी तरह से निर्वाह हो जाएगा। मैं इन शासकों के अधीन हूं। जब तक इनको अज्ञानता है और मुझे इनसे छुटकारा नहीं भी मिला, तो तारतम वाणी से सवेरा होने पर इनके बन्धन से सब सुन्दरसाथ छूट जाएगा।

धाम धनी दई रोसनी, जो बड़े जमात दार।
सोभा दई अति बड़ी, जिनके सिर मुद्दार।। २९ ।।

धाम धनी ने जाहिरी गद्दी की शोभा गादीपतियों को दी और उनसे बहुत बड़ी शोभा उन्हें दी जिनके सिर पर जागनी का भार है।

मैं इन सुख दुख थें ना डरूं, मेरे धनी चाहिए सनमुख।
मोहे एही कसाला होत है, जब कोई देत साथ को दुख।। ३० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मुझे शान और अपमान (सुख, दुःख) की चिन्ता नहीं है। मुझे मेरे धनी मिलने चाहिए। जब कोई मेरे सुन्दरसाथ को दुःखी करता है तो वह दुःख मुझसे सहन नहीं होता है।

मेरी एक दृष्ट धनीय में, दूजी साथ के माहें।
तो दुख आवे मोहे साथ को, ना तो दुख मोहे कहूं नाहें।। ३१ ।।

मेरी एक नजर धनी में है दूसरी साथ में, अर्थात् जितने मुझे धनी प्यारे हैं उतने ही सुन्दरसाथ प्यारे हैं, इसलिए यदि सुन्दरसाथ को दुःख होता है तो मुझे दुःख होता है। नहीं तो मुझे कोई दुःख नहीं है।

कोई कोई अपनी चातुरी, ले खैंच करें मूढ़ मत।
अकल ना दौड़ी अंतर लों, खैंचें ले डारे गफलत।। ३२ ।।

कोई-कोई मूर्ख बुद्धि वाले अपनी इलम की चतुराई से वाणी की खींचतान करते हैं। उनको वाणी की हकीकत का पता नहीं है, इसलिए वाणी की खींचतान कर सुन्दरसाथ को संशय में डाल देते हैं।

Nijanand App

ए तो गत संसार की, जो खैंचा खैंच करत।
आपन तो साथी धाम के, है हम में तो नूर मत।। ३३ ।।

यह खींचतान करने की आदत जीवसृष्टि की है। हम तो परमधाम के साथी हैं और हमारे पास तो जागृत बुद्धि है।

मोमिन बड़े आकल, कहे आखिर जमाने के।
इनकी समझ लेसी सबे, आसमान जिमी के जे।। ३४ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिर जमाने के मोमिन बुद्धिमान होंगे। जिनके ज्ञान को संसार के जीव तथा आसमान के देवी-देवता सब ग्रहण करेंगे।

जो कोई निज धाम की, सो निकसो रोग पेहेचान।
जो सुरत पीछी खैंचहीं, सो जानो दुस्मन छल सैतान।। ३५ ।।

अब जो कोई परमधाम के सुन्दरसाथ हों वह इस खींचतान के रोग से दूर रहना। जो तुम्हारे ईमान को धनी के चरणों से गिराए उसे ही अपना दुश्मन समझना।

अब बोहोत कहूं मैं केता, करी है इसारत।
दिल आवे तो लीजो सलूक, सुख पाए कहे महामत।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब इससे ज्यादा मैं क्या कहूं? इशारतों से सब बता दिया है। तुम्हारे दिल में बात अच्छी लगे तो मेरे कहने पर चलो। इससे मुझे भी सुख होगा।

।। प्रकरण ।। ९४ ।। चौपाई ।। १३७६ ।।

राग श्री

सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इत रोसन।
तौल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन।। १ ।।

वह ब्रह्मसृष्टि ही परमधाम में सोहागिनी कहलाएगी जो यहां दूसरे सुन्दरसाथ को श्री राजजी महाराज की वाणी का अपनी शक्ति के अनुसार जागनी कर सुख देगी।

साथ मांहें सैयां धाम की, ईमान वाली सिरदार।
सो धन धाम को तौलसी, करसी दृढ़ निरधार।। २ ।।

सुन्दरसाथ में ईमान वाले ही परमधाम की सिरदार (प्रमुख) ब्रह्मसृष्टियां हैं। वही परमधाम की न्यामत (तारतम ज्ञान) को संसार के ज्ञान से तोलेंगे और दृढ़ यकीन से ग्रहण करेंगे।

पेहेले तौलें बुध जागृत, पीछे तौलें धनी आवेस।
और तौलें इस्क तारतम, तब पलटे उपलो भेस।। ३ ।।

पहले जागृत बुद्धि को, फिर धनी के आवेश को, फिर इश्क और तारतम को जब ब्रह्मसृष्टियां यकीन से ग्रहण करती हैं तब उनकी जाहिरी रहनी बदल जाती है।

तब तौलासी वासना, और तौलासी हुकम।
सब बल तौलें बलवंतियां, और तौलें सरूप खसम।। ४ ।।

तब ब्रह्मसृष्टियों के महत्व को, हुकम के महत्व को और अपने धनी के महत्व को सब सुन्दरसाथ पहचानेगा।

Nijanand App

ए तो गत संसार की, जो खैंचा खैंच करत।
आपन तो साथी धाम के, है हम में तो नूर मत।। ३३ ।।

यह खींचतान करने की आदत जीवसृष्टि की है। हम तो परमधाम के साथी हैं और हमारे पास तो जागृत बुद्धि है।

मोमिन बड़े आकल, कहे आखिर जमाने के।
इनकी समझ लेसी सबे, आसमान जिमी के जे।। ३४ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिर जमाने के मोमिन बुद्धिमान होंगे। जिनके ज्ञान को संसार के जीव तथा आसमान के देवी-देवता सब ग्रहण करेंगे।

जो कोई निज धाम की, सो निकसो रोग पेहेचान।
जो सुरत पीछी खैंचहीं, सो जानो दुस्मन छल सैतान।। ३५ ।।

अब जो कोई परमधाम के सुन्दरसाथ हों वह इस खींचतान के रोग से दूर रहना। जो तुम्हारे ईमान को धनी के चरणों से गिराए उसे ही अपना दुश्मन समझना।

अब बोहोत कहूं मैं केता, करी है इसारत।
दिल आवे तो लीजो सलूक, सुख पाए कहे महामत।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब इससे ज्यादा मैं क्या कहूं? इशारतों से सब बता दिया है। तुम्हारे दिल में बात अच्छी लगे तो मेरे कहने पर चलो। इससे मुझे भी सुख होगा।

|| प्रकरण || ९४ || चौपाई || १३७६ ||

राग श्री

सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इत रोसन।
तौल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन।। १ ।।

वह ब्रह्मसृष्टि ही परमधाम में सोहागिनी कहलाएगी जो यहां दूसरे सुन्दरसाथ को श्री राजजी महाराज की वाणी का अपनी शक्ति के अनुसार जागनी कर सुख देगी।

साथ मांहें सैयां धाम की, ईमान वाली सिरदार।
सो धन धाम को तौलसी, करसी दृढ़ निरधार।। २ ।।

सुन्दरसाथ में ईमान वाले ही परमधाम की सिरदार (प्रमुख) ब्रह्मसृष्टियां हैं। वही परमधाम की न्यामत (तारतम ज्ञान) को संसार के ज्ञान से तोलेंगे और दृढ़ यकीन से ग्रहण करेंगे।

पेहेले तौलें बुध जागृत, पीछे तौलें धनी आवेस।
और तौलें इस्क तारतम, तब पलटे उपलो भेस।। ३ ।।

पहले जागृत बुद्धि को, फिर धनी के आवेश को, फिर इश्क और तारतम को जब ब्रह्मसृष्टियां यकीन से ग्रहण करती हैं तब उनकी जाहिरी रहनी बदल जाती है।

तब तौलासी वासना, और तौलासी हुकम।
सब बल तौलें बलवंतियां, और तौलें सरूप खसम।। ४ ।।

तब ब्रह्मसृष्टियों के महत्व को, हुकम के महत्व को और अपने धनी के महत्व को सब सुन्दरसाथ पहचानेगा।

Nijanand App

रोसन करसी आपे अपना, जो सैयां जमातदार।
ए कौल अव्वल जोस का, जो किया है करार।।५।।

जो जुत्यपलि ब्रह्मसृष्टियां होंगी वह अपनी रहनी से दुनियां में जाहिर हो जाएंगी। यही वायदे शुरू में हमने परमधाम में श्री राजजी के सामने (जागो और जगाओ के वायदे) किए थे।

जो सैयां हम धाम की, सो जानें सब को तौल।
स्याम स्यामा जी साथ को, सब सैयों पे मोल।।६।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां हैं वह श्री राजजी, श्यामाजी और सुन्दरसाथ की साहेबी को जानती हैं।

नूर रोसन बल धाम को, सो कोई न जाने हम बिन।
अंदर रोसनी सो जानहीं, जिन सिर धाम वतन।।७।।

हमारे बिना परमधाम की जागृत बुद्धि और तारतम के बल को कोई नहीं जानता। जिनके अन्दर परमधाम का ज्ञान है वही धाम (वतन) की साहेबी जानते हैं।

इस्क ईमान धनी धाम को, और जोस जाग्रत पेहेचान।
तौलें धनी धन धाम का, यों कहे कुरान निसान।।८।।

कुरान में स्पष्ट लिखा है कि श्री राजजी के इश्क और ईमान, जोश और जागृत बुद्धि की पहचान से ही अपने धनी और धाम की पहचान करेंगे।

साथ अंग सिरदार को, सिरदार धनी को अंग।
बीच सिरदार दोऊ अंग के, करे न रंग को भंग।।९।।

सुन्दरसाथ श्यामाजी के अंग हैं और श्यामाजी श्री राजजी के अंग हैं, इसलिए सुन्दरसाथ और श्री राजजी के बीच के आनन्द को श्यामा जी भंग नहीं करेंगे।

साथ धाम के सिरदार को, मोमिन मन नरम।
मिलावे और धनीय की, दोऊ इनके बीच सरम।।१०।।

सुन्दरसाथ के सिरदार श्यामा महारानी को अपने मोमिनों के लिए बहुत प्यार है। सुन्दरसाथ और धनी दोनों के लिए श्यामाजी के दिल में बहुत लिहाज है (शर्म है)।

इत परीछा प्रगट, उठावे अपना भार।
बोझ निबाहें साथ को, और बोझ मसनंद भरतार।।११।।

अब यह बात बिलकुल जाहिर है कि जो सतगुरु देवचन्द्रजी की गादी पर बैठे, एक तो धनी देवचन्द्रजी जैसा बनकर दिखावे, सब सुन्दरसाथ को माया से जगाकर परमधाम ले चलने की जिम्मेदारी निभावे और अक्षरातीत की गादी की साहेबी (महत्व) विशेषता दुनियां में जाहिर करे।

ए तो पातसाही दीन की, सो गरीबी से होए।
और स्वांत सबूरी बिना, कबहूं न पावे कोए।।१२।।

यह जिम्मेदारी तो दीन की है (धर्म की है)। वह गरीबी (नम्रता) से निभाई जा सकती है। शान्ति और सब्र के बिना किसी से भी दीन की जिम्मेदारी नहीं निभाई जा सकती है।

Nijanand App

ए लसकर सारा दिल का, सो दिलबरी सब चाहे।
दिल अपना दे उनका लीजिए, इन बिध चरनों पोहोंचाए।। १३ ।।

यह सारा सुन्दरसाथ श्री राजजी का दिल श्यामा महारानी के अंग हैं, इसलिए वह प्यार चाहते हैं, इसलिए अपना प्यार देकर उनको प्यार से जीतो। इस तरह से हम सब सुन्दरसाथ धनी के चरणों में पहुंच सकते हैं।

जो कोई उलटी करे, साथी साहेब की तरफ।
तो क्यों कहिए तिन को, सिरदार जो असरफ।। १४ ।।

जो सुन्दरसाथ धनी की राह से विमुख होते हैं। उन्हें जिम्मेदार सुन्दरसाथ नहीं समझना चाहिए।

कह्या कुराने बंद करसी, इन के जो उमराह।
आधीन होसी तिनके, जो होवेगा पातसाह।। १५ ।।

कुरान में लिखा है कि जो धर्म के बादशाह होंगे, अर्थात् गादीपति आचार्य महाराज होंगे, वह वाणी का प्रचार नहीं होने देंगे और सुन्दरसाथ ऐसे महाराजों के ही अधीन होंगे (गुलाम होंगे)।

लटी तिन से न होवहीं, जो कहे सिरदार।
सबों सिरदार एक होवहीं, मिने बारे हजार।। १६ ।।

जो ब्रह्मसृष्टि हैं, उनसे धर्म के विरुद्ध काम नहीं होगा क्योंकि बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों की सिरदार एक श्री श्यामाजी हैं।

लिख्या है कुरान में, छिपी गिरो बातन।
सो छिपी बातून जानहीं, ए धाम सैयां लछन।। १७ ।।

कुरान में लिखा है कि ब्रह्मसृष्टियों के बातूनी भेद कुरान में छिपे हैं। जो उन छिपे भेदों को जानते हैं, वही परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां हैं।

भी लिख्या कुरान में गिरो की, सोहोबत करसी जोए।
निज बुध जाग्रत लेय के, साहेब पेहेचाने सोए।। १८ ।।

कुरान में लिखा है कि जो ब्रह्मसृष्टियों की संगत करेगा वही जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से धनी को पहचान सकेगा।

फुरमान कहे गिरो साहेदी, देसी कारन पैगंमर।
सब केहेसी महंमद का देखिया, तब कुफर तोड़सी मुनकर।। १९ ।।

रसूल साहब ने इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के आने की जो भविष्यवाणी कुरान में की है, उसकी गवाही ब्रह्मसृष्टियां देंगी। श्री प्राणनाथजी के बताए अनुसार परमधाम को हमने देखा है, लिया है, ऐसा कहने से बेईमान लोग अपने पापों को छोड़कर सीधे रास्ते पर आएंगे।

करे पाक जिमी आसमान को, ऐसी बुजरक गिरो सोए।
होसी रूजू माएने सब इनसे, इन जैसी दूजी न कोए।। २० ।।

इस तरह से ब्रह्मसृष्टियां जीवों और देवी-देवताओं को तारतम वाणी से निर्मल करेंगी। इनके माध्यम से ही वाणी के सारे भेद जाहिर होंगे, इसलिए इनके समान और कोई दूसरा नहीं है।

Nijanand App

गिरो माफक सिरदार चाहिए, जैसा कह्या रसूल।
खैंच लेवें दिल साथ को, सब पर होए सनकूल।। २१ ।।

रसूल साहब ने कुरान में कहा है कि ऐसी ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते सिरदार भी उनके लिए ऐसा ही होना चाहिए जो सुन्दरसाथ के दिलों को प्रसन्न करके जीत ले।

ए मैं कही तुम समझने, ए है बड़ो विस्तार।
बोहोत कह्या मेरे धनी ने, तुम करोगे केता विचार।। २२ ।।

मैंने तो तुम्हारे समझाने के लिए संक्षेप में कहा है, पर इसका विस्तार बहुत भारी है। मेरे धनी ने तो बहुत कुछ कहा है। तुम कहां तक विचार करोगे?

ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार।
समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार।। २३ ।।

इस प्रकार धनी श्री देवचन्द्रजी और कुरान की गवाही लेकर महामतिजी सुन्दरसाथ को पुकार कर कहते हैं कि हे साथजी! समझ सको, तो समझ लेना। चाहे वह ब्रह्मसृष्टि है या वह ईश्वरीसृष्टि है।

।। प्रकरण ।। ९५ ।। चौपाई ।। १३९९ ।।

राग श्री

तो भी घाव न लग्या रे कलेजे

ना लग्या रे कलेजे, जो एते देखे धनी गुन।
कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा, सो चाहे हमारा दरसन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की इतनी मेहरबानी देखकर भी कलेजे में चोट नहीं लगी। करोड़ों ब्रह्माण्ड जिसके एक पल में पैदा और फना होते हैं, वह भी हमारे दर्शन चाहता है।

अचरज एक साथ जी, सुनो कहूं अपनी बीतक।
धनिए मोको मेहेर कर, ले पोहोंचाई हक।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं अपनी आप बीती बताती हूं। मुझे इस बात की हैरानी है कि धनी ने मुझ पर मेहर करके मुझे प्राणनाथ बना दिया।

ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, कहूं अनुभव की बात।
मोको मिले इन बिध सों, श्री धाम धनी साख्यात।। ३ ।।

मैं अपने अनुभव की बात बताती हूं जिसे मानना हो वह मान लेना। मुझे इस तरह से साक्षात् धाम-धनी मिले हैं।

पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक।
अव्वल आकीन ब्रह्मसृष्ट का, जिनमें ईमान इस्क।। ४ ।।

पीछे तो चौदह लोकों के जीव भी ईमान लाएंगे, परन्तु सबसे पहले ब्रह्मसृष्टि जिनके अन्दर ईमान और इश्क है, यकीन लाएंगे।

ए बात नीके विचारियों, ज्यों तुमें साख देवे आतम।
पीछे साख दुनी सब देयसी, ऐसा किया खसम।। ५ ।।

अब जिस तरह से तुम्हारी आत्मा गवाही दे उस तरह से विचार करना। धनी ने ऐसी मेहरबानी की है। बाद में तो सारी दुनियां मानेगी।

Nijanand App

गिरो माफक सिरदार चाहिए, जैसा कह्या रसूल।
खैंच लेवें दिल साथ को, सब पर होए सनकूल।। २१ ।।

रसूल साहब ने कुरान में कहा है कि ऐसी ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते सिरदार भी उनके लिए ऐसा ही होना चाहिए जो सुन्दरसाथ के दिलों को प्रसन्न करके जीत ले।

ए मैं कही तुम समझने, ए है बड़ो विस्तार।
बोहोत कह्या मेरे धनी ने, तुम करोगे केता विचार।। २२ ।।

मैंने तो तुम्हारे समझाने के लिए संक्षेप में कहा है, पर इसका विस्तार बहुत भारी है। मेरे धनी ने तो बहुत कुछ कहा है। तुम कहां तक विचार करोगे?

ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार।
समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार।। २३ ।।

इस प्रकार धनी श्री देवचन्द्रजी और कुरान की गवाही लेकर महामतिजी सुन्दरसाथ को पुकार कर कहते हैं कि हे साथजी! समझ सको, तो समझ लेना। चाहे वह ब्रह्मसृष्टि है या वह ईश्वरीसृष्टि है।

।। प्रकरण ।। ९५ ।। चौपाई ।। १३९९ ।।

राग श्री

तो भी घाव न लग्या रे कलेजे

ना लग्या रे कलेजे, जो एते देखे धनी गुन।
कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा, सो चाहे हमारा दरसन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की इतनी मेहरबानी देखकर भी कलेजे में चोट नहीं लगी। करोड़ों ब्रह्माण्ड जिसके एक पल में पैदा और फना होते हैं, वह भी हमारे दर्शन चाहता है।

अचरज एक साथ जी, सुनो कहूं अपनी बीतक।
धनिए मोको मेहेर कर, ले पोहोंचाई हक।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं अपनी आप बीती बताती हूं। मुझे इस बात की हैरानी है कि धनी ने मुझ पर मेहर करके मुझे प्राणनाथ बना दिया।

ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, कहूं अनुभव की बात।
मोको मिले इन बिध सों, श्री धाम धनी साख्यात।। ३ ।।

मैं अपने अनुभव की बात बताती हूं जिसे मानना हो वह मान लेना। मुझे इस तरह से साक्षात् धाम-धनी मिले हैं।

पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक।
अव्वल आकीन ब्रह्मसृष्ट का, जिनमें ईमान इस्क।। ४ ।।

पीछे तो चौदह लोकों के जीव भी ईमान लाएंगे, परन्तु सबसे पहले ब्रह्मसृष्टि जिनके अन्दर ईमान और इश्क है, यकीन लाएंगे।

ए बात नीके विचारियों, ज्यों तुमें साख देवे आतम।
पीछे साख दुनी सब देयसी, ऐसा किया खसम।। ५ ।।

अब जिस तरह से तुम्हारी आत्मा गवाही दे उस तरह से विचार करना। धनी ने ऐसी मेहरबानी की है। बाद में तो सारी दुनियां मानेगी।

Nijanand App

मैं तो कछू न जानती, श्री स्यामा जी दई खबर।
अपन आए खेल देखने, धाम अपना घर।।६।।

मुझे तो कुछ भी सुध नहीं थी। मुझे श्यामाजी ने आकर बताया कि हम परमधाम से खेल देखने आए हैं और अपना घर परमधाम है।

मोहे भेजी धनीने, तुम को बुलावन।
साथ जी मिल के चलिए, जाइए अपने वतन।।७।।

और यह कहा कि धनी ने तुमको बुलाने के वास्ते मुझे भेजा है, इसलिए हे साथजी! मिलकर आओ। अपने घर चलें।

हम ब्रह्मसृष्टि आई धाम से, अछर खेल देखन।
खेल देख के जागिए, घर असलू अपने तन।।८।।

हम ब्रह्मसृष्टियां परमधाम से अक्षर का खेल देखने आई हैं। खेल देखकर घर (परमधाम) में अपने असल तन में जाग जाएंगे।

साहेब तो पूरा मिल्या, तब थी मैं लड़कपन।
पेहेचान करावने अपनी, बोहोतक कहे वचन।।९।।

मुझे तो धनी (पूर्ण ब्रह्म) मिले। पर उस समय मेरे में बचपना था, इसलिए मुझको अपनी पहचान कराने के वास्ते उन्हें बहुत कुछ समझाना पड़ा।

सो मैं कछू ना दिल धरे, भूल गई अवसर।
कई विध करी जगावने, पर मैं जागी नहीं क्यों ए कर।।१०।।

उनके समझाने पर भी मैं भूल गई और कुछ याद न रहा। कई तरह से धनी ने मुझे जगाया, पर मैं किसी तरह से भी नहीं जागी।

मोहे चलते बखत बुलाए के, जाहेर करी रोसन।
धाम दरवाजे इंद्रावती, ठाढ़ी करे रुदन।।११।।

तब श्री देवचन्द्रजी ने तन छोड़ते समय मुझे बुलाकर साफ कहा कि धाम के दरवाजे पर इन्द्रावती खड़ी रुदन कर रही है (धाम दरवाजा यानि इन्द्रावती का दिल)।

कहे मोहे अकेली छोड़ के, तुम धाम चलो क्यों कर।
पीछे मैं दुनियां मिने, क्यों रहूंगी तुम बिगर।।१२।।

इन्द्रावतीजी कह रही हैं कि धनी! मुझे खेल में अकेला छोड़कर कैसे धाम जाओगे? तुम्हारे बिना मैं दुनियां में कैसे रहूंगी?

एह वचन स्यामाजीएं, सब साथ को कहे सुनाए।
इन्द्रावती आए बिना, हम धाम चल्यो न जाए।।१३।।

यह वचन श्यामाजी ने सब साथ के सामने सुनाकर कहे कि इन्द्रवती के आए बिना हम धाम नहीं जा सकते।

एक रस आतम करके, आप हुए अन्तराए।
अनुभव कराए जुदे हुए, पर लग्या न कलेजे घाए।।१४।।

तब बुलाकर के मेरे विरह के दुःख मिटाकर अन्तर्ध्यान हो गए। जुदाई के वक्त में भी तरह-तरह के ज्ञान दिए, पर मेरे कलेजे में चोट नहीं लगी (२२ दिन अपने पास रखकर एक रस कर दिया)।

Nijanand App

अन्तरगत में रेहे गए, धनी के दो एक सुकन।
ए दरद न काहूं बांटिया, सो मैं कह्या न आगे किन।। १५ ।।

उनके धाम चलने के बाद मुझे उनकी दो चार बातें याद रह गईं। इस विरह के दर्द में मैंने वह भी किसी को बताईं नहीं।

मोहे बोहोत कही समझाए के, पर पेहेचान न हुई पूरन।
तब आप अंदर आए के, बहु बिध करी रोसन।। १६ ।।

मुझे धनी ने बहुत तरह से समझाया पर मैं पूरी पहचान न कर सकी। तब धनी स्वयं ही अन्दर आकर बैठ गए।

अंदर मेरे बैठ के, कई विध कियो विस्तार।
सो रोसनी जुबां क्यों कहे, वाको वाही जाने सुमार।। १७ ।।

मेरे अन्दर बैठकर कई तरह से धनी ने वाणी का विस्तार किया। उस ज्ञान की बातों को जबान से कैसे कहा जाए? इन बातों को वही जानते हैं।

तब कछूक मोको सुध भई, कछुक भई पेहेचान।
ए दरद कहूं मैं किनको, धनी हो गए अन्तरध्यान।। १८ ।।

जब धनी स्वयं अन्दर बैठ गए तो मुझे कुछ सुध आई और उससे कुछ पहचान हुई। अब धनी अन्तर्ध्यान हो गए। उनके वियोग के दर्द की बातें किससे कहूं?

मोहे दिल में ऐसा आइया, ए जो खेल देख्या ब्रह्मांड।
तो क्या देखी हम दुनियां, जो इनको न करें अखंड।। १९ ।।

मेरे दिल में ऐसा लगा कि हमने इस माया के खेल को देखा है तो दुनियां वाले भी क्या जानेंगे यदि हम इनको अखण्ड नहीं करते।

बड़ी बड़ाई अपनी, सुनी हमारी हम।
हम दें मुक्त सबन को, जाए मिलें खसम।। २० ।।

हमने अपने ही बात को दुनियां के मुख से सुना कि हम दुनियां को अखण्ड मुक्ति देकर धनी से मिलने वाले हैं।

वचन हमारे धाम के, फैले हैं भरथ खंड।
अब पसरसी त्रैलोक में, जित होसी मुक्त ब्रह्मांड।। २१ ।।

हमारे घर की वाणी भारतवर्ष में फैल गई है। अब चौदह लोकों में फैलेगी और सारे ब्रह्माण्ड को मुक्ति मिलेगी।

धनी भेजी किताब हाथ रसूल, जाए कहियो होए अमीन।
आखिर धनी आवसी, तब ल्याइयो सब आकीन।। २२ ।।

धनी ने रसूल साहब के हाथ कुरान को भेजा और कहा कि दुनियां में सच्चे पैगम्बर बनकर बताओ कि वक्त आखिरत को धनी आएंगे तो तुम उन पर यकीन लाना।

ए बंध धनिएं पेहेले बांधे, सो लिखे मांहें फुरमान।
इन जिमी साहेब आवसी, दीदार होसी सब जहान।। २३ ।।

यह विधान धनी ने आने से पहले ही कुरान में लिखवा दिया कि इस जमीन पर पारब्रह्म आएंगे और सारी दुनियां को दर्शन देंगे।

Nijanand App

ले हिसाब सबन पे, करसी कजा अदल।
भिस्त देसी सचराचर, कर साफ सबन के दिल।। २४ ।।

वह सारी दुनियां के जीवों का हिसाब कर न्याय करेंगे तथा सबके दिलों को साफ करके चर-अचर जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

जो साहेब किन देख्या नहीं, न कछू सुनिया कान।
सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान।। २५ ।।

जिस धनी को आज दिन तक किसी ने देखा नहीं और न ही इस बारे में किसी ने कुछ सुना, वही पारब्रह्म अब यहां आकर सब दुनियां को अखण्ड करेंगे।

फुरमान महंमद ल्याइया, किया अति घना सोर।
कह्या रब आलम का आवसी, रात मेट करसी भोर।। २६ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान लाकर संसार को सूचित कर दिया कि सारे ब्रह्माण्ड का मालिक आएगा और अज्ञानता के अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का सवेरा करेगा।

रूह अल्ला की आवहीं, जो ईश्वरों का ईस।
सो इन जिमी में पातसाही, करसी साल चालीस।। २७ ।।

यह भी कहा कि रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) जो सब ईश्वरों के ईश्वर हैं, वह इस दुनियां में आकर चालीस वर्ष तक बादशाही करेंगे।

मारेगा कलजुग को, ए जो चौदे तबक अंधेर।
तिनको काट काढ़सी, टालसी उलटो फेर।। २८ ।।

वह, कलियुग जो चौदह तबकों में अज्ञानता का अन्धेरा है, तारतम वाणी के ज्ञान से उसे खत्म कर ज्ञान का सवेरा करेंगे। सबकी अज्ञानता मिटाकर झूठ की पूजा को हटाकर पारब्रह्म की पूजा कराकर एक रस करेंगे।

दज्जाल सरूप अंधेर को, आखिर ईसा मारसी ताए।
पेहेले निरमल करके, लेसी कदमों सुरत लगाए।। २९ ।।

दज्जाल स्वरूप अज्ञानता के अन्धकार को आखिरी ईसा रूह अल्लाह (श्यामाजी महारानी) ही तारतम ज्ञान के सवेरे से मिटा डालेंगे। पहले उनके जीवों के संशय को मिटा कर निर्मल करेंगे और उनकी सुरता को अपने चरणों में लगा लेंगे।

पीछे प्रले करके, लेसी तुरत उठाए।
चौदे तबक सचराचर, देसी भिस्त बनाए।। ३० ।।

पीछे ब्रह्माण्ड का प्रलय कर सब जीवों को तुरन्त योगमाया के ब्रह्माण्ड (अक्षर के मन अव्याकृत स्वरूप) में अखण्ड कर देंगे।

खासी उमत जो अहमदी, आई अर्स से उतर।
ताए अपना इलम देय के, ले चलसी अपने घर।। ३१ ।।

श्यामा महारानी के जो खासल खास जमात (ब्रह्मसृष्टियां) परमधाम से उतर कर आई हैं, उनको अपने जागृत बुद्धि के ज्ञान से पहचान कराकर अपने घर ले जाएंगे।

Nijanand App

यों लिख्या फुरमान में, आखिर बीच हिंदुअन।
मुलक होसी नबियन का, धनी दई बड़ाई इन।।३२।।

कुरान में यह भी लिखा है कि आखिरत को हिन्दुओं के बीच सब नबी आएंगे। सारे भारतवर्ष में ही ब्रह्मसृष्टियां उतरेंगी। धनी ने ब्रह्मसृष्टियों को बड़ाई दी है।

फुरमान जाहेर पुकारहीं, बीच हिंदुओं भेख फकर।
पातसाही करसी महंमद, आखिरी पैगंमर।।३३।।

फरमान में यह भी लिखा है कि हिन्दुओं के तनों में ब्रह्मसृष्टियां उतरेंगी और उनमें आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की हुकूमत होगी और उनके साथ आखिरी पैगम्बर रसूल साहब होंगे।

सो महंमद आगूं भेजिया, केहेने वचन आगम।
सो खास उमत आई इत, ए जो लेने आए हम।।३४।।

रसूल मुहम्मद को आखिरी पैगम्बर बनाकर भविष्य की वाणी देकर भेजा। उसी खास उम्मत (ब्रह्मसृष्टि को) जो यहां आई है, उसे लेने के वास्ते हम आए हैं।

ए सब्द सारे महंमदें, आए पेहेले किया पुकार।
महंमद मेंहेदी रूहअल्ला, आखिर वाही सिर मुद्दार।।३५।।

मुहम्मद साहब ने पहले से आकर इस बात को जाहिर किया कि मुहम्मद मेंहदी और रूह अल्लाह आखिरत के वक्त आएंगे और सबका न्याय चुकाएंगे।

खोल हकीकत मारफत, बताए कयामत के दिन।
कई विध बंध धनिएं बांधे, अपनी उमत के कारन।।३६।।

हकीकत और मारफत को खोलकर कयामत को जाहिर किया और अपनी उम्मत के वास्ते कयामत के दिन के निशान लिखे।

विजिया अभिनंद बुधजी, और नेहेकलंक इत आए।
मुक्त देसी सबन को, मेट सबे असुराए।।३७।।

विजियाभिनन्द बुधजी और निष्कलंक (श्री प्राणनाथजी) यहां आकर सबकी अज्ञानता मिटाकर सबको अखण्ड करेंगे।

दिन भी लिखे जाहेर, बीच किताब हिंदुआन।
जो साख लिखी इनमें, सोई साख फुरमान।।३८।।

हिन्दुओं की किताबों में भी उनके जाहिर होने के दिन लिखे हैं। जो गवाही हिन्दुओं के ग्रन्थों में है वही गवाही कुरान में भी है।

कई बिध धनिएं ऐसा लिख्या, देने चौदे तबकों ईमान।
सो धाम धनी इत आए के, कराई सबों पेहेचान।।३९।।

चौदह तबकों को ईमान देने के वास्ते कई तरह से धनी ने ऐसा लिखवाया है। उसी लिखे अनुसार धामधनी यहां आकर अपनी पहचान करा रहे हैं।

यों साख आतम देवहीं, वचन आगम के देख।
देने ईमान सबन को, यों बिध बिध लिखे विसेख।।४०।।

इन भविष्यवाणियों को देखकर आत्मा गवाही देगी और स्वीकार करेगी। सबको इस तरह से ईमान देने के वास्ते ही तरह-तरह से भविष्यवाणियों में लिखा है।

Nijanand App

महामत कहें धनी धाम के, मुझसों कियो मिलाप।
आखिर सुख इन साथ में, मोहे कर थापी आप।।४१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धाम के धनी आकर मुझे मिले। आखिरी सुन्दरसाथ को सुख देने के लिए यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी।

।। प्रकरण ।। ९६ ।। चौपाई ।। १४४० ।।

राग श्री

इन धनी के बान मोको ना लगे

मोको ना लगे, कहा कियो करम अधम।
तो भी इस्क न आया मोको, ए कैसा हुआ जुलम।।१।।

मैंने कौन से ऐसे खोटे काम किए हैं जिसके कारण धनी की वाणी की चोट मुझे नहीं लगी। मुझे धनी से मिलने का इश्क नहीं आया। यह कैसा बड़ा जुल्म हुआ?

रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसिक जिउ।
सो जीव खिन एक लों, रहे ना सके बिना पिउ।।२।।

धनी (माशूक) की जरा सी इशारत मिलने पर आशिक (ब्रह्मसृष्टि) का जीव धनी के बिना एक पल भी नहीं रहता।

सो भी पिउ जीउ इन जिमी के, ए जो फना ब्रह्मांड।
मेरो तो जीउ पिउ धाम को, ए जो अछरातीत अखंड।।३।।

वह भी इस संसार के आशिक और माशूक ऐसा करते हैं और मेरी तो आत्मा परमधाम की है और मेरे धनी अक्षरातीत हैं जो अखण्ड हैं।

ऐसी प्रीत जीव सृष्ट की, जाके पिउ विष्णु सेखसांई।
वाको रटत जात अहनिस, ब्रह्म अछर सुध न पाई।।४।।

जीवसृष्टि की ऐसी प्रीति है जिनके मालिक विष्णु भगवान और शेषशायी नारायण हैं और उनको ही ये रात-दिन जपती है। उन्हें अक्षर ब्रह्म तक की सुध नहीं है।

कोट ब्रह्मांड नूर के पल थें, यों कहे सास्त्र त्रिगुन।
सो अछर किने न दृढ़ किया, न दृढ़ किया इनों वतन।।५।।

शास्त्र और त्रिगुण (वेद) कहते हैं कि अक्षर ब्रह्म के एक पल में कई ब्रह्माण्ड बनते मिटते हैं। वह अक्षर ब्रह्म कौन है तथा उनका घर कहां है, यह किसी ने नहीं बताया।

सो अछर अछरातीत के, आवे दरसन नित।
तले झरोखे आए के, कर मुजरा घरों फिरत।।६।।

वह अक्षरब्रह्म अक्षरातीत के दर्शन करने के लिए नित्य आते हैं और चांदनी चौक में नीचे आकर झरोखे से श्री राजजी महाराज के दर्शन कर अपने घर अक्षर धाम में लौट जाते हैं।

सो ए धनी अछरातीत, इत आए मुझ कारन।
अंग दियो मोहे जान अंगना, दिल सनमंध आन वतन।।७।।

वही अक्षरातीत धनी मेरे वास्ते यहां आ रहे हैं। मुझे अंगना जानकर अपनाया और घर की निसबत और हकीकत बताई।

Nijanand App

महामत कहें धनी धाम के, मुझसों कियो मिलाप।
आखिर सुख इन साथ में, मोहे कर थापी आप।।४१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धाम के धनी आकर मुझे मिले। आखिरी सुन्दरसाथ को सुख देने के लिए यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी।

।। प्रकरण ।। ९६ ।। चौपाई ।। १४४० ।।

राग श्री

इन धनी के बान मोको ना लगे

मोको ना लगे, कहा कियो करम अधम।
तो भी इस्क न आया मोको, ए कैसा हुआ जुलम।।१।।

मैंने कौन से ऐसे खोटे काम किए हैं जिसके कारण धनी की वाणी की चोट मुझे नहीं लगी। मुझे धनी से मिलने का इश्क नहीं आया। यह कैसा बड़ा जुल्म हुआ?

रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसिक जिउ।
सो जीव खिन एक लों, रहे ना सके बिना पिउ।।२।।

धनी (माशूक) की जरा सी इशारत मिलने पर आशिक (ब्रह्मसृष्टि) का जीव धनी के बिना एक पल भी नहीं रहता।

सो भी पिउ जीउ इन जिमी के, ए जो फना ब्रह्मांड।
मेरो तो जीउ पिउ धाम को, ए जो अछरातीत अखंड।।३।।

वह भी इस संसार के आशिक और माशूक ऐसा करते हैं और मेरी तो आत्मा परमधाम की है और मेरे धनी अक्षरातीत हैं जो अखण्ड हैं।

ऐसी प्रीत जीव सृष्ट की, जाके पिउ विष्णु सेखसांई।
वाको रटत जात अहनिस, ब्रह्म अछर सुध न पाई।।४।।

जीवसृष्टि की ऐसी प्रीति है जिनके मालिक विष्णु भगवान और शेषशायी नारायण हैं और उनको ही ये रात-दिन जपती है। उन्हें अक्षर ब्रह्म तक की सुध नहीं है।

कोट ब्रह्मांड नूर के पल थें, यों कहे सास्त्र त्रिगुन।
सो अछर किने न दृढ़ किया, न दृढ़ किया इनों वतन।।५।।

शास्त्र और त्रिगुण (वेद) कहते हैं कि अक्षर ब्रह्म के एक पल में कई ब्रह्माण्ड बनते मिटते हैं। वह अक्षर ब्रह्म कौन है तथा उनका घर कहां है, यह किसी ने नहीं बताया।

सो अछर अछरातीत के, आवे दरसन नित।
तले झरोखे आए के, कर मुजरा घरों फिरत।।६।।

वह अक्षरब्रह्म अक्षरातीत के दर्शन करने के लिए नित्य आते हैं और चांदनी चौक में नीचे आकर झरोखे से श्री राजजी महाराज के दर्शन कर अपने घर अक्षर धाम में लौट जाते हैं।

सो ए धनी अछरातीत, इत आए मुझ कारन।
अंग दियो मोहे जान अंगना, दिल सनमंध आन वतन।।७।।

वही अक्षरातीत धनी मेरे वास्ते यहां आ रहे हैं। मुझे अंगना जानकर अपनाया और घर की निसबत और हकीकत बताई।

Nijanand App

मोहे दई सिखापन, धोखे दिए सब भान।
अन्तर पट उड़ाए के, कर दई सब पेहेचान।। ८ ।।

मुझे समझाकर सब संशय मिटा दिए। अन्दर की अज्ञानता हटाकर सब पहचान कराई।

अछर पार द्वार जो हुते, सो ए दिए सब खोल।
ऐसी कुन्जी दई कृपा की, जो किनहूं न पाया मोल।। ९ ।।

अक्षर के पार के सारे द्वार मेरे लिए खोल दिए और कृपा करके तारतम वाणी की ऐसी कुंजी जो अनमोल है, दी।

सब ब्रह्मसृष्टी आई धाम से, अछरातीत इन धनी।
मोको सबे बिध समझाई, आप जान अपनी।। १० ।।

ब्रह्मसृष्टियां परमधाम से आई हैं जिनके धनी अक्षरातीत हैं। श्री राजजी ने मुझे अपना जानकर सब तरह से समझा दिया।

धनिएं हेत करके मुझको, कई विध दई समझाए।
साख सास्त्र सब सब्द, मोहे बिध बिध दई जगाए।। ११ ।।

धनी ने मुझे प्यार करके कई तरह से समझाया तथा शास्त्रों की गवाही देकर मुझे तरह-तरह से जगाया।

बोहोत धनिएं मोको चाह्या, जाने प्रेम उपजे इन।
सो प्रेम क्योंए न आइया, ऐसा हिरदे निपट कठिन।। १२ ।।

धनी ने मेरे अन्दर प्रेम पैदा करने के लिए तरह-तरह से चाहा, फिर भी मेरा हृदय ऐसा कठोर हो गया कि किसी तरह से प्रेम नहीं आया।

तो भी प्रेम न उपज्या, धनी कर कर थके सनेह।
ढीठ निपट निठुर भई, धनी क्योंए न सके ले।। १३ ।।

धनी तरह-तरह से प्यार करके थक गए, फिर भी प्रेम नहीं आया। मैं इतनी पक्की, ढीठ और कठोर हो गई कि धनी को किसी तरह से खुश न कर सकी।

फुरमान भेज्या जुदे होए, देने को साख दोए।
सो मेहेर धनी की मैं ही जानों, और न समझे कोए।। १४ ।।

तब मेरे से जुदा होकर कुरान को गवाही दिलाई, ताकि हिन्दू और मुसलमान दोनों को गवाहियां मिल जाएं। इस धनी की मेहर को मैं जानती हूं, और कोई नहीं समझता।

सो ए सुकन दिए लदुन्नी, फुरमान याही से खुले।
और न कोई खोल सके, जो चौदे तबक मिले।। १५ ।।

धनी ने तारतम ज्ञान की वाणी दी जिससे कुरान के भेद खुले। इसके साथ चौदह लोक भी मिल जाएं तो कुरान के भेद कोई नहीं खोल सकता।

सो मैं समझाऊं साथ को, ले फुरमान वचन।
फैले हैं भरथ खण्ड में, अब पोहोंचे चौदे भवन।। १६ ।।

अब मैं कुरान के वचनों के भेद खोलकर सुन्दरसाथ को समझाती हूं। पहले यह वाणी भारतवर्ष में फैल चुकी है। अब सारे ब्रह्माण्ड में फैलेगी।

Nijanand App

ऐसी जगाए खड़ी करी मुझे, और सब पर मेरी बुध।
खबर न अछर ब्रह्म को, सो ए भई मुझे सुध।। १७ ।।

इस तरह से मुझे जागृत करके सब ज्ञानियों में आगे खड़ा किया। ज्ञानियों को अक्षर ब्रह्म तक की खबर नहीं थी। वह सब खबर मुझे दे दी।

आप जैसी कर बैठाई, तो भी प्रेम न उपज्या इत।
सो रोवत हों अन्दर, फेर फेर जीव बिलखत।। १८ ।।

धनी ने मुझे अपने जैसा बना दिया। फिर भी यहां प्रेम नहीं आया, इसलिए मैं अन्दर-अन्दर रोती और बिलखती हूं।

मेहेबूब ऐसी मैं क्यों भई, ले प्रेम न खड़ी हुई।
महामत दुष्टाई क्यों करी, ले विरहा मांहें न मुई।। १९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्राणनाथजी! ऐसी दुष्टता मैंने क्यों की? मैं क्यों ऐसी हो गई कि प्रेम से पहचान कर विरह से मर नहीं गई?

|| प्रकरण || ९७ || चौपाई || १४५९ ||

राग श्री

तो भी चोट न लगी रे आतम को, जो एती साख धनिएं दई।
कठिन कठोर निपट ऐसी आतम, एती साखें ले गल न गई।। १ ।।

धनी द्वारा इतनी गवाहियां देने पर भी आत्मा को चोट नहीं लगी। वह इतनी कठिन ढीठ हो गई कि इतनी गवाहियां देने पर भी नहीं गली (कुछ असर नहीं हुआ)।

कई साखें धनिएं दई मुझे, श्री स्यामा जी आए इत।
सो तारतम कह्या मैं तुमें, देखो साख देत है चित।। २ ।।

धनी जी ने कई तरह से गवाहियां दीं। फिर श्यामाजी भी आए और तारतम देकर कहा कि अब अपनी आत्मा से देखो वह क्या गवाही देती है?

कह्या साहेब इत आवसी, सो झूठ न होए फुरमान।
सब का हिसाब लेय के, कायम करसी जहान।। ३ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा यहां आकर सबका हिसाब लेकर सबको अखण्ड करके ब्रह्माण्ड को कायम करेंगे। यह कुरान में लिखा झूठा नहीं होगा।

पूछो अपनी आतम को, कोई दूजा है इसदाए।
रूह-अल्ला इलम ल्याए के, केहेलावें इत खुदाए।। ४ ।।

अपनी आत्मा को पूछकर देखो कि क्या इनके अलावा कोई दूसरा सच्चिदानन्द है? रूह अल्लाह ही यहां तारतम वाणी लाकर यहां पर खुदा कहलाएंगे।

सो बिना हिसाबें हदीसें, भी अनुभव इत बोलत।
साथ जी दिल दे देखियो, जो हम तुम में बीतत।। ५ ।।

हदीसों में कई जगह ऐसा ही लिखा है और अनुभव भी ऐसा ही बतलाता है, इसलिए हे सुन्दरसाथजी! तुम दिल से देखना जो हमारे और तुम्हारे पर बीत रही है, वह सब पहले से ही लिखा हुआ है।

Nijanand App

ऐसी जगाए खड़ी करी मुझे, और सब पर मेरी बुध।
खबर न अछर ब्रह्म को, सो ए भई मुझे सुध।। १७ ।।

इस तरह से मुझे जागृत करके सब ज्ञानियों में आगे खड़ा किया। ज्ञानियों को अक्षर ब्रह्म तक की खबर नहीं थी। वह सब खबर मुझे दे दी।

आप जैसी कर बैठाई, तो भी प्रेम न उपज्या इत।
सो रोवत हों अन्दर, फेर फेर जीव बिलखत।। १८ ।।

धनी ने मुझे अपने जैसा बना दिया। फिर भी यहां प्रेम नहीं आया, इसलिए मैं अन्दर-अन्दर रोती और बिलखती हूं।

मेहेबूब ऐसी मैं क्यों भई, ले प्रेम न खड़ी हुई।
महामत दुष्टाई क्यों करी, ले विरहा मांहें न मुई।। १९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्राणनाथजी! ऐसी दुष्टता मैंने क्यों की? मैं क्यों ऐसी हो गई कि प्रेम से पहचान कर विरह से मर नहीं गई?

|| प्रकरण || ९७ || चौपाई || १४५९ ||

राग श्री

तो भी चोट न लगी रे आतम को, जो एती साख धनिएं दई।
कठिन कठोर निपट ऐसी आतम, एती साखें ले गल न गई।। १ ।।

धनी द्वारा इतनी गवाहियां देने पर भी आत्मा को चोट नहीं लगी। वह इतनी कठिन ढीठ हो गई कि इतनी गवाहियां देने पर भी नहीं गली (कुछ असर नहीं हुआ)।

कई साखें धनिएं दई मुझे, श्री स्यामा जी आए इत।
सो तारतम कह्या मैं तुमें, देखो साख देत है चित।। २ ।।

धनी जी ने कई तरह से गवाहियां दीं। फिर श्यामाजी भी आए और तारतम देकर कहा कि अब अपनी आत्मा से देखो वह क्या गवाही देती है?

कह्या साहेब इत आवसी, सो झूठ न होए फुरमान।
सब का हिसाब लेय के, कायम करसी जहान।। ३ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा यहां आकर सबका हिसाब लेकर सबको अखण्ड करके ब्रह्माण्ड को कायम करेंगे। यह कुरान में लिखा झूठा नहीं होगा।

पूछो अपनी आतम को, कोई दूजा है इसदाए।
रूह-अल्ला इलम ल्याए के, केहेलावें इत खुदाए।। ४ ।।

अपनी आत्मा को पूछकर देखो कि क्या इनके अलावा कोई दूसरा सच्चिदानन्द है? रूह अल्लाह ही यहां तारतम वाणी लाकर यहां पर खुदा कहलाएंगे।

सो बिना हिसाबें हदीसें, भी अनुभव इत बोलत।
साथ जी दिल दे देखियो, जो हम तुम में बीतत।। ५ ।।

हदीसों में कई जगह ऐसा ही लिखा है और अनुभव भी ऐसा ही बतलाता है, इसलिए हे सुन्दरसाथजी! तुम दिल से देखना जो हमारे और तुम्हारे पर बीत रही है, वह सब पहले से ही लिखा हुआ है।

Nijanand App

वसीयत नामे आए दरगाह से, तिन साख दई बनाए।
अग्यारै सदी जाहेर लिखी, सो कौल पोहोंच्या आए।। ६ ।।

वसीयतनामे भी मक्के से आए हैं। उन्होंने भी इस बात की गवाही दी कि ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहदी आएंगे। वह समय भी अब आ गया है।

कई किताबें हिंदुअन की, साखें लिखी मांहें इन।
आए धनी झूठ उड़ावने, करसी सत रोसन।। ७ ।।

हिन्दुओं के भी कई धर्म-ग्रन्थों में गवाहियां लिखी हैं कि धनी आकर असत का अज्ञान मिटाकर सत का ज्ञान देंगे।

देखो कई साखें धनीय की, भी देखो अनुभव आतम।
कई साखें देखो फुरमान में, जो मेहेर कर भेज्या खसम।। ८ ।।

हे सुन्दरसाथजी! धनी की गवाहियों को देखो और अपनी आत्मा से अनुभव करो। धनी ने कृपा करके जो गवाही कुरान में देकर भेजा है उसको भी देखो।

और हदीसों में कई साखें, कई वसीयत नामे साख।
कई किताबें हिंदुअन की, देत भाख भाख कई लाख।। ९ ।।

हदीसों में तथा वसीयतनामों में कई तरह की गवाहियां दी हैं। हिन्दुओं के भी कई धर्मग्रन्थों में अलग-अलग भाषाओं में अनेक गवाहियां दी हैं।

कई साखें साधो संतो, बोले बानी आगम।
कहे ना सकूं तुमको साथ जी, दोष देख अपना हम।। १० ।।

कई साधु-सन्तों ने भी अपनी भविष्यवाणी से कहा है। हे सुन्दरसाथजी! हम अपना ही दोष देखते हैं। तुमको कहां तक कहें?

एक साखें आवे ईमान, कई साखें देनें बांधे बंध।
तो भी ईमान न आया हमको, कोई हिरदे भया ऐसा अंध।। ११ ।।

एक गवाही से ही ईमान आ जाना चाहिए। यहां तो हर जगह हर ग्रन्थों में हर भाषा में गवाहियां दे रखी हैं। हमारा हृदय ही कुछ ऐसा अन्धा हो गया कि हमें ईमान नहीं आया।

देखो विचार के साथ जी, साख दई आतम महामत।
सो आतम साख सबों की देयसी, पोहोंच्या इलम हमारा जित।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! विचार करके देखो। मेरी आत्मा ने गवाही दी है। जहां तारतम वाणी पहुंच जाएगी वहां सब सुन्दरसाथ की भी आत्मा गवाही देगी कि मैं खुदा हूं (चौपाई ४)

|| प्रकरण || ९८ || चौपाई || १४७१ ||

राग श्री

धिक धिक पड़ो मेरी बुध को
मेरी सुध को, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम।
जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम।। १ ।।

मेरी बुद्धि को, चित्त को, तन को और मन को धिक्कार है, जिन्होंने धाम-धनी को याद नहीं किया और आठों पहर रात-दिन जहर भरी माया में ही लगे रहे।

Nijanand App

वसीयत नामे आए दरगाह से, तिन साख दई बनाए।
अग्यारै सदी जाहेर लिखी, सो कौल पोहोंच्या आए।। ६ ।।

वसीयतनामे भी मक्के से आए हैं। उन्होंने भी इस बात की गवाही दी कि ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहदी आएंगे। वह समय भी अब आ गया है।

कई किताबें हिंदुअन की, साखें लिखी मांहें इन।
आए धनी झूठ उड़ावने, करसी सत रोसन।। ७ ।।

हिन्दुओं के भी कई धर्म-ग्रन्थों में गवाहियां लिखी हैं कि धनी आकर असत का अज्ञान मिटाकर सत का ज्ञान देंगे।

देखो कई साखें धनीय की, भी देखो अनुभव आतम।
कई साखें देखो फुरमान में, जो मेहेर कर भेज्या खसम।। ८ ।।

हे सुन्दरसाथजी! धनी की गवाहियों को देखो और अपनी आत्मा से अनुभव करो। धनी ने कृपा करके जो गवाही कुरान में देकर भेजा है उसको भी देखो।

और हदीसों में कई साखें, कई वसीयत नामे साख।
कई किताबें हिंदुअन की, देत भाख भाख कई लाख।। ९ ।।

हदीसों में तथा वसीयतनामों में कई तरह की गवाहियां दी हैं। हिन्दुओं के भी कई धर्मग्रन्थों में अलग-अलग भाषाओं में अनेक गवाहियां दी हैं।

कई साखें साधो संतो, बोले बानी आगम।
कहे ना सकूं तुमको साथ जी, दोष देख अपना हम।। १० ।।

कई साधु-सन्तों ने भी अपनी भविष्यवाणी से कहा है। हे सुन्दरसाथजी! हम अपना ही दोष देखते हैं। तुमको कहां तक कहें?

एक साखें आवे ईमान, कई साखें देनें बांधे बंध।
तो भी ईमान न आया हमको, कोई हिरदे भया ऐसा अंध।। ११ ।।

एक गवाही से ही ईमान आ जाना चाहिए। यहां तो हर जगह हर ग्रन्थों में हर भाषा में गवाहियां दे रखी हैं। हमारा हृदय ही कुछ ऐसा अन्धा हो गया कि हमें ईमान नहीं आया।

देखो विचार के साथ जी, साख दई आतम महामत।
सो आतम साख सबों की देयसी, पोहोंच्या इलम हमारा जित।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! विचार करके देखो। मेरी आत्मा ने गवाही दी है। जहां तारतम वाणी पहुंच जाएगी वहां सब सुन्दरसाथ की भी आत्मा गवाही देगी कि मैं खुदा हूं (चौपाई ४)

।। प्रकरण ।। ९८ ।। चौपाई ।। १४७१ ।।

राग श्री

धिक धिक पड़ो मेरी बुध को
मेरी सुध को, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम।
जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम।। १ ।।

मेरी बुद्धि को, चित्त को, तन को और मन को धिक्कार है, जिन्होंने धाम-धनी को याद नहीं किया और आठों पहर रात-दिन जहर भरी माया में ही लगे रहे।

Nijanand App

मूल वतन धनिएं बताइया, जित साथ स्यामा जी स्याम।
पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम।। २ ।।

धनी ने निज अखण्ड घर की पहचान कराई। जहां सुन्दरसाथ श्री राज श्यामाजी साक्षात् बैठे हैं, उस अखण्ड के आराम (सुख) को माया के बदले गंवा दिया।

सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम।
अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड़या विसराम।। ३ ।।

धनी ने मेरी निसबत उस अखण्ड घर से की जहां बेहद अखण्ड सुख हैं। उस आराम को भी मैं भूल बैठी।

खिताब दिया ऐसा खसमें, इत आए इमाम।
कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला कलाम।। ४ ।।

धाम-धनी ने यहां आकर मुझे इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी का खिताब दिया और बहिश्तों को कायम करने का अधिकार दिया। इसकी गवाही कुरान से दिलवाई।

अखंड सुख छोड़या अपना, जो मेरा मूल मुकाम।
इस्क न आया धनीय का, जाए लगी हराम।। ५ ।।

मैंने अपने मूल अखण्ड घर के सुखों को छोड़ दिया। मुझे धनी का इश्क नहीं आया और मैंने झूठी हराम माया को पकड़ लिया।

खोल खजाना धनिएं सब दिया, अंग मेरे पूरा न ईमान।
सो ए खोया मैं नींद में, करके संग सैतान।। ६ ।।

धनी ने तो परमधाम का सब खजाना बख्श दिया, पर मेरे अन्दर ईमान ही नहीं आया, उस निधि को मैंने माया के संग से अज्ञानता के अन्धकार में गंवा दिया।

उमर खोई अमोलक, मोह मद क्रोध ने काम।
विखया विखे रस भेदिया, गल गया लोहू मांस चाम।। ७ ।।

मैंने काम, क्रोध, मोह और मद में अपना अनमोल जीवन गंवा दिया और माया के विषैले स्वादों में लगी रही। माया में लिप्त होने से सब अंग खाक हो गए।

अब अंग मेरे अपंग भए, बल बुध फिरी तमाम।
गए अवसर कहा रोइए, छूट गई वह ताम।। ८ ।।

अब मेरे अंगों की शक्ति समाप्त हो गई और बुद्धि का बल भी जाता रहा। अब हाथ से वह अवसर निकल जाने पर आत्मा का धन छिन गया।

पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान।
संसे मेरे कोई न रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान।। ९ ।।

धनी ने बेहद से परे सब द्वार खोलकर मूल घर की पहचान करा दी। अब धनी ने ऐसी कृपा की कि मेरे अन्दर कोई संशय नहीं रहा।

बोहोत कह्या घर चलते, वचन न लागे अंग।
इन्द्रावती हिरदे कठिन भई, चली न पिउ जी के संग।। १० ।।

श्यामाजी (देवचन्द्रजी) ने धाम चलते समय बहुत समझाया पर मुझ पर असर नहीं हुआ। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि उस समय मैं हृदय की ऐसी कठोर हो गई कि अपने प्रीतम के साथ जा नहीं सकी।

Nijanand App

तब हार के धनिएं विचारिया, क्यों छोडूं अपनी अरधंग।
फेर बैठे मांहें आसन कर, महामति हिरदे अपंग।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तब हार कर धनी ने ही विचार किया कि मैं अपनी अंगना को क्यों छोडूं? तब मेरे टूटे हुए हृदय में आकर विराजमान हुए।

॥ प्रकरण ॥ ९९ ॥ चौपाई ॥ १४८२ ॥

धनी एते गुन तेरे देख के, क्यों भई हिरदे की अंध।
कई साखें साहेदियां ले ले, याही में रही फंद।। १ ।।

हे धनी! आपकी इतनी कृपा देखकर भी मेरा हृदय अन्धा बना रहा। कई गवाहियां लेकर भी मैं इसी माया के फन्द में लगी रही।

कई साखें लई धनी की, कई साखें लई फुरमान।
कई साखें लई सास्त्रन की, अंतस्करन में आन।। २ ।।

धनी की, कुरान की और शास्त्रों की दिल में कई गवाहियां लीं।

कई साखें साधुन की, कई साखें सब्द ब्रह्मांड।
आतम मेरी अनुभव से, लगाए देखी अखंड।। ३ ।।

साधुओं की वाणी और अपने अनुभव से मैंने अपने दिल को अखण्ड परमधाम में लगाकर देखा।

जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दई साख।
धनी बुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख।। ४ ।।

पार के रहने वाले जितने सुन्दरसाथ हैं, उन सबने गवाही दी। तब अपने ऊपर धनी की कृपा देखी उसका क्या वर्णन करूं? उससे अखण्ड घर नजर आया।

कई साखें गुन विचार विचार, बिध बिध करी पुकार।
तो भी घाव कलेजे न लग्या, यों गया जनम अकार।। ५ ।।

कई गवाहियां सोच-सोचकर दीं और पुकार-पुकारकर मुझे समझाई पर मेरे कलेजे में कोई चोट नहीं लगी। मेरा जन्म व्यर्थ चला गया।

कई साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब।
अजूं आतम खड़ी ना हुई, क्यों पुकारूं मैं अब।। ६ ।।

कई गवाहियां और अपने मुख से धनी की कृपा का वर्णन औरों को सुना-सुनाकर उम्र बिता दी, फिर भी मेरी आत्मा जागृत नहीं हुई तो औरों को क्या कहूं? क्या सुनाऊं?

अब दिन बाकी कछू ना रहे, सो भी देखाए दई तुम सरत।
क्यों मुख उठाऊं आगूं तुम, चरनों लागूं जिन बखत।। ७ ।।

हे धनी! अब घर वापस आने में कोई समय बाकी न रहा। उसकी भी आपने पहचान करा दी है। अब घर आकर जब आपके चरणों में लगूंगी तो आपके सामने मुंह कैसे ऊंचा करूंगी?

ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन।
तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन।। ८ ।।

हे धनी! जैसे-जैसे आपने कृपा की, वैसे-वैसे मैंने अवगुण किए। फिर भी आपने तो मेहर ही की मैंने तो फिर भी बाधाएं ही डालीं।

Nijanand App

तब हार के धनिएं विचारिया, क्यों छोडूं अपनी अरधंग।
फेर बैठे मांहें आसन कर, महामति हिरदे अपंग।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तब हार कर धनी ने ही विचार किया कि मैं अपनी अंगना को क्यों छोडूं? तब मेरे टूटे हुए हृदय में आकर विराजमान हुए।

।। प्रकरण ।। ९९ ।। चौपाई ।। १४८२ ।।

धनी एते गुन तेरे देख के, क्यों भई हिरदे की अंध।
कई साखें साहेदियां ले ले, याही में रही फंद।। १ ।।

हे धनी! आपकी इतनी कृपा देखकर भी मेरा हृदय अन्धा बना रहा। कई गवाहियां लेकर भी मैं इसी माया के फन्द में लगी रही।

कई साखें लई धनी की, कई साखें लई फुरमान।
कई साखें लई सास्त्रन की, अंतस्करन में आन।। २ ।।

धनी की, कुरान की और शास्त्रों की दिल में कई गवाहियां लीं।

कई साखें साधुन की, कई साखें सब्द ब्रह्मांड।
आतम मेरी अनुभव से, लगाए देखी अखंड।। ३ ।।

साधुओं की वाणी और अपने अनुभव से मैंने अपने दिल को अखण्ड परमधाम में लगाकर देखा।

जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दई साख।
धनी बुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख।। ४ ।।

पार के रहने वाले जितने सुन्दरसाथ हैं, उन सबने गवाही दी। तब अपने ऊपर धनी की कृपा देखी उसका क्या वर्णन करूं? उससे अखण्ड घर नजर आया।

कई साखें गुन विचार विचार, बिध बिध करी पुकार।
तो भी घाव कलेजे न लग्या, यों गया जनम अकार।। ५ ।।

कई गवाहियां सोच-सोचकर दीं और पुकार-पुकारकर मुझे समझाई पर मेरे कलेजे में कोई चोट नहीं लगी। मेरा जन्म व्यर्थ चला गया।

कई साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब।
अजूं आतम खड़ी ना हुई, क्यों पुकारूं मैं अब।। ६ ।।

कई गवाहियां और अपने मुख से धनी की कृपा का वर्णन औरों को सुना-सुनाकर उम्र बिता दी, फिर भी मेरी आत्मा जागृत नहीं हुई तो औरों को क्या कहूं? क्या सुनाऊं?

अब दिन बाकी कछू ना रहे, सो भी देखाए दई तुम सरत।
क्यों मुख उठाऊं आगूं तुम, चरनों लागूं जिन बखत।। ७ ।।

हे धनी! अब घर वापस आने में कोई समय बाकी न रहा। उसकी भी आपने पहचान करा दी है। अब घर आकर जब आपके चरणों में लगूंगी तो आपके सामने मुंह कैसे ऊंचा करूंगी?

ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन।
तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन।। ८ ।।

हे धनी! जैसे-जैसे आपने कृपा की, वैसे-वैसे मैंने अवगुण किए। फिर भी आपने तो मेहर ही की मैंने तो फिर भी बाधाएं ही डालीं।

Nijanand App

गुन धनी के गाते गाते, गई सारी आरबल।
अवगुन अपने भाखते, उमर खोई न सकी चल।। ९ ।।

धनी के मेहर के गुण गाते-गाते सारी आयु व्यतीत हो गई। अपने अवगुणों को बताते-बताते भी उम्र गंवा दी पर तन न छोड़ सकी।

अब हुकम होए धनी सो करूं, मेरा बल न चले कछू इत।
सुरखरु तुम करोगे, पुकार कहे महामत।। १० ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं धनी! आपका जो हुकम हो, वही अब मैं करूं? मेरा बल इस माया में चलता ही नहीं है। अब तुम ही सामने आने की शक्ति दोगे तब मैं आपके सामने आ सकूंगी। ऐसी मेरी बार-बार प्रार्थना है।

।। प्रकरण ।। १०० ।। चौपाई ।। १४९२ ।।

राग श्री

साथ जी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी न कोई दुष्ट।
धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट।। १ ।।

हे मेरे सिरदार सुन्दरसाथजी! सुनो, मेरे जैसा कोई दुष्ट नहीं है। मैं अखण्ड घर के सुखों को छोड़कर झूठी माया में लगी रही। मैंने चोर, चांडाल और ऊपरी मान-मर्यादा वालों जैसा काम किया।

प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भिष्ट।
साथ के चरन धोए पीजिए, ताको दिए मैं कष्ट।। २ ।।

मैंने धनी की वाणी को बार-बार सुनाकर अपने जीव को भ्रष्ट कर दिया है। जिन सुन्दरसाथ के चरण को धोकर पीना चाहिए, उनको मैंने कष्ट दिया।

मुख बानी केहेलाई बड़ी कर, मांहें ब्रह्म सृष्ट।
पंथ पैंडे संसार के ज्यों, होए चलाया इष्ट।। ३ ।।

ब्रह्मसृष्टियों में मुझे बड़ा बनाकर मेरे मुख से वाणी कहलाई और संसार के पंथ-पैंडों की तरह ही एक धर्म का इष्ट बनकर नया धर्म चलाया।

ले पंडिताई पड़ी प्रवाह में, कर कर ग्यान गोष्ट।
न्यारा हुआ न नेहेकाम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट।। ४ ।।

मैंने पण्डितों की तरह ज्ञान गोष्ठी (शास्त्रार्थ) की। माया की चाहना छोड़कर मैं अलग नहीं हो सकी और दृढ़ता के साथ पारब्रह्म को नहीं लिया।

अनेक अवगुन किए मैं साथसों, सो ए प्रकासूं सब।
छोड़ अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खैंचत हों अब।। ५ ।।

मैंने सुन्दरसाथ से बहुत अवगुण किए हैं। उनका मैं बखान करती हूं। अपने अहंकार को छोड़कर सुन्दरसाथ के चरणों में ही रहूंगी। इस तरह से मैं अपनी भूल मानती हूं।

एते दिन धनी धाम छोड़ के, दई साथ को सिखापन।
अब साथें मोको समझाई, तिन थें हुई चेतन।। ६ ।।

इतने दिन तक मैं धाम-धनी को छोड़कर सुन्दरसाथ को समझाती रही। अब सुन्दरसाथ ने मुझे समझाया, तब मुझे होश आया।

Nijanand App

गुन धनी के गाते गाते, गई सारी आरबल।
अवगुन अपने भाखते, उमर खोई न सकी चल।। ९ ।।

धनी के मेहर के गुण गाते-गाते सारी आयु व्यतीत हो गई। अपने अवगुणों को बताते-बताते भी उम्र गंवा दी पर तन न छोड़ सकी।

अब हुकम होए धनी सो करूं, मेरा बल न चले कछू इत।
सुरखरु तुम करोगे, पुकार कहे महामत।। १० ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं धनी! आपका जो हुकम हो, वही अब मैं करूं? मेरा बल इस माया में चलता ही नहीं है। अब तुम ही सामने आने की शक्ति दोगे तब मैं आपके सामने आ सकूंगी। ऐसी मेरी बार-बार प्रार्थना है।

।। प्रकरण ।। १०० ।। चौपाई ।। १४९२ ।।

राग श्री

साथ जी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी न कोई दुष्ट।
धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट।। १ ।।

हे मेरे सिरदार सुन्दरसाथजी! सुनो, मेरे जैसा कोई दुष्ट नहीं है। मैं अखण्ड घर के सुखों को छोड़कर झूठी माया में लगी रही। मैंने चोर, चांडाल और ऊपरी मान-मर्यादा वालों जैसा काम किया।

प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भिष्ट।
साथ के चरन धोए पीजिए, ताको दिए मैं कष्ट।। २ ।।

मैंने धनी की वाणी को बार-बार सुनाकर अपने जीव को भ्रष्ट कर दिया है। जिन सुन्दरसाथ के चरण को धोकर पीना चाहिए, उनको मैंने कष्ट दिया।

मुख बानी केहेलाई बड़ी कर, मांहें ब्रह्म सृष्ट।
पंथ पैंडे संसार के ज्यों, होए चलाया इष्ट।। ३ ।।

ब्रह्मसृष्टियों में मुझे बड़ा बनाकर मेरे मुख से वाणी कहलाई और संसार के पंथ-पैंड़ों की तरह ही एक धर्म का इष्ट बनकर नया धर्म चलाया।

ले पंडिताई पड़ी प्रवाह में, कर कर ग्यान गोष्ट।
न्यारा हुआ न नेहेकाम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट।। ४ ।।

मैंने पण्डितों की तरह ज्ञान गोष्ठी (शास्त्रार्थ) की। माया की चाहना छोड़कर मैं अलग नहीं हो सकी और दृढ़ता के साथ पारब्रह्म को नहीं लिया।

अनेक अवगुन किए मैं साथसों, सो ए प्रकासूं सब।
छोड़ अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खैंचत हों अब।। ५ ।।

मैंने सुन्दरसाथ से बहुत अवगुण किए हैं। उनका मैं बखान करती हूं। अपने अहंकार को छोड़कर सुन्दरसाथ के चरणों में ही रहूंगी। इस तरह से मैं अपनी भूल मानती हूं।

एते दिन धनी धाम छोड़ के, दई साथ को सिखापन।
अब साथें मोको समझाई, तिन थें हुई चेतन।। ६ ।।

इतने दिन तक मैं धाम-धनी को छोड़कर सुन्दरसाथ को समझाती रही। अब सुन्दरसाथ ने मुझे समझाया, तब मुझे होश आया।

Nijanand App

कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान।
निरगुन होए न्यारी रहूं, छोड़ बड़ाई गुमान।। ७ ।।

मेरे सिरदार सुन्दरसाथ ने मेहरबान होकर मुझ पर कृपा की जो मुझे समझाया। अब अपने गुमान और अहंकार छोड़कर निर्गुण होकर न्यारी रहूं, यही अच्छा लगा।

दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई।
धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई।। ८ ।।

अब ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का समय आ गया है। अब सुन्दरसाथ में क्या सिरदारी करना? ऐसी बुद्धि को धिक्कार है जो अब भी मान चाहती है।

अब हुकम चढ़ाऊं सिर साथ को, बकसो मेरी भूल।
भी दीजो सिखापन मुझको ज्यों होऊं सनकूल।। ९ ।।

अब सुन्दरसाथ का जो हुकम होगा, मैं वही करूंगी। हे साथजी' मेरी भूल को माफ करो। मुझे समझाओ कि किस तरह से मैं धनी के सामने खड़ी हो सकूं।

इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी।
पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी।। १० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस माया में जिन्होंने भी सुन्दरसाथ पर नेतागिरी की, वह अन्त समय पुकार-पुकार के कहेंगे कि हमने जीती बाजी नेता बन के हारी है।

सो देख के ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पांउं लागी।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ऐसी मूर्ख और अभागिनी हो गई कि सुन्दरसाथ की हकीकत देखकर भी सावचेत नहीं हुई। अब सुन्दरसाथ के सिखापन (शिक्षा) को मैंने उनके चरण पकड़कर ग्रहण कर लिया।

।। प्रकरण ।। १०१ ।। चौपाई ।। १५०३ ।।

राग श्री

बुजरकी मारे रे साथ जी, बुजरकी मारे।
जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मान, बड़ाई ही सर्वनाश करती है। जो मान चाहते हैं उनका उद्धार कोई नहीं कर सकेगा?

आगूं कई मारे बुजरकिएं, जिन दृढ़ कर लई विश्वास।
सो देखे मैं अपनी नजरों, निकस चले निरास।। २ ।।

जिन्होंने दृढ़ता के साथ मान बड़ाई ली उनके जीवन को इसी मान बड़ाई ने नष्ट कर दिया। उनको निराश होकर जाते हुए मैंने अपनी आंखों से देखा है।

कई मारे कई मारत है, ऐसी बुजरकी एह।
न देत देखाई इन माया में, बिना बुजरकी जेह।। ३ ।।

यह मान-बड़ाई ऐसी कमबख्त है कि इसने कईयों के जीवन नष्ट कर दिए और कईयों के कर रही है' इस माया के संसार में कोई ऐसा नहीं दिखता जो मान-सम्मान न चाहता हो।

Nijanand App

कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान।
निरगुन होए न्यारी रहूं, छोड़ बड़ाई गुमान।। ७ ।।

मेरे सिरदार सुन्दरसाथ ने मेहरबान होकर मुझ पर कृपा की जो मुझे समझाया। अब अपने गुमान और अहंकार छोड़कर निर्गुण होकर न्यारी रहूं, यही अच्छा लगा।

दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई।
धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई।। ८ ।।

अब ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का समय आ गया है। अब सुन्दरसाथ में क्या सिरदारी करना? ऐसी बुद्धि को धिक्कार है जो अब भी मान चाहती है।

अब हुकम चढ़ाऊं सिर साथ को, बकसो मेरी भूल।
भी दीजो सिखापन मुझको ज्यों होऊं सनकूल।। ९ ।।

अब सुन्दरसाथ का जो हुकम होगा, मैं वही करूंगी। हे साथजी' मेरी भूल को माफ करो। मुझे समझाओ कि किस तरह से मैं धनी के सामने खड़ी हो सकूं।

इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी।
पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी।। १० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस माया में जिन्होंने भी सुन्दरसाथ पर नेतागिरी की, वह अन्त समय पुकार-पुकार के कहेंगे कि हमने जीती बाजी नेता बन के हारी है।

सो देख के ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पांउं लागी।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ऐसी मूर्ख और अभागिनी हो गई कि सुन्दरसाथ की हकीकत देखकर भी सावचेत नहीं हुई। अब सुन्दरसाथ के सिखापन (शिक्षा) को मैंने उनके चरण पकड़कर ग्रहण कर लिया।

॥ प्रकरण ॥ १०१ ॥ चौपाई ॥ १५०३ ॥

राग श्री

बुजरकी मारे रे साथ जी, बुजरकी मारे।
जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मान, बड़ाई ही सर्वनाश करती है। जो मान चाहते हैं उनका उद्धार कोई नहीं कर सकेगा?

आगूं कई मारे बुजरकिएं, जिन दृढ़ कर लई विश्वास।
सो देखे मैं अपनी नजरों, निकस चले निरास।। २ ।।

जिन्होंने दृढ़ता के साथ मान बड़ाई ली उनके जीवन को इसी मान बड़ाई ने नष्ट कर दिया। उनको निराश होकर जाते हुए मैंने अपनी आंखों से देखा है।

कई मारे कई मारत है, ऐसी बुजरकी एह।
न देत देखाई इन माया में, बिना बुजरकी जेह।। ३ ।।

यह मान-बड़ाई ऐसी कमबख्त है कि इसने कईयों के जीवन नष्ट कर दिए और कईयों के कर रही है' इस माया के संसार में कोई ऐसा नहीं दिखता जो मान-सम्मान न चाहता हो।

Nijanand App

जेती बुजरकी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार।
कुफरों में कुफर बुजरकी, काम क्रोध अहंकार।। ४ ।।

इस दुनियां में जितनी भी मान-बड़ाई है वह सब झूठे पाप के हथियार हैं। दुनियां में काम, क्रोध और अहंकार से भी बड़ा पाप मान-बड़ाई लेने का है।

इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे।
सो तेहेकीक आपे अपना, पाया फल सो भी खोवे।। ५ ।।

इस संसार में पारब्रह्म को ही बुजरकी शोभा देती है। वह इस योग्य हैं। उन्हें छोड़कर जो मान-बड़ाई लेता है, वह निश्चित ही अपना पाया फल भी गंवा देता है।

खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती।
बिना इस्क जो बुजरकी, सो सब आग जानो तेती।। ६ ।।

मान-बड़ाई चाहने वाला अपने आत्म बल को, बन्दगी के फल को और धनी के प्यार को खो देता है। बिना धनी के इश्क के मान-बड़ाई आग के समान है, अर्थात् परमहंस पद प्राप्त होने पर मान और बड़ाई का ध्यान ही नहीं होता।

दुनियां में दोऊ लड़त हैं, एक कुफर दूजा ईमान।
जीती कुफरें त्रैलोकी, ईमान दिया सबों भान।। ७ ।।

दुनियां में कुफर और ईमान की लड़ाई है। कुफर ने त्रिलोकी को जीत रखा है और सबके ईमान को तोड़ दिया है।

कुफर की हुई पातसाही, चौदे तबक चौफेर।
सब दुनियां को बेमुख करके, बैठा बुजरकी ले अंधेर।। ८ ।।

इसलिए चौदह लोकों में चारों तरफ कुफर की ही बादशाही है इस कुफर ने सारी दुनियां को पारब्रह्म से विमुख कर दिया है और अज्ञानता लेकर बुजरक बन बैठा है।

मोको मार छुड़ाई बंदगी, सो भी बुजरकी इन।
ऐसी दुस्मन ए बुजरकी, मैं देखी न एते दिन।। ९ ।।

इस मान-बड़ाई ने मुझे पारब्रह्म के चितवन से दूर कर दिया। मान बड़ाई जैसा दुश्मन मैंने आज दिन तक देखा नहीं।

पूरन मेहेर भई धनी की, दोऊ हादिऐं करी चेतन।
सो भी बुजरकी देखी दुस्मन, जो भिस्त दई सबन।। १० ।।

अब मुझ पर धनी की पूरी कृपा हुई और दोनों हादी (श्री राजजी और श्यामाजी) ने मुझे सावचेत (सावधान) कर दिया। अब मेरे हाथों से सारे संसार को बहिश्तें दिलवाने का काम करवाया। इतने बड़े काम होने पर भी बुजरकी दुश्मन के समान लगी।

जो कोई मारे इन दुस्मन को, करे सब दुनियां को आसान।
पोहोंचावे सबों चरन धनी के, तो भी लेना ना तिन गुमान।। ११ ।।

जो कोई इस मान-बड़ाई जैसे दुश्मन को मार देगा, उसका दुनियां में जीना सरल और सुगम हो जाएगा। दुनियां का भी वह सरल रास्ता हो जाएगा। वह सारी दुनियां को श्री राजजी के चरणों में पहुंचा करके भी अपने ऊपर अहंकार न लेगा।

Nijanand App

महामत कहे ईमान इस्क की, सुक्र गरीबी सबर।
इन विध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर।। १२ ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्हें अपने धनी के चरणों को प्राप्त करना हो, वह ईमान और इश्क के लिए गरीबी और नम्रता को जैसे भी धारण कर सके, तैसे करे।

|| प्रकरण || १०२ || चौपाई || १५१५ ||

राग श्री गौड़ी

जो तूं चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम।
साथ जाने तोको दुनियां, वह तो साधों करी हराम।। १ ।।

यदि तुम वैरागी बनकर भी मान-मर्यादा की चाहना रखते हो, तो दुनियां वाले तुम्हें साधु जरूर समझेंगे। वह वास्तव में, तुम हो नहीं, क्योंकि साधु लोग मान, प्रतिष्ठा को बुरा समझकर छोड़ देते हैं।

मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान।। २ ।।

जो मान-मर्यादा धनी के ध्यान करने में रुकावट डालती है उस प्रतिष्ठा को जूतों से ठुकरा दो। यह प्रतिष्ठा ही दज्जाल का रूप है जो धनी की पहचान नहीं करने देता।

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत।
तूं जिन देखे तिन को, ले अपनी अर्स खिलवत।। ३ ।।

दुनियां में कोई भला कहे या बुरा, उनकी तरफ मत देखो। तुम श्री राजजी के चरणों में ध्यान लगाओ।

दिल दलगीरी छोड़ दे, होत तेरा नुकसान।
जानत है गोविंद भेड़ा, याको पीठ दिए आसान।। ४ ।।

अपने दिल से संसार की आशा को छोड़ दो। इससे तुम्हारा नुकसान होता है। यह संसार मायावी मण्डल है। इसको सहज ही छोड़ दो। यही उपाय है।

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत।
ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत।। ५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं दुबारा इस माया की तरफ तुम मत देखना। परमधाम में जहां तुम्हारी परआतम है, वहां चलने में देरी हो रही है।

|| प्रकरण || १०३ || चौपाई || १५२० ||

कयामत आई रे साथ जी, कयामत आई।
वेद कतेब पुकारत आगम, जो क्यों न देखो मेरे भाई।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! दुनियां के कायम होने का वह समय आ गया है जिसके लिए वेद और कतेब भविष्यवाणी कर रहे थे। अब उसका विचार तुम क्यों नहीं करते?

आए स्यामाजीएं मोहे यों कह्या, ए खेल किया तुम कारन।
तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन।। २ ।।

श्यामाजी ने आकर मुझे कहा कि यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। तुम खेल देखने आए हो। मैं तुम्हें बुलाने आई हूं।

Nijanand App

महामत कहे ईमान इस्क की, सुक्र गरीबी सबर।
इन विध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर।। १२ ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्हें अपने धनी के चरणों को प्राप्त करना हो, वह ईमान और इश्क के लिए गरीबी और नम्रता को जैसे भी धारण कर सके, तैसे करे।

|| प्रकरण || १०२ || चौपाई || १५१५ ||

राग श्री गौड़ी

जो तूं चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम।
साध जाने तोको दुनियां, वह तो साधों करी हराम।। १ ।।

यदि तुम वैरागी बनकर भी मान-मर्यादा की चाहना रखते हो, तो दुनियां वाले तुम्हें साधु जरूर समझेंगे। वह वास्तव में, तुम हो नहीं, क्योंकि साधु लोग मान, प्रतिष्ठा को बुरा समझकर छोड़ देते हैं।

मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान।। २ ।।

जो मान-मर्यादा धनी के ध्यान करने में रुकावट डालती है उस प्रतिष्ठा को जूतों से ठुकरा दो। यह प्रतिष्ठा ही दज्जाल का रूप है जो धनी की पहचान नहीं करने देता।

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत।
तूं जिन देखे तिन को, ले अपनी अर्स खिलवत।। ३ ।।

दुनियां में कोई भला कहे या बुरा, उनकी तरफ मत देखो। तुम श्री राजजी के चरणों में ध्यान लगाओ।

दिल दलगीरी छोड़ दे, होत तेरा नुकसान।
जानत है गोविंद भेड़ा, याको पीठ दिए आसान।। ४ ।।

अपने दिल से संसार की आशा को छोड़ दो। इससे तुम्हारा नुकसान होता है। यह संसार मायावी मण्डल है। इसको सहज ही छोड़ दो। यही उपाय है।

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत।
ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत।। ५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं दुबारा इस माया की तरफ तुम मत देखना। परमधाम में जहां तुम्हारी परआतम है, वहां चलने में देरी हो रही है।

|| प्रकरण || १०३ || चौपाई || १५२० ||

कयामत आई रे साथ जी, कयामत आई।
वेद कतेब पुकारत आगम, जो क्यों न देखो मेरे भाई।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! दुनियां के कायम होने का वह समय आ गया है जिसके लिए वेद और कतेब भविष्यवाणी कर रहे थे। अब उसका विचार तुम क्यों नहीं करते?

आए स्यामाजीएं मोहे यों कह्या, ए खेल किया तुम कारन।
तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन।। २ ।।

श्यामाजी ने आकर मुझे कहा कि यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। तुम खेल देखने आए हो। मैं तुम्हें बुलाने आई हूं।

Nijanand App

महामत कहे ईमान इस्क की, सुक्र गरीबी सबर।
इन बिध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर।। १२ ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्हें अपने धनी के चरणों को प्राप्त करना हो, वह ईमान और इश्क के लिए गरीबी और नम्रता को जैसे भी धारण कर सके, तैसे करे।

॥ प्रकरण ॥ १०२ ॥ चौपाई ॥ १५१५ ॥

राग श्री गौड़ी

जो तूं चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम।
साध जाने तोको दुनियां, वह तो साधों करी हराम।। १ ।।

यदि तुम वैरागी बनकर भी मान-मर्यादा की चाहना रखते हो, तो दुनियां वाले तुम्हें साधु जरूर समझेंगे। वह वास्तव में, तुम हो नहीं, क्योंकि साधु लोग मान, प्रतिष्ठा को बुरा समझकर छोड़ देते हैं।

मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान।। २ ।।

जो मान-मर्यादा धनी के ध्यान करने में रुकावट डालती है उस प्रतिष्ठा को जूतों से ठुकरा दो। यह प्रतिष्ठा ही दज्जाल का रूप है जो धनी की पहचान नहीं करने देता।

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत।
तूं जिन देखे तिन को, ले अपनी अर्स खिलवत।। ३ ।।

दुनियां में कोई भला कहे या बुरा, उनकी तरफ मत देखो। तुम श्री राजजी के चरणों में ध्यान लगाओ।

दिल दलगीरी छोड़ दे, होत तेरा नुकसान।
जानत है गोविंद भेड़ा, याको पीठ दिए आसान।। ४ ।।

अपने दिल से संसार की आशा को छोड़ दो। इससे तुम्हारा नुकसान होता है। यह संसार मायावी मण्डल है। इसको सहज ही छोड़ दो। यही उपाय है।

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत।
ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत।। ५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं दुबारा इस माया की तरफ तुम मत देखना। परमधाम में जहां तुम्हारी परआतम है, वहां चलने में देरी हो रही है।

॥ प्रकरण ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥ १५२० ॥

कयामत आई रे साथ जी, कयामत आई।
वेद कतेब पुकारत आगम, जो क्यों न देखो मेरे भाई।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! दुनियां के कायम होने का वह समय आ गया है जिसके लिए वेद और कतेब भविष्यवाणी कर रहे थे। अब उसका विचार तुम क्यों नहीं करते?

आए स्यामाजीएं मोहे यों कह्या, ए खेल किया तुम कारन।
तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन।। २ ।।

श्यामाजी ने आकर मुझे कहा कि यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। तुम खेल देखने आए हो। मैं तुम्हें बुलाने आई हूं।

Nijanand App

कागद आया वतन का, कासद होए ल्याए फुरमान।
आया खातिर अपने, देने को ईमान।। ३ ।।

रसूल साहब डाकिया बनकर तुम्हारे घर से फरमान (कुरान) लाए हैं। वह आपको ईमान देने के लिए आए हैं।

अग्यारे सै साल का, आए साखें लिखी आगम।
माहें अनुभव लिख्या अपना, सो पोहोंचाया खसम।। ४ ।।

कुरान में पहले से ही ग्यारह सौ वर्ष पहले की भविष्यवाणी कही है। उसमें रसूल साहब के अनुभव को बताने को लिखा है। श्री राजजी महाराज ने ऐसा ज्ञान भेजा।

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान।
सो साहेब काजी होए के, जाहेर करसी कुरान।। ५ ।।

जिस धाम-धनी को किसी ने देखा, सुना नहीं है वह खुद काजी बनकर कुरान के भेद खोलेंगे।

जेते वचन कुरान में, सो सब स्यामा जी दई साख।
सो सारे इन लीला के, कहूं केते हजारों लाख।। ६ ।।

जो वचन कुरान में लिखे हैं वही श्यामाजी ने भी बताये। इस तरह से इस जागनी लीला के हजारों लाखों प्रमाण हैं।

सो कुंजी स्यामा जी दई, हकीकत वतन।
माएने खुले सब तिन से, जो छिपे हुते बातन।। ७ ।।

परमधाम की हकीकत का वर्णन करने वाली ज्ञान की वह कुंजी (तारतम) श्यामाजी ने लाकर दी जिससे कुरान के सब छिपे भेद खुल गए।

और भी फुरमान में लिख्या, कोई खोल ना सके किताब।
सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब।। ८ ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि इसके भेदों को श्री प्राणनाथजी ही खोलेंगे जिनको इमाम मेंहदी का खिताब प्राप्त है इसे और कोई नहीं खोल सकेगा।

वसीयत नामे आए दरगाह सें, जाहेर करी कयामत।
ए हकीकत तुम पर लिखी, देखाए दिन सरत।। ९ ।।

मक्का से वसीयतनामों के आने से कयामत जाहिर हुई। उनमें कयामत की हकीकत और कयामत का दिन तुमको बताया है।

या वेद या कतेब, सब आए तुम खातिर।
सब साख तुमारी देवहीं, जो देखो नीके कर।। १० ।।

वेद हैं या कतेब, सब तुम्हारे वास्ते आए हैं। यदि अच्छी तरह से विचार करके देखो तो सब तुम्हारी गवाही देते हैं।

साख देवे सब दुनियां, वैराट चौदे भवन।
समझे सारे देखहीं, जिनका दिल हुआ रोसन।। ११ ।।

चौदह लोकों की सारी दुनियां तुम्हारी गवाही देती है और ब्रह्मसृष्टियां जिनकी आत्मा जागृत हो गई है, वह सब देख रही हैं।

Nijanand App

ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत।
आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत।। १२ ।।

यह सब गवाहियां कहती हैं कि कयामत नजदीक आ गई है। तुम भी सावचेत क्यों नहीं होते, जबकि कयामत सिर पर आ गई है?

साथ जी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोंचत।
चेत सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत।। १३ ।।

श्री महामतिजी पुकार कर कहते हैं, हे साथजी! चेत (जाग) सको तो चेतो। माया के विकारों को छोड़कर दिल निर्मल किए बिना अखण्ड घर न जा सकेंगे।

|| प्रकरण || १०४ || चौपाई || १५३३ ||

राग श्री

मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्ट को, दिल की दीजो बताए।।। टेक ।।

जो कोई ब्रह्म सृष्ट का, सो देखियो दिल विचार।
कहियो तेहेकीक करके, जिनों जो किया करार।। १ ।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टियों से दिल की बातें पूछ रहे हैं। वह कहते हैं कि जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो, वह विचार करें, जिन्होंने जो निश्चय किया है, वह बताओ।

सब कोई बात विचारियो, देख अपनी अपनी अकल।
सृष्ट तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल।। २ ।।

सब कोई इस बात का अपनी अक्ल से विचार करना कि जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि एक-दूसरे से मिलकर संसार में कैसे रहती हैं?

सो तीनों अब जुदे होएसी, है हाल तुम्हारा क्यों कर।
दिन एते जान्या त्यों किया, अब आए पोहोंची आखिर।। ३ ।।

अब यह तीनों कयामत के समय में अलग-अलग हो जाएंगी। इतने दिन तक तुमने जैसा चाहा वैसा किया। अब तुम्हारा क्या हाल है?

पूजे परमेश्वर करके, दिल में राखें दोए।
तिन कारन पूछत हों, कौन विध याकी होए।। ४ ।।

जो मुझे प्राणनाथ करके पूजते हैं और दिल में दुविधा रखते हैं। इस कारण पूछती हूं कि अब उनका क्या हाल होगा?

कहें परमेश्वर मुख थें, दिल चोरावें जे।
दगा देवें मांहें दुस्मन, क्या नहीं देखत हो ए।। ५ ।।

मुझे अपने मुख से प्राणनाथ कहते हैं और दिल की बात छिपाते हैं। सुन्दरसाथ में बैठकर दगा देते हैं, दुश्मनी करते हैं। क्या इस बात को नहीं देखते हो।

कहावत हैं ब्रह्म सृष्ट में, धनीसों छिपावें बात।
दिल की करें औरन सों, ए कौन सृष्ट की जात।। ६ ।।

अपने को ब्रह्मसृष्टि कहते हैं और धनी से बातें छिपाते हैं। दिल की बातें औरों को बताते हैं। इनको किस सृष्टि का माना जाए?

Nijanand App

ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत।
आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत।। १२ ।।

यह सब गवाहियां कहती हैं कि कयामत नजदीक आ गई है। तुम भी सावचेत क्यों नहीं होते, जबकि कयामत सिर पर आ गई है?

साथ जी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोंचत।
चेत सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत।। १३ ।।

श्री महामतिजी पुकार कर कहते हैं, हे साथजी! चेत (जाग) सको तो चेतो। माया के विकारों को छोड़कर दिल निर्मल किए बिना अखण्ड घर न जा सकेंगे।

॥ प्रकरण ॥ १०४ ॥ चौपाई ॥ १५३३ ॥

राग श्री

मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्ट को, दिल की दीजो बताए।।। टेक ।।

जो कोई ब्रह्म सृष्ट का, सो देखियो दिल विचार।
कहियो तेहेकीक करके, जिनों जो किया करार।। १ ।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टियों से दिल की बातें पूछ रहे हैं। वह कहते हैं कि जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो, वह विचार करें, जिन्होंने जो निश्चय किया है, वह बताओ।

सब कोई बात विचारियो, देख अपनी अपनी अकल।
सृष्ट तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल।। २ ।।

सब कोई इस बात का अपनी अक्ल से विचार करना कि जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि एक-दूसरे से मिलकर संसार में कैसे रहती हैं?

सो तीनों अब जुदे होएसी, है हाल तुम्हारा क्यों कर।
दिन एते जान्या त्यों किया, अब आए पोहोंची आखिर।। ३ ।।

अब यह तीनों कयामत के समय में अलग-अलग हो जाएंगी। इतने दिन तक तुमने जैसा चाहा वैसा किया। अब तुम्हारा क्या हाल है?

पूजे परमेश्वर करके, दिल में राखें दोए।
तिन कारन पूछत हों, कौन विध याकी होए।। ४ ।।

जो मुझे प्राणनाथ करके पूजते हैं और दिल में दुविधा रखते हैं। इस कारण पूछती हूं कि अब उनका क्या हाल होगा?

कहें परमेश्वर मुख थें, दिल चोरावें जे।
दगा देवें मांहें दुस्मन, क्या नहीं देखत हो ए।। ५ ।।

मुझे अपने मुख से प्राणनाथ कहते हैं और दिल की बात छिपाते हैं। सुन्दरसाथ में बैठकर दगा देते हैं, दुश्मनी करते हैं। क्या इस बात को नहीं देखते हो।

कहावत हैं ब्रह्म सृष्ट में, धनीसों छिपावें बात।
दिल की करें औरन सों, ए कौन सृष्ट की जात।। ६ ।।

अपने को ब्रह्मसृष्टि कहते हैं और धनी से बातें छिपाते हैं। दिल की बातें औरों को बताते हैं। इनको किस सृष्टि का माना जाए?

Nijanand App

ए जो दोए दिल राखत हैं, ए तो दुनियां की रीत।
मांहें मैले बाहेर उजले, ए जीव सृष्ट की प्रीत।। ७ ।।

दुनियां वालों के दो दिल होते हैं। वह अन्दर से दुश्मन और बाहर से दोस्त दिखाई देते हैं। यह जीवसृष्टि का तरीका है।

एकै बात ब्रह्म सृष्ट की, दोए दिल में नाहें।
सोई करें धनीसों जाहेर, जैसी होए दिल मांहें।। ८ ।।

ब्रह्मसृष्टि के दो दिल नहीं होते। उनके दिल में एक ही बात होती है। जो उनके दिल में होती है, वह सब धनी को बता देते हैं।

मिनों मिनें गुझ करें, निस दिन एही चितवन।
बुरा चाहें तिनका, जिन देखाया मूल वतन।। ९ ।।

जो दिन-रात आपस में गुझ (गुह्य) बातें करते हैं और रात-दिन उसी में उनका चित्त लगा रहता है। जिसने उनको परमधाम का रास्ता दिखाया है उसी का ही बुरा चाहते हैं।

पीठ चोरावें धनी सों, करें मिनो मिने खोल।
ए देखो अंदर की जाहेर, देखावें अपना मोल।। १० ।।

ऐसे सुन्दरसाथ धनी के सामने नहीं आते। आपस में दिल खोलकर बातें करते हैं। यह उनके अन्दर की कपट वाली बातें ही उनको धनी की नजर से गिराती हैं।

करें धनी सों चोरियां, चोरों सों तेहे दिल।
यों जनम खोवें फितुए मिने, रात दिन हिल मिल।। ११ ।।

ऐसे सुन्दरसाथ धनी से मुंह छिपाते हैं और उन चोरों से दोस्ती करते हैं, जिनसे रात-दिन हिल-मिल करके अपने जीवन को व्यर्थ में गंवाते हैं।

करें लड़ाइयां आप में, कहें हम है धाम के।
क्यों ना विचारो चितमें, कैसा जुलम है ए।। १२ ।।

आपस में लड़ते हैं और कहते हैं कि हम परमधाम के हैं। हे सुन्दरसाथजी! विचार कर देखो। यह कितना बड़ा गुनाह है?

चरचा सुनें वतन की, जित साथ स्यामा जी स्याम।
सो फल चरचा को छोड़ के, जाए लेवत हैं हराम।। १३ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ जहां है, उस अखण्ड घर परमधाम की चर्चा सुनते हैं। उस चर्चा का फल छोड़कर फिर माया को जा चिपकते हैं।

बाहेर देखावें बंदगी, माहें करें कुकरम काम।
महामत पूछे ब्रह्मसृष्ट को, ए बैकुंठ जासी के धाम।। १४ ।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टियों से पूछते हैं कि जो बाहर से बन्दगी दिखाते हैं और अन्दर से छल-कपट दिखाते हैं वह अन्त समय में बैकुण्ठ जाएंगे कि धाम? अर्थात् विचारो। यह ब्रह्मसृष्टि है या जीवसृष्टि?

।। प्रकरण ।। १०५ ।। चौपाई ।। १५४७ ।।

Nijanand App

राग श्री

ए सुच कैसे होवहीं, तुम देखो याकी विध।
अनेक आचार कर कर थके, पर हुआ न कोई सुध।।१।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथ से पूछते हैं कि यह शरीर कैसे पवित्र होगा? तुम इसकी हकीकत देखो। बहुत से लोगों ने अनेक उपाय किए, पर कोई भी पवित्र नहीं हुआ।

निस दिन ग्राहिए प्रेम सों, जुगल सरूप के चरन।
निरमल होना याही सों, और धाम बरनन।।२।।

यहां पाक होने का एक ही तरीका है कि दिन-रात श्री राजजी, श्री श्यामाजी के चरणों में प्रेम से चित्त लगाओ और धाम के पच्चीस पक्षों का चितवन करो।

इन विध नरक जो छोड़िए, और उपाय कोई नाहें।
भजन बिना सब नरक है, पच पच मरिए माहें।।३।।

इस तरह से इस नरक से जीव निर्मल हो सकते हैं और दूसरा कोई उपाय नहीं है। यहां पर भजन के बिमा सब नरक है। बार-बार मरना-जीना पड़ता है।

धनी बिना अंग निरमल चाहे, सो देखो चित ल्याए।
क्यों निरमल अंग होवहीं, जो इन विध रच्यो बनाए।।४।।

विचार कर देखो कि धनी के बिना यह तन कैसे निर्मल हो सकता है, जिसकी रचना ही ऐसे तरीके से हुई है?

दोऊ मैले जब मिले, बांध गोली मांस रचाए।
नरक उदर दास मास लों, पूरो कियो पचाए।।५।।

जब दो गन्दे तन (पति-पत्नी) मिलते हैं तो उनके नरक से एक गोली बनती है। उस पर मांस चढ़ता है और दस महीने तक उसमें सड़ना पड़ता है।

जठरा अगिन तले करी, ऊपर ऊंधे मुख लटकाए।
बोल न सके ठौर सकड़ी, काढ़यो मुरदे ज्यों छुटकाए।।६।।

पेट के अन्दर जठराग्नि में वह जलता है। औंधे मुंह लटका रहता है। जगह इतनी तंग होती है कि वहां बोल नहीं सकता और मुर्दे की तरह बाहर निकलना पड़ता है।

हाड़ मांस लोहू रंगा, ऊपर चाम मढ़ाए।
नव द्वार रचे नरक के, निस दिन बहे बलाए।।७।।

हड्डी, मांस, खून और नसें जिनके ऊपर चमड़ी चढ़ी होती है और उनसे नौ नरक के द्वार बने हैं जिससे दिन-रात कचड़ा निकलता है।

ऊपर बंध बालन के, जलस गुदा अंतर छाल।
चले नदी मल मूत्र की, कहूं केतो नरक को हाल।।८।।

ऊपर सिर पर बालों की गांठ तथा खाल के अन्दर मांस के लोथड़े तथा नसें होती हैं जिनके अन्दर मल-मूत्र की नदी बहती है। ऐसे नरक का कहां तक वर्णन करूं?

Nijanand App

पंचामृत पाक बनाए, भोजन भयो रुचाए।
अंग संग ले निकस्यो, कौन हाल भयो ताए।। ९ ।।

ऐसे गन्दे शरीर को पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद तथा शक्कर) बनाकर सुन्दर-सुन्दर भोजन बनाकर खिलाएं, तो जब यही भोजन अंग से बाहर निकलता है तो उसी भोजन का क्या हाल होता है?

अंत आहार सूकर कूकर को, या कौआ कीरा खाए।
या तो अगिन जलाए के, करके खाक उड़ाए।। १० ।।

और शरीर का अन्त हो जाने पर, अर्थात् मर जाने पर उस मुर्दा शरीर को सूअर, कुत्ता, कौआ और कीड़े खा जाते हैं या उसे अग्नि संस्कार करके राख को उड़ा देते हैं।

ए नरक निरमल क्यों होवहीं, जो ऊपर से अंग धोए।
अंग धोए मन निरमल, कबहूं न हुआ कोए।। ११ ।।

ऐसा नरक से भरा यह शरीर ऊपर से धोने से निर्मल कैसे होगा? किसी का मन नहाने से निर्मल नहीं होता।

धिक धिक नीची चातुरी, विचार न अंतस्करन।
त्रैलोकी इन अंग संग, गई खोए अखंड वतन।। १२ ।।

धिक्कार है ऐसी नीच चतुराई को जिन्होंने अपनी बुद्धि से विचार नहीं किया और इसी अंग से सांसारिक जीव-प्राणियों के साथ चिपके रहे और अखण्ड घर को खो दिया।

ए सुच क्योंए न होवहीं, जो सौ बेर अन्हाए।
ए तो पिंड नरकै भस्यो, देखो अन्तर नजर फिराए।। १३ ।।

यह शरीर सौ बार नहाने से पवित्र नहीं किया जा सकता। विचार करके देखो, यह पूरा शरीर नरक से भरा है।

विवेक विचार न पाइए, ऊपर टेढ़ी पाग लटकाए।
आप देखे मांहें आरसी, सिर आसमान लों ले जाए।। १४ ।।

ऐसे तन विवेक और विचार नहीं रखते और सिर पर नेतागीरी की टोपी पहनकर घूमते हैं और शीशे में मुंह देखकर अपने अहंकार में डूबे रहते हैं।

नहीं भरोसो खिन को, बरस मास और दिन।
ए तो दम पर बांधिया, तो भी भूल जात भजन।। १५ ।।

इस शरीर का यहां एक क्षण का भी भरोसा नहीं है। वर्ष, मास और दिन की बात कौन कर सकता है? यह शरीर तो सांसों की गिनती पर खड़ा हुआ है, ऐसा समझकर भी लोग भजन भूल जाते हैं।

आतम धनी पेहेचानिए, निरमल एही उपाए।
महामत कहे समझ धनी के, ग्रहिए सो प्रेमें पाए।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस शरीर को निर्मल करने का सिर्फ एक ही उपाय है कि आत्मा के धनी को पहचानो और उनके चरण कमलों को प्रेम से ग्रहण कर लो।

।। प्रकरण ।। १०६ ।। चौपाई ।। १५६३ ।।

Nijanand App

राग श्री

झूठ सब्द ब्रह्मांड में, कहावत याहीं में सांच।
ए दोऊ झूठे होत हैं, वास्ते पिंड जो कांच।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस संसार में झूठे ज्ञान को भी लोग सच्चा समझते हैं। मिटने वाले शरीर के सुख को सच समझते हैं। यहां का सत्य और झूठ दोनों ही नाशवान हैं।

ए लगे दोऊ सुन्य को, निराकार सामिल।
निरंजन या निरगुन, सो भी रहे इन भिल।।२।।

शब्द और ब्रह्माण्ड दोनों ही निराकार से पैदा हुए हैं। निरंजन (आंख से नहीं दिखने वाला) और निर्गुण (गुण रहित) दोनों ही निराकार में समा जाते हैं।

एकै साइत पैदा हुए, और फना होसी एक बेर।
ए क्यों पावें अद्वैत को, जो ढूंढे मांहें अंधेर।।३।।

यह एक समय में पैदा हुए हैं उसी समय में नष्ट हो जाएंगे, इसलिए पारब्रह्म जो अद्वैत है उसको कैसे पाएं? जिसे इस संसार के लोग इसी अन्धकार में ढूंढ रहे हैं।

ए न्यारे को क्यों पावहीं, पैदास सारी इन।
सत सब्द ब्रह्मांड में आया, पर ए न छोड़े कोई सुंन।।४।।

पारब्रह्म जो इस संसार से न्यारा है इस संसार की जीवसृष्टि उसे कैसे पा सकती है? पारब्रह्म की अखण्ड वाणी संसार में आई, पर दुनियां वाले शून्य, निराकार को छोड़कर आगे नहीं जा पाते।

जीव विष्णु महाविष्णु लों, याके कई विध नाम धरत।
अग्यान ग्यान ले विग्यान, यों कई विध खेल खेलत।।५।।

संसार वाले जीव विष्णु और महाविष्णु को ही सच्चिदानंद पारब्रह्म कहते हैं। ऐसे अज्ञानी लोग पारब्रह्म के ज्ञान को संसार में ही घटाकर कई प्रकार के धर्म, पंथ चलाते हैं।

एक अनेक सब इनमें, इत सांच झूठ विस्तार।
अछर ब्रह्म क्यों पावहीं, भई आड़ी निराकार।।६।।

एक सच्चिदानन्द पारब्रह्म को अनेक झूठे मिट जाने वाले देवी-देवता के रूप में इस तरह से सत को झूठ के रूप में मान रहे हैं। यह अक्षर ब्रह्म जो अखण्ड है, को कैसे पा सकते हैं? क्योंकि इनका ज्ञान निराकार से आगे नहीं जाता।

अछर अछरातीत कहावहीं, सो भी कहियत इत सब्द।
सब्दातीत क्यों पावहीं, ए जो दुनियां हद।।७।।

जिनको अक्षर तथा अक्षरातीत कहा जाता है उसको भी यहां के शब्दों से यहीं पर ही घटा लेते हैं। इस तरह से हद की दुनियां उस पारब्रह्म को, जो शब्दातीत है, कैसे प्राप्त कर सकती है?

पांच तत्व गुन तीनों ही, ए गोलक चौदे भवन।
निरगुन सुन्य या निरंजन, ज्यों पैदा त्योंही पतन।।८।।

पांच तत्व, तीन गुण, चौदह लोक, निर्गुण, शून्य या निरंजन जैसे पैदा होते हैं वैसे ही मिट जाते हैं। सबलिक ब्रह्म की नींद, आदि नारायण हैं जिनके सपने से सारा ब्रह्माण्ड बना है।

Nijanand App

ए सुपना नींद सुरत का, खेले अछर आतम।
हम भी आए देखने, खसम के हुकम।। ९ ।।

यह स्वप्न का संसार अक्षर की सुरता से बना है, धनी के हुकम से अक्षर की आत्म और हम भी देखने आए हैं।

ब्रह्मसृष्ट के कारने, खेल जो रचिया ए।
खेल देखाए सत वतन, महामत आए ले।। १० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते ही यह खेल बनाया है और खेल दिखाकर इनको अखण्ड घर ले चलेंगे।

|| प्रकरण || १०७ || चौपाई || १५७३ ||

राग श्री

फुरमान मेरे मेहेबूब का, ले आया अर्स से रसूल।
भेज्या अपनी अरवाहों पर, साहेब होए सनकूल।। १ ।।

मेरे लाडले धनी ने अपनी रूहों पर प्रसन्न होकर रूहों के वास्ते रसूल साहब के द्वारा कुरान भेजा।

सोई खोले अपनी इसारते, जो अर्स की अरवाहें।
एही परीछा जाहेर, और काहूं न खोल्या जाए।। २ ।।

जो परमधाम की रूहें होंगी वही इस कुरान के छिपे भेदों को समझकर खोल सकेंगी। जो इन्हें खोल सकेगा वही अर्श की अरवाह है। यही उनकी परीक्षा है। दूसरा कोई इन्हें नहीं खोल सकेगा।

बरकत इन रूहन की, भिस्त देसी सबन।
ले दे हिसाब फजर को, ले चलसी रूहें वतन।। ३ ।।

इन रूहों की ही कृपा से सारे संसार को अखण्ड बहिश्त का सुख मिलेगा। न्याय के दिन सबका न्याय करके धनी रूहों को अपने घर ले चलेंगे।

मुझे भेज्या कासिद कर, मैं ल्याया फुरमान।
एही जानो तुम तेहेकीक, दिलसों आकीन आन।। ४ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि खुदा ने मुझे पत्रवाहक बनाकर भेजा है। मैं खुदा का फरमान लेकर आया हूं। तुम इस बात को निश्चित जानो और दिल में यकीन रखो।

मैं देत हों खुसखबरी, जो रबानी अरवाहें।
वे उतरे अर्स अजीम से, जो हैं हमेसगी इसदाए।। ५ ।।

ए दुनियां वालो! मैं तुम्हें शुभ समाचार सुनाता हूं कि जो पारब्रह्म की आत्माएं हैं और जो सदा अखण्ड हैं वह परमधाम से उतरकर खेल में आई हैं।

रसूल कहे मैं आखिरी, मेरे पीछे न आवे कोए।
कह्या रूह अल्ला की आवसी, और मेंहेदी इमाम सोए।। ६ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं आखिरी पैगम्बर हूं। मेरे पीछे अब कोई पैगम्बर नहीं आएगा। अब खुद रूह अल्लाह (श्यामाजी) और वही इमाम मेंहदी कहलाएंगे।

Nijanand App

ए सुपना नींद सुरत का, खेले अछर आतम।
हम भी आए देखने, खसम के हुकम।। ९ ।।

यह स्वप्न का संसार अक्षर की सुरता से बना है, धनी के हुकम से अक्षर की आत्म और हम भी देखने आए हैं।

ब्रह्मसृष्ट के कारने, खेल जो रचिया ए।
खेल देखाए सत वतन, महामत आए ले।। १० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते ही यह खेल बनाया है और खेल दिखाकर इनको अखण्ड घर ले चलेंगे।

।। प्रकरण ।। १०७ ।। चौपाई ।। १५७३ ।।

राग श्री

फुरमान मेरे मेहेबूब का, ले आया अर्स से रसूल।
भेज्या अपनी अरवाहों पर, साहेब होए सनकूल।। १ ।।

मेरे लाडले धनी ने अपनी रूहों पर प्रसन्न होकर रूहों के वास्ते रसूल साहब के द्वारा कुरान भेजा।

सोई खोले अपनी इसारते, जो अर्स की अरवाहें।
एही परीछा जाहेर, और काहूं न खोल्या जाए।। २ ।।

जो परमधाम की रूहें होंगी वही इस कुरान के छिपे भेदों को समझकर खोल सकेंगी। जो इन्हें खोल सकेगा वही अर्श की अरवाह है। यही उनकी परीक्षा है। दूसरा कोई इन्हें नहीं खोल सकेगा।

बरकत इन रूहन की, भिस्त देसी सबन।
ले दे हिसाब फजर को, ले चलसी रूहें वतन।। ३ ।।

इन रूहों की ही कृपा से सारे संसार को अखण्ड बहिश्त का सुख मिलेगा। न्याय के दिन सबका न्याय करके धनी रूहों को अपने घर ले चलेंगे।

मुझे भेज्या कासिद कर, मैं ल्याया फुरमान।
एही जानो तुम तेहेकीक, दिलसों आकीन आन।। ४ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि खुदा ने मुझे पत्रवाहक बनाकर भेजा है। मैं खुदा का फरमान लेकर आया हूं। तुम इस बात को निश्चित जानो और दिल में यकीन रखो।

मैं देत हों खुसखबरी, जो रबानी अरवाहें।
वे उतरे अर्स अजीम से, जो हैं हमेसगी इसदाए।। ५ ।।

ए दुनियां वालो! मैं तुम्हें शुभ समाचार सुनाता हूं कि जो पारब्रह्म की आत्माएं हैं और जो सदा अखण्ड हैं वह परमधाम से उतरकर खेल में आई हैं।

रसूल कहे मैं आखिरी, मेरे पीछे न आवे कोए।
कह्या रूह अल्ला की आवसी, और मेहेदी इमाम सोए।। ६ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं आखिरी पैगम्बर हूं। मेरे पीछे अब कोई पैगम्बर नहीं आएगा। अब खुद रूह अल्लाह (श्यामाजी) और वही इमाम मेंहदी कहलाएंगे।

Nijanand App

रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे ऊपर मुद्दार।
सोई इमाम मेंहेदी, याकी बुजरकी बेसुमार।।७ ।।

इस खेल में आकर रूह अल्लाह दो तनों में लीला करेंगे। दूसरे तन से ही सारा काम पूरा होगा। उसी दूसरे तन को इमाम मेंहदी कहते हैं जिनकी साहेबी बेशुमार है।

मैं आया हों अव्वल, आखिर आवेगा खुदाए।
काजी होए के बैठसी, करसी सबों कजाए।।८ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं पहले से ही समाचार देने आया हूं। आखिर में खुद खुदा आएंगे। वह न्यायाधीश बनकर बैठेंगे और सबका न्याय करेंगे।

साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब।
रूह अल्ला मिसल गाजियो, मोमिन उतरे तब।।९ ।।

इसी के अनुसार रसूल साहब के नौ सौ नब्बे वर्ष और नौ महीने के बाद श्यामाजी अर्श से मोमिनों को (मर्द जमात) लेकर खेल में उतरे।

गिरो बनी असराईल, सो मिसल गाजियों जान।
होए कबूल बंदगी उनसे, इन विध कहे फुरमान।।१० ।।

कुरान में इस प्रकार लिखा है कि इब्राहीम के बेटे असराईल की जमात में ही मर्द मोमिन होंगे, अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के नजरी बेटे मेहराज ठाकुर (श्री प्राणनाथजी) की जमात ही अर्श की ब्रह्मसृष्टियां होंगी और मर्द मोमिनों की बन्दगी ही स्वीकार होगी।

एक निमाज की हजार, एही करसी कबूल।
कई कही महंमद आखिर सिफत, सो भी इन बीच होसी रसूल।।११ ।।

श्री प्राणनाथजी के सुन्दरसाथ की एक बन्दगी का एक हजार गुना फल खुदा देगा। इस तरह से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की महिमा का वर्णन कई तरह से किया है और यह भी लिखा है कि रसूल साहब इनके साथ आएंगे।

एही गिरो रबानी, रूहें बीच दरगाह।
कई हजारों सिफतें इन की, माहें बुजरक रूह अल्लाह।।१२ ।।

यह मर्द मोमिनों की जमात ही खुदाई जमात है। उनकी हजारों सिफतें कुरान में लिखी हैं। इनमें सिरदार रूह अल्लाह (श्यामाजी) हैं। यही जमात (गिरोह) परमधाम की रहने वाली है।

जाहेर महंमद पुकारहीं, फुरमान ल्याया मैं।
कई हजारों बातें करी, साहेब की सूरत सें।।१३ ।।

रसूल मुहम्मद जाहिरी में कह रहे हैं कि मैं खुदा का फरमान लाया हूं और मैंने खुदा का दर्शन किया है और हजारों बातें की हैं।

कई रद बदलें करी साहेब सों, अपनी उमत के वास्ते।
या विध कलाम कई लिखे, सो पढ़े न मानें ए।।१४ ।।

मैंने ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते खुदा से कई प्रकार से रद-बदल (बातचीत) की हैं। पढ़े-लिखे ज्ञानी लोग मुल्ला-काजी इन बातों को नहीं मानते (क्योंकि यह खुदा को निराकार समझते हैं), जबकि रसूल साहब कहते हैं कि मैंने खुदा से बातें की हैं।

Nijanand App

यों लिख्या है कई विध, पर समझे ना बेसहूर।
दुनी पढ़ पढ़ अपनी अकलें, कई करें मजकूर।। १५ ।।

कुरान में कई तरह से लिखा है, पर यह बेशहूर मुल्ला-काजी और दुनियां वाले नहीं समझते। दुनियां वाले अपनी अक्ल से कुरान को पढ़-पढ़कर कई तरह के अर्थ निकालते हैं।

बिना आकीने पढ़हीं, अपनी अकलें करें बयान।
सो सुनाए सुनाए दुनी को, कई किए बेईमान।। १६ ।।

यह दुनियां वाले कुरान को बिना यकीन के पढ़ते हैं (अर्थात् खुदा की सूरत नहीं मानते) और अपनी अक्ल (बुद्धि) से ही तरह-तरह के अर्थ कुरान के सुनाते हैं। इस तरह के अर्थ सुनाकर दुनियां को बेईमान बनाते हैं।

एक अचरज ए देख्या बड़ा, कहे बेचून बेचगून।
कुरान देखें पढ़ें यों कहें, बेसबी बेनिमून।। १७ ।।

एक बड़ी हैरानी की बात देखी कि कुरान के पढ़े लोग खुदा को बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून कहते हैं, अर्थात् बिना आकार का, बिना गुण का, बिना शक्ल का और बिना नमूने का बताते हैं।

फुरमान जाहेर सूरत देखावहीं, सो माएने न ले दिल अंध।
पढ़ें अपनी अकलें, पाड़ी दुनियां दोजख फंद।। १८ ।।

कुरान में खुदा की सूरत है ऐसा लिखा है—(मुहम्मद साहब ने मेयराज में देखा)। इस बात को दिल के अन्धे मुसलमान नहीं समझते। यह पढ़े-लिखे लोग दुनियां को गुमराह कर दोजख के फंदे में डाल रहे हैं।

सिपारे सयकूल में, यों लिख्या जाहेर कर।
देखाऊं माएने मुसाफ, चीन्हो दिल की खोल नजर।। १९ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे सयकूल में खुदा की सूरत लिखी है। मैं कुरान का अर्थ खोलकर बताती हूं। तुम दिल की आंखें खोलकर देखो।

ए जानें हरम के मेहेरम, जिनों तेहेकीक करी सूरत।
मुख ना फेरें सूरत मों, सोई बंदगी हकीकत।। २० ।।

इस बात के रहस्य को हरम के महरम, खुदा के राजदार (श्री राजजी की ब्रह्मसृष्टि) ही जानते हैं जिन्होंने हक की सूरत को देखा है। यह ब्रह्मसृष्टियां खुदा की सूरत से मुनकिर नहीं हो सकतीं (इन्कार नहीं कर सकती), अर्थात् यह खुदा को निराकार कभी नहीं कह सकतीं, क्योंकि इनकी सच्ची बन्दगी (हकीकत की बन्दगी) है।

एक खूबी चाहें साहेब की, और न कछुए चाहें।
उनकी एही बंदगी, जो सांचे आरिफ अरवाहें।। २१ ।।

यह ब्रह्मसृष्टियां अपने प्रीतम के प्रेम की प्यासी हैं। इनको इसके सिवाय कुछ नहीं चाहिए, इसलिए इनको सच्चे ज्ञानी कहा गया है और इनकी ही सच्ची बन्दगी है।

जिनों अर्थ लिया अंदर का, माएने पेहेचाने तिन।
खासों की एही बंदगी, जाने दिल रूह वतन।। २२ ।।

जिन्होंने हकीकत के इस रहस्य को समझा उन्होंने ही कुरान के सच्चे अर्थ की पहचान की। अखण्ड परमधाम की रूहों की यही सच्ची बन्दगी है। वही इस बात को जानती हैं।

Nijanand App

आसिक अर्स अजीम की, चाहे मिलना हमेसगी।
चाहे साहेब और उमत, उनकी एही बंदगी।। २३ ।।

यह अर्श अजीम की आशिक रूहें अपने धनी का सदा मिलन चाहती हैं। यह धनी को और अपनी जमात (सुन्दरसाथ) को ही चाहती हैं। यही उनकी बन्दगी है।

एही रूहों की बंदगी, जो कही खास उमत।
एही अहेल किताब हैं, लिख्या दूसरे सिपारे जित।। २४ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे सयकूल में लिखा है कि कुरान के सच्चे वारिस मोमिन हैं, जिन्हें खास उम्मत करके कहा है। इन्हीं की ही बन्दगी सच्ची है।

और देखो दुनी की बंदगी, ए भी सयकूल में लिखे।
सो भी देखाऊं बेवरा, जो कर बैठे किबले।। २५ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे सयकूल में दुनियां की बन्दगी का भी जिक्र आया है, उसे देखो। वह भी मैं तुमको बताती हूं जो अपने-अपने अलग-अलग पूजा के घर, धर्म-स्थान बनाकर बैठे हैं।

पातसाहों एही जानिया, मोती जवेर सिर ताज।
इनका एही किबला, चाहें ज्यादा अपना राज।। २६ ।।

दुनियां के बादशाहों ने अपने सिर पर मोती, जवाहरात के बने ताज को पहनकर ही खुदा की खुदाई समझ ली और खुद खुदा बन बैठे, इसलिए अपना राज्य चिरकाल तक रहे यह चाहना उनकी बनी रही।

सोना रूपा दुनी का, अरथ चाहें भरे भंडार।
इनका एही किबला, कई विध करें विस्तार।। २७ ।।

दुनियां के लोग सोना-चांदी, धन सम्पत्ति से भण्डार भरा रखना चाहते हैं और उस खजाने को अपना पूज्य स्थान मानकर विस्तार में लगे हैं।

जिनकी बद-खसलतें, अपना भला मन ल्याए।
इनका एही किबला, औरों का भला न चाहें।। २८ ।।

जो अपनी ऐसी बुरी आदतों को ही अपनी भलाई समझ बैठे हैं। यह दूसरों की भलाई नहीं चाहते। यही इनकी पूजा का तरीका है। यही इनकी बन्दगी है।

जो जाहेर परस्त हैं, चाहें मिट्टी पानी पत्थर।
इनका एही किबला, जिनकी बाहेर पड़ी नजर।। २९ ।।

जो जाहिर परस्त मुसलमान हैं वह पीरों की मजारें (कब्र), पत्थर, मिट्टी की बनाकर उन पर चढ़ावा चढ़ाते हैं और उनको ही पूज्य मानकर पूजा करते हैं।

मिट्टी पत्थर बनाए के, कहें खुदाए का घर।
मेहेराव को किबला किया, करें निमाज तिन पर।। ३० ।।

वह मिट्टी-पत्थर की मस्जिद बनाकर उसे खुदा का घर कहते हैं। उसी मस्जिद में बनी मेहेराब को पूज्य मानकर नमाज पढ़ते हैं।

जो यार हैं अपने तन के, भला खावें सोवें पलंग।
तिनका एही किबला, और न चाहें रंग।। ३१ ।।

जो अपने ही तन के यार हैं (अपने तन के सुख चाहते हैं)। वह अच्छा खाते और पलंगों पर सोते हैं। उन्होंने तन को ही पूज्य मान रखा है। उनको दूसरा कुछ नहीं सूझता।

Nijanand App

आगूँ अपनी दानाई के, और न काहूं देखत।
इनका एही किबला, अपनी तरफ खैंचत।। ३२ ।।

यह अपनी चतुराई के सामने दूसरे को नहीं देखते। वह अपनी बड़ाई का मान दिखाकर दूसरों को अपनी तरफ खींचते हैं। इस झूठे मान को ही उन्होंने पूज्य समझ रखा है।

जिन जैसा किबला सेविया, आगूं आया तैसा तिन।
दुनी कारन खोवे दीन को, तो आखिर कही जलन।। ३३ ।।

जिन्होंने जिस तरह की बन्दगी की, उनको उसी तरह का फल मिला। दुनियां की मान-मर्यादा के बदले उन्होंने दीन को खो दिया, इसलिए आखिरत के दिन दोजख की अग्नि में जलेंगे।

इन विध फुरमान फुरमावहीं, जाहेर देत बताए।
अंदर बैठा जो दुस्मन, सो देत माएने उलटाए।। ३४ ।।

कुरान में इस तरह से जाहिर बताया है कि शैतान अबलीस इन्सान का दुश्मन बनकर दिल में बैठा है। वही उल्टी भावना पैदाकर उल्टे रास्ते पर चलाता है।

आरिफ कहावें आपको, होए बुजरक माहें दीन।
कह्या हादी का रद करें, यों खोवत हैं आकीन।। ३५ ।।

ऐसे लोग जो दीन के बीच अपने को पढ़ा-लिखा (आरिफ, ज्ञानी, अगुआ) कहलाते हैं, वह अल्लाह के वचन (कुरान) को रद्दकर अपना यकीन गिराते हैं।

जब जाहेर माएने लीजिए, तब खड़े होत हैं घर।
अंदर माएने सब उड़त हैं, सो पढ़े लेवें क्यों कर।। ३६ ।।

जो जाहेरी मायने लेते हैं उनकी इमारतें, हवेलियां बनती हैं और जो हकीकत के मायने लेते हैं उनका संसारी घर मिट जाता है, इसलिए पढ़े-लिखे लोग हकीकत के अर्थ को कैसे समझेंगे?

पढ़े सो भी पेट कारने, और पालने कबीले।
दुनियां को देखावहीं, आगूं चल के ए।। ३७ ।।

इसलिए उन्होंने कुरान की तालीम अपना पेट भरने और कुटुम्ब पालने के लिए ली है। ऐसे स्वार्थी लोग दुनियां के आगे होकर दुनियां को स्वार्थ का रास्ता दिखाते हैं।

जब लीजे अंदर के माएने, तब न कछू साहेब बिन।
साहेब बिना सब दोजख, चौदे तबक अगिन।। ३८ ।।

जो कुरान के अन्दर के मायने लें तो उसे खुदा के बिना कुछ नहीं चाहिए, क्योंकि खुदा के बिना चौदह तबक नरक और अग्नि के समान हैं।

दीन इसलाम से जात हैं, कारन सुख सुपन।
बुजरक आगे होए के, राह मारें औरन।। ३९ ।।

सपने के झूठे सुख के वास्ते धर्म से विमुख होते हैं और आगे होकर दूसरों को गुमराह करते हैं।

कही गरीबी बुजरक, पढ़ कर सो न ले।
कई बंध फंद कर मारहीं, लई मुल्लां गरीबी ए।। ४० ।।

कुरान में अहंकार को छोड़कर गरीबी को अच्छा माना है। जिसको पढ़े-लिखे लोग नहीं लेते। यह पढ़े-लिखे मुल्ला दुनियां के लोगों को कई बंध-फंद से लूटते हैं और इसी को वह गरीबी बताते हैं।

Nijanand App

कोई सीधा सब्द जो केहेवहीं, तो तोरा देखावें ताए।
जो गरीब सामें बोलहीं, तो तिनको सूली चढ़ाए।। ४१ ।।

अगर कोई सीधा रास्ता बताए तो उसे मार का डर बताते हैं। जो कोई गरीब कुरान के सच्चे अर्थ कहना चाहे तो उसे फांसी के तख्ते पर चढ़ा देते हैं।

कहे मुखथें हम मोमिन, और हमहीं पढ़े सरे-दीन।
हमहीं अहेल किताब हैं, हमहीं में आकीन।। ४२ ।।

ऐसे लोग अपने मुख से मोमिनों का दावा लेते हैं और कहते हैं कि हमने ही शरीयत के नियमों को पढ़ा है और हम ही कुरान के वारिस हैं और हम ही यकीन रखने वाले हैं।

यों हम हम करते कई गए, अजूं योंहीं जाए रात दिन।
यों करते आखिर आए गई, बांधी तोबा लगी अगिन।। ४३ ।।

इस तरह से हम हम करते रात-दिन व्यतीत करते हैं। जब आखिरत का समय आ गया तब तोबा कर पश्चाताप की अग्नि में जलते हैं।

किया टोना लड़की महंमद पर, दई गांठ अग्यारे तिन।
सो हर सदी गांठें खुलीं, तब महंमद ले चले मोमिन।। ४४ ।।

एक यहूदी की लड़की ने मुहम्मद पर टोना किया और ग्यारह गांठें रस्सी पर लगाईं। हर सदी में एक गांठ खोलकर ग्यारहवीं सदी में आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी मोमिनों को लेकर घर चलेंगे।

ए आयत देख्या चाहे, ताए देखाऊं बेसक।
इनमें जो सक ल्यावहीं, सो जलसी आग दोजक।। ४५ ।।

जो कुरान की इस आयत को देखना चाहे, तो उसको मैं स्पष्ट दिखा दूंगी (जो सूरे फलक और सूरे नास के नाम से कुरान में हैं) ग्यारहवीं सदी में जो संशय रखेगा वह दोजख की आग में जलेगा।

जब तमाम सदी अग्यारहीं, ए महंमद उमत आकीन।
जबराईल मुसाफ ले आए, और बरकत दुनियां दीन।। ४६ ।।

जब ग्यारहवीं सदी पूरी हो गई तब कुरान (सनन्ध) लेकर आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के पास दुनियां की बरकत और धर्म का यकीन जबराईल हिन्द में ले आया।

ए तीनों उठाए दुनी से, जबराईल ले आया अपने मकान।
खड़ा किया झंडा दीन का, ल्याए लाखों खलक ईमान।। ४७ ।।

कुरान, बरकत और फकीरों की शफकत जबराईल फरिश्ता हिन्द (श्री पन्नाजी) में ले आया वहां दीन का नूरी झंडा खड़ा किया और लाखों खलक ईमान लाई।

वसीयत नामे साहेदी, आए लिखे बड़ी दरगाह।
सो मिलाए दिए कुरान से, महामत हुकम खुदाए।। ४८ ।।

श्री महामतिजी ने खुदा के हुकम से कुरान के सब निशान मिला दिए, जिसकी गवाही बड़ी दरगाह (मक्का) से आए वसीयतनामे में दी है।

।। प्रकरण ।। १०८ ।। चौपाई ।। १६२१ ।।

Nijanand App

राग श्री

मासूक मेरे रूह चाहे सिफत करूं, सो मैं जाए न कही।
जब देख्या बेवरा कर, तब तामें उरझ रही।। १ ।।

हे मेरे माशूक श्री राजजी महाराज! मैं आपकी सिफत करना चाहती हूं। पर मैं कैसे कहूं? जब आपकी मेहर का विवरण (हकीकत) देखती हूं तो उसमें उलझ जाती हूं।

सब थें बड़ी मुझे करी, ऐसी और न दूजी कोए।
जो मेहेर करी मुझ ऊपर, सो सिफत जुबां क्यों होए।। २ ।।

आपने मुझे सबसे बड़ा बना दिया है। इतना बड़ा कोई और नहीं है। ऐसी मेहर जो मेरे ऊपर की, उसकी महिमा किस जबान से कहूं?

किन विध मैं तुमको कहूं, क्यों कर दिल धरूं।
ले एहेसान तुमारे दिल में, मैं गुजरान क्यों करूं।। ३ ।।

आपकी मेहर का क्या बखान करूं? कैसे दिल में सन्तोष करूं? आपके ऐहसानों से दबकर कैसे जीवन निर्वाह करूं?

मैं चलते देखे मजहब, और सबके परमेश्वर।
सो सारे बीच फना मिने, नूर बका न काहू नजर।। ४ ।।

मैंने सब धर्मों को देखा और उनके परमेश्वरों को देखा। यह सब इसी नश्वर संसार के हैं। अखण्ड घर का ज्ञान किसी के पास नहीं है।

फना छोड़ इन परमेश्वरों, नूर बका न पाया किन।
तिन पर नूर बिलंद, सो किया तुम मेरा वतन।। ५ ।।

संसार के लोगों के परमेश्वरों के पास निराकार को छोड़कर अक्षर तक का भी ज्ञान नहीं है, परन्तु आपने अक्षर पार नूर बिलन्द (परमधाम) को मेरा घर बना दिया।

खेल किया मेरे कारने, दुनियां चौदे तबक।
मेरे हाथ तिनकी हैयाती, भिस्त पाई मुतलक।। ६ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड मेरे वास्ते बनाया। मेरे ही हाथ से इसकी अखण्ड बहिश्त दिलवाई।

खेल कर मोहे बैठाई माहें, मुझ पर भेज्या फुरमान।
माहें लिखी हकीकत मारफत, मुझ बिना न काहूं पेहेचान।। ७ ।।

खेल बनाकर मुझे इसमें भेजा। मेरे ही वास्ते कुरान को भेजा। इसमें घर की सारी हकीकत और पहचान लिखी है। इसे मेरे बिना कोई नहीं जानता।

कुंजी दई मुझको, और मेरै सिर खिताब।
सास्त्र चौदे तबक के, सब मैं ही खोलों किताब।। ८ ।।

मुझे तारतम ज्ञान की कुंजी दी और उनके रहस्य खोलने की शोभा मुझे दी, इसलिए चौदह लोकों के धर्म-शास्त्रों के छिपे रहस्यों को मैं ही खोल कर जाहिर करूंगी।

राह देखाऊं सबन को, ऐसो बल दियो खसम।
सब को फना से बचाए के, लगाए तुमारे कदम।। ९ ।।

हे धनी! मुझे आपने ऐसी शक्ति दी कि मैं सबको रास्ता दिखाऊं और सबको झूठी दुनियां से छुड़ाकर आपके चरणों में लगाऊं।

Nijanand App

खेल बनाया मेरे वास्ते, मोहे भेज के आए आप।
पट खोल इलम समझाइया, मोसों नीके कियो मिलाप।। १० ।।

मेरे वास्ते खेल बनाया और मुझे भेजकर आप स्वयं भी यहां पधारे। आपने सब धर्म-शास्त्रों के भेद खोलकर हद से परे अद्वैत का ज्ञान दिया और मुझसे अच्छी तरह से मिलाप किया।

बका न चौदे तबक में, न पाया त्रैलोकी त्रैगुन।
सेहेरग से नजीक देखाइया, ऐसा इत इलमें किया रोसन।। ११ ।।

अखण्ड घर चौदह तबकों में नहीं है। इस संसार के ब्रह्मा, विष्णु, महेश किसी ने भी इसे नहीं पाया। आपकी तारतम वाणी ने उस अखण्ड घर को शहरग (सांस की नली) से नजदीक बताया।

ऐसा बेसक चौदे तबक में, कोई न हुआ कबूं कित।
इन नुकते सब बेसक हुए, ऐसी बेसकी आई इत।। १२ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म के विषय में कोई बेशक नहीं हुआ। आपकी तारतम वाणी से अब सब बेशक हो गए और किसी को किसी प्रकार का संशय नहीं रहा।

ए भी बड़ाई मुझ को दई, जो सबों देख्या नूर पार।
सबों सेहेरग से नजीक, कुंजिएं देखाया निरधार।। १३ ।।

अब अक्षर के पार परमधाम सबको दिखाने का मान भी मुझे ही दिया। आपके तारतम ज्ञान की वाणी से सबको शहरग से नजदीक पारब्रह्म को दिखाया।

ए दिल के बातें कासों कहूं, रूह की जानो सब।
बोलन की कछू न रही, जो कहो सो करूं मैं अब।। १४ ।।

यह अपने दिल की बातें किससे कहूं? आप मेरी आत्मा की सब जानते हो। अब कुछ बोलने के लिए भी नहीं रहा जो आप कहो सो करूं।

मोहे करी सबों ऊपर, ऐसी ना करी दूजी कोए।
अजूं रूह मांग्या चाहे, ए तुम कैसी बनाई सोए।। १५ ।।

मुझे आपने सबसे ऊंचा कर दिया। ऐसी कृपा किसी और पर नहीं हुई। फिर भी मेरी आत्मा कुछ मांगना चाहती है। यह बड़ी विचित्र बात है।

बैठाई आप जैसी कर, सो खोल देखाई नजर।
अजूं मांगत मेरे धनी, और ऐसे तुम कादर।। १६ ।।

आपने मुझे अपना जैसा बनाकर मेरी अन्दर की नजर खोल दी। फिर भी मेरे धनी! मैं मांगती हूं। आप देने वाले समर्थ हैं।

जो तुम बड़े करे खेल में, ताकी दुनी करे सिफत।
सो बड़े गिरो के पांउं की, खाक भी न पावत।। १७ ।।

जिन ब्रह्मा, विष्णु, महेश को आपने खेल में बड़ा बनाया है, दुनियां उनकी पूजा करती है। यह बड़े हम ब्रह्मसृष्टियों की चरणरज भी नहीं पाते।

तिन गिरो में सिरदारी, तें मुझे दई मेरे खसम।
ऐसी बड़ी करी मोहे खेल में, अब इत उरझ रह्या मेरा दम।। १८ ।।

हे मेरे धनी! ऐसी बड़ाई के मालिक ब्रह्मसृष्टियों की जमात में मुझे सिरदार बनाया। मुझे खेल में इतना बड़ा बना दिया कि मैं इसी में उलझ गई।

Nijanand App

दुनी सिफत पोहोंचे मलकूत लो, सो फरिस्ते खाक भी पावत नाहें।
तिन गिरो में बुजरक, मोहे ऐसी करी खेल माहें।। १९ ।।

दुनियां वाले बैकुण्ठ के देवी-देवताओं की सिफत करते हैं। यही देवी-देवता मोमिनों की चरणरज भी नहीं पाते। इस गिरोह के अन्दर आपने मुझे पूज्य बनाकर खेल में मान दिया।

मैं भटकी बीच दुनी के, घर घर मांगी भीख।
लौकिक दई मोहे साहेबी, अंतर में अपनी सरीख।। २० ।।

मैं दुनियां में भटकती रही और घर-घर भीख मांगती रही। उस दुनियां में मुझे आपने संसार की साहेबी दी और अपने जैसा मुझे बना दिया।

नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ।
तिन साहेब कर पूंजिया, अर्स का एही गुझ।। २१ ।।

अब नर-नारी, बालक-बूढ़े, जिन्होंने भी मेरी वाणी को समझा है वह मुझे श्री प्राणनाथजी मानकर पूजा कर रहे हैं। परमधाम का यही गुह्य भेद है।

जब हकें मोहे इलम दिया, तब मोसों कही निसबत।
सो निसबत बका हक की, ताकी होए ना इत सिफत।। २२ ।।

जब धनी आपने मुझे तारतम वाणी समझाई, तो मुझे अपनी निसबत की कि मैं आपकी अंगना हूं, समझ आई। अब वह नाता जो अखण्ड परमधाम का है उसकी सिफत यहां किन शब्दों से करूं?

जिन बंदगी मेरी करी, लिया निसबत हिस्सा तिन।
पांउं खाक मांगी बुजरकों, ए सोई फकीर मोमिन।। २३ ।।

जिन्होंने मेरी पूजा की, उनको आपकी बन्दगी का हिस्सा निसबत होने के नाते मिला। जिन मोमिनों की चरण धूलि बड़े (त्रिदेवा) मांगते रहे, यह वही ब्रह्मसृष्टि हैं।

ए बुध ना चौदे तबक में, सो अपनी दई अकल।
समझी सब मैं अर्स की, जो सिफत तेरी असल।। २४ ।।

यह जागृत बुद्धि (पराशक्ति) चौदह लोकों में नहीं थी। वह आपने मुझे दी। उससे मैं घर के सारे भेद समझ गई कि आपकी असल साहेबी क्या है, यह आपकी मेहर से समझा। अब उसकी सिफत क्या कहूं?

मैं बातून तुमारी समझी, तुम अपना दिया इलम।
अब इत केहेना कछू ना रह्या, होसी अर्स में आगूं खसम।। २५ ।।

आपने जो जागृत बुद्धि दी उससे मैंने आपकी गुझ (गुह्य) मेहर को समझ लिया है, इसलिए अब यहां कुछ कहना नहीं है। जो कुछ भी कहना होगा घर में ही आकर कहूंगी।

ऐसी बड़ाई केती कहूं, जो करी अलेखे अपार।
सो नेक कही मैं गिरो समझने, समझेगी रूह सिरदार।। २६ ।।

आपकी मेहर की महिमा कहां तक कहूं? वह बेशुमार हैं। यह तो मैंने थोड़ी सी सुन्दरसाथ के समझने के वास्ते कही है। उस को समझदार सुन्दरसाथ ही समझेंगे।

Nijanand App

महामत कहे मेहेबूब जी, मोहे खेल देखाया बुजरक।
करो मीठी बातें मुझसों, मेरे मीठे खसम हक।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे लाड़ले मेहबूब। आपने मुझे बहुत अच्छा खेल दिखाया। हे मेरे प्यारे धनी! अब मुझसे प्यारी-प्यारी बातें करो।

|| प्रकरण || १०९ || चौपाई || १६४८ ||

राग श्री

कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागी तूं।
सब सिनगार को सोभा देवै, मेरा दिल बांध्या तुझ सों।। १ ।।

हे मेरे धनी की काली कामरी (गरीबी)! तू मुझे बहुत अच्छी लगती है। सारे संसार वाले सिनगार (मान-सम्मान, बड़ाई) को शोभा देते हैं, पर मेरा दिल तुझ से लग गया है।

तूं नाम निरगुन कहावहीं, सब सरगुन के सिरे।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुझ परे।। २ ।।

तू नाम से तो निर्गुण कहलाती है, पर तू सब गुणों से ऊपर है। तेरी महिमा सबसे बड़ी है। सब नगीने, मोती, जवाहरात तेरे से छोटे हैं। तेरे से बड़ा कोई नहीं है।

कामरी पेहेरी बृजवधू, और सुन्दरवर स्याम।
भी पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम।। ३ ।।

बृज की गोपियों ने और श्री कृष्णजी ने कामरी ओढ़ी (गरीबी धारण की)। मुहम्मद साहब और इमाम मेंहदी ने कमली (कम्बल) ओढ़ी।

मोल नहीं इन कामरी को, याको ले न सके कोए।
मोमिन कहे सो लेवहीं, जो रूह अर्स की होए।। ४ ।।

यह कामरी (गरीबी) अनमोल है। इसको लेने की शक्ति कोई नहीं रखता। इसे परमधाम की आत्माएं ही ले सकती हैं।

गोवरधन को ढांपिया, एक बूंद न हुआ दखल।
आग लोहा पानी प्रले के, सोस लिया सब जल।। ५ ।।

इन्द्रकोप से बृज को बचाने के लिए आपकी मेहर (कामरी ने) गोवर्धन को उठाकर ऊपर से ढांप लिया। इतना बड़ा इन्द्र का प्रकोप होने पर भी बृज के अन्दर पानी की एक बूंद भी नहीं आ सकी। आपकी मेहर से यह गोवर्धन पहाड़ अग्नि का रूप हो गया जिसने सब पानी को सोख लिया।

अहीर किए धंन धंन, और आरब कुरैस।
मारू भी धंन धंन हुए, है सोई हमारा भेस।। ६ ।।

और इस तरह से अहीर जाति के लोग धन्य-धन्य हुए। (श्री कृष्णजी का तन अहीर जाति का था)। अरब में कुरैश जाति में मुहम्मद साहब के जन्म के कारण वह भी धन्य-धन्य हुई। मारवाड़ में श्री देवचन्द्रजी के जन्म के फलस्वरूप मारवाड़ धन्य-धन्य हुआ। अब उसी कामरी को मैंने अपना भेष बनाया है।

रूह अल्ला पेहेरी अन्दर, हुई नहीं जाहेर।
दुनियां हिरदे अंधली, सो देखे नजर बाहेर।। ७ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी) ने जाहिरी कामरी नहीं ओढ़ी। गरीबी रूपी कामरी आत्मिक रूप में धारण की। अन्धी दुनियां तो बाहरी दृष्टि से देखती है।

Nijanand App

महामत कहे मेहेबूब जी, मोहे खेल देखाया बुजरक।
करो मीठी बातें मुझसों, मेरे मीठे खसम हक।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे लाड़ले मेहबूब। आपने मुझे बहुत अच्छा खेल दिखाया। हे मेरे प्यारे धनी! अब मुझसे प्यारी-प्यारी बातें करो।

।। प्रकरण ।। १०९ ।। चौपाई ।। १६४८ ।।

राग श्री

कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागी तूं।
सब सिनगार को सोभा देवै, मेरा दिल बांध्या तुझ सों।। १ ।।

हे मेरे धनी की काली कामरी (गरीबी)! तू मुझे बहुत अच्छी लगती है। सारे संसार वाले सिनगार (मान-सम्मान, बड़ाई) को शोभा देते हैं, पर मेरा दिल तुझ से लग गया है।

तूं नाम निरगुन कहावहीं, सब सरगुन के सिरे।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुझ परे।। २ ।।

तू नाम से तो निर्गुण कहलाती है, पर तू सब गुणों से ऊपर है। तेरी महिमा सबसे बड़ी है। सब नगीने, मोती, जवाहरात तेरे से छोटे हैं। तेरे से बड़ा कोई नहीं है।

कामरी पेहेरी बृजवधू, और सुन्दरवर स्याम।
भी पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम।। ३ ।।

बृज की गोपियों ने और श्री कृष्णजी ने कामरी ओढ़ी (गरीबी धारण की)। मुहम्मद साहब और इमाम मेंहदी ने कमली (कम्बल) ओढ़ी।

मोल नहीं इन कामरी को, याको ले न सके कोए।
मोमिन कहे सो लेवहीं, जो रूह अर्स की होए।। ४ ।।

यह कामरी (गरीबी) अनमोल है। इसको लेने की शक्ति कोई नहीं रखता। इसे परमधाम की आत्माएं ही ले सकती हैं।

गोवरधन को ढांपिया, एक बूंद न हुआ दखल।
आग लोहा पानी प्रले के, सोस लिया सब जल।। ५ ।।

इन्द्रकोप से बृज को बचाने के लिए आपकी मेहर (कामरी ने) गोवर्धन को उठाकर ऊपर से ढांप लिया। इतना बड़ा इन्द्र का प्रकोप होने पर भी बृज के अन्दर पानी की एक बूंद भी नहीं आ सकी। आपकी मेहर से यह गोवर्धन पहाड़ अग्नि का रूप हो गया जिसने सब पानी को सोख लिया।

अहीर किए धंन धंन, और आरब कुरेंस।
मारू भी धंन धंन हुए, है सोई हमारा भेस।। ६ ।।

और इस तरह से अहीर जाति के लोग धन्य-धन्य हुए। (श्री कृष्णजी का तन अहीर जाति का था)। अरब में कुरेश जाति में मुहम्मद साहब के जन्म के कारण वह भी धन्य-धन्य हुई। मारवाड़ में श्री देवचन्द्रजी के जन्म के फलस्वरूप मारवाड़ धन्य-धन्य हुआ। अब उसी कामरी को मैंने अपना भेष बनाया है।

रूह अल्ला पेहेरी अन्दर, हुई नहीं जाहेर।
दुनियां हिरदे अंधली, सो देखे नजर बाहेर।। ७ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी) ने जाहिरी कामरी नहीं ओढ़ी। गरीबी रूपी कामरी आत्मिक रूप में धारण की। अन्धी दुनियां तो बाहरी दृष्टि से देखती है।

Nijanand App

पट पेहेर खाए चीकना, हेंम जवेर सिनगार।
हक लज्जत आई मोमिनों, तिन दुनी करी मुरदार।। ८ ।।

दुनियां अच्छे वस्त्र पहनने, अच्छा भोजन करने, अच्छा सिनगार सजने में लज्जत लेती है। जिन्होंने दुनियां को मुरदार समझ लिया है उनको (मोमिनों को) अपने धनी के प्यार में स्वाद आता है।

सोहाग दिया साहेब ने, कामरी सोहागिन।
आगूं बोले बुजरक, सराही साधू जन।। ९ ।।

धाम धनी ने अपने मोमिनों को जिन्होंने गरीबी की कामरी ओढ़ी है, अपनाकर सोहागिनी बनाया। इस कामरी की बड़े-बड़े लोगों तथा महात्माओं ने भी सराहना की।

हमारे ताले मिने, लिखे अल्ला कलाम।
महामत कहे सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम।। १० ।।

हम सुन्दरसाथ के भाग्य में पारब्रह्म की वाणी है। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब यह गरीबी और नम्रता की कामरी सबको प्यारी लगेगी।

|| प्रकरण || ११० || चौपाई || १६५८ ||

राग श्री

फरेबी लिए जाए, मेरी रूह तूं आंखें खोल।
बीच बका के बैठ के, तें किनसों किया कौल।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! तू अपनी आंखें खोलकर देख। तेरा कपट ही तुझे माया में डुबो रहा है। हे मेरी आत्मा! तूने परमधाम में बैठकर किससे क्या वायदे किए थे, विचार कर।

अर्स की खिलवत में, हक की वाहेदत।
बैठ के बातें जो करी, सो कहां गई मारफत।। २ ।।

परमधाम के मूल-मिलावा में ब्रह्मसृष्टियों और श्री राजजी महाराज के सामने बैठकर जो बातें की थीं, वह याद कर, वह सब कहां गयीं?

हकें कह्या रूहन को, जिन तुम जाओ भूल।
इस्क ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने आत्माओं से कहा था कि तुम खेल में जाकर भूल मत जाना। मैं अपने रसूल (पैगम्बर साहब) को भेजूंगा। तुम उन पर ईमान लाकर मेरे प्रति इश्क लाना।

उतरते अरवाहों सों, कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम।
मैं लिखूंगा रमूजें, सो जिन भूलो तुम।। ४ ।।

रूहों से खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैं अकेला तुम्हारा रब हूं। मालिक हूं। मैं तुम को इशारतों से चिट्ठियां लिखूंगा, तुम भूल मत जाना।

साहेद किए हैं सब को, जेती अर्स अरवाहें।
आप भी हुए साहेद, अपनी आप जुबांए।। ५ ।।

परमधाम की जितनी आत्माएं हैं, उन सबको गवाह बनाया है और मैं स्वयं भी अपनी जबान से गवाही दूंगा।

Nijanand App

पट पेहेर खाए चीकना, हेंम जवेर सिनगार।
हक लज्जत आई मोमिनों, तिन दुनी करी मुरदार।। ८ ।।

दुनियां अच्छे वस्त्र पहनने, अच्छा भोजन करने, अच्छा सिनगार सजने में लज्जत लेती है। जिन्होंने दुनियां को मुरदार समझ लिया है उनको (मोमिनों को) अपने धनी के प्यार में स्वाद आता है।

सोहाग दिया साहेब ने, कामरी सोहागिन।
आगूं बोले बुजरक, सराही साधू जन।। ९ ।।

धाम धनी ने अपने मोमिनों को जिन्होंने गरीबी की कामरी ओढ़ी है, अपनाकर सोहागिनी बनाया। इस कामरी की बड़े-बड़े लोगों तथा महात्माओं ने भी सराहना की।

हमारे ताले मिने, लिखे अल्ला कलाम।
महामत कहे सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम।। १० ।।

हम सुन्दरसाथ के भाग्य में पारब्रह्म की वाणी है। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब यह गरीबी और नम्रता की कामरी सबको प्यारी लगेगी।

।। प्रकरण ।। ११० ।। चौपाई ।। १६५८ ।।

राग श्री

फरेबी लिए जाए, मेरी रूह तूं आंखें खोल।
बीच बका के बैठ के, तें किनसों किया कौल।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! तू अपनी आंखें खोलकर देख। तेरा कपट ही तुझे माया में डुबो रहा है। हे मेरी आत्मा! तूने परमधाम में बैठकर किससे क्या वायदे किए थे, विचार कर।

अर्स की खिलवत में, हक की वाहेदत।
बैठ के बातें जो करी, सो कहां गई मारफत।। २ ।।

परमधाम के मूल-मिलावा में ब्रह्मसृष्टियों और श्री राजजी महाराज के सामने बैठकर जो बातें की थीं, वह याद कर, वह सब कहां गयीं?

हकें कह्या रूहन को, जिन तुम जाओ भूल।
इस्क ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने आत्माओं से कहा था कि तुम खेल में जाकर भूल मत जाना। मैं अपने रसूल (पैगम्बर साहब) को भेजूंगा। तुम उन पर ईमान लाकर मेरे प्रति इश्क लाना।

उतरते अरवाहों सों, कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम।
मैं लिखूंगा रमूजें, सो जिन भूलो तुम।। ४ ।।

रूहों से खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैं अकेला तुम्हारा रब हूं। मालिक हूं। मैं तुम को इशारतों से चिट्ठियां लिखूंगा, तुम भूल मत जाना।

साहेद किए हैं सब को, जेती अर्स अरवाहें।
आप भी हुए साहेद, अपनी आप जुबांए।। ५ ।।

परमधाम की जितनी आत्माएं हैं, उन सबको गवाह बनाया है और मैं स्वयं भी अपनी जबान से गवाही दूंगा।

Nijanand App

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले।
तुमें अजूं याद न आवही, हाए हाए कैसी फरेबी ए।।६।।

मैंने अपने दिल की सब बातों सहित श्री श्यामाजी को भेजा है। तुमको फिर भी अपनी बातें याद नहीं आतीं? यह कैसी मक्कारी है (फरेब है, कपट है)?

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल।
सो सब भेजी तुम को, जो करियां आपन मिल।।७।।

धनी कहते हैं कि अपने दिल की और रूहों के दिल की बातें जो हमने बैठकर की थीं, वह सब तुमको कुरान में लिखकर भेज दी हैं।

फुरमान ल्याए महंमद, किन खोली न इसारत।
तब रूहें आई न थी, तो पीछे फेर करी सरत।।८।।

मुहम्मद साहब कुरान लाए, किन्तु किसी ने कुरान के रहस्यों को नहीं खोला, क्योंकि उस समय रूहें नहीं आई थीं, इसलिए फिर आकर कुरान के भेदों को खोलने का वायदा कर दिया।

कहे महंमद मसी आवसी, ले कुंजी लाहूत से।
एक दीन सब करसी, सब कायम होसी कुंजिऐ।।९।।

मुहम्मद साहब ने कहा कि श्री श्यामाजी तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर परमधाम से आएंगी और इस तारतम ज्ञान से यह दुनियां एक दीन में आकर अखण्ड हो जाएगी।

बका ऊपर बंदगी, करावसी इमाम।
हक गिरो हम आए के, करें कजा तमाम।।१०।।

उनके बाद इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आकर अखण्ड परमधाम की बन्दगी कराएंगे। श्री राजजी महाराज ब्रह्मसृष्टि के साथ आकर सब दुनियां का न्याय चुकाएंगे।

आगूं आए जाहेर किया, आवने को ईमान।
खासी गिरो के वास्ते, कई कहे निसान।।११।।

ब्रह्मसृष्टि को ईमान आ जाए, इसलिए यह सब बातें पहले से जाहिर कर दीं। कई तरह से कयामत के निशान मोमिनों के वास्ते कुरान में लिख दिए।

ए बातें सब अर्स की, जब याद आवे तुम।
तब इस्क तुमें आवसी, उड़जासी तिलसम।।१२।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि जब यह परमधाम की बातें तुम्हें याद आएंगी तो इस माया का अन्धकार मिटकर, तुम्हें धनी की पहचान होकर, इश्क आ जाएगा।

कौन है तेरा मासूक, किनसों है निसबत।
देख अपना वतन, अब तूं आई कित।।१३।।

हे मेरी आत्मा! अब तू पहचान करके देख कि तेरा धनी कौन है? किससे तेरा नाता है? तू अपने घर को देख। तू अब कहां है? विचार कर।

हकें रूहों को दई, अपनी जो न्यामत।
इन नासूतें भुलाए दई, हक की हकीकत।।१४।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी रूहों को अपनी तारतम वाणी की बख्शीश की, किन्तु इस मिटने वाले संसार ने श्री राजजी की हकीकत को भुला दिया।

Nijanand App

मूल मिलावा खिलवत का, अजूं न आवे याद।
ए झूठी जिमी जो दोजख, इत कहा लग्यो तोहे स्वाद।। १५ ।।

अब मूल-मिलावा में की हुई एकान्त की बातें याद नहीं आती हैं। मेरी आत्मा! तुझे इस झूठी जमीन जो नरक है, का क्या स्वाद लग गया है?

मासूकें इत आए के, कैसा दिया इलम।
सक तोहे कोई ना रही, अजूं याद न आवे खसम।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने यहां आकर कैसी वाणी दी, देखो। इससे तेरे सारे संशय मिट गए। फिर भी तुझे अपने धनी की याद नहीं आती।

महामत कहें ए मोमिनों, ऐसी क्यों चाहिए रूहन।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, अर्स जिनों वतन।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो। परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को जिनका घर परमधाम है, ऐसा नहीं करना चाहिए।

|| प्रकरण || १११ || चौपाई || १६७५ ||

राग सिंधुड़ा

सरूप सुन्दर सनकूल सकोमल, रूह देख नैना खोल नूर जमाल।
फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे, किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! तू अपने नैना खोलकर श्री राजजी महाराज को देख। उनका स्वरूप कैसा सुन्दर है? नरम है, लुभावना है। हे मेरी आत्मा! ऐसे श्री राजजी की याद बार-बार हृदय में आ रही है। तेरी कहनी, करनी और रहनी किसने ऐसी बना दी है?

जामा जड़ाव जुड़या अंग जुगतें, चार हारों करी अंमर झलकार।
जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों, मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने अंग के ऊपर जामा ऐसा फिट पहना है मानो वह उनके अंग की ही शोभा है। उस पर गले में चार हारों की झलकार आकाश में फैल रही है। सिर के ऊपर की पाग जवाहरात की तरह जग-मग कर रही है। प्यारे मुखारबिन्द के नैनों पर तो मैं वारी-वारी जाती हूं।

लाल अधुर हंसत मुख हरवटी, नासिका तिलक निलवट भौंहें केस।
श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना, ए देख दरसन आवे जोस आवेस।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज के होंठ लाल हैं। मुखारबिन्द, हरवटी मुस्कराहट से भरी है। नासिका से निलवट (माथे) तक तिलक शोभायमान है। भौंवों पर सुन्दर बाल हैं। कानों में सुन्दर आभूषण हैं। मुख के अन्दर सुन्दर दांत और मीठी रसना है। इन्हें देखते ही तन में प्रीतम का जोश आ जाता है।

बांहें चूड़ी बाजू बंध सोहे फुमक, पोहोंची कांड़ों कड़ी हस्त कमल मुंदरी।
नख का नूर चीर चढ़या आसमान में, ज्यों हक चलवन करें सब अंगुरी।। ४ ।।

बांहों में जामें की चुन्नट, बाजुओं में बाजूबंध के फुम्मक, कलाई के ऊपर पोहोंची, कड़ा, कड़ी तथा हाथों में सुन्दर मुंदरी शोभायमान हैं। जब श्री राजजी महाराज हाथ की अंगुलियों को हिलाते हैं तो अंगुलियों के नाखूनों की तरंगें आसमान तक जाती हैं।

Nijanand App

मूल मिलावा खिलवत का, अजूं न आवे याद।
ए झूठी जिमी जो दोजख, इत कहा लग्यो तोहे स्वाद।। १५ ।।

अब मूल-मिलावा में की हुई एकान्त की बातें याद नहीं आती हैं। मेरी आत्मा! तुझे इस झूठी जमीन जो नरक है, का क्या स्वाद लग गया है?

मासूकें इत आए के, कैसा दिया इलम।
सक तोहे कोई ना रही, अजूं याद न आवे खसम।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने यहां आकर कैसी वाणी दी, देखो। इससे तेरे सारे संशय मिट गए। फिर भी तुझे अपने धनी की याद नहीं आती।

महामत कहें ए मोमिनों, ऐसी क्यों चाहिए रूहन।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, अर्स जिनों वतन।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो। परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को जिनका घर परमधाम है, ऐसा नहीं करना चाहिए।

।। प्रकरण ।। १११ ।। चौपाई ।। १६७५ ।।

राग सिंधुड़ा

सरूप सुन्दर सनकूल सकोमल, रूह देख नैना खोल नूर जमाल।
फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे, किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! तू अपने नैना खोलकर श्री राजजी महाराज को देख। उनका स्वरूप कैसा सुन्दर है? नरम है, लुभावना है। हे मेरी आत्मा! ऐसे श्री राजजी की याद बार-बार हृदय में आ रही है। तेरी कहनी, करनी और रहनी किसने ऐसी बना दी है?

जामा जड़ाव जुड़या अंग जुगतें, चार हारों करी अंमर झलकार।
जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों, मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने अंग के ऊपर जामा ऐसा फिट पहना है मानो वह उनके अंग की ही शोभा है। उस पर गले में चार हारों की झलकार आकाश में फैल रही है। सिर के ऊपर की पाग जवाहरात की तरह जग-मग कर रही है। प्यारे मुखारबिन्द के नैनों पर तो मैं वारी-वारी जाती हूं।

लाल अधुर हंसत मुख हरवटी, नासिका तिलक निलवट भौंहें केस।
श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना, ए देख दरसन आवे जोस आवेस।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज के होंठ लाल हैं। मुखारबिन्द, हरवटी मुस्कराहट से भरी है। नासिका से निलवट (माथे) तक तिलक शोभायमान है। भौंवों पर सुन्दर बाल हैं। कानों में सुन्दर आभूषण हैं। मुख के अन्दर सुन्दर दांत और मीठी रसना है। इन्हें देखते ही तन में प्रीतम का जोश आ जाता है।

बांहें चूड़ी बाजू बंध सोहे फुमक, पोहोंची कांड़ों कड़ी हस्त कमल मुंदरी।
नख का नूर चीर चढ़या आसमान में, ज्यों हक चलवन करें सब अंगुरी।। ४ ।।

बांहों में जामें की चुन्नट, बाजुओं में बाजूबंध के फुम्मक, कलाई के ऊपर पोहोंची, कड़ा, कड़ी तथा हाथों में सुन्दर मुंदरी शोभायमान हैं। जब श्री राजजी महाराज हाथ की अंगुलियों को हिलाते हैं तो अंगुलियों के नाखूनों की तरंगें आसमान तक जाती हैं।

Nijanand App

रोसनी पटुके करी अवकास में, चरन भूखन जामें इजार झांई।
कहें महामती मोमिन रूह दिल को, मासूक खैंचें तोहे अर्स मांहीं।।५ ।।

कमर में बंधे पटके की रोशनी आसमान तक जाती है। चरणों के आभूषण तथा सफेद जामा के नीचे इजार (चूड़ीदार पैजामा) झलकता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों के दिलों को श्री राजजी महाराज की ऐसी शोभा परमधाम में खींचती है।

|| प्रकरण || ११२ || चौपाई || १६८० ||

चतुर चौकस चेतन अति चोपसों, कूवत कर सब अंग कमर कसे।
सुंदर सेज्या सनकूल तन रूह रची, मासूक दिल मोमिन मोहोल माहें बसे।। १ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप देखने में चतुर, चौकस, जागृत हैं। वह बड़े खुशहाल हैं। उनका अंग-अंग मस्ती से भरा दिखाई देता है। उनके ऐसे सुन्दर स्वरूप के लिए मोमिनों ने अपनी आत्मा के हृदय की सुन्दर सेज बिछा रखी है और माशूक श्री राजजी महाराज अपने महल, अर्थात् मोमिन के दिल में रहते हैं।

मन तन जोबन चढ़ता नौतन, आया अमरद आसिक इस्क गंज ले।
अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखे चढ़ते।। २ ।।

उनके मन में तथा तन में चढ़ती हुई नई जवानी है। ऐसे किशोर स्वरूप आशिक श्री राजजी महाराज इश्क का प्याला लेकर मोमिनों के दिल में आए हैं। उनके होठों का अमृत-रस तथा मुख के अन्दर दांत और जिह्वा का रस प्रतिदिन नया-नया होता नजर आता है।

निलवट बंके नैन नासिका श्रवन, कौल फैल हाल नित नवले देखाए।
रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए।। ३ ।।

मस्तक, बांके नेत्र, सुन्दर नासिका और कान तथा उनकी रसीली वाणी, प्रेम मयी लीला और अखण्ड सत्ता के रूप नित्य नए-नए दिखाई देते हैं। मोमिनों की आत्माएं भी आनन्द में विभोर होकर चंचल और चपल चाल से श्री राजजी महाराज की मोहिनी छवि से मोहित होकर उसी में एक रूप हो जाती हैं।

भाखती महामती अर्स रूहें उमती, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाई।
अर्स वाहेदत खिलवत खसम की, हुज्जत निसबत लिए इत आई।। ४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे परमधाम की रूहो! तुम अर्श की उम्मत हो, इसलिए तुम श्री राजजी महाराज से पूर्ण प्रेम करो। प्रेम प्रीति से ही तुम घर पहुंचोगे। तुम श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावे में बैठी हो और उसी निसबत की हुज्जत लेकर यहां आई हो।

|| प्रकरण || ११३ || चौपाई || १६८४ ||

नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर।। १ ।।

श्री राजजी महाराज का नूरमयी स्वरूप बड़ा सुन्दर है। उनके नेत्र, मस्तक, नासिका, कान, लाल गाल, मुखारबिन्द, हरवटी और होठों में सब नूर ही नूर झलक रहा है।

नूर मुख चौक मांडनी अति नूर में, नूर वस्तर नूर भूखन जहूर।
नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंगों उद्दोत नूर पूर।। २ ।।

उनका चेहरा (मुखारबिन्द) अति नूरमयी है और नूर के ही वस्त्र-आभूषण शोभायमान हैं। उनका नूरमयी यौवन स्वरूप नित्य नया दिखाई देता है। उनके सब अंग नूर से भरपूर हैं।

Nijanand App

रोसनी पटुके करी अवकास में, चरन भूखन जामें इजार झांई।
कहें महामती मोमिन रूह दिल को, मासूक खैंचें तोहे अर्स मांहीं।।५ ।।

कमर में बंधे पटके की रोशनी आसमान तक जाती है। चरणों के आभूषण तथा सफेद जामा के नीचे इजार (चूड़ीदार पैजामा) झलकता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों के दिलों को श्री राजजी महाराज की ऐसी शोभा परमधाम में खींचती है।

|| प्रकरण || ११२ || चौपाई || १६८० ||

चतुर चौकस चेतन अति चोपसों, कूवत कर सब अंग कमर कसे।
सुंदर सेज्या सनकूल तन रूह रची, मासूक दिल मोमिन मोहोल माहें बसे।। १ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप देखने में चतुर, चौकस, जागृत हैं। वह बड़े खुशहाल हैं। उनका अंग-अंग मस्ती से भरा दिखाई देता है। उनके ऐसे सुन्दर स्वरूप के लिए मोमिनों ने अपनी आत्मा के हृदय की सुन्दर सेज बिछा रखी है और माशूक श्री राजजी महाराज अपने महल, अर्थात् मोमिन के दिल में रहते हैं।

मन तन जोबन चढ़ता नौतन, आया अमरद आसिक इस्क गंज ले।
अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखे चढ़ते।। २ ।।

उनके मन में तथा तन में चढ़ती हुई नई जवानी है। ऐसे किशोर स्वरूप आशिक श्री राजजी महाराज इश्क का प्याला लेकर मोमिनों के दिल में आए हैं। उनके होठों का अमृत-रस तथा मुख के अन्दर दांत और जिह्वा का रस प्रतिदिन नया-नया होता नजर आता है।

निलवट बंके नैन नासिका श्रवन, कौल फैल हाल नित नवले देखाए।
रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए।। ३ ।।

मस्तक, बांके नेत्र, सुन्दर नासिका और कान तथा उनकी रसीली वाणी, प्रेम मयी लीला और अखण्ड सत्ता के रूप नित्य नए-नए दिखाई देते हैं। मोमिनों की आत्माएं भी आनन्द में विभोर होकर चंचल और चपल चाल से श्री राजजी महाराज की मोहिनी छवि से मोहित होकर उसी में एक रूप हो जाती हैं।

भाखती महामती अर्स रूहें उमती, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाई।
अर्स वाहेदत खिलवत खसम की, हुज्जत निसबत लिए इत आईं।। ४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे परमधाम की रूहो! तुम अर्श की उम्मत हो, इसलिए तुम श्री राजजी महाराज से पूर्ण प्रेम करो। प्रेम प्रीति से ही तुम घर पहुंचोगे। तुम श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावे में बैठी हो और उसी निसबत की हुज्जत लेकर यहां आई हो।

|| प्रकरण || ११३ || चौपाई || १६८४ ||

नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर।। १ ।।

श्री राजजी महाराज का नूरमयी स्वरूप बड़ा सुन्दर है। उनके नेत्र, मस्तक, नासिका, कान, लाल गाल, मुखारबिन्द, हरवटी और होठों में सब नूर ही नूर झलक रहा है।

नूर मुख चौक मांडनी अति नूर में, नूर वस्तर नूर भूखन जहूर।
नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंगों उद्दोत नूर पूर।। २ ।।

उनका चेहरा (मुखारबिन्द) अति नूरमयी है और नूर के ही वस्त्र-आभूषण शोभायमान हैं। उनका नूरमयी यौवन स्वरूप नित्य नया दिखाई देता है। उनके सब अंग नूर से भरपूर हैं।

Nijanand App

रोसनी पटुके करी अवकास में, चरन भूखन जामें इजार झांई।
कहें महामती मोमिन रूह दिल को, मासूक खैंचें तोहे अर्स मांहीं।। ५ ।।

कमर में बंधे पटके की रोशनी आसमान तक जाती है। चरणों के आभूषण तथा सफेद जामा के नीचे इजार (चूड़ीदार पैजामा) झलकता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों के दिलों को श्री राजजी महाराज की ऐसी शोभा परमधाम में खींचती है।

।। प्रकरण ।। ११२ ।। चौपाई ।। १६८० ।।

चतुर चौकस चेतन अति चोपसों, कूवत कर सब अंग कमर कसे।
सुंदर सेज्या सनकूल तन रूह रची, मासूक दिल मोमिन मोहोल माहें बसे।। १ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप देखने में चतुर, चौकस, जागृत हैं। वह बड़े खुशहाल हैं। उनका अंग-अंग मस्ती से भरा दिखाई देता है। उनके ऐसे सुन्दर स्वरूप के लिए मोमिनों ने अपनी आत्मा के हृदय की सुन्दर सेज बिछा रखी है और माशूक श्री राजजी महाराज अपने महल, अर्थात् मोमिन के दिल में रहते हैं।

मन तन जोबन चढ़ता नौतन, आया अमरद आसिक इस्क गंज ले।
अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखे चढ़ते।। २ ।।

उनके मन में तथा तन में चढ़ती हुई नई जवानी है। ऐसे किशोर स्वरूप आशिक श्री राजजी महाराज इश्क का प्याला लेकर मोमिनों के दिल में आए हैं। उनके होठों का अमृत-रस तथा मुख के अन्दर दांत और जिह्वा का रस प्रतिदिन नया-नया होता नजर आता है।

निलवट बंके नैन नासिका श्रवन, कौल फैल हाल नित नवले देखाए।
रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए।। ३ ।।

मस्तक, बांके नेत्र, सुन्दर नासिका और कान तथा उनकी रसीली वाणी, प्रेम मयी लीला और अखण्ड सत्ता के रूप नित्य नए-नए दिखाई देते हैं। मोमिनों की आत्माएं भी आनन्द में विभोर होकर चंचल और चपल चाल से श्री राजजी महाराज की मोहिनी छवि से मोहित होकर उसी में एक रूप हो जाती हैं।

भाखती महामती अर्स रूहें उमती, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाई।
अर्स वाहेदत खिलवत खसम की, हुज्जत निसबत लिए इत आई।। ४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे परमधाम की रूहो! तुम अर्श की उम्मत हो, इसलिए तुम श्री राजजी महाराज से पूर्ण प्रेम करो। प्रेम प्रीति से ही तुम घर पहुंचोगे। तुम श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावे में बैठी हो और उसी निसबत की हुज्जत लेकर यहां आई हो।

।। प्रकरण ।। ११३ ।। चौपाई ।। १६८४ ।।

नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर।। १ ।।

श्री राजजी महाराज का नूरमयी स्वरूप बड़ा सुन्दर है। उनके नेत्र, मस्तक, नासिका, कान, लाल गाल, मुखारबिन्द, हरवटी और होठों में सब नूर ही नूर झलक रहा है।

नूर मुख चौक मांडनी अति नूर में, नूर वस्तर नूर भूखन जहूर।
नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंगों उद्दोत नूर पूर।। २ ।।

उनका चेहरा (मुखारबिन्द) अति नूरमयी है और नूर के ही वस्त्र-आभूषण शोभायमान हैं। उनका नूरमयी यौवन स्वरूप नित्य नया दिखाई देता है। उनके सब अंग नूर से भरपूर हैं।

Nijanand App

नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार।
नूर सिर पाग नूर कलंगी दुगदुगी, नूर हिये हार नूर गंज अंबार।। ३ ।।

उनके चरण कमल और हाथ नूरमयी हैं और नूर का ही सब सिनगार है। उनके सिर के ऊपर पाग, पाग में लगी कलंगी और दुगदुगी, सब नूर की हैं। उनके गले के ऊपर हीरे के हार की शोभा अति नूरमयी है।

नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर।
सब नूर रूहें नूर हादी नूर में, नूर नूर में खैंच लई हकें हजूर।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज की बातें नूरी हैं। महामति के विचार का विचार भी नूरी है। यह अखण्ड परमधाम के नूर का सूर्य उदय हुआ है जहां परमधाम सब नूरमयी है। श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टियां सब नूर की हैं। अब इस तरह से श्री राजजी महाराज जी स्वयं ही नूर के स्वरूप हैं। उन्होंने इन सबको खींच कर अपने नूर में मिला लिया है।

|| प्रकरण || ११४ || चौपाई || १६८८ ||

हुब मेहेबूब की आसिक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराई सका।
पीवते पीवते पिउ के प्याले सों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका।। १ ।।

अपने प्रेम भरे माशूक (राजजी महाराज) की मिलने की प्यास लेकर आशिक रूहें, अपने साकी (श्री राजजी महाराज) की सुराही से इश्क की शराब पीना चाहती हैं। श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले को पीकर मैं उसके अखण्ड नशे में गर्क हो गई।

दिल परस सरस भयो अर्स इलाही, दोऊ चुभ रहे दिल सों दिल मिल।
न्यारी ना होए प्यारी आप मारी, चल विचल ना होए वाहेदत असल।। २ ।।

श्री राजजी की मस्ती का प्याला (दिल) छूने मात्र से मेरा दिल श्री राजजी महाराज का अर्श बन गया। मेरा और उनका दिल दोनों हिल-मिलकर एक हो गए। ऐसी श्री राजजी महाराज के इश्क में डूबी आत्मा अब उनसे अलग नहीं हो सकती। अब वह अपने असल अखण्ड वाहेदत में मिल गई है जहां से वह अब हिल भी नहीं सकती।

लगी सो लगी आतम अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए।
सरभर भई पर आतम यों कर, यों तेहे दिली मिली छोड़ सके न कोए।। ३ ।।

आत्मा के अन्दर प्रीतम के विरह की चोट ऐसी लगी कि अन्दर सोई हुई आत्मा जाग उठी। अब उसे कोई अलग नहीं कर सकता। अब आतम और परआतम दोनों एक रस हो गई हैं और दोनों की एक दिली ऐसी हो गई है कि वह अब अलग नहीं हो सकती।

महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल मांहीं।
एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखिर एक का एक मोहोल बीच और नाहीं।। ४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि ऐसे श्री राजजी महाराज के चरण अब एक क्षण के लिए भी नहीं छूट सकते, क्योंकि मेरे माशूक का घर मेरा दिल हो गया है। हम पहले भी परमधाम में एक थे। बीच में बृज-रास में आकर एक हुए और अब आखिर में हम दोनों एक हो गए। अब बीच में और कोई नहीं है।

|| प्रकरण || ११५ || चौपाई || १६९२ ||

Nijanand App

नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार।
नूर सिर पाग नूर कलंगी दुगदुगी, नूर हिये हार नूर गंज अंबार।। ३ ।।

उनके चरण कमल और हाथ नूरमयी हैं और नूर का ही सब सिनगार है। उनके सिर के ऊपर पाग, पाग में लगी कलंगी और दुगदुगी, सब नूर की हैं। उनके गले के ऊपर हीरे के हार की शोभा अति नूरमयी है।

नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर।
सब नूर रूहें नूर हादी नूर में, नूर नूर में खैंच लई हकें हजूर।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज की बातें नूरी हैं। महामति के विचार का विचार भी नूरी है। यह अखण्ड परमधाम के नूर का सूर्य उदय हुआ है जहां परमधाम सब नूरमयी है। श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टियां सब नूर की हैं। अब इस तरह से श्री राजजी महाराज जी स्वयं ही नूर के स्वरूप हैं। उन्होंने इन सबको खींच कर अपने नूर में मिला लिया है।

|| प्रकरण || ११४ || चौपाई || १६८८ ||

डुब मेहेबूब की आसिक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराई सका।
पीवते पीवते पिउ के प्याले सों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका।। १ ।।

अपने प्रेम भरे माशूक (राजजी महाराज) की मिलने की प्यास लेकर आशिक रूहें, अपने साकी (श्री राजजी महाराज) की सुराही से इश्क की शराब पीना चाहती हैं। श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले को पीकर मैं उसके अखण्ड नशे में गर्क हो गई।

दिल परस सरस भयो अर्स इलाही, दोऊ चुभ रहे दिल सों दिल मिल।
न्यारी ना होए प्यारी आप मारी, चल विचल ना होए वाहेदत असल।। २ ।।

श्री राजजी की मस्ती का प्याला (दिल) छूने मात्र से मेरा दिल श्री राजजी महाराज का अर्श बन गया। मेरा और उनका दिल दोनों हिल-मिलकर एक हो गए। ऐसी श्री राजजी महाराज के इश्क में डूबी आत्मा अब उनसे अलग नहीं हो सकती। अब वह अपने असल अखण्ड वाहेदत में मिल गई है जहां से वह अब हिल भी नहीं सकती।

लगी सो लगी आतम अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए।
सरभर भई पर आतम यों कर, यों तेहे दिली मिली छोड़ सके न कोए।। ३ ।।

आत्मा के अन्दर प्रीतम के विरह की चोट ऐसी लगी कि अन्दर सोई हुई आत्मा जाग उठी। अब उसे कोई अलग नहीं कर सकता। अब आतम और परआतम दोनों एक रस हो गई हैं और दोनों की एक दिली ऐसी हो गई है कि वह अब अलग नहीं हो सकती।

महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल मांहीं।
एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखिर एक का एक मोहोल बीच और नाहीं।। ४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि ऐसे श्री राजजी महाराज के चरण अब एक क्षण के लिए भी नहीं छूट सकते, क्योंकि मेरे माशूक का घर मेरा दिल हो गया है। हम पहले भी परमधाम में एक थे। बीच में बृज-रास में आकर एक हुए और अब आखिर में हम दोनों एक हो गए। अब बीच में और कोई नहीं है।

|| प्रकरण || ११५ || चौपाई || १६९२ ||

Nijanand App

नूर नगन चेतन भूखन रचे, अंग संग देखे सब चढ़ते रोसन।
यों खैंच खड़ी करी इलम खसम के, लई जोस फरामोस से होस वतन।। १ ।।

नग और आभूषण दोनों नूर के हैं और चेतन हैं। इनकी शोभा अंग की शोभा के साथ-साथ बढ़ती है। इस तरह श्री राजजी की तारतम वाणी ने आत्मा को माया से खींचकर जागृत कर दिया और बेसुधी से होश में लाकर जोश देकर घर में बुला लिया।

सब अंग आसिक के इस्क सों रस बसे, बढ़त बढ़त बीच आए बका।
यों आई उमत इस्क भरी अर्स में, पीवे साफ सुराई सांई हाथ सका।। २ ।।

हम रूहों के सब अंग इश्क से भरपूर हैं। इश्क के बढ़ते रस में परमधाम आए। इस तरह से मोमिनों की पूरी जमात इश्क से भरी हुई घर में आकर अपने पिलाने वाले धनी के हाथ से उनके दिल रूपी सुराही से इश्क की शराब को पीते हैं।

हकें अब लिए फेर अंधेर से इन बेर, रूहें मोमिन पोहोंचियां अर्स माहें तन।
बृज रास जागनी तीनों सुख देय के, मोमिन तन किए धंन धंन।। ३ ।।

इस बार फिर श्री राजजी महाराज ने माया से निकाल लिया। रूह मोमिन अपने असल तन में घर परमधाम पहुंचे। श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को बृज, रास और जागनी के सुख देकर धन्य-धन्य किया।

भनत महामती हक दिल मारफत की, पोहोंचाई इन न्यामतें उमत खिलवत।
क्यों कहूं सिफत बरकत वाहेदत की, लज्जत आई इमामत कयामत।। ४ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी महाराज के दिल की बातों को कहती हैं, क्योंकि इन्होंने ही ब्रह्मसृष्टि की जमात को मूल-मिलावा में इश्क की न्यामत से पहुंचाया। अब इन मोमिनों की शक्ति का वर्णन कैसे करूं? क्योंकि ब्रह्माण्ड को कायम करने की लज्जत इनको मिली।

।। प्रकरण ।। ११६ ।। चौपाई ।। १६९६ ।।

मिली मासूक के मोहोल में माननी, आसिक अंग न माहें अंग।
जानूं जामनी बीच जुदी हुती हक जात सें, पेहेचान हुई प्रात हुए पिउ संग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपने माशूक श्री राजजी के अर्श, अर्थात् मेरा दिल ही उनका ठिकाना है, में उनसे मिली। मुझ आशिक के अंग में अब खुशी नहीं समाती (क्योंकि दोनों एक अंग हो गए)। मुझे ऐसा लगा कि जैसे रात्रि में मैं अपने धनी से अलग हो गई थी और अब ज्ञान के सवेरे से मुझे पता लगा कि मैं प्रीतम के पास हूं।

मन सुकन तन भए सब एकै, एकै जात सिफात सब बात।
एक अंग संग रंग सब एकै, सब एक मता अर्स बका बिसात।। २ ।।

मन, वचन, तन, जात (व्यक्तित्व), सिफात (गुण) तथा सभी बातें एक हो गईं। अब हम दोनों के मिलने से एक तन हो गए और अखण्ड घर की बिसात (न्यामत) में एक विचारमय हो गए।

नाहीं जुदा कांही जांही अर्स मांहीं, मिले रूह भेले दिल एक हुए।
तो कलूब किबला भया मकबूल अल्लाह कह्या, अव्वल आखिर मिले एक हुए न जुए।। ३ ।।

परमधाम के बीच में जुदाई कहीं नहीं है। वहां हम रूहें श्री राजजी महाराज से मिलकर एकाकार हुए, तो मेरा दिल ही धनी का घर बन गया जिसको श्री प्राणनाथजी ने स्वीकार किया। जैसे पहले परमधाम में थे वैसे आखिर में भी एक हो गए। अलग नहीं हुए।

Nijanand App

नूर नगन चेतन भूखन रचे, अंग संग देखे सब चढ़ते रोसन।
यों खैंच खड़ी करी इलम खसम के, लई जोस फरामोस से होस वतन।। १ ।।

नग और आभूषण दोनों नूर के हैं और चेतन हैं। इनकी शोभा अंग की शोभा के साथ-साथ बढ़ती है। इस तरह श्री राजजी की तारतम वाणी ने आत्मा को माया से खींचकर जागृत कर दिया और बेसुधी से होश में लाकर जोश देकर घर में बुला लिया।

सब अंग आसिक के इस्क सों रस बसे, बढ़त बढ़त बीच आए बका।
यों आई उमत इस्क भरी अर्स में, पीवे साफ सुराई सांई हाथ सका।। २ ।।

हम रूहों के सब अंग इश्क से भरपूर हैं। इश्क के बढ़ते रस में परमधाम आए। इस तरह से मोमिनों की पूरी जमात इश्क से भरी हुई घर में आकर अपने पिलाने वाले धनी के हाथ से उनके दिल रूपी सुराही से इश्क की शराब को पीते हैं।

हकें अब लिए फेर अंधेर से इन बेर, रूहें मोमिन पोहोंचियां अर्स माहें तन।
बृज रास जागनी तीनों सुख देय के, मोमिन तन किए धंन धंन।। ३ ।।

इस बार फिर श्री राजजी महाराज ने माया से निकाल लिया। रूह मोमिन अपने असल तन में घर परमधाम पहुंचे। श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को बृज, रास और जागनी के सुख देकर धन्य-धन्य किया।

भनत महामती हक दिल मारफत की, पोहोंचाई इन न्यामतें उमत खिलवत।
क्यों कहूं सिफत बरकत वाहेदत की, लज्जत आई इमामत कयामत।। ४ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी महाराज के दिल की बातों को कहती हैं, क्योंकि इन्होंने ही ब्रह्मसृष्टि की जमात को मूल-मिलावा में इश्क की न्यामत से पहुंचाया। अब इन मोमिनों की शक्ति का वर्णन कैसे करूं? क्योंकि ब्रह्माण्ड को कायम करने की लज्जत इनको मिली।

।। प्रकरण ।। ११६ ।। चौपाई ।। १६९६ ।।

मिली मासूक के मोहोल में माननी, आसिक अंग न माहें अंग।
जानूं जामनी बीच जुदी हुती हक जात सें, पेहेचान हुई प्रात हुए पिउ संग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपने माशूक श्री राजजी के अर्श, अर्थात् मेरा दिल ही उनका ठिकाना है, में उनसे मिली। मुझ आशिक के अंग में अब खुशी नहीं समाती (क्योंकि दोनों एक अंग हो गए)। मुझे ऐसा लगा कि जैसे रात्रि में मैं अपने धनी से अलग हो गई थी और अब ज्ञान के सवेरे से मुझे पता लगा कि मैं प्रीतम के पास हूं।

मन सुकन तन भए सब एकै, एकै जात सिफात सब बात।
एक अंग संग रंग सब एकै, सब एक मता अर्स बका बिसात।। २ ।।

मन, वचन, तन, जात (व्यक्तित्व), सिफात (गुण) तथा सभी बातें एक हो गईं। अब हम दोनों के मिलने से एक तन हो गए और अखण्ड घर की बिसात (न्यामत) में एक विचारमय हो गए।

नाहीं जुदा कांही जांही अर्स मांहीं, मिले रूह भेले दिल एक हुए।
तो कलूब किबला भया मकबूल अल्लाह कह्या, अव्वल आखिर मिले एक हुए न जुए।। ३ ।।

परमधाम के बीच में जुदाई कहीं नहीं है। वहां हम रूहें श्री राजजी महाराज से मिलकर एकाकार हुए, तो मेरा दिल ही धनी का घर बन गया जिसको श्री प्राणनाथजी ने स्वीकार किया। जैसे पहले परमधाम में थे वैसे आखिर में भी एक हो गए। अलग नहीं हुए।

Nijanand App

हक अरस परस सरस सब एक रस, वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत।
महामत अलमस्त होए आवें उमत लिए, पीवत आवत हक हाथ सरबत।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी और मेरे अरस-परस (परस्पर) मिलने से दोनों एक रस हो गए और मूल-मिलावे की एकदिली की निसबत और न्यामत की पहचान हुई। अब श्री राजजी महाराज अपने हाथों से इश्क का शर्बत पिलाकर मोमिनों की जमात को लेकर मस्ती से घर आ रहे हैं।

|| प्रकरण || ११७ || चौपाई || १७०० ||

राग श्री

मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत।
ए अचरज देखो मोमिनों, कैसा समया हुआ सखत।। १ ।।

राजाराम भाई मेड़ते से छत्रसालजी को लिख रहे हैं कि हमारी सेवा का भार जब आपने ले ही लिया है, तो यदि कहो तो हम भी वहां आ जाएं। श्री महामतिजी कहते हैं कि बड़ी हैरानी की बात है। मोमिनो! देखो, समय कितना कठिन हो गया।

दम दिल तन एकै, बिछुर के भूली वतन।
जानू के सोहोबत कबूं न हुती, तो यों कहावें सुकन।। २ ।।

जिनका एक तन, एक दिल, एक घर है, वह बिछुड़कर माया में ऐसी भूल गई हैं कि मानो कभी मिली ही नहीं थी, इसलिए ऐसा लिखा है।

मोमिन रखे मोमिन सों, जो तन मन अपना माल।
सो अरवा नहीं अर्स की, न तिन सिर नूर जमाल।। ३ ।।

जो ब्रह्मसृष्टि (सुन्दरसाथ) दूसरे सुन्दरसाथ से अपना तन, मन और धन अलग समझता है, वह परमधाम की आत्मा नहीं है और उन पर श्री राजजी महाराज की मेहर नहीं है।

मता मोमिन का काफर, ले न सके क्योंए कर।
दिल मोमिन का अर्स कह्या, दिल काफर अबलीस घर।। ४ ।।

मोमिनों का खजाना (न्यामत-तारतम वाणी) काफिर किसी तरह नहीं ले सकते। मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज की बैठक है। काफिर के दिल में शैतान की बैठक है।

जब मेला होसी मोमिनों, तब देखसी सब कोए।
और न कोई कर सके, जो मोमिनों से होए।। ५ ।।

जब मोमिनों का मेला होगा तब इस बात को सब जान जाएंगे, जो काम मोमिन कर सकते हैं उसे और कोई नहीं कर सकता।

जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस।
जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस।। ६ ।।

ब्रह्मसृष्टि जब तक घर को भूली है और अनजानेपन में कोई गलती हो जाती है तो कोई दोष नहीं है। पर धनी की जागृत बुद्धि से जब वह जागृत हो जाती है, तब वह अपनी गलती पर अफसोस करेगी।

Nijanand App

हक अरस परस सरस सब एक रस, वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत।
महामत अलमस्त होए आवें उमत लिए, पीवत आवत हक हाथ सरबत।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी और मेरे अरस-परस (परस्पर) मिलने से दोनों एक रस हो गए और मूल-मिलावे की एकदिली की निसबत और न्यामत की पहचान हुई। अब श्री राजजी महाराज अपने हाथों से इश्क का शर्वत पिलाकर मोमिनों की जमात को लेकर मस्ती से घर आ रहे हैं।

।। प्रकरण ।। ११७ ।। चौपाई ।। १७०० ।।

राग श्री

मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत।
ए अचरज देखो मोमिनों, कैसा समया हुआ सखत।। १ ।।

राजाराम भाई मेड़ते से छत्रसालजी को लिख रहे हैं कि हमारी सेवा का भार जब आपने ले ही लिया है, तो यदि कहो तो हम भी वहां आ जाएं। श्री महामतिजी कहते हैं कि बड़ी हैरानी की बात है। मोमिनो! देखो, समय कितना कठिन हो गया।

दम दिल तन एकै, बिछुर के भूली वतन।
जानू के सोहोबत कबूं न हुती, तो यों कहावें सुकन।। २ ।।

जिनका एक तन, एक दिल, एक घर है, वह बिछुड़कर माया में ऐसी भूल गई हैं कि मानो कभी मिली ही नहीं थी, इसलिए ऐसा लिखा है।

मोमिन रखे मोमिन सों, जो तन मन अपना माल।
सो अरवा नहीं अर्स की, न तिन सिर नूर जमाल।। ३ ।।

जो ब्रह्मसृष्टि (सुन्दरसाथ) दूसरे सुन्दरसाथ से अपना तन, मन और धन अलग समझता है, वह परमधाम की आत्मा नहीं है और उन पर श्री राजजी महाराज की मेहर नहीं है।

मता मोमिन का काफर, ले न सके क्योंए कर।
दिल मोमिन का अर्स कह्या, दिल काफर अबलीस घर।। ४ ।।

मोमिनों का खजाना (न्यामत-तारतम वाणी) काफिर किसी तरह नहीं ले सकते। मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज की बैठक है। काफिर के दिल में शैतान की बैठक है।

जब मेला होसी मोमिनों, तब देखसी सब कोए।
और न कोई कर सके, जो मोमिनों से होए।। ५ ।।

जब मोमिनों का मेला होगा तब इस बात को सब जान जाएंगे, जो काम मोमिन कर सकते हैं उसे और कोई नहीं कर सकता।

जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस।
जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस।। ६ ।।

ब्रह्मसृष्टि जब तक घर को भूली है और अनजानेपन में कोई गलती हो जाती है तो कोई दोष नहीं है। पर धनी की जागृत बुद्धि से जब वह जागृत हो जाती है, तब वह अपनी गलती पर अफसोस करेगी।

Nijanand App

हकें जगाए मोमिन, अपनी जान निसबत।
अर्स किया दिल मोमिन, बैठाए बीच खिलवत।।७।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को अपना निसबती जानकर जागृत किया और मोमिनों का दिल अपना अर्श बनाकर एकान्त में अपने चरणों तले बैठाया।

जाकी तरफ न पाई किनहूं, इन माहें चौदे तबक।
ताको ले बैठे दिल में, किया ऐसा अपने हक।।८।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी ने परमधाम को नहीं जाना था। उस परमधाम के सुखों को लेकर श्री राजजी महाराज हमारे दिल में आ बैठे। ऐसी मेहर श्री राजजी महाराज ने हमारे ऊपर की।

और दुनी के दिल पर, किया अबलीस पातसाह।
सो गुम हुए बीच रात के, क्यों ए न पावें राह।।९।।

दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस की बादशाही कर दी, इसलिए यह अज्ञानता के अन्धकार में भटक गए और इनको रास्ता नहीं मिला।

ऐसा हकें जाहेर किया, ऊपर रूहों मेहेर मुतलक।
कई बिध बताई रसूलें, पर क्या करे हवाई खलक।।१०।।

श्री राजजी महाराज ने स्पष्ट कहा है कि उनकी रूहों पर असीम कृपा है। इस बात को रसूल साहब ने कई तरह से बताया, पर यह निराकार की जीवसृष्टि कैसे समझे?

मोमिन सुकन सुन जागसी, जाको अर्स वतन।
जब नूर झंडा खड़ा हुआ, पीछे रहें न रूहें अर्स तन।।११।।

जिन मोमिनों का घर परमधाम है वह इन वचनों को सुनकर जाग जाएंगे। जब तारतम का नूरी झंडा खड़ा हुआ तो कोई ब्रह्मसृष्टि पीछे नहीं रह जाएगी।

एह किताबत पढ़ के, रूहें रेहे न सके एक खिन।
झूठी सों लग न रहे, जो रूह होए मोमिन।।१२।।

इस वाणी को पढ़कर आत्मा (ब्रह्मसृष्टि) एक पल भी न रह सकेगी। जिनकी रूह अर्श की होगी वह झूठी माया में लग नहीं सकती।

सखत बखत ऐसा हुआ, ईमान छोड़्या सबन।
तब अरवाहें करें कुरबानियां, मह होवें मोमिन।।१३।।

इस माया के ब्रह्माण्ड में ऐसा कठिन समय आ गया कि सब ईमान छोड़ देंगे। तब ब्रह्मसृष्टि अपनी कुर्बानी देगी और दूसरे मोमिन इस रास्ते पर चलेंगे।

जीव देते ना सकुचें, मोमिन राह हक पर।
दुनियां जीव ना दे सके, अर्स रूहों बिगर।।१४।।

मोमिन श्री राजजी महाराज की राह में अपने प्राण देने में भी संकोच नहीं करते। अर्श की रूहों के अलावा दुनियां के जीव प्राण न्योछावर नहीं कर सक्ते।

Nijanand App

अर्स तन रूह मोमिन, लोभ न झूठा ताए।
मोमिन जुदागी न सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए।। १५ ।।

मोमिनों के तन में श्री राजजी अर्श करके बैठे हैं, इसलिए इनको झूठी माया का लोभ नहीं सताएगा। मोमिन श्री राजजी महाराज की जुदाई नहीं सहन करेंगे। जैसे दूध और मिश्री मिलकर एक रस हो जाते हैं उसी तरह यह भी एक तन हो जाएंगे।

लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के।
कदम पर कदम धरें, मोमिन कहिए ए।। १६ ।।

हमारे हादी श्री प्राणनाथजी के नसीब में फकीरी लिखी है। जो अपने हादी के कदमों पर कदम रखकर (नक्शे कदम पर चलेंगे) चलेंगे, उन्हीं को परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहा जा सकता है।

एक हक बिना कछू न रखें, दुनी करी मुरदार।
अर्स किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार।। १७ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज के सिवाय सारी दुनियां को मुरदार समझ कर छोड़ देंगे। इनके दिल में श्री राजजी बैठे हैं और यह अक्षर के पार अक्षरातीत धाम पहुंचेंगे।

महामत कहें ए मोमिनों, ए है अपनी गत।
झूठ वास्ते जुदे ना पड़ें, मोमिन अर्स वाहेदत।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! अपनी यही चाल है। हम घर में एक-दिल है, इसलिए झूठी माया में अलग नहीं होंगे।

इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।। १९ ।।

श्री छत्रसालजी कहते हैं कि इन मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के धर्म में जो ईमान लाएगा, उनके ऊपर मैं तन, मन, धन से कुर्बान हो जाऊंगा।

।। प्रकरण ।। ११८ ।। चौपाई ।। १७१९ ।।

राग श्री परज

वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी।
टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी।। १ ।।

हे मेरे प्यारे धनी! मैं तुझ पर वारी-वारी जाती हूं। मैं अपने तन के टुकड़े-टुकड़े करके कुंज-निकुंज में विहार करने वाले धाम धनी पर न्यौछावर कर दूं।

सुन्दर सरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी।
इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी।। २ ।।

इन दोनों स्वरूपों ने दया करके मुझ पर नजरे-करम किया है। ऐसे श्री राजजी श्री श्यामाजी के सुन्दर स्वरूपों पर मैं वारी-वारी जाती हूं।

इन जेहेर जिमी से कोई ना निकस्या, अमल चढ़यो अति भारी।
मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी।। ३ ।।

इस जहर भरे संसार से कोई भी पार नहीं जा सका। माया का नशा बहुत जोर का चढ़ा है। हे मेरी बहन! मेरे देखते-देखते कईयों ने अपना मनुष्य तन खो दिया।

Nijanand App

अर्स तन रूह मोमिन, लोभ न झूठा ताए।
मोमिन जुदागी न सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए।। १५ ।।

मोमिनों के तन में श्री राजजी अर्श करके बैठे हैं, इसलिए इनको झूठी माया का लोभ नहीं सताएगा। मोमिन श्री राजजी महाराज की जुदाई नहीं सहन करेंगे। जैसे दूध और मिश्री मिलकर एक रस हो जाते हैं उसी तरह यह भी एक तन हो जाएंगे।

लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के।
कदम पर कदम धरें, मोमिन कहिए ए।। १६ ।।

हमारे हादी श्री प्राणनाथजी के नसीब में फकीरी लिखी है। जो अपने हादी के कदमों पर कदम रखकर (नक्शे कदम पर चलेंगे) चलेंगे, उन्हीं को परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहा जा सकता है।

एक हक बिना कछू न रखें, दुनी करी मुरदार।
अर्स किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार।। १७ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज के सिवाय सारी दुनियां को मुरदार समझ कर छोड़ देंगे। इनके दिल में श्री राजजी बैठे हैं और यह अक्षर के पार अक्षरातीत धाम पहुंचेंगे।

महामत कहें ए मोमिनों, ए है अपनी गत।
झूठ वास्ते जुदे ना पड़ें, मोमिन अर्स वाहेदत।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! अपनी यही चाल है। हम घर में एक-दिल है, इसलिए झूठी माया में अलग नहीं होंगे।

इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।। १९ ।।

श्री छत्रसालजी कहते हैं कि इन मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के धर्म में जो ईमान लाएगा, उनके ऊपर मैं तन, मन, धन से कुर्बान हो जाऊंगा।

।। प्रकरण ।। ११८ ।। चौपाई ।। १७१९ ।।

राग श्री परज

वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी।
टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी।। १ ।।

हे मेरे प्यारे धनी! मैं तुझ पर वारी-वारी जाती हूं। मैं अपने तन के टुकड़े-टुकड़े करके कुंज-निकुंज में विहार करने वाले धाम धनी पर न्यौछावर कर दूं।

सुन्दर सरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी।
इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी।। २ ।।

इन दोनों स्वरूपों ने दया करके मुझ पर नजरे-करम किया है। ऐसे श्री राजजी श्री श्यामाजी के सुन्दर स्वरूपों पर मैं वारी-वारी जाती हूं।

इन जेहेर जिमी से कोई ना निकस्या, अमल चढ़यो अति भारी।
मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी।। ३ ।।

इस जहर भरे संसार से कोई भी पार नहीं जा सका। माया का नशा बहुत जोर का चढ़ा है। हे मेरी बहन! मेरे देखते-देखते कईयों ने अपना मनुष्य तन खो दिया।

Nijanand App

कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी।।४ ।।

काली, कुबुद्धि, कुबड़ी, अपंग, ऐसी कठोर हृदय वाली मैं नारी हूं, जिसकी आत्मा को निर्मल कर बड़ी सरलता से पार उतार दिया।

सुन्दर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी।
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी जी कायम सुखकारी।।५ ।।

मेरे ऊपर अत्यन्त कृपा करके मुझे सुन्दर स्वरूप और अत्यन्त भाग्यशाली बना दिया। हे मेरे अखण्ड सुख के धनी! मैं ललिता सखी आपके ऊपर करोड़ों बार कुर्बान जाती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ११९ ॥ चौपाई ॥ १७२४ ॥

राग मारू

साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार।।। टेक ।।

कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर।
अनेक पख देखाए तुम को, छोड़ाए के प्रवार।।१ ।।

हे साथजी! मैं तुम्हारी बहुत गुन्हेगार हूं। मैंने तुम्हें वाणी सुना-सुनाकर संसार में बेइज्जत कर दिया। तुम्हारे से घर, कबीला छुड़ाकर माया के अनेक दुःख-सुख (पहलू) दिखाए।

कुटम कबीले माहें अपने, बैठे हते करार।
साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार।।२ ।।

तुम अपने घर, परिवार में आराम से बैठे थे। तरह-तरह से गवाहियां देकर समझा-बुझाकर तुम्हें तुम्हारे कबीले के सुखों से अलग किया और अपार कष्ट दिए।

अनेक अवगुन मैं किए तुमसों, जिनको नाहीं सुमार।
घर घर के किए मैं तुमको, छुड़ाए फिराए राज द्वार।।३ ।।

मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से दुःखी किया जिनकी गिनती नहीं है। मैंने तुमसे घर-घर की भीख मंगवाई और राजद्वारों में भटकाया।

जुदे पहाड़ों रुलाए रलझलाए, दे दे सब्दों का मार।
कर उपराजन खाते अपनी, होए घर में सिरदार।।४ ।।

मेरी वाणी से प्रभावित होने से तुमको भटकाव वाले पहाड़ों में धक्के खाने पड़े। तुम अपने घरों में कमाते खाते घर के मुखिया थे।

सुख सीतल सों अपने घर में, कई भांतों करते प्यार।
सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार।।५ ।।

तुम अपने घर में सुख-शान्ति से बच्चों के साथ प्यार का जीवन बिता रहे थे। यह सब परिवार वाले तुम्हारे दुश्मन बना दिए।

बाल गोपाल माहें खूबी खुसाली, करते मिल नर नार।
सो जेहेर समान कर दिए तुमको, छुड़ाए मीठो रोजगार।।६ ।।

अपने बच्चों के साथ घर आनन्द मंगल से खुशी से जीवन बिता रहे थे। उनके सुख के सब साधन छुड़ाकर तुम्हें वह जहर के समान बना दिए।

Nijanand App

कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी।। ४ ।।

काली, कुबुद्धि, कुबड़ी, अपंग, ऐसी कठोर हृदय वाली मैं नारी हूं, जिसकी आत्मा को निर्मल कर बड़ी सरलता से पार उतार दिया।

सुन्दर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी।
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी जी कायम सुखकारी।। ५ ।।

मेरे ऊपर अत्यन्त कृपा करके मुझे सुन्दर स्वरूप और अत्यन्त भाग्यशाली बना दिया। हे मेरे अखण्ड सुख के धनी! मैं ललिता सखी आपके ऊपर करोड़ों बार कुर्बान जाती हूं।

|| प्रकरण || ११९ || चौपाई || १७२४ ||

राग मारू

साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार।।। टेक ।।

कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर।
अनेक पख देखाए तुम को, छोड़ाए के प्रवार।। १ ।।

हे साथजी! मैं तुम्हारी बहुत गुन्हेगार हूं। मैंने तुम्हें वाणी सुना-सुनाकर संसार में बेइज्जत कर दिया। तुम्हारे से घर, कबीला छुड़ाकर माया के अनेक दुःख-सुख (पहलू) दिखाए।

कुटम कबीले माहें अपने, बैठे हते करार।
साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार।। २ ।।

तुम अपने घर, परिवार में आराम से बैठे थे। तरह-तरह से गवाहियां देकर समझा-बुझाकर तुम्हें तुम्हारे कबीले के सुखों से अलग किया और अपार कष्ट दिए।

अनेक अवगुन मैं किए तुमसों, जिनको नाहीं सुमार।
घर घर के किए मैं तुमको, छुड़ाए फिराए राज द्वार।। ३ ।।

मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से दुःखी किया जिनकी गिनती नहीं है। मैंने तुमसे घर-घर की भीख मंगवाई और राजद्वारों में भटकाया।

जुदे पहाड़ों रुलाए रलझलाए, दे दे सब्दों का मार।
कर उपराजन खाते अपनी, होए घर में सिरदार।। ४ ।।

मेरी वाणी से प्रभावित होने से तुमको भटकाव वाले पहाड़ों में धक्के खाने पड़े। तुम अपने घरों में कमाते खाते घर के मुखिया थे।

सुख सीतल सों अपने घर में, कई भांतों करते प्यार।
सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार।। ५ ।।

तुम अपने घर में सुख-शान्ति से बच्चों के साथ प्यार का जीवन बिता रहे थे। यह सब परिवार वाले तुम्हारे दुश्मन बना दिए।

बाल गोपाल माहें खूबी खुसाली, करते मिल नर नार।
सो जेहेर समान कर दिए तुमको, छुड़ाए मीठो रोजगार।। ६ ।।

अपने बच्चों के साथ घर आनन्द मंगल से खुशी से जीवन बिता रहे थे। उनके सुख के सब साधन छुड़ाकर तुम्हें वह जहर के समान बना दिए।

Nijanand App

विध विध जीत करत माया में, सो ए देवाई सब डार।
कई दृष्टान्त दे दे काढ़े, कर न सके विचार।। ७ ।।

माया के संसार में तुम सदा ही जीतने वाले थे। तुम्हें सब तरफ से मान मिलता था। वह सब तुमसे छुड़ा दिया। कई दृष्टान्त दे देकर तुमसे घर छुड़ा दिया और सोचने का मौका नहीं दिया।

मीठी माया वल्लभ जीव की, सो छुड़ायो कुटम परिवार।
बड़े घराने सब कोई जाने, उठावते तिनका भार।। ८ ।।

ईश्वर की प्यारी माया तुम्हारे जीव को लुभा रही थी। ऐसे लुभावने कुटुम्ब, परिवार को मैंने छुड़वा दिया। तुम अपने कुल (परिवार) में पूज्य कहलाते थे और घर, परिवार का बोझ उठाते थे। वह सब छुड़वा दिया।

ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार।
सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार।। ९ ।।

घर के ऐसे बड़े-बड़े सुखों का मैं कहां तक वर्णन करूं? मेरी थोड़ी सी वाणी सुनने के बाद यह सुख तुम्हें अग्नि के समान लगने लगे।

ले बड़ाई बैठे थे अपनी, सो छुड़ाए दिए हथियार।
ठीक काहूं न लगने देऊं, जाको कछुक अंकूर सुध सार।। १० ।।

तुम आप बुजरकी की शान-मान में बैठे थे। वह सब मैंने छुड़वा दी। जिसको अपने मूल घर परमधाम की थोड़ी भी पहचान हो गई उसे मेरी वाणी चैन से बैठने नहीं देती।

यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने ही को आकार।
ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार।। ११ ।।

इस तरह से माया के छलों का मैं कितना बयान करूं? मेरा शरीर ही जादू का बना है (कि मैं हूं अक्षरातीत और बैठा हूं एक मनुष्य तन में)। इस माया के जहरीले नशे को मैं इस तरह से झाड़कर उतार देती हूं कि जरा भी माया का जहर बाकी नहीं रहता।

।। प्रकरण ।। १२० ।। चौपाई ।। १७३५ ।।

सिफत तो सारी सब्द में, चौदे तबक के माहें।
कलाम अल्ला न्यारा सबन से, सो क्यों कहूं सिफत जुबांए।। १ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म की महिमा ग्रन्थों में गाई है, परन्तु कुरान (अल्लाह कलाम) इन सब ग्रन्थों से अलग है। इसकी सिफत इस जबान से कैसे कहूं?

तामें सिफत सोफी महंमद की, याकी गरीब गिरो की सिफत।
सो करसी कायम त्रैलोक को, एही खावंद आखिरत।। २ ।।

उसके अन्दर भी आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी और उनकी गरीब जमात की शोभा का वर्णन है। श्री प्राणनाथजी ही आखिरी वक्त के खाविंद हैं और यही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे।

सो वचन लिखे हैं इसारतों, पाइए खुले हकीकत।
उपले माएने न पाइए, जो अनेक दौड़ाओ मत।। ३ ।।

यह वचन कुरान में इशारों में लिखे हैं। उनके भेद खुलने पर हकीकत का पता लगता है। जितनी भी अक्ल दौड़ा लो ऊपर के मायने लेने से भेद नहीं खुलता।

Nijanand App

विध विध जीत करत माया में, सो ए देवाई सब डार।
कई दृष्टान्त दे दे काढ़े, कर न सके विचार।। ७ ।।

माया के संसार में तुम सदा ही जीतने वाले थे। तुम्हें सब तरफ से मान मिलता था। वह सब तुमसे छुड़ा दिया। कई दृष्टान्त दे देकर तुमसे घर छुड़ा दिया और सोचने का मौका नहीं दिया।

मीठी माया वल्लभ जीव की, सो छुड़ायो कुटम परिवार।
बड़े घराने सब कोई जाने, उठावते तिनका भार।। ८ ।।

ईश्वर की प्यारी माया तुम्हारे जीव को लुभा रही थी। ऐसे लुभावने कुटुम्ब, परिवार को मैंने छुड़वा दिया। तुम अपने कुल (परिवार) में पूज्य कहलाते थे और घर, परिवार का बोझ उठाते थे। वह सब छुड़वा दिया।

ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार।
सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार।। ९ ।।

घर के ऐसे बड़े-बड़े सुखों का मैं कहां तक वर्णन करूं? मेरी थोड़ी सी वाणी सुनने के बाद यह सुख तुम्हें अग्नि के समान लगने लगे।

ले बड़ाई बैठे थे अपनी, सो छुड़ाए दिए हथियार।
ठीक काहू न लगने देऊं, जाको कछुक अंकूर सुध सार।। १० ।।

तुम आप बुजरकी की शान-मान में बैठे थे। वह सब मैंने छुड़वा दी। जिसको अपने मूल घर परमधाम की थोड़ी भी पहचान हो गई उसे मेरी वाणी चैन से बैठने नहीं देती।

यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने ही को आकार।
ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार।। ११ ।।

इस तरह से माया के छलों का मैं कितना बयान करूं? मेरा शरीर ही जादू का बना है (कि मैं हूं अक्षरातीत और बैठा हूं एक मनुष्य तन में)। इस माया के जहरीले नशे को मैं इस तरह से झाड़कर उतार देती हूं कि जरा भी माया का जहर बाकी नहीं रहता।

|| प्रकरण || १२० || चौपाई || १७३५ ||

सिफत तो सारी सब्द में, चौदे तबक के माहें।
कलाम अल्ला न्यारा सबन से, सो क्यों कहूं सिफत जुबांए।। १ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म की महिमा ग्रन्थों में गाई है, परन्तु कुरान (अल्लाह कलाम) इन सब ग्रन्थों से अलग है। इसकी सिफत इस जबान से कैसे कहूं?

तामें सिफत सोफी महंमद की, याकी गरीब गिरो की सिफत।
सो करसी कायम त्रैलोक को, एही खावंद आखिरत।। २ ।।

उसके अन्दर भी आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी और उनकी गरीब जमात की शोभा का वर्णन है। श्री प्राणनाथजी ही आखिरी वक्त के खाविंद हैं और यही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे।

सो वचन लिखे हैं इसारतों, पाइए खुले हकीकत।
उपले माएने न पाइए, जो अनेक दौड़ाओ मत।। ३ ।।

यह वचन कुरान में इशारों में लिखे हैं। उनके भेद खुलने पर हकीकत का पता लगता है। जितनी भी अक्ल दौड़ा लो ऊपर के मायने लेने से भेद नहीं खुलता।

Nijanand App

गोस कुतब पैगंमर, ओलिए अंबिए कई नाम।
ताए कई बिध दई बुजरकियां, साहेब के समान।।४।।

संसार वाले लोगों ने कुरान के ज्ञानी लोगों को, गौस, कुतुब, पैगम्बर, औलिया, अंबिया कई नामों से खुदा के समान ही बताया है और उन्हें इन उपाधियों से सम्मानित किया है।

सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम।
अव्वल आखिर दोऊ दीन में, एही बुजरक महंमद नाम।।५।।

यह सारी सिफतें आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की हैं जिन्हें कुरान में "स्याम" करके लिखा है। हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों में इन्हीं आखिरी मुहम्मद इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी की साहेबी बताई है।

याही बिध गिरोह की, नाम लिखे अनेक।
जुदे जुदे नामों पर सिफत, पर गिरो एक की एक।।६।।

इसी प्रकार से इनकी जमात के भी अनेक नाम लिखे हैं और जुदा-जुदा नामों से इनकी प्रशंसा की गई है। पर वह प्रशंसनीय जमात केवल ब्रह्मसृष्टि मोमिनों की ही है।

तिनकी भी है तफसीर, सुनियो गिरो मोमिन।
मारफत दरवाजा खोलिया, दिल दीजो नजर वतन।।७।।

उनका भी ब्यौरा अलग है, इसलिए जो मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) हैं ध्यान देकर सुनो। जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम के दरवाजे खुल गए हैं। अब अपनी सुरता अपने घर परमधाम में लगाना।

गिरो एक बुजरक कही, रूह अल्ला आए तिन पर।
इत जादे पैगंमर दो भए, एक नसली और नजर।।८।।

कुरान में एक नाजी फिरके का ब्यान आया है। रूह अल्लाह उन्हीं के वास्ते आए। उनके नसली (बिहारीजी) और नजरी (मेहराज ठाकुर) दो पैगम्बर हुए।

तिनसे राह जुदी हुई, गिरो दोए हुई झगर।
एक उरझे दीन जहूद के, उतरी किताबें दूजे पर।।९।।

उन दोनों में झगड़ा होने से दो रास्ते बन गए। उनमें से एक बिहारीजी का फिरका हिन्दू धर्म में शोभित हो गया और दूसरे नजरी पुत्र स्वामीजी पर कुलजम सरूप की वाणी आई।

सो भाई न माने किताब को, रोसनाई ढांपे फेर फेर।
तब आया दूजे पर महंमद, सब किताबें ले कर।।१०।।

बिहारीजी उस वाणी को नहीं मानते और बार-बार वाणी को ढांपने का ही प्रयास करते हैं। दूसरे तन मेहेराज ठाकुर के अन्दर सब शास्त्रों को लेकर श्री राजजी महाराज आकर विराजमान हो गए।

एही फिरका नाजी कह्या, दे साहेदी फुरमान।
एक नाजी नारी बहत्तर, एही नाजी की पेहेचान।।११।।

इसी फिरके को नाजी फिरका कहा है जो कुरान के छिपे रहस्य खोलकर गवाहियां देगा। बहत्तर फिरके दोजखी होंगे और एक नाजी फिरका ही कुरान के भेदों को खोलेगा। यही उसकी पहचान होगी।

एही गिरो खासी कही, जिनमें महंमद पैगंमर।
हकीकत मारफत खोल के, जाहेर करी आखिर।।१२।।

इसी को ही खुदा की खास गिरोह कहा गया है जिसमें आखिर में मुहम्मद मेंहदी श्री प्राणनाथजी प्रगट हुए और उन्होंने हकीकत और मारफत के दरवाजे खोलकर, कयामत का दिन आ गया है, की सूचना दी।

Nijanand App

जब खुली हकीकत मारफत, तब मजहब हुए सब एक।
तब सबके दिल धोखा मिट्या, हुए रोसन पाए विवेक।। १३ ।।

जब हकीकत और मारफत के भेद खुल गए तो सब धर्म एक हो गए और सबके दिलों के संशय मिट गए तथा जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुरान के गुझ भेद जाहिर हो गए।

एती बातें कुरान में, बिध बिध करी रोसन।
कई नाम धर दई बुजरकियां, सो बल महंमद और मोमिन।। १४ ।।

ऐसी कई बातें कुरान में तरह-तरह से लिखी हैं और कई नामों से इमाम मेंहदी और मोमिनों की सिफत का वर्णन है।

कहे महामत मुसाफ उमत की, सिफत न आवे जुबान।
तीनों अर्स अजीम के, ईसे किए बयान।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में लिखी मोमिन (ब्रह्मसृष्टियों) की सिफत जबान से कही नहीं जाती। इमाम मेंहदी, मोमिन तथा तारतम वाणी तीनों परमधाम के हैं, ऐसा ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी) ने बताया।

॥ प्रकरण ॥ १२१ ॥ चौपाई ॥ १७५० ॥

ब्रह्मसृष्टि बीच धाम के, ए देखें खेल सुपन।
मोहे स्यामाजीएं यो कह्या, जो आए धाम से आपन।। १ ।।

ब्रह्मसृष्टियां परमधाम में बैठकर सपने का खेल देख रही हैं। श्री श्यामाजी ने आकर मुझसे कहा कि हम परमधाम से आए हैं।

थे हम दोऊ बंदे स्यामाजीय के, एक नसली और नजरी।
झगड़ दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी।। २ ।।

हम दोनों नसली (बिहारीजी) और नजरी (मेहेराज ठाकुर) श्री देवचन्द्रजी की सन्तान हैं। दोनों आपस में झगड़ कर जुदा हो गए। दुनियां को पारब्रह्म की वाणी का सन्देश देने का एक उद्देश्य था।

तब केतिक गिरो उधर भई, और केतिक मेरे साथ।
दई जाहेर मसनंद नसलिएं, दूजी बातून मेरे हाथ।। ३ ।।

कई सुन्दरसाथ नसली पुत्र बिहारीजी के साथ और कई मेरे साथ आ गए। जाहिरी गादी चाकला मन्दिर की बिहारीजी को मिली और दूसरी बातूनी गद्दी मुझे दी, अर्थात् रुई की गद्दी बिहारीजी को मिली और श्री राजजी श्री श्यामाजी की बैठक मेरे अन्दर हो गई।

उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए।
तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महमद का होए।। ४ ।।

परमधाम की वाणी का अवतरण मेरे तन से हुआ जिस को बिहारीजी की जमात नहीं मानती। तब मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी) मेरे अन्दर आकर बैठ गए। जैसा रसूल मुहम्मद ने कुरान में कहा था वैसा ही हुआ।

सो हकीकत सब कुरान में, कई ठौरों लिखी साख।
जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूं केती हजारों लाख।। ५ ।।

इस हकीकत को कुरान में कई जगह पर गवाहियां देकर लिखा है। यह सब गवाहियां पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने स्वयं कुरान में लिखवाई हैं।

Nijanand App

जब खुली हकीकत मारफत, तब मजहब हुए सब एक।
तब सबके दिल धोखा मिट्या, हुए रोसन पाए विवेक।। १३ ।।

जब हकीकत और मारफत के भेद खुल गए तो सब धर्म एक हो गए और सबके दिलों के संशय मिट गए तथा जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुरान के गुझ भेद जाहिर हो गए।

एती बातें कुरान में, बिध बिध करी रोसन।
कई नाम धर दई बुजरकियां, सो बल महंमद और मोमिन।। १४ ।।

ऐसी कई बातें कुरान में तरह-तरह से लिखी हैं और कई नामों से इमाम मेंहदी और मोमिनों की सिफत का वर्णन है।

कहे महामत मुसाफ उमत की, सिफत न आवे जुबान।
तीनों अर्स अजीम के, ईसे किए बयान।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में लिखी मोमिन (ब्रह्मसृष्टियों) की सिफत जबान से कही नहीं जाती। इमाम मेंहदी, मोमिन तथा तारतम वाणी तीनों परमधाम के हैं, ऐसा ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी) ने बताया।

|| प्रकरण || १२१ || चौपाई || १७५० ||

ब्रह्मसृष्टि बीच धाम के, ए देखें खेल सुपन।
मोहे स्यामाजीएं यो कह्या, जो आए धाम से आपन।। १ ।।

ब्रह्मसृष्टियां परमधाम में बैठकर सपने का खेल देख रही हैं। श्री श्यामाजी ने आकर मुझसे कहा कि हम परमधाम से आए हैं।

थे हम दोऊ बंदे स्यामाजीय के, एक नसली और नजरी।
झगड़ दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी।। २ ।।

हम दोनों नसली (बिहारीजी) और नजरी (मेहेराज ठाकुर) श्री देवचन्द्रजी की सन्तान हैं। दोनों आपस में झगड़ कर जुदा हो गए। दुनियां को पारब्रह्म की वाणी का सन्देश देने का एक उद्देश्य था।

तब केतिक गिरो उधर भई, और केतिक मेरे साथ।
दई जाहेर मसनंद नसलिएं, दूजी बातून मेरे हाथ।। ३ ।।

कई सुन्दरसाथ नसली पुत्र बिहारीजी के साथ और कई मेरे साथ आ गए। जाहिरी गादी चाकला मन्दिर की बिहारीजी को मिली और दूसरी बातूनी गद्दी मुझे दी, अर्थात् रुई की गद्दी बिहारीजी को मिली और श्री राजजी श्री श्यामाजी की बैठक मेरे अन्दर हो गई।

उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए।
तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महमद का होए।। ४ ।।

परमधाम की वाणी का अवतरण मेरे तन से हुआ जिस को बिहारीजी की जमात नहीं मानती। तब मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी) मेरे अन्दर आकर बैठ गए। जैसा रसूल मुहम्मद ने कुरान में कहा था वैसा ही हुआ।

सो हकीकत सब कुरान में, कई ठौरों लिखी साख।
जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूं केती हजारों लाख।। ५ ।।

इस हकीकत को कुरान में कई जगह पर गवाहियां देकर लिखा है। यह सब गवाहियां पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने स्वयं कुरान में लिखवाई हैं।

Nijanand App

हम दोऊ बंदे रूहअल्लाह के, दोऊ गिरो जुदी भई।
तीसरी सृष्ट जो जाहेरी, सब मजकूर इनकी कही।।६ ।।

हम दोनों रूह अल्लाह (श्यामाजी) के अंग थे और दोनों की जमातें अलग हो गईं ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि मेरे साथ आ गईं और तीसरी जीवसृष्टि बिहारीजी के साथ हो गई यह सब कुरान में लिखा है।

ठौर ठौर दई बड़ाइयां, मिने सब हमारी बात।
केती कहूं मेहेरबानगी, मेरे धनी करी साख्यात।।७ ।।

मेरे धाम धनी ने जो साक्षात् कृपा की है उसका मैं कैसे वर्णन करूं? कुरान में अनेक ठिकाने पर हमारी बातें और बुजरकी लिखी है।

महामत कहें कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर।
तिन रूह पर इमाम का, बरसे वतनी नूर।।८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि कोई दिल से विचार कर इस जिक्र को समझेगा, तो उस पर इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की कृपा का नूर बरसेगा।

।। प्रकरण ।। १२२ ।। चौपाई ।। १७५८ ।।

चरचरी छंद

स्यामाजी स्याम के संग, जुवती अति जोर जंग।
करती पूरन रंग, परआतम परे।। १ ।।

किशोरी श्री श्यामाजी अपने श्री श्यामजी श्री राजजी के साथ में जबरदस्त आनन्द की लीला करती हैं। वह अपनी परआतम के परे मूल स्वरूप का पूर्ण सुख लेती हैं।

अंग अंग उछरंग, सखी सखी मन उमंग।
अलबेली अति अभंग, भामनी रस भरे।। २ ।।

सब सखियों के मन भी उमंग से भरे हैं तथा उनके अंग-अंग में मस्ती छाई है। प्रेम की दीवानी सखियों को अखण्ड प्रेम मिला।

छटके छेल कंठ मेल, हांस खेल रंग रेल।
बंध बेल ठमके ठेल, कामनी केलि करे।। ३ ।।

सखियां अपने प्रीतम के गले में बांहें डालकर झूलती हैं, हंसी और विनोद में खेलती हैं। वह ठुमकती हुई एक-दूसरे को धकेलती हुई प्रीतम से बेल की तरह लिपट कर आनन्द करती हैं।

कंठ हार सजे सिनगार, नैन समार सोभे मुखार।
संग आधार करे विहार, महामती काज सरे।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इनके सुन्दर गले में हार हैं। सिनगार सजे हैं और नैनों में अंजन लगा मुखारबिन्द शोभायमान है। वह सखियां अपने धनी के साथ विहार करती है और अपनी मनोकामनाएं पूरी करती हैं।

।। प्रकरण ।। १२३ ।। चौपाई ।। १७६२ ।।

Nijanand App

हम दोऊ बंदे रूहअल्लाह के, दोऊ गिरो जुदी भई।
तीसरी सृष्ट जो जाहेरी, सब मजकूर इनकी कही।। ६ ।।

हम दोनों रूह अल्लाह (श्यामाजी) के अंग थे और दोनों की जमातें अलग हो गईं ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि मेरे साथ आ गईं और तीसरी जीवसृष्टि बिहारीजी के साथ हो गई यह सब कुरान में लिखा है।

ठौर ठौर दई बड़ाइयां, मिने सब हमारी बात।
केती कहूं मेहेरबानगी, मेरे धनी करी साख्यात।। ७ ।।

मेरे धाम धनी ने जो साक्षात् कृपा की है उसका मैं कैसे वर्णन करूं? कुरान में अनेक ठिकाने पर हमारी बातें और बुजरकी लिखी है।

महामत कहें कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर।
तिन रूह पर इमाम का, बरसे वतनी नूर।। ८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि कोई दिल से विचार कर इस जिक्र को समझेगा, तो उस पर इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की कृपा का नूर बरसेगा।

।। प्रकरण ।। १२२ ।। चौपाई ।। १७५८ ।।

चरचरी छंद

स्यामाजी स्याम के संग, जुवती अति जोर जंग।
करती पूरन रंग, परआतम परे।। १ ।।

किशोरी श्री श्यामाजी अपने श्री श्यामजी श्री राजजी के साथ में जबरदस्त आनन्द की लीला करती हैं। वह अपनी परआतम के परे मूल स्वरूप का पूर्ण सुख लेती हैं।

अंग अंग उछरंग, सखी सखी मन उमंग।
अलबेली अति अभंग, भामनी रस भरे।। २ ।।

सब सखियों के मन भी उमंग से भरे हैं तथा उनके अंग-अंग में मस्ती छाई है। प्रेम की दीवानी सखियों को अखण्ड प्रेम मिला।

छटके छेल कंठ मेल, हांस खेल रंग रेल।
बंध बेल ठमके ठेल, कामनी केलि करे।। ३ ।।

सखियां अपने प्रीतम के गले में बांहें डालकर झूलती हैं, हंसी और विनोद में खेलती हैं। वह ठुमकती हुई एक-दूसरे को धकेलती हुई प्रीतम से बेल की तरह लिपट कर आनन्द करती हैं।

कंठ हार सजे सिनगार, नैन समार सोभे मुखार।
संग आधार करे विहार, महामती काज सरे।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इनके सुन्दर गले में हार हैं। सिनगार सजे हैं और नैनों में अंजन लगा मुखारबिन्द शोभायमान है। वह सखियां अपने धनी के साथ विहार करती है और अपनी मनोकामनाएं पूरी करती हैं।

।। प्रकरण ।। १२३ ।। चौपाई ।। १७६२ ।।

Nijanand App

राग श्री कालेरो

हम चडी सखी संग रे, रूड़ा राज सों राखो रंग, सखी रे हमचडी।। टेक ।।

सतगुर मारो श्री वालोजी, तेह तणें पाए लागूं।
मूल सगाई जांणी मारा वाला, अखंड सुखडा मांगूं।। १ ।।

हे सखियो! हम पर प्रेम की मस्ती छाई है। अपने प्यारे श्री राजजी से आनन्द करो। मैं अपने वाला जी (सतगुरु के) चरणों में प्रणाम करती हूं और अपना मूल का सम्बन्ध जानकर प्रीतम से अखण्ड सुख मांगती हूं।

सुक जी ना वचन सुणावी काने, ततखिण कीधो अजवास।
आटला दिवस कोणें नव जाण्यूं, हवे प्रगट थयो प्रकास।। २ ।।

श्री शुकदेवजी की वाणी सुनाकर तुरन्त मुझे जागृत बुद्धि (तारतम) का ज्ञान दिया। इतने दिन तक जिस पारब्रह्म को किसी ने जाना नहीं था, अब जाहिर हो गए।

आंकडियो माहें छे विस्मी, झीणी गूंथण जाली।
जेनो कागल जे पर हुतो, तेणे घूंटी सर्वे टाली।। ३ ।।

श्री शुकदेवजी की वाणी भागवत में कठिन आंकड़ियां हैं, जो बारीक जाली की तरह गुंथी हैं। यह भागवत ज्ञान जिन ब्रह्मसृष्टियों के लिए आया था, उन्होंने ही इन आंकड़ियों को खोला।

हवे जेणे ए निध प्रगट कीधी, भली ते बुध प्रकासी।
दीसंतो आकार ज दीसे, पण वेहद पुरनों वासी।। ४ ।।

अब जिसने इस जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) के ज्ञान को प्रगट किया उनको देखो। उनका आकार (तन) तो साधारण दिखाई देता है, परन्तु बेहद से पार परमधाम में रहने वाले हैं।

तारतम लई श्री राज पधारया, थयूं ते सर्व ने जाण।
सखियो कहे अमें आवी ने मलसूं, मलिया ते मूल एधाण।। ५ ।।

तारतम लेकर श्री राजजी महाराज आए। जिससे सबको जानकारी मिली। अब सब ब्रह्मसृष्टियां कहती हैं कि हम सब आकर मिलेंगी। हमारे मूल सम्बन्धी श्री प्राणनाथजी प्रगट हो गए हैं।

सखियो सर्वे आवी जुजवी, एक बीजीने खोले।
आ लीला केम छानी रेहेसे, सखियो मली सहू टोले।। ६ ।।

अब सब सखियां अलग-अलग आकर एक-दूसरे को ढूंढ रही हैं। अब यह लीला कैसे छिपी रहेगी? यहां सखियां अपने-अपने जुत्थों (समूहों) में आ रही हैं।

रास रच्यो रमसूं रूडी भांते, प्रगटिया परमाण।
ए सुख सोभा आंणी जिभ्याएं, केम करी करूं वखाण।। ७ ।।

जागनी रास का खेल रच गया है। हम सब अच्छी तरह से जाहिर होकर खेलेंगे। इस सुख की शोभा का वर्णन इस जबान से किस तरह से करूं?

पेहेली वृन्दावन मां रामत, वली ते आंहीं उतपन।
आ लीलाओने प्रगट करसे, सुकजी तणें वचन।। ८ ।।

जो आनन्द की रामत (क्रीड़ा) वृन्दावन में की थी, वही अब दुबारा प्रगट हुई है। इन दोनों लीलाओं का वर्णन श्री शुकदेवजी की वाणी से होगा।

Nijanand App

वृज रास आंहीं तेहज लीला, ते वालो ते दिन।
तेह घड़ी ने तेहज पल, वैराट थासे धंन धंन।। ९ ।।

यहां पर वही बृज-रास की लीला हो रही है। वही वालाजी हैं, वही दिन है, वही घड़ी है, वही पल है, जिसमें वैराट अखण्ड होकर धन्य-धन्य होगा।

अमें मांगी रामत राज कनें, ते तां पेहेली दाण देखाडी।
कांईक मनोरथ रह्यो मन मांहें, ते रंग भर आहीं रमाडी।। १० ।।

हमने श्री राजजी से खेल मांगा था। उन्होंने पहली बार दिखाया। फिर भी मन में कुछ चाहना रह गई थी। उस इच्छा को अच्छी तरह से खेल दिखाकर पूरा किया।

श्री श्री जी ने चरण पसाए, जसिया हमची गाए।
थोडा दिनमां चौदे लोकें, आ निध प्रगट थाए।। ११ ।।

जसिया (एक सखी का नाम) मस्ती में भरकर उमंग से गाकर कहती है कि श्री प्राणनाथजी के चरणों की कृपा से थोड़े ही दिन में यह तारतम वाणी का ज्ञान चौदह लोकों में फैल जाएगा।

|| प्रकरण || १२४ || चौपाई || १७७३ ||

राग मारू

वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार।
उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार।। १ ।।

श्री मेहेराज ठाकुरजी कहते हैं कि तुम्हें चार उत्तम पदार्थ मिले हैं। उनको व्यर्थ क्यों गंवा रहे हो? उत्तम मनुष्य तन, भरत खंड, कलियुग, ब्रह्मसृष्टि और उनके सिरदार पारब्रह्म अक्षरातीत मिले हैं।

सेठें तमने सारी सनंधे, सोंप्यूं छे धन सार।
अनेक जवेर जतन करी, तमें लाव्या छो आणी वार।। २ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने अच्छी तरह से यह (चारो) अमूल्य धन दिया है। बहुत उपाय करने के बाद (चौरासी लाख योनियों के बाद) यह मनुष्य तन तुम्हें मिला है।

सत वोहोरीने सत ग्रहजो, राखजो रुडी प्रकार।
आणी भोमें रखे भूलतां, पछे सेठ तणो वेहेवार।। ३ ।।

सत के बदले में सत ही खरीदना, अर्थात् यह इतना कीमती तन है इसके बदले पारब्रह्म को ही ग्रहण करना। माया तो झूठी है। इसमें जीवन गंवाना नहीं और इसे सम्भाल कर रखना। इस माया के ब्रह्माण्ड में भूल न जाना, क्योंकि इसके बाद सेठ जी (पारब्रह्म) के पास जाना है। तुम सत्य के व्यापारी हो। सत पारब्रह्म को ही लेना।

अनेक वार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार।
लाख चोरासी भमीने आव्या, आहीं मध्य देस वेपार।। ४ ।।

अनेक बार तड़प-तड़पकर मरने के बाद इस मनुष्य तन में आए हैं। चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद इस मृत्युलोक में भव से पार होने के लिए आए हो।

Nijanand App

वृज रास आंहीं तेहज लीला, ते वालो ते दिन।
तेह घड़ी ने तेहज पल, वैराट थासे धंन धंन।। ९ ।।

यहां पर वही बृज-रास की लीला हो रही है। वही वालाजी हैं, वही दिन है, वही घड़ी है, वही पल है, जिसमें वैराट अखण्ड होकर धन्य-धन्य होगा।

अमें मांगी रामत राज कनें, ते तां पेहेली दाण देखाडी।
कांईक मनोरथ रह्यो मन मांहें, ते रंग भर आहीं रमाडी।। १० ।।

हमने श्री राजजी से खेल मांगा था। उन्होंने पहली बार दिखाया। फिर भी मन में कुछ चाहना रह गई थी। उस इच्छा को अच्छी तरह से खेल दिखाकर पूरा किया।

श्री श्री जी ने चरण पसाए, जसिया हमची गाए।
थोडा दिनमां चौदे लोकें, आ निध प्रगट थाए।। ११ ।।

जसिया (एक सखी का नाम) मस्ती में भरकर उमंग से गाकर कहती है कि श्री प्राणनाथजी के चरणों की कृपा से थोड़े ही दिन में यह तारतम वाणी का ज्ञान चौदह लोकों में फैल जाएगा।

|| प्रकरण || १२४ || चौपाई || १७७३ ||

राग मारू

वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार।
उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार।। १ ।।

श्री मेहेराज ठाकुरजी कहते हैं कि तुम्हें चार उत्तम पदार्थ मिले हैं। उनको व्यर्थ क्यों गंवा रहे हो? उत्तम मनुष्य तन, भरत खंड, कलियुग, ब्रह्मसृष्टि और उनके सिरदार पारब्रह्म अक्षरातीत मिले हैं।

सेठें तमने सारी सनंधे, सोंप्यूं छे धन सार।
अनेक जवेर जतन करी, तमें लाव्या छो आणी वार।। २ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने अच्छी तरह से यह (चारो) अमूल्य धन दिया है। बहुत उपाय करने के बाद (चौरासी लाख योनियों के बाद) यह मनुष्य तन तुम्हें मिला है।

सत वोहोरीने सत ग्रहजो, राखजो रुडी प्रकार।
आणी भोमें रखे भूलतां, पछे सेठ तणो वेहेवार।। ३ ।।

सत के बदले में सत ही खरीदना, अर्थात् यह इतना कीमती तन है इसके बदले पारब्रह्म को ही ग्रहण करना। माया तो झूठी है। इसमें जीवन गंवाना नहीं और इसे सम्भाल कर रखना। इस माया के ब्रह्माण्ड में भूल न जाना, क्योंकि इसके बाद सेठ जी (पारब्रह्म) के पास जाना है। तुम सत्य के व्यापारी हो। सत पारब्रह्म को ही लेना।

अनेक वार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार।
लाख चोरासी भमीने आव्या, आहीं मध्य देस वेपार।। ४ ।।

अनेक बार तड़प-तड़पकर मरने के बाद इस मनुष्य तन में आए हैं। चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद इस मृत्युलोक में भव से पार होने के लिए आए हो।

Nijanand App

हाट पीठ रलियामणा, चौटा चोरासी बाजार।
मन चितवी वस्त आंही मले, पण खरा जोइए खरीदार।। ५ ।।

यहां भारतवर्ष में धर्मों के बड़े-बड़े धर्म स्थान (पीठ) हैं। बड़े-बड़े कुम्भ के मेले लगते हैं जो बड़े सुहावने हैं। चौरासी लाख योनियों में जाने का रास्ता भी खुला है। मनचाही वस्तु यहां मिलती है, परन्तु खरीदार खरा होना चाहिए (समझदार होना चाहिए)।

एणी बाजारे कूड कपट, छल छे भेद अपार।
चौद भवन नी खरीद आंहीनूं, मांहें कोई कोई छे साहूकार।। ६ ।।

इस बाजार में छल-कपट, कूड़ा-कचड़ा, भेदभाव सभी कुछ बेशुमार हैं। चौदह लोकों की खरीदारी, अर्थात् कर्मभूमि यही है जिसमें कोई-कोई समझदारी (सत) का व्यापारी है।

चौद लोक कमायूं खाय आहींनू, नथी बीजो कोई ठाम।
अधखिण वारो आंहीं पामिंए, ए धन मूल अमान।। ७ ।।

चौदह लोक यहीं पर कर्म करते और भोगते हैं। दूसरा ठिकाना नही है। यहां पर आधे पल के समय का जीवन तुझे मिला है। इसमें यह धन (चार पदार्थ) ही अमानत हैं।

खरी वस्त आंहीं गोप छे, जो जो चौटा पीठ हाट।
वोहोरजो पारखूं करी, आवी कुली बेठो छे पाट।। ८ ।।

यहां के धर्म स्थानों, पुरियों, मेलों में खरी वस्तु (पारब्रह्म का ज्ञान) यहां छिपा है। यहां पर कलियुग ही सब दुकानों का मालिक बन बैठा है। सब धर्मों में प्रपंच है, इसलिए निरख-परख कर (देखभाल कर) खरीदारी करना।

आ भोम अंधेरी मांहें आमला, आंकडियों कोहेडा अनंत।
वस्त खरी मांहें अखंड छे, तमें जो जो जवेरी बुधवंत।। ९ ।।

तुम तो बुद्धिमान परख कर खरीद करने वाले जौहरी हो। इस भूमि में अज्ञान का अन्धकार और सब शास्त्रों में बेशुमार आंकड़ियां हैं जो धुंध (धुमस) के समान हैं। इन्हीं आंकड़ियों में पारब्रह्म का ज्ञान छिपा पड़ा है।

आ भोम विस्मी सत माटे, वस्त आडी छे पाल।
अनेक रखोपा करी वस्तना, वीटया छे जमजाल।। १० ।।

यह भूमि सत की खोज के लिए बड़ी कठोर है। यहां सत के सामने अज्ञानता का परदा लगा है। सत वस्तु को अनेक उपायों से ढांप रखा है। चारों तरफ यमराज की जाली बिछी है।

खरो खोजी हसे जाण जवेरी, ते जोसे दृढ़ मन धीर।
वस्त अखंड ने तेहज लेसे, जे होसे वचिखिण वीर।। ११ ।।

जो सावचेत, होशियार खोज करने वाला जौहरी होगा, वही दृढ़ता से धैर्य के साथ अखण्ड वस्तु (पारब्रह्म) को खोज कर खरीदेगा और वही बुद्धिमान खरीदार होगा।

ए धन वोहोरसे ते गोप रेहेसे, तेने करसे सहुजन हांस।
वस्त लई ज्यारे थासे वेगला, त्यारे सहु कोई केहेसे स्यावास।। १२ ।।

यहां अखण्ड वस्तु को खरीदने वाला छिपा रहेगा और सब उसकी हंसी उड़ाएंगे, परन्तु जब वह अखण्ड निधि (पारब्रह्म) को पाकर आगे हो जाएगा तब सभी उसको शाबाशी देंगे।

Nijanand App

वेद वैराट बंने कोहेडा, फरे छे अवला फेर।
प्रगट कहे मुख पाधरुं, पण तोहे न जाय अंधेर।। १३ ।।

यहां का ज्ञान और वैराट (रिश्तेदार) दोनों उलटे हैं। वह सामने आकर तो सत कहते हैं, परन्तु उनके दिलों में पाप भरा है।

साध कोहेडो एने तोहज कहे छे, जो सवले अवलुं भासे।
सत वस्त कोई देखे नहीं, असत ने सहु प्रकासे।। १४ ।।

साधु-महात्मा जो सच्चे मार्ग पर चलते हैं वह इसे धुंध ही कहते हैं। यहां कोई सत को देखने वाला नहीं है। सभी झूठ का विस्तार करते हैं। झूठ का ही बोलबाला है।

कोई सत वोहोरे कोई असत वोहोरे, कोई बंधाय बंध।
वेपार एणी पेरे करे वेहेवारिया, ए चौटो एणी सनंध।। १५ ।।

यहां पर कोई सत खरीदता है और कोई झूठ खरीदता है। कोई बन्धन में बंध जाते हैं। यहां इस तरह का व्यापार दुनियां के लोग करते हैं। माया का बाजार इसी तरह का है।

एणे अंधेर कोहेडे अनेक बांध्या, वस्त खरी नव जुए।
बंध बंधावी बाजार माहें, पछे वारो वछूटे घणू रुए।। १६ ।।

इस अंधेरे कोहेड़े (कुहरे) में (अज्ञानता के अन्धकार में) यहां अनेक लोग फंस गए और सत वस्तु को नहीं देख सके। कई यहां के माया के बन्धनों में बंध गए। पीछे अनमोल समय (मनुष्य तन) गंवाकर बहुत दुःखी होते हैं।

कोईक करे हजार गणां, केहेने ते मूलगां जाय।
कोई बंधाई पड़े फंद माहें, कोई कोटी धजा केहेवाय।। १७ ।।

कोई हजार गुनी कमाई करते हैं। कोई अपनी पूंजी (मूल धन) ही गंवा बैठते हैं। कोई माया के बन्धन में फंस जाते हैं। जो यहां से सबसे बचकर निकल जाए वही महारथी कहलाता है।

कोई वोहोरे सत वस्त ने, रास जवेर खरचाय।
अखंड धन तेने अनंत आव्यूं, ते चौद भवन धणी थाय।। १८ ।।

कोई पारब्रह्म को प्राप्त करने में अपना जीवन न्यौछावर कर देते हैं। अखण्ड वस्तु तो उनको बहुत मिलती है और बैकुण्ठ की प्राप्ति (मुक्ति) होती है।

बीजो फेरो ए स्या ने करे, थया ते सेठ सरीख।
टली वानोतर धणी थयो, ते अखंड सुख लेसे अंत्रीख।। १९ ।।

इसलिए बैकुण्ठ में जाकर वह आवागमन के चक्कर से महाप्रलय तक छूटकर त्रिदेवों के समान हो जाते हैं। व्यापार से हटकर वह मालिक बन जाते हैं और चौदह लोक निराकार तक ही सुख लेते हैं।

कोण फेरो करे वली, अखंड धन आवे अपार।
साहुकारी तमे करोने नेहेचल, तो निध पामो निरधार।। २० ।।

यदि तुम अखण्ड वस्तु की साहूकारी करोगे तो निश्चित ही तुम सच्ची वस्तु खरीद पाओगे और फिर बेशुमार अखण्ड धन मिलने के बाद तुम्हें जन्म-मरण के चक्कर में नहीं आना पड़ेगा।

Nijanand App

खोटा साटे साचू जड़े छे, एवी मली छे बाजार।
लाभ अलेखे आ फेरा तणो, जो राखी सको वेहेवार।। २१ ।।

यह बाजार ऐसा है कि यहां झूठे तन के बदले अखण्ड पार का मोक्ष मिलता है। अपना व्यवहार यदि सच्चे व्यापारियों के साथ रखोगे तो यहां अवश्य अखण्ड वस्तु प्राप्त कर लोगे।

आ फेरो छे एणी सनंधनो, जो कोई रुदे विचारो।
साध साहुकारो कहूं छूं पुकारी, तमें जीती अखंड कां हारो।। २२ ।।

यदि दिल से विचार कर देखो तो यह मनुष्य तन इस तरह का है। हे साधुओ और सच्चे व्यापारियो! मैं तुम्हें पुकार-पुकार कर कहता हूं कि अपनी जीती बाजी (मनुष्य तन पाकर) हाथ से क्यों गंवाते हो?

आ भोम नी गत सुणो रे साधो, प्रगट कहूं छूं प्रकासी।
आंखें देखी आप बंधाय, पछे खाय सहु जम फांसी।। २३ ।।

हे साधुओ! इस भूमि की हकीकत को मैं साफ कहता हूं। सुनो यहां लोग देखते-देखते बन्धन में बंध जाते हैं और पीछे यमराज के चक्कर में जाना पड़ता है।

वणजे ते आवे सहु एकला, आणी भोमे आवी करे संग।
रास खरीद सर्वे वीसरी, पछे लागी रहे तेसूं रंग।। २४ ।।

इस माया के बाजार में व्यापार करने के लिए सभी अकेले आते हैं और यहां आकर अपने नए संगी बना लेते हैं। जिसे खरीदने आए थे, वह भूल जाता है और उस संगी साथी के साथ मग्न रहता है।

एणे स्वांगे संसार बांध्यो, कोई कपट कारण रूप।
बीजा तो आमला अनेक छे, पण आंकडी आ अदभूत।। २५ ।।

ऐसे ढोंग के नाटक में संसार बंधा है और सब कपट का ही रूप दिखाई देता है। यहां झूठे चक्कर भी बहुत हैं, परन्तु मोह (परिवार) की कड़ी बड़ी विचित्र हैं।

आप तणी सुध वीसरी, कोई ओलखाय नहीं पर।
तेमां सगा समधी थई ने बेठा, कहे आ अमारो घर।। २६ ।।

यहां आकर अपनी ही खबर भूल गए, तो दूसरे की पहचान कैसे हो? उन्हीं अनजानों में सगे सम्बन्धी बनकर बैठ जाते हैं और कहते हैं कि यही हमारा घर है।

आपोपूं तिहां बांधीने आपे, सर्वा अंगे द्रढ़ मन।
रात दिवस सेवा करे, एम बंधाणां सहु जन।। २७ ।।

इस तरह से स्वयं ही अपने आपको सब अंगों से और दृढ़ता के साथ अपने को बांध लेते हैं और रात-दिन उसकी सेवा करते हैं। इस तरह सारे जगत के जीव माया के बन्ध में बंधे हैं।

चीठी आवे चाले ततखिण, जाय ते करता रुदन।
झाझुं सेवा जेहनी करता, ते दिए छे हाथ अगिन।। २८ ।।

जब जीवन समाप्त हो जाता है तो रोते-रोते चले जाते हैं। जो सबसे अधिक सेवा करते थे, (लड़के) वही अपने हाथ से जला देते हैं।

माहें तो कोई नव ओलखे, ओलखाण ने खोरी बाले।
ए सगाई आ भोम तणी, ते सनमंध एणी पेरे पाले।। २९ ।।

अन्दर (आत्मा को) तो कोई पहचानता नहीं। ऊपर की पहचान को बांस की ठोकर मार कपाल क्रिया (सिर फोड़कर) जला देते हैं। इस संसार के रिश्तेदार इस तरह का रिश्ता पालते हैं।

Nijanand App

आणी भोमे तमने भूलव्या, सुध गई सरीर।
पडया ते फंद अंधेर माहें, तेणे चितडू न आवे धीर।। ३० ।।

इस संसार में आकर तुम भूल गए और शरीर की सुध खो बैठे। फिर चौरासी लाख योनियों में भटकने के चक्कर में पड़ गए। ऐसे लोगों के चित्त में धैर्य नहीं रहता।

साथी हता जे माहेला, तेणे दीठां आप अचेत।
जेणी जे जतन करतां, तेणे बांध्या बंध विसेक।। ३१ ।।

जो तन के अन्दर साथी (जीव) बिठाया उसकी तुमने पहचान नहीं की। जिनकी तुम सेवा करते रहे उन्होंने तुम्हें माया के बन्धन में बांधा।

घर मंदिर सहु वीसरया, वीसरया सेठ समरथ।
माल लुसानूं जाए मूरखो,तमें कां निगमो ए ग्रथ।। ३२ ।।

तुमने अपने सच्चे मालिक तथा अखण्ड घर को भुला दिया। हे मूर्खो! तुम्हारा यह माल (मनुष्य तन) लुटा जा रहा है। तुम ऐसी अनमोल सम्पत्ति (मनुष्य तन) को क्यों गंवा रहे हो?

धन पोतानूं नव साचवो, लूसे छे चोर चंडाल।
अधखिण माटे आप बंधावो, हमणां वही जासे ततकाल।। ३३ ।।

अपने धन (मनुष्य जीवन) को क्यों नहीं सम्भालते? चोर और चाण्डाल (कुटुम्ब, परिवार, रिश्तेदार) लूटे जा रहे हैं। आधे क्षण के लिए आए थे और बन्धन में बंध गए। यह मनुष्य तन चला जाएगा, अर्थात् सब नष्ट हो जाएगा।

बांध्यो संसार एणी पेरे, लागे नहीं कोई लाग।
जाय बंधाणां सहु जमपुरी, केहेने नथी टलवानो माग।। ३४ ।।

यह संसार इस तरह के बन्धन में बंधा है कि इससे निकलने का कोई रास्ता नहीं है। सब इसी तरह से माया के बन्धन में बंधे हुए यमराज के पास जाते हैं, जहां से पीछे लौटने का रास्ता नहीं है।

लेखूं देसे जम दूत ने, जे कीधूं छे आंहीं वेपार।
साचूं झूठूं तरत जोसे, ए धरमराज वेहेवार।। ३५ ।।

यहां पर किए हुए कर्मों का यमराज को हिसाब देना पड़ेगा। धर्मराज के सामने झूठ और सांच सभी दिखाई पड़ेगा।

वेपार करतां जे बंध बांध्या, ते लेखूं लेसे सहु तंत।
एक ना सहस्त्र गणां करतां, मारया अनेक जीव जंत।। ३६ ।।

जन्म से लेकर मरण तक किए हुए कर्मों की एक-एक बात का हिसाब देना पड़ेगा। संसार के व्यवहार में एक का हजार गुणा करते समय तुमने अनेक जीवों का वध किया है, उसका हिसाब होगा।

लांचे तो तिहां नव छूटिए, सगा न ओलखाण कोय।
मार भूंडा छे जमदूत ना, दया ते पिंड ने न होय।। ३७ ।।

वहां रिश्वत देकर छुटकारा नहीं मिलेगा और न ही कोई सगे सम्बन्धी मिलेंगे। यमदूतों की मार बड़ी कठोर होती है उनको दया नहीं आती।

Nijanand App

धरम तणां सुख भोगवो, पाप तणां ल्यो दुख।
अगिन चोरासी लाख भोगवी, अंते आव्या मनुख।। ३८ ।।

किए हुए धर्मों का सुख लो। किए हुए पापों का दुःख भोगकर चौरासी लाख योनियों की मार खाकर अन्त में मनुष्य तन मिला है।

एके वोहोरया भगवान जी, ते जाय नहीं जमपुर।
संगत कीधी तेणे साध तणी, जई बैकुंठ कीधां घर।। ३९ ।।

जिसने भगवान को खरीदा (पा लिया) वह यमपुरी नहीं जाता। उसने साधुओं की संगति से बैकुण्ठ की प्राप्ति कर ली।

एणी पेरे वेपार थाय, हाट पीठ बाजार।
आ भोमनी अनेक आंकड़ी, तेनो केटलो कहूं विस्तार।। ४० ।।

इस संसार में इस तरह का व्यापार होता है और ऐसे ही यहां धर्म क्षेत्र (बाजार) हैं। इस संसार में अनेक तरह के फंद हैं। उनका कहां तक विस्तार करके वर्णन करूं?

झाझुं कहे दुख सहुने लागे, सत वचन ना सेहेवाय।
सत सहुए उथापियूं, असत ब्रह्मांड न समाय।। ४१ ।।

यहां अधिक कहने से दुःख लगता है और सच्चा किसी से सहन नहीं होता। सत इस संसार से उठ गया है और झूठ (असत) ब्रह्माण्ड में समाता नहीं है। इतना अधिक हो गया है।

हवे जे हेत वांछे आपणुं, ते सुणजो सत दृढ़ मन।
वाट लेजो वैकुंठ तणी, रखे जाता पुरी जम।। ४२ ।।

जो अपना भला चाहता हो, वह सच्ची बात को दृढ़ मन से सुने। तुम इस तरह से बैकुण्ठ का रास्ता लो और यमपुरी का रास्ता छोड़ दो।

दुखने साटे अखंड सुख आवे, अधखिण माहें आज।
साहुकारो साधो वेहेवारियो, एम सुणो कहे मेहेराज।। ४३ ।।

इस आधे क्षण के लिए मिले मनुष्य तन से दुःख के बदले अखण्ड सुख मिलते हैं। मेहराज ठाकुर कहते हैं कि संत, महात्माओं, साधुओं, कुटुम्ब वालों, रिश्तेदारों, दुनियां वालों को मैं पुकार रहा हूं। मेरी पुकार सुनो।

।। प्रकरण ।। १२५ ।। चौपाई ।। १८१६ ।।

किरंतन पुराने

तमें जो जो रे मारा साध संघाती, आ विश्व तणी जे वाट।
हार कतार चाले केडा बेडी, भवसागर नों घाट।। तमे ।। १ ।।

हे मेरे साथ रहने वाले साथियो! तुम देखो, यह संसार किस रास्ते चल रहा है? यह संसार वाले चींटी हार, ऊंट कतार की तरह इस संसार में देखा-देखी चल रहे हैं।

स्वाथी मारग चाले संजमपुरी, भार भरी रे अलेखे।
कुटम परिवार लादा सहु लादे, आगली अजाडी कोई न देखे।। २ ।।

यहां सीधा रास्ता यमपुरी का है। तुमने अपने कुटुम्ब परिवार वाली गाड़ी में बेशुमार भारी बोझ भर रखा है। आगे रास्ता ऊबड़-खाबड़, वीरान है, जिसे कोई नहीं देखता।

Nijanand App

धरम तणां सुख भोगवो, पाप तणां ल्यो दुख।
अगिन चोरासी लाख भोगवी, अंते आव्या मनुख।। ३८ ।।

किए हुए धर्मों का सुख लो। किए हुए पापों का दुःख भोगकर चौरासी लाख योनियों की मार खाकर अन्त में मनुष्य तन मिला है।

एके वोहोरया भगवान जी, ते जाय नहीं जमपुर।
संगत कीधी तेणे साध तणी, जई बैकुंठ कीधां घर।। ३९ ।।

जिसने भगवान को खरीदा (पा लिया) वह यमपुरी नहीं जाता। उसने साधुओं की संगति से बैकुण्ठ की प्राप्ति कर ली।

एणी पेरे वेपार थाय, हाट पीठ बाजार।
आ भोमनी अनेक आंकड़ी, तेनो केटलो कहूं विस्तार।। ४० ।।

इस संसार में इस तरह का व्यापार होता है और ऐसे ही यहां धर्म क्षेत्र (बाजार) हैं। इस संसार में अनेक तरह के फंद हैं। उनका कहां तक विस्तार करके वर्णन करूं?

झाझुं कहे दुख सहुने लागे, सत वचन ना सेहेवाय।
सत सहुए उथापियूं, असत ब्रह्मांड न समाय।। ४१ ।।

यहां अधिक कहने से दुःख लगता है और सच्चा किसी से सहन नहीं होता। सत इस संसार से उठ गया है और झूठ (असत) ब्रह्माण्ड में समाता नहीं है। इतना अधिक हो गया है।

हवे जे हेत वांछे आपणुं, ते सुणजो सत दृढ़ मन।
वाट लेजो वैकुंठ तणी, रखे जाता पुरी जम।। ४२ ।।

जो अपना भला चाहता हो, वह सच्ची बात को दृढ़ मन से सुने। तुम इस तरह से बैकुण्ठ का रास्ता लो और यमपुरी का रास्ता छोड़ दो।

दुखने साटे अखंड सुख आवे, अधखिण माहें आज।
साहुकारो साधो वेहेवारियो, एम सुणो कहे मेहेराज।। ४३ ।।

इस आधे क्षण के लिए मिले मनुष्य तन से दुःख के बदले अखण्ड सुख मिलते हैं। मेहराज ठाकुर कहते हैं कि संत, महात्माओं, साधुओं, कुटुम्ब वालों, रिश्तेदारों, दुनियां वालों को मैं पुकार रहा हूं। मेरी पुकार सुनो।

|| प्रकरण || १२५ || चौपाई || १८१६ ||

किरंतन पुराने

तमें जो जो रे मारा साध संघाती, आ विश्व तणी जे वाट।
हार कतार चाले केडा बेडी, भवसागर नों घाट।। तमे ।। १ ।।

हे मेरे साथ रहने वाले साथियो! तुम देखो, यह संसार किस रास्ते चल रहा है? यह संसार वाले चींटी हार, ऊंट कतार की तरह इस संसार में देखा-देखी चल रहे हैं।

स्वाथी मारग चाले संजमपुरी, भार भरी रे अलेखे।
कुटम परिवार लादा सहु लादे, आगली अजाडी कोई न देखे।। २ ।।

यहां सीधा रास्ता यमपुरी का है। तुमने अपने कुटुम्ब परिवार वाली गाड़ी में बेशुमार भारी बोझ भर रखा है। आगे रास्ता ऊबड़-खाबड़, वीरान है, जिसे कोई नहीं देखता।

Nijanand App

दुस्तर दोख न विचारे मद माता, लडसडती चाल चाले।
उनमद थका अभिमान करे, अने कंठ बांहोंडीयो घाले।। ३ ।।

यहां के दुष्ट लोग अपने दोष को नहीं देखते। माया के नशे में डूबे लड़खड़ाती चाल चलते हैं और अपने पागलपन के नशे में एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर अहंकार में चलते हैं।

उत्तम आगल वाट देखाड़े, मधम अधम सहु वासे।
भार करम नूं लेखूं रे अलेखे, मनमां विचारी कोई नव त्रासे।। ४ ।।

यहां बड़े समझदार लोग रास्ता दिखाते हैं। मध्यम और छोटी बुद्धि वाले लोग उनके पीछे चलते हैं। यहां कर्मों का भार बेशुमार है जिससे मन से विचार कर भी कोई नहीं डरता।

बलिया बीक न आणे केहेनी, सांभले न कांई देखे।
साचा ए सूर धीर कहिए, जे ए दोख ने न लेखे।। ५ ।।

यहां के बलवान न किसी से डरते हैं और न किसी की सुनते हैं। किसी को देखते भी नहीं हैं। सच्चे बहादुर तो वही हैं जो इन दोषों को न देखें और चलते जाएं।

कायर केम चाले एणी वाटे, जेने लागे ते जम नो त्रास।
रात दिवस रुए कलकले, सूकाय ते लोही मांस।। ६ ।।

जिनको यमदूतों का डर लगा रहता है ऐसे डरपोक लोग इस रास्ते पर नहीं चल सकते। वह दिन-रात रोते, कलपते हैं और लहू-मांस को सुखाते हैं।

वैकुंठनी पण विस्मी वाट, ते जेम तेम सेहेवाय।
संजमपुरी ना दुख घणूं दोहेला, ते जिभ्याएं न केहेवाय।। ७ ।।

बैकुण्ठ का रास्ता भी कठिन है। पर वह जैसे तैसे सहन हो जाता है, परन्तु यमपुरी का दुःख सहना तो बहुत ही कठिन है। यह इस जबान से नहीं कहा जाता।

आ सुपन तणां सुख सहु को वांछे, ओल्या साख्यात दुख कोई न जांणे।
सजंमपुरी नी वाट छे वस्ती, ते माटे सहु कोई ताणे।। ८ ।।

इस सपने का सुख सब कोई चाहता है। इसके बदले उलटे साक्षात् दुःख मिलेंगे। उसे कोई नहीं जानता। यमराज का रास्ता आबादी व रौनक से भरा होता है, इसलिए सब कोई उसी रास्ते जा रहे हैं।

उज्जड मारग वैकुंठ केरो, ते माटे कोई न चाले।
बेहेतल नहीं माहें चोर मले, दूथा मां पग कोई न घाले।। ९ ।।

बैकुण्ठ के रास्ते में उजाड़ है, इसलिए उस रास्ते पर कोई नहीं चलता। उस रास्ते में कोई बस्ती नहीं है और चोर मिलते हैं। इसलिए ऐसे सूने रास्ते पर कोई नहीं चलता। (क्योंकि धर्म और ईमान की सम्पत्ति लुट जाएगी।)

वस्ती बिना लिए चोर लूसी, आडा दोख घणां रे दुकाल।
लोही मांस न रहे अंग माहीं, आडी खाइयो पर्वत पाल।। १० ।।

आबादी वाले रास्ते के बिना चोर लूट लेते हैं। सामने अकाल (भुखमरी) दिखाई देती है। बैकुण्ठ के इस रास्ते पर चलने में शरीर का लोहू, मांस सूख जाता है। सामने पहाड़ों के समान मुसीबतें आती हैं।

Nijanand App

ते माटे सहु चाले संजमपुरी, ऊवट कोंणे न अगमाय।
संजमपुरी न दोख जाग्या पछी, श्रवणाएं न संभलाय।। ११ ।।

इसलिए यमपुरी का रास्ता जो सीधा है उस पर सभी चलते हैं। बैकुण्ठ वाले ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर कोई नहीं चलना चाहता। यमपुरी के दुःख समझ में आने के बाद सुने नहीं जाते। राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से अट्ठाईस नरक कुंडों का ही वर्णन सुना था। बाकी छप्पन नरक कुंडों का दुःख सुन ही नहीं सके।

वैकुंठ वाट न दुख जो सहिए, तो आगल सुख अखंड।
वेद पुराण भागवत कहे छे, भाई जिहां लगे छे ब्रह्मांड।। १२ ।।

बैकुण्ठ के रास्ते के थोड़े दुःख अगर सहन कर लिए जाएं तो आगे बैकुण्ठ के अखण्ड सुख तब तक हैं जब तक यह ब्रह्माण्ड है, ऐसा वेद, पुराण और भागवत में लिखा है।

पण बंध छूटा विना न चलाय, भाई ए छे करम नी काणी।
मन माहें जाणे अमें सुख भोगवसुं, पण जाए बंधाणां जमपुरी ताणी।। १३ ।।

परन्तु माया-मोह के बन्धन से छूटे बिना बैकुण्ठ के रास्ते पर नहीं चला जाता। यह खोटे कर्म वालों का हाल है। वह मन में जानते हैं कि हम सुखी होंगे और यमराज के रास्ते में खिंचे जा रहे हैं।

करम तणां बंध छे रे वज्र में, वेद पुराण एम बोले।
दया नहीं जीव हिंसा करे, ते करम चंडाल नहीं तोले।। १४ ।।

कर्म के बन्धन वज्रलेप के समान होते हैं, ऐसा वेद-पुराण बोलते हैं। जीवों को मारने वालों को दया नहीं होती। हिंसा करने वाले, जैसा कर्म करेंगे वैसा फल पाएंगे, इस पर विश्वास नहीं करते।

वली जो जो रे तमें सास्त्र संभारी, एणी पेरे बोले वाणी।
कुंजर कथुआ मेरु माणस माहीं, सर्वे एकज प्राणी।। १५ ।।

तुम फिर से शास्त्रों की वाणी को ध्यान से देखो जो इस तरह से बोलती है। हाथी में या कथुआ में (सबसे छोटा आकार का जीव), पहाड़ में या आदमी में, सब में एक ही प्राण (जीव) रहता है।

अंन उदक वाए कीट पतंगमां, सकल कहे छे ब्रह्म।
देखीतां आंधला थाय, पछे बांधे अनेक पेरे करम।। १६ ।।

अन्न, पानी, हवा, कीड़े, पक्षी सब में ब्रह्म हैं ऐसा मानते हैं और आंख से देखते हुए अन्धे बने हैं। इसी तरह से अनेक कर्मों के बन्धन में बंधते जाते हैं।

पांच मलीने काया परठी, ते माहें जीव समाणो।
थावर जंगम सकल व्यापक, एणी पेरे पथराणो।। १७ ।।

पांच तत्वों ने मिलकर शरीर बनाया और उसके अन्दर जीव समाया है। यह जीव स्थावर, जंगम सबमें व्यापक है।

हवे वरण वेख थया जुजवा, एक उत्तम मधम।
वस्त खरी थी विमुख थया, पछे चलवे ते अधमा अधम।। १८ ।।

इसी संसार में वर्ण, भेष, ऊंची, नीची जातियां सब अलग-अलग बनी हैं। जो सत्य वस्तु से दूर हो गए, वह नीच से नीच करम करते हैं।

Nijanand App

हूं रे गेहेलो एवा वचन तोज कहूं छूं, पण न थाय बीजा कोई गेहेला।
विस्मी वाटे चाली न सके, तेने लागसे वचन घणां दोहेला।। १९ ।।

मैं एक दीवाना हूं, इसलिए ऐसी बातें करता हूं, पर तुम कोई मेरे जैसा दीवाना न बनना। यह रास्ता बड़ा टेढ़ा है। इस पर तुम चल नहीं सकोगे और इसीलिए तुम्हें मेरे वचन कठोर लगेंगे।

एक जीवने आहार देवरावे, तेमां अनेक जीव संघारे।
एणी पेरे दान करे रे दयासों, ए धरम ते कां नव तारे।। २० ।।

एक जीव का पेट भरने के वास्ते बहुत जीवों को मारते हैं और कहते हैं कि हम दया करते हैं। ऐसा दया-धर्म किसी को भव से पार नहीं करेगा।

अनेक संघवी संघज काढे, धन खरचे थाय मोटा।
बांधी करम करावे जात्रा, जाणे करम सुं करसे ए खोटा।। २१ ।।

अनेक लोग तीर्थयात्रा का संघ निकालते हैं और अपनी बड़ाई के वास्ते बहुत धन खर्च करते हैं। खोटे कर्म वाले ही यात्रा का संघ निकालते हैं और धन खर्च करके अपने को बड़ा बताते हैं। वह समझते हैं और कहते हैं कि पाप हमारा क्या बिगाड़ेगा?

मन माहें जाणे अमें धरम भोगवसुं, प्रगट पाप न देखे।
सुभ असुभ बंने भोगववा, ए धरम राज सर्वे लेखे।। २२ ।।

वह मन में समझते हैं कि हम धर्म कर रहे हैं और अपने पाप को नहीं देखते। अच्छे और बुरे कर्मों को भोगने का हिसाब सब धर्मराज के पास रहता है।

तीरथ ते जे एक चित कीजे, करम न बांधिए कोय।
अहनिस प्रीते प्रेमसूं रमिए, तीरथ एणी पेरे होय।। २३ ।।

सच्चा तीर्थ तो वही है जो अपने चित्त को एकाग्र कर कर्म के बन्धन से अलग रहे और रात-दिन प्रेम से भक्ति में लगा रहे।

दान करे सहु देखा देखी, बांधे ते करम अनेक।
मन तणी आंकडी न लाधे, तेणें बंधाय बंध विसेक।। २४ ।।

दूसरों की देखा देखी दान करते हैं। वह अनेक प्रकार के कर्म बन्धनों में बंधते हैं। मन की आंकड़ी को नहीं देखते (मन के अधीन होकर मनचाहा कर्म कर रहे हैं)। इसलिए अनेक कर्मों के बन्धन में बंध जाते हैं।

जीव संघारता मन न विमासे, जाग करे नामनाय।
करम बंधातां कोई नव देखे, पण लेखूं लेसे जम राय।। २५ ।।

जीव-हत्या करने में भी जरा नहीं डरते। अपना नाम करने के लिए यज्ञ करते हैं। इन कर्मों को कोई नहीं देखता, परन्तु यमराज तो हिसाब लेते हैं।

अनेक देरा परबो ने परवा, धन खरचे मोटाई।
प्रसिद्ध प्रगट थाय पाखंडें, जेम माहें भांड भवाई।। २६ ।।

अनेक लोग मन्दिर बनवाते हैं, प्याऊ खुलवाते हैं, धर्मशाला बनवाते हैं। अपने को बड़ा कहलाने के लिए इन सबमें धन खर्च करते हैं। सबके बीच में अपने पाखंड का ढिंढोरा पीटते हैं। जिस तरह से नौटंकी स्वांग में भांड चिल्लाते हैं इस तरह से अपनी बड़ाई खुद करते हैं।

Nijanand App

दान दया सेवा सर्वा अंगे, कीजे ते सर्वे गोप।
पात्र ओलखीने कीजे अरचा, सास्त्र अर्थ जोइए जोप।। २७ ।।

दान, दया, सेवा सब छिपकर करना चाहिए (गुप्त करना चाहिए)। पात्र को देखकर ही पूजा करनी चाहिए। इस तरह से शास्त्रों के अर्थ को अच्छी प्रकार से समझें।

आगे प्रगट कीधूं रे जनके, दाधो पग अगिन।
त्यारे घणी खंडनी कीधी नव जोगी, रखे वृथां जाय साधन।। २८ ।।

आगे राजा जनक ने अहंकार में आकर अपनी योग शक्ति दिखाने के लिए आग में पैर रखा तो उनके पैर जलने लगे। तब नवनाथ ने उनकी बड़ी खंडनी की। इस तरह से हमारी भी साधना व्यर्थ न जाए, ऐसा ध्यान रखना चाहिए।

सत व्रत धारणसों पालिए, जिहां लगे ऊभी देह।
अनेक विघन पडे जो माथे, तोहे न मूकिए सनेह।। २९ ।।

सच्ची प्रतिज्ञा दृढ़ता से पालन करें जब तक शरीर है। फिर कितने भी विघ्न आएं तो भी उससे मुंह नहीं मोड़ना चाहिए।

भागवत वचन जो जो रे विचारी, सार अखर जे सत।
जीवने जगावो वचन प्रकासी, रदे उघाडो मत।। ३० ।।

भागवत के सच्चे सार को बखान करने वाले शब्दों को देखो। इन वचनों के ज्ञान से जीव को जगाओ और अपने अन्दर की बुद्धि के किवाड़ खोलो।

ए माथे लेसे तेने कहूं छूं, बीजा मां करजो दुख।
तमें तमारी माया माहें, सेहेजे भोगवजो सुख।। ३१ ।।

इन वचनों को जो अमल में लाएगा उसी को कहता हूं। दूसरा कोई दुःखी नहीं होना। तुम अपनी माया के बीच माया के सुख आराम से भोगो।

कोई एम मां केहेजो जे निंद्या करे छे, वचने कहूं छूं देखाडी।
साध पुरुख नी निद्रा भाजे, आंखडी देऊं रे उघाडी।। ३२ ।।

कोई इस तरह से नहीं कहना कि यह निंदा करते हैं। मैं अपने वचनों को शास्त्रों से सिद्ध कर दूंगा जिससे साधु पुरुषों की अज्ञानता हट जाएगी और उनकी आंखें खुल जाएंगी।

वचन केहेतां कोई दुख मां करसो, सांभलजो सहु कोय।
सत केहेतां कोई वांकू विचारसे, तो सरज्यूं हसे ते होय।। ३३ ।।

मेरे इन वचनों से कोई दुःखी नहीं होना। सब कोई ध्यान से सुनना। सच्ची बात कहने में कोई उल्टा समझता है तो जो भाग्य में हो सो होगा।

विप्र तणों वेपार भाजे छे, भाई भागवत हाट न चाले।
तोज फरी फरी ने मूलगां, सब वचन जई झाले।। ३४ ।।

अगर सच्ची बात बताएंगे तो भागवत सुनाकर पैसा लूटने वाले ब्राह्मणों की दुकान बन्द हो जाएगी, इसलिए वह बार-बार शुरू से कर्मकाण्ड के ही वचनों को सुनाते हैं।

Nijanand App

विप्र कुलीमां थया रे जोरावर, सत वचन उबेखे।
पाखंडे खाय सर्वे पृथ्वी, लोभ विना नव देखे।। ३५ ।।

कलियुग में पण्डित लोग सच्ची बात को उल्टा कहकर जोरदार बन गए हैं और पाखण्ड से सारे संसार को लूट रहे हैं। लोभ लालच के बिना किसी को कुछ ज्ञान नहीं सुनाते।

ए रे लोभ घणों दोहेलो लागसे, पण लाग्या स्वादे चित न आवे।
नीला बंध बांधता सुख उपजे छे, पण सूकया पछी रोवरावे।। ३६ ।।

यह लोभ बहुत दुःखदायी होगा और जिनको इसका चस्का लग गया है उनको और कुछ दिखता नहीं है। कर्मकाण्ड के बन्धनों में दूसरों को बांधना शुरू में अच्छा लगता है। पीछे कर्मों के बन्धन से रोते हैं।

उनमद उत्तम असार जाग्या रे माहें थी, साध आपने कहावे।
कुकरम माहें कहिए जे कुकरम, बंध वज्र में बंधावे।। ३७ ।।

यह संसार झूठा है और मिटने वाला है, ऐसा जानने वाले अपने को साधु कहलाते हैं और फिर अपने अहंकार की मस्ती में आकर खोटे से खोटे काम करते हैं और वज्रलेप समान बन्धनों में बंध जाते हैं।

दोष विप्रों ने कोई मां देजो, ए कलजुग ना एधांण।
आगम भाख्यूं मले छे सर्वे, वैराट वाणी रे प्रमाण।। ३८ ।।

हे भाई! ब्राह्मणों को कोई दोष मत देना। यह तो कलियुग की निशानी ही है। इस संसार के धर्म ग्रन्थों में पहले से ही यह भविष्यवाणी लिखी है कि कलियुग में पण्डित लोग खोटे कर्म करेंगे।

असुर थकी सम खाधा भभीखणे, आगल श्री रघुनाथ।
तमसूं कपट करूं तो कुली माहें, ब्राह्मण थांउं आप।। ३९ ।।

विभीषण (रावण का भाई) असुर वंश में पैदा हुआ। भगवान राम के सामने आकर उसने कसम खाई कि मैं आपका सच्चा भक्त हूं। यदि मैं आपसे कपट करूं तो मुझे कलियुग में ब्राह्मण का जन्म मिले (यह प्रमाण कृत्तिवास रामायण के सुन्दर कांड में लिखा है)।

त्यारे वार्यो श्री रघुपतिराय, एवा कठण सम कां खाधा।
तमें छो अमारा हूं नेहेचे जाणूं, मन मां म धरजो बाधा।। ४० ।।

तब राम भगवान ने विभीषण को रोका कि तुमने ऐसी कठिन सौगंध क्यों खाई? मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि तुम मेरे भक्त हो, इसलिए मन में किसी प्रकार का संशय मत रखो।

ए वचन आगम छे प्रगट, ते तां सहु कोई जाणे।
उत्तम करे असुराई ते माटे, ए कुली व्यापक एधाणे।। ४१ ।।

यह भविष्यवाणी तो पहले से ही लिखी है, जिसे सब कोई जानते हैं। उत्तम कुल में पैदा होकर असुरों जैसे नीच कर्म करेंगे। यही कलियुग की महिमा है।

श्रोता जाय सांभलवा ने चाल्या, जाएें आंधला नो संग।
बाहेरनी फूटी कांने बेहेरा, रदे तणां जे अंध।। ४२ ।।

एक बहरा कथा सुनने के लिए जा रहा है और अन्धे से रास्ते में मुलाकात हो गई। एक की आंखें फूटी हैं दूसरे के कान बहरे हैं और इस तरह से दोनों ही हृदय से अन्धे हैं।

Nijanand App

भट जी कथा करवानें बेसे, केणे आंसू पात न आवे।
भांड तणी पेरे वचन वांका कही, श्रोताने हंसावे।।४३।।

कथा मंच के ऊपर भागवत की कथा करने भट्ट जी बैठते हैं, किन्तु किसी को उनकी कथा से विरह के आंसू नहीं आते। वह भांड़ों की तरह श्रोताओं को लुभावने वचन सुनाकर हंसाते हैं।

हंसी रमी कतोल करीने, श्रोता किवता उठे।
मनमां जाणें अमें ग्यान कथूं छूं, पण बंध माहेंना नव छूटे।।४४।।

कथा मंच से हंसते, खेलते, मजाक करते हुए श्रोता और वक्ता दोनों जब उठते हैं तो कथा वाचक के मन में भाव होता है कि मैं भगवान की कथा सुनाता हूं, किन्तु अन्दर मन से माया नहीं हटती।

दुष्टे दुष्ट मले मद माता, ए कलजुगना रंग।
सत पंडित कहावे साध मंडली, ए करमोंना बंध।।४५।।

दुष्ट से दुष्ट जब मस्ती में मिलते हैं तो समझ लेना यह कलियुग है। साधुओं की मण्डली में रहने वाले और सच्चे पंडित कहलाने वाले कर्मों के बन्ध से नहीं छूटे।

तेम तेम कामस चढती जाय, जेम जेम जराबल आवे।
एम करतां जम किंकर आवे, पछे जीत्यूं रतन हरावे।।४६।।

जैसे-जैसे उनको बुढ़ापा आता है उनके मन की मैल बढ़ती जाती है। ऐसा करते-करते यमदूत आ जाते हैं और सुन्दर अनमोल मनुष्य तन को गवां देते हैं।

चरचा कथा तेहेने कहिए, जे आप रुए रोवरावे।
दिन दिन त्रास वधतो जाय, ते बंध रदेना छोडावे।।४७।।

चर्चा और कथा उसे कहना चाहिए जिसमें वक्ता रोए और श्रोताओं को भी रुलाए। जिससे दिनों दिन मौत का डर बढ़ता जाए और हृदय की गांठें खुल जाएं।

वस्त थई अगोचर माहीं, जीव चाले आणे आचार।
एणी चाले जो फल लाधे, तो पामसे सहु संसार।।४८।।

सार वस्तु परमात्मा दिखाई नहीं देता। जीवों का आचरण दिखावे का होता है। ऐसी चाल चलने से अखण्ड फल की प्राप्ति यदि हो जाती तो संसार का हर प्राणी उसे पा लेता।

साध रह्या पंथ जोई जोई, पण केणे न लाध्यो सेर।
अनेक उपाय करी करी थाक्या, पण न टले ते भोमनों फेर।।४९।।

बहुत से साधु सन्त इस रास्ते पर चले और खोज-खोजकर थक गए, पर किसी को सत का रास्ता नहीं मिला। अनेक उपाय करके थक गए, किन्तु जन्म-मरण का चक्कर नहीं छूटा।

ए अमल तणो फे जिहां नव जाय, तिहां फरे छे विकलना जेम।
ए अटकलें वन वन जई वलगे, ते फल पांमे केम।।५०।।

इस माया का जब तक नशा उतर नहीं जाता, तब तक व्याकुल हुए फिरते हैं और संशयों में पड़े रहते हैं, तो वह अखण्ड स्वरूप कैसे पा सकते हैं?

बिरिख तणी ओलखांण न उपजे, जे ए फलनूं छे आ वन।
केम फल लाधे सोध विना, जेनूं विकल थयूं छे मन।।५१।।

इनको मूल पेड़ (माया) की खबर नहीं है, जिसका यह (संसार) फल है। जिनका मन संशय से भरा है वह परमात्मा को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

Nijanand App

उनमाने फल जोवा जाय, सामां वीटे करमना जाल।
मनमां जाणें हूं बंध छोडूं छूं, पण बंधाई पड़े तत्काल।।५२ ।।

अटकल से मुक्ति फल को पाना चाहते हैं, परन्तु सामने कर्मों की जाली बंधी है। मन में यही सोचते हैं कि हम बन्ध से छूट रहे हैं, परन्तु छूटने के सभी उपाय उलटा कर्म बन्धन में बांध देते हैं।

जई ने जुए फल जुआ थईने, अनेक कीधी उनमान।
एक माहेंथी चोरासी बुधे बोल्या, पण पांम्या नहीं पराधान।।५३ ।।

अनेक ने माया से अलग होकर फल को देखने का प्रयत्न किया और अनुमान से ही उसे ढूंढ़ना चाहा। एक ज्ञानी गुरु और उसके बाद चौरासी नाथ योगी चेलों ने अपनी बुद्धि से विचार किया पर परमतत्व तक नहीं पहुंचे।

इहां अनेक बुधे बल कीधां, अने अनेक फराया मन।
फल थयूं अगाध अगोचर, साथ रह्या जोई जोई अनू दिन।।५४ ।।

यहां इस संसार में अनेक बुद्धिमानों ने अपनी शक्ति लगाई और अनेक उपाय करके अपने मन को माया से हटाया, किन्तु परमात्मा उनकी समझ से बाहर ही रहा। वह खोज-खोजकर थक गए और उनके साथी इस दिन की राह देखते ही रह गए।

वली जे साध पुरुख कोई कहावे, ते कामस टालवा जाय।
सो मन साबू घसी पछाडे, निरमल तोहे नव थाय।।५५ ।।

इस संसार में जो साधु पुरुष कहलाते हैं, वह अपने मन की मैल को धोना चाहते हैं। सौ मन साबुन घिसने पर भी मन निर्मल नहीं होता।

सो रे वरसनी जटा बंधांणी, ते केम छोडी जाय।
अंतकाल सुरझावा बेठा, लेई कांकसी हाथ माहें।।५६ ।।

सौ वर्ष तक बाल बढ़ाकर जटा बांधो, उसको अन्त समय कैसे सुलझाया जा सकता है। उस समय वह हाथ में कंघी लिए बैठा रहता है।

ए करमना बंध जोरावर, छूटे नहीं केणी पर।
बलिया बल करी करी थाक्या, निगमिया अवसर।।५७ ।।

इसी प्रकार कर्म बन्धन किसी तरह से नहीं छूटते। बड़े-बड़े बलवान भी कोशिश करके थक गए और उन्होंने मिला अवसर गंवा दिया।

बंध छोडे जई आकार ना, मोटी मत धणी जे कहावे।
पण बंध बंधाणां जे अरूपी, ते तां दृष्टें केहेनी न आवे।।५८ ।।

इस शरीर के विकारों से मुक्त होने वाले अपने को महान ज्ञान के ज्ञाता कहलाते हैं, परन्तु उनके अन्दर भी न दिखने वाली माया ने बन्धन बांध रखे हैं। वह किसी को नजर नहीं आते।

गुरगम टाली बंध न छूटे, जो कीजे अनेक उपाय।
जेणी भोमें रे आप बंधाणां, ते भोम न ओलखी जाय।।५९ ।।

बिना गुरु कृपा के यह माया के बन्ध नहीं छूटते भले कोई कितने ही उपाय कर ले। माया के जिस संसार में वह बंध गया है उस संसार की माया की पहचान गुरु कृपा के बिना नहीं कर सकता।

Nijanand App

आप न ओलखे बंध न सूझे, करम तणी जे जाली।
खोलतां खोलतां जे गुरगम पांम्यो, तो ते नाखे बंध बाली।। ६० ।।

यहां कर्मों की जाली ऐसी है कि बिना गुरु के न अपनी पहचान होती है और न माया जाल ही दिखता है। खोजते-खोजते यदि गुरु मिल गया तो वह माया के बन्धन को काट देगा।

केम ओधरिया आगे जीव, जेणे हता करमना जाल।
गुरगम ज्यारे जेहेने आवी, ते छूट्या तत्काल।। ६१ ।।

वह जीव जो कर्म की जाली में बंधा था उसका किस तरह से उद्धार हुआ? गुरु कृपा जब हुई तो माया के बन्धन छूट गए।

आणे वचने खरे बपोरे, बोध तमारे पास।
भरथ खंड माहें जनम मानखे, कां न करो प्रकास।। ६२ ।।

भरत खण्ड में मनुष्य तन पाकर जब गुरु भी तुम्हारे पास हो तो उनकी खरी दुपहरी के जैसे संशय रहित वचनों से अपने जीव को क्यों नहीं जगा लेते?

आ जोगवाई सघली सनंधे, कां न करो वस्त हाथ।
आ वेला वली वली नहीं आवे, जीती कां जाओ रे निरास।। ६३ ।।

यह सब साधन तुमको मिले हैं तो सत वस्तु को क्यों नहीं प्राप्त करते? यह सब बार-बार नहीं मिलता, इसलिए जीती बाजी हारकर निराश क्यों होते हो?

तमें जैन महेश्वरी सहुए सुणजो, आदे धरम छे एक।
रिखभ देव चाल्या पछी मारग, वेहेचाणां विवेक।। ६४ ।।

हे जैन माहेश्वरी! आप सुनिए। मूल धर्म एक था। ऋषभ देव के जाने के बाद यह धर्म टुकड़ों-टुकड़ों में बंट गया।

मुझवण विध करो छो धर्मनी, माहों माहें अगाध।
वस्त खोल्या विना विमुख थाओ छो, लई जाय गुण कहावो साध।। ६५ ।।

धर्म के तरह-तरह के विचारों में फंसकर आपस में झगड़ रहे हो और असल वस्तु को जाने बिना ही उससे विमुख हो गए और फिर भी अपने को साधु कहलवाते हो।

जीव चंडाल कठण एवो कोरडू, कां रे करो छो हत्यारो।
वृथा जनम करो कां साधो, आवो रे आकार कां मारो।। ६६ ।।

जीव तो पहले से ही कठिन, कठोर और खांगडू है। ऊपर से कष्ट दे-देकर उसे सता रहे हो। हे साधुजन! ऐसे अनमोल जन्म को माया के लिए क्यों गंवा रहे हो?

लाख चोरासी हत्या बेससे, एवो आ जनम तमारो।
बीजी हत्यानों पार नथी, जो ते तमें नहीं संभारो।। ६७ ।।

चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ेगा, अर्थात् चौरासी लाख जीवों की हत्या का पाप लगेगा। इस पाप से बड़ा पाप और कोई नहीं है, इसलिए अपने जन्म को सफल क्यों नहीं करते?

Nijanand App

आगल तिमर घोर अंधारूं, बूडसे जीव जल माहें।
लेहेरा मारे अवला पछाडे, मछ गलागल तांहें।। ६८ ।।

आगे घोर अन्धकार है और जीव माया में डूब जाएगा। माया की लहरें उसे डुबोकर पछाड़ेंगी तथा यहां एक-दूसरे को निगलने वाले मगरमच्छ भी हैं, इसलिए इन सबसे बचने के लिए अपने जीव को पहचान लो।

बुध बिना जीव बेसुध थासे, माथे पडसे मार।
बांधेल बंध तांणसे बलिया, विसमसे नहीं खिण वार।। ६९ ।।

ऐसे भवसागर में जागृत बुद्धि के बिना जीव बेसुध हो जाएगा और पीछे यम की मार पड़ेगी। अपने ही बांधे बन्ध माया में खींच लेंगे और पल भर के लिए भी शान्ति नहीं होगी।

ए दुस्तरनों क्यांहें छेह नहीं आवे, कलकलसो करसो पुकार।
त्रास पांमीने जीव कां न जगवो, आ विसमूं घणुं संसार।। ७० ।।

इस कठिन माया से भवसागर का पार नहीं मिलेगा। फिर पीछे बिलख-बिलख कर चिल्लाओगे। ऐसे भय से अपने जीव को जगा क्यों नहीं लेते? यह संसार बड़ा कठिन है।

दिस एके नहीं सूझे सागर माहें, भवसागर जम जाल।
अनेक वार तडफडसो मरसो, तोहे नहीं मूके काल।। ७१ ।।

इस भवसागर से निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। यह ऐसी यम की जाली है जिसमें बार-बार जन्मना और मरना पड़ेगा फिर भी मौत से छुटकारा नहीं मिलेगा।

त्यारे तेवा माहें सूं सोध थासे, आज आव्यो अवसर।
साध पुरुख तमें जो जो संभारी, बीजी नथी छूटवा पर।। ७२ ।।

तब ऐसे हालात में किसे खोजोगे? आज तुम्हारे हाथ में मौका है। इस समय, हे साधु पुरुषो! तुम विचार करके देखो। इससे निकलने का और कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

गुरगम टाली ए गांठ न छूटे, केमे न थाय रे नरम।
माहेंली कामस केमें न जाय, जो कीजे अनेक श्रम।। ७३ ।।

यह माया के बन्धन गुरु कृपा के बिना किसी भी तरह नहीं छूटेंगे। यह बन्धन कुछ ढीले हो जाएं, ऐसी सम्भावना भी नहीं है। कितनी मेहनत कर लो, गुरु कृपा के बिना अन्दर की मैल नहीं मिट सकती।

बाहेर थकी गांठ एक छोडिए, तिहां बीजी बंधाय अपार।
ए विसमा बंध नों नथी रे उपाय, बीजो आणें संसार।। ७४ ।।

बाहर के कर्म एक छोड़े भी तो दूसरे कई कर्म बन्धन लग जाते हैं। इस संसार में इन कर्मों के कठिन बन्धनों से छूटने का गुरु कृपा के बिना और कोई रास्ता नहीं है।

आ आकार माहें जीव बंधाणों, ते पण नव ओलखाय।
तो पारब्रह्म जे पार थयो, ते केणी पेरे खोलाय।। ७५ ।।

इस शरीर में जीव कई बन्धनों में बंधता है। उसकी भी पहचान नहीं होती तो संसार के बाहर जो पारब्रह्म है उसकी पहचान किस तरह से हो?

Nijanand App

जीव थयो माहें निराकार, ते केणी पेरे बांध्यो बंध।
रूप रंग वाए तेज नहीं, तमें साधो जुओ रे सनंध।।७६ ।।

जब जीव निराकार है तो उसे बन्धन कैसे बंध गए? जिस जीव का रूप, रंग; हवा, तेज नहीं है, वह बन्धन में कैसे बंध गया? इस हकीकत को देखो।

जीव बंधाणों अगनाने, ते अगनान निद्रा जोर।
जेहेर चढ्यूं घेंन भोम तणुं, ते पड्यो तिमर माहें घोर।।७७ ।।

जीव अज्ञानवश बंध गया है। अज्ञान ही नींद है। जिसको इस भूमि का नशा चढ़ जाता है वह घोर अन्धकार में फंस जाते हैं।

आणे आकारे जो नव छूटो, तो छूटसो केही पर।
साधो साध नी संगत करजो, खिण खिण जाय अवसर।।७८ ।।

यदि मनुष्य तन प्राप्त करके भी इन बन्धनों से नहीं छूट सकोगे तो फिर कैसे छूटोगे? इसलिए हे साधो! गुरु की संगत करो। एक पल भी व्यर्थ न गंवाओ।

साध संगते आ जेहेर उतरसे, रुदे ते करसे प्रकास।
घेंन निद्रा सर्व उडीने जासे, अंधकार नों नास।।७९ ।।

सच्चे संत की संगति से ही माया का विष उतरेगा और हृदय में ज्ञान का प्रकाश होगा। तब बेसुध करने वाली नींद उड़ जाएगी और मोह अन्धकार का नाश हो जाएगा।

त्यारे जीव जई आप ओलखसे, ओलखसे आ ठाम।
घर पोताना दृष्टे आवसे, त्यारे पामसे विश्राम।।८० ।।

तब जीव अपनी पहचान करके जग जाएगा। तभी उस अखण्ड घर की पहचान हो जाएगी और तब उसे शान्ति मिलेगी।

ज्यारे जीवनी मोरछा भागी, त्यारे उडी गयूं अगनान।
करम नी कामस केम रहे, ज्यारे भलयो श्री भगवान।।८१ ।।

जिस जीव की मूर्छा (भ्रम) हट जाएगी, उसका अज्ञान खत्म हो जाएगा। फिर कर्म बन्धन कैसे रहेगा? तब भगवान की प्राप्ति हो जाएगी।

भ्रांत भरम सर्वे भाजी जासे, उडी जासे आसंक।
अगम अगोचर सह्यु सोध थासे, रमसे माहें वसंत।।८२ ।।

जब मन के सभी संशय और भ्रम मिट जाएंगे तो मन की अस्थिरता, चंचलता मिट जाएगी। परमात्मा जो अगम (जिसके पास पहुंचा नहीं जा सकता), अगोचर (जो आंख से देखा नहीं जा सकता) है उसकी सब जानकारी मिल जाएगी, तब जीव आनन्द में खेलेगा।

दोष मा दीजे रे वैराट वाणी ने, मुखथी बोले सह्यु सत।
बोल्या ऊपर चाली न सके, त्यारे फरी जाय छे मत।।८३ ।।

हे भाई! संसार के धर्म शास्त्रों को दोष मत दो। यह तो मुंह से सब सत बोलते हैं, पर मुंह से जैसा बोलते हैं वैसे चलते नहीं हैं, इसलिए उनकी बुद्धि भटक जाती है।

Nijanand App

मोटो अवतार श्री परसराम जी, तेना हजी लगे बंध न छूटे।
कष्ट करे छे आज दिन लगे, पण तोहे ते ताणां न त्रूटे।। ८४ ।।

देवों में परशुरामजी का अवतार बड़ा कहा जाता है। उनके भी आज तक कर्म बन्धन नहीं छूटे। वह आज तक बहुत कष्ट कर रहे हैं। फिर भी कर्मों के बन्धनों की रस्सियां नहीं टूटतीं।

अनेक देह दमे पंच अगनी, तोहे न बले करम।
अनाद काल ना जे बंध बांध्या, ते थाय नहीं जीव नरम।। ८५ ।।

संसार में बहुत से लोग पंचाग्नि में देह का दमन करते हैं। फिर भी इनके कर्म के बन्धन नहीं जलते। अनादि काल से जो कर्म के बन्धन बंधे हैं, वह किसी तरह से नर्म नहीं होते।

प्रगट बेठा बंध छोडवा, ते आपण माटे थाय।
अवतार ते पण करमें बंधाणां, रखे कोई देखी बंधाय।। ८६ ।।

यह मोटे (बड़े) अवतार श्री परशुरामजी, कर्म के बन्धन से छूटने के लिए अनेक उपाय कर रहे हैं। यह अपने लिए सिखापन (शिक्षा) है, इसलिए कोई कर्म के बन्धन में मत बंधो।

आ ब्रह्मांड विखे कोई एम मा केहेसो, जे अमने सूं करे बंध।
ब्रह्मांड धणी पोते आप बंधावी, देखाडे छे सनंध।। ८७ ।।

इस संसार में कोई ऐसा न कहना कि मेरा कर्म बन्धन क्या कर लेंगे जब इस ब्रह्माण्ड के मालिक त्रिदेव भी खुद कहते हैं कि हम कर्म बन्धन में बंधे हैं। यह हमें एक रास्ता बता रहे हैं।

तेज आकास वाए जल पृथ्वी, रवि ससि चौदे भवन।
ए फरे सर्व करम ना बांध्या, तो बीजी तो एहेनी उतपन।। ८८ ।।

जल, वायु अग्नि, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा चौदह लोक सब कर्म में बंधे हैं। सारी सृष्टि की उत्पत्ति इन्हीं से है, इसलिए सारा संसार कर्म बन्धन में बंधा है।

प्रगट वैराट थयो जे दाडे, एणा बंध पेहेला ना बंधाणां।
बाल्या बले नहीं ते माटे, सहुए ते जाय तणाणां।। ८९ ।।

जिस दिन यह ब्रह्माण्ड बना था उससे पहले ही यह कर्म बन्धन बांध दिए गए और इसलिए यह जलते नहीं हैं और सबको अपने अन्दर खींचते हैं।

मानखो जनम पांम्यो बंध छोड़वा, वली रे वसेखे भरथ खंड।
कुली माहें उत्तम आकार पामी, सामा बांधे छे अधका बंध।। ९० ।।

माया के बन्धनों से छूटने के वास्ते तुमने मनुष्य तन की प्राप्ति की है। विशेषकर यह भरत खण्ड और उत्तम कलियुग में मनुष्य तन पाया है। फिर भी तुम बन्ध पर और बन्ध बांधते जा रहे हो?

माहें अंधारू माहें अजवालूं, रूदे ते कोई न संभारे।
पर वस बांध्यो करम करे, अवतार अमोलक हारे।। ९१ ।।

अपने अन्दर ही अंधेरा है और अपने अन्दर ही उजाला है, परन्तु अपने हृदय को कोई नहीं सम्भालता। परवश होकर कर्म बन्धन में आकर कर्म करते हैं और अनमोल जीवन (मनुष्य तन) को नष्ट कर देते हैं।

कोई वेद विचार न करे, भाई सहु को स्वादे लाग्युं।
अनल एणी पेरे चाले ते माटे, साचूं ते सर्वे भाग्युं।। ९२ ।।

यहां कोई वेद की वाणी का विचार नहीं करता। सबको माया का स्वाद लगा है। यहां कोई ऐसी हवा चल गई है कि सभी सत से दूर भागते हैं।

Nijanand App

साचूं बोल्यूं गमे नहीं केहने, सहुने ते लागसे दुख।
वेद तणां वचन विचारो, जे कहे छे पोते मुख।। ९३ ।।

यहां सत्य बोलना किसी को अच्छा नहीं लगता। सबको दुःख लगता है। वेद के वचनों को विचार कर देखो कि वेद क्या कहते हैं।

वेद कहे मारा मूल आकासें, साखा छे पाताल।
तोहे न समझे मूढमती, अने फरी फरी पडे माहें जाल।। ९४ ।।

वेद कहते हैं कि हमारी जड़ आकाश में है और डालें पाताल में हैं। फिर भी मूर्ख लोग नहीं समझते और बार-बार कर्म के बन्धन में बंधते हैं।

वेद तणुं तां बिरिख नथी, भाई ए छे प्रगट वाणी।
अवली के सबली विचारो, ए आंकडी न कलाणी।। ९५ ।।

हे भाई! वेद तो कोई वृक्ष है नहीं। यह तो संसार की उत्पत्ति होने की वाणी है। इसे उल्टा सीधा कैसे भी विचारों, इसकी आंकड़ी नहीं खुलती।

सत वाणी छे वेद तणी, जो ते कोई जुए विचारी।
ए कोहेडो रचियो रामतनो, सघला ते माहें अंधारी।। ९६ ।।

कोई विचार करके देखो तो वेद की वाणी सत है। माया संसार में एक प्रकार का कोहेड़ा (धुमस) है जो सबको उलझा देने वाला है, इसलिए संसार में अंधेरा ही अंधेरा है, अर्थात् सब भटक रहे हैं।

कोई दोष मां देजो रे वेद ने, ए तो बोले छे सत।
विश्व पडी भोम अगनान माहें, ए भोम फेरवे छे मत।। ९७ ।।

हे भाई! वेदों को कोई दोष मत देना। वह तो सत ही बोल रहे हैं, पर सारा संसार इस पृथ्वी पर अज्ञानता के अन्धकार में है और इसलिए इस संसार में सबकी अकल उल्टी हो जाती है।

अर्थ जुए सहू उपली वाटनो, माहेंलो ते माहें नव संभारे।
वैराट पूर वहे वेहेवटे, दुख सुख कोई न विचारे।। ९८ ।।

वेदों के अर्थ सब ऊपरी दृष्टि से लेते हैं। उनके अन्दर छिपे रहस्यों को कोई नहीं विचारता। पूरा संसार कर्म के बन्धनों के जोरदार बहाव में बहा जा रहा है। दुःख-सुख का विचार नहीं करते।

वेद विचार करी करी वलया, पारब्रह्म नव लाध्या।
वली वलिया उलटा त्यारे पाछा, बंध विश्वना बांध्या।। ९९ ।।

वेदों ने बहुत खोज की, किन्तु पारब्रह्म को नहीं पाया। तब पीछे लौटे और सबको कर्म के बन्धन में बांध दिया।

आ तां व्यास जी नो कह्यूं कहूं छूं, तमे मानजो साधो संत।
न मानो ते जई सुक जी ने पूछो, आ बेठा छे माहें भागवत।। १०० ।।

यह मैं व्यासजी का कहा कह रहा हूं। हे साधो! सन्तो! इस बात को मान लेना। न मानो तो शुकदेवजी से पूछो जो भागवत में बैठे हैं।

Nijanand App

वेद पुराण भारथ सहू बांध्या, त्यारे दाझ रुदे मा समाणी।
ततखिण आव्या गुर जी पासे, बोल्या नारदजी वाणी।। १०१ ।।

व्यासजी ने महाभारत तथा पुराणों की रचना की। कर्मकाण्ड की रचना मीमांसा शास्त्र में हुई। तब उनके रोम-रोम में अशान्ति हो गई। इसी समय वह दौड़कर अपने गुरु नारद के पास आए और अशान्त होने की बात सुनाई।

घणी खंडनी कीधी व्यासजी नी, पूरी वचनोने श्रवणा न दीधी।
वाणी सर्वे नाखी उडाडी, अवतारनी लाज न कीधी।। १०२ ।।

नारदजी ने व्यासजी की बहुत खण्डनी की जिसको व्यासजी सुन भी न सके। नारदजी ने उनके सारे ग्रन्थों को झूठा कर दिया और अवतारी पुरुष व्यासजी की न शर्म रखी और न लिहाज।

सबला रोस भराणां रिखी जी, जोई व्यास वचन।
सास्त्र सर्वे बांधीने, ते बोल्या बूडता जन।। १०३ ।।

व्यासजी की वाणी को देखकर नारदजी को बहुत क्रोध आ गया और वह बोले कि तुमने इतने सारे शास्त्रों की रचना करके भवसागर में डूबते लोगों को कर्म के बन्धन बांधकर डुबो दिया।

वैराट धणी ज्यारे नव लाध्यो, त्यारे कां ना रह्यो तूं गोप।
विश्व विगोई स्या माटे, तें उलटा वचन कही फोक।। १०४ ।।

नारदजी ने कहा, हे व्यास! जब तक तुमने संसार के मालिक को नहीं पाया तब तक तुम चुप क्यों नहीं रहे? तुमने जीवों को उलटे व्यर्थ वचन कहकर दुनियां को किस वास्ते डुबाया?

विसमां वचन देखी व्यासजीना, पूरी ते दृष्ट चढावी।
श्री कृष्ण जी विना बीजूं सर्वे मिथ्या, एम कह्यूं समझावी।। १०५ ।।

व्यासजी के हैरानी में डालने वाले ग्रन्थों को देखकर नारदजी ने व्यासजी को कोप दृष्टि से देखा और फिर समझाकर कहा कि श्री कृष्णजी के बिना बाकी सब मिथ्या है।

वचन तणों अहंमेव व्यासजीनों, नाख्यो ते सर्व उडाडी।
दया करीने खंडनी कीधी, दीधी आंख उघाडी।। १०६ ।।

नारदजी ने व्यासजी के ग्रन्थ रचने के अहंकार को उड़ा दिया। सच्चे गुरु होने के कारण उन्होंने खण्डनी करके व्यासजी की आंखें खोल दीं।

तेणे समें कह्यूं नारदजीएं, न वले जिभ्या मारी एम।
कठण वचन कह्या व्यासजीने, में केम केहेवाय तेम।। १०७ ।।

नारदजी ने व्यासजी को जिन कठोर शब्दों से फटकारा वह शब्द मेरी जबान से कहे नहीं जा सकते।

आटलूं पण हूं तोज कहूं छूं, रखे केणे अजाण्यूं जाय।
आ दुनियां भेला साध तणाय, त्यारे सूं करूं में न रेहेवाय।। १०८ ।।

इतना तो मैंने इसलिए कह दिया है कि कोई इसको बिना समझे न रह जाए। यह दुनियां तो अपने संगी-साथियों के साथ कर्म बन्धन में खिंची जा रही है, इसलिए मुझसे नहीं रहा जाता। मैं क्या करूं?

Nijanand App

हाकली गुरगम दीधी नारदजीएं, ते लई व्यास घर आव्या।
सार वचन लई ग्रन्थ सघलाना, रदे ते माहें समाव्या।। १०९ ।।

नारदजी ने व्यासजी को सच्चे गुरु होने की पहचान बता दी जिस सिखापन (शिक्षा) को लेकर व्यासजी घर आए। तब सब रचे ग्रन्थों का सार लेकर अपने मन में रख लिया।

सार तणो विचार करीने, बांध्या द्वादस स्कंध।
त्यारे ठरयो रदे एणे वचने, मन पाम्यो आनन्द।। ११० ।।

और फिर इन सार वचनों का विचार करके बारह स्कन्ध की भागवत की रचना की और उन वचनों को प्रगट करके मन को शान्ति मिली और आनन्द मिला।

उदर सुकजी उपना, अने आंहीं उपनूं भागवत।
व्यासे वचन कही प्रीछव्या, ग्रही परसव्या संत।। १११ ।।

व्यासजी के घर में शुकदेवजी पैदा हुए। शुकदेवजी से भागवत प्रगट हुई। व्यासजी ने इन सार वचनों को शुकदेवजी को सुनाया और कहा कि इन सार वचनों को सन्तों को सुनाओ।

सारनूं सार थयूं भागवत, वचन थया विवेक।
वली अमृत सीच्यूं सुकदेवे, तेणे थयूं रे विसेक।। ११२ ।।

इस तरह से सब धर्म शास्त्रों का सार विवेक से विचार कर भागवत में कहा। शुकदेवजी ने उसे अपनी अमृतमयी वाणी से उसमें और भाव भर दिए, इसलिए उसमें विशेषता आ गई।

सकल सार नूं सार निपनूं, सहु को ते मुखथी भाखे।
पण वचन भारी विचार न थाय, त्यारे विप्र वाणी पेहेला नी दाखे।। ११३ ।।

सभी धर्म ग्रन्थों का सार भागवत बना। ऐसा सब कोई अपने मुख से कहते हैं, किन्तु भागवत के वचनों पर चलना मुश्किल है, इसलिए उसके अनुसार नहीं चलते। ब्राह्मण लोग पहले की तरह वेद वाणी पर ही चलते हैं।

सुकजी केरा वचन समझी, जो कोई रदे विचारो।
सात दिवस माहें परीछित वैकुंठ, वचनें पार उतारयो।। ११४ ।।

शुकदेवजी के वचनों को समझकर हृदय में विचार करो। उन वचनों से राजा परीक्षित सात दिन में ही बैकुण्ठ चले गए।

तेज वचन वांचता सांभलता, जाय जम वारो बांध्यो।
अर्थ तणी ओलखाण न आवे, प्रेम वचन नव लाध्यो।। ११५ ।।

ऐसे वचनों को पढ़कर और सुनकर भी बड़ी हैरानी की बात यह है कि भागवत सुनकर भी लोग यमराज के बन्धन से नहीं छूटते। अर्थों की पहचान न होने से प्रेम का मार्ग प्राप्त नहीं होता।

अहनिस अर्थ करे समझावे, केहनो रंग न पलटो थाय।
बेहेराने कालो संभलावे, बांध्या ते माटे जाय।। ११६ ।।

रात-दिन भागवत का अर्थ करने और समझाने पर भी किसी के जीवन में परिवर्तन नहीं आता। यह कथाकार तथा उनके श्रोता ठीक वैसे ही हैं जैसे बहरे को गूंगा कथा सुना रहा हो, इसलिए उनके कर्म बन्धन भागवत से नहीं छूटते।

Nijanand App

आंकडी कोई न जुए रे उकेली, वचन तणां जे विवेक।
गुरगम टाली खबर न पड़े, ए अर्थ भारे छे विसेक।। ११७ ।।

भागवत ज्ञान की आंकड़ियों (गुत्थियों) को कोई खोलकर नहीं देखता। इनके अर्थ बड़े गहरे हैं जो गुरु के बिना किसी को समझ में नहीं आते।

ए रे अर्थ माहें छे अजवालूं, जे कोई जोसे रे विचारी।
रुदया मांहें थासे प्रकास, त्यारे जागसे जीव संभारी।। ११८ ।।

इन गुझ (गुह्य) अर्थों को समझने पर ही ज्ञान मिलता है। इस पर विचार करने वाला ही समझ पाएगा। जो जीव जागृत होकर इन वचनों को समझ लेगा उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाएगा।

जीव जाग्यो त्यारे नथी वस्त वेगली, आतम परआतम जोड़।
त्यारे वांसो दईने विश्वने, सनमुख रेहेसे कर जोड़।। ११९ ।।

जब जीव जाग जाएगा, तब अखण्ड वस्तु उससे अलग नहीं रहेगी। आतम परआतम से जुड़ जाएगी। तब यह जीव संसार को पीठ देकर परमात्मा के सामने खड़ा हो जाएगा।

विध सघली समझी वैराटनी, माया करसे सत।
स्वामी सेवक थासे संजोग, त्यारे उडी जासे असत।। १२० ।।

यह जीव संसार की सारी हकीकत को समझकर माया में रहकर भी सत की राह पर चलेगा। जब परमात्मा और जीव का मिलन हो जाएगा तब सारे संसार का अज्ञान मिट जाएगा।

थासे संजोग त्यारे बंध छूटा, करम नहीं लवलेस।
निहकर्म तणां निसान ज वागा, अखंड सुख पांमसे वसेक।। १२१ ।।

जब जीव का सम्बन्ध परमात्मा से हो जाएगा, तब नाम मात्र के लिए भी कर्म बन्धन नहीं रह जाएंगे। तब संसार से निष्कर्म होने का डंका बज जाएगा और जीव को अखण्ड सुख प्राप्त होगा।

बीजा केहेने दोष न दीजे रे भाई जी, ए माया विकराल।
करोलिया जेम गूंथी गूंथे, मुझाई मरे माहें जाल।। १२२ ।।

हे भाई! किसी को दोष मत देना। यह माया बड़ी भयंकर हैं। जैसे मकड़ी स्वयं अपना जाल बनाती है और उसी में उलझकर मर जाती है, वैसे ही संसार के जीवों का हाल है।

जे जीव होय जल तणों, ते न रहे विना जल।
अनेक विध ना सुख देखाडो, पण मूके नहीं पाणी-वल।। १२३ ।।

जो जीव जल का होता है वह जल के बिना नहीं रहता। चाहे उसे कितना ही सुख दो वह एक पल मात्र के लिए भी जल को नहीं छोड़ता।

तेम जीव होय सागर तणो, ते मूके नहीं भवसागर।
अखंड सुख जो अनेक देखाडो, पण मूके नहीं पोते घर।। १२४ ।।

इसी तरह जो जीव भवसागर (माया) का होता है वह माया को नहीं छोड़ता। चाहे कितने ही अखण्ड सुख दिखलाओ, परन्तु वह अपना घर (माया) नहीं छोड़ते।

खरो हसे जे खरी भोम तणों, आ वचन विचारसे जेह।
अगिन झाला देखीने छाडसे, अखंड सुख लेसे तेह।। १२५ ।।

जो अखण्ड बेहद का साथी होगा, वही इन वचनों का विचार करेगा और इस संसार को आग की लपटें समझकर छोड़ेगा और अखण्ड सुख लेगा।

Nijanand App

मन करम ने ठेलसे, जेथी प्रगट थाय सर्वा अंग।
साथी बोध संघाती बोले, जीव मन एकै रंग।। १२६ ।।

वह मन को कर्मों के बन्धन से ठोकर लगाकर अलग करेगा। सच्चे साथी के ज्ञान से संग चलने वाले साथी का जीव और मन एक ही रंग में रँग जाएगा।

हवे गोप वचन केहेवासे गुरगम, ते केम प्रगट होय।
विष्णु-संग्राम करीने लेसे, साध हसे जे कोय।। १२७ ।।

अब गुरु कृपा से छिपे वचनों के रहस्य कहलवाए जाएंगे। यह कैसे जाहिर होंगे ? जो साधु-महात्मा होंगे वह गुरु कृपा से धर्म-युद्ध करके सार (ज्ञान) ग्रहण करेंगे।

आतां अनुमाने बाण नाख्या उडाडी, बीजा भारी उडाडया न जाय।
सनमुख मले नहीं जिहां सूरो, ते हथू का विना न चोडाय।। १२८ ।।

यह तो मैंने अपने अनुमान से वचनों का तीर खींचकर मारा है। जीव को जगाकर भव से पार करने वाले ज्ञान का भारी तीर तब तक नहीं चलाया जाता, अर्थात् बेहद का ज्ञान नहीं दिया जाता, जब तक कि सामने बेहद के साथी न मिलें जो इन भारी वचनों को समझ सकें। इन शब्दों की चोट बेहद के साथी ही सह सकते हैं।

साध ओलखासे वचने, अने करसे समागम।
साध वाणी साध एम ओचरे, संगत छे साध रतन।। १२९ ।।

कोई बेहद का साथी होगा वही इन वचनों को समझेगा और सत्संग करेगा। साधु महात्मा ऐसा कहते हैं कि सत्संग अनमोल रतन के समान है।

॥ प्रकरण ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ १९४५ ॥

पर न आवे तोले एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत।
प्रसिद्ध प्रगट पाधरी, किवता किव करंत।। १ ।।

श्री मेहराज ठाकुर कहते हैं कि श्री कृष्णजी नाम की तुलना में संसार के कोई भी कर्मों का फल बराबरी नहीं कर सकता। संसार के कई कवियों ने कविता करके तथा ज्ञानियों ने अपने ज्ञान में यह स्पष्ट बताया है।

कोट करो नरमेध, अश्वमेध अनंत।
अनेक धरम धरा विखे, तीरथ वास वसंत।। २ ।।

करोड़ों नरमेध (मनुष्य की बलि चढ़ाना) यज्ञ करो, बेशुमार अश्वमेध (घोड़ा छोड़कर) यज्ञ करो, संसार के अनेक धर्मों का पालन करो और तीर्थों में भी जाकर रहो।

सिद्ध करो साधन, विप्र मुख वेद वदंत।
सकल क्रियासूं धरम पालतां, दया करो जीव जंत।। ३ ।।

कठोर साधना करके सिद्धियां प्राप्त कर लो, ब्राह्मण बन वेदों का पाठ पढ़ लो, सब प्रकार के आचार विचार से शुद्ध होकर धर्म का पालन करो और पृथ्वी के सभी जीव-जन्तुओं पर दया करो।

व्रत करो विध विधना, सती थाओ सीलवंत।
वेख धरो साध संतना, गनानी गनान कथंत।। ४ ।।

तरह-तरह से व्रत उपवास करो तथा सती और शीलवती नारी बनो, साधु सन्तों का भेष धारण करो, ज्ञान के कहने वाले बनकर ज्ञान की चर्चा करो।

Nijanand App

मन करम ने ठेलसे, जेथी प्रगट थाय सर्वा अंग।
साथी बोध संघाती बोले, जीव मन एकै रंग।। १२६ ।।

वह मन को कर्मों के बन्धन से ठोकर लगाकर अलग करेगा। सच्चे साथी के ज्ञान से संग चलने वाले साथी का जीव और मन एक ही रंग में रँग जाएगा।

हवे गोप वचन केहेवासे गुरगम, ते केम प्रगट होय।
विष्णु-संग्राम करीने लेसे, साध हसे जे कोय।। १२७ ।।

अब गुरु कृपा से छिपे वचनों के रहस्य कहलवाए जाएंगे। यह कैसे जाहिर होंगे? जो साधु-महात्मा होंगे वह गुरु कृपा से धर्म-युद्ध करके सार (ज्ञान) ग्रहण करेंगे।

आतां अनुमाने बाण नाख्या उडाडी, बीजा भारी उडाडया न जाय।
सनमुख मले नहीं जिहां सूरो, ते हथू का विना न चोडाय।। १२८ ।।

यह तो मैंने अपने अनुमान से वचनों का तीर खींचकर मारा है। जीव को जगाकर भव से पार करने वाले ज्ञान का भारी तीर तब तक नहीं चलाया जाता, अर्थात् बेहद का ज्ञान नहीं दिया जाता, जब तक कि सामने बेहद के साथी न मिलें जो इन भारी वचनों को समझ सकें। इन शब्दों की चोट बेहद के साथी ही सह सकते हैं।

साध ओलखासे वचने, अने करसे समागम।
साध वाणी साध एम ओचरे, संगत छे साध रतन।। १२९ ।।

कोई बेहद का साथी होगा वही इन वचनों को समझेगा और सत्संग करेगा। साधु महात्मा ऐसा कहते हैं कि सत्संग अनमोल रतन के समान है।

॥ प्रकरण ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ १९४५ ॥

पर न आवे तोले एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत।
प्रसिद्ध प्रगट पाधरी, किवता किव करंत।। १ ।।

श्री मेहराज ठाकुर कहते हैं कि श्री कृष्णजी नाम की तुलना में संसार के कोई भी कर्मों का फल बराबरी नहीं कर सकता। संसार के कई कवियों ने कविता करके तथा ज्ञानियों ने अपने ज्ञान में यह स्पष्ट बताया है।

कोट करो नरमेध, अश्वमेध अनंत।
अनेक धरम धरा विखे, तीरथ वास वसंत।। २ ।।

करोड़ों नरमेध (मनुष्य की बलि चढ़ाना) यज्ञ करो, बेशुमार अश्वमेध (घोड़ा छोड़कर) यज्ञ करो, संसार के अनेक धर्मों का पालन करो और तीर्थों में भी जाकर रहो।

सिद्ध करो साधन, विप्र मुख वेद वदंत।
सकल क्रियासूं धरम पालतां, दया करो जीव जंत।। ३ ।।

कठोर साधना करके सिद्धियां प्राप्त कर लो, ब्राह्मण बन वेदों का पाठ पढ़ लो, सब प्रकार के आचार विचार से शुद्ध होकर धर्म का पालन करो और पृथ्वी के सभी जीव-जन्तुओं पर दया करो।

व्रत करो विध विधना, सती थाओ सीलवंत।
वेख धरो साध संतना, गनानी गनान कथंत।। ४ ।।

तरह-तरह से व्रत उपवास करो तथा सती और शीलवती नारी बनो, साधु सन्तों का भेष धारण करो, ज्ञान के कहने वाले बनकर ज्ञान की चर्चा करो।

Nijanand App

तपसी बहु बिध देह दमो, सर्वा अंग दुख सहंत।
पर तोले न आवे एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत।।५ ।।

तपस्वी बनकर तरह-तरह से दुःख सहन करते हुए अपनी देह का दमन करो, परन्तु यह सभी कर्म श्री कृष्णजी के नाम की तुलना में नहीं आते।

मेहेराज कहे मुख ए धंन, जो वली रुदे रमंत।
चौदे भवन ते जीतियो, धंन धंन ए कुलवंत।।६ ।।

श्री मेहराज ठाकुर कहते हैं कि ऐसा मुख धन्य है जो श्री कृष्णजी नाम ले। जिसके हृदय में श्री कृष्णजी बस जाएं उसका तो कहना ही क्या! समझ लो उसने चौदह लोकों को जीत लिया और उसका खानदान, कुल धन्य हो गया।

|| प्रकरण || १२७ || चौपाई || १९५१ ||

हांरे मारा साध कुलीना सांभलो

माया कोहेडो अंधेर केहेवाय, मांहें साध बंधाणां जाय।
तमने हजी लगे सोध न थाय, काल ताकी ऊभो माथे खाय।। १ ।।

हे मेरे कलियुग के साधुओ! सुनो। यह माया अज्ञानता के अंधेरे का कोहेड़ा (धुंध) कहलाती है। इसमें सब साधु भी बंधे चले जाते हैं। हे साधुओ! तुम्हें अभी तक सुध नहीं आई कि तुम्हारे सिर पर मौत खड़ी है।

साध वाणी तमें सांभली रे, कां न विचारो मन।
आणे अजवाले मानखे, तमें कां रे भूलो साधू जन।। २ ।।

हे साधुओ! तुमने बड़े-बड़े ज्ञानियों से चर्चा सुनी है। फिर भी तुम मन में विचार क्यों नहीं करते? इस मनुष्य तन को प्राप्त करके, हे साधुओ! तुम भूलते क्यों हो?

खिण माहें अर्थज लीजे रे, जे वचन कह्या वेद व्यासे।
दीपक वा मा खमे नहीं, हमणां धवक अंधारुं थासे।। ३ ।।

वेद व्यासजी ने जो वाणी कही है उसके अर्थ तुम एक पल में समझ सकते हो। दीपक जैसे हवा में बुझ जाता है ठीक उसी प्रकार तुरन्त अंधेरा हो जाएगा, अर्थात् मौत आ जाएगी।

कथता सांभलता ए गिनान रे, जम वारो आवसे रे।
अध वचे सर्व मुकावी, तरत बांधीने जासे रे।। ४ ।।

इस ज्ञान को कहने और सुनने में ही समय व्यतीत हो जाएगा और यमदूत आ जाएंगे जो तुम्हें कथा सुनने के बीच में से ही बांधकर ले जाएंगे।

सांचु कहे दुख लागसे, सांचु ते केहेने न सुहाय।
प्रगट कहिए मोंहों ऊपर, त्यारे दोहेला ते सहुने थाय।। ५ ।।

सच कहने से दुःख लगता है और सच्ची बात किसी को अच्छी नहीं लगती। किसी के मुंह पर सच बोल दो तो सबको बड़ा बुरा लगता है।

अवलूं देखी हूं न सकूं, त्यारे सूं करूं में न रेहेवाय।
वेख धरी लजवो साधने, एम ते माटे केहेवाय।। ६ ।।

मैं किसी को गलत रास्ते पर चलते देख नहीं सकता। अब क्या करूं? मुझसे कहे बिना रहा नहीं जाता। तुम साधुओं के भेष को कलंक लगवाते हो, इसलिए मुझे कहना पड़ता है।

Nijanand App

तपसी बहु बिध देह दमो, सर्वा अंग दुख सहंत।
पर तोले न आवे एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत।। ५ ।।

तपस्वी बनकर तरह-तरह से दु:ख सहन करते हुए अपनी देह का दमन करो, परन्तु यह सभी कर्म श्री कृष्णजी के नाम की तुलना में नहीं आते।

मेहेराज कहे मुख ए धंन, जो वली रुदे रमंत।
चौदे भवन ते जीतियो, धंन धंन ए कुलवंत।। ६ ।।

श्री मेहराज ठाकुर कहते हैं कि ऐसा मुख धन्य है जो श्री कृष्णजी नाम ले। जिसके हृदय में श्री कृष्णजी बस जाएं उसका तो कहना ही क्या! समझ लो उसने चौदह लोकों को जीत लिया और उसका खानदान, कुल धन्य हो गया।

|| प्रकरण || १२७ || चौपाई || १९५१ ||

हांरे मारा साध कुलीना सांभलो

माया कोहेडो अंधेर केहेवाय, मांहें साध बंधाणां जाय।
तमने हजी लगे सोध न थाय, काल ताकी ऊभो माथे खाय।। १ ।।

हे मेरे कलियुग के साधुओ! सुनो। यह माया अज्ञानता के अंधेरे का कोहेड़ा (धुंध) कहलाती है। इसमें सब साधु भी बंधे चले जाते हैं। हे साधुओ! तुम्हें अभी तक सुध नहीं आई कि तुम्हारे सिर पर मौत खड़ी है।

साध वाणी तमें सांभली रे, कां न विचारो मन।
आणे अजवाले मानखे, तमें कां रे भूलो साधू जन।। २ ।।

हे साधुओ! तुमने बड़े-बड़े ज्ञानियों से चर्चा सुनी है। फिर भी तुम मन में विचार क्यों नहीं करते? इस मनुष्य तन को प्राप्त करके, हे साधुओ! तुम भूलते क्यों हो?

खिण माहें अर्थज लीजे रे, जे वचन कह्या वेद व्यासे।
दीपक वा मा खमे नहीं, हमणां धवक अंधारुं थासे।। ३ ।।

वेद व्यासजी ने जो वाणी कही है उसके अर्थ तुम एक पल में समझ सकते हो। दीपक जैसे हवा में बुझ जाता है ठीक उसी प्रकार तुरन्त अंधेरा हो जाएगा, अर्थात् मौत आ जाएगी।

कथता सांभलता ए गिनान रे, जम वारो आवसे रे।
अध वचे सर्व मुकावी, तरत बांधीने जासे रे।। ४ ।।

इस ज्ञान को कहने और सुनने में ही समय व्यतीत हो जाएगा और यमदूत आ जाएंगे जो तुम्हें कथा सुनने के बीच में से ही बांधकर ले जाएंगे।

सांचु कहे दुख लागसे, सांचु ते केहेने न सुहाय।
प्रगट कहिए मोंहों ऊपर, त्यारे दोहेला ते सहुने थाय।। ५ ।।

सच कहने से दु:ख लगता है और सच्ची बात किसी को अच्छी नहीं लगती। किसी के मुंह पर सच बोल दो तो सबको बड़ा बुरा लगता है।

अवलूं देखी हूं न सकूं, त्यारे सूं करूं में न रेहेवाय।
वेख धरी लजवो साधने, एम ते माटे केहेवाय।। ६ ।।

मैं किसी को गलत रास्ते पर चलते देख नहीं सकता। अब क्या करूं? मुझसे कहे बिना रहा नहीं जाता। तुम साधुओं के भेष को कलंक लगवाते हो, इसलिए मुझे कहना पड़ता है।

Nijanand App

दुष्ट थई अवगुण करे, ते जई जमपुरी रोय।
पण साध थई कुकरम करे, तेणूं ठाम न देखूं कोय।। ७ ।।

दुष्ट होकर कोई गलती करे तो यमराज के यहां रोते हुए जाना पड़ता है। जो साधु होकर भी खोटा कर्म करे तो उसका ठिकाना कहीं भी दिखाई नहीं देता।

क्रोध अहंमेव समें नहीं, अने वेख धरो छो साध।
लोभ लज्या नमे नहीं, माहें मोटी ते ए व्राध।। ८ ।।

क्रोध और अहंकार तुमको इतना ज्यादा है कि तुम्हारे अन्दर समाता नहीं है और भेष से साधु कहलाते हो। तुम्हारे अन्दर माया का लोभ और मान-मर्यादा इतनी है कि तुम्हारे अन्दर नम्र होने की भावना नहीं आती। तुम्हारे अन्दर यही बड़ी भारी बीमारी है।

उत्तम कहावो आपने, अने नाम धरावो साध।
साध मल्यो नव ओलखो, माहें अवगुण ए अगाध।। ९ ।।

अपने आपको साधु कहकर उत्तम कहलवाते हो और जब सच्चा साधु मिलता है तो उसे तुम पहचानते नहीं। यह बहुत बड़ा अवगुण है।

न करो संगत साधनी, मन न धरो विश्वास।
संजमपुरी न दुख सांभलो, पण तोहे न उपजे त्रास।। १० ।।

मन में विश्वास करके साधुओं की संगति नहीं करते। यमराज के दुःख सुनकर भी तुम्हें डर नहीं लगता।

छेतरवां हींडो जगदीस ने, ते छेतरया केम करो जाय।
पास बीजा ने मांडिए, जई आपोपूं बंधाय।। ११ ।।

तुम भगवान को ठगने के लिए चलते हो, परन्तु वह किसी तरह से ठगे नहीं जाते। दूसरों को फंसाने के लिए जो चलता है वह उस फंदे में स्वयं फंस जाता है।

अस्नान करी छापा तिलक देओ, कंठ आरोपो तलसी माल।
गिनानी कहावो साध मंडली, पण चालो छो केही चाल।। १२ ।।

स्नान करके माथे पर तिलक से चित्रकारी बनाते हो। गले में तुलसी की माला पहनते हो। साधुओं की मंडली में ज्ञानी कहलाते हो, पर तुम्हारी चाल कौन सी है? यह भी कभी सोचा है।

वेख उत्तम तमें धरो, पण माहेलो ते मैल नव धुओ।
पंथ करो छो केही भोमनों, रिदे आंख उघाडी जुओ।। १३ ।।

तुम्हारा भेष बड़ा उत्तम है पर अन्दर की कालिमा नहीं धुली। तुम हृदय की आंख खोलकर देखो कि तुम किस रास्ते पर जा रहे हो?

मन मैला धुओ नहीं, अने उजला करो आकार।
आकार तिहां चाले नहीं, चाले निरमल निराकार।। १४ ।।

तुम्हारा मन साफ नहीं है और शरीर को साफ रखते हो। तन तो वहां जाता नहीं। वहां पर निर्मल निराकार जीव ही जाता है।

Nijanand App

वैकुंठ ऊंचूं सिखर पर, ऊवट चढतां उचांण।
मोह जल लेहेरां मारे सामियो, इहां वाए ते वा उधांण।। १५ ।।

बैकुण्ठ तो ऊंची चोटी पर है। रास्ता भी ऊबड़-खाबड़ है जिस पर सरलता से चढ़ा नहीं जाता। भवसागर की लहरें सामने से मार करती हैं और यहां माया की हवा उलटी बहती है।

चढवूं ऊंचूं चीरक थई, वाटे दुख दिए घणां दुष्ट।
परवाह उतरता सोहेलूं, पण दोहेलूं ते चढतां पुष्ट।। १६ ।।

इस रास्ते पर तो त्यागी बनकर चढ़ना है। दुष्ट लोग रास्ते में ज्यादा दुःखी करते हैं। पानी के बहाव की ओर जाना सरल है, परन्तु बहाव के उलटा चलना बड़ा कठिन है।

सोहेलूं देखी कां उतरो रे, आगल दोख अनेक।
चढतां घणुंए दोहेलूं, पण वैकुण्ठ सुख वसेक।। १७ ।।

नीचे बहाव (जाने) वाला रास्ता क्यों अपनाते हो? आगे चलकर इसमें बड़ी पीड़ा है। ऊपर चढ़ना बड़ा कठिन है। पर अन्त में बैकुण्ठ जाने पर बहुत सुख हैं।

सपन तणां सुख कारणें, केम खोइए अखण्ड सुख।
सुख सुपने देखी करी, केम लीजे साख्यात दुख।। १८ ।।

सपने के सुख के वास्ते बैकुण्ठ के सुखों को क्यों खोते हो? सपने के झूठे सुख को देखकर साक्षात् दुःख को क्यों बुलाते हो?

चीरक थई तमें न सको रे, मायामां थया मोटा।
वाणी विचारी नव जुओ, पछे सास्त्र करो कां खोटा।। १९ ।।

माया में महंत, आचार्य बनकर त्यागी नहीं बन सकते? इन वचनों का तुम विचार नहीं करते हो और पीछे शास्त्रों को झूठा बतलाते हो।

दुखडा खमी तमे न सको, माया सुखे रह्या माणो रे।
चढाए नहीं एणी उवटे, पाछां चढताने कां ताणो रे।। २० ।।

तुम थोड़ा-सा भी कष्ट सहन नहीं कर सकते। माया के झूठे सुखों को ही सुख मान बैठे हो। तुमसे ऊबड़-खाबड़ (कर्मकाण्ड) के रास्ते पर चढ़ा नहीं जाएगा। जो चढ़ रहे हैं उन्हें पीछे क्यों खींचते हो?

ताण्युं तमारुं सुं करे, जेने लाग्यो छे चोलनो रंग।
साध कहावी असाध थाओ छो, करो छो भजनमां भंग।। २१ ।।

तुम्हारी खींचातानी उसका क्या करेगी जिसको भजन का पक्का रंग चढ़ गया है। तुम अपने को साधु कहलवाते हो और दुष्टों जैसे कर्म करते हो तथा भजन करने वालों का पीछे लड़-झगड़ कर भजन भंग करते हो।

पगला पोताना जुओ नहीं, अने बीजाने देओ छो दोष।
सास्त्र अर्थ समझ्या नथी, तां जातो नथी रिदे रोष।। २२ ।।

तुम अपना रास्ता देखते नहीं, दूसरों को दोष देते हो। शास्त्रों के अर्थ समझे नहीं, इसलिए तुम्हारे हृदय से क्रोध नहीं जाता है।

Nijanand App

सास्त्रें मारग बे कह्या, त्रीजो न कह्यो कोय।
एक वाट वैकुण्ठ तणी, बीजी स्वर्ग जमपुरी जोय।। २३ ।।

शास्त्रों ने दो ही रास्ते बताए हैं। तीसरा रास्ता नहीं बताया। एक बैकुण्ठ को जाता है, दूसरा स्वर्ग और यमपुरी को।

वली एक वाट कही करी, ते ततखिण कीधी लोप।
तिहांना हता ते चालया, पण रहा ते मायामां गोप।। २४ ।।

फिर एक और रास्ता कहकर उसे तुरन्त ही छिपा दिया। उस रास्ते पर वही चले जो वहां के रहने वाले थे, अर्थात् परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां जो प्रेम लक्षणा मार्ग पर चलीं, परन्तु वह ब्रह्मसृष्टियां माया में छिपी हैं।

तमे रे जुओ पोते आप संभारी, केही रे लीधी छे वाट।
केही रे भोमना बंध बांधो छो, उतरसो कीहे रे घाट।। २५ ।।

तुम अपने आपको सावचेत (सावधान) करके देखो कि तुमने कौन-सा रास्ता अपनाया है और कहां जाने का सामान बांध रहे हो और किस घाट पर पहुंचोगे?

गुण पचवीसे बांधया रे, बांधया ते नवे अंग।
इंद्री पखे गुणे बांधया, कोई दृढ़ करी माया संग।। २६ ।।

तुमने पच्चीस गुणों (दस इन्द्रियां, पांच प्राण, पांच तत्व, चार अन्तःकरण और एक जीव) से अपने नौ द्वारों, नौ अंगों और गुण, पक्ष और इन्द्रियों को माया से बांध रखा है।

बंध प्रभुसों न बांधया रे, त्यारे केणी पेरे आवे तेह।
रदे विचारी जोइए जो, बांध्यो छे केसुं नेह।। २७ ।।

तुमने प्रभु से लगाव नहीं बांधा तो किस तरह से तुम्हारे पास आएं। तुम हृदय से विचार करके देखो तो पता लगे कि तुमने किससे प्यार किया, प्रभु से या माया से?

जेरे गामनी वाटज लीजे, आवे तेहज गाम।
जाणी ने जमपुरी जाओ छो, त्यारे न आवे अखंड विश्राम।। २८ ।।

जिस गांव का रास्ता पकड़ोगे वही गांव आएगा। तुम जान-बूझकर यमपुरी के रास्ते जाते हो तो अखण्ड आराम नहीं मिलेगा।

सूधी वाट जाणी संजमपुरी, कां सहुए उजाणां जाओ।
वेद पुराण तमें सांभली, एम रुदे फूटा कां थाओ।। २९ ।।

यमराज के यहां जाने का रास्ता सीधा है। उसे सरल समझकर क्यों भागे जा रहे हो? वेद पुराणों को तुमने सुना है। फिर हृदय के अन्धे क्यों बनते हो?

देखा देखी पंथ करो छो, रदे नथी विचार।
सास्त्र वाणी जो सत करो, तो भूलो केम आवार।। ३० ।।

तुम बिना विचारे देखा देखी चल रहे हो। शास्त्रों की वाणी सच समझते हो। ऐसे सुन्दर अवसर (मनुष्य तन) को पाकर क्यों भूलते हो?

Nijanand App

ढोलतां ढोलाने सोहेलूं, पण आगल ऊंडी खाड।
लोही मांस सर्वे सूकसे, पछे घरट दलासे हाड।। ३१ ।।

नीचे गिरना बड़ा सरल है, परन्तु आगे बड़ा भारी गहरा खड्ड है। वहां तुम्हारा सब लोहू, मांस सूख जाएगा। फिर तुम्हारी हड्डियों को चक्की में पीसा जाएगा।

केस त्वचा जासे चरमाई, नसों त्रूटसे निरवाण।
विध विधना दुख देखसो, पण तोहे नहीं छोडे प्राण।। ३२ ।।

तुम्हारे बाल, चमड़ी फट जाएंगे। नसें टूटकर बिखर जाएंगी। तरह-तरह के दुःख देखोगे, परन्तु फिर भी तुम्हारे प्राण नहीं छूटेंगे।

जमपुरी ना दुख दारुण, तेसूं नथी तमें माण्या।
पुराण ते माटे कहे पुकारी, केणे जाय रखे अजाण्या।। ३३ ।।

यमपुरी के दुःख बहुत दुःखदायी हैं, इसको तुम क्यों नहीं मानते। पुराणों ने इसलिए बार-बार पुकार कर कहा ताकि कोई यह न कहे कि मुझे पता नहीं था।

कुंड अठावीस कह्या सुकदेवे, एक बीजा थी चढता जाय।
त्यारे पडयो परीछित दुख सुणी, स्वामी बीजा तो न संभलाय।। ३४ ।।

शुकदेवजी ने अट्ठाईस नरक कुण्डों का वर्णन किया जिनमें एक से दूसरे में दुःख बढ़ता गया। तब राजा परीक्षित दुःखों को सुनकर मूर्छित हो गए और बोले, हे स्वामी! (व्यासजी) आगे नहीं सुना जाता।

छप्पन रह्या विन सांभल्या, तेतां सुणी न सक्यो राय।
कलकली कंपमान थया, ते तां कह्या न सुण्या जाय।। ३५ ।।

और इस तरह से राजा परीक्षित छप्पन नरक के कुण्डों का ज्ञान नहीं सुन सका। वह इस तरह कांपकर दुःखी होकर डर गया और इस कारण से छप्पन नरक कुण्डों का वर्णन न किया गया और न सुना गया।

दैव ते दोष लिए नहीं, ते माटे कीधा पुराण।
देखी पडो कां खाडमां, आ तां सह्नने करे छे जाण।। ३६ ।।

विधाता अपने ऊपर दोष नहीं लेते, इसीलिए शास्त्रों में लिखवा दिया कि तुम देखकर के भी क्यों खाई में गिरते हो? विधाता तो सबको जानकारी दे रहे हैं।

स्वादे लाग्या सुख भोगवो, पण पछे थासे पछताप।
व्यास वचन जोता नथी, पछे घससो घणुं बंने हाथ।। ३७ ।।

तुम इन्द्रियों के सुख के स्वाद में लगे हो, परन्तु पीछे बड़ा पछतावा होगा। व्यास के वचनों को देखते नहीं। पीछे पश्चाताप में दोनों हाथ मलते रह जाओगे।

भट जी चोखूं तमने केम कहे, जेणे माडयुं ए ऊपर हाट।
सूधी देखाडे संजमपुरी, तमे अपगरो एणी वाट।। ३८ ।।

भागवत कथा वाचक भट्टजी सच्ची बात तुम्हें क्यों बताएंगे? जिन्होंने बाजार में धर्म को धन्धा बना रखा है। वह तो सीधा यमपुरी का रास्ता बताते हैं। तुम उसी रास्ते पर चल रहे हो।

Nijanand App

बुध तमारी किहां गई, पछे आवसे ते कीहे काम।
वचन जुओ सुकदेवना, तेमां प्रगट पराधाण।। ३९ ।।

तुम्हारी अक्ल कहां गई है? पीछे किस काम आएगी? तुम शुकदेवजी के वचनों को देखो जिसमें परम तत्व का वर्णन है।

अर्थ लई सास्त्र तणो, तमे ओलखजो आ ठाम।
बीहो छो छाया थकी, जुओ करे छे कोण संग्राम।। ४० ।।

शास्त्रों के गूढ़ अर्थ को लेकर तुम इस माया के संसार को पहचानो। तुम माया से डरते हो। अब देखो, कौन किससे लड़ाई कर रहा है? तुम माया से या माया तुमसे?

कोण तमसूं जुध करे, बीजो ऊभो सामो कीहो चोर।
आप बंधाणां आप सूं, माहेली गमा तिमर घोर।। ४१ ।।

तुमसे कौन युद्ध कर रहा है? तुम्हारे सामने कौन दूसरा चोर खड़ा है? तुम खुद ही अपने गुण, अंग इन्द्रियों में बंध गए हो और अपने अन्दर अज्ञान का घोर अन्धकार भर रखे हो।

संसार सूतो घारण करी, ते तां केणी पेरे जागे रे।
पण साध कहावो निद्रा करो, मूने दुख ते तेनुं लागे रे।। ४२ ।।

संसार तो माया की नींद में सोया पड़ा है। भला वह किस तरह से जागेगा? मुझे दुःख इस बात का है कि तुम साधु कहलाकर भी माया की नींद में बेसुध पड़े हो।

निद्रा परी नाखी देओ, उठीने ऊभा थाओ रे।
बीजी ते वात मूकी करी, तमे ग्रहो प्रभूना पाओ रे।। ४३ ।।

तुम माया की नींद को छोड़कर उठकर खड़े हो जाओ और दूसरे सभी नियम कर्म बन्धन, साधन, जप, तप, आदि छोड़कर प्रभु के चरणों में चित्त लगा लो।

पतिव्रता पणे सेविए, न थाय वेस्या जेम।
एक मेलीने अनेक कीजे, तेणी थाय धणीवट केम।। ४४ ।।

धनी की सेवा पतिव्रता बनकर करनी चाहिए, वेश्या की तरह नहीं। एक को छोड़कर अनेक की सेवा करने से तुम्हारे ऊपर धनी धनीपना (अपनत्व, कृपा) कैसे करेंगे? अर्थात् तुम्हें एक ही इष्ट के चरण पकड़ने चाहिए।

गेहेन घारण तमे परहरो, टालो ते तिमर घोर।
उठीने अजवाले जुओ, त्यारे देखसो माहेला चोर।। ४५ ।।

इस माया की नशीली नींद को छोड़ दो, मन के अन्धकार को मिटा दो और उठकर ज्ञान के प्रकाश से अपने अन्दर देखो तो तुम्हें अन्दर के चोरों का पता लग जाएगा।

ज्यारे अर्थ लेसो वाणी तणो, त्यारे अर्थमा छे अजवास।
अजवाले जीव जागसे, त्यारे थासे टली चोर दास।। ४६ ।।

जब तुम इन वचनों का अर्थ समझोगे तो उसमें छिपे ज्ञान को पा जाओगे। उस ज्ञान से जब जीव जाग जाएगा तब तुम्हें लूटने वाले चोर (गुण, अंग, इन्द्रियां) तुम्हारे दास बन जाएंगे।

Nijanand App

वैरी टली वोलावा थासे, जो ए करसो जतन।
एणी पेरे ए पामसो, अमोलक ए रतन।।४७।।

तुम्हारे अन्दर के दुश्मन दुश्मनी छोड़कर मित्रता करेंगे। यदि तुम ऐसा उपाय करते हो तो इस तरह से तुम पारब्रह्म (धाम-धनी) को प्राप्त कर लोगे।

जनम मानखो खंड भरथनो, अने सृष्ट कुली सिरदार।
ए वृथा कां निगमो, तमे पामी उत्तम आकार।।४८।।

तुम मनुष्य तन, भरत खंड, कलियुग और ब्रह्मसृष्टियों के सिरदार श्री प्राणनाथजी को अपने इस उत्तम आकार से प्राप्त करके व्यर्थ माया के लिए क्यों गंवा रहे हो?

चार पदारथ पामिया रे, ए थी लीजिए धन अखंड।
अवसर आ केम भूलिए, जे थी धणी थाय ब्रह्मांड।।४९।।

हे साधुओ! तुमको यह अमूल्य चार पदार्थ मिले हैं। इससे अखण्ड घर परमधाम को प्राप्त कर लो। हाथ आए अवसर को क्यों भूलते हो? इससे ब्रह्माण्ड के धनी (मालिक) बनने जैसा लाभ मिलने वाला है।

चौद भवन जेने इछे, कोई विरला ने प्राप्त होय।
ए पांमी केम खोइए, तूं तां रतन अमोलक जोय।।५०।।

चौदह भवनों के जीव जिस मनुष्य तन की इच्छा करते हैं, वह किसी-किसी को प्राप्त होता है। इस अमूल्य रत्न (मनुष्य तन) की प्राप्ति करके इसे क्यों गंवा रहे हो?

रतन ते आने केम कहिए, पण आ भोम उपमा एह रे।
कई कोट रतन जो मेलिए, आणे तोले न आवे तेह रे।।५१।।

इस मनुष्य तन को रत्न की भी उपमा कैसे दें? परन्तु इस संसार को रत्न न कहें तो क्या कहें? करोड़ों रत्न भी अगर मिल जाएं तो मनुष्य तन की तुलना में नहीं आ सकते।

हवे सुधर सो संगत थकी, जो मलसे एहवो साध।
सास्त्र अर्थ समझावसे, त्यारे टलसे सघली व्राध।।५२।।

यह मनुष्य तन साधु की संगत से ही सुधर सकता है। यदि तुम्हें खोज करने से वह सतगुरु मिल जाए तो वह शास्त्रों के अर्थ खोलकर समझाएंगे और तब सारे रोग व बाधाओं से छुटकारा मिल जाएगा।

संगत करसो साधनी, ए रुदे करसे प्रकास।
त्यारे ते सर्वे सूझसे, थासे अंधकारनो नास।।५३।।

जो ऐसे सतगुरु की संगति करोगे तो हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाएगा और तब सब कुछ समझ में आने लगेगा तथा अज्ञान के अन्धकार का नाश हो जाएगा।

ज्यारे अंध अगनान उडी गयुं, त्यारे प्रगट थया पारब्रह्म।
रंग लाग्यो ए रस तनो, ते छूटे वलतो केम।।५४।।

जब अज्ञान का अन्धकार मिट जाएगा तो पारब्रह्म मिल जाएंगे। उनके आनन्द का रस मिलने लगेगा और वह फिर छुड़ाने पर भी नहीं छूटेगा और अखण्ड हो जाएगा।

वस्त खरीनो जे रंग लाग्यो, ते थाय नहीं केमे भंग।
भलयो जे भगवानसों, तेनो दीसे एकज रंग।।५५।।

जब पारब्रह्म का अखण्ड रंग चढ़ जाता है तो वह रंग (आनन्द) कभी छूटता नहीं। जब भगवान मिल जाते हैं तो फिर उन्हें एक भगवान ही नजर आते हैं।

Nijanand App

सुख अखंड एणी पेरे, तमें लेजो संगत साध।
अधखिण विलम न कीजिए, आ आकार खोटो साज।। ५६ ।।

सतगुरु की संगति से तुम इस प्रकार से अखण्ड सुख लो। तुम्हारा तन मिट जाने वाला है, इसलिए एक क्षण की भी देरी न करो।

खोटा थी खरो लीजिए, अवसर एवो आज।
आ वेला अमृत घडी, प्रबोध कहे मेहेराज।। ५७ ।।

श्री मेहराजजी समझाकर यथार्थ ज्ञान कहते हैं कि इस झूठे मनुष्य तन से पारब्रह्म को प्राप्त करने का ऐसा सुन्दर अवसर आज है। यही अमृत बेला है।

साध जो जो तमें सांभली, वचन म करजो लोप।
प्रगट कहयूं आ पाधरुं, बीजी गुरगम थासे गोप।। ५८ ।।

हे साधुजन! तुम ध्यानपूर्वक सुनकर भली प्रकार से इन वचनों पर विचार करो। इन सत वचनों को छिपाना नहीं (छोड़ना नहीं)। आपको मैंने स्पष्ट कहा है कि सतगुरु कृपा के बिना यह सब लुप्त हो जाएगा, अर्थात् सतगुरु ही इनके भेद बता सकते हैं।

बीजा वचन भारी केम कहिए, ते तां अर्थी विना न अपाय।
केसरी दूध कनक ना रे, पात्र विना न समाय।। ५९ ।।
मारा साध कुली ना सांभलो

इन शास्त्रों के बिना और भी भारी वचन हैं जो ग्राहक के बिना नहीं दिए जा सकते, क्योंकि शेरनी का दूध सोने के पात्र बिना नहीं टिकता, अर्थात् परमधाम का ज्ञान ब्रह्मसृष्टि के बिना कोई नहीं ले सकता।

॥ प्रकरण ॥ १२८ ॥ चौपाई ॥ २०१० ॥

हांरे मारा साध कुली ना जो जो।।। टेक ।।

कोहेडा अंधेर मोह माहें, मलवो छे साधो संत।
जेने रदे मा वस्या वालो जी, मारा जनम संघाती ते मित्र।। १ ।।

हे मेरे कलियुग के साधुओ! देखो, इस माया के अन्धकार के कोहेड़े (कुहरा) में मुझे साधु संतों से मिलना है। जिनके हृदय में वालाजी बसे हैं, वह हमारे मित्र हैं।

आ कोहेडा मां साध सुं करे, जेणे बांध्यो चरण सुं चित।
रात दिवस रमे रिदे मां, तेने सुं करे प्रपंच।। २ ।।

इस अज्ञान के अन्धकार में साधु क्या करें? जिनका चित्त वालाजी के चरणों से बंध गया है और जिनके हृदय में श्री वालाजी रात-दिन रहते हैं उनका यह प्रपंच माया क्या बिगाड़ेगी?

गोप रेहेसे साध एणे सगें, ते प्रगट केणी पेरे थाय।
वेख वधारया बहु विध तणां, ते खोल्या केम करी जाय।। ३ ।।

कलियुग में ऐसे साधु छिपे रहेंगे और वह किसी तरह जाहिर नहीं होंगे। बहुत सारे इस संसार में साधुओं के भेष में घूमते हैं। उनमें सच्चे साधु को कैसे खोजा जाए?

Nijanand App

सुख अखंड एणी पेरे, तमें लेजो संगत साध।
अधखिण विलम न कीजिए, आ आकार खोटो साज।। ५६ ।।

सतगुरु की संगति से तुम इस प्रकार से अखण्ड सुख लो। तुम्हारा तन मिट जाने वाला है, इसलिए एक क्षण की भी देरी न करो।

खोटा थी खरो लीजिए, अवसर एवो आज।
आ वेला अमृत घडी, प्रबोध कहे मेहेराज।। ५७ ।।

श्री मेहराजजी समझाकर यथार्थ ज्ञान कहते हैं कि इस झूठे मनुष्य तन से पारब्रह्म को प्राप्त करने का ऐसा सुन्दर अवसर आज है। यही अमृत बेला है।

साध जो जो तमें सांभली, वचन म करजो लोप।
प्रगट कहयूं आ पाधरुं, बीजी गुरगम थासे गोप।। ५८ ।।

हे साधुजन! तुम ध्यानपूर्वक सुनकर भली प्रकार से इन वचनों पर विचार करो। इन सत वचनों को छिपाना नहीं (छोड़ना नहीं)। आपको मैंने स्पष्ट कहा है कि सतगुरु कृपा के बिना यह सब लुप्त हो जाएगा, अर्थात् सतगुरु ही इनके भेद बता सकते हैं।

बीजा वचन भारी केम कहिए, ते तां अर्थी विना न अपाय।
केसरी दूध कनक ना रे, पात्र विना न समाय।। ५९ ।।

मारा साध कुली ना सांभलो

इन शास्त्रों के बिना और भी भारी वचन हैं जो ग्राहक के बिना नहीं दिए जा सकते, क्योंकि शेरनी का दूध सोने के पात्र बिना नहीं टिकता, अर्थात् परमधाम का ज्ञान ब्रह्मसृष्टि के बिना कोई नहीं ले सकता।

|| प्रकरण || १२८ || चौपाई || २०१० ||

हांरे मारा साध कुली ना जो जो।।। टेक ।।

कोहेडा अंधेर मोह माहें, मलवो छे साधो संत।
जेने रदे मा वस्या वालो जी, मारा जनम संघाती ते मित्र।। १ ।।

हे मेरे कलियुग के साधुओ! देखो, इस माया के अन्धकार के कोहेड़े (कुहरा) में मुझे साधु संतों से मिलना है। जिनके हृदय में वालाजी बसे हैं, वह हमारे मित्र हैं।

आ कोहेडा मां साध सुं करे, जेणे बांध्यो चरण सुं चित।
रात दिवस रमे रिदे मां, तेने सुं करे प्रपंच।। २ ।।

इस अज्ञान के अन्धकार में साधु क्या करें? जिनका चित्त वालाजी के चरणों से बंध गया है और जिनके हृदय में श्री वालाजी रात-दिन रहते हैं उनका यह प्रपंच माया क्या बिगाड़ेगी?

गोप रेहेसे साध एणे सगें, ते प्रगट केणी पेरे थाय।
वेख वधारया बहु विध तणां, ते खोल्या केम करी जाय।। ३ ।।

कलियुग में ऐसे साधु छिपे रहेंगे और वह किसी तरह जाहिर नहीं होंगे। बहुत सारे इस संसार में साधुओं के भेष में घूमते हैं। उनमें सच्चे साधु को कैसे खोजा जाए?

Nijanand App

सरखा सरखी सर्वे पृथ्वी, माहें विध विध ना वहे नारायण।
नहीं आकार फरे साध तणो, प्रगट नहीं एधाण।।४।।

इस संसार में सब देखा-देखी भगवान नारायण के भक्त साधु बने घूमते हैं। साधु का काम घूमना नहीं है। इन निशानों से सच्चे साधु जाहिर नहीं होते।

आ भोम अंधेर माहें आमला, जीव वेध्यो सघली व्राध।
जेने ते जई ने पूछिए, ते मुख थी कहे अमें साध।।५।।

इस माया के संसार में चारों तरफ अन्धकार हैं जहां पर जीव सब प्रकार के रोगों से बंधा है। जिस किसी से भी जाकर पूछो तो सभी अपने मुख से अपने को साधु बताते हैं।

खोजो खरा थई ते माटे, आ रचियो मायानो फंद।
दुनी मुझाणी फेरा दिए, माहें पडया रदे ना अंध।।६।।

इस माया के जाल में सच्चे पारखी बनकर सच्चे साधु, अर्थात् सतगुरु को खोजो। यह दुनियां के जीव चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद घबरा गए हैं और हृदय की आंखों से इतने अन्धे हो गए हैं कि सच्चे सतगुरु की पहचान नहीं कर पाते।

आप न ओलखे दुनियां पोते, सूझे नहीं भोम गत।
ए फेर भोम अंधेर तणो, तेणे रदे न आवे मत।।७।।

अपने आपको दुनियां नहीं पहचान सकती और संसार से पार जाने का रास्ता भी नहीं सूझता, क्योंकि यह संसार अन्धेर नगरी है, इसलिए किसी में शुद्ध बुद्धि जागृत नहीं होती।

देखा देखी पंथ करे, अने चालता सहु कोई जाय।
जाणी साधन करे संजमपुरी ना, मनमां चिंता न थाय।।८।।

एक दूसरे के देखा-देखी धर्म धारण करते हैं और कर्म पर चलते हैं। यह जानते हैं कि हमारे साधन यमपुरी के हैं, परन्तु फिर भी किसी को फिक्र नहीं होती।

सूने रिदे दीसे सहु कोई, सुध बुध नहीं विचार।
देखी कही रे दोख जमदूत ना, ए कोहेडा तणां अंधार।।९।।

यहां सबके हृदय सूने दिखते हैं। इनको शुद्ध बुद्धि और विचार नहीं रहते। यमदूतों के कष्ट देने वाले अवगुण को देखकर और सुनकर भी मन में चिन्ता नहीं होती। इस तरह का यह अन्धकार का कोहेड़ा (धुंध)है।

कोई कोने पूछे नहीं, छे कोई बीजो सेर।
साध पुकारे पाधरा, पण आ अजाणो अंधेर।।१०।।

यहां कोई किसी को पूछता भी तो नहीं है कि यहां से निकलने का कोई और रास्ता है? साधुजनों ने तो रास्ता सीधा बताया है। पर अनजान लोग अन्धकार की राहों में भटकते हैं।

कोट उपाय करे जो कोई, तो सूझे नहीं सनंध।
कोहेडा तणी आंकडी न लाधे, तो छूटे नहीं बंध।।११।।

इस माया के अन्धकार से निकलने के करोड़ों उपाय करने पर भी निकलने का रास्ता नहीं मिलता। इस अन्धकार के कोहेड़े (धुंध) का भेद जब तक नहीं जानते, तब तक माया के बन्धन नहीं छूटते।

Nijanand App

एणे समें आप झलावी, अने साध थया माहें सन्त।
संगत कीजे तेह तणी, जेणे चोकस कीधुं छे चित।। १२ ।।

ऐसे समय में अपने आपको वश में करके यदि तुम साधु बन गए, तो ऐसे सन्तों की संगति करो जिनके चित्त विवेक से एकाग्र हो गए हैं।

सत जोऊं सन्तो तणो, अने साध तणी सिधाई।
बाहेर चेन करे कई साधना, माहें ते भांड भवाई।। १३ ।।

मुझे सन्तों के सत को और साधुओं के सीधेपन को देखना है। बाहर से तो साधुओं जैसे कई नाटक करते हैं और मन में स्थिरता नहीं रखते। भांडों की तरह भटकते हैं।

चोकस चित केणी पेरे लाधे, बाहेर देखाडे अनंत।
ते माटे आ कोहेडो अंधेर, मारे जाई ने संगत संत।। १४ ।।

बाहर से जो इतना आडम्बर दिखाते हैं तो जिनके चित्त स्थिर हो गए हैं, उन्हें कैसे पाया जाए? इस वास्ते इस माया के अन्धकार के कोहेड़े (धुंध) ने सच्चे संत को ढांप दिया है।

साध सनंध केम जाणिए, जेणे जीती छे जोगवाई।
प्रगट चेहेन करे नहीं पाधरा, ते माहें रहे समाई।। १५ ।।

साधुओं के रूप देखकर कैसे जाना जाय कि इसने अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को जीत लिया है। जिन्होंने अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को जीत लिया है वह बाहरी दिखावा नहीं करते। वह अपने अन्दर ही मग्न रहते हैं।

मुख थी बोलावी ज्यारे जोइए, तो गलित चित विश्वास।
फेर नहीं अंधेर तणो, तेना रदे माहें प्रकास।। १६ ।।

ऐसे साधुजन जब मुख से कोई वचन बोलते हैं तो उनके वचनों से पता लग जाता है कि उनके चित्त में दृढ़ता और विश्वास है। उनके हृदय में ज्ञान है। उनके मुख पर आडम्बर दिखाई नहीं देता।

साध तणी गत दीसे निरमल, रात दिवस ए रंग।
मोहजल लेहेरां माहें मारे पछाडे, पण केमे न थाय भंग।। १७ ।।

साधु की गति (चाल) निर्मल होती है। रात-दिन एक ही रंग में रँगे होते हैं। भवसागर की लहरें उनको भी मारती पछाड़ती हैं पर वह किसी तरह से पीछे नहीं हटते और उनकी शान्ति भंग नहीं होती।

साध तणी सनंध प्रगट, लेहेरा लागे आकार।
भेदे नहीं ते भीतर रंग ने, ए साध तणी प्रकार।। १८ ।।

साधु की हकीकत जाहिरी में दिखाई देती है। उन्हें संसार (माया) के थपेड़े शरीर पर लगते हैं। उनके अन्दर उसका कोई असर नहीं होता। यही सच्चे साधु की पहचान है।

आ तिमर घोर अंधेर माहें, वेख धरे बहु जन।
एणे सहु ने सत भास्यो, ए साध ने थयो सुपन।। १९ ।।

इस अज्ञानता के काले अंधेरे में बहुतेरे साधु भेष धारण किए हैं, जिसको संसार वाले सच्चा मानते हैं (धन दौलत, आदि)। सच्चे साधु उसको सपना मानते हैं।

Nijanand App

तो वैकुंठ नथी कांई वेगलूं, जो दृढाविए मन।
सत चरण भास्यो रदे माहें, त्यारे असत थयुं सुपन।। २० ।।

इस तरह के साधुओं के वचनों से यदि मन को दृढ़ कर लिया जाए तो बैकुण्ठ हमसे दूर नहीं है। जब भगवान के चरण हृदय में आ जाएं तो यह संसार स्वप्न जैसा हो जाएगा।

अखंड सुख कोई रखे मूकतां, जेणे दृढ़ कीधुं छे घर।
अधखिण ना सुपनातर माटे, रखे निगमता ए अवसर।। २१ ।।

जिनको अपने घर की पहचान हो जाती है वह अपने अखण्ड घर को नहीं छोड़ते। स्वप्न के आधे क्षण के सुख के वास्ते वह समय को हाथ से गंवाते नहीं हैं।

सास्त्रे संसार कह्यूं सुपना, तो ते करी बेठा सहु सत।
साध वाणी रे जोता नथी, तो लई जाय छे असत।। २२ ।।

शास्त्रों के वचनों में स्पष्ट कहा है कि संसार सपना है जिसे सब लोग सत मान बैठे हैं और संतों की वाणी को देखते नहीं और इसीलिए झूठे संसार की तरफ खिंचे जाते हैं!

एणे कोहेडे ते अवला फेरा, सहु फरे छे एणी भांत।
सुध बुध सर्वे विसरी, ए रच्यो माया दृष्टांत।। २३ ।।

इस जगत का यह कोहेडा (धुंध) ऐसा रचा है कि सभी इसके उलटे चक्कर में घूम रहे हैं और अपनी सुध-बुध खोकर के इसी में उलझे हैं। माया ने ऐसा नाटक रचा है।

आ रे वेला एवी नहीं आवे, साध ना सके पुकारी।
वचन ते अवला विचारसे, केहेसे निंदया करे छे अमारी।। २४ ।।

ऐसा अवसर बार-बार नहीं आएगा और ऐसे साधुजन भी बार-बार नहीं कहेंगे और अज्ञानी जन उनके वचनों को उल्टा समझकर कहेंगे कि हमारी निन्दा करते हैं।

साध हसे ते विचारसे, सवला रुदे वचन।
ए वाणी प्रकासूं ते माटे, म्हारे मलवा ते साधू जन।। २५ ।।

यदि कोई सच्चा साधु होगा तो इन वचनों का सीधा अर्थ लेकर विचार करेगा। यह वाणी मैं इसलिए कहता हूं कि मुझे सच्चे साधुओं से मिलना है।

प्रगट प्रकास न कीजे, आपण देखी बाज।
गोप रही न सकुं ते माटे, सनमंधी मलवा साध।। २६ ।।

बेहद के साथी के बिना बेहद का ज्ञान नहीं देना चाहिए। मुझे अपने सम्बन्धी साधुजनों को ख़ोजकर मिलना है, इसलिए मैं चुप नहीं बैठ सकता।

जेणे दरसने नेत्र ठरे, अने वचन कहे ठरे अंग।
अनेक विघन जो उपजे, पण मूकिए नहीं साध संग।। २७ ।।

जिनके दर्शन करने से नेत्र तृप्त हो जाएं और जिनके मीठे वचनों से अंग-अंग से माया की अग्नि मिटकर शान्ति प्राप्त हो, ऐसे साधु-संतों के चरण लाखों संकट आने पर भी नहीं छोड़ने चाहिए।

साध संतो मली सांभलो, वली विलम न करो लगार।
अधखिण मेलो संत तणो, जेथी जीतिए अखंड अपार।। २८ ।।

हे साधु-संतो! सब मिलकर सुनो और उस पर विचार करो। अब थोड़ी भी देर मत करो। सच्चे संत के आधे क्षण के सत्संग से अखण्ड सुख की प्राप्ति होती है।

Nijanand App

अखंड पार सुख अति घणूं, जेने सब्द न लागे कोय।
ए जाणी सुख केम मूकिए, ए साध संगते सुख होय।। २९ ।।

अखण्ड के सुख, जो बेहद के पार अपार हैं, वह जबान से कहे नहीं जा सकते। ऐसे सुखों को समझकर जिस संत के चरणों से ऐसे सुखों की प्राप्ति होती हैं, उसे क्यों छोड़ा जाए?

ए सुख केम प्रकासूं प्रगट, वेहद सुख केहेवाय।
ए ब्रह्मांड सर्वे रामत, उपनी छे एनी इछाय।। ३० ।।

अखण्ड घर के इन सुखों को कैसे जाहिर कर दें। यह बेहद के अखण्ड सुख हैं। यह ब्रह्माण्ड सारा माया का खेल है जो ब्रह्मसृष्टियों की चाहना से बना है।

ए रे वल्लभसूं वालपणे, कर दिए साध संग।
ए रे संगत केम मूकिए, मारा मूल तणो सनमंध।। ३१ ।।

हमारे धनी ने बड़े प्यार से हमें ऐसे सच्चे संत सतगुरु से मिला दिया है। अब इनसे हमारा मूल परमधाम का सम्बन्ध है, इन्हें हम कैसे छोड़ें?

सारनों सार ते संगत, जो ते साध मेलो थाय।
वेहद तणी निध लईने आपे, मूकिए ते केम पाय।। ३२ ।।

सार का सार सत्संग है। यदि सच्चे गुरु (सतगुरु) मिल जाएं तो वह हमें अखण्ड घर की न्यामत सौंप देंगे, इसलिए उनके चरणों को कैसे छोड़ा जाए।

सनमंधी ज्यारे साचो मल्यो, त्यारे जीवने थयो करार।
मेहेराज कहे धंन धंन ए घडी, धंन धंन कोहेडो अंधार।। ३२ ।।

अपने परमधाम के सच्चे साथी जब मिल गए तो जीव को चैन मिला। मेहराज ठाकुर कहते हैं कि इस मिलन के कारण ही वह मिलने की घड़ी धन्य-धन्य है और यह संसार धन्य-धन्य है।

।। प्रकरण ।। १२९ ।। चौपाई ।। २०४३ ।।

राग धना श्री

हे बैल तू अपना जुआ (ज्वारी) मत छोड़

वाटडी विस्मी गाडी भार भरी, धोरीडा मा मूके तारी धूसरी।।टेक।।
धोरीडा आरे मारे रे, हांरे तूंने गोधे घणे रे।
तूं तां नाके नथाणों रे, तूं तां बंध बंधाणो गुण आपणे रे।। १ ।।

श्री मेहराज कहते हैं कि धर्म का रास्ता कठिन है। गाड़ी पर भारी बोझ लदा है। हे मेरे जीव रूपी बैल! श्री राजजी महाराज ने सुन्दरसाथ को जगाने का भारी बोझ लाद रखा है। इस जिम्मेदारी रूपी जुए को मत छोड़। हे मेरे जीव! तुझे चलाने वाले गादीपति बिहारीजी अनुचित वचनों से तीखी आरें चुभो रहे हैं। तू तो अपनी मूल निसबत से नथा है (बंधा है) और अपने वचनों से ही बंधा है।

धोरीडा अवाचक थयो रे, मुख थी न बोलाय रे।
कल ने वेलूं रे धोरी, उवट ऊंचाणे स्वास मा खाय रे।। २ ।।

हे बैल! तू तो गूंगा हो गया है। मुंह से बोला नहीं जाता। बिहारीजी के गुरुपुत्र होने के कारण तू उनके सामने बोल नहीं सकता। दलदल भरे रेतीले और ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलने से तू हांफ रहा है,

Nijanand App

अखंड पार सुख अति घणूं, जेने सब्द न लागे कोय।
ए जाणी सुख केम मूकिए, ए साध संगते सुख होय।। २९ ।।

अखण्ड के सुख, जो बेहद के पार अपार हैं, वह जबान से कहे नहीं जा सकते। ऐसे सुखों को समझकर जिस संत के चरणों से ऐसे सुखों की प्राप्ति होती हैं, उसे क्यों छोड़ा जाए?

ए सुख केम प्रकासूं प्रगट, वेहद सुख केहेवाय।
ए ब्रह्मांड सर्वे रामत, उपनी छे एनी इछाय।। ३० ।।

अखण्ड घर के इन सुखों को कैसे जाहिर कर दें। यह बेहद के अखण्ड सुख हैं। यह ब्रह्माण्ड सारा माया का खेल है जो ब्रह्मसृष्टियों की चाहना से बना है।

ए रे वल्लभसूं वालपणे, कर दिए साध संग।
ए रे संगत केम मूकिए, मारा मूल तणो सनमंध।। ३१ ।।

हमारे धनी ने बड़े प्यार से हमें ऐसे सच्चे संत सतगुरु से मिला दिया है। अब इनसे हमारा मूल परमधाम का सम्बन्ध है, इन्हें हम कैसे छोड़ें?

सारनों सार ते संगत, जो ते साध मेलो थाय।
वेहद तणी निध लईने आपे, मूकिए ते केम पाय।। ३२ ।।

सार का सार सत्संग है। यदि सच्चे गुरु (सतगुरु) मिल जाएं तो वह हमें अखण्ड घर की न्यामत सौंप देंगे, इसलिए उनके चरणों को कैसे छोड़ा जाए।

सनमंधी ज्यारे साचो मल्यो, त्यारे जीवने थयो करार।
मेहेराज कहे धंन धंन ए घडी, धंन धंन कोहेडो अंधार।। ३२ ।।

अपने परमधाम के सच्चे साथी जब मिल गए तो जीव को चैन मिला। मेहराज ठाकुर कहते हैं कि इस मिलन के कारण ही वह मिलने की घड़ी धन्य-धन्य है और यह संसार धन्य-धन्य है।

|| प्रकरण || १२९ || चौपाई || २०४३ ||

राग धना श्री

हे बैल तू अपना जुआ (ज्वारी) मत छोड़

वाटडी विस्मी गाडी भार भरी, धोरीडा मा मूके तारी धूसरी।।टेक।।

धोरीडा आरे मारे रे, हांरे तूंने गोधे घणे रे।
तूं तां नाके नथाणों रे, तूं तां बंध बंधाणो गुण आपणे रे।। १ ।।

श्री मेहराज कहते हैं कि धर्म का रास्ता कठिन है। गाड़ी पर भारी बोझ लदा है। हे मेरे जीव रूपी बैल! श्री राजजी महाराज ने सुन्दरसाथ को जगाने का भारी बोझ लाद रखा है। इस जिम्मेदारी रूपी जुए को मत छोड़। हे मेरे जीव! तुझे चलाने वाले गादीपति बिहारीजी अनुचित वचनों से तीखी आरें चुभो रहे हैं। तू तो अपनी मूल निसबत से नथा है (बंधा है) और अपने वचनों से ही बंधा है।

धोरीडा अवाचक थयो रे, मुख थी न बोलाय रे।
कल ने वेलूं रे धोरी, उवट ऊंचाणे स्वास मा खाय रे।। २ ।।

हे बैल! तू तो गूंगा हो गया है। मुंह से बोला नहीं जाता। बिहारीजी के गुरुपुत्र होने के कारण तू उनके सामने बोल नहीं सकता। दलदल भरे रेतीले और ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलने से तू हांफ रहा है,

Nijanand App

अर्थात् एक तरफ सुन्दरसाथ की जागनी का कठिन कार्य, दूसरी तरफ बिहारीजी का सुन्दरसाथ को धर्म से दूर करना, सुन्दरसाथ को जेल में डलवाना। उधर इतना होने पर गादीपति गुरुपुत्र की लाज रखने की परिस्थितियों की मजबूरियों से हांफ रहा है।

धोरीडा घणूं दोहेलूं छे रे, कीधां भोगवे रे।
तारे कांधे चांदी रे, दुखड़ा सहे रे।। ३ ।।

हे मेरे जीव रूपी बैल! यह रास्ता बड़ा कठिन है। तुझे अपने किए का फल भोगना है। तेरे कन्धों पर चांदी पड़ गई है (गर्दन मोटी हो गई है) और तू फिर भी दु:ख सहन कर रहा है, अर्थात् हे मेरे जीव! वचन निभाना बड़ा मुश्किल है। तुझे धर्म के बोझ का जुआ उठाना ही पड़ेगा। गुरुपुत्र के कठोर वचनों की रगड़ और कठिन व्यवहार से तेरा दिल टूट गया है। अब कष्ट सहन करने के सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

धोरीडा जाय रे उजाणी, द्रोडा द्रोड तूं आवे।
दया रे विना रे, बेठा मारडी पडावे।। ४ ।।

हे बैल! तू घर पहुंचकर पेट भरने के लिए दौड़ रहा है। इतना दौड़ने पर भी चलाने वाला निर्दयी होकर मार रहा है, अर्थात् हे जीव! तू सुन्दरसाथ का इतना बोझ उठाकर जल्दी परमधाम जाना चाहता है, परन्तु गादीपति गुरुपुत्र बार-बार अपशब्दों की मार मारकर तुझे दु:खी कर रहे हैं।

धोरीडा वही ने छूटे रे, करम आपणां रे।
मेहेराज कहे एम, कीधा छे घणा रे।। ५ ।।

हे बैल! तू अपने घर जाकर ही छूटेगा। मंजिल तक पहुंचना ही तेरा काम है। मेहराज ठाकुर कहते हैं, हे मेरे जीव! सतगुरु श्री देवचन्द्रजी ने जो जागनी का काम तुझे सौंपा है उसे तुझे पूरा करना ही है। तूने काफी काम कर लिया है, इसलिए अब जुए की अपनी जिम्मेदारी को मत छोड़ना।

|| प्रकरण || १३० || चौपाई || २०४८ ||

राग श्री बेराडी

आवो अवसर केम भूलिए, कारण एक कोलिया अंन।
एटला माटे आप मुझाई, केटला करो छो कई कोट विघन।। १ ।।

एक कौर (ग्रास) अन्न के वास्ते ऐसे सुन्दर मनुष्य तन को क्यों गंवा रहे हो? इतने अन्न के वास्ते ही कई करोड़ों पाप करके मुसीबत झेलते हो।

प्रगट वचन सुणो उत्तम मानखो, तमें वोहोरवा आव्या छो सुख।
पण आंणी भोमे मुझ वण घणूं विसमी, सुखने आडे अनेक छे दुख।। २ ।।

हे उत्तम मानवो! यह बात स्पष्ट है कि तुम इस संसार में सुख लेना चाहते हो, परन्तु इस संसार में बहुत भारी उलझनें हैं। सुख के बदले अनेक दु:ख हैं।

सुखने रखोपे दुख वीटया छे, लेवाए नहीं केणे काचे जन।
सूरधीर हसे खरो खोजी, ते लेसे दृढ़ करी मन।। ३ ।।

सुख की रक्षा के वास्ते दु:ख चारों ओर से पहरा दे रहा है, इसलिए सुख लेना साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं हैं। जो सच्चा खोजी और बहादुर होगा वही मन को दृढ़ करके सुख ले सकता है।

Nijanand App

अर्थात् एक तरफ सुन्दरसाथ की जागनी का कठिन कार्य, दूसरी तरफ बिहारीजी का सुन्दरसाथ को धर्म से दूर करना, सुन्दरसाथ को जेल में डलवाना। उधर इतना होने पर गादीपति गुरुपुत्र की लाज रखने की परिस्थितियों की मजबूरियों से हांफ रहा है।

धोरीडा घणूं दोहेलूं छे रे, कीधां भोगवे रे।
तारे कांधे चांदी रे, दुखड़ा सहे रे।। ३ ।।

हे मेरे जीव रूपी बैल! यह रास्ता बड़ा कठिन है। तुझे अपने किए का फल भोगना है। तेरे कन्धों पर चांदी पड़ गई है (गर्दन मोटी हो गई है) और तू फिर भी दुःख सहन कर रहा है, अर्थात् हे मेरे जीव! वचन निभाना बड़ा मुश्किल है। तुझे धर्म के बोझ का जुआ उठाना ही पड़ेगा। गुरुपुत्र के कठोर वचनों की रगड़ और कठिन व्यवहार से तेरा दिल टूट गया है। अब कष्ट सहन करने के सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

धोरीडा जाय रे उजाणी, द्रोडा द्रोड तूं आवे।
दया रे विना रे, बेठा मारडी पडावे।। ४ ।।

हे बैल! तू घर पहुंचकर पेट भरने के लिए दौड़ रहा है। इतना दौड़ने पर भी चलाने वाला निर्दयी होकर मार रहा है, अर्थात् हे जीव! तू सुन्दरसाथ का इतना बोझ उठाकर जल्दी परमधाम जाना चाहता है, परन्तु गादीपति गुरुपुत्र बार-बार अपशब्दों की मार मारकर तुझे दुःखी कर रहे हैं।

धोरीडा वही ने छूटे रे, करम आपणां रे।
मेहेराज कहे एम, कीधा छे घणा रे।। ५ ।।

हे बैल! तू अपने घर जाकर ही छूटेगा। मंजिल तक पहुंचना ही तेरा काम है। मेहराज ठाकुर कहते हैं, हे मेरे जीव! सतगुरु श्री देवचन्द्रजी ने जो जागनी का काम तुझे सौंपा है उसे तुझे पूरा करना ही है। तूने काफी काम कर लिया है, इसलिए अब जुए की अपनी जिम्मेदारी को मत छोड़ना।

|| प्रकरण || १३० || चौपाई || २०४८ ||

राग श्री बेराडी

आवो अवसर केम भूलिए, कारण एक कोलिया अंन।
एटला माटे आप मुझाई, केटला करो छो कई कोट विघन।। १ ।।

एक कौर (ग्रास) अन्न के वास्ते ऐसे सुन्दर मनुष्य तन को क्यों गंवा रहे हो? इतने अन्न के वास्ते ही कई करोड़ों पाप करके मुसीबत झेलते हो।

प्रगट वचन सुणो उत्तम मानखो, तमें वोहोरवा आव्या छो सुख।
पण आंणी भोमे मुझ वण घणूं विसमी, सुखने आडे अनेक छे दुख।। २ ।।

हे उत्तम मानवो! यह बात स्पष्ट है कि तुम इस संसार में सुख लेना चाहते हो, परन्तु इस संसार में बहुत भारी उलझनें हैं। सुख के बदले अनेक दुःख हैं।

सुखने रखोपे दुख वीटया छे, लेवाए नहीं केणे काचे जन।
सूरधीर हसे खरो खोजी, ते लेसे दृढ़ करी मन।। ३ ।।

सुख की रक्षा के वास्ते दुःख चारों ओर से पहरा दे रहा है, इसलिए सुख लेना साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं हैं। जो सच्चा खोजी और बहादुर होगा वही मन को दृढ़ करके सुख ले सकता है।

Nijanand App

एकी गमां सुख वैकुंठ गरजे, बीजीएं दुख गरजे जमपुर।
ए बंने माहें थी एक लई वलसो, रखे भूलता तमे आ अवसर।। ४ ।।

संसार में एक तरफ बैकुंठ के सुखों की गर्जना है और दूसरी ओर यमराज के दु:खों की गर्जना हो रही है। धर्मशास्त्र दोनों का बखान कर रहे हैं। अब इन दोनों में से तुम्हें एक को लेना है, इसलिए तुम इस अवसर पर मनुष्य तन को गंवा मत देना, अर्थात् यमपुरी का रास्ता न चुन लेना।

चौद लोक इछे आ वेला, जोगवाई तमे पाम्या छो जेह।
अहनिस कष्ट करे कई देवता, तोहे न आवे अवसर एह।। ५ ।।

चौदह लोकों के प्राणी मनुष्य तन की इच्छा करते हैं जो तुम्हें मिला है। रात-दिन कई देवता लोग भी कष्ट उठा रहे हैं, पर उनको यह अवसर नहीं मिलता।

घणूं रे दोहेली छे जम जाचना, तमें मूको रे परा छल छद्रम।
वार वार वारूं छूं तमने, विस्मी रे जमपुरी विखम।। ६ ।।

यमराज की मार बड़ी कठिन है। इससे बचना है तो छल, कपट छोड़ दो। मैं तुम्हें बार-बार रोकता हूं, क्योंकि यमपुरी के दु:ख बड़े कठिन हैं।

आंणें रे आकारे कां नथी देखता, जेवडो लाभ तेवडो जोखम।
आंणें रे समें अखंड सुख भूल्या, बलसो रे लाख चोरासी अगिन।। ७ ।।

इस मनुष्य तन को प्राप्त करके क्यों नहीं देखते हो? जितना बड़ा लाभ लेना है उतना बड़ा जोखिम उठाना पड़ता है। इस समय अगर अखण्ड सुख को न प्राप्त किया तो चौरासी लाख योनियों की अग्नि में जलना पड़ेगा।

अखंड सुख लीधानी आ वेला, कां न करो सवला साधन।
परमेश्वर ने परा करी रे, मा करो रे एवा करम अधम।। ८ ।।

अखण्ड सुख लेने का यही अवसर है, इसलिए सच्चे-सीधे रास्ते पर चलकर इसे क्यों नहीं प्राप्त कर लेते? परमात्मा को दूर कर ऐसे नीच काम क्यों करते हो?

मंदिर मालिया अनेक निपाओ, पण भरवूं एक तेहज दो भरी।
अनेक उपाय करो कई बीजा, ए साधन सर्वे जमपुरी।। ९ ।।

मंदिर महल कितने ही बना लो, परन्तु लक्ष्य तो न भरने वाले पेट के भरने का है। दूसरे कितने ही उपाय कर लो, सब यमपुरी के साधन हैं।

कुटम सगा कीधा कई समधी, अने घोलीका ने करी बेठा घर।
आपोपूं तिहां बांधीने आपे, वृथा निगम्या आ अवसर।। १० ।।

इस संसार में जीव ने कई रिश्तेदार बना लिए हैं। इस घरौंदे (बच्चे खम्भे के ऊपर मिट्टी थापकर जैसा घर बनाते हैं) को ही अपना घर समझ लिया है और इसी रिश्तेदारी (बिरादरी) में ही तूने अपने को फंसाकर व्यर्थ ही मनुष्य तन गंवा दिया।

ए घर जाणो छो अखंड अमारु, ऊपर ऊभो न देखो रे काल।
तमारी दृष्टे कई रे जाय छे, तो तमें रेहेसो केटलीक ताल।। ११ ।।

तुम समझ बैठे हो कि यह मेरा अखण्ड घर है। ऊपर खड़ी मौत को नहीं देखते। तुम्हारे देखते-देखते कई चले गए तुम भी कितने समय तक रहोगे?

Nijanand App

ऊंचा वस्तर पेहेरी आकासे, अंत्रीख राखे छे आकार।
भोम ऊपर पग भरता नथी, एणी पेरे बांध्यो ए संसार।। १२ ।।

इस संसार में बढ़िया-बढ़िया पोशाकें पहनकर अहंकार में डूब जाते हैं और आसमान की ओर देखते हैं। ऐसे लोग धरती पर पांव नहीं रखते। संसार इसी तरह से बंधा है।

आप पछाडी ल्याओ छो धन, ऊंचा थावा रब्दे करो छो दान।
नहीं रे आवे ते अरथ जीवने, लई जाय छे वचे अभिमान।। १३ ।।

कठिन परिश्रम करके धन कमाते हो फिर संसार में बड़ा कहलाने के लिए झगड़ा करके दान करते हो। ऐसे दान का फल जीव को नहीं मिलता। उसे अहंकार खा जाता है।

असुभ करम जेम लिए निंद्या, सुभ करम नामना लई जाय।
गोप साधन कीजे ते माटे, जेम सुख जीवने पोहोंतू थाय।। १४ ।।

अशुभ कर्म को जैसे निंदा समाप्त कर देती है, उसी तरह से शुभ कर्म को प्रशंसा समाप्त कर देती है, इसीलिए हमेशा गुप्त सेवा करो जिससे जीव को सुख प्राप्त हो।

एके बंध एणी पेरे बांध्या, बीजा नी ते केटली कहूं रे सनंध।
साध वाणी सांभलीने सहु कोय, देखीने बंधाणा रे अंध।। १५ ।।

प्रशंसा में ही मनुष्य इस तरह से बंधा है तो और बन्धनों की हकीकत कहां तक कहूं? साधु-सन्तों की वाणियों को सुनकर भी सभी जान-बूझकर बन्धन में बंधते हैं।

बंध चोवीस बीजा एनी जोडे, वली पंच इंद्रीने नव अंग।
त्रणे पख त्रणे गुण करी रे, ए बंध बांधी दुख लीधा रे अभंग।। १६ ।।

यहां जीव चौबीस बन्धनों (पांच इन्द्रियां, नौ अंग, तीन पक्ष, तीन गुण और चार अन्तःकरण) के बन्धन में बंधा है और कठिन दुःख भोग रहा है।

एणी पेरे बंध बांध्या रे वज्र में, चसकावी न सके पाय।
होंस करे सुख वैकुंठ केरी, एणी सिखरे एम केम चढाय।। १७ ।।

यह बन्धन वज्र के समान जोरदार बंधे हैं जिनमें से जीव पैर नहीं खिसका सकता और बैकुण्ठ के अखण्ड सुखों की चाहना करता है, तो इस तरह से ऊपर चढ़ना कैसे सम्भव होगा?

जे बंध बांध्या जोइए रे चरणसुं, ते बंध बांध्या लई पंपाल।
अखंड सुख आवे केम तेने, जे रे पडे जई जमनी जाल।। १८ ।।

जिन गुण, अंग, इन्द्रियों को परमात्मा के चरणों से बंधना चाहिए था वह माया से बंध गए। हे मानव! अखण्ड सुख तुझे कैसे मिलें? यह सब तुझको यम के जाल में डालने वाले हैं।

जाणीने पडिया जम जाले, आ देखो छो मायानो फंद।
जे कारण तमे आप बंधावो, तेसुं नथी रे तमारो सनमंध।। १९ ।।

जान-बूझकर यम के जाल में फंसते हो। यह माया का ऐसा फंदा है। जिन घर परिवार वालों के लिए तुम अपने को बन्धन में बांधते हो उनसे तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं है।

उत्तम जनम एवो पामी रे मानखो, कां रे पडो पसुना जेम पास।
बीजा पसु सहुए बंधावे, पण केसरी केम बंधावे रे आप।। २० ।।

हे मानवो! उत्तम मनुष्य तन प्राप्त करके पशुओं की भांति यम की फांसी में क्यों फंसते हो? दूसरे साधारण पशु तो बन्धन में बंध जाते हैं, परन्तु केसरी शेर कभी नहीं बंध पाया।

Nijanand App

सुं रे बल केसरी नूं तम आगल, तम समान नथी बलवंत।
छल करी छेतरे छे तमने, रखे रे लेवाओ आंणे प्रपंच।। २१ ।।

तुम्हारे सामने केसरी शेर भी क्या है? वह भी तुमारे समान बलवान नहीं है। इस माया ने छल करके तुम को ठगा है, इसीलिए इस प्रपंच की चालों में फंसना नहीं।

आ देखीती बाजी मायानी, प्रगट पोकार करे छे साध।
माहें रही आप अलगा थाजो, जेमने छूटो ए बंध अगाध।। २२ ।।

इस माया के खेल को देखकर साधु लोग तरह-तरह से सावधान करते हैं। इसके बीच रहते हुए भी अपने को अलग रखो जिससे बेशुमार बन्धनों से छुटकारा मिल सके।

वली वली आ वेला नहीं आवे, वली वली न सांभलो पुकार।
बोध संघाते जागी परियाणी, तमे लेजो रे सघलानो सार।। २३ ।।

बार-बार यह समय नहीं आएगा और न बार-बार कोई तुम्हें चिल्लाकर समझाएगा। सत्संग से अपनी बुद्धि द्वारा जागकर विचारकर सब वाणियों का सार ग्रहण करो।

सारना सारसूं बंध बांध जो, करजो रे नित नवलो रंग।
नहाजो माया माहें कोरा रेहेजो, छूटता आयस जेम न आवे रे अंग।। २४ ।।

सार का सार है कि उस परमात्मा से अपना रिश्ता जोड़ लो। जहां नित्य लीला के आनन्द प्राप्त होते हैं। माया में रहकर भी माया में लिप्त न होओ। जिससे माया छोड़ते समय तनिक भी खिंचाव न हो, चाहना न हो।

दुख दावानल दुरगत मेलो, रदे माहें चरण करो प्रकास।
अखंड सुख एणी पेरे आवे, मेहेराज कहे जीव जाणो विश्वास।। २५ ।।
भाई रे आवो अवसर केम भूलिए।

मेहेराज ठाकुर जीव को दृढ़ विश्वास करके कहते हैं कि दुःख रूपी दावानल (माया, रिश्तेदार) से अपनी दुर्गति मत कराओ। हृदय में धनी के चरणों को धारण करो तब तुमको इस तरह से अखण्ड सुख मिलेगा। इसलिए, हे भाई! यह सुन्दर अवसर मनुष्य तन प्राप्त करके क्यों भूलते हो?

|| प्रकरण || १३१ || चौपाई || २०७३ ||

अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर।
कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! अन्दर से तुम्हारा मन साफ नहीं है। बाहर से बार-बार नहाने से क्या होता है, अर्थात् दिखावे की भक्ति से परमात्मा नहीं मिलता। ऐसा करोड़ों बार करने पर भी परमात्मा नहीं मिलता।

कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल।
तोलों ना पिउ पाइए, जोलों ना साधे दिल।। २ ।।

करोड़ों बार बन्दगी करो, भक्ति करो और ऊपर कितने ही आचार-विचार की शुद्धि दिखाओ, परन्तु जब तक मन को साधकर वश में नहीं कर लेते, तब तक परमात्मा नहीं मिलते।

अहनिस तूं भेली रहे, अपने पिउ के संग।
पीठ दे तिन पिउ को, करे ऊपर के रंग।। ३ ।।

जिस प्रीतम के साथ तू रात-दिन आनन्द करती थी उसे पीठ देकर के तू संसार के झूठे दिखावे में भूली है।

Nijanand App

सुं रे बल केसरी नूं तम आगल, तम समान नथी बलवंत।
छल करी छेतरे छे तमने, रखे रे लेवाओ आंणे प्रपंच।। २१ ।।

तुम्हारे सामने केसरी शेर भी क्या है? वह भी तुमारे समान बलवान नहीं है। इस माया ने छल करके तुम को ठगा है, इसीलिए इस प्रपंच की चालों में फंसना नहीं।

आ देखीती बाजी मायानी, प्रगट पोकार करे छे साथ।
माहें रही आप अलगा थाजो, जेमने छूटो ए बंध अगाध।। २२ ।।

इस माया के खेल को देखकर साधु लोग तरह-तरह से सावधान करते हैं। इसके बीच रहते हुए भी अपने को अलग रखो जिससे बेशुमार बन्धनों से छुटकारा मिल सके।

वली वली आ वेला नहीं आवे, वली वली न सांभलो पुकार।
बोध संघाते जागी परियाणी, तमे लेजो रे सघलानो सार।। २३ ।।

बार-बार यह समय नहीं आएगा और न बार-बार कोई तुम्हें चिल्लाकर समझाएगा। सत्संग से अपनी बुद्धि द्वारा जागकर विचारकर सब वाणियों का सार ग्रहण करो।

सारना सारसूं बंध बांध जो, करजो रे नित नवलो रंग।
नहाजो माया माहें कोरा रेहेजो, छूटता आयस जेम न आवे रे अंग।। २४ ।।

सार का सार है कि उस परमात्मा से अपना रिश्ता जोड़ लो। जहां नित्य लीला के आनन्द प्राप्त होते हैं। माया में रहकर भी माया में लिप्त न होओ। जिससे माया छोड़ते समय तनिक भी खिंचाव न हो, चाहना न हो।

दुख दावानल दुरगत मेलो, रदे माहें चरण करो प्रकास।
अखंड सुख एणी पेरे आवे, मेहेराज कहे जीव जाणो विश्वास।। २५ ।।
भाई रे आवो अवसर केम भूलिए।

मेहेराज ठाकुर जीव को दृढ़ विश्वास करके कहते हैं कि दु:ख रूपी दावानल (माया, रिश्तेदार) से अपनी दुर्गति मत कराओ। हृदय में धनी के चरणों को धारण करो तब तुमको इस तरह से अखण्ड सुख मिलेगा। इसलिए, हे भाई! यह सुन्दर अवसर मनुष्य तन प्राप्त करके क्यों भूलते हो?

|| प्रकरण || १३१ || चौपाई || २०७३ ||

अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर।
कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! अन्दर से तुम्हारा मन साफ नहीं है। बाहर से बार-बार नहाने से क्या होता है, अर्थात् दिखावे की भक्ति से परमात्मा नहीं मिलता। ऐसा करोड़ों बार करने पर भी परमात्मा नहीं मिलता।

कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल।
तोलों ना पिउ पाइए, जोलों ना साधे दिल।। २ ।।

करोड़ों बार बन्दगी करो, भक्ति करो और ऊपर कितने ही आचार-विचार की शुद्धि दिखाओ, परन्तु जब तक मन को साधकर वश में नहीं कर लेते, तब तक परमात्मा नहीं मिलते।

अहनिस तूं भेली रहे, अपने पिउ के संग।
पीठ दे तिन पिउ को, करे ऊपर के रंग।। ३ ।।

जिस प्रीतम के साथ तू रात-दिन आनन्द करती थी उसे पीठ देकर के तू संसार के झूठे दिखावे में भूली है।

Nijanand App

जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल।
तो अधखिन पिउ न्यारा नहीं, माहें रहे हिल मिल।। ४ ।।

जितना तुम बाहर से अपने को साफ बनाते हो उतना ही यदि मन भी निर्मल हो जाए तो पल भर के लिए भी धनी दूर नहीं हैं। तुम उनसे रात-दिन आनन्द लेते रहोगे।

तूं आपे न्यारी होत है, पिउ नहीं तुझ से दूर।
परदा तूं ही करत है, अंतर न आड़े नूर।। ५ ।।

हे आत्मा! तू स्वयं ही धनी से अलग हो रही है। प्रीतम तुझ से दूर नहीं है। तूने ही अपने ऊपर द्वैत का (माया का) परदा डाल रखा है। धनी तेरे से दूर नहीं हैं।

|| प्रकरण || १३२ || चौपाई || २०७८ ||

किरंतन हुकाको सिंधी भाखा में

विसराई गिंन्यो वंजे, सूंजी संघारयो वंजे।
रिणायर रेल्यो वंजे मालम कर मोहाड, छाला पुजे बंदर पार।। १ ।।

किरंतन कुतबनुमा (दिशा-सूचक यंत्र) का सिंधी भाषा में

संसार सागर की भूलभुलैया भुलाती जा रही है। नींद नष्ट कर रही है। माया का सागर बहाकर ले जा रहा है। हे मल्लाह! तू सम्भल जा। प्रभु कृपा से तू किनारे पर पहुंच जाएगा, अर्थात् माया के भवसागर में शरीर रूपी नाव पर मल्लाह रूपी जीव नींद में नाव चला रहा है। उसे सावचेत (सावधान) करके कहा है, हे जीव! तू परमात्मा की कृपा से भवसागर से पार जा सकेगा। इस संसार सागर में तुझे यह रिश्तेदार भुला रहे हैं। माया का नशा तुझे नष्ट कर रहा है।

हुको नी तोहिजे हथ में, तूं नीचा उनूडे निहार।
चुके म चमक ध्रुव जी, से तूं पांण संभार।। २ ।।

हे जीव! तेरे हाथ कुतबनुमा (दिशा-सूचक यन्त्र) के समान तारतम वाणी है जो तुझे घर की दिशा बताती है। तू अन्दर अन्तःकरण में देख और पहचान। तू अपने मन को श्री राजजी के चरणों से मत हटा, इसलिए तू सावधान हो। अपने आपको सम्भाल।

हे सफर जे सई थेई, से बेडी न चढया बी आर।
हिन जोखे में लाभ अलेखे, तूं अंखडी मंझ उघार।। ३ ।।

यदि इस बार तू भवसागर से पार हो गया तो तेरी यात्रा सफल हो गई, अर्थात् मनुष्य तन से पारब्रह्म की प्राप्ति हो गई, तो दुबारा इस नाव (मनुष्य तन) को धारण नहीं करना पड़ेगा। यह जोखिम वाला काम है जिसमें बहुत फायदा है। तू आंख खोलकर देख।

जा तूं रिणायर विच में, अंख ढंकिए की।
हिन रिणायर ज्यों रामायणूं, किन कंने न सुण्यो कडी।। ४ ।।

जब तक तू सागर के बीच चल रहा है, तब तक तू आंख कैसे बन्द कर सकता है? अर्थात् असावधानी से कैसे रह सकता है? इस सागर में डूबने वालों की बहुत कथाएं हैं। इससे बचकर कोई निकल गया हो, ऐसा नहीं सुना।

Nijanand App

जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल।
तो अधखिन पिउ न्यारा नहीं, माहें रहे हिल मिल।।४ ।।

जितना तुम बाहर से अपने को साफ बनाते हो उतना ही यदि मन भी निर्मल हो जाए तो पल भर के लिए भी धनी दूर नहीं हैं। तुम उनसे रात-दिन आनन्द लेते रहोगे।

तूं आपे न्यारी होत है, पिउ नहीं तुझ से दूर।
परदा तूं ही करत है, अंतर न आड़े नूर।।५ ।।

हे आत्मा! तू स्वयं ही धनी से अलग हो रही है। प्रीतम तुझ से दूर नहीं है। तूने ही अपने ऊपर द्वैत का (माया का) परदा डाल रखा है। धनी तेरे से दूर नहीं हैं।

॥ प्रकरण ॥ १३२ ॥ चौपाई ॥ २०७८ ॥

किरंतन हुकाको सिंधी भाखा में

विसराई गिंन्यो वंजे, सूंजी संघारयो वंजे।
रिणायर रेल्यो वंजे मालम कर मोहाड, छाला पुजे बंदर पार।।१ ।।

किरंतन कुतबनुमा (दिशा-सूचक यंत्र) का सिंधी भाषा में

संसार सागर की भूलभुलैया भुलाती जा रही है। नींद नष्ट कर रही है। माया का सागर बहाकर ले जा रहा है। हे मल्लाह! तू सम्भल जा। प्रभु कृपा से तू किनारे पर पहुंच जाएगा, अर्थात् माया के भवसागर में शरीर रूपी नाव पर मल्लाह रूपी जीव नींद में नाव चला रहा है। उसे सावचेत (सावधान) करके कहा है, हे जीव! तू परमात्मा की कृपा से भवसागर से पार जा सकेगा। इस संसार सागर में तुझे यह रिश्तेदार भुला रहे हैं। माया का नशा तुझे नष्ट कर रहा है।

हुको नी तोहिजे हथ में, तूं नीचा उनूंडे निहार।
चुके म चमक ध्रुव जी, से तूं पांण संभार।।२ ।।

हे जीव! तेरे हाथ कुतबनुमा (दिशा-सूचक यन्त्र) के समान तारतम वाणी है जो तुझे घर की दिशा बताती है। तू अन्दर अन्तःकरण में देख और पहचान। तू अपने मन को श्री राजजी के चरणों से मत हटा, इसलिए तू सावधान हो। अपने आपको सम्भाल।

हे सफर जे सई थेई, से बेडी न चढया बी आर।
हिन जोखे में लाभ अलेखे, तूं अंखडी मंझ उघार।।३ ।।

यदि इस बार तू भवसागर से पार हो गया तो तेरी यात्रा सफल हो गई, अर्थात् मनुष्य तन से पारब्रह्म की प्राप्ति हो गई, तो दुबारा इस नाव (मनुष्य तन) को धारण नहीं करना पड़ेगा। यह जोखिम वाला काम है जिसमें बहुत फायदा है। तू आंख खोलकर देख।

जा तूं रिणायर विच में, अंख ढंकिए की।
हिन रिणायर ज्यों रामायणूं, किन कंने न सुण्यो कडी।।४ ।।

जब तक तू सागर के बीच चल रहा है, तब तक तू आंख कैसे बन्द कर सकता है? अर्थात् असावधानी से कैसे रह सकता है? इस सागर में डूबने वालों की बहुत कथाएं हैं। इससे बचकर कोई निकल गया हो, ऐसा नहीं सुना।

Nijanand App

जिंनी जाणी वंजे सायरें, से कीं निंद्र कन।
हिन सूंजी घणां संघारिया, तूं मालम धिरिए न मन।।५ ।।

जिन्हें समुद्र के पार जाना है वह व्यापारी कैसे सो सकते हैं? इस असावधानी की नींद ने बड़ों-बड़ों को नष्ट कर दिया है। इसलिए हे मल्लाह! तू संसार के मन का भरोसा मत करना।

बेडी पुराणी बखर भारी, लगे वा डुबां।
सार सुखाणी गोस के, तूं उथिए न निंद्र मंझां।।६ ।।

तेरी नाव पुरानी है और बोझा भारी है और डुबाने वाली हवा चल रही हैं। हे मल्लाह! तू अपनी बुद्धि से अपने चप्पू सम्भाल। तू अज्ञानता की नींद से क्यों नहीं उठता?

वा लगी जा विच में, सभ थेई उंधाई।
मालम डिस मोहाडियो, रह्यो मुझाई।।७ ।।

यदि बीच में आंधी का झोंका आ गया तो बेड़ा उलट जाएगा। हे मल्लाह! तू अपनी नजर सामने रख। सागर की लहरों को देखकर निराश मत हो।

पिंजर मथे पिंजरी, रिणे कारी रात।
हिन पवने घणां पछाडिया, तूं तरसी करिए न तात।।८ ।।

इस रात्रि के अंधेरे में शरीर रूपी नाव के ऊपर बांस गड़ा है जिस पर मन बैठा है। इस पवन ने बड़ों-बड़ों को पछाड़ दिया है। तू पार होने का उपाय क्यों नहीं करता?

हाजानी करिए हेठडा, सिड पुराणी पांध।
हिन आंधिए घणां उंधा विधां, तूं मालम भाए म रांद।।९ ।।

तुम बांस की रस्सी को नीचे खींच लो, क्योंकि पाल का कपड़ा पुराना है। इस आंधी ने बहुतेरों को उलट दिया है। हे मल्लाह! तुम इसे खेल मत समझो।

मथां अंबर हेठ जर, नखत्र न डिसे कोए।
रिणे रूप घटाइयूं, मालम सुध न पोए।।१० ।।

ऊपर आसमान है, नीचे पानी है, तारा कोई दिखाई नहीं देता, अर्थात् भवसागर में चारों तरफ अज्ञानता का अन्धकार है और ज्ञान का प्रकाश देने वाला कोई दिखाई नहीं देता। हे मल्लाह! रात्रि का घटाटोप (घोर) अंधेरा हो गया है। हे मल्लाह! क्या तुझे इसकी खबर नहीं है?

बडर वंजे वीटियो, डिस न डिसे कांए।
मालम मतू मुझियूं, झूडे मींह मथांए।।११ ।।

विकार रूपी बादलों ने आकर घेर लिया है। जहां से अब निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। हे मल्लाह जीव! तेरी बुद्धि भ्रम में पड़ गई है और ऊपर से मुसीबतों की भारी वर्षा हो रही है।

लेहेरूं डूंगर जेडियूं, हियडे डिन धका।
हांणे हथे नीहणण नाखवा, वंजे गाल हथां।।१२ ।।

इस भवसागर में पहाड़ जैसी माया की लहरें हैं जिससे दिल दहल रहा है। तुझे अब धैर्य और संकल्प का लंगर (मुसीबतों में रुक जाओ) डालना है। वरना बनी बनाई बात बिगड़ जाएगी।

Nijanand App

बेडी बंध ढीरा थेया, त्रूटन संधो संध।
अजां अंख न उपटिए, पाणीनी पूरो मंझ।। १३ ।।

तेरी शरीर रूपी नाव के बन्ध ढीले हो गए हैं और जगह-जगह से टूट गए हैं। मौत तेरे सिर पर है। फिर भी तेरी आंखें खुलीं नहीं।

हिलोडे नीर लेखूं कियां, अने कुओ पछाड़ु खाए।
पोए तूं कडे उथीने पापी, पाणी फिरंदे मथांए।। १४ ।।

आगे पानी की बेशुमार लहरें तेरी नाव को पछाड़ रही हैं। हे पापी। तू पीछे कब उठेगा जब पानी तेरी नाव में भर जाएगा और तेरे ऊपर से निकल जाएगा?

विसराई वंजी ओतड ओलवे, चुआं पुकारे सच।
कपर कंदिए कुटका, गच न मिडंदे गच।। १५ ।।

हे जीव! तेरी यह भूल औघट (ऊबड़-खाबड़) के रास्ते में, अर्थात् चौरासी लाख योनियों में भटकने वाले रास्ते पर ले जा रही है। मैं पुकार कर सच कह रहा हूं तेरे शरीर रूपी नाव के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। जो सहारे के लिए साधन तुझे मिले हैं, यह फिर दोबारा नहीं मिलेंगे।

विसराईनी कपर ओडडी, तूं सूम म सुखाणी।
ही ककी कंधीयजी, तूं पसे न पाणी।। १६ ।।

हे जीव! इस भवसागर से पार जाने का रास्ता (मनुष्य तन) तेरे हाथों में है और तू नींद को अर्थात इस तन को सुख जान बैठा है। यह किनारे का मैलापन है। तू इसे पानी न समझ लेना।

करे कडाका कपरी, गजे गोकाणी।
तीखोनी ताणिए तेहडा, तूं सारिए न सुखाणी।। १७ ।।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं, समुद्र की लहरें बड़ी तीखी डुबा देने वाली हैं यह तुझे अपनी तरफ खींच रही हैं। हे जीव! तू अपने को सम्भालता क्यों नहीं?

कंधी पस्सी म कोडजा, सेहेर बजारी हट।
नेई घर कां वंजे, विकण दमड़ी वट।। १८ ।।

किनारा देखकर तू सुखी मत हो जा, अर्थात् मनुष्य तन पाकर ही यह न समझ ले कि तू भवसागर से पार हो जाएगा। यहां बड़े-बड़े शहर और हाट हैं, अर्थात् तुझे अपना कहने वाले बहुत मिलेंगे। तूने कुछ कमाया नहीं। घर क्या ले जाएगा? यह संसारी तुझे भी एक दमड़ी में बेच डालेंगे।

साहे डींनी चाईन पाणके, बोलीन मोंह मिठां।
जीरे मुआं न छुटो मंझां, जे इनी डिठां।। १९ ।।

यहां के साहूकार लोग, रिश्तेदार तुझे अपना बनाकर प्यार करते हैं। इससे तू जीते जी नहीं छूटेगा। मरकर ही छूटेगा यदि इसकी तरफ देखेगा।

जे तूं सजण भाइए, से डुझण संजो डेह।
मिठडो गालाए मारीन, हथडा विंजन कलेजे।। २० ।।

जिनको तुम अपना हितैषी समझते हो, वही तुम्हारी जान के दुश्मन हैं और मीठी-मीठी बातों से मोहित कर अपने हाथ से तुम्हारा कलेजा निकाल लेते हैं।

Nijanand App

हे कूडी कंधी उचक सिंधी, तूं हेडा हंड म न्हार।
रात डींह जागी जफा से, तूं पांहिजो पाण संभार।। २१ ।।

तू इस किनारे की झाग (मैल) को देखकर पार कर जा, तू ऐसे ठिकाने का आसरा मत देख। तू रात-दिन अपने लिए मेहनत कर और अपने प्रीतम से मिलने के लिए अपने आप को सम्भाल।

ही तागा पाणी पसे तरे, तूं मुडदम हथां छड।
हित घणो खेडा जागी जफा से, तांही कोईक निग्यो मंड।। २२ ।।

तू धागा डालकर समुद्र की गहराई देख! तू अपनी गुण, अंग, इन्द्रियों को देखता रह। फिर तू अपने जहाज का लंगर डालना। यहां कई लोग अपनी नैया किनारे पर लाकर डुबो देते हैं। यहां से कोई एकाध विरला ही सावधानी से बचकर निकल पाया है।

पिरी पुकारे पंजसे, मिडंदा लख हजार।
डुख मंझाए न चोंदा मूंहजी, ईं कडई कोए पुकार।। २३ ।।

प्रीतम अपनी पांचों शक्तियों से तुम्हें बुला रहे हैं। संसार में भी तुम्हें इस बात की लाखों हजारों गवाहियां मिलेंगी। इस दु:ख के संसार में मेरे जैसा पुकार-पुकार के जगाने वाला और दूसरा नहीं मिलेगा।

काया बेडी समझ समर, सायर लख संसार।
मालम जीव जगाए साथी, मेहेराज पुनों पार।। २४ ।।

इस काया को नाव समझकर और संसार को सागर समझकर और मल्लाह को जीव समझकर और उसे जगाकर मेहेराज ठाकुर भवसागर से पार हो गए।

।। प्रकरण ।। १३३ ।। चौपाई ।। २१०२ ।।

सम्पूर्ण प्रकरण तथा चौपाइयों का संकलन

।। प्रकरण ।। ३४७ ।। चौपाई ।। ८४६२ ।।

।। किरंतन सम्पूर्ण ।।

Nijanand App